# স্থাচপত্র।

विषय	,	পূ	51	विवयं ें	* (A)	701
षिकांग भन्तन	90,506	,১৯৩	,₹७₡,	বাগালার জর	••• * *	324
		<b>90</b> :	२,०৯४	বালালা ইতিহাস সম	स्य करत्रक	ी कथा ७७२
অনিন মঠ		• • •	& Ob	বাঙ্গালির উৎপত্তি।	828,648	862, c+2,
আমাৰ প্ৰাণ	***	•••	673			800
ইপাসনাবিষয়ক তুলন	<b>11</b>	•••	72.2	বালালা সাহিত্য	+ 4 =	85-9
কালেদি।শিন্দা	7 * *	•••	२ऽऽ	্বান্মীকির ভয়	838	,850,055 ·
थाधना किन पिरे	•	• • •	53	विनाह विकीयवाद	• • •	69
পৃ <b>হসরাস</b>	•••	٠.	aub	ভিনিষাৎ ছিল্পুশ্ৰ	-44	•••
চন্ত্ৰ গুপ্তের সংক্রিপ্ত	विनी	•••	<b>058</b>	ভূতের স্বাতি	•••	•••
চাকুরীর প্ৰীকা	•••		<b>955</b> .	ভটাচাৰ্যা বিদায় প্ৰণা	গী	
ভাগ	•••		848	भाननीलाङा ५७२,३०	18,22	
व्यारमक् मा। ऐमिनि	•••		৩৩৭			
<b>छोको ७ भूक वाश्रामा</b>	•••	• • •	549	ग[लाहना न		
তক্তাণালী		- • •	42	भित्रका ও कथानकू छ	•	
বিভীয়বার বিবাহ	***		Fq	মৃতি গ্ৰাম গ্ৰহের শীব		
नत्वम वा कथा अरहव	<b>डे</b> टम्मा	•••	३७	भ्रमारतम् 🦠		
ন্তন ধালনার আইন	मय(क व	लिक्	1তা	যায় কাজ দেই ক		
রিবিউর মত				রত্বত্ত্ব		
देनम्थ गभारलाहन	***	4.5		র <b>্বর্গ</b> ্য		
भन्तिय (मरण वाकामाः	র জ্ব	• • •	२७ १	<b>भक्दाठाटर्गा</b> व		
<b>भागारमी</b>	***	853	,659	শশংর		
আগু গ্ৰন্থের সংক্ষিপ্ত	<b>নমাদে</b> লাট	ন	<b>26</b> ,	শিক্ষা		
	2 ;	> 2 & 4	, @ 900 {	শ্বতি কি		
नमं देवकानिक	ر ماند		>+@ {	मगरक		
यकीत नक्ताहारग्रह न	ा <b>नि</b> भ	**	,885 . §	,आधीर		
TOWN		. 89	,obe	<b>. *1</b> 0		

# বঙ্গদেশন। মাসিক পত্ৰ ও সমালোচন।

### ~~~~ ভবিষ্যৎ হিন্দুধর্ম।

### ত্রহাম পরিক্রেদ। পূসা কর।

যে অনুদি ইম্বনের ভার মরুষাও স্বাকার ५ नियाकाव उर्दे छुटे विकारण विकास ६३ आटक, त्मके कार्या खाया नुक्त पूर्याः পত্তি हरेशहरू । भेषात्रत देशहराम चांदरः নকুষোৰত ভাষা ঘটিয়াছে। এই লৈচ ानीता वरमन, ''कुशि पाणि खारकारकत ভিতৰ, আৰু একট কৰিয়া তুনি আমি সাছে। মেটা দেশ যায়, সেটা সাকার মন্ত্রা,আবার ভাতার ভিতর যেটা আছে. পেটা নিরাকার মন্ত্রা। কেছ দেটীকে দেখিতে পায় মা, সেটাও কোন কার্য্য करवीना, अथह दम्ही आर्छ विश्वा विधान कविटल इंट्रेंट ।" भाजनार बता. थर्षयाम्बरकत्रा मकरलंडे वाकवादका निन-ভেছেন, মনুষোর ভিতর মনুষা আছে। তুৰি সামিতেছ না, তুমি বুৰিতেছ না,

তোমার ভিতর আর একলন আছে. তাহ ব নাম আয়া।

रेप हवातीया व्यायक वरतम रग. मुठाबे ার লিয়াকার মহুষা প্রকাশ পায়; সেই ित्तकात व्यवसाय **सूथ इ:श मकनहै** . : १ क्विट**७ इहा आमि यणि मृ**ङ्काद পার প্রয়ো যাই, উন্তম বল পরিব, চলন সংখিব, পুস্থার গলায় দিব, সিংছাগনে ব'মব, অপারার গীতি শুনিব, আহার নিদ্বে ত কথাই নাই। তথন শ্রীর नाहे शक्क, ध मठन भाजीतिक स्वय-**ट्यारबाद कोन वाशिक्ट श**िंदव ना। আৰু যদি নরকে ঘাই--এই লেখার পর टाशरे मधन-लाहा हरेल गाना वर्णत ঘনস্ত অগ্নি আমার নিরাকার দেহকে नक्ष कतिर्द, यामि बामधा यञ्चनात 5ীৎকার করিব, ডাক্তার পাইব না, खेवध शहेब मा. त्याका शामिएक ध्रम है काशीय अ शाहेय ना। यदि चर्म सहित्य

ना शह, कांत्र नंतरक शहन ना इत,—
हेमांगी अनिट्हिं, नेतरक नाकि झानाकांच हरेग्रांक, कांग्रिंछ राष्ट्र कंत्रमाग्न
कलम धित्रांकि—यम चर्ल राहेर्छ ना
शाहे, नंतरकथ जान ना इत्र, जाहा
हरेल मृङ्ग्त भन्न कांग्रि अहेशांनरे
शांकिव, उसन (मृह् शांकिर्य ना, कांद्रके
स्टामना कांग्रित (निश्रिक । ध्यंच वित्रा
खन्न शाहेर्य।

এইরূপ আবার বন্ধ, চন্দন, পূজা, সকলের আয়া অচে, নতুবা তাছারা चार्य यात्र किकारण । योग सम्बादन कांजियां शियां कांज त्वारम, मालियां शियां মালঞ্করে, ভাষা সইলে সেখানে अकः इंध्र्नि, त्वनातिन छिन **छ**न्मित कविटल थादत: किंग्र 'दनशहन यमि জাতি, নালি প্রানৃতি ইতরভাতিতা गाईएड मा भाष, या याहेबा यनि ए इत्यन কৰিছে লা পাল, ভাষা হইলে क्लाभा इटेट चाटेम ? कांक्ट बीकाव कतिराठ इटेटच (ध. आमारमच পুরতিন বল্পের আত্মারা স্থরেল গিয়া ব্যবহৃত হয়। অভএব আয়া যে কেবল সামাদের স্বাছে, এমত নছে। কড়ি-গুলির আত্মা আছে, বৈতরণী পার **रहे वांत्र निभिन्त (य कशाक क्**ड़ा कर्ड़ ष्यामतः शाहेत्रः थाकि, यनि उद्यादनत আত্ম বা লাকে, জাহা কটলে এরপ कि कामारमत भटक निवात कल कि 🕈 ক্ষ্টি সরার পড়িয়া থাকে, এ অবস্থায় বুৰিতে হইবে কড়ির আন্তারা মৃত

ব্যক্তির সঙ্গে যাম, অন্তভঃ পার্মাটা পর্যাস্ত।

রহস্ত একণে এই পর্যান্ত। আমরা বলিতেছিলাম যে, যে অবধি মহুযার मयत्क देव ट्याम तांचे इहेबाटक, ८भटे অব্ধি নৃত্ন কর আরম্ভ ইইরাছে। সেই ष्यविध श्रथम भएकंद्र लाग शक्ति है। इहेबाइ . ভাহার পুর্বাবধি ধর্ম গঠিবার কিছু কিছুমার উদ্যোগ হিল। ভয় মহুষোত সভাবতঃ প্রবল-সেই ভয় চইতে ছুই এক দেবতার কঞ্চনা আবম্ভ ইইয়াছিল। অলি দেবলা, কেন না হাত পুড়ায়, वायु (नवडां, दक्त ना घर खादक, रक्त (सदर्ग, (कन ना सत्त कानांत्र, देशास्त्र পুৰা কৰা উচিত। তাহা হইলে এ भःमात्रवाजा निर्मिद्य हिन्द्र । धरेक्ट्रश गामामा मह धर्ष छेडानिह इहे छिहिन। খান, নংক, আল্লা, প্রমায়া, এ স্কল कर्षात अष्ठि खग्रा इस माहे। कार्याह मर्फा (कदस केडिकी हिन) (सरिकार हिवळ उभन देशमाहिक वर छिल -বাাজের ন্যায় ছবিম, ভলুকের স্থায় পর-त्रकथिय, मया, माकिना धारकवाद्य नित्र-হিত; এরণ প্রকৃতি অমি বারুদেবভার দারা উদীপ্ত বাঙীত দমিত হইবার मछारना इस नाहै।

ভাহার পর মহযোর ভিতর মহযা
আছে, এই অফুতব ভারতবর্ধে প্রথমে
উত্থাপন হইল। উত্থাপিত হইবামাত্রই
ন্তন এক ধর্ম স্থঃ উপস্থিত হইল।
মৃত্যুর পর আলা দীবিত পাকে এই

CONTRACTOR OF CHEST ASSESSED. a simplifan statut attack two b naville bien mielinaten nimber cours ; fen fint cocus; nimens रामगदिवास्य गर्काट्ड छक्रन स्विधा CHERNICE ! দ্বাদলগতি তৰ্মত ভাशास्त्र थाविद्धः बनिद्धम्, जेटक हा-क्षत्र जाराहक सब बारेगा मुद्ध क्षेत्रक रुरेगारक, छोहात क्या छोहाता ,८कन अनिद्य, लाहाता चात्रक टक्क निता के दिन । ज्यम नगर्क संस्रात जाहानिग्रंक मगत्रविष्कृष्ठ कतिया पिट्समा । किस वारिट्स গিয়াই ভাষালা ব্রন লেছে এ বান্তের गहिक मिनिक इहेमा जीमनत्राकृत्य **पदानिविद्र पाक्स्मन क्रिन। मनेपा**छ कटहे. निवित्रमध्य जानिस्तान, जानिश्री वांशा (मिरिटनन, खाबाटक इमर्क्क इरे-रगन। रमिरलन तानीकि वीशाहरछ ''ভाই ভাই'' शहिर उट्टम, मुम्छ प्रशासन छनिया क्यल कैंनिएडएड,-निःम्क महत्व (याचा कैं।बिर्ड्ड्डा महहेडा। बाहा-रमय यातमात्र, की तिका, ठाहावा मकरलहे कॅमिटलटक् - सब्देशान - क्रिशाटक । नम्-त्वक श्राक्तमाहि द्व काळन्। कहि-ट्डर्ड, ट्रबंक्ट्डिंग क्लोडिंग नाहे। अक्टरका क्रीनगर्भाकाम पाकस्प क विमा अपीतिय भाग भाग है के प्रेम THE THE WARRY TO STREET TIN THE STATE WITH A PROPERTY AND THE RESIDENCE OF COLUMN 2011

THE STATE OF THE S THE WILLIAM CHE WE THE (\* \*\*\*\* & CIVE, TO VIEW (\* \*\* नत सन दशकिए पता नवन दशक का ररेना जात्म त्यमन विवद्धार "का त्व यो करविष्म, करविष्म, स्वात कतिनः त्न, त्मभ दम्भि दकात यति अमिन इम, इक कि कबिन्। जकरनरे माएव छा।? एखाँव भवीव व्यवन्त्रक्रमाध्ममस्मवात्रहे (छम्मि। मत्न कन्न, यनि दर्जात्र मार्ट्स, क्छ मञ्जूष रम, किन्न' जाशनाह अक्ट्रे लानिहन कहित रम्, कांत कारमात मध्यक छन्नवित ভাষাত করিস্। শাপদ পরিবারের প্রতি বসর দিলে সইছে পারিদ্ না; কিছ প্ৰের প্রিবারের আছি ক্ত অত্যা-**छात्र क्षिम्। अहा। अक्षात्र महन**े मध्य कवे साथि दव डाइमव खश्चन कि পরের ছেলের মাথা অনারানেই काष्टिम्, किन्न धकरात्र मटन कृत रहिन त (कांत्र, निरमंत्र एक्टनंत्र ७ त्र्वाय हरत् कि इत्र १ अविष्य प्रकृतिका कारिया केटिन, केविया ने शहिया निष्म, " बका कत कट्या । छताम बित्रहा स्तृत ।" का भाग शाम के लिए। अने कहि कहि तत. नवाहे जातिका लोड दवह महिन्न वस हाड़ा अब्द आहे. नवारे बाहर, the calen cure, result gental TITE CENTER NEW VER, THE PROPERTY THE SEC OF THE PURCHANT PART LANGE CHARLE MIN THE

अविकास अवशान के कामि (कामिक कृषि आर्था है । अवे क्षेत्र नगर प्रेमी अवे त्रिमी नगर दान के क्षेत्र त्रिम के भारता रखें। असे घार क्षेत्र कि साम कृष्टियां लेंट्र लान (क्रेम के बाम कृष्टियां के त्रिम लान (क्रेम के बाम कृष्टियां के निर्माण के निर्म के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्म के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्म के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्म के निर्माण के निर्म के निर्म

গানের কল এই চইগ, সকল মুন্ত্রা বেশ্তাগ করিয়া বাল্লীকির পারে জড়া-ইয়া পছিল। ক্সাদলপতি ওংক্ষুপ্রালি পারে জড়াইয়া কাঁদিতে লাগিল। বা-দ্মীকি ভাষাদিগকে পাছুইতে নিবেদ করিয়া কহিলেন, "আমি দেবতাই নহি, ক্রিয়া কহিলেন, "আমি দেবতাই নহি, ক্রিয়া কহিলেন, গুলার নহি, তোমবাও ভাগা, আমি দ ভাষাই।" আমার গারে ক্রিড়াই কি হইবে, তৃত্বর্ম করিয়াত, ভাবে করিওলা। ভীবন পরিবর্ত্তন করিয়া সংপ্রেপ্ত জীবন কটোও স্থী হউবে।"

এই বলিয়া গকলকে নিবৃত্ত করিছে:
ক্রেন, এমন সময়ে নগ্রবাগীদিগের কর্মা
বিশ্বিগণ কের গঞ্জপদ, কের চক্ষ্যানা,
কারণক্ষ ভাষিতে গাত্রপদ র ইমাছে
ক্রেন্ত ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেন্ত ভাষাক্ষ ভাষিতে গাত্রপদ র ইমাছে
ক্রেন্ত ক্রিয়ার ক্রেন্ত ক্রিয়ার ক্রেন্ত ক্রিয়ার কর্মান ক্রেন্ত ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার বাইকেছে
ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রিয়ার ক্রায়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার

BAILTHA CANTAN MAKAN, YEAR Coluites Bill Ann. Mars at विवास करकार करने के का जिला जान ह मनरमर रमनिका त्यारक सम्बद्धारण नानी दुरादन निवह मृङ्खाम हरेना भाष्ट्रण । बाकी के विशेषका अवांच केशादकत किश्री-नकटल डिसाटमञ ठेमा गरेना दन् নিকট গেল, মাইবামাত অপুরবাদিগ্র व्यारात व्यक्तिमान कृतिया श्रामार्थन नहीत्रन फांका है (छवा ভখন বুৰিতে भातिम, इंडेरमार्क मंडा कथा वनिस्म छ লোকে বিশ্বাস करक ना वाद्योकिक कि का है हा बानिवाद बना अद्भारतार कविन ; बाग्रीकि द्या मुद्रा मन **टारा छेरावा कानिट्द कि अकारत ?** 

যাহা হটক বাত্ৰীকি উলাদিগতে ফিয়াইলেন, এবারও আপনগানে থাত্ৰীকি
এমনি মিই তান ধরিয়া উহাদেন নিকট
এমনি কর্মণভাবে ক্যা প্রার্থনা করিতে
লাগিকেন যে, উহাদের চিত্ত দ্যার্ক হইক;
উহারা বাত্রীকির কথার নগরে ফির্মা আনিল। কিন্তু আলাকর পেশে বাস করা অনাায় এজনা উহারা বাত্রীকিকে
নাজা হইতে অস্থােম করিন। বাত্রীকিকে
নাজা হাক্ কভালকে সাজা করিছা
নিলেন ভালকে বাত্রীকি নাজা হাক্রীকি
নাজা হাক কভালকে সাজা করিছা
নিলেন ভালকে বাত্রীকি নাজা হাক্রীকি
নাজা হাক্রীকি বাত্রীকি নাজা হাক্রীকি
নাজা হাক্রীকি বাত্রীকি
নাজা হাক্রীকি
নাজা হা

'बाह्यकर वह गरफ', देखकान, भवनान, पर्ग, मनक, भारा, भूता व गक्न बाज्यकिक क्या आक्तकार्द हिन, जरक जरक कारो **अपूर्णाय अपूछ्य रहेशा मृज्य शर्माय** উৎপত্তি হই । । যে বাজি আন্মরাদ चीकांत कतिन, छाहारकष्टे त्यरे नृष्ठन ধর্ম গ্রহণ করিতে হইল। ুপুথিবীর বাব-**छीत्र विहम्भव बाछि क्षात्र मैक्टनरे क्र**म ক্রমে আত্মার অন্তিম স্বীকার করিয়া **একে একে সকলেই এই সামামূলক** न्छन धर्मा श्रहण कतिन। ভারতবর্ষ इटेट मिनवर्ताका धरे धर्म अध्य अठाव इय, उथा इहेट यूनानीत्मरण गृहीक इत। भूषा धरे धर्म भिनतरम् इटेर्ड व्यानन त्राम नहेवा यान । भूवा स्टेरक भवन्यता योख औह" **এই धर्म जवनक**न করেন। ভাহার পর মহত্মদ এই ধর্ম श्रं करत्रन । अक्स्र कार्क्ट डॉहाएम्ब खेशानकान, देश्यम, क्वालिन, मिना-মার, ওলনাজ, আরবী, পারসীক প্রভৃতি मकरनरे धरे धर्मा वनशी स्टेग्नाइन ।

ধর্মটা অভি সহস্ব। আত্মা স্বীকার করিলেই আপনা আপনি উত্তর প্রভাতর দারা ইহার অমুভব ছইরা নাম। নিম্ন-নিখিত করেকটি উত্তর প্রভাতর নাইরা এই ধর্ম।

প্রনা মৃত্যুর পর সাম্বাকি করে।

উত্তর। ঐহিকে বে কার্য্য করিনাক্ষে, ভাহার ফলডোগ করে।

তা । কি কান ক কোনাৰ নামিনা ভাষা কোন কৰে ?

উ। বাৰি থাকিব। ত্থাজাগ করে। নবকে থাকিবা হংগভোগ করে।

े देवान कार्यात कन च्य, दक्षाने
 कार्यात कन च्या १

উ। विठातककी त्य कार्य छान बरनन त्यहें कर्यात कन ऋष। विठात-कर्छ। त्य कार्य मन वरतान, त्यहे कर्यात कन इःष।

প্র। বিচারকর্তা কে ?·

উ। ভাষার নাম ঈশব, তিনিই পৃথিবী ক্ষম করিয়াছেন।

থ। কোন কার্য্য তিনি ভাল বলেন; কোন কার্য্য তিনি বন্ধ বলেন ?

উ। তিনি তাহা বলিরা দিরাছেন। প্রা কাহার নিকট কি প্রকারেন বলিরা দিরাছেন।

এই লেব প্রান্তের উত্তর লইরা তর্ক আরম্ভ হইরাছে। হিন্দু, দুন্দ্রনান, প্রীয়র প্রভৃতি সকল ধর্মেরই মূল এক, কেবল এই স্থান হইতে পার্থকা অবল-কন করিয়াছে। এই পার্থকা সামানা। মূলধর্ম করছে ইহাবারা কোন বৈলক্ষণা হল নাই। স্চরাচর লোকেরা বে ভক্তর বৈষ্যা রেখে, ভাষা প্রথমতঃ উপলেক্টা ক্ষকে, বিভীয়তঃ ঐতিহানিক-বিশ্ব সহকে, ভূতীয়তঃ আচারস্কার্ম্য

<sup>&</sup>quot; सहतरक बर्शन रा वीकवीडे जाया चीका कविरक्त ना। किय दिक्या अमृतक बन्निया रेवाय यह । Gospel of St. Matthew Chapter X. R. 28 राजा

त्यः कार्यः केष्टततः व्योखिकतः, जाहा किनि कांदाद निक्षे विनदा विद्यास्त्रम ঁএই লইয়া প্রথম ভক্। হিন্দুমতাত্সারে वेषव व्याकाणसंखी प्रांता शाल पूर्वा व-লিয়া দিয়াছেন । প্রীষ্টানমতামুগারে ছয়ং আংশিক অবভারস্ক্রপ মনুবামধ্যে আ-বিরা বলিয়া-ুদিয়াছেন। মুসলমান মৃতাহ্নারে মহাবদের নিকট ঈশ্ব দৃত ষারা বলিয়া পাঠাইয়াছেন। বেদব্যাস वा बीकृष, महत्रम वा यों खें और विनिष्टे দীশ্ববাকা প্রচার করিবার ভারগ্রহণ করিয়া থাকুন, কেহই মূলধর্মে হস্তক্ষেপ करतन नारे। दक्रे वरणन नारे त्य, আত্মা নাই, মৃত্যুর পর সকল ফুরায়। द्वरहे ब्र्ल्न नाहे (व्, चर्ग मिथा, नवक बिशा। क्टरे वर्णन नारे ्य, भान পুণ্য নাই, কেহই বলেন নাই যে, পা্প शुर्वात विठातकर्छ। क्षेत्रत नारे। यनि কেহ তাহা না বলিয়া থাকেন, তবে মূল-क्षात्र शार्का करे रहेन ? तमा खाने वा ज्ञमङ्ख्या च्टड डेनाम्डी मस्त्र, डेनाम-কের শ্রহা আরুষ্ট করিবার নিমিত্ত উপ-দেষ্টার অমাত্রিক পরিচয়ও সম্ভব। জনমেরা কে বা কিরুপে তিনি নিজে केशिक्टे इटेर्गन, क्विन वहे क्या অইরা বে উপাস্কলের ধর্মজান, ভাষা-দের পাকে এই বৈষ্ম্য অতি শক্তর नामक नार्वे ावाचावा मुनेवर्य कितन नारे, जांबाबा (क्यम फ्रेश्टिक) किनि-ेबोट्ड । कारबंदे जेशाहरे, गर्देश जासहा

थर्षा गरेशा मर्द्ध, कर्ष्य गरेशा मर्द्ध, ट्यन्नम দলপতি লইয়া।

खेलिशानिक विवत गरेता. विजीव कर्त । विकानभाज ना शाकाम एडिवियम निधि-বার ভার ধর্মশান্ত স্বরং গ্রহণ করিয়া-हिल। एडि (कह सिथ नाहे: किंद्र मकन (सर्भेट्र व म्युक्त वक्षा मा একটা প্রবাদ প্রচলিত হইয়া আসিয়া-ছিল। সেই সকল ভিন্ন ভিন্ন প্রাবাদ ভিন্ন ভেন্ন দেশের ধর্মগ্রছে সংগ্রীত হ্য়, নৃতন ধৰ্মের সহিত সঙ্গতি করিবার নিমিত হয় ত সেই সকল প্রবাদের কোন কোন অংশ পরিবর্তিত হইয়া থাকিবে; কিন্তু এই সকল সংগৃহীত ध्येवारमंत्र महम मृत्यर्ग्यत महस क्रि যদি বল একটি প্রকাপ্ত অপ্ত বা ডিম্ব এক সময় প্রমেশ্বর প্রস্ব করিয়াছিলেন; সেই ডিম তিনখণ্ড ক-রিয়া অর্গ, মর্ত্ত, পাতাল হইয়াছিল: এবং দেই ব্ৰহাও হইতে জড়ল্পন স্কল विनिर्गं इरेग्नाहिन, फाहा विनात "আত্মা পরকালে ফলভোগী" এ কথার धनाथा कि इटेन ? अथवा यमि वन श्रुष्टित शृद्ध भन्न गरे अधकात्रम्य हिन् দেই **অহকারে ভ্যোতির্মার** ভাসিতে हिर्तिन, अथवा यति वत रहित भूर्वा गक्नरे क्रम्यत् हिन, त्ररे क्रत्नत्र केंश्रत क्षेत्रत शतिप्रवसाटव हिटलन ; काहा इंटेटल षाया गडकारम कन्नत्यांनी व कथाह क्सिंग जनाथा बहेस १ ८४ क्रमोप्रति स्टब । कार्यदेव अविक्षेत्रः नामाना लाटक्या वर्षाव्यदेव दक्षणवास

প্রস্থ চিনিরাছে, ধর্ম চিনে নাই; ভাষা-রাই এই সকল প্রবাদপার্থক্যকে ধর্ম-পার্থক্য মনে করে।

আচার লইর। তৃতীয় বৈৰম্য। এই পার্থক্য সম্পূর্ণ স্ম্বর। দেশভেদে খতর আচার, খড়ত্র ব্যবহার প্রচলিত হইরা পতে। উত্তপ্তদেশে নিতা অবগাহন **छश्चिमनक**; नाक्षाश्चरमध्य नाम भीड-ध्यथानामण जाहा चांछ कहेकतः काटकरे নিভালান আচারস্বরূপ উত্তথ্যমেশে হইয়া পড়ে; শীতপ্রধানদেশে তাহা হর না। এই স্থলে উত্তরেদেশের ধর্মগ্রন্থে यनि निकाशास्त्र वावका थारक, कांब শীতপ্রধানদেশের ধর্মগ্রন্থে তাহা না थात्क, जाहा इहेल नामाना लात्कता हेहा श्वक्रकत देवस्या विद्यवंता करता কিছ ৰাস্তবিক ইহা ধর্মগত বৈষ্ম্য নতে। সান আহার ধর্মান্তর্গত হইতে यनि कान धर्माश्राम्हा পারে না। विद्यान करवन (य. ज्ञारमव द्याच ७० পরকাল পর্যান্ত পৌছে, তাঁহার উপদেশ কেবল অভি সামান্য লোকেরা গ্রহণ এরপ অবিবেচক ধর্মবেতা ष्यत्व हिल्ता। (कान काँगा श्रेष्ठतत গ্রীতিকর ভাহার উপদেশ দিতে গিয়া ছই একজন বা নিউন্নে সার কথা বলি-बारहन, नजुदा अधिकाश्म छेशरमञ्जाता क्राःकातांद्रक चरमचानीत्मत्र मन तका कतिबारहंग। व्यवस्था आजात्रशंख देव-यमा भाकिमा निवादकः। त्कक् विवर्शन द्भम माकि त्वतित्व क्षेत्रक वेष धीक

ँदन । ्रेक्ट विश्वाद्यम, आशांत महिता . দ্বব্যর বড় প্রাড়াপ্রাড় প্রিক্ত বা था छत्रा ने बात ने ने बात ने विद्यास मारे। विषयात शातिराशिक विका व्यात्रत महासत चाह्यः (क्ट् वटनन তাঁহাকে পুশাচন্দন দিলে, তিনি বড় মিগ্র হন । কৈছ বলেন, তাঁহার প্রাশংসা क्रिट्र जिनि वर्ष धूनी इन। ८क्ट् वरनन, छांशादक आहत्र कतिता छ।किर्ल বড় আপ্যায়িত হন; কেই বলেন, তাঁ-रात निक्षे नञ्जा श्रीकात कतिरण, তিনি চির্বাধিত হন। কেই কেছ আবার ভাহা স্বীকার করেন না। এই-क्रार्थ करनक मञ्रह्म कार्य । किंद्र **ध गक्न निज निज हैन्हा** स्वादी कथा ছাড়িয়া বধন তাঁহারা মূলকথা বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন, তথন সকলেই একমৃত। মহুষ্যের পৈশাচিক প্রবৃদ্ধি **সংশোধন করিবার নিমিক্ত সকলৈই** ष्यात्राराम धकवाटका छेशालेल कर्त्रि-बार्टिम । मकरलहे विविद्याद्यमे, चार्थ-পরতাশুন্য হইয়া প্রোপকার कत्रिद्य। অপ্রক্রেশ স্বীকার করিয়া পরহিত সাধন করিবে। ইহাই জখরের প্রীতিকর কার্যা। মিথ্যাকথার পরের अनिद्वे मस्बन, बहेबना मठावामी इहेंद्र । रेखियशक्ष हरेल, जातात जनिहे र्य **बहेबना बिरछिन्न इहेर्ट्ना** नजावानी जिए जिन्न इंदेरन चर्ग निक्त । वंदेन्नेन मुगनीडि नंबरक दगान करेनका नाहे। त्य मक्य काद्या वेषद्वती विकित्तायन

इक् विनद्या मृजधरर्या मक्न (मर्ग्य) विधि-**वक्ष हरेबाट्ड, छाझ जाला**हना कतिबा एमिटल, **এই উপनक्षि इम्न** (य, नेपरत्रक वीजिमाधन व स्टब्ब्ब्र ये डेट्समा रडेक না হউক, মহুৰামধ্যে প্ৰাতৃভাবসংবদ্ধ कता এই शर्मात्र विरमक উत्ममा, अशवा সমাজস্ত্র সূঢ়ীভূত , করিরা যাহাতে সমাজের আভ্যস্তরিকশক্তি ক্রমে কিকাশ পায় ভাহার সহায়তা করা এই মূলধর্মের উদ্দেশ্য। প্রথমে ব্যক্তিগত দোষ সং-(भाषिक स्ट्रेल, (भव नमास्नव स्मारवन অপনয়ন হইবে। আত্মামূলক ধর্মবারা ক্ষেক হাজার বংসর অবধি ব্যক্তিগড **(मारवंत्र नः स्मायन चात्रष्ठ इहेत्रारहः, এই** ধর্মাবলমীদিগের আর পূর্ব্বনত পৈশা-চিক প্রবৃত্তি নাই, সামান্য ব্যক্তিগত-দোব কোন কোন অংশে পৃৰ্ব্বগত থাকিলে থাকিতে পারে; কিন্তু সাধার-**৭ড: গৈশাচিকত্ব ঘুচিরা মনুবাত্ব আ**রম্ভ स्टेबाट्स । জামরা ভাহাই বলিভে-ছिলাম, যে পর্যান্ত আত্মান্ত্র হইয়াছে, সেই পর্যান্ত মনুষ্যান্ত সহক্ষে নৃত্র বুগোৎপত্তি আরম্ভ হইরাছে।

আত্মা অমুভব প্রথম কে করিল তাহা ছিন্ন করিবার উপার নাই, যিনিই করুন তিনিই মহুষ্যের মহাশুক ছিলেন। তিনি বে কীক্ষমন্ত্র দিরাছেন তাহার শক্তি অসীম। এই বীক উচ্চারণ মাত্রেই মনুষাছের প্রথম হার পুলিরা গিরাছে। প্রার পাঁচ হালার বৎসরের অধিক কাল হইবে মানবালোভ এই হার দিরা

বহিতেছে। দিতীয় দারে পৌছিতে বিশ্ব আছে। যে মহাগুরু বিভীয় বারের वीक्रमञ्ज पिरवन जिनि अक्ररण वह पूरत। अथम वीरकत कार्यात्र**स्ट** स्टेबाह्य भार হয় নাই। সে কার্য্য পরপ্রিরতাসাধন। ভাহা সংসাধিত হইলে সমাজের আশ্চর্যা শক্তি পরিক্ট হইবে। পরপ্রিয়তা সংসিদ্ধ করিবায় নিমিস্তই এই নৃতন ধর্ম, এতদ্ভিন্ন ইহার আর কোন উদ্দেশ্ত নাই। এই ধর্ম এক্ষণে পৃথিবীর সর্বতি। মুসলমান ধর্ম বল, এছিান ধর্ম বল, ষে ধর্মাই বল কেবল নামভেদ মাত্র, সকল ধর্মই আত্মামূল্ক। আত্মা হেতু স্বর্গ নরক, পাপ পুণ্য, ইহকাল পরকা**ল** উত্থাপিত হইয়াছে; আত্মা হেতু ক্রিয়া কলাপের প্রয়োজন হইয়াছে। এই আত্মা হিন্দুর আবিষ্কৃত অতএব আত্মামূলক ধর্ম যে আকারে যেথানে প্রচলিত থাকুক म तकन एक है हिन्तू धर्म विनिया नाम कत्र व করিলে নিভান্ত অসকত হয় না।

## দ্বিতীয় পরিচেছদ। সংস্কার হচনা।

আন্থামূলক ধর্মের আমরা যথেষ্ট প্রশংসা করিরাছি। ইহকালের কার্যা-ফল পরকালে ভোগ করিতে হর বলিয়া এ সংসারে অনেক সংকার্য হইয়া গিয়াছে, এবং অল্যাপিও হইতেছে। কিন্ত প্রশংসা এই পর্যান্ত।

যিনিই যাহা বলুন, কোন ধর্ম সভা

সভাই পারত্তিক নহে। সমাজের মঙ্গল-माधनार्थ मकल धर्मारे थानीज रहेबाटर, কেবল ভান্ত্ৰিক অভিধেয় পৈশাচিক ধর্মের কথা স্বতন্ত্র। নতুবা সকল ধর্মের উদেশ্য মহুষ্যের মধ্যে পরস্থার ভাভৃ-ভাব সম্বদ্ধ করা ভিন্ন অন্য কিছুই নহে। তুমি কাহারও হিংসা করিবে না,কাহারও অনিষ্ট করিবে না, কেহ ভোমার অনিষ্ট করিলে তুমি সাধ্যমত তাহার উপকার করিবে; তোমার বামগণ্ডে চড় মারিলে, তুমি দক্ষিণগণ্ড বাড়াইয়া দিবে, যাহার যাহা নাই, তাহাকে তাহা দিবে, সকল ধর্ম্মের এই একরূপ উপদেশ। ইহার ্উদ্দেশ্য কেবল সীমাজিক ভিন্ন পার-जिक नरह। अर्थनान, अन्नमान প्रकृष्ठि সংকার্য্য এই সংসারের জন্য, দয়া দা-কিণা এইখানেই উপকারক।

নীতিশাস্ত্রের যে উদ্দেশ্য ধর্মশাস্ত্রের ও সেই উদ্দেশ্য। উভয় শাস্ত্রের একই উপ-দেশ। কেবল এইমাত্র প্রভেদ যে, নীতিশাস্ত্র বিজ্ঞতা শিথায়, ধর্মশাস্ত্র সে বিষয়ে বরং কিছু বিরোধী। নীতি-শাস্ত্রের উপদেশ যে অন্যের হিতসাধন কর, ভালই, কিন্তু তাহা বলিয়া আপ-নার হিত বিশ্বত হইও না। ধর্ম-শাস্ত্রের উপদেশ যে আপনার হিত বিশ্বত হইরা কেবল অন্যের হিতসাধন কর। ধর্মশাস্ত্র বলে মিথ্যাকথায় বড় পাপ, কেন না অন্যের অনিষ্ট করে। নীতিশাস্ত্র বলে মিথ্যাকথা বড় লোব, কেন না আপনার অনিষ্ট ঘটাইতে

**व्यविमा नी** जिलाहा विकंह পারে। স্বার্থপর, ধর্মশান্ত তাহা একেবানে নহে, অন্ততঃ ধর্মাশাস্ত্রের উপদেশ দেখিয়া বিচার করিলে, এইদ্ধপই বোধ হর। किंद कन विरवहना कतिएक श्राटन. তাহার বিপরীত বোধ হয়। স্বার্থপরতা ৰারা স্বার্থপরভা নিবারণ করিছে চেটা পাওরায় এইরপ ঘটিরাছে। লোকের ভাল করিলে ভোমার আপনার ভাল হুইবে, এই প্রলোভন বাক্য এই ধর্ম্মের প্রধান দোষ। কেবল আপনার প্রতি मृष्टि कत्र, जाभनात्र मजन (हर्षे। कत्र, किरम তোমার আপনার পরকাল ভাল হইবে, কেবল তাহাই চিম্ভা কর, অনবরত এই পরামর্শ যে ধর্ম্মের মূল সে ধর্ম আলোচ-নায় স্বার্থপরতা কালেই অভ্যন্ত হইয়া পড়ে। এক্ষণকার লোকেরা কিছু স্বার্থ-পর বলিয়া যে প্রবাদ আছে, ধর্মই হয় ত তাহার হেড়। অনেকে বলেন যে, বয়স হইলে আমরা স্বার্থপর হইয়া থাকি, আবার ইহাও শুনা যার বে, বন্ধস হইলে মহুষ্যেরা কিছু ধর্মপ্রিন্ন হয়: উভয় কথাই সতা কি না জানিতে (शत्म, विकाम। कत्रा आवभाक त्य, লোকে অত্যে স্বার্থপর হইরা পরে ধর্ম-প্রিয় হর: কি অরো ধর্মপ্রের হইরা পরে স্বার্থপর হয় ? কেন না দেখা যায় স্বার্থপরতা ও ধর্ম্মনিষ্ঠা একাধারে সচরা-চর থাকে, যাহারা স্বভাবত: স্বার্থপর, ভাহাদের স্বার্থস্থহা যে এই शर्षा विरामय भविष्ठश्च इंहेरव, देहा এक

শ্রেকার বৃশ্ধা যায়। এইজন্য স্থার্থপর ব্যক্তিরা বড় ধর্মপরায়ণ হয়; অথবা বলুন ধার্মিকেরা বড় স্থার্থপর হয়। উভয় কথাই সম্ভব। প্রচলিত আত্মামূলক ধ-র্মের পছাদোষে এই সম্ভাবনা ঘটিয়াছে।

এই স্বার্থপর ধর্মের আরে এক নাম
সকাম ধর্ম। একলে সকল ধর্মই
আয়ামূলক এই জন্ম সকলধর্মই সকাম।
একসময় হিল্পুধর্ম নিয়াম হইয়াছিল।
দেই সময়ে ভারতবর্ষের বড় গৌবব।
অদ্যাপিও আমরা সং কর্মের পর "এতং
কর্মফলং শ্রীকৃষ্ণার অর্পন মস্ত্র" বলিয়া
থাকি। কিছু ভাহা কথায় মাত্র,মনে জানি
যে, শ্রীকৃষ্ণ এমন অবিবেচক হইবেন না,
আমাদের সংকার্মের কল অবশ্র তিনি
আমাদেরই দিবেন। একপে এই সকাম
ধর্মের বিদ্বেষী ভানেকে হইয়াছেন, তাঁলিরা মনে করেন আমাদের হিল্পুর্মের
সংস্কার আবিশাক।

সচরাচর যেরপ সময়ে ধর্ম্মগংস্কার হইরা থাকে বাঙ্গালায় যে সেরপ সময় উপস্থিত হইরাছে এমত নহে। সামাজিক অত্যাচার ধর্ম্মগংস্কারের এক প্রধান হেতু; বাঙ্গালায় একণে সে অত্যাচারের বড় বাড়াগাড়ি নাই, অতএব সেদিকে আশাও নাই। চৈত্তাদেবের ধর্ম সামাজিক অত্যাচারে জন্মিয়াছিল। তাল্লিক কালে বাঙ্গালা ভ্রানক নৃশংস হইয়া উঠিয়াছিল, এইজ্ভা বৈষ্ণব ধর্মের প্রয়োজন হয়। আময়া একণে সকলেই চৈত্তা দেবের ধর্ম আময়া একণে সকলেই চৈত্তা দেবের ধর্ম স্পাই গ্রহণ করি বা না করি

কিন্তু পাকত সকলেই বৈষ্ণব। ব্রাহ্মরা রাগ করিবেন নতুবা বলিতাম তাঁহারাও বৈষ্ণব অর্থাৎ প্রেমধর্ম্যের শাখাবলম্বী। এক্ষণে বাঙ্গালির যাহা কিছু আছে তাহা হৈতনাপ্রসাদাং। চৈতত্তের দ্বরোসমাজ-বিপ্লব উপস্থিত হইয়া থাকুক, অথবা সমামবিপ্লব উপস্থিত হওয়ায় চৈত্ত উপস্থিত হইয়া থাকুন দে মীমাংসা একণে অনাবশ্বক। যে অবস্থায় চৈত্র-দেব ধর্মপ্রচার করেন একণে বাঙ্গা-লার সে অবস্থা নহে, অক্তান্ত দেশে যে অবভায় ধর্মানংস্কাব হইয়াছিল একানে সে অবস্থাও বাঙ্গালার নহে। অতএব সামাগ্রত দেখিতে গেলে একণে বাকা লায় ধর্মসংস্থারের সম্ভাবনা নাই অথচ বিশেষ পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে বাঙ্গালায় ধর্ম্মংস্কারের আরম্ভ ইইয়াছে বলিয়া বোধ হইবে।

পূর্ব্বে সকল দেশে সকল সমাজে লোকে কেবল মাত্র একটি করিয়া ধর্মা দেখিতে পাইত বা একটা ধর্ম্মেরই চুই চারিট শাখা প্রশাখা দেখিত। ইদানীং নানা ধর্মা একত্রিত হইতে আরম্ভ হইন্য়াছে এই জন্য ধর্ম্মের প্রতি শ্রদ্ধা বা ভক্তি সকল দেশেই কিছু কিছু কমিয়া আনিতেছে। নানা ধর্মা একত্র দেখিনার ফল বাঙ্গালায় কিছু বিশেষ ফলিয়াছে। মনুষোর প্রস্তুতি এক, তবে ধর্মা সভ্রের কেনঁ? এ কথা বাঙ্গালার প্রায় আনেকেই আপনা আপনি আলোচনা করিয়া পাকেন। এই কথার অন্তর্গত

আরও অনেক তর্ক মনে উপস্থিত হর।

হুর্গ এক, তবে পাপপুণা বৃত্ত কেন ?

মাংসভোলন এক ধর্মে পাশ, ভাব ধর্মা
ভাহা মহে কেন ? অগতেব প্রত্তী এক,

কিন্তু ধর্মের প্রতী বাসন্ত দেশে বৃত্তর

কেন ? এইরপ আ লানেনা যেন করে
ভারার মনে প্রচলিত ধর্মান্তকে সম্পেই
উপস্থিত হওয়া সম্ভব। অনেক বালানির মন্নে সে সম্পেই উপস্থিত হইরাছে,
ভাহাই ধর্মসংস্কার আপনালাপনি কারেজ
ইইনাছে।

**बहे म** ऋ'दिव मण्डांवक नांहे, अवात-काव (क टेइडनारमन, बिकामा कवित्न কোন উত্তর নাই। কোন প্রামর্শ नाहे, युद्र नाहे, खेल्यांग नाहे, व्यवह **সংস্থার আবিস্ত হট্মাছে।** ধর্ম্মবাজক नाहे, धर्य श्रहात्रक नाहे, दकान श्रष्ट नाहे, अथा ठाविनिटक देवात कार्या स्टेट्टए । वाह बा कहे मःश्वाद अहन कदिएछ. (इन, रीइ रमद्र गत्थामास यक नाहे, केश्वादम्ब ज श्वाय दकान इव गाँदे: किन खरे दृश्य काशासत केरमथ कविष्य क्षेट्डाक পুনঃপুনঃ विनिद्रा, देशियात आर्थाक्टः वज्रवद्दी माम (मध्या य.हे(कद्या डीहारमत का-शब्दि थाटक, डीहाता कानागाम अहन **\*\*\*** 1

ব কৰে কি কি বিষয়ের সংস্থার আবৃত্ত হইয়াছে তাহা বলা ক্ষিণ নহে। সূত্র সংস্থার ক্ষায়ের প্রকৃত্তিবৃদ্ধকে। প্রাচন ধর্মের বেরুপ্রাচন সাঞ্গানার প্রকৃতিক

হিল, ভাছাতে ঈশব মহুবাাক্ততি বলিয়া नाधावनकः विश्वान किनः विदयभीता বাদালায় আদিয়া প্রতিমা দেখিয়া কডই উপহাস করিভেন; মহুষোর আকার হইতে শ্বীরের আকার কর্মনা করা কং ই व्यात्रच विषा डीशामित (वाष रहेक। ভাগার। তথন এক পৈঠা উঠিয়াছিলেন, আর একটি পৈঠা উঠিতে ভারাদের বাকি ছিল্ল ভাঁহারা আকৃতি ছাভিবা ছিলেন; কিছু প্রকৃতি গড়িতেন; অল্যাপি काशामत मर्या (महे बीकि विवादिक्। মহুবোৰ মত ঈশার দরাময়; বরং কিছু বেশী। ভিনি মহুবোর মত রাগান, কিছু হয় ত ৰাড়াৰাভি। তিনি স**হুষ্**রে **মত**ী প্রশংসাপ্রিম্ব,এই জন্য তাঁহার স্তব পুজার विश्यव कावभाक। এইরূপ ভাঁহার ঈশবের প্রকৃতি কলনা করিয়া থাকেন। বঙ্গাছীদিগের মত স্বভন্ত। মত্ৰাৰ আদৰ্শ হইতে ঈশ্বের প্রকৃতি অরুছৰ করেন লা। এ সম্বন্ধে তীহার। হয় ত অন্যান্য মতাবলমী অপেকা কিঞ্ছিও উন্নত। এটান বসুন, মুস্পনান वन्न, हिन्नु बन्न नकन मछ्हे थाइ-टिट नेपंत्र महूरवात मछ। मट्डि क्रेच्ड स्थावान, देक्म मा जायता দরবোন্।, সকল মতেই ঈশব ক্ষা-बान, (कम मा सामवा क्यावान्। नकन मटिक में प्रत प्रश्नाती, दक्य, ना आमता Cell(कंद्र म ख क्ति।

আমন্ত আশংলাব্যির, ক্রিয় স্বত্ত বে দেইরূপ ্রশ্বংলাব্যির ইহা কোল মান্ত বসপহীরা নিবাস করেন না।

তুমি বড়, তুমি আজি বড়, তুমি বাই।

মনে কর, তাহাই করিছে পার, এই

বলিলে সিবর বে আপনাকে বড় জান
করেন বা তাহাতে বিশেষ পরিত্প হন

এ কথা বলপছীদিগের নিকট অতি

অগ্রাহা। এই জন্য তাহাদের সন্ধা।
আহিক নাই, প্লা প্রেয়ার নাই।
ভাহারা ঈশ্বর্বে প্রশংসা করিয়া প্রকাশ
হাত করিলাম মনে করিতে চাহেন না।

ক্ষারের যাহা ইচ্ছা লোকে তাহা করে না। তাহা ক্রাইবার নিমিড তিনি আপনি আসিয়া ক্ষাগ্রহণ করেন, কিছা নায়েবস্থরণ আপনার প্রকে কি কোন দোন্তকে কখন কথন পাঠাইরা থাকেন, এ কথা বলপন্থীর নিকট অতি অগ্রান্থ। বাহার নিম্নে সকল হই-রাছে, সকল চলিতেছে, তিনি এ সম্বন্ধে কোন নিম্ন বাঁধিতে অক্ষম এ কথা ভনিলে বলপন্থীরা হাসেন।

বে নির্মের বলে কুল কুল বীল
মৃত্তিকা হইতে রসগ্রহণ করিতে পিথিল,
সে নির্ম্বারা মুখ্য কিছুই শিবিতে
পারিল না বলিরা আকাশ্যাণীর আবশাক্ষতা হইরাছে বা সেই জন্য তুলটে
স্বান্ধের আবেশ লেখার আবশ্যকতা হইযাছে জ ক্রায় বলপদ্বীরা উপাহাস
করেন ট্রাহারা বেল, ক্রোরাণ আ
ভূতি গ্রহ ক্রিয়ারীত বা ইপার আবিটি
ব্লিরা বীকার করেন লা

शहा नरकरण नना दनग आहे हैं

Rent | aufelle Pfate in eine छ।शास्त्र पून एराजेत भारतिहर भारती याहरकट्या विश्वयम्बः जाशां भौनकार्वे অসীকরে করেন। বিসীরতঃ ভাঁচারা ८वन, बाहरवन, दंकाजान, भूबान किहूहें यात्नन ना, धर्मश्रह व्यवस्थितनीय वरनम् ज्ञीत्रवः कर्कना वसना, छव ख्रा পূৰা প্ৰেয়ার ভাহায়া সকলই বৃধ্ वलन। डीइ। त्व कार्यावाता त्वा याहे-তেছে বে, একণে কেবণ এই ভিনটি স্ত্র স্প্রীক্ষত হটরাছে, আর করেকটি সূত্র অস্পষ্টভাবে কিঞ্ছিৎ অন্তরে আছে। ভাহার একটি এই বে, পরকালের মণ্ড-विधि चारेन मिथा। चर्थाए चर्ग नंत्रक मिथा। भाभ भूगं मिथा। आहे अक्ष আর্ঞ অম্পষ্ট—আরও দ্রে আছে, সেটা বোধ হয় এই ; মহুষোর বাক্তিগত স্বত-ল্লভা আপনা হইভে ক্রমে ঘুচিবে। धूमक्नात प्रज्वा प्रिया नमूम हरे-রাছে, মহুবোর ব্যক্তিগর শুভন্নতা গেলে বসইরূপ কি একটা ইইবে ভাহার व्यक्ष्यं व वागानि दत्र मारे, कारकरे नामकदर्श्व रह गारे।

शूर्वविषात्रित धरे ते तकत वासि क्रम विष्ठादक छाडा छाल कि मन्य भागवा ता नगरक कर्मन त्वान कर्गा वित्रक क्रमक निष्ठ । हैस्तरक बर्चनर-कात देवि वना ना गाव, छोडारकक्र भागकि नाहें। भागास्त्र क्रमे ब्रिक्ट विक् हैस्स् त्न, क्रिक्ट क्रमिक्ट विक्शादक्र

। हर्द सोमानि क्रमानिता मुक्तन समि केशा । देनत प्राकृति मुस्टरात मेळ सटर : ४० हे ार्ग, मत्रक, भाग, भूवा श्रष्ट्रां मक्क नक्न जन्म छान्द्रिक वृतिबादह । हिंड इरेग्नाहिन। अनुस्तुः, बानानोद গহার অনাথা আরক ক্রীয়াকে বিশ্ব

क्ल रहेबाहिन : दन्दे कन्नना रहेदल क्यानान जिल्ली, ननक, गान, जूना व वन्न । वाजानाम निर्शेष बाह्य मद्दाः।

## সমাজ সংগঠনতত্ত্ব

"স্যাজ কাহারও কৃত নহে; কিছ ग्रामा व्यापनि वृद्धियाश हरे ग्रामीटक्या াণীর শরীর অথবা কোন উদ্ভিদ নিলে পর আপনাআপনি বৃক্তি হইতে াকে, কোন ব্যক্তি তাহালিগের বৃদ্ধি-ম্পাদ্ন কুরে না; ভজ্ঞপ ্নমান্তের র্দন এবং উন্নতি কাহারও চেটা । रक्तारशंक न्तर, किन्द जानना-।। भनि इहे श्रे थादक। यक्षामा (यमन् जनमन करम, कथना दर्गम भिन्नकर्म रत, एक्त रक्र नमार्कत वृक्तिनाथन रत ना। वर्षापित क्रमा क्विम, श्रात्र कार्त्राः व्यक्तः मुल्लानिक नरह । स्य नगरेकक बहुना चार्चादिक, चुड:-कन जाकि विक्रियां होने जनने करिया

**धरेत्रश चमुक्तकाविदिशत मत्या ग्याब**ः বন্ধনের ক্রেপ্তি প্রান্ত হয় নাই। यमन मञ्जूरवात नतीत दा अना द्वान ुरेशन वहन्त्याक वाकि मिनिक हरेगा, कान बार्य या नगरत कान निर्मिटे वाग्यात्न दाम क्रिएक जारम ना, ज्वरः नकत्न नबद्दक हरेबा काता-काता-প্রবৃত্ত হইতে পারে না। কিন্তু সভা-षाजिनिरात्र मर्था जिल्लावं नृष्टे रहा। সভাছাতিরা বহুসংখ্যক লোক একজ-মিলিত হইয়া অবস্থিতি করিতে ভালঃ वारमः। এই একল अवशस्त्रक नामः नमाध्यक्ता (य नकल काजित मर्था) नमाभवभागक स्वापा स्टेबारस, जारा-त्राहे व्यायाहित्यंत्र कारमाननात्र विषया: रा नमछ द्वाल विनिष्ठ रहेश अवि । उत्त समुद्राद कार्या नटर । त्य नमाच ठरेकाटक, छाहानिशत्करे सामग्री (महे नगरमक (लाक विवा तिहा तिहा । स्टि विष्णान अवर सोबार्यक रणार्थक निर्मां निर्माण विष्णाहे चामसे छारानिरगेत्रहे ि अब अवः ब्राह्मसम्बद्धाः अपन विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान नवरक द्वान विकिन वामकात पति । तमथा यांच्य महानवा देविशूटर्स दन वाकिति।

के कपूर भेजा। त्ये व्याधिक याचा सत्य सर्वादक्षत श्वाभा क व्हेमादक, जावदिवन जाहेबा बामारमात्र खाँछाउँ वह गरीक करम करम अविशृहे ६ छेमछ इंहरेरे। এই বৃদ্ধি ও উন্নতি কাহার বারা দক্ষা पिछ हम ? देश कृजिय, कान बास्कि कर्जुक मन्त्राष्ट्रिक, ना हैश प्राम्पदिक, অভঃপ্রবৃত্ত । আমুরা বলি, সমাজ काहात कुछ नरह, हेश' आशना जार्शन गःत्रिक इहेना थाटक। वाहीता **उ**हे श्रद्धा श्रीकांत्र करतन ना, उँशिता देनि-र्दन (य, नगान कि कडन भगार्थ (य, आश्वात वृक्षिगांथन आश्वी कृतिद्वा ব্যাল কেবল ক্রকগুলি লেকের সম্প্র-মাতা। স্তরাং ইহার বৃদ্ধি বা উন্তি चयुर्यात इट्ड निहिड, मस्यात मन्नामा धरशक्तिम। धक्रभ चार्शक कतित आयता विविव त्य, आनामिश्व श्राह-পক্ষেরা আমাদিগের কপার অর্থ সন্যক্-कर्ण द्विटङ भारत्रम माहे। चाह्र व आयहा आमानिरशत मक आदेश विभव-দ্ধণে বুঝাইতে চেষ্টা করিতেছি।

नेबास्वकत्वत प्राप्त हरेल, गया-चार्ड्स वालियर्ग चार्गनामित्र अक-नामन्द्रां वह कृतिए नाइ अमन क्षात लामबल्कि मरश्रामत्वत एठडा

चार्गरानि इहेर्स गुर्शिकाम उनक्रिक इटेर्टा शृह्विदाम खेलाइक इहेर्ड आत बागारम्य धकेल संविष्ठि कतिनाव मछावना दकाशाब, छाहा बहेंदनहे आमा-(सत ममाम विक्रित इहेगा यहित। चाउश्च गकरलंब विवायस्थान कतिएउ शास्त्र अवश्यक्षांद्रक भगत्वक इहेगाः कार्या कविरच चार्यम मिर्ड **এम्स अक्ष्रमारक कामारमंत्र कर्छ। कन्ना** कि 5 व । वेक विकास काम वामार विकास गमास्कत निवाधी भक्ति निव अवर देनि ८न्हे क्वां बात्रो आमानिशत्क आरमण-भागतन विश्व (मर्विटन উচিত मर्खविशान পূর্মক উচিত পথে আনিতে পারিবেন। এই প্রকারে সমাজের উর্ভির মূলপত্ন व} क्रिंटक ছইয়া পাকে। যে চ:লাইবার কমভা দেওয়া হয়, ভাঁহাকে म्बाटकत (बाटकता वाका वरन । म्बाब-বন্ধনের প্রারম্ভেই রাজার হত্তে সর্ম-नियुषी क्षत्रका श्रामः न कतिएक स्य. ना के दिल गमाय हरन मा अवर उन्निक्ति। इ ক্রিতে পারে না। ভাতএব স্মালের **छाणम अवशास्त्रक्षन (स्टा** क्षकार कालमाक। 🖚 हेर्द्रा दे । बारमम ये गर्भ विजयत कादा मुल्लामिक . क्ट्रेंच अवर छावाट्डरे गर्गाखन चेन्नडि करव । कार्यका वाल त्य, आमात्यक इटेटन । किंग्र मामानिक छन्न एक शतकात्म लाई किंव किंव किंव के कार्त्र, अधिक इहें हैं थे किंदन, उन्नहें नर्माद्विक बाशास्त्र अक्षेत्राम् क्षेत्र करेटव, काशास्त्र कार्यात्रको समाना अक्षान क्षेत्र करेटक TO WIT APPEARS THE METAL PRICES COLUMNICON SERVICE. MAN TOPPOST WINDS IN THE TOP OF THE PARTY MAKES MINE প্রমান্ত প্রথানী মতে প্রবৃত্তি হরবে। अमाज्यानानीत प्रवाश हरेतन, श्रमाजा चार्यनामित्रते अविमिधि निर्दा-हन कतिरवं अवः अ नकत अहिनिधित উপরেই সমাজ্ঞাসনভার ন্যক্ত হইবে। वक्त प्रसिद्ध इहेर्द वह स्व विक डेब्राडि, देश दक कतिम । देश कविन, কোন বিশেষ বাজি বার। সম্পাদিত; श्वमण्यामित्र । ना हेश चलःखेत्रक, व्यामापिश्व अिंडिशरकत्री विनिद्यत (ये, ইহা প্রথমাবস্থায় রাজাকর্ক সম্পা-पिछ, शांत्र गमास्त्रत् ताकमाधाद्रगकर्क्**क** गम्भाषिष्ठ এवः नर्वरमध्य ध्रमापिरगत প্রতিনিধিবর্গকর্তৃক সম্পাদিত। কিন্ত त्राका दक ? त्राका दक्वन সমাজের अञ्च র্গত ব্যক্তিগণের স্ক্রিম্তিতে সমাজ-খাসন ক্ষমতাবিশিষ্ট একজন মহুষাসাতা। রাখা সমাজের ইত্রিক, তিনি সমা-(अबं जधीन। जिनि अमन कान वावश क्रिटिक शास्त्रम मा, याद्या ममास्क्रत धानिहेकत, यादार्ड नगारकत अभनन चिटित ध्वर याहा नमार्कत कार्यन (नाक्षित्रित है ऋ छिक्न न दह। (मज़र्भ ব্যবস্থা করিলে, শীম ভাঁহার লোপ कविद्व इंदेर्व । नजूरी केंद्रांत कमण ंशहे हहेर्दा हेरगटल, अशिकात कम्-अरमन (व क्रिक्शियन क्रमा मूलम नामा विक जनका मरकामन कतिएक कुछकारी कहेत्क शास्त्रम संहै, धन् शुक्त इच कतिशा श्रीकृत्क शासित्वन मा। जानि भागवा अक्रम दे आरोड कार्बांड अक्रांड वर क्रिया काशार मानत यक कतिया

कारात कावन १०३ (व नगारका का जिल्ली कृतिम नरह, रकान मध्याक कालिक इंदेरक "नीरत ना । ्रन्या चारुर्ग इ<u>ँ</u> एका क मिर्शन (य मक्स ও हेव्हा बादक, उन्नयुगादत्र नेमाहक्ष वृक्ति व स्मिति हहेदन। खुक्ताः मुम् ভের অভাব ও ইচ্ছা সমালের উর্তিক নেতৃপর্ণ ৷ এই অভাব পুরণ এবং: ্তই ইচ্ছাতুরপু কার্য্য করিতে, স্থা<del>ত</del> : ष्यां भिन्दे । हिन्द ; ष्यत्मात । श्वर्कनात আবশ্যক্তা রাখিবে ুনা। 'লম্বাজ্ চ-लिए विलाल वृत्तित्व रहेर्य (म, সনাবের অন্তর্ত লোক্সণ কার্মো প্ৰবৃত্ত হইবে। অতএব ইহা প্ৰসাণিত इहेन (य. সমাজের উন্তি খত: अंदृत्त. স্বাভাবিক; প্রদর্শাদিত বা কুতিম নহে। এইরপে সমাজ প্রথম কাবছা উত্তীৰ্ হইয়া প্রপরবর্তী অবস্থান্তে উপ-नीज • इहेटवा यथन नयार जब लाक-সাধারণের ছত্তে সমাজশাসন, তথ্নপ্ত ग्राज निर्क हिल्डिए। आवृत्र वर्भ अबाठबयागी अवर्षित्र इट्डा अति-নিধিবর্গের হতে সমাজরক্ষার ভার নাত इरेग्नाइ, ज्यन । नगर चड: शर्व, নিজ জুজাব ও ইচ্ছার অসুসারে চলি-তেছে ৷ কোন সমাজেই সমান অপর ्र (कान् स्यूट्यात कतात्र छ नट्टा अश्व (कान बाक्किहे मनाक्रक निर्देश में 

🖚 জ দুর সভ্য। যে ভাভির মধ্যে সবে সমাজের স্তাপাত হইয়াছে, তাহাদের লইয়া আমাদের প্রস্তাব। এই সমাজ क्रांच क्रांच श्री श्री अ छेन इ इटेरव । এই বৃদ্ধি ও উন্নতি কাহার দারা নকা। **षिष्ठ १**४? हेश क्रजिम, क्लान वास्ति-কর্ত্ত সম্পাদিত; না ইহা স্বাভাবিক, স্তঃপ্রবৃত্ত । অংমরা বলি, সমাজ কাহার ক্বত নহে, ইহ' আগন। আগনি সংগঠিত হইয়া থাকে। বাহাবা এই সত্য সীকার করেন না, ঠাহার। বলি-(दन (य, भगांज कि (हडन भगार्थ (य, আপনার বৃদ্ধিদাধন আপনি করিবে। সমাজ কেবল কতকগুলি লোকের সমষ্টি মাতা। হুতরাং ইহার বৃদ্ধি বাউন্ডি মহুষোর হস্তে নিহিত, মনুদোর সম্পাদ্য এবং কৃতিম। এরপ আগ'ত করিলে আমরা বলিব যে, আমাদিনের প্রতি-পক্ষেরা আমাদিগের কথার অর্থ সন্যক্-क्राप्त वृत्तिष्ठ शास्त्रम माहे। चारु वर আমরা আমাদিগের মত আবও বিশদ-রূপে বুঝাইতে চেপ্তা করিতেছি।

সমালবদনের স্ত্রপাত হইলে, সমাভাস্তর্গত ব্যক্তিবর্গ আপনালিগকে একশাসনস্ত্রে বিদ্ধা করিছে পারে এনন
কোন শাসনশক্তি সংস্থাপনের চেই।
করে। ভাষারা বলে বে, আমাদের
পরস্পারের স্থার্থ ভিন্ন ভিন্ন প্রকার,
বাহাতে একজনের স্থাহইবে, ভাষাতে
হয় ত আর একজনের ছংথ ইইবে;
এবং পরস্পারের কার্যাছারা প্রস্পারের

স্বার্থহানি হইনে গৃহবিদাদ উপন্তিত হইবে। গৃহবিবাদ উপত্বিত হই**লে** আর আমাদের একতা অবস্থিতি ক্রিণার সম্ভাবনা কোণায়, তাহা হইবেট আমা-(मत भगात्र विचित्त इटेशा याहे(त। ভাতএৰ সকলের বিবাদভঞ্জন করিতে পারে এবং সকলকে সমবেত হইয়া कार्या किंद्रिक व्यामिन मिर्ड शास्त्र এমন একজনকৈ আমানের কন্তা করা উচিত। ইহাব হত্তে অনিবা আমাদের সমাজের নিয়ত্রী শক্তি দিব এবং ইনি (नहे क्या वाता जामानिशक जारमण-পালনে বিমুধ দেখিলে উচিত দণ্ডবিধান পূর্বক উচিত পথে আনিতে পারিবেন। এই প্রকারে সমাজেব উন্নতির মূলপত্ন হইণা থাকে। যে বাক্তিকে সমাজ চ.লাইবার ক্ষতা দেওয়া হয়, ঠাঁছাকে मधारकात (कारिका) वाका परला। मधाक-वन्नरमत शावरङ्हे याजात हरछ मर्स-निश्ची करुड। श्रान कतिरह इश्व, मा কবিলে সমাল চলে না এবং উয়তিলাভ কবিতে পারে না। অভ্রব স্মাজের व्यथम अवडाय এक्षम (ग्रा) थाका একান্ত আনেশাক। 🛎 हेहँ दहे जारमण মত সমস্ত হিতকর কার্যা সম্পাদিত হইবে এবং ভাষাতেই সমাজের উল্লিভ হইবে। কিন্তু সামাজিক উন্নতি যত विक इट्रेड शांकरन, उड्डे नगरकत्र স্বানিয়ন্ত্রী ক্ষমতা রাজ্ব হস্ত হইতে স্মাজের লোক্সাধারণের হস্তে বা-ইবে, এবং দর্কশেষে দ্যাজের শাসন প্রাক্তর প্রণালীমতে প্রবর্ত্তি হটবে। প্রমাতন্ত্রপাণীর স্ত্রপাত হইলে, প্রদারা আপনাদিগের প্রতিনিধি নির্বা-हन कतिरव ध्वर धे मकल श्राटिनिधित উপরেই সমাজশাসনভার ন্যস্ত হইবে। এক্ষণে দেখিতে হইবে এই যে ক্রমিক উन्नि हिंहा (क कतिल। देश क्रिविन, (कान विल्पंष वाक्ति चाता मन्नापिड; न। देश घणः श्रदृत, चनम्मानित्। षामापिरात अভिशक्तिता निगरन त्य, টহা প্রথমাবস্থায় রাজাকর্ত্র সম্পা-निত, পরে সমাজের লোকসাধারণকর্তৃক गम्मानिष्ठ এবং সর্বাশেষে প্রজাদিগের প্রতিনিধিবর্গকর্তৃক সম্পাদিত। কিন্তু রাজা কে ? রাজা কেবল সমাজের অস্ত-র্গত বাজিগণের স্বাস্থ্যতিতে স্থাজ-শাসন কমতাবিশিষ্ট একজন মহুষামাতা। রাকা সমাজের ইছেক্টিড, তিনি সমা-(জর অধীন। ভিনি এমন কোন বাবখা कतिएक পারেন না. যাহা মমাজের অনিষ্টকর, যাহাতে সমাজের অনপল ঘটিবে এবং যাহা সমাজের সভাগত শোকদিগের ইচ্ছাতুকুল নহে। সেরুপ বাবসা করিলে, শীল তাঁহার লোপ করিতে হইবে; নতুবা তাঁছার ক্ষমতা মষ্ট হইবে। ইংগণ্ডে, অণিভার ক্রম্-अरवल रच विद्यालतित अना न्टन नामा থিক অবস্থা সংখাপন করিতে কুত্ত্যা হইতে পারেন নাই; এবং পূর্বতন বাবস্থা দকল যে আবার তাঁহার মৃত্যুর शद मगाद अधिशंवाच क्रियाहिल,

ভাহার কারণ এই যে, সমাজের বৃদ্ধি বা উন্নতি কৃত্রিয় নহে, কোন মনুষ্যকর্তৃক চালিত হটতে পারে না। সমাজের অরর্গত লে।কদিগের যে সকল অভাব ও টাছা থাকে, তদতুগারেই সমাজের বৃদ্ধি বা উন্নতি হইবে। স্ত্রাং স্মা-**জের অভাব ও ইজা সমাজের উন্নতির** নেতৃস্বপ। এই অভাব **পূরণ** এবং এই ইচ্ছাত্রপু কার্য্য করিতে সমা**জ** षाथि। हे हिन्दि; ष्रातात अवर्तनात আবশাকতা রাণিবে না। সমাজ চ-লিবে বলিলেই বুঝিতে হইবে যে, স্মান্তের অস্তর্ভ লোক্গণ কার্য্যে প্রসূত্রইবে। অত্রব্ইহা প্রমাণিত **इहेल (य, भगारक्त डेन्नडि चट: अंतृह,** স্বাভাবিক; প্রসম্পাদিত বা কুত্রিম न(इ। এইরূপে गমাজ প্রথম অবস্থা উত্তঃৰ্ হইয়া প্ৰপ্ৰবৰ্তী অবস্থাতে উপ-नी छ - इटेरव । यथन সমাজের লোক-সাধারণের হল্ডে সমাজশাসন, তথনও ग्राञ्ज निर्क हिलार हर्ए। जातात यथन প্রালাতরপ্রশালী প্রাণাত্তিত হইয়া প্রতি-নিধিবর্গের হস্তে সমাজরক্ষার ভার নাস্ত হইয়াছে, তখনও সমাজ স্বত:প্রবৃত্ত, নিজ অভাব ও ইচ্ছার অমুগারে চলি-তেছে। কোন সমাজেই সমাজ অপর কোন মহুষ্যের করায়ত্তনহে। অপর কোন বাক্তিই স্নাজকে নিজের মত করিয়া গড়িতে পারিবেন না। আমি এই দ্রবাটি আমার মনের মত করিয়া গড়িতে পারি, এবং মেই রকম প্রস্তুত

করিলে ইহা আয়ার ক্বত বলিরা নির্দেশ ক্রিতে পারি। এই দ্রব্যের রচনা ম্বরাং কুত্রিম হইল, ইহা আমার কুতি, हैश्टब्रिक्टिक विनिव, हेहा आमात "मार्ग्यू-काक्षत्र' (Manufacture) किन्न थानि-**দেহ অথব।** বুকাদির বৃদ্ধি কাহাবও সাধারত নচে: উহা আপনাপনি বাজি-বেই বাড়িবে. ভূমি যত কেন উহার ব্যাঘাত কর না। এইকপ বৃদ্ধিকে ক্লবিম বলা য'র না, ইহা স্বাভাবিক, चडः श्रेवुक्त। हेरदिकाउ हेहारक "शाल" (Growth) বলিবে। এক্সণে Manufacture এবং growth এই मक्तवायत (य কি প্রভেদ তাহা পাঠক ব্রায়েছন, যদি না বুঝিয়া থাকেন, তবে আর व्याहरू आयारनत माधा नाहे, आयता ভাহার নিকট হার মানেলাম। আমাদের অর্থগ্রহ ক' া পারিয়াছেন, তিনিই অমিটের স্পার্ন। আর यिनि व्यामाणिशक कात्र मानाविषाह्वन. তিনি যেন আমাদিগকে অফুদরণ করিয়া ভাবার লজ্জিত ন: করেন। আমরা याश विविधाहि, जाहा इटेटारे शक्तिक বুরিতে পারিবেন, কেন ইংরেজিতে বলে "Society is a growth and not a manufacture.'' এব: ই हा है आ-मता शृद्ध " मधान काशत क कुछ नरह, আপনাপনি বুদ্ধিপ্রাপ্ত হুইয়া থাকে" এই আকাদারা প্রকাশ করি-याहि। नगानिवकारनत्र ठाई। जामा-मिर्शत मर्था **अ**ठि यह दिन्हा है खाया-

দিগকে এত লিখিতে হইল,নত্বা আমরা ত্ই পংক্তিতেই আমাদিগের মনোগত ভাব বাক্ত করিতে পারিতাম, এবং পাঠকগণকে এত কই দিতাম না।

करशक वरतम (य हैश्तुकाड़ी मछा-**छात्र म**्लाक्किणरत आत्तिहर कतिया-ছেন। किছ এই ইংরেজদিগের মধ্যে এই উনবিংশ শতাকীর প্রারম্ভে যখন বিখ্যাত রাজনীতিজ্ঞ (Sir James Mackintosh) टक्सम माकिणेम मार्टन বলিয়াছিলেন যে "constitution are not mane, but grow" অর্থাৎ কোন শাগনতম্বই অনোর ধারা ক্বত, বদ্ধিত এবং উন্নীত হইতে পারে না কিন্ত আপনা মাপনি বৃদ্ধি এবং উন্নতিলাভ করে. তথন সকলেই আশ্চর্য হুইয়া ভাঁছাকে ধনা ধনা করিয়।ছিল। আবার এখন-কার ইংরেজেরা বলিবেন যে ইছাই অত্যন্ত আন্চর্ণোর বিষয় যে মাকিণ্ট-**শের এই শত্যপ্রচাবে সকলে বিশ্বিত** হইয়া তাঁহাকে ধন্য ধন্য করিয়াছিল। देगानीसन व्यवशास्त्र এह সভ্যের চমৎকারিতা থাকুক বা না পাকুক गाकिकिरात मनाकविकारमत ভতদূর উৎকর্ষ সাধিত হয় নাই যে তখন धरे मट्डा लाक्यन आकृष्टे ना इहेरव। তথ্য সমাজে সাধারণ শিক্ষার অবস্থা যেরপ ছিল ভাহাতে উপরিউক্ত সভাের প্রচার বারা লোকে চমৎকৃত না হইয়া থাকিতে পারে নাই। সে সময়ে সক-**ब्लिश गर्नाज कृजिमश्रमार्थ (मश्रिक शा-**

ইত, কেহই স্বত:প্রবৃতি ও বৃদ্ধি স্বীক্ষি করিতে চাহিত না। অর্থাৎ সকলেই manufacture মত মানিত, কেইই growth মত মানিত না। তাহাদিগের মধ্যে ইহাই প্রচলিত মত ছিল যে ঈশ্বর গ্রহগণকে স্বহন্তে স্থ্যের চতুর্দিকে স্থাপিত করিয়াছেন এবং তাহাদিগকে এরূপ বেগবিশিষ্ট করিয়াছেন যে তাহারা সুর্যোর আকর্ষণানুসারে যু স্থ ককে ভ্রমণ করিতে পারে। আমরা যেমন কোন कार्या कतिशा आह इटेटल विधाम কবিয়া থাকি, তজাপ ঈশ্বরও পৃথিবীর স্ট্রিলুড়লবিভাগ, জীবস্টি প্রভৃতি কার্য্য করিয়া প্রাস্ত হইয়া বিপ্রাম করিয়া-ছিলেন। আসরা যেমন মাটির পুতুল গড়িয়া থাকি, ঈশ্বরও তদ্রূপ মহুষ্যকে গড়িয়াছিলেন। যে সমাজে এই সকল মত প্রচলিত ও আদৃত ছিল, সে সমা-জের লোকে মাকিণ্টদের সভ্যপ্রচারে আশ্চর্যা হইবে তাহার বৈচিতা কি ? তাহারা মনে করিত যে হয় ঈখর স্বয়ং স্মাজকে উন্নতির পথে চাল্টিতেছেন. ना इय वावञ्चालकिष्ठित ताकविधि चाता সমাজ চালিত হইতেছে, অথবা এতত্ৰ-ভয়ের দারাই সমাজ বর্দ্ধিত ও উলীত হইতেছে। মাাকিণ্টস নুত্ৰ কথা বলিলে তাহারা কেন বিশ্বিত না হইবে **प्यार डांशारक धनावाम अमान नाकतिरव।** সমাল বে কুতিমক্পে স্ক্রিত ও ণিত নহে ভাহা এক্ষণে অনেকে বু-

তেছেন বে এতদিন এ সভা কেন ध्येकाभ इत्र नारे। इंश्वादा छेशनिक হইতেছে যে, ইতিহাদ পাঠের অভি সামানা ফল ফলিয়াছে। আমরা যদি चामामिरगंत्र ठजूर्कित्क त्य मकल शति-বর্ত্তন হইতেছে তাহা দেখি, কিম্বা কি রূপে সমাজ নির্মিত হইয়াছে তাহা বিশেষরূপে অনুসন্ধান করি, তাহা হই-लिरे द्विएक शांतिव (य कान चाली-কিক খটনা অথবা কোন ব্যক্তিগত ইচ্ছা সমাজের বৃদ্ধি ও উন্নতিসাধন করিতে পারে না এবং ইহাই আমাদের প্রতীতি হইবে যে সামীনা স্বাভাবিক কারণ হইতেই সমাজের উন্নতি হইয়াছে। সমাজে পরিশ্রম বিভাগ এবং কার্যাবিভাগ (division of labour) প্র্যাবোচনা कतिलारे धरे मछा आमारमत समयमम সমাভে কতকতলি লোক স্বভাবত: কৃষির প্রতি মনোযোগ প্রদান করে এবং কভকগুলি লোক নানাবিধ कार्या नियुक्त इहेबा शारक। हेहा कि हू রাজাত্র আদেশে ঘটে না, তবে তাহারা নিজ নিজ অভাব ও প্রবৃত্তি অরুসারে ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়। অসভ্যা-বস্তায় লোকে পরস্পর নিরপেক হইয়া কার্যা করে। কেহ কাহার মুখাপেকা করে না। প্রতোক ব্যক্তিই নিজের আবশাকমত সমুদায় কার্যা করিয়া থাকে স্থতরাং কেহ কোন কার্য্যে বিশেষ শনো-যোগ দিতে পারে না এবং কোন বিষয়ে-ए भातिकारक्त ध्वर चार्ति वह विन अहे छन्नि इस ना। किन्न मनामनकन

হইলে সমাজত লোকেরা পরস্পাবেব <sup>†</sup> মুখাপেকা না করিয়া, পরস্পাবেব সাহাযা ना नहेबा कान करमहे शाकिएक शाद मा। हेराहे भशूरवात यङान এनः এन জনাই সমাজ আপনাআপনি উল্লুচ্ হয়। ভাহারা আপনাদিগের সধ্যে সম্দায় কার্য্য বিভাগ করিয়া শয় এবং পরস্পারে এইরূপে পরস্পারের সাহাযা কবে। कार्या कतिता मकत्वदरे উপकात इस कदः मगाञ्च क्रमनः उत्ति ति शिरात আরোহণ করিতে থাকে। অতি প্রাচীন কালে ভারত্বর্ধে ও মিসবাদশে এই কাৰ্যাবিভাগপ্ৰণালী বারা উন্নতি সাধিত হইয়'ভিল। इंह≀इ সমাজের প্রাকৃতি যে ইহাব অন্তর্গত লোকেরা নিজ নিজ অভাব ও পার্ডি অফুসারে ভিন্ন ভিন্ন কার্যা সম্পাদন পৃর্ব্বক পরস্পারের সহায়তা কবিবে। हेहा (कान वाहा वल श्राद्यात्र प्रात्र करा-हैवात्र नरह। धहे कातरणहे हेश्मध দেশে সহস্র সহস্র বোক ব্যাহ্যসারে कार्शामवञ्ज अञ्चल कतिरहरू, वेशक्षीरद পশমীর কাপড় তৈয়ার কবিতেছে, ষ্টা-क्षिष्ठं मात्र मृखिकात ও कारहत्र वामन নির্মাণ করিতেতে, সেফিল্ডে ছুরি কাঁচি প্রস্তুত করিতেছে এবং বার্মিডহানে লৌহের জিনিদপত্র গড়িতেছে। ইহা कि कार्रात छक्रम छारःता कतिरछए না, তবে নিজের অভাব পুরণ থ খতঃ প্রাবৃত্ত হইর। করিতেছে। वाक्तिरे निरमत जडिनाव भाषत्न यप्र- শীল, বেহই পরিশ্রমবিভাগ বা কার্য্য-বিভাগের জনা বাস্ত নহে, তথাপি সমাজে পরিশ্রমবিভাগ বা কার্যাবিভাগ প্রচলিত হুইতেছে এবং নিঃশবে ও অজ্ঞাতসারে ক্রমশঃ বর্ষিত ইইতেছে। स्मान वीख इटेडि कला निर्शेष इटेलि কেহ ভাহা লক্ষ্য করে নাকিয় ঐ কলা নি:শাসে ও অলকিতভাবে ক্রমে ক্রমে \* বুদ্ধি প্রাপ্তি হইয়া বৃক্ষে পরিণত হইলে সকলের দৃষ্টিগোচর হয়, ভজ্রপ কার্য্য-বিভাগ যথন প্রথমে সমাজে প্রবেশ করিয়াছিল তখন কেহই ইহা লানিতে পারে নাই, কিন্তু একণে ইহা পূর্ণাবয়ব হইতেছে স্তরাং সকলের চৃষ্টিপথে পড়ি-য়াছে এবং মনোযোগ আকর্ষণ করি-তেছে। এই পরস্পরদাপেক্ষতা যদি সমাজে না প্রবর্তিত হইত, তাহা হইলে কি সমাজ সুশৃষ্টানভাবে চলিত? সমাজ এইরপে সমবেত হইয়া কাথ্য করে विनिष्ठाई मकरलत व्यञ्चावरमाहन ए हेव्ह। পুরণ হইয়াছে। আজ যে সমাজের मक्त अभिक्षा विश्वमान, उन्निष्ठि পরিবর্দ্ধনানু; তাহার প্রধান কারণ এই যে কাল আমরা ছির করিয়াছি যে প্রস্পারের সহায়তা করিব এবং স্কলে হইয়া সমবেত मक (ने व য্দি আজ আসরা কিশ্ব সাধিব। প্রতিজ্ঞা করি যে মার ভাহা করিব না, ্ভবে এক সপ্তাহের মধ্যে সমাজে খোর বিশৃষ্খলা ঘটিবে, অনেক ব্যক্তিকেই भागन इवन (मशिटक इरेटन ज्वर ममाटक व

সেশাব মৃত্তি কালী হইয়া যাইবে।
সমাজের এই সমস্ত অত্যাবশাক এবং
প্রকাশা বন্দোবস্ত যদি স্বাভাবিক কারণে
উৎপন্ন হয়, তবে ইহা অবশাই স্বীকার
করিতে হইবে যে, সমাভের গতি স্বাভাবিক, স্বতঃপ্রবৃত্ত, অন্যতালিত নহে।
সমাজের প্রধান প্রধান শৃত্যলাগুলি যদি
সভাবাগত ও স্বতঃউৎপাদিত হইল,
তবে অপ্রধান সামাজিক শৃত্যলাগুলিও
বে স্বাভাবিক হইবে তাহার আরে বিভিতাতা কি ?

এতলে পাঠক জিজাদা করিতে পা-दिन (ग, तांकविधि अर्था९ आहेनकाञ्चन দারা যে সকল সামাজিক পরিবর্ত্তন সংঘটিত হয়, তৎসমুদার growth না manufacture ? পার্লেগেট মহানভা, স্থানি কে সিল বা লেভিদ্লেটিব ্কৌন্সিল কতক ওলি বিধি প্রবৃত্তিত করি-(लन এवः गकनाक स्मेरे मकन 🕒 शालन कतिए आदम पिटलन। देश ছার। সমাজের অবস্থা পরিবর্তিত হইল, এবং সমাক উন্নতিপথে পদার্পণ করিল। স্মাজের এ বুণ্ধ কুত্রিম কি স্বাভাবিক, manufacture কি growth? ইহাব উত্তরে আমরা বলিব দে, আমরা বে সভামত সিদ্ধান্ত পরিরাছি, ইহা তাহার প্রতিকৃণ তর্ক নছে, এই পরিবর্তনসমূহও ুখানাদের মতের সভ্যতা সপ্রমাণ করি-তেছে। যদি উক্ত পরিবর্ত্তন সকল চারি দিনের अना হয়, তবে সে न পরিবর্তনই নহে, এবং সমাজের

ভাহাতে কোন ক্ষতি বৃদ্ধি নাই। কিউ यनि के नकन शतिवर्तन वास्त्रिक अवः নিতা হয়, অর্থাৎ প্রকৃতরূপে এবং চিরদিনের নিমিত্ত ঘটিয়া থাকে, ভাছা हहेल अभारित कथा महा, य (इकू ঐ সকলও সমাজের স্বকৃতি, রাজবিধির কাগ্যকারিত। নামমাজ। ব্যবস্থাপকদিগের আদেশ মুসারে ঐ সকল পরিবর্তন হই-য়াছে সভা, কিন্তু ব্যবস্থাপকদিগের উত্তমক্রপ আদেশ করিবার প্রকৃত কারণ কি? ঠ হারা সমাজের যেক্সপ অভাব দেখিয়াছেন, তাহার প্রতিবিধান জনা ঐ সমস্ত আদেশ'করিয়াছেন। স্থতরাং মৃলে দেই সমাঘের অতাব ও প্রবৃত্তি রহিয়াছে, সমাজের উপযোগী না হইলে কোন আইনকাত্বন প্রচলিত হইতে পারে না। সমাজস্থ লোক দিগের অভাব ও প্রবৃত্তি হইতেই দি পুর্বোক্ত পরি-বর্ত্তনসমূহ উৎপাণিত হইয়া থাকে, তবে স্ম:জই উহাদের প্রকৃত প্রবর্তক কারণ, বাৰভাপকগণ কেবল নাম্মাত্র প্রাবর্ত্ত। অতএব সমাজের বৃদ্ধি, পরি-বর্তন ও উন্নতি যে সমাব্দের আভ্যস্তরীণ শক্তি হইতে প্রবৃত্ত হয়, কোন বাহ্য কারণে পরিচালিত হয় না, সে পক্ষ व्यवाहरू बहित এवः शूर्वादशका पृही-ক্রত হইল। সমাজের গভি, বৃদ্ধি, উন্নতি, অবনতি প্রভৃতি যাহাই বল, সামাজিক অভাব ও ইছো, সকলের মূলে। এই অভাব ও ইচ্ছা হইতেই नगारकत उपकातक वावचा मकल धाव-

স্মাজের তুলনা করিলে অারও ভাল হইত। মুহুষোর শরীর বা মুহুষোর মনের সৃহিত · সমাজের অঙ্গাত সাদৃশ্য স্বীকার করি-বার কোন প্রমাণ দৃষ্ট হয়না। এ বিষয়ের উপর অধিক লেখনীস্কালন করিয়া কোন লাভ নাই, কারণ ইহা গতামুশোচনা। শ্রেণীবিভাগ সম্পর্কে এই পর্যান্ত। প্রেটো সমাজের গঠন घिकायरञ्जत नाम कृष्टिंग वनिमार्टिन। তাঁহার স্থারির সাধারণত প্রস্মান্ত ideal এই যে মুমুষ্যো জ্ঞাতসারে এই সমাজ নির্মাণ করে এবং ঠাহার মতে অন্যান্য স্মান্ত এইরূপ কুত্রিমভাবে সংগঠিত হয়। এটাও লগাত্মক মত, তাহা আর পাঠকগণকে বুঝাইতে হটবে না, কারণ **আমরা পূর্বে অনে**কক্ষণ ধরিয়া সমাজের স্বত:প্রবৃত্তি ও স্বাভাবিক উন্নতি প্রমা-পিত করিয়াছি। অভ্যত্ত চ্ছিতিচ্বল **धइरल** निष्धार्याजन। প্রেটোর মত নির্দোষ না হউক, তিনি যে এই চি ছার স্রোভ প্রবাহিত করির। গিয়াছেন এবং िछानीन ऋधीवर्शित विख এ पिरक আকর্ষণ করিয়াছেন, এই জনাই তিনি আমাদিগের আন্তরিক বিশেষ ধনাবাদের সমান্তবিজ্ঞানশান্তের স্ত্রপাত य उाहात धरे हिन्दा हरेटड, डेहा क ना मुक्ककर्छ श्रीकात कतिरव ?

প্রেটোর মৃত ব্রাইতে এতক্ষণ গেল, এখন আর একজন দার্শনিক (Hobbes) এইবিবের কি বলিয়াছেন তাহার স্মা-কোচনা করিতে প্রবৃত্ত হুইতেছি। ইনি

প্রেটোর ম্যায় মন্ত্র্যমনের সহিত সমা-ফের তুলনা করেন নাই, মহুষাশরীরের সহিত সমাজশ্ৰীরের তুলনা প্রদর্শন कतिशाष्ट्रम । मगाजमः गठेन मद्दक है।-হাব মত বাক্ত করিবার প্রাক্তালে তিনি বলিয়াছেন '' যে সাধাৰণতন্ত্ৰ সমান্ত্ৰ এবং মহুষোর শরীর একরাপ, সাধারণতন্ত্র সমাজকে একটা বৃহৎ কৃত্রিম মনুষা বলিলেও চলে। স্বাভাবিক মহুষ্যের ভারতন ও বল অতি অল, কিন্তু এই কুত্রিমমপুষ্টের বল ও অগ্রেচন মত্যস্ত অধিক, যে হেতু ইহা স্বাভাবিক মনুষোর রকার নিমিত্ত নির্দ্মিত হইয়াছে। সাধা-রণতক্র সমাজে আধিপতা অর্থাৎ শাসন ক্ষমতা প্রাণ্যক্প, কারণ ইহা ছার।ই সমস্ত সমাজের হিতিও গতি সুশৃত্যল-ভাবে চলিয়া থাকে। প্রাণহীন হইলে মনুষ্যের শ্বীব অপদার্থ ও অকর্মণা **२**हेशा भट्ड, नगाटक्छ **मा**ननमक्तित অভাব হইলে নানাবিধ গোলযোগ ঘটে। माबिए हुउ, विजातक এবং बन्याना भागन-কার্যানিকাইকেরা সমাজশবীরেব গ্রন্থি স্থরপ। পুরস্কার এবং দণ্ড সমাজের শিরাস্থরণ, কারণ সমাজের গ্রন্থি এবং व्यक्त मकल हेशामत द्वारा भागगभक्तित সহিত সম্বন্ধ হইয়া নিজ নিজ কাৰ্যা সম্পন করে। মহুষাশবীরে শিরা সক-लित (य উপযোগিতা এবং উপকারিতা, मनार्ख ए छ अ भूवऋ। दित (महे छे भएषा-গিতা এবং উপকারিতা। धनिकतृरक्तत ध्रमण्याख्य नगारकत्र वन-

স্বরূপ; সমাজান্তর্গত ব্যক্তিদিগের স্থ্য ও শান্তিবিধান সমাজশারীরের কার্যাস্থরূপ; মান্ত্রির্গ (বাঁহারা সমাজের আবশ্যক কর্ত্তবা সকলের উপদেশ প্রদান করেন,) সমাজশারীবের স্থৃতিশক্তিস্থরূপ; ন্যার্যার্থর অবং আইনকাত্রন, বিবেক ও ইচ্ছা স্থরূপ; সমাজবিপ্লাব, পীড়াস্থরূপ; অবং আভ্যন্তরিক বুদ্ধবিগ্রহাদি সমাজশারীরের মৃত্যুস্থরূপ।" Hobbes এই বিষয়টী যেরূপ বিশদভাবে ব্যক্ত করিয়াছেন ভাহা পাঠকগন উপরি নিজুই মর্ম্ম হইতে বুঝিতে পারিতেছেন। তথাপি আমরা original টি উক্ত

"For by art is created that great Leviathan called a Commonwealth or state; in Latin Civitus, which is but an artificial man; though of greater staure and strength than the natural, for whose protection and defence it was intended, and in which the sovereignty is an artificial soul, as giving life and motion to the whole body; the magistrates and other officers of judicature and execution, artificial joints; reward and punishment, by which, fastened to the seat of sovereignty, every joint and member is moved to perform his duty, are the nerves, that do the same in the natural body; the wealth and riches of all the particular members are the strength; salus populi, the peoples safety; its business; counsellors by whom all things needful for it to know are suggested unto it, are the memory; equity and laws, an artificial reason and will; concord, health; sedition, sickness; civil-war, death." The works of Thomas Hobbes. Edited by Sir. William Molesworth, London.

সমাগরপ প্রকাণ্ড কুত্রিম মহুষা. য:হার অঙ্গ প্রতাঞ্জ মতুষ:সমূহভারা নি-র্মিত, এবং প্রকৃত মনুষ্টোর তুলনা করিয়া গিরা Hobbes সমাজশরীবের একটি সম্পূর্ণ ডিত্র অন্ধিত করিয়াছেন. এবং উভয়ের সাদৃশ্য আহুপুর্বিকরূপে निर्द्भ कतिशाष्ट्रन । यहानि अहे हिव এবং প্লেটোর চিত্র ভিন্নপ্রকার ও পর-স্পর্বিকৃদ্ধ, তথাপি আমরা ছবসকেই অধিক প্রশংসা করিতে বাধা হইতেছি। কিন্তু উভয়টিই অসঙ্গতিপরিপূর্ণ এবং আত্মবিরোধবিশিষ্ট। ইছাদের অংশ-श्वनित भवन्भव नित्त नाहे, এक व्यः भ আর এক অংশের বিরোধী। আধিপতঃ বা শাসনশক্তি সমাজের প্রাণস্কপ হইল; তাহা হইলে মাজি-



প্রেট প্রভৃতিরা কিন্ধপে প্রাপ্ত হইতে भारतम, कारण डीहास छ भागमकाई-. দিগের প্রতিনিধি বাতীত আর কিছুই नट्न। यशिके शाख्या है है । वाकि करें त्यन, उथानि भूतकात अम् किकार শিরা হইল। সমাজশরীরের গ্রন্থিক ন विष वास्ति हैश, एटव निता नकत कि **অপৰাধ করিয়াছে যে, ভাহারা ৰাক্তি** হইতে পারিবে না। শিরা সকল সমা জের একশ্রেণীর লোক হওয়া উচিত। দশু ও পুরস্থার প্রকৃতপ্রে কোন ব্যক্তির স্থানীয় হইতে পারে না, বরং সেই ব্যক্তির অবস্থা হইতে পাবে। এতদমুসারে দও এবং পুরস্কারকে শিরার সহিত তুলনা না করিয়া, শিরার অবস্থার সহিত তুলনা করিলেই ভাল इटेड। आत चुडिमकि, निरनकभिक्ति. ইচ্ছাশক্তি এই ভিনটি মানসিকশক্তির সহিত সমাজের মল্লিবর্গ নাায়প্রতঃ **এবং आहेनकाबूत्नत्र উপমা (१-७**४। বৃদ্ধির কার্যা হয় নাই। এরপ বিজা-ভীর উপমা হইতে কোন ফললুভে নাই। মন্ত্রিবর্গ একদল সাধারণ কর্ম-চারী, এবং अंপর ছুইটা কেবল ভাব-উপসাঞ্জ কেবল মানসিক-मक्ति. कि इ छे भारत श्राम श्राम अवित्र अवित कर्मा हाती मञ्चा, এবং অপর ছুইটি বে কি बलिन, ভাষা বলিতে পারি না। অভএব এ উপনা স্মীচীন নছে। আসরা প্লেটের छिलगात त्व छ्रे माव मिथारेबाहि, हब्लाव উপगाव तार क्रेडि दलाव

রহিয়াছে। Hobbes সমাজের ক্লজিন্
মতা অধিকত্তর প্রাক্তিতাবে লিপিয়াতেন,
কারণ তিনি বলিয়াতেন, "For by
artris created &c." এবং ইহারায়া
সকলেট বৃঝিতে পাবেন যে,তিনি সমাজ
সংগঠন সম্বন্ধে কোন্ মতাবলম্বী ভিলেন। তিনি, কেবল সমাজসংগঠন
কৃত্রিম বলিয়া সন্তুট নহেন। তিনি
আরও বলেন যে, সমাজবন্ধন হইলে,
সামাজিক শোকেরা আপনাদিগের মধ্যে
যে একটা বল্ফোবস্ত (social compact)
করে, তাহাও কৃত্রিম। তিনি এই
বল্ফোবস্তকে মহুষাস্থির সহিত তুলনা
ক্রিয়াডেন।

লেটোর মত সমালোচন করিতে षान्द्रा (य करतकारी कथा विलिशाहि: হৰ্দেব মত সমালোচনাভলেও ভাহাই বলিব। স্তরংং পুরুক্তির প্রয়োজন নাই। স্মাত্রে মনুবোর মন বা শ্রী-রের স্থিত তুলনা করাতে বিশেষ কোন हत्र गारे। किन्न मनास्रक সানানা বস বা কলের নতুন কুতিন यगाएक निर्भव काकि इहेग्राह्म: (ग्रह्मू এই জনায়ক শ্যত ভনস্থারণের মনো-যোগ আকর্ষণ কবিয়া ভাছাদিগকে खाउपाय हानाहेबाहा। લ્ ફ્રે ভ্রান্ত চিম্বার**ও বিশেষ সার্থকত। আছে**। देशकात्रा नकत्वदर छात्रक्रम इहेबाएक (य, गमारकत धवःमागवभन्नी दत्रत मरशा मा-मृश बारक । शृद्धां एक वृदेखन मार्मिक প্রিত এই সাদৃশ্য নির্ব করিতে ক্লত-

কাৰ্য ছন মাই বলিয়া, আমরা সাদৃশ্য অহীকার ক্রিভে পারি না। জীবভবের (Biology) আলোক তগন প্রকাশ হয় नारे। अधूना विद्धारनत क्षाञ्चादय निक्र-পণ করা ঘটেতে পারে যে, সমাল্লরীর प्वतः व्यः निभवीदतत मानुभा कि। कान জীবের শরীর কিরাপে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত এবং উনত হয়, এবং সমাজ কিরুপে বৃদ্ধি ও উन्नडिनाङ करत, धरे छूटे नियस्त्रत প্রাংলোচনা আজ কাল অনায়াসে হইতে পারে।. সে পর্যালোচনা আছ ব্রতে গেলে, পাঠক আমাদিগের উপর

'वित्रक इष्टेरवन, अवर अक नीत्रन नमाझ সংগঠনতবের উপর হই কর্মা আটিকেন पिशिता, एवं उ वक्तर्भागत बाह्कानी **इटेट्ड नाम जूनिया लंहें देन। अभाव** সংগঠন বিষয়ে অনেক কথা বলিভে वैंकि ब्रहिन, এवः आत এकिन ख বিষয় লইয়া আলোচনা করিবার ইচ্ছা রহিল। প্রাবন্ধ অতি বিজ্ঞ হইয়া পড়িবে বলিয়া আসরা আজিকার মতন त्वथनी क विज्ञास कतिलाम।

3 7 1

#### 

# নভেল বা কথাগ্রন্থের উদ্দেশ্য।

धकर्ण देःनाः च च जात्र शकाभिक হয়, ভাহাব মধ্যে বোধ হয় শাতকরা ৭৫খানি কণাগ্রন্থ। কেহ বা ওছ गत्नात्रकारत हेरम् भा (कह वा गीडि সংশোধনের নিমিত, কেছ বা কোন निविदिक्त डेक्स्या मःगायत्मव अङि थार्य, त्कश्वा देवछानिक ও मार्गनिकः ভত্বসমূহ সাধারণের আয়ন্তী ফুত কবিবার बना कथा अष्ट खायम कति छ । चामारमत रमरभत रमधाकता अ कमिनी, क्मूमनी, देनविनी ध्यक्षेत्र जिन्न किन नाम मित्रा, नामाध्यकारदव कथाश्रष्ट वा-হিন্ন করিভেছেন। স্থতরাথ এ সময়ে कथाश्रह मयस्य छ्हे हान्निन कथा बना भगवण बहेदद ना ।

উপাখ্যান লিখিবার তিন্টি প্রধান वानानी काठलिङ चाट्ह, यथा-नाठक, আখ্যায়িকা ও কথাগ্রন্থ। নাটকে 😘 নাট্যোরিখিত ব্যক্তিগণ কথাবার্ত্তা ক-(रन। ममछ ভाব, ममछ कादा अह ব্যক্তিদের ধারা প্রকাশিত হর। এছ-कात्र अखतारम शाकिया, এই मकम वाक्ति-मिश्र পরিচালিত করেন। আখারিকার গ্রন্থক বিষয়ের ব্যাখ্যা গ্রছোলিখিত ব্যক্তিগণের সহিত আমাদের প্রায় সাক্ষাৎ হয় না। কথাগ্রন্থ এই উভন্নের মধাস্থলবর্তী। हेशत्र किम्रनः ए" अद्याति भिष्ठ वाकि गन कथावार्छ। कट्टन; किस भगा धना **ज्ञारण अहरू छ। यहः ज्ञामानिशदक ममछ** 

विषय न्नेष्ठ कतिया व्याहेश दिन। নাট্র লেখা যত শক্ত হটক বা না 'ছউক: নাটক সমাক্পকারে বুঝিয়া উঠা অতি কঠিন। নাটোল্লিগিত বাকি-ग्रंग (क कि हितरावर लाक, किन्नमा ভিন্ন ভিন্ন সময়ে ইহারা ভিন্ন ভিন্ন থকারে কার্যা করেন; দে সমস্ত ব্ঝিবার জন্য অনেক জান, অনেক চিন্তার প্রয়ো-खन। क्षाश्रष्टायक এই कान छ **এই চিন্তার সম্বর্জে আমাদের অনেক** माहांचा करत्रन। अस्ट्रित (य व्यःम আমরা ব্ঝিতে পারিব না বলিরা ভাঁহার বোধ হয়, তিনি সেই সেই অংশগুলি আমাদের নিকট অতি পরিভাররূপে व्यादेश (पन। अटहा: नावेक व्या অপেকা কথাগ্রন্থা অধিকতর সহজ क्टेब्रा छे छै। याहा महाझ दुवा यात्र, ভাহাতে অধিকতর আমোদ অনুত্ব করিতে পারা যায়। এই জনাই দেখিতে পাওয়া যার যে,সকল দেশেই কথাগ্রন্থের शृष्टि इंटेल आत नाठेक ना आधात्रिकात সমধিক আদর থাকে না। আগায়িকায় সমস্ত বন্ধই গ্রন্থকর্তা নিজের ভাষায় বর্ণনা করেন। স্থতরাং নাটকে যেরূপ নাটোরিখিত ক্রিয়ার বা বাক্রিব সাকাৎ অতিমৃতি দেখিতে পাওয়া যায়, আখা-দ্বিকার তাহা পাইবার সন্থাবনা নাই। **এक्सा आ्था**त्रिका अरशका नांहेरक व्यविकत्र वाट्यान व्याटक् ।

কণাগ্রন্থ নৃত্ন সৃষ্টি। সংস্থৃতে অবি-কাংশ গ্রন্থ কবিভার লিখিত হট্ত।

যে কর্থানি গদ্য প্রস্থ আছে, ভাহাদের অধিকাংশই আখায়িকা। कामध्रती. দশকুমার চরিত প্রভৃতি এই শ্রেণীভুক্ত। मःक्षटा नार्वेक अध्यक्त दिल। किइ, নাটক ও আখায়িকামি শ্রত কোন কথা-গ্রন্থ কার্যা প্রাথান বিশ্ব প্রাথান বিশ্ব হয় না। ইংলণ্ডেও কথাগ্রন্থের অভি व्यवस्थितमाख स्रष्टि स्टेग्नारह। ইংলডের উপাখ্যান সমস্ত আখ্যায়িকার প্রণালীতে লিখিত হইত। এই সকল আখায়িকায় বড় বড় রাজার ও বীর-शुक्रस्यत बीतकीर्छि ममन्त वर्निछ इटेख। देः लए नाउँ कड श्रामक हिन । कि কেবল ডিফোর (De Foe) সময় হইতে বর্ত্তমান প্রকারের কথাগ্রন্থ প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হর। **অনেকে মনে** करनन, त्य गाउँक लिथिवात सना त्यत्रभ প্রতিভা বা কমতার প্রয়োজন, একণে মনুষ্যের আর সেরণ ক্ষমতা বা প্রতিভা নাই। কথাগ্রন্থে প্রতিভার প্রয়োজন আছে বটে, কিন্তু নাটকীয় প্রতিভা অ-পেকা, এই প্রতিভা অনেক অংশে নান। এইজনাই একণে আর নাটক লিখিত হয় না। মহুষোর প্রতিভা দিন দিন কমিতেছে, একণে ইহা কথাগ্ৰন্থ পৰ্যান্ত ঘাইতে পারে, নাটক পর্যান্ত যাইবার ক্ষমতা আর ইহার নাই। এই মতটি আসার দত্য বলিয়া বোধ হয় মা, কারণ (मक्क भी बदरक हा ज़िया बिरन रह मकन নাটককার অবশিষ্ট থাকেন, ভাঁহারা যে প্রতিভাগদার কিব্রিং, ভিরেল,

গ্যাকারে প্রভৃতি অপেক্ষা কোন কংশে উৎकृष्टे छारा. आगारमत द्वाध इत मा । ফলতঃ কথাগ্রন্থ নাটকের নাায় সমান व्यारमान श्रामा करत्। नाउँ क त्य (य উপদেশ পাওয়া সভব, क्णाश्रास्थ (मह 🖹 সেই উপদেশ পাওয়া যায়। তবে এক ं कथा এই यে, नांठेक मकत्त महस्त्र ্বী শ্বীৰতে পাৰে না। কথাগ্ৰন্থ সকলে সহছে বুরিতে পারে। এজনা লোকে নাটকের আদর না করিয়া কণাগ্রন্থের আদর করিয়া থাকে। যে কাবণেই इडेक, टेहा व्लिष्ट शिल्ड शाल्या गाई-**८७. ए. १० मिन कथा श्रह्त अकाण** ছিল না, তত্দিন নাটকের অভি সমা-দর ছিল। কিন্তু কথাগ্রন্থের প্রাকাশ इस्या अविध नाउँक उन्यमः इटावबरे इटेट्ड ।

আমাদের দেশে বৃদ্ধি বারু ছইতে কথাগ্রন্থের প্রথম প্রকাশ আরম্ভ ছইযাচে। এই কথাগ্রন্থ ইংরেজি কথাগ্রন্থের সম্পূর্ণ অমুকরণ। ইহাতে অনেক
ভলে ইংরেজি চরিত্র, ইংরেজি ভাব এমন কি ইংরেজি ভাষা পর্যান্ত অমুকরণ
করা ছইরাছে। বৃদ্ধিনার্ব প্রতিভাগ্রের সৌন্ধ্য অমুকরণের মধ্যেও নানাপ্রকারের সৌন্ধ্য অমুপ্রবিষ্ট ছইরাছে।
ভাহার পর ছইতেই বাজালায় নভেলের
দংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধিত ছইভেছে। কথাগ্রন্থ প্রধানত: দুই প্রকারের।
প্রথম প্রকারের নাম ইংরেজিতে রোমালা।
ইংা নীররসপ্রধান। ইহাতে বৃদ্ধ,বিপ্রাহ্ণ,
রাজা, ধীরপুরুষ, রাজকীর্ত্তি, বীরকীর্ত্তি
প্রভৃতি বর্ণিত হয়। বাঙ্গালার হর্নেশিন্দননী, বঙ্গাধিপপরাজয়, শতবর্ধ প্রভৃতি কথাগ্রন্থগুলি এই প্রেণীভূক্ত।
বিতীর প্রকারের কথাগ্রন্থে প্রাক্ত ঘটনা
সমস্ত বর্ণিত হয়। যে সকল ঘটনা
আমর। আমাদের মধ্যে নিভা দেখিতে
পাই, সেইগুলি এইরূপ কথাগ্রন্থে আমাদের নিকট স্থানররূপে প্রতিভাগিত
হয়। বিষর্ক্ষ, কৃষ্ণকান্তের উইন, স্বধ্নিভা প্রভৃতি গ্রন্থগুলি এই প্রেণীভূক্ত।

পাঠকের মনোরঞ্জন করা এই মাজ
পূর্বে উপাধ্যান লিখিবার প্রধান উদ্দেশা
ভিল। ইউরোপীয়েরা পূর্বে অভ্যন্ত
ক্ষপ্রির ছিলেন। এজন্য তাঁহাদের মনোরঞ্জনের নিমিন্ত যুদ্ধসম্বন্ধীর ঘটনা সমস্ত
বিবৃহ হইত। এখনও ইউরোপে যুদ্ধবর্ণনা
ইউরোপীয় কথাপ্রস্থের প্রধান উপাদান।
বাঙ্গানা কথাপ্রস্থ ইউরোপীয় কথাপ্রস্থের
অফুকরণ। স্কতরাং বাঙ্গানা কথাপ্রস্থের
বৃদ্ধাদি সন্নিবিদ্ধ ইইয়াছে। ইহাছে
এই লাভ হইয়াছে বিং আনাদের মধ্যে
ভন্ কুইঅবটের প্রণাশীর যুদ্ধপ্রিয়ভা
ভন্ বৃহ্বিটের প্রণাশীর যুদ্ধপ্রিয়ভা
ভন্ত বর্দ্ধিত ইইয়াছে। শীর্ণবৃদ্ধি

<sup>\*</sup> ছুর্গেশন শিলী 'বিদি সেই সমরে মন্দির্মধা বক্তপতন হইত, ভাষা হইলে ভাষারা অধিকতর চমকিত ছইছেন না।'' ইংরেলি আনক নডেলে ঠিক এই ভাষটি এই ভাষার বর্ণিত ছইয়াছে।

র্বক আপনাকে তপং সিংহ বা ছেমচল্লের অবস্থার উপস্থাপিত করে, এবং
এইরপে লোকের নিকট অতীব উপনাসম্পদ হয়। "ভারত-উদ্ধার"
লেশক এ বিষয়ের সাক্ষী। পাঠকের
মনে পড়িতে পারে

'' वैष्ठोहेश मिव व्यक्ति भाष्ठ हेश्टबटन्न'' কিছ রোমান্স পাঠে যে এককালেই किছুমাত লাভ নাই তাহা नय। ইহাতে করনাশক্তির প্রচ্র পরিচালনাবশতঃ একরপ অন্তুত আনন্দ জন্ম। যুবকেরা যে কি আনন্দের সহিত ঋটের 'আই-ভান্হো' বা বহিমবাবুর "চর্গেশনকিনী" পাঠ করে, ভাহা মনে হইলে, বিশ্বয়া-বিত হইতে হয়। কিন্তু এ আনন্দ ফণিক। ইহার ফলণতা অতি অনুট चारहा, यांश किছू फनवडा चारह. ভাহাও বোধ হয়, জনিষ্টের দিকে। कज्ञनामक्तित छाठूत शतिहालना इ ७३।८ ह বিবেচনাশক্তির কিঞ্ছিৎ ব্রাসতা হয়। এবং वस्त्र यथार्थ वादशत ना (कथिता, (क न न ভাহার সৌন্দর্যা, মনোহারিত প্রভূতি (मिथिट इच्हा इत्र । সाংসারিক অনেক কার্যোর প্রতি বীতপ্রদ্ধ হইতে হয়। সমুষা আপনাকে অত্যন্ত উন্নত করিতে हेक्का करता हेक्का करत गांव, कि हा (महे পর্যান্ত ভাহার নিজের বা সংসারের কিছু সাজ উল্লভি হয় না উপকারও হয় না, কেবল পদে পথে মনস্থাপ পায়।

ক্থাগ্রছের আলোচনার লাভালাভের বিচার দেখিয়া হয় ভ অনেকে বলিয়া

छैठिटवन, नट्डन, शरबत वरे। नदीव *ट्याट्डत यह हैश्: छ भड़ाहै* सा यहित। ইহাতে আবার লাভালাভ দেখিব কি ? ফুল ফুটিয়াছে দেশিয়া নয়নের ভৃপ্তি **২ইবে, তাহাতে লাভালাভের প্রশ্ন** উথিত করিলে, ধান ভানিতে শিবের গীত করা হয়। যদি এই মতটি সতা হয়, তাহা হইলে নভেলের সংখ্যা যে এত বর্দ্ধিত হইতেছে, ইহা পৃথিবীর পক্ষে অনিষ্টকর বলিতে হইবে। নৃত্য, গীত প্রাভৃতি যে সকল কলায় শুদ্ধ আমোদারু ভব হর, সংসারে তাহাদের নভেলের মত আদের নাই। প্রধান প্রধান পণ্ডি-তেরা নৃত্য গীতে, অভি আরে সময় वाशिष्ठ करत्रम । किन्छ नएडल लिथांग्र বা নভেল পড়ায় অনেক মহা মহা পণ্ডিত আপনাদিগকে নিযুক্ত রাখিয়াছেন। यिन नर्छन ७६ ज्ञारमारम्य वज्र इत्, **ভাহা হইলে ইহার এত আদর কেন** ? একণে "বাবহারোপযোগিতা" লইরা हे:e'छ এकक्षकात **উत्ताह** इ**हेग्राह**न। সেশানে শুদ্ধ আমোদের বস্তুর এত আদর (कन ? कन्छः, यमि ७ कानक नर्छन (कवल मरनातक्षरनत डेएफ्रामा निशिष्ठ হয়, তথাপি ইহা অবশা স্বীকার করিতে हरेत, (य माइवडा ना शाकितन, नर्छन কথনই শিক্ষাবিষয়ে এত উচ্চ স্থান পাইত না। নভেল ফুলের ন্যায় স্থানর ৰটে, কিন্তু ফলই ইছার পরিণাম।

ইহাতে কেই হয় ত আপত্তি করিবেন, বে ''স্ত্য বর্ণনাই নভেলের উদ্দেশ্য।

भाकामाञ विहात छाहात छेरमणा गरह। এই পৃথিবীতে আমরা যে বস্তু বেরূপ দেখিতে পাই, সেই বস্তুটী যথায়গন্ধ ধর্ণিত করিলেই উপস্থাসলেখকের উদ্দেশ্র गिक इत्। किन्छिः এत **उभ्** अप अहे-क्रिश्न महाजा । उम् (का क्राया) যে অবস্থায় পড়িয়াছিলেন, এাড়কওঁ৷ • অসমুচিত হাদয়ে তাছা বর্ণনা করিয়াভেন। নভেল লিখিতে হটলে, এইরণেট লেখা উচিত।'' किंद्ध मठा इटे थाकात, আংশিক সভাও সম্পূর্সভা। কোন উकीन (य कथन न्नेष्ठे निशाकण करहन, এমত নহে। তিনি যতদূব বলেন, তত-দুর সভা। কিন্তু তিনি সমস্ত কণা वलन ना। मान कक्रन, आश्रीन दलितनन, "तात मिंध मिल, धवा श्रील ना, वाड़ी किरिया कामिल, भरभ काम विशम ঘটন না, বাড়ীতে আসিয়া অপ্সত धन लहेशा तम शाफ़ी, रचाफ़ा कविल, भकरनत निक्रे मन्त्रानिष्ठ इडेल।" गए **ब**रे शर्याच व नशारे जाशिन काछ इन, ভাষা হটলে আপনি সভাের আংশিক वर्गा कवित्वम । कादण (ठात व्यत्नक भगस शृष्ठ इस, (अरल यास, वस्टूब कहे পায় এবং কগন কথন দ্বীপাস্তরিত হয়। यिशास्त्र मरहात्र आः शिक वर्गना रमधारन न।न।विश्व व्यक्तिरहेत व्यामद्या । कात्र नहा নিখ্যা নিৰ্বাচন করিয়া লওয়া অভীব ক্রিন। মিথ্যা বর্ণনা সকল সময়ে ছবি-ধেয়। কিন্তু সম্পূর্ণ মিথারে প্রায় কাহারও ग्रीष्ठे इव गा। कात्रन त्नात्क व्यदक्राण

ভাষার মিণ্যাত বুঝিতে পাছে। প্রাণর न एक एन व भन्न भनार्थ। এই ध्वंबर इत ধর্ণনা নভেলে নিয়কপে প্রকটিত হয়— ''বুৰক যুবতী উভয়ে অতীৰ রূপৰ:ন্, অতীব গুণবান্। যুবক পুরুষদিগের : मर्क्सा९कृष्टे, नात्री यूवडी पिरशत मर्क्सा९-कृष्टी। উভয়ের পরস্পার সাক্ষাৎ হইল। যে কারণেই হউক উভরে উভয়কে ভাল বাসিল: তাহার পর উভয়ে সংসারের সমত বস্ত উপেকা করিতেছেন, পিত। মাতাৰ আজ্ঞা অবহেলা করিতেছেন, रय ७ (कान गमरब উভয়ে কোन कान অসৎ কর্মাও করিয়া ফেলিভেছেন। তাহার পরে উভয়ের বিবাহ হুইল।" **এ**পানেই অনেক নভেলের সমাপ্তি হয়। যতদূর ইহাতে বলা হইয়াছে ভাহার মধ্যে একটি কথাও মিখ্যা নয়। কিছ ইহাতে সকল কথা বলা হয় নাই। বিবাহের পর যুবক যুবতী অনেক দিন वैक्तिया शास्क, मश्माद्वत व्यत्नक श्रामा-ভন অনেক বিশ্ব বিপদ তাহাদের সম্মুখে উপস্থিত হয় এবং তাহারা আপন আপন পূর্বে চরিত্র অনুসারে হুণী বা ছংগী হইয়া জীবন অতিপাত করে। ছাতরাং যাহারা যুবক যুবভীর বিবাহ দিয়াই নভেলের সমাপ্তি করেন, তাঁহারা মহুষ্য-श्वनरत्तत अक्षात वार्ग डेब्ड्नियर्ग तकि ह করিয়া অপর সম্ভ অংশের মনোহারিত कभादेश (पन ।

আরু এক কড়া, কোনটা সভ্য কোনটা মিগ্যা ভাহা কি কোগান্ত নির্ব্বিধনে বিদ্ধীকৃত হইরাছে। তুমি বাহাকে সভা বল, আমি তাহাকে মিথাা বলি, তুমি বাহা সাভাবিক বল, আমি হাহা কার-নিক বলি। তবে তুমি যাহাকে সভা বলিয়া মনে কর, গুদ্ধ সেইরূপ অনিশ্চিত সভ্যের জন্য আমার স্থেব আশা কেন হারাইব।

আর এক কথা, সতা বলিতে হইবে কেন ? সভা বলার লাভ আছে, অসভা বলার অনিষ্ট আছে। স্পতরাং সভ্যা-সভ্যের বিচার প্রকারাস্তরে লাভালাভের বিচার ভিন্ন অন্য কিছুই নর।

আর এক দল লোক আছেন, তাঁহারা বলেন, যে স্থভাববর্ণনাই নভেলের উদেশা। রূপো এই স্থভাববর্ণনার প্রবর্ত্তক।
মুম্বা স্থভাবত: যেরুপা, তাহাই বর্ণনা
করিছে হইবে। কেন ? মুম্বা স্থভাবত: অতি সুন্দর স্থভাবের বাহার করিলেও আনিষ্ঠ বই ইষ্ট হয় না। স্থতবাং
এ স্থলেও লাভালাভের প্রশ্ন উভিত হইভেছে কিন্তু ইহাতে নানারূপ আপত্তি
আছে। আমরা স্থলেবত: সুন্দর স্থভাব
কি না তাহার সম্বন্ধে অনেক তর্ক ফাছে।
সে সকল তর্কের এক্ষণে কোন প্রয়োজন
নাই। এখানে এই পর্যান্ত বলিলেই
পর্যাপ্ত হইবে যে লাভালাভের বিচার
কথাগ্রছে অপ্রাস্তিক নয়।

আমরা পুর্বেল দেখা ইরাছি,যে রোমান্স পাঠে অধিক লাভ হর না। ইহাতে কেবল কল্পনাশক্তির সমাক্ পরিচালনা হয় মাজ। আমাদের চরিত্রসম্বন্ধে যে কিছু পরিবর্ত্তন অন্মে,তাহার অধিকাংশই অনিষ্টের দিকে। অ জনাই এক্ণণে আর রোমান্সের সহিত সাধারণতঃ মন্থ-যোর সহান্ত্তি দেখিতে পাওরা যার না।

একলে দেখিতে হইবে, দিতীয় প্রকারের কথাগ্রন্থ পাঠে কোনরূপ লাভ হয় কি না। আমাদের দেশের কথাগ্রন্থ প্রধানতঃ ইংরেজী কথাগ্রন্থের অমুকরণ। মুক্রাং আমাদের কথাগ্রন্থের লাভালাভ বিচার করিতে হইলে ইংকেজী কথাগ্রন্থ পর্যান্ত অমুসন্ধান করা কর্ত্তবা। বিতীয় প্রকারের কথাগ্রন্থ (আমরা ইহার নাম সাহিত্য কথাগ্রন্থ রাখিলান) পূর্ব্বোক্ত প্রধানীতে আলোচনা করাই এই প্রস্তানের মুখ্য উদ্দেশ্য।

সমাজের অবস্থা অনুসারে মনুষ্যেব চিন্তান্দেও পরিপতিত হয়। যথন সমাজ ধর্মপ্রায়ণ, তখন মনুষ্যের রচ-নায় ধর্মের, আধিকা দেখিতে পাওয়। যায়। আবার যখন সমাজ অধঃপতিত হইতে আরম্ভ হয়, তখন মনুষোর রচনাতেও এই অধঃপাতের লক্ষণ দে-

শ নিজ্উইক্ নাভালাভ সহক্ষেও এই গ্রন্থ উথাপিত করিয়াছেন। তিনি বলেন তুমি যাহাকে লাভ বল, অ নি তাহ কে অলাভ বলি, আবার তুমি বাহাকে অলাভ বল, আমি ভাষাকে পরম লাভ বলিয়া মনে করি। কিন্তু সভ্যাসভা কুমিতে মুমুষোর মধ্যে যেরপ বিস্থানিতা, লাভালাভ স্থকে, বোধ হয়, ভাষা অপেকা আনেক ক্ষ

चिट्ड भाउरा वार्र। हैं। एक रचन धर्म লইয়া উন্মন্ত তখন "মিণ্টন্" তাঁহার "भारताखाइन कष्टे" लिएबन । आवात যখন নীচপ্রকৃতি ছিডীয় চার্লস ফালের উচ্ছ अन्छ। देशाय धार्विष्ठ करवन, তথন ড্রাইডেন তাঁহার "All for love" প্রভৃতি অঘন্য অপাঠ্য নাটক লিখেন। र्याहाता এই সমাজস্বোতে গড়াইরা শান, उंद्याता अवतः भीवनिरात निकृष्टे विस्था ধনাৰাদ প্ৰাপ্ত হন না। কিন্তু বাঁহারা সমা**জের অবন্তি দেখিয়া সমাক্তে**লতের বিপরীতে দণ্ডারমান হইয়া সমাজকে ত্মপথে পরিবর্ত্তিত করিতে চেষ্টা করেন छ। हात्राहे मर्द्रमाधात (५ त यथीर्थ धना वारम त शाब। यथन छाइएडन, छेहेहाविन, কন্রিভ প্রভৃতি জঘনা জঘর গ্রন্থ লি-थित्रा नमाबदक উৎসর দিতে ছিলেন, সেই সময়ে জেরিমি কলিয়ার এইরাপ ममाध-পরিবর্ত্তনের চেষ্টা করেন।

कर्त देःनए कार्याभाकत्वे कीत-न्तत मूना উष्टमा इहेशाइ। शाडी, ঘোড়া, মর, বাড়ী, মলরার, পোষাক প্রভৃতি সোগবিশাস সকলের একমাত্র (धात इटेना উठिनाइ । • किन्नु वार्थी-भार्कन कतिए इहेरन अरनको। कर्छाह-श्रमत ब्रुवा व्यावभाक । कामात्मत (प्रत्भ চলিত कथात्र वरत " ठक्तुलक्का यात्र व्यर्थ নাশ তার।" ইংলও অনেক দিন হইতে

वहे हक्षणकात याथा बाहरण्डका। কৰ্তবাকাৰ্যোর জনা (অৰ্থাৎ অর্থোপার্জ-(मत जना) देश्यक मकल श्रकातं हकू-ণক্ষা ত্যাগ করিতে প্রস্তত। স্তরাং ইংলত্ত্বে কঠোরক্দরতার অভ্যন্ত প্রাছ্-र्ভाव इत्रेश उठियात्। यादात्त धरे কঠোবলদয়তার হ্রাস হয়, ইংলভের गाष्ट्र हेप्प (महे (हड़ी क्तिएक्ट्रम I ডিকেন্সের প্রত্যেক নভেলে অস্তরঃ धकजन कठीतक्षम अर्थिभां आहि। ইহাবা সকলেই নানাক্ষপ কণ্টে পড়িয়া শেষৰশায় সভান্ত যাতনা পাইয়া, সকল লোকের নিকট অবসানিত হইয়া, কেহ বা সায়হত্যা করিয়া, কেছ বা রাজনতে দণ্ডিত হটরা প্রাণ্ড্যাগ করিয়াছে। এই क्रिश हित्रवर्गनात छेट्यमा धरे दय, मञ्चा कर्छ। वसमञ्चात এই मकल कल (मिर्ड পাইয়া আর কঠোবছদম ছইতে চাহিবে না। ডিকেপেৰ প্ৰত্যেক নভেলে আর धक**ै**। हिन्न वर्गित चारक । \* देहारमञ् অর্থের প্রতি সম্পূর্ণ অনাদর। ইহারা স্বকীয় সহাৰমতার বলে নালাক্রপ স্থ<del>ৰ</del>-সভোগ করত: অবশেষে নিকট সম্মানিত হুটয়া প্রাণত্যাগ করি-शार्णन । अने जान वर्गनात के तमना अहे रिय मलूरसात दानरम किथिए भतिमारन অর্থের প্রতি অনাদর হইবে এবং কঠোর-হাগয়তার ছলে কিঞ্ছিৎপরিমাণে সজ্

<sup>&</sup>quot; निरकाणाम् निकल्वित्र" "द्याल्क निकर्गवित्र" ও " निकृताम मिक्णवित्र" क्षा भाक्रेक बद्दांभरत्रंत्र बरन भेक्रिक भारत्र है.

করতা আসিবে। ডিকেন্সের উপরেশ
এই—"অর্থের লোভে ৮ ঠোলসদর হইও
না, কারণ তালাতে আনেক কর পাইতে
হয়। অর্থের লোভ শাগ কবিরা সহদর হও কারণ হাহাতে পরিণামে জীনেক
ক্রম পাওরা যার।" ইংগণ্ডের একংগ
যেরপ সমাজের অবসা, ভালাতে ডিকে
স্মেন নভেল যে সেগানকার পক্ষে
নির্মন্ত উপযোগী ভালাতে আর কিছু
মাত্র সন্দেহনাই।

किछ तत्र-मगार्खन जनचा, देशलखीय मभारकत कावका इडे र मण्लूनी अबस्य। क्षकंताः हैंश्नार्ध गांडा गडीन डेलकाती. **এখানেও যে** ভাগা উপকাৰী হউৰে **এরপ আশা** কৰে যগ ন। ইংলও একবে লক্ষীদেনী শ্বি দ্ভূমি ৷ ইংলণ্ডে অর্ণমূলার বিনিনয়ক হ। সম্পাদিত হয়। রাশি রাশি ধনে উপর বুসিয়া ইংলও ধনেৰ স্পৃহা একটু ত্যাগ ক'রতে পারেন। **किश्व डे॰**ल' छत । मशामि यमि छुनि আমি ধনম্পুল জ্ঞাগ কৰি, ভালতে সং-मारतत काश्चि वहें हेंहे इटेरव भा। कर्छात्रञ्जलग्रहा, वामाद्वयः ,मान श्रीवन नम्र। अर्थार्कन हे स्वारतह दम्दा वक् मारे। देवत का का अपन (मरमंत्र व्यथान निका चुल्द । ध्यापत्र (भरम **শহাদয়তা কিছু** কম বঁধা অৰ্গ জ্ঞান চে**ই।** किथिए विक्रिंक करों 🦫 उसा र जुरहार देश्न ७ (व भए । हिन्द्र मा व विवस्त আমাদের ঠিক ভাগুর বিপরীত পর্যেচলা উচিত। অৰ্থাৰ্জন-পৃহাও সহস্ৰতা

উ ছরেরই দোব গুণ আছে: সমাজের অবস্থা অসুসারে কাহারও বা-বৃদ্ধি কাহা-রও বা হ্রাস হওয়া উচিত।

পৃর্বের দৃষ্টান্ত দেখিলে ব্ঝিতে পারা যাইবে, যে ইংলতে যে প্রবৃত্তি পিরিপৃষ্ট হওয়া আবশাক, এদেশে সেই
প্রবৃত্তিটি দমিত হওয়া প্রবৃত্তিটি দমিত
দওয়া আবশাক, আমাদের এখানে
সেইটি পরিবর্দ্ধিত করা উচিত। স্কুরাং
ইংলতের অফুকরণে আমাদের ইট
হওয়ার সন্তাবনা অপেক্ষা অনিন্ত হওয়ার
সন্তাবনা অধিক। আব একটি দৃষ্টান্ত
দিয়া আমরা এ বিষয়টি আরও ক্ষাট্ট
করিয়া বুঝাইতে চেটা করিব।

अन्य कविवाद्यवदे वक् आपदत्रत वस्त । किन्न व्यवस गरेसारे मटल्ल (संधक-দের বাবসা। কিন্তু এই প্রাণয়ের ভাব रेश्ना ७ कक्ष अध्यास्त्र (मार्-ष्यनाज्ञथ। देश्यधीशास्त्र माउ ध्वश्य श्वास्त्रकार्या। अन्त्रविन्त, अमूकरक ভালবাস, অমনি তাহাকে ভালবাসিলাম। হদয় বলিল, অমুককে ভালবাসিওনা, অমণি আমারও ভণেবাসা বন্ধ হইল। আমার একজন স্বামী আছেন। কিশ্ব षाप्रि छ। हारक छ। नवामित्व भावि ना। किन ? आमात कारत आगारक अ विवश्य नचि (पत्र ना! इत्रदात कथा (य সকল সমলে আমাকে গুনিতে इইবে তাर। नम्र। क्रमम व्यागातक व्याग সময় অনেক অন্যায় কাৰ্য্য করিতে

वत्न। खदत्रत मभग्न समग्न, सन शहिएक वतन, व्यथरत्त्र होकः शात् नहेतन श्रमश আর তাহা শোধ করিতে চায় না, हेडापि। अ मकल ममस्य क्षत्रहरू দ্মিত কৰিতে হইবে। কিন্তু প্রণয়ের (वला ज्ञमञ्ज यादा विलाद, जाहाह भिरता-धारा । देशविनीत श्राभी छेनात, महान् এবং সর্বভণান্তি। শৈবলিনী তাঁ-হাকে অগ্রিসাকী করিয়া পতিতে বরণ করিয়াছে। কিন্তু ভাছাতে কি ? শৈব-গিনীর সদ্র ভাষাকে ভালবাদিতে मध्यकि मिन ना। रेभवनिनी खरनक द्याहेल. जारनक मिन्डि क्रिल, किन्नु टमरा द्राष्ट्रि इहेल गा। स्ट्राः रेगतः নিনী প্রতাপকে বিশাহের পবেও পূর্বের নাায় ভালবাসিতে লাগিল। ইহাতে रेनविनीत (माघ इदेन वर्षे, किन्न (म দোষ অতি অয়। কেন অয় ? শৈব-লিনীর হৃদয় ভাহাকে ভালবাদিতে বলে गारे। कुन्मरनहादाङ अमग्ररक व्यरमक द्या हेन। ७४ कुन (कन १ कुन द्या-देन, कमन वृषाहेल, श्रांम्थी वृषाहेन। किञ्च कूरमात अपन त्रिल ना। " इंशाङ যে কুনের দোষ হইল না, ভাহা নয়। किन्छ (म (मायरक यमि जूमि (माय विनया মনে কর, তাহা হটলে তুমি নিষ্ঠ্রহাদর পাষও। কেন কুনের হারয় ভাগকে ভালবাসিতে বলিয়াছিল!

शूर्व्यत छावछान देश्द्रबद्धान । देश-

Cत्रक्टित (मर्ग हेर्स **मक्टर** । वालिकाकान इटेट हे युवाडी खानसमस्य আপনংকে স্বাধীন দেখিতে পায়। ভাহার যাখাকে ইক্রা সে ভা**হাকে** বিবাহ করিতে % ম। ই**হাতে ভাহার** नगाल निन्ता हर ना। किन्न आगारत्व (मर्ग विवारहर शत हरे**ड अव्यव्यव** অনুব আবভ হয়। বিবা**হের পুর্বে** পাত্র কন্যা কেই কাছাকে দেখিতে পার না। আমাদের দেশে প্রণয় সমাজপ্রথার অধীন মাত্র। ভোমার হৃদয়কে ইহাতে मगाद्धव वर्ग हिन्द इहेर्द। (यमन অনা অনাংলে, তুমি হাদরকে সমাজের বশবর্ত্তী করিতে চেষ্টা কর, প্রণয়ের বেলাও ছোমাকে ভাহাই করিতে হ-🗝 (४) कारव एकामारक आहेरनद वर्ग-वडी २ हेबा हिनाड निरंब करत, श्रमन ভোষাকে অনোর উপার্জিত অর্থ বল-পূৰ্ব্যক লইভে বলে। তুমি এ সকল স্থলে হাদরের অভ্তা উপেক্ষা করিয়া সমাজেৰ উপ**ৰেশমতে চলিয়া থাক**। অব্যংয়ুৰ বেলাও ভোমাকে ভাহাই ক-রিতে হটবে। পিতা, মাতা বাহাকে স্বামী কি স্ত্রী বলিয়া আমার সন্মুখে উপনীত করিলেন, আমি তাঁহাকে যাব ब्जीयन ভाলবাদিব, श्रुपद्मत श्रुपद्म তাঁহাকে যত্নের সহিত রক্ষা করিব। বদি হদর ইহাতে কোনরপ্সসভোষ বা বিরক্তি প্রকাশ করে, আনি সেই

"নগেজ নিজেই বলিয়াছিল, " আমি নিজের সহিত যুদ্ধ করিয়া ক্ষত বিক্ষত ব্রুদ্ধ করিয়া ক্ষত বিক্ষত ব্রুদ্ধ করিয়া ক্ষত বিক্ষত

লাপির হলরকে পদতলে মন্দিত করিব, প্রারোজন কইলে থণ্ড থণ্ড করিবা ছিড়িরা কেনিব, কিছু আমার হলরমন্দিরের দেব বা দেবীকে সিংহাসমতাত করিব না। রোগে, শোকে, নিপদে, সম্পদে, হংবে, প্রথে ছারার নাার উহার সলে সঙ্গে কিরিব। সন্ধ্রে কি আছে দেখিব না, পার্শ্বে কি আছে দেখিব না। যদি সামী হই, স্তীকে বংক্ষ করিরা যাব-জ্জীবন কাটাইব। যদি স্তী হই, স্বামী-পদে মন্তক রাপিরা জীবন কাটাইব।

ইহাই বঙ্গদেশের প্রাণয়ের লক্ষণ। বাঁছারা হৃদবের প্রলোভনে মেহিত इहेब्रा हेहात खनान। हतन करवन, छ। हावा आशिराद प्राम चुला। हेश्तकत्वत मञ काहारमन (मर्ट्स मका इहेटल इंग्रेस्टर) কিছ আমরা ইছাকে প্রাণ ন'বরা আমা-দের দেশে সভাবলিয়া স্বীশার করিতে शांति मा। देवक्कानिकता मणीक्षक मानत ভ্ৰম বলিয়া বুঝাইতে পারেন,দার্শনিকেরা সভীত্তে কুসংস্থার বলিয়া উপহাস कंब्रिक भादान, किन्तु गडीच आधारमद কলম্বিত মন্তকের একমাত্র উচ্ছেশ স্থি। देशाए कि बना शृत्सी क मत्त्रत जानव দিন দিন বাড়িতেছে,ভাহ। আমরা নিশ্চর করিরা বলিতে পারি না। জর্জ ইলি-ষ্ট্ হইতে সামান্য নভেল লেখক প্রাপ্ত कि सम्बद्धानग्रस्य करे भगविक आकारत िखिंड करतम, छारा आमहा ठिक् ্ৰবিয়া বলিতে পারি ল:। ইংরেজেরা সাবীনতাপ্রির। বোধ হর প্রশ্রসম্ব

ক্ষেপ্ত সাধীনত। আনিতে ইহার। ইচ্ছা করেন। আসরা অন্য সকল বিষয়ে স্বাধীনতার «ইচ্ছুক হইলে হইতে পারি, কিন্তু আমরা প্রথয়ের স্বাধীনতা চাই মা। ডুটেডেন বলিতে পারেন— "One to one was cursedly confined।" আমরা বলিব—"One to one was blessedly confined."

याश इंडेक, अकरन (मधा (मन, (व हेश्न औरत्रता প्रवायक त्य भाकारत हिक्कि करतन, आंगारनत (मर्ग छ। हा लाम्भहेत-স্তক এবং অতীব শ্বণান্ধনক। সভীবের বৃদ্ধিতে যে সমাজের অপবৃদ্ধি হয় ভাহা विनवात शासा मारे। यहि शान হটতে এই সতীগুটুকু বাদ দেওয়া যায়, তাহা इटेल शकु छात छित्र सात किहुहै ष्यविश्व थाटक ना। यामाटमत्र विश्वात अहे যে প্রণয়দয়কে ইংলও আছিও সভা-शमवीट आक्र इन नाहै। कातन त्य. (मण यक मछ। इहेरव, (म (मर्ग्ण मगा-(बर व्याळा उटरे मचानाई विनया गना ছটবে। অন্তরাং যদি ইংলভীয় প্রণয় ভাব আমরা অবিকল অফুকরণ করি, ভাষতে अभारतत अहे नाल इहेरव रा আমরা খদেশীর সভীত্বের প্রতি বীতশ্র रुदेश धानग्रक (क्वन প्राचावर्ग विक्षा गरन कतिव।

गै। इति । अहे गमछ विट्यामा कृतिना, आमारणय दणराध्य अञ्चाद गमछ स्वत्रक्षण क्याडः, राहे गमछ अञ्चाद मृश्वीक्याप्य राहेश मरका विभिन्नात स्वताम स्वत्रियम, কাঁহাকে আমরা আমাদের যথার্থ হিতৈষী বলির। সহস্র সহস্র ধন্যবাদ দিব। আর বাহার। শুদ্ধ মনোরঞ্জনের উদ্দেশ্যে ইং-রেদ্ধী ভাব সমস্তের অবিকল ''তরজমা'' কবিয়া আমাদের সন্মুখে উপস্থাপিত

করিবেন, ভাঁহারা প্রতিভাশালী হইতে পারেন,কিন্তু তাঁহাদিগকে কখনই দেশের ধনাবাদার্হ বলিয়া মনে করিতে পারিব না।

### -- FOI : \$3; **\*\*\*** : 103--

### स्राधीन वानिष्ण अ तकाकत।

প্রথম অবস্থার লোকে আপন প্রয়ো-ল্নীয় সমস্ত প্লার্থ আগ্নি নির্মাণ ক্রিয়া লইত। তথন পরস্পর দ্বা বিনিময়ে যে কত শ্রমণাঘৰ হয়, ভাহা লোকে ভানিত না। ক্রমে যাহারা নিতাম্ভ কাছাকাছি থাকিত, তাহারা আপন প্রতিবেশীর সহিত আপন দ্রব্য বদলাইয়া লইত। রাম তাঁত বোনে, শাম ধান রোয়, শ্যামের ধানে রামের প্রিবার প্রতিপালন হয়, রামের কা-পড়ে শামের পরিবারের শীত নিবারণ হয়। হরি লোহাব কর্মা করে, কৃষ্ণ গ্রধের ব্যবসা করে, ব্রজ নাপিত। পরস্পর পরস্পরকে সাহায়া করে, পাঁচ-জনই জাপন আপন কার্যালারা আর চাব্রিজনকে সাহায্য করে, এবং তাহা-দের সহায়তায় নিজেরও চলে। এই থান আরম্ভ। ক্রমে হরি যদি এত লোহার অস্ত্র তৈয়ার করিতে পারে যে নিল্গ্রামে ভাহার প্রয়োজন হয় না। হরি কি করিবে ? আপন গ্রামে যত প্রোজন ভাহাই করিয়া বসিয়া পা-

थ।किरन, ना वाहिरत विक्रम कतिवात ८ठहें। कतिर्दें।

যেমন এক সময়ে সকল লোকই আ-পন আপন দ্রব্য উৎপাদন করিত, তেমনি এক সময়ে সকল গ্রামই আপন অাপন দরকারী জিনিস তৈয়ার করিয়া লইত। ক্রমে ভাহারা দেখিল যে, পরস্পরের সহায়তা পাইলে স্থবিধা হয়। হরিপুর দেখিল যে বিষ্ণুপুরে একজন কর্মকার আছে, সে অল্ল সময়ে অনেক লোহার অস্ত্র হৈয়াব করিতে পারে, তাহার নিজের গ্রামের যত দরকার ভাহা অপেকা অনেক অধিক সে তৈ-য়ার করে। স্থতরাং হরিপুরের লোক বিষ্ণুরের হরির কাছ হইতে সম্ভায় लाहात काम नहेर्ड वार्शिन। পুরের কর্মকার চাস করিতে লাগিল। এইরূপে একজ্ন নাপিতে ছুই গ্রামের চলিল। হয় ত হরিপুরের জমীতে कात्रहातत नाम वर्ष हमरकात इत्। বিষ্ণুপুরের লোক অরহরের দাল চাস আর না করিয়া লোহার কাজ ও নাপিত

দিরা অরহরের দাল পাইতে লাগিল। ছইদলেরই কিছু কিছু সংশ্রের হইল, শ্রম ও বার লাখব হইল।

ক্রমে এই সকল কুদ্র কুন্ত পরস্পর সাহায়কারী অনেকগুলি গ্রাম একত্র चरेशा এकी आमनमनाग्र इहेन। धरे वाममनवारबन है नाम (जना विनाम, এই এক এক জেলার লোক আপন धारतास्त्रीत ममछ वच्च एकनात्र मार्था তৈরার করিয়া লয়। জেল্লার মধ্যে যে জায়গায় যে জিনিস্টি ভাল হইতে পারে, সেখানকায় লোক কেবল সেই बिनिगरीरे देउदाद करत. चभद्र दख তাহাদের প্রতিবেশবাসীদিগের নিকট षाशन किनिरमत वनरत शाहा कत. (जनात नाम वृतिभागः। वृतिभाः त्वत्र त्वांक प्रिवेन य ठाउँन जाहारमृत **(मर्ट्स এक উৎপর হয় (য়, তাহারা চাউল** অনায়াদে বাছিরে পাঠাইতে পারে। ঢাকার লোকও দেখিল যে ভাহারা যত কাপড় তৈয়ার করিতে পারে তত কাপড় ভাহাদের দরকার হয় না: ইভরাং ভাহারাও কাপড় বিদেশে পাঠাইতে तासी रहेन। इहे मनहे तासी, बत्सावस इहेन, छाकार्त (गारकत हान दिविभान দিবে, বরিশালের কাপড় ঢাকা দিবে। चार्ल रवमन ब्राप्त ७ भारम वरकावछ হইরাছিল, এখন ঢ়াকা ও বরিশালে ভা-हाहे जावात शहेंग। किन्न धवात वित-শালে যাতারা কাপড় তৈয়ার করিত ভাহারা ও চাকার যাহারা চাউল তৈরার

করিত ভাষারা প্রায় ছই তিন হাজাং লোক। ইহারা কাল পাইল না। ইহা द्वित मभात कि इटेट्य! टेट्राप्त दिन-কতক খুব ক্ষতি হইবে। বরিশাণের ভাঁতীদের মধ্যে যাহারা ভাল তাহারা চলিয়া वाहरत, याहाता मन চাস করিবে। क्षक चना चना वावमात्र व्यवमध्य कत्रित्, क्रक्त धहे হেঁপার মরিরাও বাইবে। চাসারাও কতক তাঁতীর কাম শিখিবে কতক অন্য ব্যবসায়ে যাইবে, কত্তক वित्रभारम हिम्मा याहेरव। छूनैहिस्सन না খাইয়াও মারা যাইবে। ঢাকা ও বরিশাল ত প্রথম হইতেই পরম্পরের कांशक अ ठाकेंग यक मत्रकात मुबहे দিতে পারিত; আর ঢাকার ভাতী वाष्ट्रिन, वतिभारन हामा वाष्ट्रिन । हाकात অনৈক অধিক কাপড় হইতে লাগিল, वित्रणात्म अत्मक अधिक ठाउँम इहेट वाशिव। লোকের मक्डन इडेशाव বাঁচিফে লাগিল। তখন লোকে গুনিল मानपट्ट डेरक्ट चास दत्र, त्मानद चाम টক্ বিষাদ্। অসনি ঢাকাও বরিশাল ष्टे कात्रभात (लाक्टे मनम् कविन (ध, আমাদের বাড়তি কাপড় ও সাউল দিয়া আইদ ধুব করিয়া আত্র ভক্ষণ कता वाष्ट्रक । मानम्टइत लाक् ८ (मं थिन मन नव, अनावादन ठाउँन कागफ मिलिट्य: मालम्ट्ड हामा । कांठी नवार निक निक वावनात काल ক্রিয়া পানেরই বাগান ভৈরার ক্রিভে

900

ামের বাগান ছিল, তাহারা নিজ নিজ াগান বেডিয়া আবার কাপড় ও চাউল তৈরার করিতে লাগিল। মালদহওয়া-লারা দেখিল যে তাহারা ঢাকা, বরি-শাল ও মালদহের লোককে পেট ভরিয়া আম ভক্ষণ করাইয়াও প্রতিবৎসরে ১২া১৩ লক্ষাম বাঁচাইভে পারে, 'তথন তাহারা ভারিল আম বৎসরে ছই मान वहे भाउमा याम मा; नचरनंत्र व्याम থাওয়া যার ইহার কোন উপায় হয় না कि ? क्रांट्स वाहित इंडेन, त्य,यनि आस्मत রস শুকাইয়া রাখা যায়, তাহা হইলে সম্বংসর চলে। আর কাঁচা আম কাছা-কাছি ৪া৫টি জেলা বইত দুরে পাঠান যার না শুকাইরা রাখিলে আরো অনেক দেশে পাঠাইতে পারা যাইবে। ঢাকা ও ব্রিশাল হইতে চাউন কাপড়ের সংস্থান হইতেছে, অনা জারগা হইতে ष्यात्रश्व नाना बिनिम मिलित्व। छाका বরিশালের তাঁতী ও চাসা আবার বাড়ি-য়াছে, ভাহারা অন্য অন্য জেলায় আপন আপন কাপড় ও চাউল পাঠা-है । है । यानमह काम करो-हेबा ब्यामक्षक, कर्वा अक्टि न्डन ब्यादि-দ্রিরা হইরাছে; ইহাদের ভাষার আর थासामन नारे। व्हेत्राथ याबीन वानिकाषांत्रा धहे नाछ इहेन (व, दव দেশের লোক যাহা স্থবিধামত প্রস্তুত করিছে পারে, সে ভাহাই প্রস্তুত দ্রিড়ে বাগিল ভাহাতে প্রিশ্রমের

নিল। ঢাকা ও বরিণালে যাহাদের অনেক লাম্ব হইল। উৎপ্র অধিক যের বাগান ছিল, তাহারা নিজ নিজ হইল। একটি নৃতন আবিদ্ধিরা ছংগোতে গান বেতিয়া আবার কাপড় ও চাউল সম্মান লাহেক আমের যাদ প্রহন্ধিকরিতে যার করিতে লাগিল। মালদহওয়া- লাগিল। আর এক জেলার কতক্ষিলি গা দেখিল যে তাহারা ঢাকা, বরি- লোক, তিন কেলায় সর্বদা যাভারাত্ত্ব ও মালদহের লোককে পেট ভরিষা ক্রার দর্শ ইহাদের বুদ্ধিভিছি হইল।

আমরা এতক্ষণ মনে করিতেছিলামবে ব্যবসায়ের জনা বরিশালে কাপড়ের কারবার উঠিয়া গেল, ঢাকায়চাউলের চাস উঠিয়া গেল ও মালদহহইতে ছই উঠিয়া গেল। বাস্তবিক
তাহা হয় না, জীবনধায়ণোপযোগী নিতান্ত প্রয়েজনীয় বন্ত ক্থন একেবারে
কোন বিস্তৃত ভূভাগ হইতে উঠিয়া য়ায়
না। কিছু না কিছু পরিমাণে থাকিয়াই
যায়। কিন্তু সে কথায় কোন আছা
না করিয়া আমরা বেভাবে বলিয়া আসিতেছি সেই ভাবেই বলিয়া যাই।

মালদহে আত্র উবৃত্ত হইল। বরিলালে ধানা উবৃত্ত হইল, ঢাকার বস্ত্র
উবৃত্ত হইল। তখন এই তিন জারগার লোক দেখিল এত জিনিস মিথাা
অপচন্থ না করিরা সমুজের পারে বা
হিল্মানের অভ্যন্তরভাগে. এ সকল
প্রেরণ করিলে অনেক জিনিস পাওয়া
যাইবে, যাহাতে আমাদের অবস্থাছন্দা
বৃদ্ধি হইবে। স্থতরাং ভাহারা আপন
আপন জিনিস লইরা ভিন্ন ভিন্ন দেশে
বাইতে আরম্ভ করিল। আমাকান বা
উড়িয়ার বাইতে হইলে, বড় নৌকার
প্রয়োজন স্থতরাং বড় নৌকা

ছইল, আরাকান হইতে নানা প্রকাব শিল্পাত জবা আনিতে লাগিল। আবাকানগুরালারা শিল্পার্য্য বিজ্ ত করিয়া চাউলাদির জন্য কিয়ৎপরিমাণে বরিশালের উপর নির্ভর করিতে লাগিল আর নৃতন জিনিস আমস্বর্থ পাইতে লাগিল। দিনকতক আমস্বর্থ ধাইয়া তাহাদের সক গেল যে আম থাইতে হইবে। অনেক চেষ্টার পর আম pre serve করিবার উপায় উল্লাবন হইল, আরাকানের লোক ইচ্ছা করিলে এপন আমও পাইতে পাইল।

এইরপে জ্মশং বাণিজা বিস্তার

হইলে জ্মে লোকেব স্থস্বাচ্ছলা বৃদ্ধি

হর, নিতাস্ত প্রযোজনীয় বস্ত সন্তা হয়,

নৃতন নৃতন আবিদ্ধিয়া হইয়। জড

জগতের উপর মন্তুয়েন আদিপতা
বৃদ্ধি হয়, মন্তুয়ের প্রিপ্রম কম হয়,
বৃদ্ধিও কর্মাক্ষমতা বৃদ্ধি হয়,সমন্ত মানব

জাতির সহিত সহামুভূতি করিতে
শিথে, জগং শুদ্ধ ভাই হইয়া

দাঁডায়।

যদি জগৎ শুদ্ধ লোক বরিশাল ঢাকা
ও মালদহের মত সোজা ব্যে, তবে
যে দেশে যাহা সহজে উৎপন্ন হইতে
পারে, সে দেশে তাহাই উৎপন্ন কবা
কর্তব্য। সকল লোকে সকল জিনিস
সন্তা পান। জগতের লোকসংখা বৃদ্ধি
হয় ও লোকের সাংসারিক হৃঃথ কমিরা
যায়। ইংলাণ্ডের টাকা অনেক,ইংলাণ্ডেব
লোক পুন পরিশ্রম করিতে পারে, ইংলণ্ড

गडा देः लए जानांविध करनत छाथः স্ষ্টি। স্বতরাং ইংলপ্তেব উচিত যে চাঃ বাস একেবাবে ত্যাগ করিয়া কেবল नागविश भिरत्नत अञ्गीलम कता। ফান্সে উৎকৃষ্ট দ্রাক্ষা দরে, উৎকৃষ্ট রেশম তৈয়ারি হয়, অভএব ফুাস্পেব উচিত পৃথিবীৰ সমস্ত দেশেৰ মদা ও রেশমেব কাপড় সরববাহ কবা। ইতালী ব লোক চিত্তকৰ্মে অভ্যস্ত্তনিপুণ, ইতাশীৰ জল ও বায় এবং ই হালীব নিৰ্দেশ্য পৰি-ছাব গগনম ওল চিত্র কর্ম্বের অনেক স্থবিধা করিষা দেশ, অত্তব ইতালীর উচিত **क्विन जिंबकरण मनः मः रागं कवा**। ভাবতবর্ষ ও ইউনাইটেড স্টেটে অপ্র্যাপু উর্বা ভূমি আছে, অতএন ইহাদেব উচিত কেবল চাস্বাস কৰা, কুশিয়ায় অপ্রাপ্ত অনুষ্ঠা ভূমি আছে সেখানে অনেক পশু পালিত হইতে পাবে,মুভরাং ভাগদেৰ উচিত পশুপালনগুত্তি অবলয়ন

কিন্ত লোকেব কেমন ছুবুজি, তাহার।
মনে কবে ভাহাবা যতই বেশা থরচ
কবিয়া আপন আপন দেশে সকল দ্রবা
প্রেন্ত করিবে তত্তই হাছাদেব বাহাছ্রী
বেশী। ইংলতে অপ্র্যাপ্ত লবন পাওয়া
নায়, প্রন্ত করিতে হয় না। ফুল্লে
ভঙ্গ বহনের থবচ দিলে সেখান হইতে ব্রু
অপ্র্যাপ্ত লবন পাইতে পারে। কিন্তু ছি!
ইংলতেব লবন ফুল্লে থাইবে! ক্রুনই
হইতে পারে না। ফুল্লে প্রতি বংসর
এক কোটী মৃদ্রা বায়ে ঘরে লবন প্রান্তর

ুকরিয়া লইবে তথাপি নিতান্ত অল মূলো हैश्नएखन्न नवन महेरन मा। चारनरक জিজাদা করিতে পারেন ইংলভের লোক গিয়া কেন ফাঙ্গে লবণ বেচিয়া আসে मा १ डाहा इरेवात (का नारे। रेश्नं ७ ছইতে লবণ গেলেই তাহার উপর এত ট্যাক্স দিতে হয় যে বেচিয়া লোকদান বই লাভ হয় না। মনে কর ফা্লেল লবণ তৈয়ারি করিতে মণ করা ছুই টাকা থরচ হয় ও ইংলও হইতে আনিতে চারি আনা থর্চ হয়। তাহাতে ফালের গ্ৰণ্ঠেত আইন ক্রিলেন, যে ইংল্ড হইতে লবণ আসিলে শতকরা সাডে সাত শত টাকা ট্যাক্স দিতে হইবে। চারি আনার জিনিদে সাড়ে গাত দিকা ট্যাকা। ইংলণ্ডের লবণের দাম ফালে গিয়া रूरेन २d. हेहात छेशत वावमात्रमात्रिन-গের মুনাফা আছে স্তরাং ফালে ইং-नए ७ इ न वर्ग इ मांग कार मात्र न वर्ग व मांग অপেকাবেশী হইল; আর কেছ ইংলভের नवन किनित ना। धरेत्र निकारमान मव প্রকার শিল্পকর্ম রক্ষার জন্য ট্যাক্স ক-রার নাম নাম Protection অথবা রকা ইংলও ভিন্ন গৃথিবীর তাবং দেশেই এইরপ রক্ষা-কর প্রচলিত। ष्यना (मर्भात क्रिनिम है:लए (शत्न **छे। का भिट्छ इय ना। किन्द हे: लट्छ** त बिनिम षश (मर्ग (भरन हे है। स मिर्ड रम । পूर्विरे वना इरेमाह रेशन एउन **होका (वभी। এड (वभी (व हे** स्वर्थ িথার প্রতিব্ৎসর ধরচ ধরচা বাদে

৯৭ काणी जोका विरमण श्रेटिक सम পাইয়া থাকে। हे:लएखन लाटकन বাবদার বুদ্ধি অতি উৎকৃষ্ট, ইংলডের লোকের এমন ক্ষমতা আছে, যে ভাছারা পৃথিবীর সর্বত্ত ছুরী কাঁচি তুলার কাপড়, পাটের জিনিস, লোহার সবরকমের জি-নিস, গ্রম কাপড়, ষ্টকিং কতক কতক কাঠের জিনিসও দিতে পারে। কিন্তু द्रका करत्र बना व्यत्नक (मर्ट्य हे॰ मरखत खवानि यादैवात (का नाहै। देखेनाहै-**টেড ষ্টেট প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন,যে বিদেশ** হইতে কোন জিনিস আসিতে দিবেন না। এমন কি কুমারের জিনিদের উপর শতকরা ১০ টাকা রাক্ষকর বসাইয়াছেন। দেভি ফদেট ইউনাইটেড টেটের কলা-কর সম্বন্ধীয় আহামুকির এক স্থল্য पृष्टी **छ (प**र्था हे या दिन । जिनि वतन हे छे-নাইটেড প্টেটের লোক যে পােষাক পরে, তাহার স্তার উপর ট্যাক্স, কাপ-উপর ট্যাক্স, সঞ্জাবের কাপড়ের উপর ট্যাকা, বোতামের উপর ট্যাকা; এইরপে সমস্ত জামাটির নিয়মিত মূল্যের উপর শতকরা প্রায় ৫০ টাকা দিতে रुष्र । निरम त्निष्ठि कटमटिव (मेरे शाबा-গ্রাফটি অমুবাদিত হটল।

"আমেরিকানেরা যে পোষাক পরিরা থাকে ভাছার উপর ট্যাক্সের তালিকা। টুলি, টুপির রেশমে শতকরা ৬০ টাকা, ফিতার শতকরা ৬০ টাকা ধারে যে আলপাকা থাকে ভাছাতে শতকরা ৫০ অথবা ৩৫, ডিভরের চামড়া ৩৫, মদ্দিন থক বুর্গ থকে ৭, আটা শতকরা ২০
টাকা; কোট—কাপড়ে শতকরা ৫৫
রেশ্যে ৬০, আলপাকা ৫০, বোতাম
এক পাউতে ২০ সেণ্টব্রেড এক পাউত
৫০, সেণ্ট, সলাবদে বে মক্মল থাকে
ভাছাতে শতকরা ৬০ টাকা। ইত্যাদি
ইত্যাদি।

এই রক্ষা করের জনা পৃথিবীর যে
কত জনিউ হইতেছে তাহার সংখ্যা করা
বার না। প্রোক্ষেসর ফলেট হিসাব করিরা
কোইরাছেন যে শুদ্ধ লবণের রক্ষার জন্ত
কাজকে প্রতি বৎসর ১ কোটা করিয়া
টাকা লোকসান দিতে হয়, অর্থাৎ ইংলাণ্ডের লবণে ও ফ্রান্সের লবণ কোর এ
ক্রমণ ঐ টাকা প্রজাদিগকে লবণের
দামে, বেশী দিতে হয়।

জনেকে মনে করিতে পারেন যে এই
টাকা গবর্ণমেণ্ট পান স্থতরাং রক্ষাকর
একটি ট্যাক্স, প্রজাদিগের পকেট হইতে
না আসিয়া বিদেশীয় বশিকদিগের পকেট
ইইতে আসে, বেশ ত। কিন্ত-তাহা
নহে। মনে কর ফান্সে কোটা মণ লবপের মরকার, ফান্সে ৭৫ লক্ষ মণ
লবণ প্রস্তুত হর, প্রতি মণের পড়তা
বার আনা। ইংলও হইতে আসে ২৫
লক্ষ মণ এই ২৫ লক্ষ মণের উপর
মনকরা ।। আট আনা ট্যাল্ল বিদিন।
গবর্ণমেণ্টের সাত্তে বার লক্ষ টাকা আদায়
ইবা। কিন্তু প্রজাদের দিতে হইল
ক্ষ্মণ এত স্বতা

নয় যে ভাট আনা ট্যাক্স দিয়া বার আনার বিক্রম করিতে পারে হতরাং ইংলতের লবণ এক টাকা ছই আনায় विक्रम् इष्टेन। किञ्चलवर्णम वास्तरम कडक ১৯/• কভক ৬০ আনায় বিজ্ঞায় হইতে भारत ना मवहे विक्रम दहेग ১%। ऋख-রাং ফুান্দের লোককে আপনাদের १८ लक माल मनकता इत्र जाना माम অধিক দিতে হইল। আবার যদি ট্যাক্স না পাকিত ভাহা হইলে হয় ত ইংলগু হইতেই কোটী মণ লবণ আসিয়া দশ আনায় বিক্রয় হইত। মণকরা আট আনা অর্থাৎ ৫০ লক্ষ টাকা প্রতি বৎসর ফ্ান্সের লোককে লোকসান দিভে গবর্ণমেণ্টে সাড়ে বার লক্ষ व्यापादा श्रेषादात पिटल इहेग ৫० नक লাভ হইল ফুান্দের জনকত বাবসায় मारत्रत, ममस প্রজার নিকট ছইতে ৫০ লক্ষ টাকা আদার করিয়া কেন জন কভক ব্যবসাদারকে বক্সিয় দেওয়া हरेग।

আমাদের দেশে যে সকল কর আছে
তাহার মধ্যে কেহই রক্ষাকর নহে।
কারণ বিদেশীয় দ্রব্য আমাদের দেশে
না আফুক, এ অভিপ্রায়ে কোন করই
স্থাপিত হয় নাই। কিন্তু এমন অনেক
জিনিস আছে যাহার কিয়দংশ দেশে
উৎপন্ন হয় ও কিয়দংশ বিদেশ হইতে
আসে। এরপ অবস্থায় যে অংশ বিদেশ হইতে আসে তম্ম ভাহার উপরকর বসাইলে যে সংশ বেশে উৎপন্ন

चत्रं छाहोत्र चारनक स्विधा हत्र। विदेश-শীর দ্রবোর আমদানী তাহাতে কিছ কম হইবার সম্ভাবনা। এক বাজাবে এक जिनिम इहे मत्त्र विक्रम रम न।। বিদেশীয় জিনিস ট্যাক্স দেয়, স্থতরাৎ তাহার দাম অধিক, দেশীয় জিনিস টাাক্স দেয় না, ভাহার দাম কম। वाबाद्य इटे आतिश পড़िन, मिनीश ७ विष्णाीत इहेरत्रतहे मनान माम दरेन। (मणीय जिनित्म नाफ दरेन (वभी, विष्मेश किनित्म लाख कम। দেশীয় সওদাগারেরা দাম শতকরা দশ টাকা কমাইয়া দিলেন, তাঁহাদের किनिम विकास इहेल, विदल्लीस किनिम (कह लहेल ना। यि कथन अमन इम् देय, दम्भीम जिनिन वाजादत नारे. তবেই বিদেশীয় चिनिम विक्रम इहेरवः नटि विद्यामीयिनगटक लाकगान मिट्ड इटेरव।

তরপ অবস্থায় ওরপ কর রক্ষাকর
হইরা উঠে; এই জনাই ইংলতে ছই
প্রকার বস্তর উপর সমান ট্যাক্স বসান,
ইংলতের মদকতক দেশে,কতক বিদেশে
ভাষা। দেশীর মদের উপর একসাইস ও
বিদেশীর মদের উপর কট্টম ডিউট লওরা
হয়। অতএব ইংলতে রক্ষাকরের কোন
কথাই নাই। আমাদের দেশের কাপড়
নাই। কিছু আমাদের দেশের কাপড়
ভিক দেশে তৈরারি হয়,কতক মাঞ্চের
আম্রা শতকরা পাঁচ টাকা টেকা

नहे। बहेरि शाक्षकः विकासकार এজনা মাঞ্চেইয়ের इटेमा नैष्णाम । विशिक्त शर्वरगरके कानाव। মেণ্ট ঐ করের কিয়দংশ উঠাইয়া দেন। অগ্রাৎ সর্বভিদ্ধ ১৭কোটা টাকার বিদে-শীয় কাপড় আমাদের দেশে আসে, ভাহার কর হটতে পঁচাশি লক্ষ টাকা উৎপর হয়; ঐ টাকায় বিশলক গ্রণ-**डिठाइया** (पन। **बाक्किट** इत्र विविक्तित्वत कथा श्र गदर्वस्य विक्र विक्र কার্যো হস্তক্ষেপ করা কভদুর যুক্তিনিছ তাহা আমরা বলিতে চাহি না। किस এরপ কর উঠাইরা দেওরা বে উচিত তাহাতে সন্দেহ নাই। ঐ কর যে রক্ষাকর ভাষা ফদেট সাছেব ভাষার Free Trade and Protection নামক গ্রন্থে শেষ পারাগ্রাফে মুক্তকঠে স্বীকার করিয়াছেন। কিন্তু উহা রক্ষাকর হইলেও তিনি উহা উঠাইয়া দেওরার বিরোধী, কারণ তিনি বলেন, গবর্ণ-त्मृत्छेद नमझ छान नয়, छेठाहेয়ा नित्नहे কোন নৃত্ৰ কর লইছে হইবে সেটা বড অত্যাচার হইবে ৷ অতএব তাঁহার कथात्र এই বুঝা यात्र ८य, গৰণ্মেণ্টের সময় হইলে শত কার্যা ভ্যাগ করিয়া चार्ल रेहा डेंब्राहेब्रा (एश्रम डेहिड)।

আমরা উক্ত টেকা উঠাইরা দেওরার সম্পূর্ণ পক্ষপাতী; কারণ উহাতে দেশীর জিনিসের পর্যান্ত কর বাড়ান হয়: আর আমাদের মত এই যে, বে সকল এব্য আবাল, বৃদ্ধ, ভজ, করিজ স্কলেরই

নিতান্ত প্রয়েজনীয়, তাহার মূল্য যা-হাতে কমে, ভাহা গবর্ণমেটের দেখা নিতান্ত প্রয়োজন। এমন অবস্থায় যে कान छेशारा के टिका छेठारेश (मंख्या নিভাক্ত আবশাক। হিত্তিস্তা গ্রথমেণ্টের কাজ। যেটি যাহাতে হয়, গবর্ণমেণ্টের সেইটি করা সকলের আগো ঐ টেকা উঠাইয়া मित्न be नक है।का महिल्लाकारमत ঘরে ছড়াইয়া পড়িত সন্দেহ নাই। কারণ ধনীলোকে আজিও দেশীয় সৃন্ধ বস্ত্র (বাহার মূল্য অত্যন্ত অধিক) ব্যবহার করিয়া থাকেন। ছড়াইয়া পড়িলে যে চাসবাসের স্থবিধা হইত, তাহার আর • मत्मह नाहै।

ইংরেজি সম্বাদপত্রওয়ালারা ঐ টেকা উঠাইয়া দিবার সময় বড়ই চীৎকার करत्रन, छाँहाता वर्णन धक्तभ कतिरण (वाशास्त्र (य मकल जूनांकल इहेग्रांट्इ, তাহার ক্ষতি হইবে। এটি সম্পূর্ণ ভ্রম কারণ বোম্বে যে সকল কল আছে, ভাহারা ৮।১০ বৎসর কাল চালাইতেছে। মাঞ্চের অপেকা তাহাদের স্থবিধা। মাঞ্চেরকে এদেশ হইতে তুলা কিনিয়া বছনি থরচ করিয়া লইয়া याहेटल इम्र ; व्यावात वहनियत्र कतिमा ফিরাইয়া দিয়া যাইতে হয়। ইংলতে मजूबि वर्षे अधिक, अथारन मङ्कि वर् ভারতবর্ষীয় বাজারে মাঞ্চের श्रात्रका (मण्ड (वार्षश्रानात्म्त्र श्राकृष व्यक्षित । (वार्य उग्रामा देशमञ्ज इटेर्ड

অল হৃদে টাকা লইয়া এইথানে বসিয়া তুইবারকার বহনি বাঁচাইয়া, অল সজু-রিতে যদি মাঞ্চেরকে ডরান, তবে তাঁহাদের বাবসায় না করাই ভাল।

गिन वरनन (य, यथन विरम्राम अकछ। कांस व्यत्नक मिन हिना वांत्रिएह, **(मर्म स्मर्ट कांबर्ध जावस्त्र क**तिराज इ-रेरव, जधन जाशांक तका ना कतिरल, বিদেশীয়দিগের সঙ্গে যুকিয়া উঠিতে পারিবে কেন ? এরপ করা ফদেট সাহেব যুক্তিসকত মনে করেন না; कातन जिनि वालन, याशिनगरक धक-বার রক্ষা করা হয়, ভাহারা চিরকাল "রক্ষাকর রক্ষাকর" বলিয়া চীৎকার করে, ভাহারা আত্মনির্ভর শিথে না। আমরা ফসেটের যুক্তির সম্পূর্ণ অনু-মোদন করিনা; কারণ রক্ষা করা না করা রক্ষিতদের কথানুসারে ত হইবে ना, जाहात बना अकठा भवर्गमन्छ আছে, গবর্ণমেণ্ট নিজে যথন বুঝিবেন যে, রক্ষা আবে উচিত নহে, তথন রকা উঠাইয়া লইবে। অতএব প্রথম অব-স্থায় মিলমতাঁকুযায়ী হইয়া রক্ষা করা উচিত। এরপ রকা বোম্বের্যালারা ৮।১० वरमत भारेग्राह्म, अथन भवर्ग মেণ্ট যেমন বুঝিবেন তেমনি করিবেন, তাহাদের আরে রক্ষা চাওয়া অন্যায়।

আমাদের দেশীয় লোকেরও টেক্স উঠিয়া গেলে স্থবিধা বই অস্থবিধা নাই, স্তরাং দেশীয় সমাদপ্রভ্রালারা ্য কেন উহাব বিবোধী হইয়। পাডাই তংহারা আজিও বোপ হর গড্ডালিকা ্রাচিতেলন, ভাহো অংশরা জানি না। আহবাছবং অগ্রণীর প্রথার্মরণ কলেন।

#### ---

### নৈষধ সমালোচন।

্যক্ষণীয়ৰ নিউন প্ৰভৃতি অবিতীয় কৰ্ত্বক বিশোপ। যে কারণেই হউক. ক্রিগণেৰ ক্রার ইংবেঞ্সাহিকাভাণ্ডার করে আশ্রগণের করি ও কাব্য অতি • অপ্যাপ্ত রহে প্রিপূর্। এই সক্ল বছ নিক্ট শোণীৰ নতে, এক এক<sup>ট</sup> এক একখানি কহিন্ব। সামানা সম্লের क ब्रुवा करा येखिया। सदरकारलंब নেশগ্রনের নক্ষতপুত্রের নাবে রার চারি-দিকে ছড়নে রহিরাছে। দংস্কুত সংহিত্য ভাণ্ডাবে রত্নেব এত ছড়াছড়ি নাই বটে, কিন্তু কালিদাস ও ভবভূতির অল্প-গুলে কহিন্বেৰ অভবে নাই, তাবে• স্ংখ্যে অয়। কিন্ত ইংবেজনিগের ভাঙারে যেমন যে দরের রত্ন মুঞ্জিবে, ভাচ ট মিলিবে, আনেগণের ভাণেরে ্ত্যুমটি ইউবে না; কহিন্বের নীচেই একেবারে বুটিন। কালিদাস ভবস্থিত এড়তি তুই একছানের পর প্রকৃত কবি थात जामारतय महत्य उठक मा। उत्त कि आभारतत सबत दिल्ल डेंहर डाझा নতে, বাস্তবিকই কবিনামের যোগ্য অব্যাক্ষি অভি বির্লা কালিদ্বে প্রভূতি যে তুই একজন থাছেন, তাঁহা-দেরও প্রস্ত সেক্ষপীয়ৰ ইত্যাদির নায়ে সংখ্যায় অধিক নতে। আনাদের বিবে-মুনার ইহার ছুইটি কারণ আছে। থিম মুদ্রাযন্ত্রের অভাব, বিতীয় য়েজ্

অলা কুমার, রঘু, শকুললা, মেঘদুত, किया रार्क्क्रीय, निक्ष्णान्यम, देनस्यहिङ, उद्भावनी श्रञ्जिक कश्रवानि कावा माधात-নতঃ উংক্র কাবামধ্যে পরিগণিত হইয়া থাকে। ইহাদিগের নধ্যে এই প্রস্তাবে देवयाप्य भगारताहमा आमारमात छेत्समा। পুকেই বলিয়া রাখা উচিত যে, বঙ্গীয় युवाकदा निश्वनिक्क विश्वा थाडि; অ্যার্ অদাকার সমালোচনারারা অনেক আয়াসে উপার্জিত এই নামে কলক কবিতে চাহি না।

यक्षान वहकान इटेट्ड नाम्भाष्यत চটোর জনা সম্ধিক বিখ্যাত। বার-ণদী, পুনা, তৈলম প্রভৃতি নানা স্থান হটটে বংসর বংসর দলে দলে ছাত্র ভালিয়া ভদ্যাপি নব্দীপে নায়শাস্ত্র পঠ করিয়া থাকে। ভিন্নবেশে বিশে-यकः পশ্চিমাঞ্চল वश्रीय देनयायिकनिरगत्र বিশেষ প্রতিপদ্ধি এবং স্বদেশেও নৈয়া-बिक्त गर्दालका अधिक मधान शारेस থাকেন। ন্যায়শাস্ত্র যে সবিধ্যৈ গৌর-বের বস্তু তাহার এক প্রমাণ এই. **এতদেশীয় যাব**ীয় উপাধিই (বিদ্যা-নিধি, শিরোক্ষি প্রভৃতি করেকটি ব্য-

ভীত) ন্যারশাস্ত্রঘটিত কোন না কোন শ্য লইয়া রচিত; অর্থাং ন্যায়শাল না জানিলে কেছই পণ্ডিত নাম পাইবার যোগা নছেন। এবং নৈয়ারিক্সিগেরও এমন একটু কৈভিমান আছে যে, তাঁহা-দের মত স্কাব্দ্ধি অতি অল লোকের আছে। এ কথা কতদ্র সভা ভাহা এম্বলে আমাদের বিবেচা নছে, আমরা প্রকৃত ঘটনা বর্ণন করিতেছিমাতা। বঙ্গদেশের মুণোজ্জলকারী এই পণ্ডিত-'निरात निक्र रेनस्थत वर् आपतः; देनचर्पत ज्याभाशा छोडारात सूर्य भरत না। বাস্তবিকও তাঁহাদের প্রশংসা कतितात मण्णूर्व अधिकात आहः। देनमध একজন কুশাগ্রবৃদ্ধি নৈয়ায়িকের রচিত। यिनि त्य विषयात ठळी करवन, छैशित (जरें के जान नारंग। किंद्र अनामा भाजनावनात्रीता य किल्ना टेनस्थरक উৎকृष्टे कांबामर्था श्रामा करतम, जारा আমাদের কুদ্র বৃদ্ধিতে ধরিল না। ভট্টাচার্যামহলে নৈৰ্ধের এত আদর যে, ইভার প্রশংসার জনা চ্ই তিন্টী কবিতা চলিয়া গিয়াছে।\* অথবা ভট্টাগার্য্য সহাশয়ের। যে এরূপ বলিবেন, ভাহা विठिख गरह। कांत्रन डीहाता वरलन, "রঘুবপি কাব্যং তদপি চ পাঠাং।" ই্চারা কাবোর লক্ষণ কি, কি কি গুণ शाकिता त्कांन शहरक कारा देना यात्र, छाड़ा झारबन नां हैशारनत मठ

याशंद्य नृहन नृहन छात । अपनीकिक वर्गना चाटक, छाहारे काना। यनि अरे कथा ठिक रस, जाहा इटेटन आहता छेल-ন্যাদের রচয়িতার ফার উৎকৃষ্ট লেপক Cकान कारल (कान (मरम खना शहर करव नाई। (मीन्मर्ग्रपृष्टिके कार्तात श्राकृत रेनवधकांत्र कवि नट्टन, একজন নৈয়ায়িক, স্তরাং এই উদ্দেশ্যে " ঠাহার দৃষ্টি নাই। কতকগুলি অসার তাসম্ভব বিষয় বর্ণনা করিয়া গ্রন্থ পরিপূর্ণ করিয়াছেন। স্থামরা এক্ষণে প্রতিপয় क्रिड (हडे) क्रित (ग, रेनस्थ क्रिड-শক্তির কিছুমাত্র পরিচয় পাওয়া যায় না; ভবে ইহাতে লেখকের অসাধারণ ক্মতা ও শক্তির পরিচয় পাওয়াযায় বটে।

এই গ্রন্থের উপাথানিভাগ মহাভারত
হইতে গ্রাত হইয়াছে। নলদময়নী,
সংবিত্রীসভাবন্ ও শকুস্তলা হয়স্তেব
প্রান্ন লইয়া বহু কবি বহু কাব্য রচনা
করিয়াছেন। কালিদাস ও শ্রীহর্ষ উভয়ে একই পুস্তক অবলম্বন করিয়া কাব্য
রচনা করিয়াছেন, স্প্তরাং উপাথানিভাগ লইয়া উভয়ের তুলনা করিলেই
বুঝা যাইবে কে কিরুপ কবি। চিত্তকর
আপন হইতে রঙ্ কিনিয়া লইয়া সেইশুলি- নিশাইয়া নৃতন নৃতন রঙ্ প্রস্তুত্ত করে, এবং ভাছাতে এরুপ স্কার ছবি
আঁকে যে দেখিলে দর্শকের নয়ন স্কুড়ায়

<sup>\* &</sup>quot;डिनिट्ड टेनम्ट्य काट्या क माघः क छ छात्रविः।"
"टेनम्ट्य भन्नातिष्ठाः।"

ও মন মুগ্ধ হইয়া যায়; সংক্ৰিও সেই-রূপ কোন পুস্তক হইতে উপাখ্যান লট্যা নিজ কলনোচিত ঘটনার সহিত মিশাইয়া এমন অপূর্ব কাব্য রচনা ক-রেন যে, অধায়ন করিলে পাঠকের জ্বর আনন্দে নৃত্য করিতে থাকে। কালিদাস সহাভাবত হইতে শকুস্তলার ইতিহাস লইয়া আপনি বৃদ্ধিপ্ৰভাবে যে অপূর্ব নাটক প্রাণয়ন করিয়াছেন, আজি ছুই হাজার বৎসর পরেও লোকে ভাহা পাঠ করিয়া নিরূপম প্রীতি অনুভব করিতেছে। কিন্তু শ্রীহর্ষ সেই মহাভারত হইতে শকুস্থলা অপেকা वदः अधिक मरनादम উপाणान महेबा रय কাব্যপ্রণয়ন করিয়াছেন ভাহাতে প্রীতি দুরে যাউক, প্রাক্তাত বিরক্তি জন্মে। মহাভারতের নলোপাখ্যান অতি মিষ্ট: নলদময়ন্তীর প্রাণয় অতি মধুর ও পবিত্র; সে প্রেমে শরীরের সংশ্রব নাই, কেবল क्षप्रहे छाहात विषयः, यथन ननताका কণির প্রভাবে বৃদ্ধিলংশহেতু নিজ জা-য়াকে একাকিনী বনমধ্যে পরিত্যাগ করিছে উদ্যত হইলেন, তথন উ,হার মনের ভাববর্ণনা পাঠ কার্লে মহাভারত-कात्रक खेनीचिक्तमण्या विविद्या त्वाध हरा, আবার ভাছার কিঞ্ছিৎ পরে স্বামীকর্তৃক তাক্তা অসহায়া দময়ন্তীর বিলাপ পাঠ कतित्ल, त्कान शायावश्वमत्त्रत नम्रत्रही ্ইতে অবিরল অশ্রধারা নির্গত না হয় ? স্তর উভয়ের মিলন কি স্থের ৷ ফলত: ভারতের নলদময়ত্বী এক অপুর্কা

अनार्थ। रैनवस्कारतत खड़िक नलम्म-মুম্বীচিত্র ইহার ঠিক বিপরীত। ভারত-**टिस्टर विमाञ्जलात्र जात्र ननममञ्जीत** थानम् भनोदन्हे (भव हरेमारहः क्षप्रज প্রবেশ করিতে পারে নাই। আমরা সংস্কৃত পুস্তকাদিতে চক্ষুরাগের বর্ণনাই দেখিতে পাই কিন্তু নৈষ্ধে জালাব শ্ৰবণ রাগ পাইলাম; লোকের মুখে ও হংস-मू अ भवन्भरतत क्रभ उ छनवर्गना अवन করিয়া নল ও দময়ন্তী পরম্পরের প্রতি অনুবক্ত হইলেন। শুধু তাহাই নহে,হঠাৎ এমনি উৎকট বিরহ্বাধি উপস্থিত হইল (य, उड्डाना हिकिৎमक आना आवनाकः इहेशाउँति। व्यागारमत रमर्ग व्यावाम আছে যে, সিঁধেলচোর সিঁধকাটী গড়া-ইবার জন্য এককুলা কড়ি রাত্রিশেষে কামার শালে রাখিয়া আসে, প্রভাতে কানার তাহা দেখিয়া সঙ্কেৎ ব্রিয়া সিঁধ-কাটী গড়ে ও সন্ধ্যাকালে রাখিয়া চলিয়া যায়। সিঁধেলচোর আদিয়া ভাষা লইয়া। যায়। চোরে কামারে দেখা সাক্ষাৎ হয় লা, অথচ মধ্যে মধ্যে সিঁধকাটি टेड्याति इया आभारतत देन्यधकातवर्गिङ প্রণয়ও ঠিক সেইরূপ। नायक नाहिः काटड (पथा खना नाई व्यथह मध्य মধ্যে প্রেমবিরহ প্রভৃতি স্কলি হইয়া গেল। কবিত্বশক্তিরপ্রভাব! হে আধু-নিক বসীয়লেথকসমাম। কেন ভোময়া द्रथा गतीवरवहाता वांकालिमिशक विवादः প্রথার জন্য অন্যায় নিন্দা ক্র, কেন বল বরকন্যান্ধ বিবাহ না হইয়া আঞি

কালি বরকর্তা ও কনাাকর্তার বিবাহ হয়। দেখ সেকালেও এরূপ চলিত ছিল। মোট কথা আমাদের বিবেচনায় নৈষধবর্ণিত প্রেম অপকৃষ্ট প্রেম। এদিকে (ब कक्नबद्ग कार्याश्वात क्रमग्रककादव चात छेन्दाछिक कतिया (पत्त, याहा व्यान्ता-कवित्र खनविरगाइनकातिनी अञ्चलानः विमा. देनघरभ देनहे कजनदरमद अकाष्ट অভাব। যে অংশে এই শক্তি প্রকাশ कतिवात मम्भूर्ग जनकाश हिल, देगशांत्रिक কবি উপাথ্যান ভাগের সেই অংশ পরি-ভাগে করিয়াছেন। নলকত্ক দময়ন্ত্রী ভাগের বিষয় নৈষ্ধে বর্ণিত হয় নাই। বিবাহান্ত্র কন্যাব প্তিগ্রাগ্যন পর্যান্ত ইহাতে বণিত ভাতে এবং **एडे कांद्र(ग्रे एडामुम ख्रावाड डा**ड ঘটনাসংখ্যা অল হট্যা ওডিয়াছে: স্মতরাং ইহা পঠে করিতে নির্জ্তি জ্যার र व ।

সুমরের গুণে সকলি হর । মহামহো পাধাার পণ্ডিতগণ বে স্নত উৎক্ট উৎক্ট বিষয় নিছ্নতে বিবৃত ক্রিয়া অশেষ থাতিলাভ করিয়া গিলাছেন, সে স্কল্ড স্নায়ের ফল। ক্ষেক বংসর ধরিয়া ভিন্ন ভিন্ন মন্ত্রার স্পায়ে সেই ভারতলৈ আবিভূতি হইতেছিল, একজন পণ্ডিত জনিয়া সেইগুলি প্তকাকারে বা অনা প্রকারে প্রকাশ ক্রিলেন মাত্র। বাক্ষণগণের অভ্যাচারে প্রতী-

ড়িত হটয়া, লোকে তাহাদের হস্ত হইতে নিফৃতি পাইবার জন্য বহুকাল इटेट गत्न मत्न छेलाय हिन्छ। कतिएक ছিল, শাকাসিংহ জন্মিয়া ভাচা সাধন कितिना। एत् तकत, (वकन, हिंडेंटे-ফ্রিফ প্রভৃতিৰ নাায় চুট একলন মহাত্রা সময়গুণকেও অভিক্রম করিয়া উঠেন সভা: কিছু সেরূপ লোক জগদে षाहारे ज्याशहर कतियादान। यमि এট कणा मठा इस, उत्व औश्रव समारस প্রাত্তুতি হন, সেই সময়েব সমাজ নীতিসম্বাক্ত অভি শোচনীয়ে অবস্থায় পতিত হটয়াছিল বলিতে হইবে: নৈষ্ণে একপ বৰ্ণা অনেক আছে थाहा छङ्ग्वेत दिकका छात्न छात्न श्वीत्माक मिर्गत डेक्टि: इंड ध्वाम कन्मा-ভাব লিখিত ২ইয়াছে যে, ভাহা ভদু-লোকের অপাঠা। যে:ছশ সর্গে দময় डीव मधीशावि शहिकाम वर्षमा शहि कतित्व. जामात्वत कथा मञ्जूष कि ना. পাঠক বুঝিতে পারিবেন। এই সকল दर्वनः समाहक्ष्य भीनात्रष्टात्र श्रीतिहत्र দিতেছে। ব'স্থবিকও ইতিহাসগাঠে অবগত হওয়া যায়, যে বজনেশে শা-সুজে ব্ৰেক্ষণ পাওয়া যাইত না বলিয়া चा मन्द्र करनाम इंटेंट शक्ष खान्न छा नक्षम करतम, खीइई डेइ। एव म्या একজন। ত্রীহর্ষ যে বন্ধায় কবি ভাগ উ:হার পুত্রক পাঠে বিলক্ষণ জাবগুঙ **१५४। यस**्

<sup>\*</sup> চভুরূপ সূর্বে কবিত আছে যে দমস্তী নগকে পাতিতে বরণ করিলে পুর-জুলারীরা উলুলুদানি করিব

সাধারণতঃ কাব্য ছুই শ্রেণীতে বিভক্ত হুইয়া থাকে। প্রথম, যাহাতে স্বরের ভারগুলি স্পাষ্টরূপে বিকৃত হয়, ঘাত প্রতিঘাত প্রদর্শন যাহার উদ্দেশ্য। এই শ্রেণীব কাব্যেই উৎক্তই কাব্য। দ্বিতীয় শ্রেণীর কাব্যে সভাববর্ণনামাত্র থাকে, ইহাতে কোন একটি বস্তু লইয়া ভাহার প্রকৃতি, কার্যা ও তাহা হইতে কিকপ উপদেশ পাওয়া যার, এই সম্দার বর্ণিত হয়। ইহা সধ্যম শ্রেণীর
কাবা। অনেকে বলেন, নৈষধকে এই
দিতীয় শ্রেণীভূক করা যাইতে পাকে।
তাঁহাদের মতে নৈষধ মধ্যমশ্রেণীর একথানি উৎকৃষ্ট কাবা। ইহার বর্ণনাগুলি
অতি চমৎকাব: এরূপ নৃতন নৃতন
ভাব আরে কুরাপি পাওয়া যার না।

'' সৈব ননেভাঃ পুরস্কারীণাষ্টেডকলুলু রেনিরাচচেচার।

বঙ্গদেশ ভিন্ন অনা কুজাপি বিবাহে উলু দিবাব প্রথা নাই। পশ্চিমাঞ্চলে উলুর পরিবর্ত্তে স্নীলোক যে মঙ্গল গান কবিষা থাকে ভাষাকে সংস্কৃতভাষায় ধ্বল কছে। পশ্চিমবাসী নৈষ্ধেব টাকাকাব নারায়ণ লিপিয়াছেন।—" বিবাহাড়াংস্বে স্ত্রীণাং ধ্বলাদিমঙ্গলগীভিবিশেষা গৌড়দেশে উলুলুরিতাচাস্তে।" নৈষ্ধের অন্যানা জ্বা ভইতেও প্রমাণ পাওয়া যায় যে ইহার লেথক বঙ্গদেশবাসী ছিলেন। এই বিষয়ে বঙ্গদেশনৈ একটি প্রস্তাব বাহ্রিহয় ভাহাদেখিলেই পাঠক জানিতে পারিবেন যে প্রীহর্ম বঙ্গনাগী বটেন।

প্রীহর্ষের বৃদ্ধিব্যক একটি গল প্রচলিত আছে। তাঁহাকে অসাধারণ ধীশক্তিসম্পার দেশিয়া তদীয় সাতৃল সাহিতাদেপ্রকার ময়ট তাঁহার অতি বুদ্ধি কিছু कमार्टितार अना उंकारक मानकशाहे थाहेर ए छेशालना निर्लाग । आगिरमञ्जाकरनार প্ৰামৰ্শে এই উংকট বাাধি হঠতে নিষ্তি পাইবার ধনা নিয়ত মাধকলাই খ'টতে লাগিলেন। কিছু দিন পাৰে একদিন চিতৈষী মামা আমিয়া দেখিলেন ভাগনে নিবিষ্টমনে মাকেলাই চিলাইতেছেন। দেখিয়া বলিলেন "বাপুছে কি ছ ১০০ ভালিনের বলিলেন 'ভালের শেষ্টীনাশ্যায় মল্লাহার্নিং।' সামা বলিবেন প্র। হলপাছে, আবে তেপোয় সাধকং টে ভাজন করিতে হইবে না।'' ভাগিনের তথ্য বুলি ক্ষর। গিয়াইল, মামার ক্পাটা সমজে উঠ্তে পারিলেন না। মামা তুগন বুঝ টকা 'প্রেন, মাধ দি শেমার পূর্বেবি মত বুদ্ধিব প্রথরত। থাকি ৬ ভাহ। হটলে ভূমি 'অহ নিশং না বলিয়া 'অ শ্ধদঃ' বলিয়া অনুপ্রাস করিতে পারিতে।'' ভাগিনে কিছু নিজুকি ইইয়া লাংগ'ল বোধ ক'র মানাকে মাষকলাই খাইতে বলিতেন। সামা ভাগিনে সম্বন্ধে আর একটি গ্রা আছে। শ্রীহর্য নৈষ্ধ রতম। করিয়া কেমন হইয়াতে দেখিবার জন্ম সামাকে দিলেন। সামা আদান্ত পাঠ ক্রিয়া বলিলেন 'দেশ বাপু, যদ বইণা'ন কিছু জাগে লিখিতে তাহা চইলে আমার ৰিশেষ উপকরে হইত।' ভাগ্নে কছিলেন ''কিলে ?'' মামা কছিলেন '' তাহ। হটলে অমাসার দোষ পরিচেছদের উদাহবণ খুলিতে হটত না।'' সমালোচনটী মনদ कता इस नाहै। এই घটनाती भूत्र्यांक घटनात भूत्यं कि भाव इहेगाहिन छाइ। সামরা বিশেষ কাব্যত নহি।

ততে। ধিক স্নোক রচনা করিরা গিয়া-ভেন, এবং সেগুলি যে প্রক্ষিপ্ত নছে ভাষারপ্ত বিশিষ্ট প্রামান আছে। যে বাক্তি কবি বা যিনি কাবা ব্রোন, ভাষাদিগকে ব্রাটবার আবশাক নাই যে ইহা কবিত্পক্তি অভাবের অন্যতম প্রামাণ।

নৈষধকার হ্ব্য এত বড় প্রকাণ্ড গ্রন্থ লিখিলেন, ভাহাতে কি ভাহার কোন खन्हे दिश्वा शाख्या यात्र ना ? मकन्हे কি অগার ? জগতে কোন বস্তই অমি-खिंड गहि (करन मार्थ रा करन श्वन (काशांव (मणा यात्र ना; रेनयभ-কারের পক্ষেই কি কেবল এই কণাট বিপরীত হইল ? তাহা নহে। অবশাই কোন না কোন গুণ আছে। আমরা এতক্ষণ কেবল নিনা माहि, এकर्ल कि कि: श्रम्शा कहिया মধুরেণ সমাপয়েং করিব। আমরা ষে নিন্দা করিয়াছি বলিয়া প্রাশংসা করিব তাহা নহে; নৈষ্ধকার যভটুকু প্রাশংসা পাইবার যোগা, তভটুকু তাঁ-হাকে দিব। নৈষ্ধের ভাষা অতি हमरकात, मर्भागत नाम चन्ह, (काथां अ क के मम्ला नाहे। शांठ कदिल है মনে হয় ইহার ভিতর কত ভাবই আছে। ভাষা কোন স্থানেই গ্রামাতা **(मार्य मृधि** इ.स. नाष्ट्रे, मर्द्यक्र डेतड ও मध्य। (मार्यत मर्था किছ कठिन, সহজে অর্থবোধ হয় না। আর যে পরিশ্রমে অর্থটুকু বাহির করিতে হয়, ভাহার সম্পূর্ণ পুরস্কার হয় না, কারণ পুর্বেই বলা গিয়াছে ভাব অতি অল আছে। দেলি প্রভৃতির লেখাও অবি-শদ, কিছু ভাহাতে বস্তু গাকাতে পরি-**अध्यय माफना इश्र, टेनस्टम मिठ्रेक् इश्** ना वह उकार।

নলকর্ত্ত ধৃত হংস জীবনে নিরাশ ছটরা যে বিলাপ করিয়াছে ভাছা পাঠ করিলে বোধ হয় নৈমপকার চেষ্টা ক-রিলে বর্ত্তমান এন্থ ছটতে উৎকৃষ্ট গ্রন্থ লিখিতে পারিতেন। বাস্তবিক ভাহাতে কবিত্বের কর্তি আছে।

সপ্তদশ সর্গের মধাভাগে চার্বাক মছ বর্বিত হটয়াছে। এই অংশটী সমস্ত প্রতকের মধ্যে উৎকৃষ্ট অংশ। শ্রীহর্ষের ক্ষমতা প্রকাশের প্রকৃত নিষর এবং ইহাতে তিনি সমাক কুতকার্যা হই-য়াছেন। তিনি চার্বাক্দিগের মত এত বিশদরপে ও এরপ গাঢ়যুক্তির বারা সমর্থন করিয়াছেন যে ভাহা পণ্ডন করা দেবতারা যেরূপে তাহা অতি হ্রুর। খণ্ডন করিতে চেষ্টা করিয়াছেন ভাহা পাঠ করিলে জানা যাইবে যে তাহা অপ্রমাণ করা অসাধা। এই মত পঠে कतित्व बात्र वृक्षा यात्र त्य उनामीस्त्रम সমাজ শুদ্ধ ইক্রিয়সেবাকে পরম স্থা মহুষাজীবনের সার উদ্দেশ্য মনে করিত। Epicurean मंड (यक्तभ क्राय शैनम्भाय উপস্থিত হইয়াছিল, চাৰ্কাক্ মতও এই সময়ে সেইরূপ খোচনীর দশা প্রাপ্ত इंडेग्राफिल। এই कात्ररन टेनस्पर्नान्ड নলরাজা একজন বিলাসী ইক্রিয়াশক वाक्तिव स्थाय इदेया हिन। छे ९ कृष्टे स्था-বের গুণ তাঁহার কার্য্যে প্রকাশ পার नार्छ ।

শ্রীহর্ণের আর একটা প্রাশংসার বিষয়
এই যে ভিনি অফুকরণ করেন নাই।
ভাণই হউক আর মন্দই হউক সকল
ভাবই নিজের, অভ্যের ভাহাতে কোন
ত্বর নাই। করনার বলে নুতন ভাব
কৃষ্টি করিভে, গিয়া, অস্বাভাবিক করিয়া
ফেলিয়াছেন। মাধ্য প্রভৃতির নায়
ভাহার চুরি নাই।

# रक्षणन।

### সপ্তম বৎসর।

৭৪ সংখ্যা।

### 

### वरकामयन।

চতুর্থ পরিচেছদ। বাদালার বায়।

বাঙ্গালিরা বে পঞ্চাবী, উত্তরপশ্চিমাকলবাসী ও অযোধাবাসীদিগের অপেক্ষা তুর্বল এ কথা নোধ করি সকলেই
খীকার করিবেন। তাহাদের দৌর্বলার
কারণ কি ?

কেহ কেছ বলেন খে, ভাছাদের আহারের দোষে ভাছাদের পৃষ্টিবর্জন হয় না। কেছ কেছ বালাবিবাছ প্রভৃতি সামাজিক আচারের দোষ দিয়া থাকেন। তাঁহাদের সকলেব কথা যে স্নানকদ্র সঙ্গত ইহা আসর। স্বীকার করি। কিন্তু তাঁহাদের এই ভ্রম যে, তাঁহারা অপ্রধান কারণকে প্রধান কারণ বলেন। বাজা-লার বায়ুই বাঙ্গালিদের দৌর্কল্যের প্রধান কারণ। বেহারের গো, অশ্ব, মেষ ও ছাগ যাহা ভক্ষণ করে, বাঙ্গালার গবানি তাহাই ভক্ষণ করে; তাহাদের মধ্যে বালাবিবাহের নিরম মাই; তবে কেন বাঙ্গালার গবানি বেহারের গবানি অ-

<sup>&</sup>quot; বালালার ঘাসে জলভাগ অধিক আছে স্বীকার করিতে হইবে; কিন্তু তাহাও বায়র সোষে। বালালার প্রায় সমস্ত পশুই ছবল, কিন্তু আর্দ্ধুল, গণ্ডার ও বন্য-মহিব অভিশান বলবান্। ইহার কারণ কি বলা অকটিন। অক্ষরবনের অরজবায়তে কি ব্যাপ্তের কোন জনিই হয় না ? ভাক্তার কোরার বলেন বে, অক্ষরবনের ব্যাপ্তের বল আক্রিকার সিংহের বল অপেকা। নান নহে; বয়ং কিঞিৎ অধিক হইবে; অভারং ব্যাপ্তকে পশুরাল বলা ঘাইতে পারে। ১৮৫৭ সনে ইংলতে একটা পিঞ্জরবন্ধ সিংহের স্থিত একটা ব্যাপ্তের মৃদ্ধু হয়, সিংহু হত হয়। (Darwin's Descent of man & Genual selection, 2nd edition, P. 521.) মুই অকটি দুইাত ক্ষরদান করিবা ব্যাপ্ত প্রথমিক বলার নিজ্ঞান করিবা ব্যাপ্ত প্রথমিকা বলারা সিদ্ধান্ত করা মাইতে পারে না ক্ষরবন্ধ বায় সমস্ব বিশ্ব বাস্তান করিবা ব্যাপ্ত করা বাহিতে পারে না ক্ষরবন্ধ বা স্ক্রমন্ত করিবা ব্যাপ্ত আন্তর্গানে স্করবন্ধ বা স্ক্রমন্ত করিবা ব্যাপ্ত বার্থান করিবা স্ক্রমন্ত বিশ্ব বাস্তান করিবা স্ক্রমন্ত বিশ্ব বাস্তান করিবা স্করবন্ধ বা স্ক্রমন্ত বার্থান করিবা স্করবন্ধ বা স্ক্রমন্ত বার্থান করিবা স্করবন্ধ বা স্ক্রমন্ত বার্থান করিবা সাম্বর্গান করিবা স্করবন্ধ বা স্ক্রমন্ত বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা সাম্বর্গান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা সাম্বর্গান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা সাম্বর্গান করিবার স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবা সাম্বর্গান করিবালিক স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান করিবালিকা স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান স্করবন্ধ বার্থান করিবা স্করবন্ধ বার্থান স্করবন্ধ বার্থান

বালালা গ্রীম প্রধানকেশন গ্রীমপ্রধান দেশবাসের শুভ ফল এই বে শুর্মোর প্রসাদে আহারের জ্ব্যাদি অনারাসলক, জার বর্জেই শরীররকা হইতে পারে,শীত-নিবারণ জন্য মৃদলারাদির প্রয়োজন নাই বলিলেই হয়; অশুভফল এই বে সর্প ও খাপদক্ষর ভয় অধিক, এবং ওলাউঠা ও জ্বরের অধিক প্রাত্তাব। ভবে শীতপ্রধানদেশ অপেকা কাশাদি ফুকুসের রোগ অনেক কম।

অনেকানেক ইউরোপীয় পশুত বাযুর উষ্ণতা মানবপ্রকৃতির তেলবিতাহ্রাসের যেমন করেণ বলেন, বস্ততঃ
তাহা তেমন প্রবল কারণ কি না সক্ষেত্ । আরবস্থানের বারু যেমন উষ্ণ,
এমন উষ্ণবারু প্রায় কোন দেশেই নাই,
অর্থচ আরবদের নাার তেজবী ব্যাতি
বিরল ।† উইলিয়ম ওরেই গার্থ ও সামুরেল্ মস্মান্, বাহার। অস্ট্রেলিয়ার বর্ণ
খনির বিষয়ে উৎক্ট গ্রন্থ লিখিয়াছেন,
তাহারা বলেন যে ঐ দেশে অদ্যাশি
ওলাউঠারোগ প্রবেশ করিতে পারে

নাই । আইলিয়ার বায় অতিশয় বাহা-কর বলিয়া প্রসিদ্ধ; কিন্তু গ্রীয়ে তথা-কার উপক্লেও তাপাংশ একপতের অধিক হয়।

তাপের সহিত অধিকপরিমাণে জ্লীর পর্মাণুর সংযোগ হইলে বেমন জনিট হয়, কেবল তাপে তেমন হয় না।

বালানার বাষু উত্তপ্ত বলিরা ছট নছে, ।
প্রচুর বাম্পূর্ণ বলিরা ছট। এরূপ বায় বৃক্ষাদির পক্ষে ভাল; কিন্ত জীবজ্বর পক্ষে ভাল নছে।

বাঙ্গালার ভূমি সাগরপৃষ্ঠ হইতে অত্যর উন্নত। নীচদেশ গ্রীমপ্রধান হইলে আর তাহার রক্ষা মাই। তথাকার বায় নিশ্চরই বাঙ্গাই এবং অস্বাস্থ্যকর হ-ইবে। হলও শীতপ্রধানদেশ; এবং ওলন্দালগণ ভূমি শুদ্ধ করিতে অভিশর যত্নশীল; তথাপি দেশ নীচ বলিয়া, তথাকার বায় বিলক্ষণ বাঙ্গাময়, এবং তথায় পালাজ্বর, কাশ ও বাতের বিলক্ষণ প্রাত্তর্ভাব। বাঙ্গালার প্রায় সর্ব্বভানেই জ্বর বিরাজ্মান রহিয়াছে, তবে স্কান করা কর্ত্ববা যে, কিরপে বাঙ্গালার

ছিল। তবে বিজ্ঞানবিৎ পণ্ডিতদের অনুসন্ধান করা কর্ত্তব্য যে, কিরূপে বাঙ্গালার প্রায় সকল জীব ত্র্বল, কেবল ব্যান্ত, গণ্ডার ও বন্যমন্থির প্রবল।

† ভারবদের দিখিলয়ের কথা সকলেই কানেন; তবে তাহাদের অদেশরক্ষা বেমন প্রশংসনীয়, দিখিলয় তেমন প্রশংসনীয় নহে। ইংলও, ফাজ ও অর্থানি যে তিনদেশের দর্গে একলে পৃথিবী কম্পিতা, এই তিনদেশই শক্রেনাকর্ত্ক পুরাক্ষােল ভিত হইরাছিল; আরবস্থানের ভাগো তাহা ঘটে নাই—Arabia has been celebrated from time immemorial as the seat of in dependence and pastoral simplicity, and it is perhaps the only country in the world which until it was lately overrun by the troops Mahomed Ali was never profaned by foreign conquest. Account of Arabia by David Buchanan & William Platt.

লেখানে অনেক বিল, যেখানকার নদীর আত বন্ধ হইরা গিয়াছে, ও বেথানকার অলপ্রণালী ভাল নহে, সেখানে কিছু অধিক; আর যেখানকার ভূমি কল্পরময় বা বালুকামর ও ওদ্ধ ও যেখানকার জল-প্রণালী ভাল, সেখানে কিছু কম।

ভূতত্ববেস্তারা বলিয়াছেন যে, যদিও
সাধারণতঃ বঙ্গণের কার্য্যে ভূমির জব~
নতি এবং জায়ির কার্য্যে ভূমির উয়তি
হয়,তথাপি বেখানে অয়ির কার্য্য প্রতীয়মান হয় না, সেখানেও ভূমির উয়তি
দেখা গিয়াছে। বথ্নিয়া উপসাগরের
তট ক্রমে ক্রমে উচ্চ হইয়াছে, ভাহা
পবন বা অয়ির কার্যা নহে। যদি ঈয়রপ্রসাদাৎ ঐ কারণে বঙ্গভূমি সমুজ্পৃষ্ঠ
হইতে অধিকতর উয়ত হয়, তবেই
দেশের সহামঙ্গল হইবে। মহুবার

আয়ালে অধিকদ্র ক্লভের্মান হইবার
সন্তাবনা নাই। তবে কল্লিঃস্বরণের
উৎকৃত্র উপার অবলখন করিলে, বেখানে
লোতখতী নদী আছে, তথাকার বিদের
কল, খাল কাটিয়া নদীতে আনিতে
পারিলে, এবং অন্য উপায়ে ভূমির
আর্ত্রভার ক্রাস করিতে পারিলে কতক
দ্র কার্য্য হয়।

ভগনী ভানকুনীর জলা হইতে খাল
কাটয়া গবর্ণমেণ্ট যেমল প্রজাবর্গের
উপকার করিয়াছেন, উত্তর বাঙ্গালার
রেলওয়ে ছারা তত উপকার হইতেছে
কি না সন্দেহ। যাত্বর্গের স্থবিধা ও
বাণিজ্যের স্থবিধা মঙ্গলময় বস্ত বটে;
কিন্তু স্বাস্থ্যের নিকটে তাহা কিছুই
নহে।

জনশঃ৷
জ্রীতা, প্রে, চা

-mesself figure

### তৰ্কপ্ৰণালী।

## (THE SUBJECTIVE AND THE OBJECTIVE METHOD.)

দার্শনিক প্রবন্ধ দেখিলেই বন্ধীর পাঠক ভাষতে উপেক্ষা করিয়া থাকেন। তিনি বলেন দর্শন টেকির কচ্কচি, দর্শনপাঠে কিছুমাত্র লাভ নাই ইত্যাদি। যদি দেখিতাম, যে বন্ধীয় পাঠক দর্শনে উপেক্ষা করিয়া বিজ্ঞান, অর্থনাত্র ইত্যাদিতে মনঃসংযোগ করিতেছেন, ভাষা ইইলে ভাষার এ উপেক্ষা সহা করিতে

পারিতাম। কিন্ত যিনি রামকান্তের
বিবাহ, শ্যামকান্তের আদ্ধ প্রভৃতি অধার
প্রবন্ধ পড়িরা সমন্ত সময়বায় করেন,
তাঁহার মূথে দর্শনের অসারতাসম্বদ্ধে
কোন কথা সহ্য করিতে পারি না।
ফলতঃ বদীর পাঠক কিজনা দর্শনে
উপেকা করেন, তাহা আময়া জানি।
ভাঁহার অভিনিবেশ অভি অরা, তাহার

শরীর ছর্কাণ, মনও ছর্কা। যে সকল প্রবন্ধে কিঞ্চিন্দাত মন: সংযোগের প্রারোজন, যে সকল প্রবন্ধ অর্জনিজিত অর্জনাত্রত অবস্থায় পাঠ করিতে পারা যায় না, তিনি সে সমস্ত পড়িতে নিভাস্তই নারাজ। স্থতরাং দর্শন কেন, বিজ্ঞান, অর্থশাস্ত্র, গনিত প্রভৃতি যাহা কিছু চিস্তাবন্ধার পরিচায়ক সে সমস্তই তাঁহার চক্ষুংশূল।

প্রাহক বেখানে যে প্রকারের, বিজের জবাও সেখানে সেই প্রকারের হইরা থাকে। ইংরেজপটিতে গোন্ত মটন ইত্যাদি বিজের হয়, বাঙ্গালিপটিতে বি-জয় হয়, কচু, কলা, শাক,ম্লা ইত্যাদি। যে দেশে পাঠক মেপ্রকারের, লেখকও সেই প্রকারের হইয়! থাকেন। এই জন্যই বাঙ্গালালেথকদের মধ্যে অসার জথচ মনোরঞ্জন প্রবন্ধ অধিকাংশ দে-থিতে পাওয়া যায়।

সারগর্ভ তত্ত্বসমূহকে মনোছর আকারে উপস্থাপিত করিতে পারেন এরপ প্রতিভাশালী লেগকের সংখ্যা ক্রেয়। স্থতরাং তব্শিক্ষা করিতে হইলে কি-ক্লিং কইস্বীকার প্রয়োজনীয়। বাঙ্গা-লিরা যে আজিও এ কই স্বীকার করিতে প্রস্তুত হন নাই, ইহা আমার বলিতে ইচ্ছা হয় না। ইচ্ছা হয় না বলিয়াই বঙ্গীয় পাঠকেয় উপর নিম্লিখিত প্রস্তাব পাঠকণ কন্তবিধান করিছে সাহসী হইনাম।

ভ্রমনির্বয়ের ধানা প্রাধানতঃ তুইটি প্রণালী করিত হইরাছে। একটির নাম দার্শনিক বা আরুমানিক প্রণালী, তানাটির নাম বৈজ্ঞানিক বা প্রত্যক্ষপ্রণালী। এই তুইটী প্রণালী কি, এই তুইটীর পরস্পারের সহিত কি সম্বন্ধ, ইহাদের মধ্যে কোনটী ঠিক্, কোনটী ভূল প্রভৃতি প্রশ্নগুলির যথাসাধ্য মীমাংসা করা এই প্রস্তাবের উদ্দেশ্য। প্রথমে আমরা তুইটি দৃষ্টান্ত দারা এই প্রণালীছ্যের অর্থ স্পাঠ করিয়া বুঝাইতে চেষ্টা করিব।

মনে কর্মন একদিন চন্দ্রমণ্ডল হইতে ছইটি পুরুষ এই পৃথিবীতে ভাবতীর্থ হইলেন। জাঁহারা নানা বস্তু দেখিতে দেখিতে (পৃথিবীর সকল বস্তুই তাঁহাদের নিকট ন্তন) এক ঘড়িওয়ালার দোকানে উপন্তিত হইলেন। ঘড়ি জাঁহাদের নিকট এক ন্তন দ্রবা। যদি এই ছই পুরুষের মধ্যে এক্ষন দার্শনিক ও আনো বৈজ্ঞানিকপ্রবালী ভাবলম্বন ক্রেন ভাহা হইলে ভাহারা কিরূপ তর্ক করিবন, নিয়ে ভাহা দর্শিত হইতেছে।

Subjective method—আনুমানিক প্রণাণী or Metaphysical method—দার্শনিক প্রণাণী, Objective method—প্রত্যক্ষ প্রপাণী or Scientific method—বৈক্ষানিক প্রণাণী

দার্শনিকপ্রণালীর প্রযোক্তা (সংক্ষেণ্ कामदा हैशांक न विनदा केंद्रियें कतिव) ৰলিবেন খড়িট , একপ্ৰকার उहात क्रेंगे कांगे डाहात निकंगे क्रें-থানি ছাত বলিয়া প্রতীয়মান হইবে। ঘডির অভাস্তরস্থ যন্ত্রটি তিনি উহার इंट्र कांच वित्रा मान कतित्वन। एडि-হইতে যে অনবরত টুকটাক্ শব্দ নিঃস্ত হয় তাহাকে তিনি উহার খাসপ্রক্ষেপের भक बलिया निर्फिण कतिर्दन। मधा माधार्य चिष्त्र हैः हैाः मन दश मिडे তিনি ইহার জ্বন্ধবনি বলিয়া মনে **এইরূপে, ভীব বলিলে** कदिद्वन । भागातित मत्न (य नकन जात्व जेलग হয়, ঘডিতে ভাহাদের কতকগুলির সাদৃশ্য দেথিয়া তিনি উহাকে এক জীব বলিয়া অভিহিত করিবেন।

কিন্ত যিনি বৈজ্ঞানিকপ্রণালীর প্র-যোক্তা (আমরা ইহাকে সংক্ষেপে ব বলিয়া ডাকিব,) তিনি বলিবেন ''হাঁ ইহা জীব বলিয়াই অমুমান হইতেছে। সাৰ্ধানে খুলিয়া ইহার অক প্রত্যক্ত, কল, দড়ি ইন্ত্যাদি সমস্ত তন্ত্র করিয়া দেখিবেন। এই এই সমস্ত দেখিয়া শুনিয়া উহার বোধ হইবে যে ঘড়ি জীব নছে। উহা এক প্রকার কলমাত্র।

দ এবং ব এই উভরের মধ্যে কাছার
মীমাংসা নির্ভূল ? আমরা সকলেই জ্ঞানি
ঘড়ি একপ্রকার কল। ুম্ভরাং বিত্ত প্রশ্নের উত্তর দেওয়া 'কঠিন
নহে। কিন্তু অনেক স্থলে এইরূপ
মীমাংসা করা অতীব ত্রত চইয়া উঠে।
দৃষ্টান্তম্বরূপ আমরানিয়ে একটী উদাহরণ
বিবৃত করিভেছি।

প্রায় ৬।৭ বংসর পূর্ব্বে কলিকাতায়
প্লাক্ষেট লইয়া বড় ধুমধাম হইয়াছিল।
অনেকে বিশাস করিতেন, এবং এথনও
করেন, যে প্লাঞ্চেট ভূতের কাও। প্লা-কেটে ভূত ভবিষ্যৎ জানা যায়। কাহার
প্রপিতামহের নাম কি, কাহার অভিবৃদ্ধ
প্রপিতামহ কোন সালে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন প্রভৃতি প্রশ্ন প্লাঞ্চেকে জ্জ্ঞাসা

<sup>†</sup> একজন চাসা ছড়ির মধ্যে একপ্রকার কীটের অবস্থিতি আশহা করিছা ঘড়িট মুচড়াইরা ভালিয়া ফেলিয়াছিল। ভাহাতেও কীটের শব্দ থামিল না দেখিরা বিরক হইয়া পুলাখাতে উহা চ্রমার করিয়া কেলে।

े श्रांतिरक्टाः इक्षाः शास्त्रवे ज्ञ विद्या बर्दाबरे पर बिख रहेल।

किन गं:दाता देवळानिकव्यंगानी व्यव-্ৰামন করিয়া ভর্ক করিতেন, ভাঁহারা যাহাই বলুন না কেন, প্লাঞ্টের অঙ্গ প্রভাল বিশেষরূপে পর্যবেক্ষণ না ক-রিয়া তাঁহারা কোনরূপ মীমাংসা করি-তেন না। তাঁহারা দেখিতেন, বে প্লাঞ্চে এইরূপে নির্শ্বিত যে ইহার উপর আল্ল চাপ পড়িলেই ইহার চাকা ঘুরিতে थारक: उथन याहाता शास्त्र धित्रा পাকেন, তাঁহাদের ম্নের ভাব সমস্ত ভাঁহাদের অজ্ঞাতে উহা হইতে বাহির হইয়া পাকে। ত্রাহ্ম প্লাঞ্চেট ধরিলে बाश्चर्यारे मर्स्वा९कृष्टे धर्म विवादिक्था বাহির হয়। আবার হিন্দুতে প্লাঞ্চেট सतिता हिम्पूर्याचे मर्स्याएक हे भर्या विनया লেখা বাহির হয়। আবার নিরক্ষর बाक्ति श्लादकेष्ठे धतिरम कान व्यकारतत বেখাই বাহির হয় না। এই সকল मिश्रा देवळानिक श्रेवानीत श्रेरवाळात्रा बीभाः मा करतन, य शास्त्र होत निर्मान-কৌশল আছে বটে,কিন্তু ইহা ভুত নহে। जन्म प्रत है हात्मत मत्या काहात चड्डः ७ विषय माश्रद्धात्र

মীমাংসা নিভূলি ঠিক করিয়া বলা যায় ঐক্যুত্য নাই। অনেক কুত্বিদা ব্যক্তি আজিও প্রেডতত্ত্ব বিশ্বাস করিয়া থা-কেন।

্ৰ পে যাহা হউক, একণে বোধ ছুরু वृक्षित्व भारा याहेत्व (व, देवळानिक अ

मार्पनिक व्यमांभी एक व्यक्तिम कि। मार्गः নিক প্রণালীতে কোন এক,বন্ধ দেখিয়া তবিষয়ে অসুমান করিয়া লওয়া হয়,\_\_\_ যাহাতে সেই অনুমানটা সর্বাদস্থলর इत, छविषदा ८० है। कता इत्र. किन्द অমুমানটা অমুমের বস্তুর সহিত মিলিল কি না ভধিষয়ে কোন অমুসন্ধান করা इत्र ना। किन्तु देवळानिक व्यनांनीटज বস্তু দেখিয়া যে অফুমানটি করা হয়, সেইটির সব্লিত বস্তুটী সম্পূর্ণরূপে মিলিল কি না, তাহা দেখা নিতান্ত প্রয়োলনীয়। যদি অহুমানটি বস্তুর সহিত সম্পূর্ণরূপে না মিলে, তাহা হইলে ঐ অসুমানটি ছাড়িয়া দিয়া অন্য একটি অনুমান প্ৰস্তুত করা হয়। এইরূপে যতক্ষণ না অহু-মানটি বস্তর সহিত সম্পূর্ণরূপে মিলে ততক্ষণ কোনরূপ সিদ্ধান্তই স্থিরীক্ষত ठग्र ना ।

কোন এক বস্তু দেখিয়া ভৰিষয়ে অমুসান করা সমুষ্যের শ্বভাবসিদ্ধ ধর্ম। मार्गनिक अवानी धरे असूमान है भराख যাইয়াই ক্ষান্ত হয়েন; তিনি ঐ অমু-মানের অঙ্গপারিপাটা সম্পাদন করেন। তিনি কখনই অমুসানের বাছিরে যান না। কিন্তু বৈজ্ঞানিকপ্রণাদী অনুমান-টীকে বস্তুর সহিত বিশেষরূপে মিলাইয়। দেখেন। গণিতের আ্কারে প্রকাশ कतिरम, धरे थानीरक क्रेंग्डि निम-লিখিতরূপে সজ্জিত করা যাইতে পারে।

मार्गिनक्थेश्वरी = वस्त्र मर्गन + अस् -ग्न

देवकामिकथानानी <del>- दखत पर्नन + जर</del>ू-মান + বস্তর, সহিত অসুমান মিলিল কি ুনা তৰিষয়ক পরীকা।

পুথিবীর আদিকাল হইতে মহুষ্য অফুয়ানের প্রতি নির্ভর করিয়া আদি-তেছে। কি অসভা অবস্থায়, কি সভা ध्ववशाय मकन ममरबरे मञ्चा मकन ্কার্যোই অনুমানের আশ্রর লইয়া আসি-তেছে। যখন সম্যা অতি অসভা ছিল তথন পৃথিবীতে কর্মক্ষমতার অধিকতর প্রয়োজন ছিল। চতুর্দিকে প্রকাত-শরীর, বিপুলতেজ্ঞ , সিংহ, ব্যান্ত প্র-ভৃতি জন্তুর সহিত অমুক্ষণ যুদ্ধ করিতে হইতেছে। পৃথিবীর অভ্যপ্তরে, পর্বাত-গুহায়, বুক্কটোটরে আশ্রয় খুঁজিয়া गरेख रहेएएছ। প্রতিদিন প্রতি-দিনে আহারের সমস্ত সামগ্রী আহরণ করিতে হইতেছে। যথন জীবিতচেষ্টা (struggle for existence) এত প্রবন, তথন অমুমান অতি অপরিপক্রপ হ-रेज। (मच डार्क ट्रक्न, (मरधत मर्था এক হাতী আছে সেই হুকার করিতেছে। क्ल क्र्टिंटकन, वरन এक वनस्ति আছেন, ভিনি সমস্ত কলিকাগুলিকে প্রস্ফৃটিত করিরা দেন। মহুব্যের বিপদ হয় কেন, এক দেবতা আছেন, তিনি धरे गकन विशरप मसूष्टक रकनिज्ञा থাকেন; এইরূপে সকল প্রশ্নের সমস্ত্র্যা এক এক কথার পাওয়া যাইভ। যে স্কল প্রশের অমুমান খাড়া করিতে धक धक महामिखरण्य नगर जीवन

वाष्ट्रिक इहेन्रा गाँहे (डाइ, जन्म अक কথার সে সমস্ত প্ররের মীমাংসা ইইরা যাইত। অমুক জিনিস কেন ওরপ हरेंग ; এक्जन (एवड) डेश उज्जा क-त्रिया पियारहर्न।

বথদ মহুষোর জীবিতচেষ্টা কিছু ক-भिल, यथन वनाङ्ख **नगर मञ्दात्रं** বশবর্তী হইল, যখন অসভ্য অবস্থার অনিশ্চিত জীবনের পরিবর্তে মহুবোর জীবন অপেকাত্বত নিশ্চিততর হইল, তখন অমুমানের প্রকৃতিরও পরিবর্ত্ত হইল। পুর্বে এক এক কথায় সকল প্রশের মীমাংসা হইত। এখনও তাহাই হইতে লাগিল ; কিন্তু এখন অমুমানের সঙ্গে সঙ্গে অলে আমাণের যোগ (न्था याहेर्ड नातिन। এই नकन প্রমাণ অনেক সময়ে অতি বিচিত্র প্রশা-লীর হইত। একজন দার্শনিক বলি-त्निन, त्रःशाहे त्रमेख वस्त्र वानिकात्रण, मकल वस्तरे इब এक वा जनभिक मःशांत অন্তর্ত। কেহ বলিলেন, অগ্নিই সমস্ত বস্তর, আদি, কেন না অগ্রির নিজের দাহিকাশক্তি আছে। এইরপে বাহার (य हेव्हा इहेड, त्म त्महेक्क्म ध्यमान शासाम कतिक। देशांख धरे कन रहेन, **रव जन्म अक्यारनद मरक मरक अमान** खादाश व्यावभाकीय विका त्याध हरेए नाशिन ।

"অন্কারে ডেলা ফেলার" মত এই স্কল প্রমাণের মধ্যে কোন কোনটা ক্থনও স্ত্যুও হইরা পড়িত।

ইহাদের মধ্যে অধিকাংশই অসার ও অযৌক্তিক হইত। এইরূপে অনেক দিন কাটিয়া গেল; যেমন পথ পরিষ্কার লা থাকিলে, নগরের মধ্যে প্রবেশ করিতে পারা যায় না, ঠিকপথে গে লেও ভাছা ঠিকপথ বলিয়া বোধ হয় না, দেইরূপ ভর্কপ্রণালী অবিদিত থাকাতে ভত্তনির্ণয় স্থান্বপরাহত হইয়া পড়িল।

এই সময়ের মধ্যে কত প্রকারের কত মত যে আবিষ্কৃত হইল তাহা কে বৰ্ণনা করিতে পারে। যেমন বর্ষাকালে প্রাঙ্গ-লোপরি একটির পর আর একটি বুদুদ উখিত হয়, প্রত্যেক বৃদ্ধটি ইহার পূর্ব ব্ৰুদ অপেকা বৃহৎ ও উজ্জ্বল, কিন্তু मकन छनिष्टे किञ्चरकारन त्र मर्था जल-রাশির সহিত মিশিয়া যায়, সেইরাপ এক खन मार्निनिक त भत खना मार्निक चाविक् उ इरेट गांगिलन। ব্ৰাউন সমস্ত অগৎকে স্বীয় মতে আন য়ন করিবার জন্য পূর্বে পূর্বে সমস্ত দর্শনের ভ্রম প্রতিপন্ন করিলেন। কালি হাগিল্টন আসিয়া বলিলেন, ভ্রাউন যাহা কিছু বলিয়াছেন সমস্তই ভ্রান্ত। পরশ মিল আসিয়া প্রতিপল্ল করিলেন, হামি-**ल्टे**(नंत्र ममञ्ज कथारे लाख। এरेक्स्प वरत्रदत्र वरत्रद्र भारत्र भारत नृज्न नृजन দর্শন বাহির হইতে লাগিল। জ্যাকালে সকল দুৰ্শন্ই স্কাশ্ৰেষ্ঠ বলিয়া বোধ ্ছইত। । কৈন্তু কিছুদিন পরেই আর এক জন দার্শনিক আসিয়া প্রমাণ ক্রিয়া দিতেন, যে পুর্বের দর্শন সম্পূর্ণ জমমূলক। স্কুতরাং সহজেই লোকের মনে
বিশ্বাস হইত যে দর্শন অপ্রয়োজনীয়ু।
যাহাতে কোন বিষয়েরই মীমাংসা হয়
না, তাহাতে লোকে কেন আদর করিবে?

মহুষা যতই সভাতার সোপানে আ-রাঢ় হইতে লাগিল, ততই তাহাদের চিম্ভাঞানা পরিবর্তিত ও পরিশুদ্ধ হ ইতে লাগিল। তথন আবা যে যে প্রমাণ মহুষ্টের গ্রাহ্ন হুইত না। পুর্বে প্রমাণ প্রয়োগ করিতে পারিলেই তাহা অতি আদরের সহিত গৃহীত হইত। किन्न अक्तरन आगारनत्र रमाय धन विरव-চিত হইতে লাগিল। কোন প্রমাণট ভাল, কেন ভাল, অন্য অন্য প্রমাণের দোষ কি প্রভৃতি প্রশ্ন উথিত হইতে লাগিল। পরে যথন মুদ্রাযন্ত্র আবিষ্কৃত হটল, যখন বিদ্যাশিক্ষা শুদ্ধ অনকতক লোকের মধ্যে শৃঙ্গলিত হইয়া রহিল ना, यथन व्याभामत माधातरगह विमाात রসাস্বাদ ও আলোচনা করিবার অধিকার প্রাপ্ত হইল, তখন প্রামাণ প্রয়োগের প্রণালীও উন্নততর হইতে লাগিল। এই সগয়ে ইংলওে বেকন ও ফাঙ্গে ডেকার্ট (Des Cartes) জন্মগ্রহণ করি-(लन।

ডেকার্ট প্রমাণের জাবশ্যকতা বুঝি-লেন। তাঁহার নিকটে সকল বস্তরই প্রমাণের আবশাকতা আছে ইহা প্রতীর-মান হইল। জগদীশার আছেন, মন াছে, আমি আছি প্রভৃতি যে সকল
াশ্লের তুমি আমি কোনই প্রমাণ দেথিতে পাই না, ডেকার্ট সেইগুলি নিয়মমত, রেপাগণিতের প্রতিজ্ঞার নাায়
প্রমাণ করিয়া দিলেন। ডেকার্টেব
অ্বগদীশ্বরের অস্তিরসম্বন্ধে প্রমাণ্টি নিয়ে
প্রদর্শিত হইতেছে।

#### । জগদীশ্বর আছেন।

কারণ—অগদীশবসম্বন্ধে যে ভাবটি আমাদের মনে আছে, সেইটি অগদীশবই তথায় সেই প্রকারে রাথিয়াছেন।

যদি বৃল-এ ভাবটি আমি নিজেই আমার মনে রাধিয়াছি, তাহা হইলে ইছো করিয়া উহা বিনষ্ট করিতে পারি নাকেন? যে ভাবটি আমি নিজে প্রস্তুত করিতে পারি সেই ভাবটি আমি নিজেই বিনষ্টও করিতে পারি।

স্তরাং—প্রমাণ হইল যে জগদীশ্বরের ঢাবটি জগদীশ্বই আমাদের মনে রাথি-য়াছেন। কারণ পুর্বের্ণ প্রমাণ করা হইল, যে ঐ ভাবটী নিজে প্রস্তুত করি নাই।

#### স্তরাং--জগদীশ্ব আছেন।

এইরপ প্রমাণ ঠিক হইল কি না আনমরা সে বিষয়ের তর্ক করিতেছি না।
আমরা শুদ্ধ দেখাইছেছি যে, ডেকার্ট
প্রমাণের প্রয়োজনীয়তা অভিস্কলররূপে
হনমুদ্ধ করাইয়াছেন। পূর্বেই অগদীশ্বর
আছেন বলিলেই প্র্যাপ্ত হইরা ঘাইত;
কিন্তু এক্ষণে আর তার্হা হইত না। এাণে রেখাগনিতের ন্যান্ন প্রমাণপ্রয়োগ
ইতে আরম্ভ হইল। প্রমাণ প্রযুক্ত

হইতে আরম্ভ হইল বটে, কিছু মনই
প্রাণাণের স্ত্যাসত্যতার বিষয়ে একমাত্র
বিচাবকর্তা রহিল। লক্ষত্রসকল বৃত্তাকারে ব্রিয়া থাকে। কেন ? আমরা
ননে মনে জানিতে পারি যে বৃত্তই সম্পূর্ণ
ক্ষেত্র। মন আরম্ভ বলে, যে জগদীশ্বরের কোন ক্রিয়া অসম্পূর্ণ হইতে পারে
না। স্তরাং নক্ষত্র ব্রাকারে ঘ্রিয়া
থাকে।

এইরপে ডেকার্ট অন্য অন্য অনেক বিষয় প্রমাণ করিলেন। আমি আছি, कादन आगाद गन वटन दर याहा किह চিম্বা করিতে পারে তাহাই আছে: আমি চিন্তা করিতে পারি, স্থতরাং আমি আছি। প্রমেয় যাহাই হউক না কেন. বাহুলগতের কথাই হউক বা অন্তর্জগ-তের কথাই হউক সকলম্বলেই মন একমাত্র বিচারকর্তা। যে প্রশ্নই উথিত হউক না কেন, মন ভ্ৰিষয়ে বিচার করিয়া স্থির করিয়া দিবে। ডেকার্ট এই মত প্রচার করিলেন। তাহার পর ইউরোপের অন্য অন্য দেশে তাঁহার এই মত প্রচলিত হইতে লাগিল। ८७कार्ड, गानवाक, न्थिताका, नारत्रर-নিজ্ফিকী, ক্যাণ্ট, দেলিং, হেগিল প্রভৃতি মহা মহা পণ্ডিতেরা ডেকার্টের এই মত সম্প্রদারণ করিতে লাগিলেন। কিছুদিন পূৰ্ব্বে লশ্মানিতে এই ৰত অভি প্রবলরূপে প্রচলিত ছিল; এক্ষণে ইহা ফ্রান্সে অত্যম্ভ আদরের সহিত গৃহীত हहेए एह। এই माजन अनामी क

আসরা দার্শনিক প্রণালী বলিয়া উলেও করিয়াছি।

যথন ডেকাট ফ্রান্সে প্র্রমত প্রচার करत्रन, जथन (वकत (Bacon) देशनरथ সম্পূর্ণ বিপরীত আর একটি মত প্রচার (व्कम विमायन করিতে লাগিলেন। मानव विচার কোন কাজের নয়। বস্ত सिचित्रा ७ क मत्न मत्न विচात कतिता ৰস্তার তত্তনির্ণয় করিতে পারা যায় না। ভত্তনির্বয়ের জন্য বস্তুটি বিশেষরূপে প্র্যালোচনা করা আবশাক। বস্তুটী স্বচক্ষে দেখিয়া, উহার সহিত ঐ প্রকা-বের অন্য পাচটী বস্তু মিলাইয়া তব-নির্ণন্ন করিতে হইবে। যখন তত্ত্ব নির্ণীত इहेब्राट्ड विनेत्री त्वांथ इहेट्व, उथन আবার উহার সহিত এস্তব সম্বন্ধ মিলা-ইয়া দেখিতে হইবে। তথনিগ্যকালে যাহা যাহা স্থির হয়,যদি বস্তুতে ঠিক সেই-श्वीम (मथिতে পা अय्रा यात्र, তবেই তবের উপর নিঃসন্দিগ্ধরূপে বিশ্বাস করিতে शांबा याहेरव। मत्न कक्रन, रशन श्वित ক্রিতে ছইবে যে ম্যালেরিয়ার কারণ कि ? दिकन डिशामन मिरवन, रव, रव সকল স্থানে ম্যালেরিয়া হইরাছে সেখান-कांत्र ख्रधान थामगगरक, अननानी-সম্বন্ধে, বৃক্সমূহের অবস্থানসম্বন্ধে, গৃহনিশ্বাণের কৌশলসম্বন্ধে প্রভৃতি নানা-বিধ বিষয়দ্যকে সবিশেষ অফুসন্ধান ক্রিতে হইবে। এই অমুসন্ধানের পর .. ्वी विस्थि विस्थि विस्व निकल म्यात्मविवाधानी फिल त्यान विवासीन,

সেই কয়টীর সহিত অবের কোনরপ সম্ম আছে কি না তাহা দেখিতে হইবে। তাহার পর দেখিতে হইকে-के मकन विषयमाख्य भारतिया दय नारे এমন কোন দেশ আছে কি না। এই রূপ নানাবিধ অহুসন্ধানের পর জানিতে পারা ঘাইবে ম্যালেরিয়ার প্রকৃত কারণ ক। ডেকার্ট হইলে হয় ত সিদ্ধান্ত, করিয়া দিতেন যে, যে দেশে পাপীর मःशा कांधक, त्मरे त्मर्थे गात्नित्रिया इडेम्रा थाटक। माटलितिया स्नशंनीचटतत ক্রোধের পরিচায়ক। যে দেশে পাপী कथिक, त्मरे प्राप्त गालितिया यात्रा छन्नीश्रम भाशीत्मत्र मख्विधान करत्न। বেকন যে প্রণালীটী প্রচলিত করি-लन, इयम्, लक्, हिडम्, मिल्, कम्ह, স্পেন্সার প্রভৃতি পণ্ডিতেরা সেই মতের সম্প্রদারণ করিয়া আসিতেছেন। বণা वाह्ना (य, मकन देवछानिक পণ্ডিভেরাই এই প্রণালীর অনুসরণ করেন।

যতদিন দার্শনিকপ্রণালী প্রচলিত ছিল,
ততদিন লোকে আপনার ক্ষমতা ব্ঝিতে
পারিত না। তাহারা সকল তবই আপনাদের ঝায়ত্ত বলিয়া মনে করিত।
পৃথিবী আদিতে কি ছিল, শেষেই বা
কি হইবে, পরকাল কি প্রকার, পাপ
পুণোর বিচার কি প্রকার, পরমেশ্বর কি
প্রকার, তাহার শাসনপ্রণালী কির্মিণ
প্রভৃতি সকল তত্তই মহুষোর ঘারা নির্ণাত
হইত। মহুষোর করনার গতি অপ্রতিহত। "উচ্চে, নীচে, গভীরে, অব্বের,

নগর্ভে, আকাশে" সর্ব্বেই কর্নার
নকট স্থামা। এবং বেখানে কর্না
নাইতে পারে, মুম্বা সেইথানেই ঘাইরা
তথাকার তত্তনির্গন্ধ করিতে বসিত।
আমরা পূর্ব্বে বলিয়াছি, যে দার্শনিক
প্রণালীতে মনই একমাত্র বিচারকর্তা।
যেথানে মন বিচারক সেখানে সকল
বিষয়ের মীমাংসা সহজেই হইতে,পারে।
কারণ মনের উপর কাহারও আপীল
নাই। মন যাহা বলিয়া দিলেন, তা
হাই শিরোধার্য্য করিতে হইবে। মন
যাহা স্থির করিয়া দিলেন তাহাই চ্ডাস্ত
নিশন্তি বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে।

কিন্তু যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তখন মনের আর ওরপ ক্ষমতা রহিল না। মনের মীমাংসা কার্য্যের সহিত, ঘটনার সহিত মিলাইয়া দেখিতে হইল। স্থতরাং পূর্বেযে সকল বিষয় মানববৃদ্ধির স্থগম্য ছিল বলিয়া বোধ হইত, এক্ষণে তাহাদের অনেকগুলি মানববৃদ্ধির অংগমা বলিয়া স্থিরীকৃত প্রমেশ্র কি, প্রকাল কি; সেখানে পাপপুণ্যের বিচার কিরূপ প্রভৃতি প্রশ্ন একেবারেই মান্বরে অম্-সন্ধেয় বিষয় হুইতে দুরীক্বত করা হইল। যাহা কখন কোন ইব্রিয়ের গ্রাহ্ম হর নাই বা ছইতে পারে না, বিষয়সমন্তের উপর মনুষ্য আপনাকে নিয়োজিত করিতে চাহিল না। এই मकन कांद्रान दिकरानद भव र्श्टेरड বিজ্ঞানচর্চা বহুলরপে প্রচলিত হইতে

লাগিল। অন্য , অন্য শান্তেরও লিখনপ্রবালী একেবারে পরিবর্ত্তি হইরা
গোল। দর্শন হইতে অবিজ্ঞের বন্ধনকলের মীমাংসা একেবারে উঠিয়া গোল।
ইতিহাস ভিরপ্রণালীতে লিখিত হইতে
আরম্ভ হইতে লাগিল। অর্থনাত্ত্ব, সমাজশাত্র প্রভৃতি করেকটি নৃতন অথচ
হাত্যাবশ্যক শাত্রের স্টে হইল। নীতিসম্বনীয় প্রশ্নসকল নৃতন প্রকারে আলোচিত হইতে লাগিল। মন্ব্র অবিজ্ঞের
বস্ত্ব পরিত্যাগ করিয়া শুদ্ধ জ্ঞের বন্ধর
প্রতি মনঃসংযোগ করিতে লাগিল।

বংক্রপতের পদার্থসমূহসম্কে বৈজ্ঞা-🖙 ালী প্রয়োগ করা সহন্ত। ঘেঁটু-৮:> নর্পদংশনের ঔষধ কি না জানিতে হইলে আমরা জন্তকে সর্পদন্ত করাইয়া ভাহাকে ঘেঁটুপাতা দেবন করাইতে পারি। চল্লের সহিত স্বোমার ভাঁটার কোন সম্বন্ধ আছে কি না জানিবার জন্ত পূর্ণিমার দিন.নদী বা সমুদ্রের জলবৃদ্ধির পরিমাণ স্থির করিতে পারি। অন্তর্জগতে কিরূপে বৈজ্ঞানিকপ্রণাণী প্রয়োগ করিতে হয়, তাহা বুঝিতে পারা অপেকারত কঠিন। অন্তর্জগতের কোন ष्ठेनारे हेक्तिप्रश्राष्ट्र नट्ट। কিরূপে বৈজ্ঞ।নিকপ্রণালী প্রয়োগ করা যাইতে পারে ? আমরা এতৎসম্বন্ধে ত্ই চারিট. দৃষ্টাম্ভ দেখাইয়া এই প্রস্তাবের উপসংহার করিব।:

বেমন বাহাদগতের সকলবস্তরই

বিজ্ঞানের দারা মীমাংসা হয়, সেইরূপ অন্তর্জগতের সকলপ্রশাই দর্শনশাস্ত্র দারা মীমাংসিত হইয়া থাকে। মন কি পদার্থ ? ইহা দর্শনশাস্ত্রের প্রথম প্রশ্ন। যত দিন দার্শনিক প্রণালী প্রচলিত ছিল, ততদিন লোকে বলিত, মন একপ্রকার অদৃশা বস্ত। জীবাত্মা, পরমাত্মা, ঈশর প্রভৃতি পদার্থ যেদকল উপাদানে নির্মিত,লোকে মনকেও সেই সেই উপাদানে নির্ণিত বলিয়া বোধ করিত। তথন মনের সম্বন্ধে অতি আশ্চর্য্য আশ্চর্য্য প্রশ্ন উত্থা-পিত হইত। কেহ বলিতেন মন মস্তি-ক্ষের মধ্যে অবস্থিত, কেহ বলিতেন মন হুংকোষে ভুত্তবস্থিত, কেহ বলিতেন মন শ্রীরের সর্ববিংশেই আছে, কেহ বলি-তেন, মন শরীরের প্রত্যেক অংশে অব-স্থিত ইত্যাদি। <sup>ভু</sup>্ফলতঃ মন ্যে শরীর হইতে এক স্বতন্ত্র পদার্থ, ভাহাতে সক-লেই বিশ্বাস করিতেন।

কিন্তু যখন, বৈজ্ঞানিক প্রণাণী প্রচলিত হইল , তথন স্থার পূর্ব্বেজি প্রশ্নসমূহেব স্থল রহিল না। মহুদ্য মনকে এক স্বতম্ব পদার্থ বলিয়া গণা করিতে স্থীকৃত কইল না। মনের মত কোন পদার্থই পৃথিবীতে দেখিতে পাওয়া যায় না। স্ক্তরাং স্থিরীকৃত হইল যে মন মন্তিকের ক্রিয়া মাত্র। এই ক্রিয়াগুলি শাবীরিক স্বত্ত স্বত্ত্ত্ব। কিন্তু যেমন স্থাসপ্রক্রেপ, রক্ত্রসঞ্চালন প্রভৃতি শারীবিক ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রিয়া ইন্দ্রিরিক ক্রিয়া ভিন্ন

রিক ক্রিয়াবিশেষ বলিয়া গণ্য হইতে আনম্ভ ছইয়াছে।

কি কি উপায়ে আমাদের জ্ঞানলাভ হয় ইহাও দর্শনশাস্ত্রের এক অতি নিগৃঢ় था। मकल्वे श्रीकात करतन, य আমরা ইক্রিয়হইতে আমাদের জ্ঞানের উপাদান প্রাপ্ত হই। যতদিন দার্শনিক প্রথা প্রবল ছিল, ততদিন ইক্রিয়ঞ জ্ঞান ভিল আর একপ্রকার জ্ঞানে মনুষা বিখাস করিত। ভাছারা বলিত যে মনের এক স্বাভাবিক জ্ঞানপ্রদায়িনী শক্তি আছে। आमार्गित देखितक छान. সকল বিষয়ের সমস্যা স্থির করিতে পারে नां। সময় कि, ञ्चान कि, श्रेश्वत कि. আত্মা কি. প্রভৃতি কতকণ্ডলি প্রশ্ন আছে যাহাতে ইক্রিয়ল জ্ঞানের কোন রূপ প্রয়োগ করা যায়না। ঐ সকল প্রশ্নের নির্দ্ধারণ কালে আমরা মনের স্বাভাবিকী শক্তিব নিকট হইতে সাহায্য लाश्च इंडेग्रा शाकि।

কিন্তু যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তথন আর মনেব পূর্বরূপ শক্তির প্রতি মফুষ্যের আন্থা রহিল না। তথন বিরীক্তত হইল, যে আনাদের স্কল প্রকার জ্ঞানহ ইন্দ্রিয়ত।

নীতিসম্বন্ধেও ঐক্তপ মতের পরিবর্ত্তন
দৃষ্ট হইবে। যথন দার্শনিক প্রণালী
প্রবল ছিল, তথন লোকে বিশ্বাদ করিত
যে জগদীশ্বর জানাদের মনে আমাদের
জন্মকাল হইতেই হিতাহিত বিবেচনার
ক্ষমতার সৃষ্টি করিয়া দিয়াছেন। কোন

দেখিবামাত্রই, উহা হিত কি হিত, আমরা ঐ ক্ষমতাবলে বলিয়া দতে পারি।

কিন্ত যথন বৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রচলিত হইল, তথন আর পূর্বের মত ঈশ্বরদত্ত ক্ষমতায় লোকের বিখাস রহিল না। তথন হিতাহিত বিবেচনার সম্বন্ধে অন্য অন্য কারণ নির্দিষ্ট হইতে লাগিল।

' এইরূপে এক্ষণে ইউরোপের অধিকাংশ

শ্বলে সকল শাসেই নৈজ্ঞানিকপ্রণালী প্রাযুক্ত হুইভেছে। ইতিহাস, অর্থশাস্ত্র, সমাজতত্ত্ব প্রভৃতি শাস্ত্রেও বৈজ্ঞানিক প্রণালী বহুলপরিমাণে সন্নিবেশিত হুই-ভেছে। আমরা সকল বিষয়েই ইউ-রোপের অন্করণ করিয়া থাকি। ইউ-রোপের বৈজ্ঞানিকপ্রণালী কখন অনুকর্ম করিতে শিখিব কি ?

### খাজনা কেন দিই ?

বছকালাবধি 'লোকে থাজনা দিয়া আদিতেছে। শতপুরুষ ধরিয়া লোকের সংস্কার এই যে জমী লইলেই থাজনা দিতে হয়। বাল্যকাল হইতেই দেখিয়া আদিতেছি যে থাজনা ছাড়া জমী পাওয়া যায় না। ব্রক্ষোত্তর বা দেবোত্তর আদি যে সকল জমীর থাজনা দিতে হয় না তাহা আগে মালের জমী ছিল, কোন ভ্যাধিকারী দয়া করিয়া তাহার থাজনা দেওয়া রহিত করিয়া দিয়াছেন, অথবা খাজনা লন না এই পর্যাস্ত। থাজনা বিজ্ঞান লন না এই পর্যাস্ত। থাজনা বিজ্ঞান লিরম, না লওয়াটা নিয়মনবিহিত্তি। এইরূপ অনেক পুরুষ ধরিয়া দেখিয়া আসাতে সংস্কার এরূপ দাঁড়াই-

নাছে, যে থাজনা লওয়া যেন প্রাকৃতিক
নিয়ম। যেমন এক বস্ত আর এক
বস্তকে আকর্ষণ করে এটা একটা প্রাকৃতিক
নিয়ম, জমী লইলেই থাজনা দেওয়াও
সেইরূপ। যথন থাজনা দেওয়া প্রাকৃতিক
নিয়ম বলিরা সংস্কার দাঁড়াইয়াছে,
তথন পাজনা কেন দিই, এরূপ প্রশ্ন
লোকের মনে উদয় না হওয়াই সন্তব।
জমী লইব, যাহার জমী তাহাকে থাজনা
দিব, ইহাতে আবার কেন কি ! যেমন
টাকা লইলে প্রদ দিতে হয়, বাড়ী লইলে
ভাড়া দৈতে হয়, জমী লইলেও সেইরূপ
থাজনা দিতে হয়। এর আবার কারণ
জিজ্ঞাসা কেন ?

\* বৈজ্ঞানিক প্রণালীর কথার সময় আমরা "লোকের" এই কথাটি "অধি-কাংশ লোকের" স্থলের ব্যবহার করিয়াছি। দার্শনিক প্রণালীতে বিশ্বাস করেন, এখনও এরপ লোক অনেক আছেন।

কারণ জিজাসা করার হেতু আছে। कृषि টोको ८३। छशांत कतिश्रांह, छै। का ভোমার। ভোমার টাকা আমি লইতে পোলে ভোমার কিছু লাভ না থাকিলে তুমি দিবে কেন ? তোমার বাড়ী তোমার নিজয়ত্বে প্রস্তার, নিজে তাহার জন্য কত টাকা খরচ করিয়াছ, আমি তাহা ব্যবহার করিব, ভোমার নিজের লাভ না थ। कित्न जुन्नि क्टिंव (कन ? जुनि विनाद আসার জমী আমি তোমাকে দিব আসার लां ना थाकित्न पिर किन ? किन्न कथा এই তোমার জমী হইল কিরপে। তুমি ৰলিবে আমি কিনিয়াছি। কিন্তু জমী কার যে তুমি কিনিবে। তোসার জিনিস ডুমি ইচ্ছামত নষ্ট করিতে পার, তোমার ৰাড়ী ভূমি ভাঙ্গিয়া ফেলিডে পার, ভো-মার টাকা ভূমি সমুদ্রের অগাধ জলে কেলিয়া দিতে পার, তোমার অজ তুমি नाकृत्वत पिटक विकास पिटल शांत, কিছ ভোমার জমী ভূমি নষ্ট করিতে পার না। বাত্তবিকও ভু'ন জমী কেন নাই, कृति िनिधान क्रमीवानशास्त्र ऋहः কিন্তু এই কথাট বৃঝিতে গেলে ত ' পূর্বে অনেক কথা বলা চাই। অে ঙলি প্রশ্নের মীমাংসা চাহি। আ া আৰি এই প্রস্তাবে চারিটি প্রশ্নের উত্তর मण्ड (हरे। कविब।

- (১) खभी कात ?
- (২) কিরপে জমীর উপর লোকের থয় দাঁড়াইয়াছে ?
  - (৩) পাজনা কেন দিতে হয়?

- .(৪) শ্বাজনা কত হওয়া উচিত **?** ভাহা*র পর প্রাসকলমে*:
- (৫) যত হওয়া উচিত তাহা অপেকা অধিক বা অন্ন হয় কেন ? এ প্রশ্নেরও মীমাংসা করিতে চেষ্টা করিব।

### ১। অমীকার?

व्यामना त्य अरहत शृष्टिएए वाम कति " তাহার পরিধি ১১০০০ জেশে ও বাাদ প্রায় ৩০০০ ক্রোশ। এই ভূপৃষ্ঠের হুই ভাগ লল ও এক ভাগ স্থল। স্থলভাগের কোথাও মক্নভূমি, কোগাও পর্বাত, কো-थां वन, कांथां व वन। अवनिष्ठ छैर्वत ভূমি এই উর্বরভূমিখণ্ড হইতে আমা-मित्र व्यानधात्रानाभाषात्री भागार्थत छैर-পত্তি হয়। যে কেহ ভূমগুলে জন্মগ্রহণ করিয়াছে তাহারই জীবনধারণ প্রয়ো-कन श्रुवताः की वनधा वत्वाशरयाती श्रुवार्थ যাহাতে উৎপত্তি হয় তাহাতে সকলেরই সমান অধিকার। জীবন বলিতে যে ७ व्यापादर जीवन वृक्षारेट व्याप া পো পড়ানাই। যাছার প্রাণ হারই প্রাণধারণ করিতে হয় ই ,পৃথিবীর জমীতে অধিকার। . পশু, পক্ষী, সরীস্থপ, কীট,পতঙ্গ, কীটায় এভৃতি সকলের পৃথিবীর জমীতে যে অধিকার, আমার তোমার ও মহারালা পোপাল নগরেরও সেই অধিকার। প্রাণ-धांतरनागरमात्री भागर्थ ७ दे भृथिवी इहेटड উৎপन्न इटेर्ट्न। श्रान्छ मकलरक धावन করিতে হইবে, অতএব একলনকে ভূমি

হইতে ৰঞ্চিত করাও যাহা তাহাকে বিতে ৰলাও ঠিক তাই।

দ্বীর তাঁহার প্রিয় পুত্রদিগের জন্য বেমন আকাশ হইতে ম্যানা বর্ষণ করি-রাছিলেন, এখন আর তাহা করেন না, এখন আমাদিগকে নিজপরিশ্রমে স্বহস্তে এই পৃথিবীর উপরিভাগ হইতে আমাদের আহারসংগ্রহ করিতে হয়। লমী ভিন্ন আমাদের চলে না, অতএব লমী কাহারও নহে, উহাতে প্রাণী হই-লেই স্বস্থ করে।

এই সাধারণনিয়মের অনেক ব্যত্যয় पृष्टे हरा। अरनक हिः खब्द अभन्न बद्धत মাংস আহার করিয়া জীবনধারণ করে। অনেক মনুষ্যও অত্ত্বেক উদ্ভিজ্ঞ ও অর্দ্ধেক প্রাণিক আহারে দেহপুষ্টি ক-রেন। অনেক জাতি আছে তাহাদের মৎসাই প্রধান আহার। মংস্যের সঙ্গে জ্মীর সঙ্গে কোন সম্পর্কই নাই। সকল বিষয়ের তর্ক তুলিতে গেলে পুঁথি বাভিয়া যায়। তবে এই পর্যন্ত বলা যায় য়ে, পশুমাহার ঘাঁহারা করেন, তাহারা অন্যার করেন: তাঁহারা যে আর একজনের স্বত্তনাশ করেন, শুদ্ধ তাহাই नद्दः তাহাদের भीवन পর্যান্ত নাশ করেন। তাঁহাদের মত যাহাই হউক, তাঁহারা যে জন্তর মাংসভক্ষণ করেন, দেও ত এই পৃথিবীর উপরিভাগ হইতে আপনার দেহপোষক জব্য সংগ্রহ করে। তবে ফলে একই দাড়াইল। সাক্ষাৎ-मदरम ना इहेगा शतम्भवामयरक माः- ্সাশীরাও এই পৃথিবীর উপরি<mark>ভাগ হ</mark>ইভে আহার্য্য সংগ্রহ করেন স্থতরাং জমীতে তাঁহারও **প্রয়োজন**। এখন बार्डा কথা। যাহারা মাছ খাইয়া বাঁচে ভাহারা ত অমীর ধার ধারে না. কিন্তু স্বমীতে যেমন জলেও তেমনি সকলেরই সমান স্বত। জমীরও যে জন্য থাজনা দিতে र्य, यथ्मारक्वमम्दर्ध (मर्हे क्षकात খালনা দিতে হয়। সেই কারণে ও সেই পরিমাণে। প্রাচীনদেশসমূহেও এই নিয়ম हिन (य सभी नवात, धकसरन्त्र नरह। रेह्मीरमत मर्था निषम हिल रय, ४२ বৎসর অন্তর তাহাদের সমস্ত জমী অধি-বাদীদিগকে ভাগ করিয়া দেওয়া হইত। সকলে সমান ভাগ পাইত কি না বলিতে পারা যায় না; কিন্তু ভাগ হইত নিশ্চয়। উহাদের সংস্থার ছিল যে, কানানদেশ ঈশ্বর ইত্রেলের বংশকে শ্বন্তত্যাগ করিয়া দান করিয়াছেন স্থতরাং যে কেই ইস্রে-লের বংশ, কানানের অমীতে তাহার ष्यः । पाठीन (दारम द्वारमद অধিরাগী প্রেট্রসিয়ানরা জমীর ভাগ পাইতেন, কারণ প্রথম অবস্থায় জাঁহা-রাই রোমের অধিবাদী ছিলেন। তাহার পর প্লিবিয়ানেরা যথন রোমের অধিবাদী বলিয়া গণা হইল, তথন ভাহারাও জমীর ভাগ পাইতে লাগিল। कर्पानित गम्छ समी folkland अथवा কাতীয় সম্পত্তি বলিয়া পরিগণিত হ-ইত। রাজা জাতির কর্তা স্বতরাং তিনি বাতীর ভূমিরও কর্তা। বাতীর ভূমির

বন্দোণত্তের ভার রাজা ও মহাসভার উপর স্থাপিত। व्यागारमञ्जलिकतम् রাজা সমস্ত দেশের কর্তা জনী তাঁছার. व्यर्थार व्यक्ताता कांदात निक्षे इटेट ष्मी नहेर्त, (कवन উৎপরের ছয়ভাগের এক ভাগ তাঁহাকে দিতে হইবে। এ নিয়ম অতি স্থলর, ইহাতে রাজ্য জ্মী र्टेटिट यानात हरेंड, चड्ड कत बना-নর প্রয়োজন হইত না। জমী কাজে व्यक्तांगांवातर्गत्र हिल : व्यक्तांगांवात्रगरक সাধারণকার্যোর জন্য স্বোপার্জিত শস্তের ষষ্ঠাংশ দিতে হইত। এখনও উত্তব পঞ্চিম অঞ্ল ও অন্যান্য স্থানে এই নিয়মই চলিয়া আসিতেছে। যেখানে গ্রবর্ণমেণ্টের সঙ্গে সাক্ষাৎসম্বন্ধে বন্দো-वस्त्र (मशारत है अहे नियस।

জমীতে যে কোন এক ব্যক্তির স্বস্থ ছইবে না তাহার কারণ, কি ? অর্জ্জনই স্বত্বের একমাত্র কারণ, যে অর্জ্জন না করিল তাহার স্বস্থ কিলে? কিন্তু ভূমি অর্জ্জন করা যায় না, কারণ ভূমির তুমি মালিক থাক আর নাই থাক, জমী যে জমী সেই থাকিবে। জমী কেহ উৎপর করিতে পারে না, কেহ উহা নাশও করিতে পারে না। জমী ঈশ্রদত্ত স্থতারে তথা আজিত নহে উহাতে কাহারও স্বস্থ নাই। প্রাক্ত প্রতাবে কমী ব্যক্তিবিশেষের হইতে পারে না।

কিরপে জমীর উপর লোকের সম্বাদাইয়াছে? কমী কার, এ প্রশ্নের উত্তর হইল क्यी कांधात्र अन्दर, উहाट कीवमात्व-রই সত্ত সাছে। তবে অমীদারের অমী আমার জ্মী, তোমার জ্মী কেমন করিয়া হইল ? জমীতে যদিও অর্জনসত্ব না হইতে পারে, কিন্তু উহাতে ব্যবহারিক স্বত্ব উৎপন্ন হইতে কাহারও আপত্তি নাই। মনে কর আমি এক **অঙ্গলে**র মধ্যে একথণ্ড ভূমি পরিষ্কার করিয়া তাহাতে চাদ করিতে লাগিলাম। আমার উহাতে কোন স্বন্ধ নাই, তুমি আমা অ-পেক্ষা বলবান, কালি তুমি আমার গালে চড় সারিয়া আমার জ্মীথানি কাড়িয়া नहेता। (ग अनिद (महे वित्व ७) অত্যাচার হইল। কেন ? জমী আমার নয় সত্য কিন্তু আমি যে সেটি ব্যবহারের উপযোগী করিয়াছি সেটুকুতে আমার স্বত্ব আছে, আমি পরিশ্রম করিয়া সে क्योत जन्न याताम कविग्राहि. जाशारक সার দিয়াছি হুই তিনবার চাস দিয়া তাহার উর্বরতা বৃদ্ধি করিয়াছি। আ্যার না ছইলেও আমি যে উহার উন্তিসাধন করিয়াছি সেটিত আনার, তাহাতে ত কোন সন্দেহ নাই। সেটুকু আমি ছাড়িব কেন ? ছাড়িতে গেলে তাহার ক্ষতিপূরণ চাই। এইরূপে অনেক জমীতে লোকের স্বত্ত জ্বিয়াছে। যত উপনিবেশ সর্বত্র এই কারণে স্বন্ধ। चाराति द तिथा (य शामिक तुन्त चाहिन उांशामात्र वहें जारा स्मीट यह रहे-য়াছে। বাবহারিক স্বত্ব পুরুষামুক্রমে চলা উচিত কি না গে বিষয়ে আমরা

কিছু বলিতে চাহি না। অনেক সময়ে ুরাজা বা রাজসভা কোন বিশিষ্ট উপকার করার জন্য কোন সেনাপতি, পণ্ডিত, किकिश्मकरक ভृशिमान करतन, है:-লভের বক্লাও, আমাদের জারগীর ব্রুলোত্তর জমীতে এইরূপে খণ জন্মি-য়াছে। প্রায় অধিকাংশ তলে তুর্বল-•লাতি কোন পরাক্রান্ত ভাতিকর্তৃক পরা· দিত হইলে শেষোক্ত জাতি পূৰ্বোক্ত ভাতির সমস্ত জমী দখল করিয়া লন। রোমধ্বংদের পর ইউরোপে দর্বত এই-রূপে বর্ষরজাতিগণ আপনাদিগের প্রা-ধান্য স্থাপন করিয়া আসে। এরপে ভূমিতে স্বস্থাপন যে যোরতর স্ত্যাচার তাহা কে অস্বীকার করিবে। বাঙ্গালায় य अभीपाद्वत अभी ब्रेग्नाट देश क्विन रमकारणत देश्द्रक्रमिरशत वृत्रिवात्र ভূলে। যেরপেই হউক যদিও জমীতে গ্ৰুণ প্ৰাণীর সমান অধিকার, আজি কালি পৃথিবীর প্রায় তাবং জনীই মহুষা-নামক জাতির কতিপয়মাত্র লোকের হত্তে অর্পিত হইয়াছে। তাঁহারা কিছু क्कन बात्र नार्टे क्कन छ्गी उंशित्तः। উহা লইয়া ভাঁহারা যাহা ইচ্ছা করিতে পারেন। যে সকল লোক বা জীবজন্ত णैशामत सभी दहेट छेनत्रभृष्टिं करत, ভাহারা তাঁহার অধীন, তাহাদের উপর তাঁহার ক্ষমতা অসীম। এরপ অন্যায় খুনিত ক্ষমতাপ্রকাশকে অভ্যাচারই বল র আফতিক নিয়নই বল আর সমা-नियमहै वन ।

অতএব জ্মীর উপর লোকের যে ছত্ব। দীড়াইয়াছে তাহা ব্যবহারে উপনিবেশ স্থাপনে ও প্রায় অধিকাংশ স্থলেই অত্যাচারে।

৩। থাজনা দিতে হয় কেন ?

व्यातात (महे क्या, क्यी यथन व्यात একজনের তথন ভাহার জমী লইয়া वावशात कतिस्विरे थालना पिट्ड इरेट्र । वि । यहि मकन कभी ममान উৰ্বরা হইত তাহা হইলে থাজনা হইত কি? তাহা হইলে জোর করিয়া জনী দ্পল করিবার কোন কারণ থাকিত না. তাহা হইলে যে যে জনী পাইত, দে সেই জমী লইয়া সম্ভূত থাকিত। তুমি ना इत्र शकात थारत सभी लहेबाह, जाभि না হয় দশহাত ভফাতে লইব, এইমাত্র প্রভেদ। লাভ তোমারও যে রকম আমারও ঠিক সেই রকম, তবে তোমার উপর আমার অত্যাচার করার প্রয়োজন কি ? কিন্তু বাস্তবিক ত তাহা নহে, জমীর গুণে অনেক প্রভেদ। আনার থানি খুঁব উর্বরা, তোমার থানি পতিত বা কল্পরময়; তোমার স্মৃত্রাং ইছো इरेट्न एग जूनि जामात ज्ञीशानि थाउ। ভোনার অমীর দর কম হইবে আয়ার অধিক হইবে।

অন্যান্য ব্যবসায়ে নেমন জিনিসের খরচাধরিয়া দাম হয় জনীর উৎপক্ষে তেমন
হয় না। মনে কর কাপড় বুনিতে হইবে,
তুলা ছয় আনা, মেহয়২ ছয় আনা, কোর
দেওয়া ত্পয়মা ও অন্যান্য বয়চ ১০।

কাপড় খানার খরচা হুইল তের আনা তাহার ব্যবসায়ের মুনাফা আট প্রসা मियाम, कार्यरफ्त मत इहेल शनद आना। এই দরে অধিকাংশ কাপড় বিক্রয় হইবে। শস্যাদির ত ঠিক এরপে মূলানির্বয় হয় ন!। তোমার জমী আমার জমী পাশা-পাশি, তুমিও যে খরচ করিলে আমিও সেই ধরচ করিলাম; তুনিও নেমন গা-টিলে আমিও তেমনি থাটলাম; ভোমার উৎপর হুইল দশ সলি ধান আমার হইল इ गि । 🚉 ५ है सना भाषन जिथे वरलन त्य जनामा भित्त उर्शन कि हुरे रह ना, পৃথিবীর ধনবৃদ্ধি হয় না, কেবল কৃষি-কর্মেই ধনবুদ্ধি হয়। কৃষিকর্মে যে খুরচ তাহার অপেকা অনেক বেশী লাভ इत्र। (मनात आधानमात देशू नामक श्रवदक्त श्रवक्रदम्थक (मगारेशा मिशाएकन যে, ইকুর চাসে প্রায় দিওণ লাভ হয়। **ध्ये लाट्डित अधिकाती (क इट्रेट्ट १ एय ভূমাধিকারী মেই লাভেরও অধিকারী ट्टेर्टा (य नगाल क्भीनात ज्**गापि-काती (म मगारक क्रिमीपारतत लाख, त्य नगांक दाका ज्याधिकाडी त्मथात डा-জার লাভ, বে দ্যালে প্রজা ভূমাধিকারী সে সমাজে প্রাদার লাভ। এই যে উৎ-পরের কমী বেশী এইই খাজনার কারণ। যদি সব জমী সমান হইত তাহা হইলে थानना रहे जुना । द्विम नव संभी धमन **\* হইত যে প্রকার শ্রম ও খরচা মাত্র** উঠিত ভাহা হইলে কেইই খালনা দিতে পারিত না। ্যদি সব্ভদীতেই বিভগ

খাজনা কত হওয়া উচিত? পূর্বেই বলা হইয়াছে বে জমী সমান, इटे**ल थां**जना इटेज ना। (कड्टे थं:-खना पिठ ना। এখন প্রশ্ন এই গে যাহাবা খাজনা দিবে ভাহার৷ কভ দিবে ৽ যথন কতকগুলি লোক একটি গ্রামপত্তন করিল যে কয়থানি উর্ব্ববভূমি ছিল সব কয়খানি ভাহারা দপল করিয়া লইল। কিন্তু সৰ উৰ্ব্যকৃষি ত স্থান নয়। মনে কর দশখানি উর্বর জমী আছে এক থানিতে দশ সলি ছুইগানিতে সাড়ে নয় স্লিতিন খানিতে নয় স্লিও চারি থানিতে আট সলি আব একখানিতে মাড়ে মাত মলি উৎপল্হয়। ইহাব নীচের জমী আবাদ হয় না। যাহাব জমীতে সাড়ে সাত সলি জ্বো তাহার যদি তাহাতে শ্রম ও পরচা না পোষ্টেত তবে সে<sup>°</sup>কখন আবাদ করিত না। স্তরাং বৃঝা গেল যে সাড়ে সাত সনি উঠিলেই চাদার থরচা উঠে। অচএব শাড়ে সাত সলির উপর যে জ্মীতে যত উৎপন্ন হয় সমুদর্ষ সে জ্মীর খা-बना इहेरपः যাহার উৎপন্ন দশ সলি যে আড়াই সলি দিলে ভাহার লোকগান इटेरव ना। যাহার সাড়ে নরসলি তা-

তুই সলি দিলে লোকসান হইবে

। অতএব যে সকল জমী চাস হয়

চাহাদের সধ্যে যে জমী সর্বাপেকা
থারাপ কাহার উৎপর উৎকৃত্ত জমীর উৎ
গর হইতে বাদ দিলে বাকি যা কিছু
থাকে তাহার নাম খাজনা। বলিবে
যে দেশে প্রজ্ঞা ভূমাধিকারী সে দেশে
ত থাজনা দিতে হয় না। আমরা বলি
সেখানে প্রজ্ঞা খাজনা ও মুনাফা তুই
পার, অন্য জায়গার মুনাফা পার প্রজ্ঞা,
থাজনা পার রাজা বা জনীদার।

এত হল শস্যামুঘায়ী থাজনা। যেথানে থাজনা টাকার দিতে হয় সেথানে ইহা অপেকা একটু জটিলতা অধিক। মনে কর পূর্ব্বাক্ত গ্রামে আর দশ ঘর লোক বাড়িল, পাঁচ যর চাসা আর পাঁচ ঘর गडेन किनिया थाय । शूटर्तरे वना रहे-য়াছে সে ভাল জমী আর নাই। নৃতন চাদা যাহারা আদিল ভাহারা যে জ্যী পাইল ভাহাতে তিন খানিভে ছয়সলি ও ছই খানিতে পাঁচ সলি মাত্র। একে বারে সকল জনীর থাজনা বাড়িয়া গেল। নাহাতে দশসলি উৎপর হইত তাহার খালনা আগে ছিল আড়াই পালি, এখন रहेल शांह मिल, याहात मार्फ नग्न मिल° তাহার থাজনা আগে ছিল ছুই সলি এগন হইল সাড়ে চার সলি, কেবল মাঁ-্ষার উৎপন্ন পাচ সলি সেই কোনমতে রচা পোষায় বলিয়া ভাহাকে খাজনা ত হয় না। এইরপে পাঁচজর লোক হওবাম থালনা প্রার বিওপ হইয়া

গেল। সর্বাপেকা নিক্ক জমীই খাজনা দিবে না। তাহা অপেকা বে ভূমির উৎপন্ন যত অধিক ততই তাহার খাজনা। আগে ছিল সাড়েসাতসনিওয়ালা জমী নিক্ট। এখন পাঁচসলিওয়ালা জমী সর্বাপেকা নিক্ট হইাছে স্তরাং ভাল জমীর থাজনা বাড়িয়া গিয়াছে।

আবার দেখ উর্বর জনীতে গরচা কম। मत्न कत नभ मनि उत्रांना समीट व থরচা হয় সাড়ে সাত সলি ওয়ালাতেও সেই খরচা হয়। মনে কর ছই জারগারই ৭৫ টাকা **খ**রচ হয়। কিন্তু এ কের উৎপন কম অপরের উৎপন্ন বেশী। পলিকরা ভাল ভমির খরচা কম, মন্দ জনীর থরচা বেশী। ভাল, জনীওয়ালা সন্তা দরে ৰিক্রয় করিতে পারে মন্দ জমীওয়ালা তত সন্তাদিতে পারে না। কিন্তু এক বাজারে এক সময়ে এক জিনি-সের ছই দর হইতে পারে না [খুজরা জিনিদের যদিও হয় কিন্তু বড় কারবারে হয় না ϳ স্কুতরাং সাড়ে সাত সলিওয়ালা य पद्भ विकास कतिरव मण मिलिखसा-লাকে সেই দরে বিক্রম করিতে হইবে। দশগলিওয়ালা একে ত উৎপন্ন বেশী পায় তাহার উপর তাহার জিনিদের দাম ও তাহার থরচা অপেকা অনেক অধিক। মনে কর সাত্সলিওয়ালার সলিকরা দশ টাকা খরচা হইরাছে, দশসলিওয়ালার সলিকরা সাড়ে সাভটাকামাত্রী খরচা. পড़िशाष्ट ; किन्छ इटेंबन दक्टे विक्रम क-রিতে হইল পনর টাকা সলি। একের

ছইল ৭॥ × ১৫ = ১১২॥ অপবে হইল ১৫ × ১০ = ১৫০ খনচা ছলনেরই এক। বাহার ভূমি অধিকতর উর্বরা ভাহার উৎপন্ন বেশী খনচা কম, মুনাকা স্থতরাং খুব বেশী।

এখন মনে কর পাঁচজন চাসা ও পাঁচ জন অপর লোক আসিয়া জুটিল। চাদারা আরও নিক্ট জমী চাদ করিতে नाशिन। मत्न कत त्मरे १० छोकारे খরচ হইতে লাগিল, উংপর হইল পাচ निवाल निकता थत्रा शनत है। का হইল। নৃতন লোক আসায় চাউলের দর বাড়িয়া গিয়াছে, প্রতি সলি এখন মনে কর বিশ টাকার বিক্রয় হইল। পাচ-मिला अवाला विकास ১২৫ টাকা আর প্রাশ টাকা মুনাকা। সাড়েসাভসলিওয়ার ৭৫ টাকা খরচ १॥×२৫= ১৮१॥ जात्र, मूनाका ১১२॥ होका। मन्मनिष्यानात थतहा १८होका ष्याय > · × २८ = २८ • म्नाका > १८ हाका। আংগে ছিল ৭৫ টাকা এখন হইল ১৭৫ টাকা অথচ তিনি নিছে ইহার किছू करत्रन नाहे। हेहात मस्या नीह-ज्ञितानात (व ১২৫ उपार मम्मग्रे খালানা যাওয়া উচিত। অর্থাৎ চাসা আপনার খরচা নেহলত নায় মুনাফা উঠাইয়া লইলে পর যা কিছু বাঁকি থাকিবে ভাছাই থাজানা। স্তরাং यक औं कमध्यां दृष्टि हहेरव, निकडे सभी हान इहेट आबन्न इहेटन, उडहे क्रभीत थाकानाहुंबा फिना बाहेर्त । वरुहे

টাকা দেশে বাজিবে লোকে অন্ন মুনাকান্ন টাকা থাটাইবে; চাসার মুনাকা
কমিন্না আসিবে জমীর খাজানা বাজিয়া
যাইবে। এই যে খাজানা ইহার নাম

Ecconomic Rent আমনা ইহাকে
যগার্থ খাজানা কহিব। প্রকৃত শাতাবে ব আমরা যে খাজানা দিন্না থাকি, তাহা
ইহা অপেকা অনেক জান্নগান্ন কম ও
অনেক জান্নগান্ন বেশী। ইহা অপেকা
অধিক বা অন্ন খাজানা কেন হন্ন ?

আমরা থাজানাস্থ্যে এ পর্যান্ত যত क्था वित्या व्यामिनाम, जाहा व्यक्षिकाः मह तिकार्छ। नामक व्यनिक व्यर्थभाजविष्कत মত। উাহার মত যে প্রমাণ সে বিষয়ে আমাদের সম্পূর্ণ বিখাস। কিন্তু তাঁহার মত ইংলও ভির অপর দেশে গৃহীত হয় না। ইংলও অর্থধানদেশ ভূমি-প্রধান নহে; ইংলণ্ডের লোক বেশ বুরিতে পারেন যে, চাসা যে থরচ ও বে পরিশ্রম করিল ভাষার উদ্ধার ও ভাষার মুনাফায় ভাষার স্বস্তু, এ সমুদ্রের অধিক যা কিছু ভাহাতে ভাহার স্বন্ধ নাই। আমাদের দেশ ভূমিপ্রধান। জানে ভাহারা চাস করিয়া নিজের গুল রান করিয়া যদি উদ্ত হয়, তবে জমী দার পাইবে। অতএব রিকার্ডেরে <sup>মত</sup> যে সভ্য ভাহা আমাদের দেশীয় লোক-দিগকে বিখাদ করান অত্যস্ত কঠিনু। আ্যাদের দেশের ত কণাই নাই; কা-ন্সের প্রোক্ত রিকার্ডোর কথায় বিখাদ করেন না। রিকার্ডোর কথা তুলিলে াদের দেশীর লোক ননে করিবেন
থক অমীদারের অপবা গবর্ণনেটের
পিকতা করিয়া প্রান্ধার্কের অনিষ্টের
নূল করিতেছেন। কিছু আমরা তাহার
কিছুই করিতেছি না যাহা সতা বলিয়া
বিখাস তাহাই লিখিতেছি।

लात्क जिल्लामा कतित्वन गिर्व तिका-র্ভোর মতই সত্য হয়, তবে খাজানা কোন দেশেই রিকার্ডোর মতাহুদায়ী হয় না কেন ? তাহার উত্তর এই ইং-লণ্ডেব পান্ধানা প্রায়ই রিকার্ডোব নতে গৃহীত হয়। ইংলভের अभीमात कात-মারকে জমী দিলেন। কারমার দেখিল তাহার টাকা উঠিনে মুনাফাও উঠিনে म अभी नहेन। हेश्न खंत कादमात धनी, तम यनि छात्र ना कतिङ, उत्व ব্যবসায় করিত. ইংলতে সাধারণ লো-কের জমী নাই ভাহারা ফার্মারের মজুরদার। ইংলতে জ্ঞানীর সম্পূর্ণ সহ ध्यीमादतत, शवर्णनार्षेत्र वा आधारमत গ্ৰাহতে কোন সত্ব।ই। অন্য কোন **(म(भेडे आग्र (मज़्ला नारे।** आमार्क्त দেশের জ্বনীতে (বাঙ্গালা ভিন্ন) গবর্ণ-मिणे समीमात ७ थाना नकत्वहरे यह णाष्ट्र हेश व्यत्मतक चीकांत्र करतम। মতরাং ভারতবর্ষে ঠিক রিকার্ডোর কথা-মত খালানা ছইতে পারে না। জমীদার উৎপরের অংশ পাইবেন গ্রব্মেণ্ট অংশ <sup>\* এই</sup>বৈন প্রজা অংশ পাইবে। প্রজা জৈর গরচ ভূলিয়া লইয়া বাঁকি যেটা कित्व छाद्यात्र अश्म शाहेत्य। बन्न-

**८क्टम शनर्वदम्हें निज जाश्म समीकावटक** স্বত্যাগ করিয়া দিয়াছেন-ন্যখন দিয়া-ভিলেন তথন প্রজার স্বত্বের দিকেও বড विभाग मत्नारयागं छ करतन नाहे। अपूछ-ताः এই সময়ে समीमात्त्रता श्रानात उपत পাত্যাচার করিয়াছেন এখন कार्तात श्रीकांत चल्मातात्स्वत क्रमा वह-তর চেষ্টা হইতেছে, স্বতরাং জ্মীদার প্রজার নিকট সমস্ত বাড়তি উৎপন্ন গ্রহণ করিতে পারেন না। কারণ জমীতে এবং জ্মীর থাজানায় প্রজারও সত্ত আছে। এরপ অণস্বায় ভারতবর্ষে জনীর খালানা অর্থাৎ জমীদারের প্রাপ্য রিকার্ডোর খালানা অপেকা অনেক ক্য হইবে, কারণ তাহার এক অংশ প্রজার निष्ठत ।

ইতানীতে জ্মী জ্মীদার ও প্রজার ভাগে বিলি। আনাদের অল্প ব্রহ্মেন্তর, ভোগীরা বেমন ভাগে বিলি করেন, সেও ঠিক সেইস্কণ, তবে জানাদের ব্রহ্মেন্তরভোগীরা মিয়াদি বন্দোবস্ত ক-রেনু, স্থতরাং জ্মীতে প্রভার স্বত্ন জ্মান্টিতে না দিয়া অনেক সমরে বিকার্ডোর মতান্থায়ী খাজানা আদায় করিয়া লন। ইতালীতে তাহা হয় না; ইতালীতে তাহা হয় না; ইতালীতে তাহা হয় না; ইতালীতে তাহা হয় না; ইতালীতে জালাত তাহা হয় না; ইতালীতে জালিতে জালাত ব্রহ্ম কায়সর প্রভাতির সময় হইতে বঙ্কম্প হইয়া জালিতেছে। এক এক জায়গায় সেই জ্মীদার ও সেই প্রজা তালিতেছে প্রজাতের সময় ধরিয়া চলিয়া আলিতেছে প্রজাতের প্রজাতের ক্রমা

জায়গায়, জমীদারের জার্কেক কোন
ভায়গায় জমীদারে ত্ই তৃতীয়াংশ। কিন্ত
ইতালীর অধী এত ভাল যে তথাপি
প্রজা আপনার খরচা ও মুনাফা পোষাইয়া থাজানার কিছু অংশ আত্মাৎ
করে। পূর্কেই উক্ত হইয়াছে ফুল্স ও
জন্মনি প্রভৃতি স্থানে জমীই প্রজার
স্থারাং সেথানকার খাজানা প্রজাই

যে সকল দৃষ্টান্ত দেওয়া গেল সর্ব্বি থাজনা রিকার্ডোর মতান্ত্যায়ী থাজানা অপেক্ষা কম। কিন্তু আয়ার্লভের এমনি ফুর্ডাগা বে, সেথানে ইহা অপেক্ষা ভানেক বেশী থাজানা। প্রজায় দিতে
পারে না, কিন্তু জমীদারের খাতায় তাভার নামে পাওনা লেখা থাকে। তাহার
কারণ এই দে সেখানে প্রজার স্বত্ব
লোপ হইয়াছে; জমীদার সর্কে সর্কা।
লোক অনেক। জমী একখানি বলেছু ক্র
বস্তু হইবার সময় হাজার হাজার লোক
দরখান্ত করে, যে সকলের অপেকা।
অধিক দিতে পারিবে সেই জমী পাইবে।
গরীবলোক ক্ষমতার অতিরিক্ত দিব
বিন্যা স্বীকার করিয়া জনী লয়, দিতে
পারে না, প্রকাম্ক্রমে ক্রমশঃ বর্দ্ধনশীল
ঝণভার বহন করে।

## 

## অভিজ্ঞান শকুন্তল।

#### ১। ইহার নাটকর।

ত্বংসার শাপ শক্তলার উপন্যাসের
প্রধান ঘটনা। এই ঘটনা আছে বলিয়া
শক্তলার উপন্যাস নাটক বলিয়া পরিগণিত হইতেছে। নচেৎ উপন্যাস নাত্র
হইত। বলা অনাবখ্যক যে উপন্যাস
হইলেই নাটক হয় না। আরবাউপন্যাসনামক গ্রন্থে সহস্রাধিক উপন্যাস
আছে; কিন্তু আরব্য উপন্যাস নাটক
নহে। যে উপন্যাসের প্রধান উদ্দেশ্য
মুষ্যাচরিক্তের আভাত্তিরিক নূল প্রদর্শন
করান ভাহাকেই নাটকের উপন্যাস
বলে। সহ্যাচরিত্র তুই প্রকার। বাহ্য-

জগতেরহানা অনুশাসিত হওরা এক প্রকার চরিত্রের লক্ষণ; এবং ৰাহ্যজগৎকে
শাসন করা জার এক প্রকার চরিত্রের
লক্ষণ। ছুইটি দবিদ্র ব্যক্তি হঠাও
প্রভুত ধনরাশি প্রাপ্ত হইল, পাইয়া এক
জন গর্কিত হইরা উঠিল; আর এক
জন পূর্বের নাায় বিনয়নম রহিল।
দেখা ঘাইতেছে যে, বহির্জগতের ঘটনা
একজনকে বিচলিত করিতে পারিল,
আর একজনকে পারিল না; একজনের
মন শক্তি এবং দৃঢ্ভাসম্পন্ন, আর এক
জনের মন তাহা নয়। একজন ধনের
জনের মন তাহা নয়। একজন ধনের

िनागिङ हरेस, धन चांत्र धक्षारनत শাসিত হইল। বাছজগৎ একজনের ক রঞ্জিত করিল, আর এক্লনের বাহাজগৎকে রঞ্জিত করিল। এক র মন বাছজগতের শক্তির বশীভূত; ্হিশক্তির শাসনে ভিন্ন ভিন্ন প্রাকৃতি াবুণ করিতেছে। আর একজনের মন নিল্পক্তির দারা বাহ্তপাতের শক্তিকে হতবল এবং বশীভূত করিতেছে। হিরাজউদ্দোলা পলাশীর যুদ্ধে পরাজিত ্ইয়া প্রাণভয়ে পলায়ন করিল। প্রথম ্নপোলিয়ান সমবেত ইউরোপকর্তৃক ্রাধীপে ভাড়িত হইয়া পুনরায় সমবেত ইউরোপকে পরাজয় করিবার নিমিত্ত এল্বলীপ প্রিভাগে করিয়া সম্রান্ল ্রজালিত করিল। সিরাজ এবং নেপো-লিয়ান উভয়েই আক্ষালনকারী। কিন্ত সরাজের আকালন শেষে ফকিরীতে প্রিণত হটল। জাবার মনে কর সেই কুক্লেত্রের মহাসমর চলিতেছে। আজ गद्व छक् क्षांगाहायाँ को द्वरमनात अधि-নায়ক। পাগুবদিগের আবার শ্রের নাই। বুঝি আজিকার যুদ্ধেই পাওবপক্ষ বিনাশ-शाथ इस । बनत्रव छिति देय, अध्यामा **१७ २३ ब्राइ । क्षानाहार्यात्र अनत्र वा-**ণিত হইয়া উঠিল। তিনি মনে করি-্লন আর যুদ্ধের প্রয়োজন নাই। কিছ <sup>ক্থাটা</sup> ঠিক্ কি না **? তিনি** সত্যপ্রিয় ্শুপুত্র যুধিষ্ঠিরকে জিজ্ঞাসা করিলেন। ধ্যাপুত্রের ধর্মনিষ্ঠা 'ইভি—গরুডে' <sup>শরিণত হইল। শঙ্গাচার্য্য শঙ্গা পরি-</sup>

ত্যাগ করিয়া দাঁড়াইলেন। তার পর याहा इहेन ভाরতবাদী এবং ভারতায়-রাগী মাত্রেই জানেন। কি ভয়ানক আত্মহতা। যে মহাত্মা কখনও প্রবঞ্চনার কণা কহেন নাই, যিনি সভারাজ্যের অধীশ্ব বলিয়া পরিচিত, যিনি সত্য এবং ঐশর্যোর মধ্যে সভাকেই অক্যানিধি বলিয়া আদর করিয়া আসিয়াছেন, তিনিই কি না আজ চিরসংস্কার দূবে নিকেপ করিয়া ঐশ্বর্গোর লোভে সত্য-সংহার করিলেন! একেই বলে প্রকৃত আয়ু-হত্যা,—আত্মহত্যা দ্রোণের নহে যুধি-ষ্ঠিরের—একেই বলে বাহুশক্তিরদারা অহুশাসিত হওয়া—বাহাশক্তির্বারা নি-ধন প্রাপ্তি। নাটককার এই প্রকার আত্মহত্যা নিবারণ করেন। এমনস্থলে আত্মহত্যা না দেখাইয়া নাটককার আত্ম-रगीतव (मथारेवा थाटकन; व्याचात भना-জয় না দেখাইরা বিজয় দেখান। আবার নেই ভীষণ সমরক্ষেত্র মনে কর। ভার-তের দান্রাজ্য লইয়া ঘোর যুদ্ধ হইতেছে। विनि• त्मरे यूत्र अशी इरेतन, छिनि ভারতে রাজচক্রবন্তী হইবেন; যিনি সেই যুদ্ধে বিজিত হইবেন তিনি যদি বাঁচিয়া থাকেন ভ পথের ভিথারী হইযা থাকি-বেন। ব্যাপার বড় সহজ নয়; উদ্দেশ্যও বড় কুদ্র নয়—হয় রাজ্যভোগ, না্হয় মৃষ্টিভিক্ষা। ভরানক সমস্যা! এই সমস্যায় পড়িয়া কার মন ফাবিচলিত থাকে ? একটি অক্ষর উচ্চারণ করিলে রাজ্যভোগ হয়; বারবৎসর বনবাস

নিশ্বত হওয়া যায়; বংসরবাণী অজ্ঞাত-বাসেকী যন্ত্রণভোগ সার্থক হয়; সতী-সাধ্বী কুললক্ষ্মীর অপমানের প্রতি-শোধ হয়। ই কিন্তু সেই অক্ষরটি উচ্চারণ করিলে সভ্যের বিপর্যায় ঘটে। আর একটি অকর উচ্চারণ করিলে রাজালাভ ना इहेना भरवत छिथाती इहेर हत : বারবৎসর বনবাগ [চিরবনবাসে পরিণত इम् : वरमत्रवांशिनी यञ्चण खीवनवाा-निभी यञ्जन। इहेन्रा मांड्रात्तः; कर्यान्त्रभागात অস্থ অপ্যান কুলের কল্ক হইয়া থাকে। কিন্তু এই অক্ষরট উচ্চারণ করিলে সভাের জয় হয়, এবং সভা-নিষ্ঠার পরাকাষ্ঠা দেখান হয়। সভাপ্রিয় ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির কি করিলেন ? না না বলিয়া হাঁ বলিলেন ৷ আর অমনি সমস্ত জগতের লোক ক্ষুত্তক্ষণয়ে বলিয়া উঠিল -- ना, वि धर्माशृख यूधिष्ठितत्र नााय वना হইল না, এবার যুধিষ্ঠিরের যুগিষ্ঠিরত विनक्ट इहेल। किन्दु यूपिछित यमि ताचा-লোভ ভাগে করিয়া, বনবাস বিশ্বত হ্ইয়া, অজ্ঞাতবাসের যন্ত্রণায় দৃক্পাত না করিয়া, ভক্তিমতী সহধর্মিণীর অপ-मान इत्रां छाञ्चत नुकारेगा वाशिया, কেবল সভা এবং গর্মের মুখ চাহিয়া 'না' বলিভেন, ভাছা হইলেই বা কি হইত ! তাহা হইলে কি সমস্ত অগৎ महत्रम् दुर्गहात वागरमा कतिल ना, **बदः (मक्क् बाछ कि छाहात्र कार्यात्र वी**-রত দেখিরা জগতের অভিতার ধর্মবীর বলিয়া ভাষার পূজা করিছেন না ? ভাষা

হটলে আমরা কি সমন্ত মহাভারতের क्षपत्रहातिनी व्याशासिका जुल्ह्दवादम मृदत নিকেপ করিয়া ওধু এই বীরত্বপূর্ণ না' শক্টী লইয়া মাতিয়া থাকিতাম মাণ তাহা হইলে কি এই একাক্রনির্দিত 'না' শব্দে আমরা সহস্র আগায়িকার" ননোহারিত অমুভব করিতাম না ? কিছে কেনই বা করিভাম ? করিভাম, ভাহার কারণ এই। যুধিষ্ঠিরকে সভানিষ্ঠ ধর্মপুত্র वित्रा खानि, धवर मिथश आगिशहि; এবং তাই বলিয়াই ভাঁহাকে পূজা করিয়া আসিয়াছি। এখন দেখি সেই সভ্যনিষ্ঠা ঘোর বিপদগ্ত। এখন দেখি সেই সত্যনিষ্ঠার ভয়ানক পরীকা উপস্থিত। এখন দেখি 'একদিকে সভানিষ্ঠা এবং गर्नगान, चात এकनित्क এकिमाञ নিথ্যাকথা, কিন্তু সমাগরা পৃথিবীর আধি-পতা, এবং হৃদয়ভেদী অপমানের প্রতি-শোধ। কি ভয়ানক পরীক্ষা। কি ভয়ানক হৃদয়যুদ্ধ! মনে করিলে শুন্তিত হইতে হয়, ভাবিয়া দিশাহারা হইতে হয়। এ পরীকায় কয়জন উত্তীর্ণ হইতে शास्त्र, ज यूष्क क्यब्रानत ब्यगां ट्या ? কিন্তু যদি দেখি ধর্মপুত্র যুক্তির সদাগরা পৃথিবীর আধিপতা ভুচ্ছ জ্ঞান করিয়া, একেবারে ধর্ম এবং সর্কানাশকে আলিগন मिटिएहन, **७**थन कि यान इत्र मा (य মর্ত্তোই স্বর্গরাজ্য উদ্ভাগিত হইরাছে? তপন কি উন্নতমন আরো উন্নত হয় না? তথ্য কি মনুবাঞ্জুভিকে দেবপ্রস্তৃতি-(बार्ष क्षत्र काह्नारम क्षेत्र बहेता केटक

🖢 এবং দে আহলাদই বা কিরকম াদ ? গভীর, নির্মাল, উৎসাহপূর্ণ, াদায়ী, শক্তিসঞ্জী, আত্মার গৌরব हिमावृक्षिकाती। महत्र बाद्रत्या-র্ণীস পড়িলে যে আহলাদ হয় সে बाह्नाम अ गाह्नारमत मिरक अ यात्र मा, এ আহলাদের শতাংশের একাংশ-পরি-াণ্ড হয় না। এত আহলাদ কেন ায় ? না ধর্ম বিপদ্গান্ত হইয়া আপন [হিমা রকা করিল বলিয়া। মহাকবি ্সক্সণীয়রের একটি চরিত্র বৃঝিয়া দেখ। श्रावक वामानियत উপকারার্থে উদার-চতা এণ্টোনিয় সাইলকের নিকট টাকা । 🕳 করিয়া একথানি খত লিথিয়া রলেন। ভাহাতে এইরূপ অস্থীকার धिलन (य. यपि छिनमारमत मरभा [मगरिक টाक। ल<sup>'</sup><८भाव कतिरक ना াারেন তবে স্থিলক তাঁহার শরীর वेटक कर्मामय गाःग कार्षियां लहेरान । ণ্টোনির জানিতেন যে, সেই সমরের ধ্যে তাঁহার বাণিজাপোতগুলি ধনপূর্ণ ইয়া ফিরিয়া আমাসিবে 🚉 ভিনি ক্লেশে টাকা পরিশোধ করিয়া প্রাণ-কা করিতে পারিবেন। কিন্ত ঘটিল १ निक्रिणिङ সময়ের মধ্যে বাণিকা-শত ফিরিল না। এবং নিষ্ঠুর সাইলক দীকত মাংস্থত পাইবার প্রার্থনায় জ্বারে অভিযোগ করিল। তথন উন্নত্যনা উদার-<sub>।</sub>इहेन। পরত্রধকাতর, পরোপকারী कि कतिरानन? ठिनि उपन

বে অবস্থায় পড়িয়াছেন ভাষ্কাতে মহোঁরত মনও অবনত হইয়া পড়ে; উদার চিত্তু সক্ষ্চিত হইয়া থায়; পরতঃপকাতরতা নিজহঃপকাতরতায় বিলুপ্ত হয়; হৃদয় ফাটিয়া যায়; মন কেলুবর্জ্জিত গ্রহের আয় অপরিচিত পথে ছুটিয়া বেড়ায়। উছার সেই বিপদসক্ষ অবস্থা দেখিয়া স্বয়ং বিচারপতিই শোকসংক্ষ্ক হইয়া উঠিলেন। তাঁহার বন্ধ্গণ, যাঁহাদের উপকারার্থ তিনি আজ মৃত্যুমুপে আদিয়া দাড়াইয়াছেন, তাঁহারা তাঁহার নিষ্ঠুব্ থাণদাতাব চরণ ধবিয়া করুণা ভিক্ষা করিতেছেন। কিন্তু তিনি কি করিলেন প্রতিনি স্বিরচিত্তে দৃঢ়তাপূর্ণ অন্তঃকরণে বিচারপতিকে বলিলেন—

"I have heard,
Your grace hath ta'en great pains
to qualify

His rigorous course: but since he stands obdurate,

And that no lawful means can carry me

Out of his envy's reach, I do oppose

My patience to his fury; and am arm'd To suffer with a quietness of spirit, The very tyranny and rage of his." এই কি সেই উত্মৰ্থাশালী, স্থাশ্যাশালী, প্ৰিয়বজুবেষ্টিত, সন্মিতমুণ, প্ৰেম-পূৰ্ব এন্টোনিয় ? তাঁহার কথা ত্ৰিয়া

क क्रांश्टे त्यांध इत्र। किन्नु बाद्धविक আজ তিনি কি ? বাস্তবিক আম তিনি পথের ভিথারী: আর তাঁহার चकुन जैस्पी चल्च पृष्ट जैस्पीत नात শূন্যে বিলীন হইয়া গিয়াছে; আজ তিনি তাঁহার প্রফুলভাময়, করণাজ্যোভিবিভ যিত, জীতিপূর্ণ, হাসাময় গৃহ হটতে তা-ভিত হইরা বিচারালয়ে দাড়াইয়া মৃত্যুর আজা প্রতীকা করিতেছেন। তবুও ওঁাহার এই तक्य कथा ? পाठक ! कृति गारारे मत्न कत, जामि এই দেবতুলা, উন্তমনা विक्ताज्ञ मध्या मान कतिए भाति না-- আমি তাঁহাকে দেবতা মনে করি! সামান্য মহুষ্য হইলে আজিকার বিপদে কি তাঁহাকে পরোপকারত্রতে দুঢ়ব্রতী इट्डेया कीवनविमर्कन कतिवात निभिन्छ বদ্ধপরিকর দেখিতাম, না আপনংকে আপনি ভূলিয়া, জন্মাবচ্ছিয় সংস্কার হারা-ইয়া, উন্তম্ন কুঞ্চিত করিয়া,জীবনলাল-সায় ধুলাবলুঞ্জিত হইতে দেখিতাম? পাঠক! ইহাকেই প্রকৃত নাটকরহ্যা বলে। প্রকৃত নাউক্কার ধর্মের অব-তারণা করেন ; তাহার শক্তি, সৌন্দর্য্য, गर्य नकनरे शांठकरक मरनाराहिशी जुलिका पित्रा जाँकिया जाँकिया (प्रथान; সেই বিমুগ্ধকর চিত্তেরদ্বারা পাঠকের মন মাতাইয়া তুলেন; তুলিয়া আবার त्महे विक्रीित जीवनासकात नित्मन करत्रन ; देश अक्षकाद्यत अगनि खन दय তাহার মধ্যে ধর্মের মুগ স্বভাবতই মলিন इरेग्ना यारेवात मञ्चावना, मालि विनष्ठे

হইবার সম্ভাবনা, মহত্ত্বীনত্ত্ব পরিণ্ড হইবার সম্ভারনা। এই ছোর অবস্থা-বিশর্ষায় দেখিয়া পাঠকের মন আকুলিত হইয়। উঠে ; প্রিয়বস্তর শোচনীয় অবস্থা দেশিয়া পাঠকের মন যন্ত্রণাময় হইয়া উঠে; ধর্ম নিজ মহত্ব রকা করিতে বুঝি বা অথারগ হয় এই আশস্বায় পাঠকের হাদ্য বিলোড়িত হইতে থাকে। ক্রেমে অন্ধকাব সরিতে পাকে: দেখা যায় य धया द्याटिः मलिन इम्र नारे, यमन উজ্জ্বল ছিল ভেমনি উজ্জল আছে: বাহাত্রণং অন্তর্জগতে চিহ্নমাত্র অন্ধিত করিতে পারে নাই: স্বার্থজ্ঞান তুলিতে পারে নাই , নিঃস্বার্থ তেজোম্ম ধর্ম নিঃস্বার্থ তেজুোনরই রহিরাছে। তখন পাঠকের মন মহুষ্যের মহুষ্যহ ব্ঝিয়া বৰ্জিতবল হয় এবং নির্মাল,পবিজ্ঞা, স্বৰ্গীয় আনন্দজ্যোতিতে ভাগিতে থাকে এবং হাসিতে থাকে। একেই আমি वित नांठेरकत नांठेकच। गकन नांठे-(कत कथा विलिट्डिंছ ना। नाउँकत শ্রেণীবিশেষের কথা বলিতেছি। সেক্র-শীয়রের Merchant of Venice এবং কালিদাসের অভিজ্ঞানশকুম্বল এই শ্রেণীর অন্তর্গত। এখন অভিজ্ঞানশকুস্তলের নাটকত কোথার দেখা যাউক।

নাটকখানির নাম সত্ত্বে আমার মতে অভিজ্ঞানশকুত্তল একখানি নারকপ্রধান নাটক। শকুত্তলা বড় কম নন; কিছ কুমন্তই অভিজ্ঞানশকুত্তলের প্রধান চরিত্র। দেখা যাউক এই কুমন্ত কে। कान कि मञ्द्यात मन ध्वः श्रमश्र ৰ্ঝিতে হইলে অগ্রে তাহার শরীরথানি वित्रा (पिथिटिक इता। भन धवः मंत्रीत, এ ছুইয়ে অতি নিকটসম্বন্ধ। চিত্র শরীরে আঁকা থাকে। তাধিক শ্ব যাতার যে রক্ম মান্সিক ভাব এবং ক্রচি ভাহার শারীরিক কার্যাসকলও তদমুবায়ী হটয়া থাকে। নির্জনচিন্তাপ্রিয়, তাহার দেহেব স্থির, ক্লিষ্ট, এবং সৃক্ষতিত ভাব হইয়া থাকে। य वाकि উनामशूर्व धवः कारीक्षित्र তাহার দেহের সদীব, চঞ্চল ঈষত্রা, এবং বলিষ্ঠ ভাব হইয়া পাকে। বে ৰাক্তি বিলাসপ্রিয় এবং ইন্তিয়সেবাল-রক্ত তাহার দেহের কোমল, অসহিফু এবং আলুলায়িত ভাব হটয়। থাকে। कालिमान इश्वछत्क हेलियनामाभीन क तिया (एशाहेशाएक । किस (मर्च iscon न मक्त मक्त छाँहार भंतीरवर अनर भाती-রিক কার্যামুরাগেরও একথানি চিতা আমাদিগকে দিয়াছেন। শ্বিভীয় অস্কে চুম্মন্তকে দেখিয়া তাঁহার সেনাপতি মনে মনে ভাবিতেছেন--

অনবরত ধমুর্জ্জ্যাক্ষালনজূরকর্মা রবিকিরনসহিষ্ণু: স্বেদলেশৈরভিন্ন:। অপচিতমপি গাত্রং ব্যায়ক্ত্রাদলক্ষ্যং গিরিচর ইব নাগঃ প্রাণসারং বিভর্তি॥

হ্মত রাজা—ভারতের অতুলমহিনা-প্র চক্রবংশীয় রাজাগণেব মধ্যে এক ব প্রথাত্তনামারাজা। তিনি রজগর্ভা সুরতভূমির অতুল ঐপর্গের অ্ধীশার।

वैभवाञ्चल विवागतानि मत्न कतित्वहै তাঁহার হইতে পারে: কিন্তু তিনি বিলাস-বিদেয়ী। তিনি বীবোচিতকর্মানিরত। তিনি শারীরিক স্থকে তুচ্ছ জ্ঞান ক-রিয়া জ্যাসম্পর ধমুকহন্তে প্রচণ্ড রবি-কিরণে বীরের নাায় বিচরণ করিয়া থাকেন। বিলাস্মগ্রের ন্যায় তাঁহার দেছ ষীবনপ্রভাহীন শিথিলগ্রন্থি নয়। গিরি-চর হন্তীর ন্যায়ু সে দেহ কেবলমাত্র বলবাঞ্চক। এই ছবিখানি দেখিয়া কে বলিতে পারে থৈ, চিত্রিত ব্যক্তি অসার বিলাসপ্রিন্ন বা ইন্তিয়পরতন্ত্র। এ কি একজন জিতে দ্রিয় পুরুষকারপূর্ণ পুরুষের চবি নয় ? ভাবার ভাধু ুতা নয়। যথন সেনাপতি হুশ্বস্তকে দেখিয়া মনে মনে তাঁহার শারীরিক বীরভাবের এইরূপ প্রদংগা করিতেছেন, তখন মানসিক অবস্থা কি ! শকুন্তলারত্ন দেনিয়া তথন তাঁহার মন ব্যাকুল হইয়া উঠি-ग्राष्ट्र। छिनि गर्यनारे छाविष्ट्राञ्च. সেই পবিতা রত্ন ভাঁহার হইবে কি না। विषुषक आमामिशक विनशा मिलान (य. ভিনি পূর্ববাতে নিমেয্যাত নিদ্রালাভ করেন নাই। এবং আমরাও তাঁছাকে মুহুর্ত্তালে শ্রনগৃহ ভাগে করিয়া আদি-বার সময় দেখিয়াছি, তিনি মনে মনে তোলাপাড়া করিতেছেন—এবং আদিয়া थिय विष्यदकत नागिमारि अभिशंख জনিতেছেন না। আবার সেই মুহুর্তেই ত দেনাপতি আসিলেন; কিন্তু ভিনি ত এই বিষম সদয়বাথার চিক্স ত্রও তুল-

ভের শ্রীরে বা মুধাবয়বে দেখিতে পাইলেন না। জবেত হয়স্ভধুকর্ম বীর নন। তবে ত তিনি কর্মবীর এবং চিত্তবীর তুইই। তিনি শে শুধু প্রচণ্ড রবিকিরণ সহ্ করিতে পারেন তা নর; চিত্ত্বংয্মও বৈতাহার তেমনি ভাভাস্ত **এবং স্বেচ্ছাধীন।** ফলফ: কালিদাস এই অদ্ভুত চিত্তদংযদের চিত্র অতিশয় জাজ্জলামান করিয়া তুলিয়াছেন। পাঠক! `আইস, একবার মহর্বি কণের আশ্রমে প্রবেশ করিয়া দেখি। শকুস্তলা, প্রিয় ম্বদা এবং বৈদ্যুত্র আশ্রমের তরুলভায় জলদেচন করিয়া বেড়াইতেচেন এবং কত কি কথা কহিতেছেন। বুক্ষাস্তবালে থাকিয়া দেখিতেছেন এবং মুগ্ধ হইতেছেন। সর্বলোকপ্রিয় ভ্রমবটী শকুস্তলাকে বাতিবাস্ত করিয়া তুলিয়াছে দেখিয়া, তুম্মস্ত মনে মনে ভাবিতেছেন-

মতোঘতঃ ষট্চরণে'হ্ছিবর্ত্তে ততন্তঃ প্রেবিতবামলোচনা। বিবর্তিতন্ত্রিয়মদা শিক্তে ভয়াদকামাহপি হি দৃষ্টিবিভ্রমম্ । চলাপাঙ্গাং দৃষ্টিং স্পুশ্সি বহুংশ। বেপথু-

মতীং রহস্তাপ্যায়ীব স্থনসি মৃত কর্ণস্তিকচরঃ। করং বাধুষ্ভ্যাঃ পিবসি রতিসর্বস্থ মধরং নমুং তত্ত্বাস্থেষামধুকর হতাত্তং খলু কৃতী॥

এ বড় সহল ভাব নয়। যে ভাবে ভোর হইটো সামুষ-চিত্তসংগদে প্রায়ই বিফ্ল্যত্ন হয়, এ সেই ভাব। ছয়স্ত এখন সেই ভাবে ভোর। কিন্তু এখনি ভাত্তাকে সেই স্থীত্তার সংশ্বীন হইতে হইল, শুধু তাও নয়। তাঁদের ক্ষধা-সিক্ত সন্থোধে তাঁহাদের কাছে বসিতে হইল। এমন অবস্থায় পড়িলে দে রক্ম ভাব, ভরিয়া উঠে, না কমিয়া যায় ? প্রিয়মদা বলুক ত্মান্তের কি হইয়াছে—

''হলা অনস্থ কোণু ক্থু এসো ত্রব-গাহগন্তীরাকিদী মহরং আলবস্থো পছতদাকিগন্ধং বিতথা-রেদি।

ই লিয় গন্ত পাক্তির কি এই বকম প্রভাময় পান্ধীর্যাপরিপূর্ণ মুগ-ভাব হইয়া थात्क ? धना इन्नाटक्टत हिन्द्र मध्यम, धना তাঁহার স্বাত্মজয় ! এখনও কিন্তু দেখি-বার বাঁকি আছে। পাঠক। অভিজান শকুন্তলের ভৃতীয় অঙ্কটি মনে কর। শকুন্তলা অসহ জালায় জলিয়া যাইতে-ছেন। তিনি বলিতেছেন যে সেই মহাপুরুষকে না পাইলে আমি জীবনান্ত क्वित। हुम्रास्त्र व्यनम्थूर्गभारत এই मकन (पिशिट्टिंग जन्द अनिट्डिंग, जि যাতনার পর মিলন হইল। কিন্তু মিল-নের স্থপান্ধাদ করিবার উদ্যেমাত্রে গুক্তনস্মাধ্যাশকায় শকুন্তলাকে স্থানা-স্থারিত হউতে হইল। তথন গুলাস্ভের কি অবস্থা! তপন তিনি প্ৰছলিতান্তঃ-করণে প্রতিনিঃখাসে অনল খাসিয়া ফেলিতেছেন। সহসা রাক্ষস্পীড়িত তাপসগণের ভয়ার্দ্ররব শ্রবণ করিলেন। শ্রবণ করিয়াই<del>—</del>"ভো√ভা ভূপন্বিনো गारेड्ड गारेड्ड अवगश्गागड धर-" এই আখাস্বাক্য ভিরগন্তীরস্বরে উচ্চারণ

করিতে করিতে রাক্ষসবধে নিজ্ঞান্ত হই-লেন। যেন শকুন্তলার নামও গুনেন নাই! যেন জাঁহার কিছুই হয় নাই! আশ্চর্যা পুরুষ!

এই অন্তুত ঘটনাটি কিঞ্চিং বিবেচনা করিয়া দেখিলে তুমন্তচরিতের প্রশন্ত-ভিত্তি, অনন্ত বিস্তার এবং অনুস্ত গভী-রতা বুঝিতে পারা যায়। তথন বুঝিতে পারা যায় যে ধর্মাতুরাগ এবং কর্তবা-জানই সেই অলৌকিক চরিত্রের মূল-ভিত্তি এবং প্রাধান উপাদান। ব্বিতে পারা যায় যে ধর্মপালন এবং কর্ত্তবাসাধনের কাছে ত্রুত্তের বিবেচনার আব কিছুই কিছু নয়—তিনি নিজেও কিছু নয়, তাঁহার শকুস্তলাও কিছু নয়, তাঁহার নিজের কিছুই কিছু নয়। তাঁহার ধর্ম-ভাব তাঁহার প্রতিনিঃখাসে স্থমিষ্ট মৃত্যন্দ মলযুবায়ুর ন্যায় নির্গত হয়। ৠষিগণের সন্তোষার্থ মুগা**মুদরণে নিবুত্ত হ**ইয়া তুল্লন্ত মহর্ষি কণের পবিত্র **আশ্রমে অবেশ** করি-তেছেন, এমন সময়ে তাঁহার দক্ষিণবাছ শিকিত হইল। তিনি বলিয়া উঠিলেন—

"লরে শাস্তমিদমাশ্রমপদং ক্রুইতি চ বাছ: কুতঃ ফলমিহাস্মাকং।" ভাগবা ভবিতব্যানাং ভবস্তি দ্বারাবি সক্রে।"

অয়ে শান্ত মিদমাশ্রনপদং—তিনটি কি
চারিটি বই কথা নয়; কিন্ত শুনিলে
প্রাণটি জুড়াইরা যায়! মনে হয় যেন
সুমারাই সেই শান্তিরাজো প্রবেশ করি।
মনে হয় যেন সেই পরিত্রশান্তিময়

তপসাশ্রম এবং ত্মছের প্রশন্ত মন একই
পদার্থ। জাশ্রম প্রবেশ করিরাই স্থীক্রমকে দেখিলেন—কাঁছারা ভাপসোপযোগী-বন্ধল-পরিধানা—মণিমুক্তা-বিহীনা
— মহামূল্যবন্ধ এবং জ্বজরাগবর্জিতা।
তম্মস্ত রাজা; ভারতের মণিমাণিকা সকলই তাঁহার; তাঁহার জ্বন্তংপুর মণিমাণিকার জ্যোভিতে জ্যোতির্ময়। তিনি
ক্রমর মনে করিলেন, এ ঠিক্ হয়
নাই। মনে করিয়াই জাবার ভাবি-

সরসিজসমুবিদ্ধং শৈবলেনাপি রমাং
মলিনমপি হিমাংশোর্লক্স লক্ষ্মীংতনোতি।
ইয়মধিকমনোজ্ঞা বক্তলেনাপি তথী
কিমিব হি মধুবাণাং ম ওনং নাকুতীনাং॥
কঠিনমপি মৃগাক্ষ্যা বক্তলং কান্তরূপং
ন মনসি কচিভঙ্গং অল্লমপাদেধাতি।
বিক্রমবসিজায়াঃ স্তোকনিমুক্তকণ্ঠং
নিজমিব কমলিন্যাঃ কর্কশং বৃস্তজালং॥

কি মনোহর ভাব ! কিবা স্ক্রচিসঙ্গত কলনা ! কি ন্যায়পরায়ণ হৃদয় ! সৌল্বর্যা নিজেই স্ক্রের—তাহার আবার পরিচ্ছদ পারিপাট্য কি ? এ কথা কয়জনের মুথে শুনা যায় ? এ কথা যে না বলে, সে সৌল্বর্যার অবমাননা করে। এ কথা যে বলে সে সৌল্বর্যার মাহা প্রাপা তাহা সৌল্ব্যাকে দেয়; ভাহারই ক্রচি যথার্থ ধর্ম্মূলক; সেই সৌল্ব্যার স্ক্রের রূপ বাবহার ক্রিতে সক্রম হয়্ম হয়্ম একজন হিল্রালা; হিল্পারে তাহার অগাধ ভক্তি। আশ্রমপ্রবেশকালে তাঁহার দক্ষিণবাহ্ ক্রিকেত হইল এবং

চিনি হিন্দু বলিয়া ভাহাতে ভবিতবা-ভাব কথা মনে করিলেন। পরকণেই য'হ। দেখিলেন তাহাতে তাঁহার মতন শাস্তজ্যের মনে সহচেই এমন ভাষ জন্মিতে পাবে যে বুঝি সেই ভবিতবা-তার স্ত্রণাত হইতেছে। আবার ভধু (मथा नय । याहा खनित्नन छाहा । तरहे ভবিতবাতার প্রতিপোষক। যাহা গুনি-লেন তাহাতে বুঝিলেন বে শকুন্তলা छशित्रगीव गाप्त काल काष्ठे। हेरवन ना। তখন মনোধর্ম তাহার ধর্মাদংস্কারকে দৃঢ়ীভূত কবিয়া তুলিল এবং ধর্মাসংস্কার মনোধর্মকে প্রশ্র দিতে বাগিল। তথন তাঁহার স্পৃহা জিমিয়া ক্রমে বলবভী इहेट गांशिल। किंद्ध देन म्लुहा ज्यन छ মিলনস্পৃহারূপে পরিক্ট হয় নাই। কে-वल भोनाग् त्वाद्ध निविच बिशादि । হুম্মন্ত ভাবিকেছেন---

"অবিতথ মাহ প্রিয়ম্বদা। তথাস্থ্যাঃ— অধর: কি দলররাগঃ কোমলবিটপান্ত্ কারিনে? বাহু।

কুস্থমমিৰ লোভনীয়ং যৌবনমঙ্গেষ্ সরদ্ধন্।।

ভার গরেই গুনিবেন শকুন্তলা চুত-বুক্ষাপ্রিতা কুস্থমিতা সহকারগতাটীকে দেখিয়া বলিতেছেন—

হলা র্মণীও কৃথু কালো ইমসস পাদ-বমিছ্ন্দ্র রদিঅরোসফ্তো জেণ পব কৃষ্ণাজোবৈণা ণোমালিমা অসংপি বছ ফলদাএ উভাভোগকৃথুমো সহযারো।

क्रमदत क्रमदा गिलियां श्रान: क्रिड কচিতে মিলিয়া গেল; ভাবে ভাবে মিলিয়া গেল। কিন্তু একটি বিষয়ে মিল হইল না। শকুন্তলা সহকারণভাটীর আশ্রমলাভের কথা বলিয়াছিলেন; গুলাস্ত मक्छलात महत्या (गति এখনও বলেন, প্রিয়ম্বদা সেই অভাবটি পুবাইরা দিল। হুমান্ত বুঝিলেন যে শকুন্তলা অভিলাধ বতী হইয়াছেন। কিন্তু তিনি আহলানে আটথানা না হইয়া চিন্তিত হইয়া প্রি লেন। ভাবিতে লাগিলেন বুঝি শকুন্তলা কণ্ত্হিতা--বালণী, ভাঁহার সহিত শকু-खनात मिनन इटेट शातिर्वक ना। যেমন অভিলাষ বলবতী হইয়া উঠিব অমনি ধার্নিকের ধর্মচিন্তা উদয় হইল। এইথানে স্থচতুর মহাকবি জগদ্বিখ্যাত ভ্রমর-তাড়না ঘটনাটী সংযোজনা করি লেন। সেঘটনাটীর অর্থ-শারীরিক মিলন, শারীরিক সম্ভোগ। অভিলাষীর মনকে মাতাইয়া তুলিতে হইলে ইহার অপেকা ইফচিসঙ্গত অগচ বলবৎ কে भन अवन्यम कर्ता यात्र कि ना मर्लिश তুম্বান্তের বিচলিত মন আরো বিচলিত হটরা উঠিল। কিন্তু সেই সঙ্গে সংগ শকুস্তবার জাতি এবং উৎপত্তিবিষয়ক मत्मह चारता वनवर इंडेता उठिएउए বোধ হয় তুম্বন্তের ধর্মানুরাগ -

<sup>\*</sup> অসুরাগোৎপীদক বস্তু দেখিয়া মনে অসুরাগের সঞ্চার হওয়া অর্থে মনোধ্য শক্ষ ব্যবহার কবিলাম।

াসংযম শক্তি কম হইলে সেই দণ্ডেই

সিবিত্র তপস্যাশ্রম কলুমিত হইরা বাইত।
তার পার সকলের একত্রে বসিরা কথোপকথন। তথন ছম্মন্ত শক্তুলার বৃত্তান্ত
শুনিরা সম্পূর্ণ স্বাধীনতা লাভ করিয়াছেন। প্রিয়ম্বদা তাঁহাকে কণ্বে অভিপ্রায় জানাইরাছেন। জানিরা তাঁহার
স্বায়ের ভার মোচন হইরা গিরাছে।
তিনি তপন সাহস পাইরাছেন; তাঁহার
ক্রম্য ব্রিয়াছে যে—

আশদ্ধনে যদ্যিং তদিদং স্পৃশক্ষমং রক্ষম।

এমন সময় প্রিয়দদার কথার শকুন্তলা
রাগ করিয়া, 'সব বলিয়া দিব' বলিয়া
গৌতমীর কাছে যাইতে উদ্যত হইলেম।
ছ্মপ্তের হৃদয় আকুলিত হইয়া শকুন্তলাকে প্রতিনির্ত্ত করিবে বলিয়া যেন
কিঞ্জিং অগ্রসর হইয়াই তথনি আবার
সক্তিত হইয়া গেল। তিনি মনে মনে
ভাবিলেন—

অংগ চেষ্ট: মুক্রপিণী কানিজনচিত্তর্তিঃ।
সহং হি।
সন্ধান্যমূনিতনয়াং সহনা বিনয়েন

অস্থান্যস্থান্তন্ধাং সহনা ।বন্ধেন বারিতপ্রসর:।

সংখানাদচলরপি গাজেব পুন: প্রভি-নির্ভ:।

ছখন্ত শক্সলার মন ব্রিয়া থাকুন আর নাই থাকুন, শক্সলার উপর এ গর্মান্ত তাঁহার কোন অধিকার জন্ম নাই। তিনি গ্যনোদ্যতা শক্সলাকে নিবৃত্ত করিবার কে ? যে রক্ষ ার্ডা ইইয়া গিয়াছে, তাহাতে শকু- স্থলাকে চক্টের আড়াল করিতে ইচ্ছা হয় না বটে, কেন না দেখিয়া শুনিয়া হলয় ভয়ানক আবেগবান্ হইয়া উঠি-য়াছে। কিন্তু সে হলয় উাহার; শকুস্ত-লার ত নয়। ছয়য়ৢ সূর্ববিগণসম্পান— ছয়য়ৢ প্রকৃত উন্নতননা—ছয়য়ৢ ধর্মবীর। ভাহার হৃদয়ের বলা ভাহারই হাতে। সেই হৃদয়ের অশিষ্ট উলাম সেই হৃদয়েই নিঃশেষিত হইয়া গেল! পানপেকে চ্ণ-টুক্ও থানল না। ধনা ছয়য়ৢ! ধন্য কালিদাস!

ভার পর নিদ্যকের সহিত কপা।
সেকালের বিদ্যক সেকালের রাজাদের
'ইয়ার'। রাজাদিগকে সর্ব্বদাই রাজঠাটে থাকিতে হইত; মনের কপা সকলের কাছে বলিতে পারিভেন না। কিন্তু
বিদ্যকের কাছে ঠাটভাট থাকিত না;
প্রোণের কথা প্রাণ ভরিয়া বলিতেন।
মাধবা ছয়ন্তকে যেন কিঞ্ছিৎ জ্ঞান দিবার
উদ্দেশ্যে বলিলেন—

ভো জুটুসা তবিষ্কি গ্রহা অবর্ত্থণীয়া তা কিং তাএ দিচ্চ আএ। অসনি ছম্মস্ত যেন বিষণরদংশিতের নাায় সম্মণীড়িত হইয়া বলিয়া উঠি-লোন—

ধিমুর্ণ ! নিবারিত নিমেষাভি নেঁত্রপংক্তিভিক্সমুগং। নবামিদ্কলাং লোক: কৈন ভারিবন পশ্যতি।।

ন চ পরিহার্যো বিস্তানি ত্রস্তুস্য মন: প্রবর্ততে।। ভার পর রাজা পূর্মদিনের সকল কথা মাধবাকে বলিলেন। বলিয়া জি-জ্ঞাসা করিলেন—বল দেখি, মাধনা, কি জ্ঞানা করিয়া সেই আশ্রমে যাই। মাধবা বলিলেন কেন, আসার প্রাপা ষঠাংশ চাই, এই বলিয়া যাও। ছন্ম ন্ত কড়গন্তীরক্তরে বলিয়া উঠিলেন— মূর্য! অন্যমেব ভাগধেয়মেতে তপ্রিনো মে নির্ম্বপত্তি যো রক্ষরাশীনপি বিহায়া

হ্ভিনন্যতে। পশ্য—
যত্তিষ্ঠতি বৰ্ণেভ্যোন্পাণাং ক্ষয়ি তন্ধনম্।
তপঃ বজ্ভাগনক্ষযাং দদভ্যারণ্যকা

হি নঃ॥

কি গভীর, কি ছব্জর ধর্মভাব ! কি

মনোহর ধর্মান্ত্রাগ ! যে শকুস্তনার

নিমিত্ত স্থার দক্ষ হইরা যাইতেছে,

সে শকুস্তলাও এই ধর্মান্ত্রাগের কাছে

কিছুই নয় ! শকুস্তলা যতই কেন প্রিয়

ইউন না, তা বলিয়া কি তাঁহার জনা
পবিত্র ধর্মের অবনাননা করিতে হই

বেক ? তা বলিয়া কি ধর্মকে প্রেমের

কুটলকৌশলে পরিণত করিয়া ত্বাস্পাদ

করিতে হইবেক ? বিদুষ্কের কাছেও এ
ক্থা বলিতে ছ্মান্তের স্থা হয় !

তার পর কয়েকজন তপদী আসিলা

কুশারকে রাজসকর্ত্ত আশ্রমণীভার স্
বাদ দিলেন। কুশার তাঁহানিগকে অভর

দান করিলা রথসজা করিবার আজ্ঞা

দিলেন; রপসজ্জিত হইন। এসন সময়ে

রাজধানী হইতে সাত্তাজা আসিয়া

উপস্থিত হইন। তাঁহারই কল্যাণ্থি

রাজ্যাতা ত্রত করিবেন, অতএব তীছ
ছাকে যাইতে হইবেক। ছ্মন্ত সন্ধটি
পড়িলেন। ঋবিগণও যেমন মাননীয়,
রাজ্যাতাও তেমনি মাননীয়া। "ইত
ক্তপত্মিনাং কার্যামিতো গুরুজনাজ্ঞা উভয়
মনভিক্রমণীয়ং।" তিনি কানিতেন মে
রাজ্যাতা মাধবাকে বরাবর পুজবং
গুলবাসেন। অতএব মেহ এবং ভক্তি
পূর্ণ মনে মাধবাকে রাজ্যাতার নিকট
পাঠাইয়া দিলেন। কবি একটি কৌশলে
তাঁহার আগ্যায়িকার একটি প্রধান উ
দেশা সাধন করিলেন এবং তাঁহার ছ্মন্ত
যে কাছারও প্রতি কর্ত্তবাবিমুগ নন,
তাহাও স্থলবর্তেণ দেখাইয়া দিলেন।

ছুম্মন্ত রাজা। কিন্তু কালিদাস কি তাহার রাজকার্যোর কথা কিছুই বলেন माहे। तम क्यां हिना झानित्न छ कि इरे काना इहेन ना। ठिनि मूनिश्रिकि সম্ভ্রম করিয়া থাকেন; পিতামতার স্থায় श्वक्रवात छानवात्मम अवः मणान कः রেন : তিনি চিন্তুদংযমে অমিতবল ; ধর্ম-मिवात्र এकाछाहिन्छ ; खानरत्र विश्वक्रमना ; नक्नारम धारीमरिक्रम: भारीतशानरन কন্তিসহিস্থ। কিন্তু তিনি রাজকার্যো কিরূপ ? কালিদাস তাহাও আমাদিগকে বলিয়া দিয়াছেন। কিন্ত যে প্রণালীতে বলিয়াছেন সেটি কি চমৎকার ! কঞ্পী পার্বেতায়ন,অক্ষুদ্রনামা মিবারমন্ত্রী ভাষাই भात गात्र, ताकमत्रकात्त्र थाकिया व्यक् इहेबाएकन। (य यष्टि (यो बरन (क वन তাঁহার উচ্চ পদনীর চিহ্নস্বরূপ

যষ্টি এখন তাঁহার অন্ধের নড়ী রা দাড়াইয়াছে। সে যষ্টির সাহায্য ীতিরেকে এখন তিনি পদশ্চালনে তিনি যে শুধু হুমুগুকে দেপি-তেছেন এমত নয়া ছম্মস্তের পিতা, পিতানহ হয় ত প্রপিতানছকেও দেখি য়াছেন। ছম্মত তাঁহার কাছে 'কালিকার ুছেলে' বই নয়। শার্স<sup>রি</sup>র প্রভৃতি রাজ-প্রাসাদে আসিয়া রাজদর্শনের প্রার্থনা कानाइयार्ह्म छनिया तुझ वहमनी कः কুকী ভাবিতেছেন,--বে প্রজাবৎসল নর-পতি রাজকার্যাকরত পরিশায় ২ইয়া **दर्गाव अदकानगाञ कतिरान,** आनि কেনন করিয়া ভাছাকে এখনি ঋষি-কুমারদিগের আগমনস্থাদ দিব। কি মেই ! পিতাও সন্তানের ক্লেশে এত চুব कांडबंडा ध्यकांभ करवन कि ना म-লেই। 'ছুমুন্তের প্রভাগালনকার্যার अध्यक्ष देशात अध्यक्ष स्वत्रशाशी आगान পাওয়া যাইতে পারে না। াকত কবি देशात व्यापका । अन्य शाही अभाग विश्वा (इन। वृक्ष कश्रुकी जकवादनाञ त्यशः কট হইয়া পরকণেই সুদৃঢ়চিতে বলিতে-ছেন—

''ষ্থবা কুতো বিশ্রামো লোকপালা-নাং।''

ছেলে' বলিয়া 'মাপ' করিবার লোক নহ।
তুমি যথন ত্মস্তকে এত ভালবাস, তথন
ত্মস্ত যথার্থই সমস্ত অগতের ভালবাসার
পাত্র এবং পৃথিবীর রাজাদিগের আনুর্শ্ব

ত্মন্ত রাজধানীতে প্রেত্যাগনন করিয়াতেন। শক্তথা ত্র্মানাকর্ত্ক শাপপ্রস্ত হটলেন। অবশিষ্ট আথ্যারিকাকে তৃই ভাগে বিভক্ত করিতে হটকেন। শাপো-চোরণ হটতে অঙ্কুরীয়ক প্নঃপ্রাপ্তি পর্যান্ত একভাগ; অঙ্কুরীয়ক প্নঃপ্রাপ্তি হইতে ত্মন্ত-শক্তলার প্নার্মালন পর্যান্ত ভার একভাগ। কি জন্য এইরাপ ভাগ করিতে হইল, বুঝাইতেছি।

इन्हें। ना विनिधाहित्न (य, इश्च छ अपछ নিদর্শনটি দেখিলে তাঁহার শকুতলাকে गत्न পড़ित, मछुवा गत्न পড़ित ना। শক্তলা মেই নিদর্শনাঙ্গুরীয়ক হারা-देश (यःनियान, 🌬 आरमन ना त्य হারটেয়াছেন। এ ঘটনার যে কি চমংকার অর্থ ভাহা পরে বলিব, এখন নয়। , অঙ্গুরীয়ক হারটেয়া শকুন্তলা তাহার পবিত্র বিশ্বমনোমুগ্ধকারী রূপরাশি লইয়া হ্মতের সমূবে দাড়াইলেন। भाठिक ! ভোমাকে এইথানে একবার त्मरे वक्रनश्तिषाना, क्ष्मिड्योवना, প্ৰিত্ৰয়না, লভামুগামুরাগিণী, আএম-বাসিনী তাপস্বালার ক্লগুৱাশি মনে করিতে হইবেক। যে রপরাশি দৈখিয়া ধর্মনীর ছমত্ত সেদিন ছনিবারশরবিদ্ধ হ্ইয়াছিলেন, সেই ক্লপরাশি একবার

মনে করিতে হইবেক। সেই রূপরাশি এখনও সেই ছ্মান্তের নয়ন মন বিমুগ্ধ করিতেছে।

"অয়ে অত্য

কেয়মবঋঠনবতী নাতিপরিকৃটশরীর-

नावना।

मर्पा जर्लाधनानाः किमनग्रमिव शाधु

পত্ৰগোম্।।"

তবে কেন তিনি এখন সেই রূপরাশি-मन्भन्ना भक्छनारक जन्भनीया वनिया প্রত্যাখ্যান করিতেছেন ? শাপপ্রভাবে তিনি শুকুন্তলাকে ভূলিয়া গিয়াছেন वरि ; कि इ रिय हक्क (मिनि भक्छ लारक দেখিয়া তাঁহার মনকে উল্লন্ত করিয়া-ছিল, আজও ত তাঁহার সেই চকু, সেই মন রহিয়াছে। তবে কেন আজ শকু-তাঁহার কাছে কৌশলকুটিলা অস্পৰ্শনীয়া কলক্ষিনী হইয়া দাঁডাই-য়াছেন ? কৈ, দেখানৈ আর আছে তাহারা ত অবিচলিতচিত্ত নয়। প্রতীহারী শকুস্তলার অবগুঠনমুক্ত রূপ-রাশি দেখিয়া ভাবিতেছে---ष्यत्या धन्माद्वक्थिता ভ টিলো ঈ निमः নাম স্থহোবণদং ইত্থি আর্ষণং

পেক্ষিত্ম কো অলো বিআরেদি।

হ্মন্তও সেই রূপরাশি দেখিয় মৃগ্ধ—

ইদম্পনতমেবংটুরূপমরিষ্টকান্তি
প্রথমপরিগৃহীতং স্যারবেত্যধাবমান্।

ভ্রমর ইন্দ্রিশান্তে কুল্মন্তন্ত্যারং
ন খলু স্পদি ভোকুং নাপি শক্ষোমি

মোকুণ্

তিনি সনে মনে অনেক ভাবিয়া দেখি-लन: किन्द डीहात मत्न हहेन ना त्य শকুন্তবা তাঁহার। তিনি শকুন্তলাকে গ্রহণ করিতে অস্বীকার করিলেন। তথন কোমলভাময়ী শকুন্তশা চরণদলিত ফ্লি-নীর নাায় বিষময় বাকো তাঁহাকে দংশন করিতে লাগিলেন; তথন অগ্নিফুলিঙ্গবৎ ঋষিকুমারদ্ব তাঁহার উপর শাপাগ্নি বর্ষণ कतिएक गांशित्वन। श्रीविद्याभागन (य কি ভয়ানক পদার্থ ছুম্মস্ত তাহা বিলক্ষণ জানেন। তিনি নিজেই সেদিন মাধ-ব্যকে বলিয়াছেন---শমপ্রধানেষু তপোবনেষু গূঢ়ং হি দাহাত্মক মস্তি তেজঃ। স্পূৰ্শা অপি স্থ্যকান্তা-স্থে হান্য তেৰোহভিভবাদ্হন্তি।।

আন্ধ সেই গৃঢ়নিহিতানল প্রজ্ঞানিত হইয়া তাঁহাকেই দয় করিতে আসিতেছে।
কিন্তু আন্ধ তিনি সে কোপানলকে ভয়
করিতেছেন না। কেন, তিনি কি আর
সে হয়ন্ত ননং তাঁহার চিরাভান্ত গুরুজনগভভীতিসম্রম সকলই কি বিলুপু হইয়া
গিয়াছে। তা নয়। সে সকলই তাঁহার
আছে; কিন্তু গুরুজন আন্ধ তাঁহাকে
খন্মের বিপর্যায় করিতে বলিতেছেন।
গুরুজন আন্ধ তাঁহাকে পরস্ত্রী গ্রহণ ক
রিতে অমুরোধ করিতেছেন। তিনি
ধর্মাবীর; তিনি ভাবিতেছেন, যেখানে
ধর্মের বিপর্যায় সেধানে ভ্বনমোহিনী
রসনীও ভুচ্ছ, অমিপ্রাভ মহা ঋষিও ভুচ্ছ।
কি ধর্মামুরাগ। কি চিত্তসংয্ম। আভুলা

রূপরাশি তাঁহার অন্থগ্রহাকাজনী। লইলে, কেহই তাঁহার কিছু করিতে পারে না, কেহই তাঁহাকৈ কিছু বলিতে পারে না। দ্যিতচিত্ত হইলে তিনিও লইতেন। প্রতীহারী যথার্থই বলিয়াছিল— কল্মো ধস্মাবেক্থিণো ভটিণো ঈদিসং নাম স্ক্রেপনদং

ইত্থিআর মণং পেক্থিস কো অশ্লো বিষারেদি।

হন্মন্তের প্রথম পরীক্ষা শেষ হইল।

সে পরীক্ষায় তিনি জন্মী হইলেন।

সেই জয়ে কালিদাসের ও জয়। কালিদাস ভারতের ব্রাহ্মণ। ভারতের ব্রাহ্মণ

ইইরা তিনি দেখাইলেন যে ধর্মের কাছে
ভারতের ঋষিতপস্থীও কিছু নয়! কালিদাস, তুমি ভারতের ব্রাহ্মণ নও—তুমি
জগতের ব্রাহ্মণ!

ত্মন্ত পুনরায় নিদর্শনাস্থ্রীয়কটা দেথিলেন। দেখিয়া তাঁহার সকল কথা মনে পড়িল। তথন আর একপ্রকার পরীক্ষা আরম্ভ হইল; কিন্তু এ পরীক্ষাও বড় সহজ পরীক্ষা নয়। শকুন্তলার কথা মনে হইরা তাঁহার মন অফ্রতাপে দগ্ধ হইতে লাগিল। যে রক্ষা নিষ্ঠুরভাবে তিনি শকুন্তলাকে প্রত্যাখান করিয়াকিন, তাহা মনে করিয়া, তাঁহার হৃদয় ফাটিয়া যাইতে লাগিল। তাঁহার জীবন যত্রণামর হইয়া উঠিল। দিবারাত্রির নধ্যে এক মুহুর্ভের জন্ত তাঁহার শান্তি লাই। তিনি সর্বলাই প্রজ্ঞানিত চুলীর ভায় অফ্রতাপানলে সন্তথ্য। তাঁহার

স্বাভাবিক আমোদ আহলাদ আর তাঁ-হাকে ভাল লাগে না। তিনি বসস্তোৎসব বন্ধ করিয়া দিয়াছেন। রাজভক্ত রাজমল-লাকাজ্জী কঞ্কীর স্থায় রাজকর্মাচারী-দিগের প্রতিও যেন ভুঅশ্রদাবান্হইয়া উঠিয়াছেন। এই সব দেখিয়া শুনিয়া বৃদ্ধ কঞ্কী যার তার কাছে বলিয়া বেড়াইতেছেন—

রমাং বেটি যথাপুরা প্রকৃতিভিন্ প্রতাহং দেব্যতে

শ্যোপান্তবিবর্ত্তনৈর্বিগময়ভূারিজ এব ক্ষপা:।

দাক্ষিণ্যেন দদাতি বাচম্চিতামন্তঃপুরে-ভাো যদা

গোত্রেষ্ স্থালিতস্তদা ভবতি চ ব্রীড়া-

বনশ্রশ্চিরস্॥

ভাবিয়া ভাবিয়া ছ্মস্তের শ্বীর ক্রশ
হইয়া পড়িয়াছে: তাঁহার গন্তীর প্রভান
ময় মৃথ শুকাইয়া গিয়াছে; তাঁহার
তীক্ষোজ্জল চক্ষু নিপ্রভ হইয়া পড়িয়াছে।
দেখিলে মনে হয় ছয়য় আর সে ছয়য়
নাই৽! সেই পবিত্র আশ্রমে ছয়য় যেমন
তাঁহার শকুন্তলার য়য়ণাদয় দেহথানি
দেখিয়া বলিয়াছিলেন, আল বৃদ্ধ কঞ্কী
ছয়য়েয়র অয়ভাপদয় দেহস্ত দেখিতে
দেখিতে প্রবৎসল শিতার আয় কাতর
মনে ঠিক তেমনি বলিতেছেন—
প্রভাগিদিট বিশেষমগুনবিধি বাুমপ্রেকাটে

व्यक्तानस्य । वरन्यमञ्जावास्य वामश्राद्याः

विवरकाक्षनस्मकरम्य वसम्भाषाः

পরক্তাধরঃ।

চিন্তাজাগবন প্রতাত্ত্রনার নতে জোপ্ত বৈরা
সংস্কারোরিপিতো মহামনিবিব ক্ষীনোহপি

নালফাতে গ

এই শোলনীয় অবস্থায় আ**জ** ছুমস্ত রাজোদানে গভীর চিতানিনা। বুদ कक्षी प्रकार हाराम, प्रकार बृत्यम। किंदु श्रांश পुक्तवश्रमंत छूर्किंग (पृथिया. चगःथा ভারতবাদীর ছলিন দেপিয়া. ভয়াকুলিভ-বাৎসলাপুৰ্ন মন ভিনি ভাবি তেছেন — বুঝি একটু 'পেল'ছুলা' কৰিলে ত্মস্ত কিছু 'আনমন' চইবেন ৷ এই মনে করিয়া কিঞিং অগ্রস্ব হটয়া ঠাঁ-হাকে বিলাসভূমিতে ঘাইবাৰ নিমিত্ত আহ্বান কবিলেন। অশীরিবর্ষীর পলিত-কেশ কুলকর্ম্যাবীর মুখে এ রক্ষ কথা ় শুনিলে, বিরহকাতর যুবা পুরুষের কি-কিং লজ্জিত তইবার কথা। বে:প্তর সেই ভন্ত বৃদ্ধ কঞ্কীকে কিছু না বলিয়া. ष्ट्रश्च (नद्भविक्षिक मात्र'पर कतियां कृष्टि-লেন—

বেত্রবভি! মন্ব্রনাদ্মান্থিপুনং জড়ি অদা চির প্রবেধার মন্থাবিত মন্ধা-ভিধর্মাসন মধাসিতৃ বং প্রভাবেজিত মার্যোল পৌবকার্যাণ তৎ প্রমাবোপ্য প্রস্থাপ্তাসিভি।

এত যাতনায়, এত সম্থাপেও ছয়ত বাজকার্যা ভ্রেন নাই। এত ক্লিপ্ট ননেও ভাষার বিচারকার্যা পর্যালোচনা করিবার ইচ্ছা কৃত বলবতী! এত অনল-দগ্ধ হইয়াও ছয়স্থ সঞ্চাবাৰশেয় হন নাই!

্তার পর সেই মন প্রাণহাকী চিতা দর্শন। ভিত্র দেশিতে দেশিতে ছয়ম্ব উল্লভ হটয়া উঠিলেন। চিত্রিত শক্তলাকে ভাঁহার ভীবনমগ্নী শকুস্তলা বলিয়া বোগ হইতে আগিল। চিত্রিত লেমরটীকে সেই আশ্রমনুষ ভ্রমর বলিয়া বোধ চইতে লাপিল। তিনি আগনাকে আপনি ভূলিয়া, গেলেন। তিনি সামজ্ঞানশ্র হইয়া. পড়িলেন: তিনি কালজ্ঞানশুৱা হুইয়া পতিবেন। এমন সময়ে বেরবেডী অংগিল ভাঁহাকে কাছকার্যেরে সমাদ দিলেন। অমনি, যেন ভাঁহার কিছুট হর নাই, এইরূপ ভিবগন্থীৰ ভাবে হিনি কাগ্রপ্রভাবি পাঠ কবিষা প্রধানানা তোৰ ভ্ৰমণংশোধন করিয়া ধর্মসঙ্ বিচার কৰিয়া দিলেন। ৩৪ বুতা নয় । रमटे चथुज्ञक मृष्ठ नशिरकत मरशिदर উত্তরধিকাবিত্র নিরুপ্ণোপলকে তিনি সমস্ত প্রভাগাণের মক্ষণার্থে মেহ্রন পিতার তায় এই মেহপূর্ব আজ্ঞা প্রচাব क्दिएलग---

বেন বেন বিমৃতাতে প্র'ং লিখেন বর্ন।
স স্পাপাদতে তাবাং হয়ত ইতি বুমারাম্।
ক'জ্ঞালইয়া বেজবতী চলিয়া গোলেন।
তথন হমতের অপুত্রকাবতা অবণ হইল।
অবণ কবিলা তাঁহাব মন পূর্বাণেকা
সম্বান্য হইয়া উঠিল। হ্লস্ত্ কর্বান
মিঠ এবং ধর্মভীক। তাঁহার পিতৃপুক্ষ
্দিগের কথা মনে পড়িল। তাঁহাদের
পবিত্রাহ্লার শোচনীয় পরিণাম মনে
হইল। তিনি বস্ত্রণাবিহ্বল ইইয়া মৃদ্ধি-

তেব ভার ভূতলশায়ী হইলেন ত্রমহ্
শক্তলাচিন্তাও সেই গিরিচরগলবং বলসাব দেহস্ততকে ভূতলশায়ী করিতে
গাবে নাই! এই পতনেই ভ্যান্তের
ভূলক্ত্র দেদীপামান!

ন্জিতি প্রায় পড়িয়া আছেন, এমন
সময় বিপরেব ভরাত্তিব শ্রুত হইবা
তামনি কর্মবীর তুমন্ত শশরান্ত হইবা
তিরিবেন। আব তাঁহার শকুন্তলাভিত্যা
নাই। আব তাঁহার শকুন্তলাভিত্যা
নাই। আব তাঁহার শকুন্তলাভিত্যা
দাবীরিক তুর্কলিতাও নাই। এখন ভিনি
যে তুমন্ত সেই তুমন্ত ! বিপরীক বিক্রেম
চহকাবে তিনি গলুর্কাণ সাপটিয়া লইকেন।
নিমেন্নধা সকল কথা অবগত হইবা
দেবভাদিগের সাহায্যার্থ পুস্কেরণে আরোহণ বরিয়া অন্তর্নাশে শুন্তপ্থে উঠিবেন।

পঠিক। একবাব ভাবিষা দেখা এখন ছয়ত্তেব কি ভয়ানক অবস্থা। তিনি প্রিলিটা তিনি প্রিলিটা ভাগিবি প্রিলিটা ভাগিবিক প্রত্যাপান কবিষা কি অবিচাব, কি অধ্যাচিবল কবিষাচেন, লাল তিনিটা ব্রিতেছেন। তাহাতে আবাব আনেন যে সেই নিরপ্রাধা এখন মন্ত্রালোকে নাই। আর যে কখন ভাগিকে পাইবেন, সে আশাও এখন তাহার কলয়ে স্থান পায় না, এবং সেই জ্লাই তিনি পিতৃপুক্ষদিগের প্রিণাম ভাবিয়া এত ব্যাকুল ইইয়াছেন। এখন তিনি শুধু অন্ত্রাপ্রদ্ধ নন। যে আশার বলে লোকে ছংস্থ ব্যাণা স্থ

করিয়া পাকে, সে আশার তাঁহাকে }
একেবারে পরিভাগ করিয়াছে মৈহাকবি
মিন্টন নরকবর্থন করিতে করিতে বলিহাছেন যে সেখানে—

" Hope never comes that comes to all,

But torture without end."

তথন চল্লান্তৰ কদন্ত আশাশুরু অনস্ত বহুণাবাৰ! কিন্তু অন্তৰ্বণে অ'হত হুইবা মাজ ভিনি বেন সে সকলই ভূলিয়া গোলেন। ভূলিয়া গিরা আগ্রহাতিশ্ব-স্থকারে বৃদ্ধস্ত। করিলেন। করিয়া বিদ্ধক্ষে ব্লিবেন—

''বর্জ অনতিক্রণণীয়া দিবস্পাতেবাজা তলগতে প্রিগতার্গং

ক্ষা মন্তনাদমাতাপিশুনং জতি। নমতিঃ কেবলা তাবং প্রতিপালয়তু

প্রের :

অধিজাখিদমন্মিন্কমনি ব্যাপৃতং ধয়ঃ॥"

' বলিয়া নিজান্ত হইলেন। ত্রান্ত
নিরের স্থেত্থে সকলই ভ্লিতে পাবেন
কিন্তু বে কোটি কোটি হাদয়েব স্থেত্থে
অনহিক্রমণীয় নিয়তির বলে তাঁহায়
হতে ক্তত, তাহাদের স্থেত্থে ভ্লিতে
তিনি নিভান্তই জক্ষম। মহাকবি ত্রার
য়য়কে সামান্য মন্থ্যের স্তায় মহাপ্রীক্রার প্রবিষ্ট করিয়া অত্লক্রাতিং দেবতার ভায় উত্তীর্ণ করাইলেন! টুইহাকেই
বলে নাটকের নাটকত্ব। এই একরক্রম
দেখা রহিল।

## এত কাঁদি তবু কেন না জড়ায় প্রাণ রে?

এত কানি তবু কেন না জ্ডার প্রাণ রে ?

সেই মন সেই আশা,

আজো যুকে সে পিপাসা,

এ বাতনা তবে কিরে ফুরাবে না জীবনে?
জীবধর্ম পরিহরি,
ভাপসের ভাব ধরি,
স্থাবের জীবন মোর ফুরাবে কি রোদনে?
বুবা বায়ু-অভিবাত,
নিবিড় কানন-জাত,
বিশুক প্রস্ন-দল ব্যায় রে বিজ্ঞান,
সাধের সঞ্চিত আশা,
বুক্তরা ভালবাসা,

কেঁদে যেন উঠে প্রাণ থাকিয়া থাকিয়া, জীবনের ছুই তীর গেছে যেন ভালিয়া;

ধুধ্ করে চারিধার,
শৃক্ত যেন এ সংসার, শ হাসি,থেলি সে বাতনা তব্ উঠে আপিয়া, আশা নাই,তবু সে যে প্রাণে আছে মিশিয়া

এ কি প্রবের মন—ব্বার হাদর!
এ কি জীবনের প্রছ—জীবের আশার!
হেল্লি কুহকের ছারা,
শারি অগনের মারা,
শিশুর বাসনা-সম্মাশা উপবাহু,
এতই হর্মণ কিবে দামৰ-ছালর!

সকলি ব্ৰেছি—তবু পারি না যে ভূলিতে,
জড়ান যাতনা চিতে নাহি পারি খুলিতে,
জ্বরে সে ছবি আঁকা,
নরনে সে রূপ নাধা,
শ্রনে, স্থপন সে যে—ভাবনা, সে স্থতিতে;
এ পরাবে তার আশা পারি না যে তাজিতে

ছ্ৰ পাই—পাব ছ্ৰ, তবু তারে ভাবিব, আঁৰি পোড়ে—পুড়ে যাক্,তবু ভারে হে<sup>রিব</sup>

এই ধিষাদের রাশি, জামি বড় ভালবাসি, এ জীবনে চিরদিন ভারি ছথে কাঁদিব। অভিনে ভাহারি ছথে হ নয়ন মুদিব।

এভাবে সংসারে থাকি হবে না সে সাধনা,
মারা-মোচ-ক্ষেহডোরে ভূলে বাব বাতনা;
উদাসীন-বেশ ধরি,

ভারি ছবি বুকে করি, পথে ঘাটে হাটে মাঠে গাহিব এ বেদনা গৃহ-কারাগারে পাকি সব না রে গঞ্জনা।

পাপের সংসার হেথা সকলি সে ছলনা, আরপর ভালবাসা সবি স্বার্থ গণনা; আমি ভাসি, অঞ্চললে, লোকেডে পাগল বলে,

ব্ৰাইণে নাহি বুৰে মহমের বাতনা; মন্ধত সময়ংখী, ছংখী হেখা পায় না

न धन शावान नग-८म् व्यामात्र व्यव मा, o हुन नवाद सम्- ध सीवत्या तर्द मा, (य किमन (वैटि बहे. তারি ছবে কেঁদে गरे, ম্রিলে এ আশা ভৃষ্ণ কিছুই ত রবে না, এ ভश कीवरन आद अछ मार्श इरन ना।

कि स्कर्ण मुद्धारमध्य दलरणिक्य छाहारत, কি কুক্ষণে ভালবাদা দিশ না সে আমারে। हाय (ला 'वजदमदी,

त्रमणी कि मनामनी ! वकी वाचानवागी वक्षी वाचरत, এত যাতনায় নাহি ফুটিল অধরে !

সেত নাহি দিল আশা--আমি কি ভাছাড়িব দে বাসনা চিরদিন বুকভরে রাখিব।

করিব ভাহারি ধান, গাহিব ভাহান্নি গান, 👾 , দিবাছি পরার ভারে—তারি তরে রাশিব; বনান্তরে দেখা ছলে তারি হাতে সঁপিব।

- বিধাতঃ রে ৷ এত ক্লপ কেন দিলি ভাহারে ? **এछ स्था (कन विद्धा श्रद्धां अवदात श्राक्यादा ?**, ু সে নার্মণীর মণি ? त्मना भीषृत्यत्र अनि ? (তবে) दक्त दम अभित्र-मृत शावादनत शाकादत वक्षमग्र वक्ष (कन हक्षमात्र काकादत्र ?

ٰ জার মিছে ভার আশে রহি পাপ ভূষনে, ७८वत (थना-धूना क्तान व सीवरन । अनरत्रत भूतकात, थाटक यनि अञांशांत, এ त्रामन পশে यनि विशाजात्र अवत्व, ? জন্মান্তরে পাইব রে সে রমণী-রতনে।

#### -SOEMAN TO SO

## দ্বিতীয়বার বিবাহ।

আমাদের এই প্রস্থাবটী ছইভাগে विভক্ত कदा याहेटड शादा। বিধবার বিবাহ, দিভীয় মুৰ্ভপদ্মীকবাজির দারাম্বরপরিগ্রহ। পদ্মী দীবিভাসদেও श्करमत कानाकी अहन कहा एव यूकि-गत्र नाह छोड़ा कांच कांच छोड़ नक-तिहे बीकात करवन। ऋकतार अवस्तु

क्रम माहे। मर्का अधिय क्रायत्रा विधवा-विवाहमधास इहे अकृषि कथा विनव। আলু কাল পাশ্চাত্য পণ্ডিভগণের अधिकाः (भत्रहे ये उत्तर्कार्य) **छान, (कान् कार्य) मृक्त् निर्का**हन कतिएड र्टेटन "वावदाध्याभर्याभिकात", अस्मतन क्या कर्तवा अर्था६ छाहाटक अमारलेब <sup>()</sup> विगरत्र क्लान कुथा विश्वयोद्ध बादबा- े खेलकात किया जलकात हरें छोडाँके रमशा डेव्डि। ্ৰ নিয়ম সমাহ্ৰত অধিকাংশ লোকের অধিক क्रेशकादब वाहरम, याहाएक माधाद्रावद स्थममृदि . বর্মিত হয় ভাহাই সমাক্ষ্মধ্যে আচলিত করা উচিত; ইহার বিপরীত হইলে ভালা প্রচলিত করা উচিত নহে এবং **এচলিত থাকিলেও ভাষা রহিতু**্কর। कर्खवा । अञ्जब विश्वविवाह क्रिक कि ना श्वित कतिए इटेटन दिया फैंडिज ইহাতে সমাজের উপকার কিমা অপকার इय. देश 'वावशातानायानिजात' अक्षे माती कि ना ?

षाजि कानि वश्रमर्गानत कृषात्र मान-থসের নাম বোধ করি কোন পাঠকের অবিদিত নাই এবং মোটের উপর তাহার মতটা কি ভাহাও অন্তেকের আছে। তিনি বলেন লোকসংখ্যার व्याधिकारे सभारकत मातिराजत मृतः यनि দারিন্তা দুর করিতে চাও, যদি সমাঞ উরত করিতে ইচ্ছা পাকে, যদি দেশের ए डिक निवाद एवं मानम थार्क एरव गा-शटङ (मध्य अधिवामिशायत मःथा) काम অথে তাহার চেষ্টা কর। প্রাণিগণের আছুতি এই, বে পরিমাণ আহারে ভাহা-**(मत्र भर्यााश्च इत्र ভार्हारम् त मःशा क्रम्मः** ভদপেক্ষা বর্দ্ধিত হইতে পাকে। ভাক্তার मुद्रणिन बरलन यपि भीव वा छोड़िष्-গণ যথেছ অন্বিতে পাইত তাহা হইলে ব্যেকসহত্র বর্ষসধ্যে একলাতীয় প্রাণী या छेडिल पाता भड़ माछ जगर चामहत হইয়া বাইত। কেব্ল প্রাকৃতিক বুলি

নিয়মে এরপ হইতে দেয় না। যে দেখের दशारकत् वावशात विश्वक, दय शाल খাদারেবা প্রচুরপরিমাণে প্রাপ্ত হওয়। याम, त्य तम्भ वानाविवाद्यंत द्रकान व्यक्तिक नारे, य शास्त्र क्रवर्डावित षात्रा मञ्चाकाछित क्ष्मकारम विनाम ना হয়, অথবা যেখানে অনিয়ত পরিশ্রম বা অস্বাস্থ্যকর কার্য্যের ছারা অকালমৃত্যু न। घटि मधानकात्र लाकमःशा वृद्ध এত শীঘ্র ও অধিক পরিমাণে হয় যে শুনিলে আশুর্ঘ্য হইতে হয়। গত ১৫০ শত বংগর ধরিয়া আমেরিকার উত্তর लारान खाउंक २६ वरमात्र (लाक-সংখ্যা বিশুণ হইতেছে। কোন কোন क्षारंग ३६ वरमन मध्या विश्वन इटेरड (प्रथा याहेटल्डा मात्र छहेनियम (प्रा वर्णन (य मणवरमन्नर्याः अधिवामिः সংখ্যা দ্বিগুণ হইতেপারে।

যেমন মহুষাসংখ্যাও ক্রমশ: বর্দ্ধিত হয় **८** महेक्क्य (मध्यत्र छेर्थत्र छ क्रा वृद्धि भादेशा शारक। किञ्च शृथि वी ब्र डेंद-পাদিকা শক্তি যেরূপ, তাহাতে কৃষি-কার্যোর উপকরণ যেমনই উৎকৃষ্ট হউক না কেন, সার যেমনই উত্তম হউক না **्कन, थामागामशी**त वृद्धि कथनहे लाक-भःशातुषित समान हरेट भातित्व ना। মালথস্ ছির করিয়াছেন যে, মহুষা-मरथा। यमि ১, २, ৪, ৮, ১७ ইভাবি चारकत পরিমাণে বৃদ্ধি হয় ধরা বার, ভাষা इहेल काहातज्ञा >, २, ७, ६, ६ वह व्यक्ति शतिगाल विश्वित इहेरव। यथन

লোকবৃদ্ধি ৮ গুণ থালাবৃদ্ধি ৪ গুণ, যথন লোকবৃদ্ধি ১৬ গুণ থালা বৃদ্ধি ৫ গুণ। ইহাতে সহজেই উপলব্ধি হইতেছে যে ভালাবিদ্ধির মধ্যেই লোকসংখ্যা আহার-দ্রব্যের অপেকা অধিক হইয়া পড়ে, কাজেই দেশে দারিদ্রা উপস্থিত হয়।

क्षकरण लाक मः था। वृद्धि इहेवात्र (य कर्यकति श्राजिवस्य चाट्ड छाराहे श्राम-र्भित इहेटल्ड । ३म, डेभयूक बतालात ত্র্ভিক উপস্থিত হইয়া সহস্র সহস্র মহু-ষ্যের মৃত্যু হইয়া. থাকে অথবা উপযুক্ত আহারাভাবে পীড়া বারা বহুলোকে প্রাণভাগে করে। ২য়, মুদ্ধ প্রভৃতি দারা অনেক নরহত্যা হইয়া পাকে। ৩য় विरम्रां উপनिद्यम द्वांता रम्रांत त्वाकः সংখ্যা কমিতে পারে। অনেকে মনে করিতে পারেন যেমন মহুষা জন্মতেছে অবার তেমনি মরিতেছে তবে সংখ্যা কিবাপে বাড়িবে ? বাস্থবিক জন্ম অংশকা म्ञा कम; हेलए७ (य तरमत मृञ्गमः था। অতাস্ত অধিক, সে বংসরেই অবামৃত্র षर्भाड >२:১० वदः का ष >> े:>०। षमा घरभक्षा भद्र इत्या इत्याप्त कारक काष्ट्र वाकी भए ।

মহ্বাসংখ্যা যত বর্দ্ধিত ছইবে তভই দেশের দারিত্রা বাড়িবে এবং কাঞেই আহ্বজিক ছুর্জিকালি আসিয়া কতক লোকের প্রাণ্সংহার করিয়া আবার খাদোর পরিমাণ ও লোকসংখ্যা সমান করিয়া দিল্লা ষাইবেল। পুনশ্চ বেমন লোকসংখ্যা বৃদ্ধিত হুইয়া লোকের ক্ষাক্ষ্ট

इंडेरव अमिन नकलित्र श्राह्मां भागत ेम्पृहा कमिया याहेरव। हेहारकहे हेरद्र-জিতে (Reaction) কছে। मानश्रमत विभएकता वलन (य लाक: সংখ্যা বেমন বৃদ্ধি হইবে তেমনি তাহারা পেটের দায়ে নৃতন নৃতন জমি আবাদ कतियां व्याहात्रस्य वाष्ट्राहेटवः, कार्यहे শেকসংখ্যা বৃদ্ধি ধারা কোন ক্ষতি হইবে ना। (कान এको विरमय द्वान नहेशा विरंवहना कतिरन এই कथा यथार्थ इहेर्ड পারে কিন্তু মোট ধরিলে ইহা মিথ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইবে; কারণ পূর্বেই वना इहेब्राएं थानावृद्धि कथनहे लाक-বৃদ্ধির সমান হইতে পারে না। মৃত মহায়া জান ইুয়াট মিলও ম্যাল্থদের মতের পোষকভা করেন। ভংপ্রদর্শিত যুক্তির পুনক্ষক্তি এ হলে প্রয়োজন করে

ইতিপুর্মের লোকসংখ্যাবৃদ্ধির যে করেকটি প্রতিবন্ধক উল্লেখ করা গিরাছে
তলাধাে ২য় ও ০য় টী আমাদের দেশে
নাই, এবং শীত্র যে হইবে, তাহারও
আশা নাই। তবে ১মটী অর্থাৎ ত্র্ভিক্ষ
ও উপযুক্ত আহারভাবে অকালমূত্য
আতে এবং আজ কাল প্রায়ই ঘটতেছে।
যে কয়েকটি কারণ লোকবৃদ্ধির অমুকূল,
আমাদের দেশে তাহার অনেক গুলি
আছে। একশে জিজ্ঞান্য এই, কি উপায়
অবলম্বন করিলে লোকসংখ্যা বৃদ্ধি না
হয়। নানা ব্যক্তি ইহারইনানা উপায়
প্রদর্শন করিয়াছেন। তম্মধ্যে অকাভরে

वियाह वक कन्ना मसीरशका युक्तियुक्त। অরাভাবে আগেম পুরের মৃত্যু স্বচকে पर्भन कड़ा करणका भूख ना क्यान रव অনেক স্থবের, গোকবৃদ্ধিনিত ছার্ডিকে পত পত ব্যক্তির বিনাশ অপেকা লোক-সংখ্যা বৃদ্ধি না হইতে পার এমত উপায় অবলম্বন করা যে উত্তম ভাহা বোধ করি কোন বৃদ্ধিদান্ লোককে বৃন্ধাইবার थायाक्रम माहे। ७१व व्यानाक वर्तम (र जाबबरकोमात्रज्ञ जनमन कतिरन শরীর হুত্থ খারুক না,কিন্ত এক্টন বলেন বে কুমারীগণকে আজীবন অস্থপরীরে चाकिट्ड (मचा शिवाटक्। हित्रकान व्यदि-বাহিত থাকিলে যে কোন পীড়া হয়ে তাছা কোন কাজের কথা নছে। যাহারা षामारमञ्ज (मर्भेज विधवांशंवरक स्मर्थ-রাছেন, ভাঁহারা খীকার করিবেন এক্-টনের ৰভ সহা। স্তরাং **দেশের** मातिका पृत्र कतिए इंदेरन प्राप्त नहन পরিমাণে বিবাহ বাহাতে হইতে না পারে ভাহার উপার করা উচিত। णामारमञ्ज (मणीत्र जातक कुछविषा লোকের (কার্যো না হউক মুখে) আঞ কাল এই মত দাড়াইরাছে। ভারারা প্রারই পুরুষের অকাডরে বিবাহের প্রতিবাদ করিয়া গাকেন। তপাপি তাঁ-हाता (य किन्नार विश्वविवाहत शाय-কভা করেন ভাষা আমরা ব্বিভে পারি ना। शूक्रदेश विवाह स्टेश कांच नारे किंद्र जीत्मारकत्र विवास वक्त कत्रा. स्ट्रेटव मा व दर्गान् वृक्तिनारश्चव अञ्चनादिनी १

यथम (मथा वाहेत्छद्द त्य, विवाह य७ क्रिय छछ सम्मन, छथम विवाह त्य छाहाद्य क्रिया कंछं कश्चित विवाह क्रिय छाहाद्य क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय

करनरक वरमन वक्वियाग्य वित्रहः-থিনী। ভাছাদের কোন কার্যোই সুখ नारे, (कानशकांत्र चारगारम जाराता মিশিতে পারে না, মনের ছংখে তাহারা সর্কাই ছঃখিত। ভাষাদিগকে আৰম্ম এইরূপ কষ্টে রাথা অভিনৃশংসের কার্য্য, योशंत्र एका नारे, मात्रा नारे, दर द्वर ममका काशादक वरल जारन ना, शरतत ছ: ए याद्यात्र यम अनिया ना योत, रमहे এইরণ নিষ্ঠুরভাচরণ করিতে সমর্থ। किছ विधवानिकात इः भ व कामहा अभड चामारमञ रवाथ इव ना। त्रमि वाखिविक অসহা হয় অথচ তাহাতে সমাজের উপ-কাব থাকে, তবে ভাছা মোচন করিবার व्यावनाक कि ? शिष्ठकन विश्वात बना বাঁচার প্রাণ কাঁদে, সমাক্ষত্ব সহস্র ভাঁহার হৃদয় ফাটিয়া (वारकंत्र कना या छत्। উচিত, विनि এक सन्तर ज्ञाल স্চ কোটা দেখিতে পারেন না, তিনি শ্ত শত লোকের বলিদান কিরণে (प्रिटिन ? यपि शीवसन विश्वात श्रंव মোচন না করিলে নিষ্ঠুরতা হর, তবে বিধবাবিবাই চালাইয়া সমাজের সহল ব্যক্তির অপকার করা চণ্ডালভা; গোক म्बार क्रिका मान स्था नरका विश्वा यनि , इस्तिवा ब्रेंबाब "सामका बाटक विवाह

मिर्गिष (म कानका अरक्ताह्व निर्मून इत्र ना । व्यत्नक मथवा ७ घुण्ठतिका इत्र । আমরা সরম প্রাকৃতির লোক, এইজনা क्तत ह्यां कविष्ठ निविद्योष्ट्रि, नाविश्व-ভার উপ্রমৃতি আমরা সহু করিতে পারি न। चुछवाः न्यारवद निरक मृष्टि ना ताथिवा শুদ্ধ অমুভবশক্তির প্রতি লক্ষ্য করিরা 'আমরা মতামত প্রকাশ করিয়া থাকি। हेहाटक्टे टच्चेन्यात्र शास्त्र Emotional Bias অৰ্থাৎ মানুভাবিক পক্ষপাভ বলি-ग्रांटिन।

মহু প্রভৃতির পর বে!ধ হয় মিডাক্ষরার यत चामारमत रमरम **टाइमिल हिन्।** তৎপরে জীমৃতবাহন জন্মগ্রহণ করিয়া মিতাক্ষরাকে আমাদের দেশ হইতে বিদার দেন। মিতাকরামতে পিতা প্তােংপত্তির পর নিব ভূসম্পত্তি অন্যকে বিক্রন্ন করিতে পারেন না। ভাহাতে যাহার কৌলিক কিঞিৎ ছিল ভাহার কতকটা খাবার সংস্থান থাকিত। পরে দারভাগকার জন্মিরা দারিদ্রা বাড়াইবেন। ভিনি **বলিলেন পিতা ইচ্ছা** দ্রিলে সম্পত্তি বিক্রেরাদি করিছে পারেন। <sup>5ৎপরে</sup> ইংরেক্ষবা**হাত্ত্র আবার গভোপরি** विष्काष्टिक समारेषा विरन्त । छीरात्रा न् उरेला रही कतिहा मातितात नव विश्व मृक किसा विदेशन। भन्न यपि भूमताङ्ग भाषता अकास्त्र

(मरण विवाह कटन छोडाई अवल्यन करी **ड**ेहिड ।

একপ্রেণীর লোক আমাদের ভালে কিছুই ভাগ দেখিতে পান না ; যত কেব উৎক্ট नित्रमावनी छाशांपिरभन्न मन्त्र्य ধর না, ভাহারা একটা না একটা দোষ অমুত্র করিবেনই করিবেন। জন ই ুরার্ট মিলের 'পিতা এই ধাতুর লোক ছিলেন। আর একশ্রেণীর লোক ইহাদিগের ঠিক্ বিপরীত। তাঁহারা অভিসামান্য বিষ-রেও ঋষিদিগের বৃদ্ধিপ্রস্থাব দেখিতে পান, সামান্য কথা চইতে নিগৃঢ় তত্ত্ हेिनिया वाहित करतन। পুষ্পকরপের নাম শুনিয়া তাঁহারা বলেন আমাদের विन्न हिन; सर्यरशंख्न " जानक विषा एवं की:" कथा शांठ कविवा छ। हावा वरनम जामारमञ रमाम हाहेरजारभि हिन। वना वाङ्ना (य এই উভয় শ্ৰে-ণীর লোকই ভ্রাস্ত। শেষোক্ত শ্ৰেণীম্ব লোকেয়া বলিতে शाद्यन (य, विश्ववाविवाह शूटर्स व्यामारमञ्ज (एटण यथन हिन्छ हिन छथन हेश অবশা সমাজের উপকারী। আমরাও • ইহাদের কথার অফুমোদন स्टेष्ड भारत य विषवाविवाह खाहीन কালে প্রয়েশনীর বোধ হওয়াতে চলিত रहेत्राहिन, किंद्र शहर दन बाह्यायनहेकू चात्र ना थाकारण कार्याहे देश प्रहित्त राह थएकि क्तिक काकि करने क्या के कि कि वहेंगा के विवादक। क्या के ें अरक्तात कार केंद्र के किया कार्य कारकारकात (काम अकें। मित्रम क्षेत्रक क्रिकार जनन जनकार देशक नाहर।

যথন আর্যাগণ মধ্য এদিয়া হউত্তে আদিয়া পঞ্জাব অধিকার করিলেন, তপন তাঁহা-দিগের সংখ্যা অপেকারত অনেক কম ছিল। অধিকৃত জাতির উপর আদি-পতা বছায় রাখিবার জনা তাঁহাদের भः थादि केव शासन हरेन। अधुना-তন ইউরোপে গমনাগ্মনেব যেরূপ স্বিধা ভ্ইয়াছে, তখন স্থা এসিয়ায় সেরপ ছিল না বলিয়া স্বার্যাগণের নিজ দেশ হইতে আমদানী করিবার কোন স্থবিধা হয় নাই। এইজনা তাঁছারা श्रुष्ठात्नार्भागनवातः सःशातृष्ठित ८० है। করিতে লাগিলেন ; এই কারণেই অমু-লোম প্রতিলোম উভয়বিধ বিবাহই প্রচলিত হটল এবং তাহার উপর যাহার যে স্ত্রীকে উপভোগ করিবার ইচ্চা इहे छ जिनि छाहारक ( अपनात सी हरे-লেও) লইতে পারিবেন এইরূপ-নিয়-মও হইল। মহাভারতের আদিপর্কে খেতকেতুর গর বাঁহাবা পাঠ করিয়াছেন ভাঁহারা আমাদের মতের যাগার্থা বুঝিতে অনেকে বলিতে পারেন भादिरवन । যে, সে কেবল গলমাত্র বাস্তবিক ঘটনা ঐটিকে যে প্রকৃত নহে। আমবাও घটना वनिष्ठिष्ठि डांश नरह, उरन धे প্রাকার ঘটনার উল্লেখ থাকাতে স্পাইই বোগ হয় যে তৎকালে এরপ প্রণা खहिन छ छ । , एक आमारंगत (मर् কেন পৃথিবীর অনাানাহলেও এরপ घडेना घडेंबारक। न्लाडिंग्स्थन (helots) হেণ্ট্দিগের বুস্তান্ত পাঠ করিছে জানা

याहेरन एय रमश्राता के केन निवय এককালে চলিয়াছিল। যথন আর্যাগণ দেখিলেন যে, ভাঁহাদের সংখ্যা পর্যাপ্ত হটয়াছে, তখন তাঁহারা ঐ কদর্যা নিয়ম एं ठे। देश पितन। किंद्र प्रश्रुताम वि-বাহ এবং বিধবাবিবাছ আরও কিছুকাল চলিল। ক্রমেই থাদা অপেকা ভোক্তার সংখ্যা অভিরিক্ত হইতে লাগিল দেখিয়া উভয়বিধ প্রাপাই উঠাইরা তীহারা দিলেন। এবং সৈই অবধি তারাই চ-निशा जामिएडए । विभवानिवाह दकान् সময়ে আমাদের দেশে রহিত হয় তাহা একণে নির্ণয় করা কঠিন। ভবে ইচা নিশ্চয় বলা যায় যে, দায়ভাগ ও মিতা-ক্ষরা প্রাণীত হইবার পুর্বেই বিধবাবিবাহ আমাদের দেশ হইতে উঠিয়া গিয়াছে। मात्रज्ञाशकातीत घटक वन्ना विश्ववाकना। পিতার বিষয়ভোগে অনধিকারিণী, কা-রণ তিনি নিজপুত্রেরদাবা পিতার শ্রা-দাদিকরণে অসমর্থা। মিতাকরার মতে **শদিও তিনি পিতৃসম্পত্তিতে বঞ্চিত** না হউন, তথাপি পুলুবতী তাঁহার অধিকার নাই। यकि विभवा-विवाद औठलिङ शांकिङ छाहा इरेल নিশ্চয়ই এরাপ নিয়ম বিধিবদ্ধ ছইত না। বোদ হয় পরাশ্রের আবিভাবসময়ে विधवाविवाह बहि कि कि बाब है का ला-কের মনে উদিত হয় এবং সেই ঘনাই ভিনি নিজসংহিতার লিখিয়াছেন <sup>বে</sup> "क्निकारम ( अर्थाद आवा कि क्<sup>मिन</sup> भारत ) विश्वविकाद कतित्व मा।"

চার এরপ লিখিবার অভিপায় যে আর किছ्मिन পরে বিধবাবিবাহ আঞ্চলিত शाकियात शास्त्रायम मृष्टे स्टेरिय मा। (माम त्नाक मः था। वृद्धि वा द्वाम सना যে আইন করিতে হয়, তাহা আধুনিক ফান্সের ঘটনামারা প্রতিপক্ষ হইতেছে। ज्ञातथम् जन পश्रतमन् ७ मार्ड कृष ্অব ফিলসফি নামক ছুইণানি পুস্তক পাঠ করিয়া কৃষ্ণিদেশীয় লোক সন্তান ইংপাদনে এত শিপিনপ্রয়ত্ব হটল এবং কাজে কাডেই অপিবাসীর সংখ্যা এত ক্মিয়া গেল যে ইহাতে গ্ৰণ্মেণ্টের নুজ্ব পড়িল। ক্রমেই লোকসংখ্যা কমিতেছে দেখিয়া প্রায় একবংসর গভ इहेन, गरर्गटमण्डे, गाहाएक लाटक र मखान উৎপাদনে পুনরায় যত্ন হয় তবিষয়ে উৎদাহ দিবার জন্য কয়েকটি স্থবিধা कतियां नियाटकन। व्यामाटनत ঠিক ইতার বিপরীত। এলফিনটোনকত ভারতবর্ষের ইতিহাদে উল্লিখিত লোক-সংখ্যা গতবর্ষের সেক্সমের সহিত মিলা-हेबा (पशिरम प्लेष्ठ (नांध इहेरव) रम श्वितांत्रिमः भा मिन मिन विक्रि इहे-ভেছে এবং বৎসর বৎসর যে চুর্ভিক হইতেছে তাহাতেই দেশের দারিদ্রোর <sup>পরিচয় দিতেতে।</sup> স্থতরাং লোকসংখ্যা গাছাতে কমে এরণ কোন উপায় করি-বার মুখা সময় উপস্থিত হটয়াছে। ध नगरत यनि आयदा नेमाचनः स्वातकान विधवानिवाह **निग्रा त्नाकमःथा वर्षिक** श्रेनात श्रुविधा कतिया निष्टे काहा श्रेटल

ছঙিক বৎসরাস্তর না হইরা নাসে নাসে ছইবে। অনেকে বলিতে পারেন যে, বেমন ফুঞ গবর্ণমেন্ট লোকসংখ্যাবৃদ্ধির প্রতি হস্তক্ষেপ করিয়াছেন, সেইরূপ আনাদের দেশেও হওয়া উচিত। আন্মরা বলি আনাদের সামাজিক বিষয়ে গবর্ণনেন্টের হস্তক্ষেপ কোন মতে উচিত নহে; আমরা নিজে আনাদের স্মাজন্মংহার করিব, ইহাতে অন্যের মুখাপেক্ষা করিব কেন ? ইচ্ছা করিয়া কেন নিজের যেটুকু স্বতম্বতা আছে ভাহা খোয়াইব?

धकर्ष ज्ञानारक विशेष्ठ भारतम (य, হিন্দুগণ প্রাচীন নিয়মের একাস্ত ভক্ত, প্রাণান্তেও জাঁহারা প্রাচীন নিয়মের পরি-বর্ত্তন করিতে চাহেন না। সমু প্রভৃতি কতকাল পুর্বেষ যে নিয়ম করিয়া গিয়া-ছেন আজিও তাহা সকলে মান্য করি-তেছে। 'বেখামাত্র মপি কুলাদামনো বর্মা পরং, ন বাতীয়ুঃ প্রজা স্তস্য নিয়ন্ত নেমিবৃত্তরঃ" এই কথা কি আধু-নিক কি প্রাচীন সকল হিন্দুতেই সমান-রুপেুখাটে। হিন্সনাল ভিতিশীল, ইহা চিরকালই একভাবে এক নিয়মে চ্লিভেছে। তবে বিধবাবিৰাহ পুৰ্বে ছিল এক্ষণে বন্ধ হইয়াছে, প্রতিলোম অহুলোম বিবাহ ছিল এক্ষণে নাই, এ किकाप कथा ? आगजा विल एक हिन्तू-गमास (कन संगटित (कान गमास्रहे একৈবারে ক্লিভিশীল হইতে পারে না। ভবে যে সমাল ভালে অলু পরিবর্ত্তিত इटेटिइ डांशान हे लाटक विविधीन

करिया पारक मकुवा धरकवाटक श्रीवय ममाच हरेएड गाँदक ना । चात चर्ना **ंवन चारम देकी दा बाशारनंद नावि यादाह** অতি শীক্ষ শীত্র পরিবর্তন ঘটিভেন্নে ডা-बाटक शक्तिमील नमाय करहा अवाब-श्रीवर्धन वरेटनरे विवरमञ्ज श्रीवर्धन कता धारतायम रहा। हिम्माद्वात (व अविवर्तन नारे छारा नटा : 'यहिख' व्यक्तांति वस् श्रेष्ठिक नक्त याना करत व्हि ख्यानि दीहात नकन कथा. चाय काल हरन ना। अक्रमन हीकाकाव े धक्ममरत्र चाविक् छ इरेता निक्ममा-ব্রের সমাত্রের অবস্থাসুসারে মন্তু প্রাকৃ তির অর্থ করিলেন এবং তৎকালে ভাঁহার মত প্রচলিত হুইল। অনস্তর भना এकसन समित्रा नेपारसद भदि-বর্ত্তিত অবস্থার বেরুণ নির্মের আবশ্য-কভা বোধু করিলেন, মহুবাক্য হইভে সেরণ অর্থ বাহির করিলেন। এইরূপে মূল এক থাকিলেও বিভিন্নপ্রকার টীকা খারা সমাজের বিভিন্ন সমরের বিভিন্ন थाकात व्यव्याद त्यांहम इटेटल्ड । व्यूल-बार विस्पृतिरात्र निवय एक विवकानहै **এक 'बार्ट डाहा** नहि। **(मध्यत ना। वेहातु के करचार्काम शति-**वर्षन स्टेट्डाइ इंट्रेन शतिवर्खानक पुत्रभ जनाना राम श्रदेश विकित। जन्माना रम्या मुन्दे बहुवावेटवटक, धार्यादन मृत् এन चार्ड किंड जाहात चर्च शक्ति वर्षिक दरेरकुर । क्रुक्तार करन केन्द्रे

আর্থাপনের স্কৃতি কলিবা আর্রা লো কের নিকট বঁড়াই করি, বে আর্যা আর্থা করিরা আন্রা প্রত্যেক সভার চীৎকার করি, সেই আর্থাপন সমাজরক্ষার জন্য যথম বেরূপ নিরম আবশাক বেধ করিতেন তথক সেই নিরম চালাইতেন। তবে আমরা কেন এই অত্যাবশাক বিষয়ে উভিাদের অক্তর্জন না করিও তহু বিদেশীয়লিগের নিকট সন্মান পাই-বার জন্য আর্থাপন্ধান বলিয়া পরিচয় দিব কিন্তু কার্যো কোনরূপে উভা্রের সমকক্ষ হইতে চেট্টা করিব না, এ অতি লজ্ঞার কথা। তদ্ধ পিতার নামে কেহ বড় হতে পারে না,—

" অনলে অনম বলে ভক্ত মান্য নয়। তের নয় গুক্তিকাঞ্চৰ মুক্তাচয়॥"

কার্যো পিতার উপযুক্ত হওরা চাই
নত্বা সন্মানের বদলে এরূপ উপযুক্ত
পিতার এমন অযোগা সন্তান এইরূপ
নিশা রটবে।

আমর। অধুনিক নবা সমাজসংখ্যারকবিগকে একটি কথা বলিতে স্থাহি।
ক্রীহারা মনে করেন আমাদের বাহা কিছু
আছে সব উন্টাইরা দিতে পারিকেই
স্থান্তসংস্কার হটবে। কিন্তু বান্তবিক ভাহা
নহে। আমাদের মধ্যেও ক্রুক্ত কলি
অন্ততঃ ভাল আছে রে ওলি বন্ধার
রাধিরা ফেলি মন্দ্র আছে ছাহা বনলাইকে চেটা করা উচিত্ত।

avan tilifer ausgessame utti oni uta avas as are vi

বুল্ল করা বাইভেছে। বিখ্যাবিবাহ वहित इत्यात धार्म का कियांकी मामा-वाणिश्व। छीश्राह्म वर्णन, "अवास्वयदा পুরুষের পক্ষে এক নিয়ম দ্বীর পক্ষে আব এক, কিন্দপ বুক্তি। প্রাকৃতিক নিয়নে ত্রীপুরুষ একই শভাবদন্দার। कि कमडा, कि वृद्धि झान विषय्यदे े श्वीत्नारकत्री श्रेक्टबन्न मृत्य मटह । ७८० क्षांशां 'शुक्रदात महिल त्रमान व्यक्तित বেন না পাইৰে ? যে সমাজ জীপুরুষকে वक हरक मा (मिश्दि (म मनास नक-গাতী, ভাষার উন্নতি এখনও সম্পূর্ণ হয় महि। "अनियु नक निकार नह वसः" গ্তদিন না ছইবে ভঙ্গিন কোন সমা-কের ভরুত্তা নাই।" আমবা সামা-বাদীদিগের মতে মত দিতে প্রস্তুত নহি; गिलाक (य वृद्धि ଓ क्षम्डाट श्रूक्रवंत्र গ্ৰুৰ যদি ভাৰাই হুইত ভাহা হুইলে म्हर्ट: পृथिवीत दकान ना कान द्यान ौलात्कव शुक्रत्यव शहि श्रमाम व्यथि-াব দেখা ষাইত এবং পশুপক্ষিগণের ধাও যৌনভারভমা পাকিত না। তবে শ্লাক ও পুরুষের অনুভবশক্তি বে प्रेश खादारक खामारमय मञ्ख्य । कुरातं উक्टबरे काउन्न रत्न करिन रेटन উভবেই आमिकिक एवं ।. इःट्य त्त्र जित्रमान एव धारः सूर्य छेष-विक्तिक दश् । विवादांति कतिएक रतत रेक्श सर्वात । फटव औरमा-। गठिविरशाना स्विदेश ज्याहोत्र विकास

इहेरव मा अवः भूक्ष विका मुक्तम नृक्त বিবাহ করিবে এ শতি অনাায় ও শবি-চার। এ অবিচার বাহাতে সা হুইভে পারে ভাষা সাম্যবাধিগণের বেমন ইন্সিতঃ चामारमञ्ज त्यहेन्नभः নিবাছ বিষয়ে चामबाठ जीशूक्रदाव कतिर्छ[हेका क्रि। 'र्यमन श्रुक्रयत " বিঠীয় বার বিবাহ প্রচলিত আছে সেই-क्रम श्रीरमारकत्रश विकीयवात विवास আরম্ভ হউক' একথা আমরা বলি না আমরা বলি 'বেষন বিধবার বিবাহ প্রচলিত নাই সেইরূপ পুরুষেরও বিতীয়-ৰার বিবাহ বন্ধ হউক।' ইহাতে ত্রীপুরু-(चत्र नामा व्यविक्रक त्रहिन, मरशा मरशा नमारकत गर्थंडे উপकात इंहेन এবং देश **(स्था**ठारतत विक्र**क ना इ** छत्रात्र मना-দলিরও ভর রহিল না।

পুরুষের দিতীয়বার বিবাহ বন্ধ করিলে আমুবলিক আর একটা এই লাভ হইবে যে মনেক কুতবিদা বাক্তি দিতীয়পক্ষের সংসার করিরা দ্বৈপতাদোবে কালের বাহির হইরা যাল তাহা আ্বুর হইতে পারিবে না।

পতি মরিলে দ্বী ছুইবেলা আহারে
বিষ্ণত, অলম্বারে বঞ্চিত, সংসারে বঞ্চিত,
অতএব পতিকে স্কুত্ত রাখিবার অক্স হিন্দুদ্রীর যেমন বিশেষ যত্ত্ব হর অক্স আতির
এডটা থাকে না বরং অকর্মাণ্য পতি মরিলে
মনের মত পতি গ্রহণ করিতে পরিব সে
দিন কবে হবে এরপ বাসনা বিধ্বারিবাইগ্রচিতিত সমাধ্যে দ্বীরস্কানের মধ্যে ক্ষান

ক্ষণন সম্ভব কিন্তু সামাদির সামাজ সমাজে ভাষার সম্ভব নাই এই অভা হিন্দুপত্নী এত গতিভক্ত এত সংগাবী। যদি প্রকাষের

থিতীয়বার বিবাহ বন্ধ করিলে আমবা আরও পদ্দীকক হই সংসারডোর আর¢ টানিয়া বাঁণু ভাছাতে ক্ষতি কি?

## প্রাপ্তগ্রন্থের সংক্ষিপ্ত সমালোচন।

शिन्मी वाक्राकत्। শাস্ত্রী প্রণী ঠ। কলিকাডা, বিডন যন্ত্র। वाषकात कृतिकात निश्चिताद्वन, "वि-ছার হইতে গোলিমান প্রত্তেনীর উপ তাকা পর্যান্ত এবং বিদ্যাচল ১ইতে তেরাই পর্যান্ত এই ভাষা (হিন্দী) প্রচ-লিত। ভট্টির কোহিস্থান ছইতে আ माम ५वः वाश्रीव इटेट कूमातिका অন্তরীপ পর্যন্ত বিস্তুত ভাবত-ভূমিতে যত প্রকার মতুষা বাস কবে, ভাহাবা मकत्वरे व्यक्षिक वा व्यव शतियात हिनी ভাষা ব্ঝিতে সক্ষম। ইউবোপে ফ্রেঞ্ ভাষা যেরূপ, ভারতবর্ষে হিন্দীও সেই-ঈদুশ ভাষা শিক্ষা করা मकरमदर कर्छ गा---विरम्स दान्नानीत । আমাদিগের বাঙ্গালা ভাষায় eসেহের क्था, ভक्तित्र क्था, ভालवामात्र क्था, এक क्र १ शतिकारकार १ हान : कि श (कारधर কথা হিন্দীতে হয়। বাঙ্গালীর ক্রোধ ছিল ना, काष्ट्रे क्लार्थत्र खावा इत्र गाहे; अंकरन अक्ट्रे त्काथ वाङ्गाहर, গরম মেজাইজ বাবুরা আতাভারে পড়ি-शास्त्र। हिनी वाडी उ डाहारम् म पूर-कात, ही श्रीका श्रीकाम कतिवात और अञ्च উপায় নাই। " (गक्रामा"-वालीका

শ্ৰীহ্ৰীকেশ যদি একটু হিন্দী শিশিকা তেড়া মেছাইল দেখান, তাহা হইলে ভাল হয়। আফবা श्रुष्ठ नगालाइना डाका शांठ कतिर**ल (वाध एम डी**कावा অনেক পরিমাণে গুরু হিন্দীতে গালি **किट्ड मिशिद्यम**। বঙ্গীয় যুবকগণেব हिन्ही निधिरात स्विधालना धारे धार নির্ভিত হইয়াছে। देशत शावत 'হিনীভাষার সংক্ষিপ্ত ইতিহাস'' নামক একটি ভূমিকা ভাছে। পুস্তকগানি অধুনা প্রচলিত সংস্কৃত ব্যাকরণের অন্ন করণে বাঙ্গালায় লিখিত। প্রথম শিক্ষার্থীদিগের অনুশাক্তাত্র देवबाकब्रिक विषय श्री यशास्त्राशास्त्रात मतिर्विण कतिबार्छन। व्यामापिर्वि দৃঢ়বিখাস, পৃস্তকশানি যে উদ্দেশ্যে লিখিত হইয়াছে তাহা সম্পাদনে বিশেষ ক্লপ কুত্ৰাহা হইবে: হদি ক্থন ব্যা विषाद्वारत हिन्दी शूछक श्रृष्ट्वा व्यावय इत्र, वहे वह भाठामुख्यक्षम निसा চিত হওয়া উচিত। বালালার বিদা<sup>†</sup> नवनमृद् देश्टरिक, नःइक व्यक्ति (वर्तर्ग भिका (क्षत्रों इत्र, खळान हिन्दी ও <sup>भिका</sup> (मुख्या कर्ह्या ।

# বঙ্গদেশন।

#### সম্বয় বৎসর।

৭৫ সংখ্যা।

#### --- ESI : 0 3 / ESI : 103---

### বন্ধীয় শক্ষরাচার্য্যের নালিশ।

ধনীর আর একটি নাম "বড়মাছব।" रखानि राक्रभ रखनाता शतिमिक रत्र, দেইরূপে মন্ত্রাও টাকার বারা পরিমিত **हरेशा थाकि । अरे वज्रथानि शास्त्र जज्ञ,** অতএব ইহা কুড়; এই সমু্যা টাকার অৱ, অতএব এই ব্যক্তি ছোটলোক; আর এই মহোদর টাকার অধিক, অত-এব বড়মানুষ---আকার অতি কুদ্র হই-ণেও বড়মাত্র। আমার আকার বড়, উদরও বড়, আমি জানিভাষ আমি "व्षयाञ्यः" किन ह्ना, वना, क्हरू षामात्र "वज्ञाक्ष्य" दरत सा । षानि णाशास्त्र क्खंडे युवादेश बाकि, दक्टरे पुरक ना। व्यासात्र दशका बात्र दय, दय वाव करत छाष्ट्राटक द्वाटक क्थन कथन " वक-गाञ्च" वटन ; आवात्र एव अन टक्त, इत्र ত তাহাকে জোকে "বৰুমান্ত্ৰ" বলে <sup>না।</sup> তবে বোৰ হয় কেবল টাকাম

"বড়মাছ্ৰ" হয় না, বুঝি ব্যন্ন করিলে "বড়মাছ্য" হয়।

আর যদি বল বাহার ভ্মিসম্পত্তি আছে কেবল সেই বড়মান্ত্র; তবে আমি নিশ্চিম্ভ হইতে পারি, কেন না আমার টাকা না থাকুক, আমার ভূমিসম্পত্তি আছে; কেবল এই বালালায় নহে, নানাদেশে আছে। ভূমি হাসিতেছ, ভোমার বিখাস হয় না। ভাল; ভদম্ভ করিরা দেখ।

আমি এইমাত্র বৈ পাত্রপূর্ণ দেবছর্ন ও
সরত খেতার আহার-মজ্ঞে আহতি দিরা
আগিরাছি, আমার যদি ভূমি নাই, তবে
তাহা আমি কোণার পাইলাম। বে
মৎসামুও আমার অন্ত্রিশিক্ষার ভব
আকাজ্ঞার এইমাত্র অমিমিক্লোচমে
আমার প্রতি মুইপাত করিছৈছিল, যদি
আমার প্রতি মুইপাত করিছেছিল, যদি

মংস্য কোণার পাইলাম ? এই বে কদলীভড়া প্রোচার মসুলির ন্যার পরি পূর্ণতা প্রাপ্ত কইরা প্রতিপলকে আমার ইলিত করিতেছে, আমার বদি বৃক্ষ নাই, তবে এই মক্টমনোহর আমি কোথার পাইলার ? এই বে পবিছদ সাগরের ন্যার আমার উদর-ম্বনেরুকে বেইন করিয়া রচিয়াছে, এবং তরঙ্গ ভূপিয়া বায়ুর সহিত জীড়া কবিতেছে, আবার মধ্যে মধ্যে ভাহার ছিলভাগের শোভা দ্বীপ উপদীপুর ন্যার দেখাইতেছে, যদি আমার ভূপিনাই, ভবে এই বঙ্গের কাপিন কোথা হইতে আনিল ?

তুমি বলিবে কার্পাস, বন্ধ, বন্ধনী, নংসা, ততুল, এ সকল আদি তেয় করিয়াছি। সভা কথা, আনি অুণা দিয়াভি, কিন্তু কিদের মূলা ? মজুরির মূলা नियाहि, ভाटा मः नमानीय (वडनश्रामा) বিদ্ধ তপুল কি কার্পাংগেব স্লা দিই नाहै। कुरुक्तन (क्ता वृधिकर्षन, वीध-यथन, बनरमहन शहुउ क्या क्रेसा থাকে এবং তাহাব পন্তিমেৰ মুশীস্ক্রপ কিছু বিছু পাইয়া থাকে। চলিত কথায় (महे मून) (क धार्म) त्र मूना नरन। (य ভোমাকে প্রভাহ ললবিক্রয় করে, সে वाकि बालत एष्टि कत बाहे, सन ভাছার নহে; সে ব্যক্তি কেবল নদী कि कृंग इंडेटड सन वानिश (मृह, जूनि ভাহার পরিপ্রদেশ মুলাতরূপ কিঞ্ছি किकिर विता शाका अगड ता बाकि गत्न करत्र, "कानि कत्नत मृता पा इनाग" জুমিও বল, "আমি জলের মূলা দিলাম।"
সেইক্লপ কৃষকের। মনে করে, "আমি
ধানোর মূলা পাইলাম," ভূমিও বল,
"আমি ধানোর মূলা দিলাম," বস্ততঃ
তাহা নহে।

श्रामा क्रवरकत गरह। एम वाक्ति পবিশ্রমধারা ধানোর উৎপাদন করিয়াছে, 🖫 অভ এব যে পৰ্য্য**ন্ত ক্ষমক পেই পরি**শ্রমের <sub>গ</sub> মূল্য না পায়, সেই পর্যান্ত ধান্য ভাহার निक्रे बागीनवक्रम व्यावक थारक। ধানা মহাজনেরও নহৈ ্র সে বাজি क्षरक व बङ्गि किशा श्रीम शिवा श्रीमा श्रीमा করিয়া আনিয়াছে এবং ধানা হয় ভ তপুল করিয়াছে অতএব যে পর্যাস্ত মহাজন ভাহার মূল্য না পায়, সে প্রান্ত धाना द्याभीनयक्षण व्याणनात निक्रे আবদ্ধ বাপে। শেষ, যে বাক্তি এই স্কল্ স্ভুবিৰ মূলা দিয়া তপুল খালাস करिया काहान करतं, उञ्ज खाहात्र, ভাষাৰ নিমিত্ত উৎপাদিত হুইরাছিল। ত পুল বাহার, ভূমি**ও তাহার**।

যাহার আহার প্রয়োজন, তাহার ভূরি
রও প্রয়োজন। ঈশ্বর যাহাকে উদব
দিয়াহেন, ঈশ্বর তাহাকে ভূরিও রবা
তেন। যে কৌশলে জানিতেছি এই
শ্রীরে আমার উদর জাছে, সেই কৌশলে
ভানিতেছি এই পুনিবীতে জাদার ভূরি
আছে। পুনিবীর জোন্ জংশে আছে
ভাষা জামি জানি না, কোন "বর্ড
লোকেঁ'ও ভাষা জামেন না। রাজার
স্বাজন্দিয়ে ব্যিয়া জাশন জাপন ভূমি

कत शाहेश शांदकन, जामिल इंडेमन्तित বা পরমন্দিরে বসিয়া আপনভূমির উপ-সত পাইয়া থাকি। রাজারা ক্ধন আ পন ভূমি দেখেন নাই, আমিও ক্ৰন कामाद ज्ञि (पश्चिमारे। (पश्चिमारे, তাহার আর এক কারণ আছে; আমার ভূমির অংশ কখন চিহ্নিত হয় নাই। একারবর্তী পরিবারের ন্যায় পৃথিবীর যাবতীয় উদরপরায়ণ ব্যক্তির সহিত আমি একতে এই পৃথিবীর সমুদর ভূমি পৈতৃক বলিয়া এছমালিতে ভোগ করি-মানুকিন দেশের ভূমিতে যে কাপাস উৎপার হইতেছে প্রয়োজনমত আমি তাহার ভাগ পাইতেছি। কাব্ল দেশের ভূমিতে যে আঙ্গুর, পেন্তা, বেদানা প্র'ভৃতি জ্বাতিছে, এখানে বসিয়া আমি ভাছার ভাগ পাইভেছি। गर्तिरामत स्विद्धामात स्थान साह এই जना मर्सरमामत डेर्भरत्रत अन्म পাইয়া থাকি। হয় ত কোন কোন जक्रान केरणम जामि नहें ना, जनवा गरेरा भारत ना, व्यर्थाए मञ्जूतित मृला দিতে পারি না। মূল্য যদিও না দিতে भाति, धदः (मरे सना चाशम कः म यनि छ না লইতে পারি, তথাপি আমার শ্বহ যায় নাই। এ ক্ষম্বের তামাদি হর না। সমাজকর্ত্ক যে সক্ল স্বস্থ সৃষ্টি বা धनछ इहेब्रास्ट, दक्रम छादाबरे छात्रामि े चाटह ।

वर पृथि वीएक कामान करान कि शितमान एमि कारक छाडा कार्न निकन

ুৰ্মুভৰ ক্ষিতে পারি না ৷ অসুভৰ कतिएं स्टेटन अध्यक्त आयात्र अभित गःगा. वर्षाद मञ्जात मःगा कांगा আবশাক; কিন্তু তাহা আমি স্নানি না। विगटि कि १-कालात्भी ह लहेट इहेटन. धरे ज्या काजित वार्ता नहे ना। निद्धा কঁ!দিতে ছইবে বলিয়া মনুষ্যমধ্যে পাকি না। পাছে জ্ঞাতিবিরোধ হয়, এই ভয়ে रिপज्कहिमा। कथन ठाই ना। वा काहात काटह. टकवा आगात मानी শুনিতে কর্ণপাত করিবে। ক্ষরের রা-बारक यनि वनि, ''ভाই जात्नकक्तात, মানি ভোমার জ্ঞাতি, পৈতৃকসম্পত্তিতে আমি তোমার তুল্যাংশী, তুমি কেন আমায় বঞ্চনা করিয়া আমার সর্বস্থ বইতেছ 🖓 ভাষার উত্তর ভয়ানক হইয়া পডিবে: বঞ্চিত হিস্যাদারেরা তাঁহার উপর নালিশ করে এমন আদালত এ প্রান্ত হয় নাই। আদালতভাপন না হইতে হইতেই একবার ফ্রান্সদেশে ভণ্টেয়ার আর্থ্রী লিখিয়াছিলেন। তেই हिमापादाता यालिया छेठियाहिन। বাদপার হিস্যাদার ফকির। মুগলমানের। তাহাই উভয়কে সাবলেন। সেই জ্ঞাতিবাচক উপাধিতে দাবি রাখি। তোমরা আমায় তুচ্ছ কর, আমার कृषि नारे यल। क्यीमात्रक क्यांसि-काती बना किन्द्र विठात कतिरम दम-थित सभीशांत कर्यागंती माता। जुमि क वर्षव कतिद्व, कञ्जितनत्र श्रुमिख कर्षव कतित्त, करे दिव कर्ता समीमादिक मिकि

कातः एवि रकाम् नवतः केरिकार्यके करतः प्रक्रिकार्यके आवशेष स्थान ভাষাতে কোৰ্ পৰ্যা বোণিত কৰেছ কাৰাছ হৈ কৰে কোনে সানায थरे वित्र एका क्रवटकत अविकास क्रिका क्रवटका अवि विकासकारी । वभीशंद्रव निद्रांषिक त्रायाञ्चव पूर्वि कर्रन कक्रक, अथवा नामावयकरे सुनि-कर्रन क्ष्मक किया बायात निर्देशिक थरन रन्य, ज्या भाषात्र विद्यानिक भारत बनव गांकन दश्न करक, छोड़ारेड ভূষির খাষিত্ব করে না। যে শঙ্গুড়োর

विकास ना कर, कावि चार ट्यायातक वाकागात्र वाकिव ना । (छात्रता पुक्रिक बबक बंग, बागरक दबन बन, व्यक्ति दक्त ना बढ्याहर यह १

## ুস্মৃতি কিয়া হৃদ্পিও কর্উৎপাটন।

#### धाराण ।

त्रमनी !--व्यनद्र!--चटहा कि (चात्र-चनन) **ভাবনা!--- रञ्जवा!--- विक् पूर्वठा ८क्वन**! (क्न हिन्छां!--कात्र हिन्छा।--किरमत यज्ञना १ কি সে নারী १—কেন ডার এতই ভাবনা १ ভৃতি।-- হব!-- इर्कत्तन, शशुत्र वाहाम, जूबात्र गांख कि त्मरे इनिङ विनाम ? मत्नव माहाचा (काथा—(काथा मृष्ट्र<sup>4</sup>लन ? স্থৃতি কিছা জন্পিও কর উৎপাটন।

পাহাৰ চাপিয়া ধৰ বক্ষের উপয়ে, ুপ্ৰামনূৰ্ত্তি চূৰ্ণ হোক্ নিভ্ত-অভয়ে। ভালবাসা ?--ভালবাসা --ছার ভাল্ঞানা ! च्य (काछ-च्यू क्रिल-विद्वेमां निन्तिमाः; खिरान गृहि संदक्ष सगद-राक्तां, . पूत्र कत-वीरम ध्याप करवी ना काम्मी।

क्षीनवाना त्रमनीत छनगा, निक्त। ভীক!-- মূর্থ!--- নরচিন্ত এত 🗣 মুর্বান 🤊

পাণ--পুৰ্য--নীতি--সেত স্কুৰ বিচার, ভেবে দেশ একবার গৌরব আন্থার ! অবিদ-একাও, আরু আত্মার সন্ধান, তুলাদতে সমভারে কর পরিমাধ; त्म भोत्रव-शीवरमञ्ज तम व्यक्ता धन--त्रमणी পृष्टिएक जास कत दिखत्रण ? विक् वादन-मान नीज ठीम-इत्रवात ? অসার-ত্বতি-চিত্ত কয়হ বিধার।

<sup>44</sup>वृषा ८इम्म ८क्म गाव, क्यालंश ८क्शवात ।" काया दिन मि जनव की मुन्यू बराब १ त्यन ना कविष्ट हीत् समग्र कावात ? प्रतिक य दीक्षत्रीयं व्याप्तः।

কৃদ্ধ কর বিধাতঃ ৷ এ **শভীত দৰণ**, त्र गूर्वज्-त्म जीमजा-जनस् व्यवता 🖓 व्यवहरू दशक्ष र दशक्ष र व्यवस्था क् शार्त्र, कि छार्त्र—हात्र स्थान खरनाकरम, गालंदनरक निष्कृतिक नात्रीय प्रवर्ष ?

' ख्यानि चनूक वहे प्रत्नत चनन,

व्यदम्भाग ।

निका, शीका, धन, मान, अम्ला, बीर्ज कृष्ट छावि द्वरे द्वाम कतिन् जानम, •जडूत-डेमारन, त्यन-वाहि-विना चात्र-७१-- अभावती-मछा सम्दर्भ यूनाव, मानत विश्व-वन, शंकीत-वाषाम, मास्त्रित विमन-(क्यांकि-किटलत केंद्राम, উপেক্ষিত্र अवस्ट्रल वारांत्र कांत्रन, (म त्रम्बी-दम ब्रांक्ममी-भाषांनी अवन !

#### বিরাম।

u नरह यरनेत्र **धर्म, ध मरह ध्येनन,** প্রেমিকের চিন্ত এক স্বার্থপর নয়; ना पिशाएक, नारे दिन (धान-शकियान ? ত্মি সদা ঝাস ভাল, ভোমারি সন্মান। विनातिक नरह **सूथ--- सूथ कावनांत्र,** एथिए मानत क्या निर्माद क्रातः; बन्क व प्रानन शन्त्रक्रात्रं, गावशास्त्र ज्ञाब टबन निया ना क्रेन्ट्र ।

ছ্ৰি ত ডিখারি—ভৰ কোৰা অধিকার গু ভোষার ঈশিত-ধন আহতে ভাষার। ভিক্**কের কেন জোধ—কেন অভি**মান ? ভিক্ত কুলের পুরুদ্ধের করান, किंगा नरर-व निक्रीना प्रश्नाना द्वानान, न्य ग्राह्म — । कीयरम स्टब्स् म्रह्मान्।

মুৰ্বভূমি! কেনজোগ? কেন মভিনান? ्रेज्यभाना त्रातरङ् त्रष्ट--- विति दश्य द्यांग । কৈ দিয়াছি ৷ কি চেন্ডেছি ৷ কি জিকা আমার৷ কোণা স্বার্থ, কে কি স্বার্থ, স্বার্থনাম কারণ क्रवन समस्य बदत बुलात शक्ति।.. কি ভিকা চাহিরাছিত্র কাত্রে কাঁদিয়া— ''ধৰ্ণন, স্পৰ্ণন ভৰ চাহিৰ না আর, ভালবাসি বল ইছু মুখে একবার।"

সহল-বৃশ্চিক-দন্ত অন্তরে তথন, भिटन भिटन, स्मरण स्मरण, कनिर्द्ध प्रश्मन; ब्रांक्रमी कि উভत्रिन, जरहा दरा ! नियानि, ধিক্ যোরে, পুন ভার করিছ বিজ্ঞাসি— "(हरत्र (तथ-कि इरत्र इ-निक्रे अत्रव, कानदामि वन स्वयु-विकिट्य कीवंगः।" উভরিয়া ''না'' পার্ণী কহিল আবার, "ইংখ यद्य अब ७८० कि कबिन जात ।"

বিশ্বর-ভত্তিশ-চিত্তে পলেক রহিয়া, यानवी कि त्यंवी छावि त्यंविस हा देशा, डेक्क नवस इंडि मा बक्त मा निड, शृर्धम्-विवन-कामा का ७६ ना फीछ, द्यांव-त्यांक-विश्वा-द्रमम्, कक्रवांत्र क्यां, मारे डाटर विष्यू माळ-दिन चनावना ; व्यावति वश्रमस्त्र केविश क्लिक् 'মাদ্ৰী কি কেবী ভাৰ ব্ৰিভে সারিছ।

۱۷'

মুভিরা নক্ষক পুন: দেখিছু বগন,
গেনই দৃষ্টি—সেই আঞ্চল-বসিয়া ক্ষমন,
চিরপিপানার সেই বদন-মণ্ডল,
অধা-বিগলিত সেই নরন উচ্ছল,
সে প্রথম মিলনের ছবি করুণার,
আয়ু-ছকে তখনও বিদ্যান্য ভার,
সে মুর্ভিতে, এ স্দর!—নণীতে পাষাণ!
সহিল না প্রাণে—বেগে তাজিফু সে স্থান।

> 5

দেখি নাই, শুনি নাই, তদবধি আর;
দেখিব না, শুনিব না—জীবনে আমার,
তবুও পরাণ কাঁদে কখন কখন,
লজ্জায় স্থণায় ছথে কিপ্ত হয় মন,
স্রায়ে গিরাছে সবি আমার জীবনে,
স্থের বাসনা আর নাহিক এ মনে,
দেখিতে বাসনা স্থ্ অস্তর তাহার,
কাঁদে কি না কাঁদে মোর ছথে একবার।

#### বিরাম।

20

সে কাঁদিবে কোন হুখে? কি হুখ ভাহার?
মর কিখা বাঁচ ত্মি, তার কিবা ত্যার ?
তুমিই বাসিলে ভাল, সে কেন বাসিবে?
তুমিই দহিলে হুখে—সে কেন সহিবে?
তুমি বল মন-প্রাণ দিরাছ তাহার,
কেন দেও? কারে দেও? সে ত নাহি চার!
কি খ্বা! কি লজ্জা! চিছি, এই কি জোমার,
মনের মাহাদ্যা আর গৌরব আন্ধার?

নও তুমি জগৎসিংছ—গে আগেবা নয়, ক্ষিত-প্রাণয়ে তবে কেন তুষা হয় ? মন তার, প্রাণ তার, প্রণয়ো তাহার, তাহার হাগরে তব কোন অধিকার ? তব-হুদে কভু তার কাঁদিবে না মন, হুদ্দা নিরমি তব হাসিবে সে লন।

#### , প্রয়োগ।

34

সে কাঁদিবে কোন ত্থে? এই কি সংসার!
দরা-মারা-সাক্তৃতি সবি কি মিছার ?
সে নাহি কাঁদিবে যদি কে কাঁদিবে আর?
কার ত্থে, কার তরে, এ দশা আমার?
কারে অরি দিবানিশি ঝরে এ নয়ন ?
কার ত্থে প্রতিপল আরাধি মরণ ?
বজাহত-তর্জ-প্রায় বিশুদ্ধ-জীবন—
কার তরে আজো আছি করিয়া ধারণ?

১৬

সে কাঁদিবে কোন ছখে? অহো ছো সংগার!
নরনারী-পূর্ণ ভূমি—তব এ আচার?
ভীবন-যৌবন-স্থা, অঞ্চলি পুরিয়া—
নিত্য যে চরণে তার দিয়াছি ঢালিয়া।
ভূষিত-চাতক হতে হইয়া কাভর,
দেখিতেছি মুখ ভার এ দীর্ঘ-বংসয়!
ক্ষতদাস হতে তার হয়ে অমুগত,
ভূষিতে তাহার মন—সদাই দিরত।

এ পূজার কিছুই কি নাহি পুরস্কার ? মনেও সেহের বিন্দুই'বর্না ভাকার? এ হ'তে স্থাধিক ভ্রমা হিলা না কাশার, কথায়ে কুকুনা নাহি স্থানি ভারার ! ताका नज्ञ—धन नग्न-नरह के विन, (हरतिहरू कक्षणांत अकी विहेश । (ज्ञश्म् जांत रमहे अकि वहस्म, अवाहित मन्याकिमी अ मक्ष-की वरम।

্র তপস্যা—এ যন্ত্রণা—এত অসুরাগ, ,পাষ্ণ-স্করে তার করিল না দার্থ। 

#### occio ZIO DESTIN

## ্বঙ্গ বৈজ্ঞানিক।

আল কাল বাঙ্গালার প্ৰিচনবিভাগে ছাত্রবৃত্তি পরীকার্থী দিগের মন্য যে সকল বিজ্ঞানবিষয়ক পুস্তক নিৰ্দ্ধারিত হইয়াছে তাহ। বালকগণের শিক্ষার পকে কোন जारम डिनरवाशी नरह। (य रव जाःम ব্ৰাইতে ১৫৬ পূঠা লাগে সেই সেই তংশ এক পারগ্রাদে লিখিত হুইয়াছে। वानकशन अहे मकल विषय कि छूटे वु-ঝিতে না পারিয়া পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইবার মানগে শুক্পক্ষীর ন্যায় কেবল কত্ক খলা অভ্যাস করিতে বাধা হর। অনেকে विनिद्देन (व के बकार विषय भद्र वालक. গণের উপকারে আসিতে পারে কিন্ত वान क्षन भारे मकन भूखक इटेंटि य:इ। अञ्चन करद <u>काशांत्र अधिकाश्मर</u>े यमि <sup>ভূণ হয় ভাঁহা **হইলে পরে উপ**কার হওয়া</sup> र्त पार्क क्रममारम्य रकादमा । अह वनी वामता नान महिलामाय केने हारा की এম এ প্রণীত পদ:র্থবিদ্যার দ্যালোচনা করা অবেশ্যক বোধ করিয়াছি।

মহেক্র বাবু বিস্তর পড়িয়া শুনিয়া তাঁহার পুত্তকথানি ভাল করিতে অনেক টনের আকর্ষণবিষয়ক নিয়ম বুঝিতে পারেন নাই ইহা দেখিয়া আমরা আশ্চর্য্য হইলাম। তিনি তাঁহার পদার্থবিধাার (অষ্টমাল্ক ২৭ এর পৃষ্ঠায়) লিখিয়াচেন य " তাবৎ वं**ष** है निकिश इंडेरन छूडरन পতিত হয় ইহা দেখিয়া সাপাততঃ এরূপ বেধি হয় যে পৃথিনীই ভাহাদিগকে आकर्षन कहत्रं, किन्द्र जाहाता शृथिवीरक कि পরস্পানকে আকর্ষণ করিতে সমর্থ নছে। किन् विद्यास्त्री किन्न विद्यास्त्री किन्न हरेद हैश मिठाख लाखिम्गक; सन्दर्भ शृभिकी जाशंकिमाक स्यज्ञत चाक्क क्रिक्ट्स द्याशास भूमिनीटक अनः नैतानाबदक

रमहेक्रण बाकर्वन करत किंद्र शृक्षितीत সামগ্রী পরিমাণ অধিক হওরাতে ভাহার আকর্ষণ অপেক্ষাকৃত অনেক প্রবৃদ।" भागता भाग्वर्ग रहेलाम दर निकेन কত মাধা ধরাইরা আকর্ষণ সংক্রান্ত যে নির্ম বাহির করিলেন তাহার কি শেষে निউটনের আকর্ষণ-এই বাাধা। সম্বীর নিয়ম বিষয়ে আমরা এইরূপ শানি যে একটি অভুপদার্থ অন্য জড-পদার্থের প্রতি বেরূপ আকর্ষণশক্তি धकाम करत (भरवांक भार्च अधम-টীকেও ঠিক সেই সমান বলে আকর্ষণ করে। ছুইটি দ্রব্য পরস্পরের প্রতি বে चाकर्रगमस्य श्रकाम करत्र (महे चाकर्रग-भक्ति नमान, निश्व नमान, ভाছাদের পরিমান কথনও অসমান নহে। অর্থাৎ পৃথিবী একটি ফলকে যে বলে ভাছার मिरक व्याकर्यन करत कर्नाहै छ क्रिक रमहे वरन भृषिवीरक ভाषात्र निरक आकर्षन করে। খোডা যে বলে গাডিকে টানে গাড়িও সেই বলে ঘোডাকে টানে। गटरका वाव व नियम कारनन किंद निय-্ মের কার্য্য ভালরপ বুরিতে পারেন নাই। ভাহাই বলিয়াছেন "একের আকর্ষণ चार्थकाकृष्ठ चार्यक थावन" माहस बांब् रंग विषय ना वृक्षिया वानकश्रन छून শিকা দিতেছেন আমরা সেই বিষয় নিয়লিখিতরূপে বুঝাইতে ইচ্ছা করি। व्याश्रीन এकचानि स्माहात्र (वाना क-

3.8

বের উপর দিয়া টানিয়া বইয়া যাইতে (व वन धकाम कति(वम (मह वान वि धक्यानि तोका चाकर्यन करत्रन छत् আকর্ষণের ক্রিয়া পূর্ব্য-অপেক্ষা অনেক मान इहेरव अवर तमहे वरन यपि अक वृह्माकांत्र खाहास हात्म ज्ञात कार्क. শের জিয়া এত অয় হইবে যে কিছুই' इम्र ७ (एथा वाहेर्य ना। अर्था० विष श्रृहेष्ठि वस्त्र छेभन्न ममान व्याकर्रागिक প্রকাশ করা যায় তবে ঘেটির পদার্থ-সমষ্টি অপেকাত্বত অধিক ভাহার উপর আকর্বণক্রিয়া অপেক্ষাকৃত ন্যুন হইবে। এত্বলে আকর্ষণের ক্রিয়ায় ন্যুনাভিরে হয় আকর্ষণের ন্যুনাভিরেক হয় না।

পৃথিবীর পদার্থসমষ্টির সহিত কোন ক্রব্যের পদার্থসমষ্টির তুলনা হয় না, স্বত-রাং পৃথিবী ও বৃক্ষচাত কল যখন ঠিক ভिन्नमिटक ममान वर्ग आकृष्ठे इत्र ज्यन কুত্র ফলের উপর পৃথিবীর আকর্ষণক্রিয়া এবং পৃথিবীর উপর ফলের আকর্ষণের ক্রিয়ার সহিত তুলনা হইবে না অর্থাং আমরা দেখিব যে ফল ভূপতিত হইন किन शृथियी करनत पिरक छेठिन ना।

मरहस्वांत् यमि कान हैरतिक श्वक না পড়িয়া কেবলমাত বাবু অকরত্<sup>মার</sup> पख्यगी ज नमार्थिका। बानि छान क्रिया পড়িতেন, ভাষা হইলে বোধ হয় এর<sup>প</sup> महाख्या खांच हरेटान मा। जासमानी निविद्याद्यम, " (यमन भृषिवी निक्षेष्

<sup>•</sup> विश्वासता देश्टबिक Mass भटकत कटर्च मामश्री ना निश्चित्र भमार्चमम् । यावरात कतिलाम।

গ্ৰন্ত বস্তুকে আকর্ষণ করে, সেইছপ ভাহারাও যত কুম ছউক পুথিনীর উপর আপন আপন আকর্ষণ-শক্তি প্রকাশ কয়ে। তবে পুথিবীর निक्रेवर्सी नमुमास खता शुनिबी व्यत्भक्षा কুলু, এ নিমিত্ত তাহাদের আকর্ষণগুণের किया आयास्त्र लेडाक हरा गा।

काकर्वनिवस्य मस्टलनात् यांका यादा লিখিয়াছেন, তাহা সমস্তই ভূপ। ৩৫ পুঠায,নিৰ্কাভন্তলে কি গুক্ল কি লঘু সকল वस्तरे धकशान हरेटड धक नगरत कृत-ठिउ इत्, देशत कातन निश्चित्राष्ट्रम (व "স্কল প্রকার জব্যকেই পৃথিবী সমান वल जाकर्वन करता" हेशाल जामता दहे বুৰিতে পাৰি যে একখণ্ড লোছ ও সেই প্ৰিমিত সোলাকে পুপিৰী সমান বলে লাকর্বন করে অর্থাৎ উভয়েরই সমান। আশ্চধ্য কথা বটে। "মর্বের প্রমাণু সকলকেও পৃথিবী যেবলে चाकर्मन करत्र भागक अ नागरमन भन-गानु मकलरक व किंक (महे वरन आकर्रन कात्र" अधीर मकन मास्त्र अर्थ यम সমষ্টি না হয়, ভবে স্বৰ্ণের (molecular weight) আপ্ৰিক ভার কাগত্বেৰ আণ পিক ভাষের সহিত সমান। তবে ভ্যাণ্টন যাহা বলিয়াছেন ভাছা বোধ হয় ভুল।

किया व व्यक्तिक्यानवरक गरहता वाव कि पुनिवादक्त श्रंथा याउँक। रामन दर किया अविक्रिया हांग क थिविनामं भव समस्य नर्मानं।, सिंख दर्मान বলি টেবিলের প্রতিচাপ ছইতে জবোব ছাপ অধিক হয় তাহা হইলে টেবিল खेश छ हुन इटेब्रा गाहेटन ।" किस हाश दव ক্ষণমন্ত প্রতিচাপ হইতে বেশী হয় ইহা निष्ठेव चलन ग। ক্রিয়াও প্রতি-জিয়া বিষয়ে আমাদের যাগা বক্তব্য আছে मगयाञ्चादत वन्नवर्गन ভাহা **আ**মরা প্রেকাশ করিব।

भाकर्षनसरकाछ निषम विनि वृति:छ পারেন নাই তিনি ছিচিবিজ্ঞান ও গড়ি विकारनत विश्व याहा वृक्तियाहिन, छ বুৰাইয়াছেন ভাহা বলা ৰাজ্যা। প্রতিপরিচেদ লইয়া সমালোচনা ক-রিতে পারিতাম, **কিন্ত প্রভাবের কলেবর** বাডিয়া যায় এই ভয়ে ক্ষান্ত হইলাম।

वायुनिकान ও বারিবিজ্ঞানে প্রণমে **हा**श काहारक बत्स अहे हि छान कतिया বুৰিতে হয়। ठांश काशांक बरल हेश বিনি ভাল কবিয়া বুঝেন নাই,ভিনি বারি-বিজ্ঞান ও বাযুবিজ্ঞানের কিছুই বুঝিতে পারেন নাই। মহেজবাবু বায়ুমানযদ্মেব বিষয় যাহা বলিয়াছেন ভাহাতে তিনি বাযুর ভার ও বায়ুৰ চাপ একই কণা विषया मिट्फंम कतियारहरन । (১৪ পृष्ठा) কিন্ধ তাঁহার আনা উচিত ছিল চাপ, কেবল চাপ বাডীত ভার নহে এবং ভার खन्न जात वहे हान नरह। (presure is presure and weight is weight) কোন পাছতিত বাভাবের ওম্ন করা क्षक कृष्ण्यत शास्त्रकाच् बाहारमञ्ज क्षण्या वार्थ करें। में अहार नेवान करेंदक नाटर, किस करका हान

অন্যের চাপের সহিত স্থান ময়। বায়ু-সান্যত্রে যে পার্দ উঠে বাহুর ভার তাহার কারণ নম, বায়ুর চাপই ভাহার কারএ; একটি মুখবন্ধ কাচপাত্রের অভ্যন্তরে যদি বাযুদানবন্ত রাখা বায়, ভাহা ছইলে সেই ষ্ত্রের পারদের উপর কিছু উপরিস্থ সমস্ত বাতাদের ভার পড়ে না, তথাপি পারদপাত্তের মুখ খোলা থাকিলে যতদ্র উঠিত বন্ধ করিলেও ততদ্র উঠিবে। যদি পাতের মধাক বারু ঘনীভূত করা বার ভবে বার্মানবজের মধো পারদ আরও অধিক উঠিবে। কাবণ বায়ুর চাপ বায়ুর খনত্বের উপর নির্ভন্ন করে, ভারের উপর নির্ভর করে না। এইরপ ভার ও চাপের একই অর্থ মনে করিয়া অনেকে व्यामक शीनायां करत्न। (यमन महिक् वावू विविद्यादहन (य " व्यामता त्याच्र.७१६ यन ভারে আফান্ত বহিয়টি, আশ্চর্বোর विषय ७३ (य श्वामामिशटक कानज्ञल ভার শহা করিতে ২ইতেছে ইহা আমর: धकवाद खरमछ मरन कदि ना।" मरद्रख .বাৰুর পকে ইহা অতি আক্রেগার বিষরু বটে, কারণ তিনি ভার ও চাপের বিভি-রতা কথনও মনে ভাবেন নাই, কিছ যিনি ভার ও চাপের বিভিন্নতা স্পষ্ট ব্ৰিয়াছেন ভিনি এই বার্দাগরে মগ্র रुहेबाও (कन स्व किছू छात्र मर् करबन न। छाहां, देरनव वृजिशास्त्र । वास्त्रक আমরা মৃণ্ন মোট মাখার করিরা না বেড়াই তখন নিজের শরীরের ভার ভির किहूरे परम कति ना । वाष्ट्रगागरत कून

বিশ্ব। বেশী ভার বছন করা দুরে থাকুক বহং কম ভার বছন করি, কারণ বাযুমধ্য থাকিলে শরীরের যে ভার ও শরীরের আর্তনপরিমিত বায়ুর ভার যোগ করিলে নির্বাভেশ্বলে শরীরের ভারের সমান হয়।

ভরল পদার্থের কোন বিশ্ব উপর চপে, presure at a point), চাপসমৃষ্টি (total presure) সংঘাত চাপ (resultant presure) প্রভৃতি ইহাদের প্রভেদ স্পাই করিয়া না ব্রাইয়া দেওয়াতে এক চাপ কথা লইয়া প্রভেষ্টিয়া অনেক ভ্রম ঘটিয়াছে।

মহেন্দ্র বাবু ৭৪ পৃষ্ঠায় লিখিয়াছেন
"তরল বস্তুর পৃষ্ঠদেশ সর্ব্বেত্ত সদান
উচ্চ।" ইহা পড়িয়া আমরা এই বৃন্ধিতে
পারি যে গলোতী ও সাগরসক্ষমের অলপৃষ্ঠ সমান উচ্চে অবস্থিত। কলিকাতার
গলার জলপৃষ্ঠ সাগরসক্ষমের জলপৃষ্ঠ হইতে
উচ্চ এই কথা কোন বালককে বলাতে
শে উত্তর করে বে, তাও কি হর, আমরা
পদার্থবিদায়ে পড়িয়াছি "লল উচ্ নিচ্
ইইতে পারে না।" "তরল বস্তুর পৃষ্ঠদেশ সর্ব্বত্ত সমান" ইহা লিখিবার সময়
মহেন্দ্র বাবুর সন্দের ভাব এই যে তরল
বস্তুর ব্যান সামাবস্থা থাকে তথ্য
ভারার পৃষ্ঠদেশ সমোচ্চ।

১২২ পূঠা " স্বাকিরণ বায়্বালির নবা বিরা আদিরা পৃথিবীপৃঠে পতিত বন। কিন্তু তক্ষুরা রায়্রালির উষ্ণভার ভার্শ বৃদ্ধি হয় না। পৃথিবীর পূঠ হইকে কেল ক্ষতিক্লিত পরিচারিক ক'শ্রিব্যবিত

इतेश देशंदर केंक करता कहे निश्चित वाश्वाणित अध्यात्मभ्राज उक्क किन्द উর্নদেশ হিম।" পূর্বপৃঠার পরিবাহন काहारक वरण वृत्ताम चार्छ। यकि धक कड़। बन इतीए शहम कहिए नगाहे, खद निरम्भ जन श्रीथरम शहम स्केटन। গরম *অল ল*খু ছওয়াতে উপরে উঠিবে এবং উপরের জল নীচে আসিরা পুনরার श्वम इक्टर जरः উপরে উঠিবে। এই-ৰূপে তাপ প্ৰবাহিত হওয়ার নাম পরি-বাহন। স্থতরাং পরিবাছনধারা যেরপ এक कड़ा क्ल ममछ ममान डेक इन সেইরূপ সমস্ত বায়ু সমান উষ্ণ হইবারই কথা। অতএব উপরের বাতাস কেন भीजन दम्हे विषय द्य कावन श्राप्तिंड हरेबाह्य डाहात युक्ति अहे-पूर्वाकितन দারা পৃথিবীপৃষ্ঠ উত্তপ্ত হয় পরে পরি-বাহন ছারা বায় উক্ত হয় কিন্তু পরিবাচন ৰশত: সমস্ত বায়ু সমান উষ্ণ হইবার कथा এইজন্য বায়ুরাশির অবোদেশ উষ্ণ ও উद्दान दिम। यथ्डे वृत्रिवाहि। উপবের বায়ু কি কারণে শীতল ভাহা वामन विश्वरण मः करण विताल हेला क्ति।

প্রথমে কোন বার্নির্বাভনযঞ্জের আবরণমধ্যত্ব বায়ুর চাপ ক্যাইয়া দিয়া
যদি পরে বার্হিরের বায়্ প্রবেশ করান
যার, তাবে বায়ু প্রবেশকালে শীকল
হইয়া পড়েঃ এমন কি কোন কোন
সময় বায়ু সমাহিত কানীর বাশ কুজ্ব-

विकाद व्यक्तित शांत्रन करता कातन वाह एव वाहिएतत बाह्य शृदर्श वि हांश दिन व्यवित्त-व्यक्तासहत् शहरम कारण (गरे छारशब द्याग रश्यारक छेराब আরতন বৃদ্ধি হয়। এই আয়তনবৃদ্ধির সময় বায়ু চতুঃপার্যন্তিত বাযুর চাপেয় বিরুদ্ধে যে কার্য্য করিল কোন শক্তি দারা সেই কার্বা সমাধা হইল। পশুতের। ত্তির করিয়াছেন যে আভ্যন্তরিক তেন্দের কিয়দংশ ক্ষরিত হইবা উক্ত কার্য্য সমাধা হটল স্থতরাং বায়ু শীতল হইরা পড়িল। আমরা জানি যে যত উপরে উঠা যায় ৰাযুব চাপ ভত কমিতে থাকে, স্ভরাং ভূতলগরিকটন্থ বারু যথন উল্লপ্ত হইরা উপরে উঠে, যত উপরে উঠে তত তা-হার চাপ কমিতে থাকে; স্থভরাং ভাহার আয়তন বৃদ্ধি হয় ও শীতল হইয়া পড়ে; কিন্ত এইকপে শীতল হওরাতে উহার ঘনত্বের বৃদ্ধি হয় না স্কুডরাং পুনরায় नामित्रा चानित्रा चार्वात उष्क इत्र ना ।\*

মহেক্স বাবু কতকগুলি শক্ষ বাবহার
করিয়াছেন, ভাহা কি অর্থে বাবহার করিরাছেন বালকদিগকে বুঝান উচিত ছিল।
বথা সামগ্রী (Mass)- লম্ব (Vertical)
সমতল (Level) ইত্যাদি। তিনি যথন
কুষার অর্থ বুঝাইয়া দিয়াছেন (১২৩ পৃষ্ঠা
ভূষা নামক যে বস্তুটির হারা তেলকালি
ক্রেক্ত হয়) ভখন ঐয়ণ কথা গুলিরঅর্থ বুঝাইয়া দিলে অসকত হইত না।
কায়ণ আময়া লম্ব অর্থে perpendicular

श्रेक्ष करण कका मगरम मगरमान्य भविकान करण शिवितार वालन विश्वन ।

সমতল অর্থে (plane amperfices) ব্রিয়া বৃথি। অড়ের অনুষ্ঠ সংধ্য অভের অবি-নখনতা গুলটির উল্লেখ করিলে বেখি হর রেশি ক্ষতি হইত না।

অবিক আর কি বলিব ইহাতে নাই
এমন কিছুই নাই। ইহাতে অনুপ্রাস
আছে, অলম্বার আছে, শস্বিন্যাস আছে,
কবিত্ব আছে, যথা (৯০ পৃষ্ঠা) 'বারু না
থাকিলে পর্বতনন্দিনী ইম্মাত্ত স্বিল্পালিনী প্রবাহিণী স্লোতম্বিনীগণ কলকল
রবে প্রবাহিত হইত না। বায়ু না
থাকিলে কাদ্দিনীর ললাট্দেশ সৌদামিনীরূপ সিঁথিতে সমুজ্জলিত হইত না।
ইহাতে সু আছে, কপিকল আছে, দড়ি
আছে, ললপাত্তও আছে। মোট 'হিঁরা
মলিয়চ হ্যার,প্রাড্বিবেক হ্যার,ধ্রভ্রারবি

হারে সাব শেবে প্রশংসাপত বি হার।
মহেন্দ্র বাবু বিজ্ঞাপনে বিধিয়াছেন
বাজালার বিজ্ঞানবিষয়ক সহজ্ঞ বিষয়
লইরা কোন ভাল বই নাই বলিয়া তিনি
এই ভাল বই লিখিতে প্রবুত্ত হন।"
কিন্তু অক্ষর বাবু যেরূপ পরিষাররূপে
বিজ্ঞানবিষয়ক প্রভাব নিধিয়াছেন তাহার
পর মহেন্দ্রবাব্র ভাল বই একটু পরিষার
হইলে স্থী হওরা বাইত। যে যে বিষয়
তিনি ভালরূপ ব্রিয়াছেন তাহাই লিথিলে ভাল হইত।

বিনি এই সমাণোচনার বিপক্ষে কিছু বলিতে ইচ্ছা করেন ভিনি এই বঙ্গদর্শনে প্রতিবাদ লিখিয়া সকলকে জানাইলে সন্তুঠি হইব।

শ্ৰীৰ, গো,

### ~~~~

# অভিজ্ঞান শকুন্তল।

## ২। তুত্মন্ত – নাটকের চরিত্র।

ভানেক প্রথম শ্রেণীর নাটকে ছই রকম
নাটকত্ব থাকে। একরকম নাটকত্ব
দৃশুমান—নাটকের আধ্যারিকা পড়িরা
গোলেই দেখিতে পাওরা যায় এবং বৃথিতে
পারা যার। আর একরকম নাটকত্ব
অনুশ্যমান—নাটক পড়িরা গেলেই
দেখিতে পাওয়া যার না এবং বৃথিতে
পারা যার সাক্র্মিতে হইলে ভিতত্তে
পারা যার সাক্র্মিতে হইলে ভিতত্তে
প্রথম করিতে হয়। একরক্ম নাটকত্ব

নাটকের কারাতে আঁকা থাকে—দেথিতে ইচ্ছা কর আর নাই কর, নাটক
পাড়িতে গোলে দেখিতেই হইবেক। আর
একরকম নাটকড নাটকের গায়ে আঁকা
থাকে না—ইচ্চা না করিলে দেখিতে
পাওরা যার না—ইচ্ছা করিয়া বৃত্তিবারা
টানিরা বাহির করিতে, হর। সম্প্রণীররের হ্যান্গেট নামক নাটক প্রতিবাহ
, দেখিতে পাওরা বার বে মুবরাক্ হ্যান-

লেটেব মন তাঁহার ছরাছা পিতৃবোর महस्क द्यावशूर्व, श्वनाशूर्व, শিক্হত্যার श्राहित्माधवाममाशृर्व, किस श्राहित्माध সাবনে অনুচ্সন্ধর-পিতৃবাঞাণসংহাবে অনিশিচভহন্ত। দেখিতে পাওয়া যায়. নাটকগানি প্রথম হইতে শেষ প্রায় এই ছিভাবান্ধিত। দেখিতে পাওনা যায় যে প্রথম হইতে শেষ পর্যাত যুধরাক হাাস न्हे शिक्रातात श्रीनमःशाय कतिवात सना ह्यानक चार्दिशवान, किंद्ध धानमः हात्र हारान करवन कतियां छ कदिए आहत्रन াা। এইটি হ্যামলেট নাটকের দুশামান ॥हेकात्र-नाष्ट्रकथानि शिख्या शिल्हे দ্বিতে পাওয়া যায়—পভিয়া গেলেই কিন্তু এই দুশামান চাকে পড়ে। वित्व भूत्य अकृष्टि भूष वा अपृश्चमान किंक आरम-এই विভাবের মূলে মানব প্রকৃতি **বিভাবে।** পাদক ছে। যে বিশেষ মানসপ্রকৃতিব বলে. ं विष्मेर महनाश्रम्भ काली व स्वरन कार्या-<sup>हिद्ध</sup> ইচ্চা এবং স**রৱের** মধ্যে তইরূপ রোধ উপস্থিত হয়, ভাহাই হামেলেট हेटकर शृष्ट वा अनुभागान नाहेकछ। ু গৃত্বা অনুশামান নাটক জ্ব দুশামান व्याप्तक कावनचक्रम । पृत्रामान गाउँ-वत नाव देशांक माउँदक्त शांदत ভারকণে অভিত দেখিতে পাওৱা বার

না—পূত্নিছিত ৰণিয়া ইহাকে খুঁজিযা
পাতিয়া লইডে হয়। অভিজ্ঞান শক্তল
নাটকেও ঠিক্ ভাই। পূর্বপ্রতাবে কে
নাটকছের কথা বলিয়াছি তাহা দৃশামান
নাটকছ। এই দৃশ্যমান নাটকছেব মৃশে
যে গৃত অদৃশামান নাটকছ আছে এপন
তাহাই দেখাইবার ডেইা কবিতেছি।

প্রপ্রস্থাবে আমবা গুলুম্বসম্বন্ধে যাতা বলিয়াছি ভাগাব সাবমৰ্শ্য वृक्षियां प्रिथिट इवेटक्ट । क्षुष्ठ करनद **७** थांवरन खान्य कतिए विश्वाहन-একটি অসামানাা কপলাবণাসম্পন্না বালি-কার সভিত প্রাণয় কবিতে বসিয়াছেন। এই প্রাণয় কবিতে বসিষা ছল্পজেব মহা-भरीका उठेश श्रीता । ७ किएमत भ-রীকা প এ কি জন্মন্তেব প্রণারের পরীকা প (वाथ इस व्यानक विनादन--हैं। जाहे। (वाथ इय प्रात्म विवादन (य इन्नुस बनमना जर्भावतन এकति बहावहसी. সবলমনা, বাজমাহাস্থামগ্রা ভাপসবালাকে দেখিয়া প্রথ করিয়াছেন বলিয়া পাছে क्टिक प्राप्त करत राहेसा महाकवि भरीकांचाता (स्थाहेट्सन (य (म खावर পৰিবা প্ৰথম। এ কথাৰ একটি উত্তৰ धरे दा कानिमारमत नामि व्यवस्थानीन ক্ৰিগণ দৃষ্টিত প্ৰাণয় শইয়া কখনও कावा वा नाहेक लाखन ना । विडीत

<sup>\*</sup> হপ্রসিদ্ধ কর্মাণ সমালোচক Dr. Ulrici সেল্পীররের রোমিও এবং জুলিবেট ক নাটকসম্বন্ধে এই ক্ষা বলিয়ালেল :---

That the leading interest of this drama is centered in the loves Romeo and Juliet, is clear even to a child. Still I cannot persuade

क्षेत्र धरे (र कन्दम्डनक्रोरीनिक्रका भक्षनात्क बाद्यनकना। मरने, कतिया উচ্চার পাৰিগ্রহণসম্বন্ধে চক্ষম ক্ষেত্রপ সন্দেহদংক্ৰ হন, ভাহাতেই স্থমাণ ষে তুম্ব দ্বিতাভঃকরণে শক্তলার সহিত্ প্রণয় করিতে বসেন নাই। ডঙীয় উত্তর এট যে ছয়প্র শক্ষলাকে গান্ধ-विशास विवाद कविद्या विवाद्य निमर्भन-শ্বরণ তাঁছার নামান্তিত একটি অঙ্গরীয়ক मक्सनारक पिता सन। ठड्थं छेखत এই যে উপনাদের প্রারম্ভেই কবি ছন্মন্তকে যেরূপ শাস্ত এবং পবিল মূর্তিতে দেখাইয়াছেন, ভাহাতে ভাঁহার প্রবরের পরিত্রতা সমর্থন করা নিশুরোক্ষন ৷ তবে আসরা এইটুকু স্বীকার করি যে এই পরীক্ষার গাড় পবিত্র প্রধরের প্রকৃতি অভি शविद्यानकर्ण शकोण शांहेग्राह्म । मनुषा-প্রধারের প্রকৃতিপ্রকটন করা নাটক্যাত্তে-बहे छित्मना वरते। किन्द छाडे विवश আমরা এমন কথা বলিতে পারি না বে শুদ্ধ পৰিত্ৰ প্ৰাৰম্বের প্ৰাকৃতি বৃঝাইবার অনা মহাকবি ছয়ন্তকে মহাপরীকার নিকিপ্ত করিয়াছেন। সে প্রকৃতি ব্রাইতে इंट्रेंट्र नांक्र निविद्य के इंद्रेट्ट , अपन ভোন কথা মাই। স্থানিক আমেরিকা করি লংকেলোর Evangeline নাম উপন্যাসিক কাবা এই কথার এক প্রানাণ। আমরা ভানি যে ছ্মান্তের মা পরীক্ষা ভয়ানক যম্বনাম্য—আমরা ভা যে সেই পরীক্ষার পড়িরা ছম্মন্ত অং মন্ত্রণভোগ করিয়াভেন। কিন্তু পরি ভাবে প্রবন্ধ করিয়া কোন্ নৈতিক নিয় মন্ত্রণাভোগ করিছে ছয় ? অভএব পা প্রান্ত্রন প্রকৃতি দেখাইবার জন্য যন্ত্রমন্ত্র পরীক্ষা হটল, এ কথা মনে ই সম্প্ত নীতিশান্ত্রের, সমস্ত ধর্ম্মান্তেরিক নি

তবে এ প্রীকা কিসের প্রীক প্রান্ধী বড় গুরুতর। অতএব কি বাহুলাবাাখা প্রয়োজন। প্রথম প্রব গুলুজের প্রণরোপাখান বে রকম দি করিয়াছি, তাহাতে স্পান্ধ বুঝা যার গুলুজের প্রণরের স্ত্রপাত হই ভাহার পরীক্ষার মারস্ক। আম্রা দে পাই যে ভাহার জনরে প্রেমসঞ্চ সঙ্গে সংক্রেট ভাহার জনর যরণ আম্রা দেখিতে পাই ভ্রম্ম প্রেমে বিত ইইবামান্তই প্রেমাম্ক্রবের

Dr. Ulrici cieles Shakspeare's Dramatic Art alas desa >14

myself that the meaning of the whole piece is exhausted in deification and entombment of love, and that this idea constitute the groundwork of the play. On the contrary, Shakspeare accreely have designed to deify love merely as an inexpressionly feeling—an intoxicating passion. That were, indeed, an idolate which art could never be guilty, even though, like the African his Fetish, it should destroy its idol with its own hand.

क्षामत्त जक्तम । \_ चामता (मनिए ज भाहे, मार्थ ज्यारस्य समग्र त्थ्रमविख्यनं, रमहे ভেই ছন্নভের মন ধর্মভন্নে ভীত। ব্য কি ? না শারীরিক বিকারযুক্ত হৃদa ভাববিশেষ। ক্লেম একটি passion। र्श्चय कानम्भक। भकत्न**हे का**त्नम জ্ঞান এবং ভাব প্রায়ই পরস্পার রোধী। • ইউরোপীয় দার্শনিকেরা नन (न sensation and perception ar an inverse ratio to each other ! ামিও জুলিরেটের প্রেমে মুগ্ধ হইরা প্রেমের পথে যে সকল কণ্টক ছে তাহা দেখিতে পান না। ত্রুত্ত স্তলার প্রেমে মুগ্ধ হইয়া সেই প্রেমের যে সকল কণ্টক থাকিতে পারে বুঝিয়া দেখেন। ইহাতেই এক বুঝা যায় যে সেকাপীয়ুরের নায়ক वत भागत्न कानज्हे; कालिनाटमत क ভাবের শাসনেও জ্ঞানের শাসনা-। ইহাতেই বুঝা যার যে সেকা-রের নায়কের মনে ভাঁছার ভাবের ॥भी किडूरे नारे; कालिकाटमत नाय-ंगरन डाहात छारवत विस्तानी कान <sup>াজা</sup>নমূলক ধর্মজন্ম আহে। ভাই व्हिनाम त्य, इन्नरस्त्र व्यनत्त्रव स्व-रहेए**टरे डाइ।त भन्नीकात आतस**। ানে আর একটি কথা বলা আব-নেজপীররের নামকের প্রেমের वाश्वसम्ब-मान्त्रीतिक धवर वेश्यवरमञ्जू हिन्नमञ्जूकास्मिक। रिगत नाष्ट्रक द्वारम सम्बद्धन मक्ड विष किहूरै नारें। इश्व (मबिट्ड-**एक, मक्छलात जनगास्**निशा स्वक्:य-ভाগिনী शिव्यका এবং অনস্থা, শকু छना द विवाद्य चिकामीटक मियुका। বুজিমান্—বুঝিভেছেন্,রু আশ্রমের অধি-মায়িকা গৌত্মী, সব জানিয়াও ভান করিতেছেন যেন কিছুই জানেন না। তিনি অমুসন্ধান করিয়া অবগত হইয়াছেন (य अक्षः अजवान् कन् (कवन छेनयूक्त পাত্রের অপেকার বসিরা আছেন। বস্তুত্ত গ্রুম্ভের প্রেমের একমাত্র বিদ্ন হ্মতের অহর্জগতের জ্ঞানমূলক ধর্মভাব। তার পর আমরা দেৰিতে পাই যথনই হ্মর শকুষণাভাবে ভোর তথনই মহা-কবি তাঁহাকে সেই ভাবের প্রতিশ্বনী অবস্থায় নিকেপ করিতেছেন। আমরা দেখিতে পাই, যখন হল্নন্ত মোহাভিভূত, তথ্যই মহাকবি তাঁহাকে পৃথিবীর কর্ম্ম-ক্ষেত্রে প্রবেশ করিবার নিমিত্ত আহ্বান क्रिटिष्ट्रमः मक्ष्णे क्राप्तिन (य्थाप्त মোহাধিক্য সুেইখানেই কার্যাশক্তির নাশ — (महेबारनहे यस्या खात्र উদাयहीन। একবারমাত্র শকুস্তলাকে দেখিয়া পুনরার **डाँदा**क मिरात समा <u>क्</u>या लागा ति न হইস্নাচেশ। হইসা ঋষিদিগের আহ্বানে भूगर्मनामाय **উৎসাহিত হ**ইয়া উঠিয়া-८७म। এখন স্ময় রাজমাতার নিকট र्हेट गृह् প্রভ্যাপ্রনের আক্রা আগিয়া উপস্থিত হইল। अर्थाৎ बाबाजार केर चारण्यक्तकारकते मध्यम् উপव्रिक 🖈 हेन्। के

कार्यक्ष कि ? यहाँ क्रांत्रमा करव रुद्

্যাধবাকে স্থানাম্বরিত করিবার অনা कृति अञ्चल पहेनादकोमन प्रात्मा करवन नाहै। किन्न अपि वना आवभाक বে এই আয়ুভাব এবং আত্মেচবভাবের भः च र्व आ (शृष्ट जारतिवर्धे स्वयं इकेंग) ছয়ন্তের প্রেমশক্তির প্রানহা প্রতিপর লা হইয়া তাহাব মাতৃলেহের এবং कर्छनाळारमव कावनहां क्षांत्रियत इहेन। ভবে কেমন কবিষা বলিব যে ছন্নতেব পরীকা তাঁহার প্রোনশক্তিব প্রীকা ? আবার বগন ছন্নত্ত শকুত্তলাকে পাই-য়াও না পাইয়া প্রাক্ষণিতচুরীর ন্যায় (अयानन উन्नात कतिरहस्म, उभन्हे गहाकित छाहाटक विशव्यत खन्नार्खद्रव শ্রবণ করাইলেন। আবার সেই আয় ভাব এবং আস্মেত্রতভাবের সংঘর্ষ। এবং আবাব সেই বক্ষ আয়ভাবের লয় হইরা আত্মেতরভাবেব ঘোরতর উদ্রেক। আবাব দেই রক্ম প্রেমশক্তির প্রবশ্চা চিত্রিত না হট্যা সামাজিক (ম্বচেব এবং কর্ত্তবাজ্ঞানের প্রাণশতা চি ত্রিত र्रेन।

আর বলিবাব আবশাক নাই। পূর্ম্ম-প্রস্তাবটী শ্বরণ কবিলেই অবলিষ্ট এবছিগ ষ্টনাগুলিব অর্থগুরুত্ব এবং ভাবগান্তীর্য্য অনুভূত হুইবেক।

এপন বোধ হর বলা মাইতে পারে যে ছয়প্তের পরীকা তাঁহার প্রেমশক্তির পদীকা নর, তাঁহার জ্ঞান এবং সংপ্রবৃত্তি-মূলক ধর্মফাব এবং আনাত্মপরভার পরীকা। নিনা পরীকার বিনা সংঘর্ষে

ভেল উংপর হয় না। কিছ কে না জা त्य दम्हे विषय हिल्लम्बित श्रेष छुनि विश्वनश्मत्र दिश्वनकाम इग्नड ग विशरतंत्र कार्हनांन अनिया बीहरिक ध्यूर्कः नहेश डेविया मेड्डिसन उ (नाम डठेन (गन अक्टी खकांश ज শিখা দিগত উদ্ভাসিত করিয়া উঠিল। ३ **जुजारञ्च गरनद मः घर्व किरमद ऋ** इटेटक लाटब ? आमारमय ट्यांथ इर সংঘর্গ সেই মনের আফ্রভাবের ১ আত্মেতর ভাবের সংঘর্ষ। বোধ হয় এ সংঘর্ষ সেই মনেব ঘ পরতাব এবং স্মাঞ্পরতাব সং चार्मात्मत त्रांभ इय अ मः वर्ष (महे म একঅ'শেব সভিত আর একঅং সংঘর্ষ। সেক্সপীয়রের সর্ব্বপ্রধান ( ভৰ্জাপক নাটক, রোমিও এবং (ब्रेंडे. এ ब्रक्टम्ब नव्र। द्रांभि ध्व সংগর্ষের কারণ ছাইটি বংশের চিবা — বাহ্যভগৎমূলক। রোমিওতে, मिट्ड এकটि त्रिशृश्वस्त मन, चात्र अव বাহ্য বা অভ্যাগ । হুমুতে, মনে দিকে একটি রিপুমান্ততা আর <sup>এং</sup> वैकि ममण मनते। ছুইটি প ल्यानी इहे ब्रक्म। कान् व डेरहडे, भरत वनिया

আমরা দেখিলাম যে গুমন্ত আন্তেভরভাব বা সামাজিকভাব-চরিত্র। ' আমরা দেখিলাম <sup>বে</sup> স্থান্তের মনের আক্ষাবের এব ভরভাবের বংশব সেইখানেই আত্মেতরভাব বিজয়ী। আমরা দেখিলার, যেথানেই আত্মনস্তোগ এবং সামাজিক ধর্মের বিরোধ সেইখানেই ছ্মস্তের সামাজিকধর্ম প্রবলতর। এম্ন কেন হয়? এ প্রান্ধের উত্তর পাইতে হইলে, সেই মানাজিক ধর্মভাবের প্রকৃতিটী

• জগতের ইডিখান প্রালেচিনা ক-রিলে বুঝা যার যে, মহুষ্যের সামাজিক প্রকৃতি গৃইপ্রাকার-একটি ভাবমূলক, আৰ একটি জ্ঞান বা যুক্তিমূলক। সামা-ভিক ধর্মাধর্ম্ম-সামাজিক কর্ত্তবাকর্ত্তব্য নির্বয় করিতে হইলে জগতের কতকগুলি লোক নিঞ্চের যুক্তিশক্তিপ্রয়োগ না ক-রিয়া পরের মতাবলম্বী হইরা চলেন: আর কতকগুলি লোক পারের মতাস্থ সরণ না করিয়া নিজের যুক্তিশক্তিপ্রয়োগ कतिया भारकन। পরের মতাতুসরণ विदिश्वा मश्मद्रिधर्या कता स्माट्यत्र कार्या। ্দ মোহ শ্রদ্ধাতিশয়সুলক। ভারতে এ প্রান্ত এই মোহমূলক সমাজপুণানী প্রচলিত রহিয়াছে। আম্বা সকলেট জানি যে এই প্রাণিসঙ্কুল লোক দাগর ত্লা ভারতভ্মিতে অতি পুর্বকীল হইতে বান্দ্রণবাকাই সামাজিক ধর্মাধর্মের এক মাত্র স্ত্র—একমাত্র নিয়ামক। এথানে ধর্মাচার্যা যাহাকে ধর্ম বলিয়া নির্কেশ করি-बाइन, काछि काछि मानव छाहारकहे কার্যাক্ষেত্রে ধর্ম বলিয়া অমুসরণ করিয়া ভাসিয়াছে। **এখানে ধর্মাচার্য্য যাহাকে** -भन्यं वित्रा निर्देश कतित्राष्ट्रम काष्टि

কোটি মানৰ ভাহাকেই কাৰ্য্যক্ষেত্ৰে বলিয়া দ্বণাপূর্বক পরিত্যাগ 'করিরা ভাগিরাছে।' উন্নতিশীল ইউ-রোপেও এই দৃশ্য দৃষ্ট, হইয়াছে। ছই কি তিনশত বৎসর পূর্বে সমস্ত ইউ-রোপবাসী ভারতের প্রণালীতে সংসার-ণর্ম ক**িছ—রোমানক্যাথলিক পু**রে: राजारे मध्य है भागत कि चेप्रतित একমাত্র ধর্মাত্র, একমাত্র ধ্রানিয়াগ্র এখনও व्यक्षिक इंडेट्राप-বাঁদীর মধ্যে এই নিরম প্রচলিত। এই মানবপ্রকৃতি রহস্যের মূল কি ? আমাদের বোধ হয় ইহার একটি মূল মনুষ্যমনের একরকস স্বাভাবিক অনসপ্রিয়তা-অমুসন্ধান করিবার শ্রমকাভরভাজনিত ইচ্ছাশক্তি বা will power এর 'থপতা। आत এको मृत, ठित्रपृष्टे উৎकृष्टे ठात সম্বন্ধ্যমনের শ্রহার ভাব। ভাল জিনিস প্রাচীন হইলে অনেকে শ্বভাবতই তাহাতে সম্ভমের সহিত আস্তে হয়। দে খাদক্তি একটি মোহের অরূপ হইরা मै। जात्र । तम तमारह व्यक्ति। निक क्र निष् मृश्व। দে মোহ খণ্ডন করা একরকম অসাধ্য विनिलिहे इस । आति कडक छनि (नोक যু ক্তি স্বারা धर्माधर्म मिक्रशन ক রিয়া थारकन । তাঁহার। পূর্বোক্ত মোহে মৃশ্ব নন! ভাঁহারা প্রাচীন মত, প্রাচীন পদ্ধতি, প্রাচীম বস্তুকে দ্বুণা করিয়া তাঁহারা নিজ বুদ্ধিমভার ্ पारकन। সম্পূর্ণ পক্ষপাতী। एष्डि मॅक्सम्मामरमञ् একটি স্বাভাবিক প্রকৃতি। এই প্রকৃত্

্তির বলে ইউরোপে প্রটেষ্টাণ্ট বিপ্লব ; ভারতে বৃদ্ধদেবের সমাজসংস্থার। এই ছুইটি মানবপ্রকৃতির কোণ্টিই পরি-ভাঙ্গা নয়। কিন্তু ছইটি একত্ৰীভূত न। इटेटन সমাজের বিষম অমঙ্গল ঘটে। সমাজ হয় ভারতের ন্যায় জ্মাট বাঁধিয়া উন্নভিদাধনে একফালে অক্ষম হইয়া উঠে, नव कहीनम में जाकीत कुाल्यत नाम অনস্তবিপ্লবাবর্তে ঘুরিতে থাকে। মহুষা-জাতির এই হুইটি প্রকৃতিরই আবশাকু। এবং মহুষালাতির ইতিহাদেও দেখা যায় যে মনুষান্ধাতি সভতেই এই ছুইটি व्यक्तित मात्रक्षमामाध्यात्र मिरक धार-মধ্যে যে সকল ভয়ানক সমাজবিপ্লব এবং ধর্মবিপ্লব হইয়া গিয়াছে, সেই মকল বিপ্লব সমুষ্যলাতির এই স্বাভাবিক সামঞ্জাসাধনস্পৃহার বলবৎ कानिनारमञ्ज इत्रष्ठ এই সামঞ্জ সাধন-স্পৃহারপ মানবপ্রকৃতির প্রতিকৃতি। ছন্নতে এই সামঞ্চা সংসাধিত হইয়া গিয়াছে। সেইটি বুঝাইতেছি।

হিন্দায়ে ছেমজের অগাণ ভ'ক। ভাঁহার দক্ষিণবাহ স্পন্তি হইণ, তিনি ভাবিলেন—

''অয়ে শান্তমিদমাশ্রমণদং কৃবতি চ বাহঃ কুতঃ ফলমিহাম্মাকং। অপবা ভবিতব্যানাং ভবন্তি দ্বাদ্বানি

সক্তি।"

এ ভক্তি বড় কম ভক্তি নয়। আমরা এ রক্ষ ভক্তিকে কুসংস্থার বলি। আমরা এইরপ বৃঝি যে পৌরোহিছের মোহে মৃগ্ন হইয়া জ্ঞানস্ত না হইলে এরকম ভক্তি মনে স্থান পায় না।

হুমন্ত এমন বিশ্বাস করেন যে অন্যে যাগ্যক্ত করিলে, তিনি তাহার ফলভাগী হইতে পারিবেন। তিনি বলেন—
''অনামেব ভাগধেয় মেতে তপস্থিনো মে
নির্মাণিতি।''

ত্মস্ত প্রচিলিত প্রথার পক্ষপাতী। বৃৎ কঞ্কীর কাছে শাঙ্গরিব প্রভৃতির আগ মনবার্ত্তা পাইয়া তিনি বলিতেছেন—

তেন হি বিজ্ঞাপাতাং মন্ধনাত্পাধারং
গোমরাতঃ, অম্নাশ্রমবাদিনঃ শ্লোতেন
বিধিনা সংকৃত্য স্বয়মেব প্রবেশরিত্
মইতীতি। অহমপি এতান্ তপস্বিদর্শনাচিতপ্রদেশে প্রতিপালয়ামি।

তুমন্ত হিলুধর্মান্তর্গত কর্ম কাও মানিরা থাকেন। তাঁহার গৃহে পবিত্র আহবনী-যাগ্রি সহত্রে রক্ষিত—

রাজা। উথায়। বেতাবতি ! অাঃ শরণমার্গনাদেশর।

ছ্মান্ত ননে করেন যে ভারতের মূনি
ঋষিগণ দেবতুলা। তিনি মুনিঋষিকে
দেবতানির্কিশেষে ভর করেন, ভালবাসেন এবং সম্ভ্রম করেন। তিনি জানেন
যে—

শম প্রধানেষু তপোবনেষু গৃঢ়ং হি দাহা-তাক মন্তি তেজঃ।

ম্পূৰা অ**গি স্থ্যকান্তা তে** হন্য তেলোহভিডবাদ্হন্তি ট

भाठक (वाष इम महत्वहे चीका<sup>त</sup>

কবিবেন যে, যে ব্যক্তির মনের বিশাস
এইরূপ, সে ব্যক্তি পৌরোহিত্যকুহকে
অভিভূত। পাঠক বোধ হয় বলিবেন,
যে ব্যক্তির মনের ভাব এই রকম, সে
বাক্তি ইউরোপের মধাযুগের নাায়
পৌবোহিতাপ্রধান যুগের লোক বই উনবিংশশতাকীর নাায় জ্ঞানপ্রধান যুগেব
লোক হইতে পারে না।

দুখান্তের কাছে মৃনিঋষির আজ্ঞা দেবা জ্ঞার নাায় মাননীয় এবং পালনীয়। তিনি মৃগয়ার শ্বরত্রর ঔংস্ক্রের প্রধাবিত হটয়া ভয়কৃষ্ঠিত পালায়নপর মৃগোপরি অব্যর্থ শর নিক্ষেপ করেন করেন, এমন সময় ঋষিদিগের নিষেধাজ্ঞা শ্রবণ করি-লেন। অসনি মন্ত্রমৃদ্ধের নাায় তাঁহার সেই আজ্ঞামূলম্বিত উষ্প্রশোণিতোত্তেনিত বলসারব!ত্ গুটাইয়া লইয়া তিনি সেই বীরহজোপযোগী শাণিত শর ত্ণীরের মধ্যে নিক্ষেপ করিলেন।

ভো ভো রাজন্ আশ্রমমূগোহয়ং ন হস্তব্যোন হস্তব্যঃ। ন থলুন ন খলু বাণঃ সলিপাত্যোহয়

মিমিন্
যুহ্নি নৃগশরীবে ত্লরাশারিবায়ি:।
ক বত হরিণকানাং জীবিভঞ্চাতি লোলঃ
ক চ নিশিতনিপাতা বক্সদারা: শরা তেঃ।।
তদাশু কুতসন্ধানং প্রতিসংহর সায়কম্।
আর্ত্রাণায় ব: শঙ্কং ন প্রহর্মনাগদি।।
রাজা। সপ্রণামম্। এষ প্রতিসংবত এব। ইতি যথোক্তং করোতি।

"স্প্রণামম্। এষ ক্রৈতিসংস্ত এব।"

বলিতে গেলে, ত্মন্ত প্রায় প্রাণাম করিতে করিতেই সেই ত্র্দমনীয় শর
শরাধারে ফেলিয়া দিলেন। মৃগয়োন্মন্ত
বীরুচ্ডামনি যেন একটা কঠরানলকিপ্ত
কেশরীর ন্যায় কোন একটা বৈত্যতিক
শক্তিদারা আহত হইয়া নিমেষনধ্যে
বিনষ্ট হইয়া পড়িয়া গেল। শক্তলা
নাটকেব প্রতিশক্তে ত্মস্তচরিত্রের
যেট প্রধান লক্ষণ, অর্থাং বিরোধিভাবের
অবিরোধে অবস্থান, সেট প্রতিপর।
এমন নাটক কি আর হয়!

আর বিস্তার না করিয়া এক ক্থায় বলিতে গেলে বলা যাইতে পারে যে পৃথিবীর ১২০ কোটি মানবের মধ্যে এখ-নও ৭০ কোটি মানব যেমন পুরাতন প্রথার কাছে এবং পুরাতন প্রপার যাজক-দিগেব কাছে মন্ত্রমুগ্রের ন্যায় মোহাভি-ভূত, কালিদাসের হুমন্তও ঠিক্ ভাই। কিন্তু ভাই বলিয়া হুন্নস্ত কি সেই ৭০ কোটি মানবের ন্যায় অন্তদৃষ্টিহীন ? তাই বলিয়া ছম্মন্ত কি সেই ৭০ কোট मानत्वत्र नाम् निष्ण ভाल मन्द्र विচातः করিতে অক্ষম এবং অনিচ্চ্ক—ধর্মা-চাৰ্যোৱা যা ভাল বলেন ভাই ভাল মনে करतन, धर्माहार्राता या मन्त्र वरतन তाই मन्न गरन करवन १ ना, इञ्चन्न (प्र প্রকৃতির লোক নন। শার্মরব তাঁ-হাকে বলিলেন যে পূজাপাদ মহা ঋষি কণু তাঁহার সহিত শকুন্তলার পরিণয়-কার্য্যের অন্থগোদন করিয়া শকুন্তলাকে তাঁহার নিকট পাঠাইরা দিবাছেন, অজ-

এব তাঁহাকে শকুস্তলাকৈ গ্রহণ করিতে হইবে। এ কথা শুনিয়া তিনি কি বলিলেন ? তিনি বলিলেন—

षरम। किभिन्यूभनास्य।

এ কি! মহর্ষি কণু বলিয়াছেন যে তিনি শকুন্তলার পাণিগ্রহণ করিয়াছেন। ভাহাতে তাপসকুলসম্রমকারী, তাপসকুলপক্ষপাতী, তাপসকুলভীত, তাপসকুলরক্ষক দমন্তের কি এই উত্তর ? আবার শুধু তাই ? এই অসমত উত্তরটী শুনিয়া শার্ম্বর ঈষং রোষান্বিত হইয়া বলিলেন—

কিং নাম কিমিদুপ্নান্তমিতি। নমু ভবস্তএব স্কুত্রাং লোকবৃত্তান্ত নিফাতাঃ। সতীমপি জ্ঞাতিকুলৈকসংশ্রমাং জনোহন্যথা ভর্ত্মতীং বিশঙ্কতে। জ্ঞতঃ সমীপে পরিণেত্রিষাতে প্রিয়াইপ্রিয়া বা প্রমদা স্বস্তঃ। এ কথা শুনিয়া ত্মন্ত কি ব্লিলেন— তিনি ব্লিলেন.

. কিমত্র ভবতী ময়া পরিণীতপূর্বা।

এ ত সেই অগ্নিপ্রভ সনাতনধর্ণনিরত
ঋষিক্মারকে এক রকম মিপ্যাবাদী বলা!
শার্ক রব ভারতের একজন তেজন্বী ঋষি
কুমার। মর্মাহত হইয়া ভিনি সমাগরা
পৃথিবীর রাজা হ্মস্তকে শ্রেষপূর্ণবাক্যে
জিজ্ঞাসা করিলেন—

কিং কুতকার্যাদ্বেলদ্বাদ্ধর্যং প্রতি বিমুখতো চিতা রাজ্ঞঃ ?

ত্মস্থ উত্তর করিলেন— কুডোংব্যসংক্রনাপ্রসং ?

ভারতের ঋষিতপত্মী প্রবঞ্ক ? আজ ত্মন্ত ভাও মনে করিতে সক্ষম ! ইহার कर्ष कि ? हेशत कर्श जहे—स्थात ভারতের ঋষিতপশী সভ্যের বিরোধী, কুনীতিশিক্ষক, ধর্মের বিপর্যায় করিতে উদ্যত, সেথানে ঋষিকুলপক্ষপাতী, ঋষি-कूलमञ्जमकाती इञ्चल श्रीवरात्का ३ इन শ্রদ। ইহার অর্থ এই—বেণানে পবিত্র श्वित वाका मनाजनमञ्जाद, व्यथितवर्हः नीय अन्यनाथा नीजि धवः धर्माटाउत विद्राधी, त्मशान प्रशास्त्र काष्ट्र शह-প্রদত্ত ব্যবস্থা অপরিগ্রহণীয়, নিজ্যুক্তি-সঙ্গত নীভিতত্ব অসুসর্ণীয়। ত্মত ঋষিবাক্য অসত্য বৃঝিয়াও ঋষি-দিগেব প্রতি কোপাবিষ্ট নন-শ্ব-দিগের প্রতি অশ্রদাবান নন। শাঙ্গরিব মিপ্যা কথা কছিতেছেন বুঝিয়াও হুল্লম্ব বলিতেছেন—

ভো তপস্থিন্ চিন্তয়ন্নপি ন থলু স্থীকরণ মত্রভবত্যাঃ স্বর্গনিঃ

তংকগমিনা তিনাক সম্বলক লাং প্রতান আনং কে বিনাম ক্ষমন প্রতিপংলা।

ক্ষমির মুপে অশ্রদ্ধের কথা শুনিরাও
চন্মন্ত ক্ষমির প্রতি সাস্থাবান্— এখনও
ভাবিয়া চিন্তিয়া দেখিতে চেন, কথাটা
সভা কি না। মন্ত্রেয় ইতিহাসে প্রারই
দেখা যায়, যেখানে স্বাধীন চিন্তা সেই
খানে প্রাচীন প্রথামুরানী আচার্যাকুলের
প্রতি সম্পূর্ণ অনাস্থা—সেইখানে পূর্বালি

এवः श्राण्डिक्को जाव । श्राप्टिक्षाण्डे धर्मा-বলম্বীদিগের কাছে পোপের নাম Anti-Christ এবং রোমান ক্যাথলিক ধর্ম খয়তানের ষড়যন্ত্র। বৃদ্ধের কাছে ত্রাহ্মণ हलान धवः दम-भूतानम्नकश्या (भोटवा-হিতাদ্ধিত কুসংস্থারকুও। ছুম্মস্তে জগ-. তের ছুইটি সামাজিক মানবপ্রকৃতি • একত্রীভুত; কিন্তু তাহাদের সংঘর্ষে কর্কশতা নাই—সমাজদগ্ধকারী অগ্নিশিখা উঠে না। এরপ সংঘর্ষ অসম্ভব নয়। ইংল্পের ১৬৮৮ সালের রাজ্বিপ্লবে ইহার সম্ভবতা প্রাক্তিপর হটয়াছে। এবং আধনিক মনুষাসমাজও বিনাবিরোধে এই তুইটি প্রতিদ্বন্দিভাবাপর মানব-প্রকৃতির সামল্লস্য সাধনের দিকে ধাণমান দেখা যাইভেছে। কোমভের স্মাদ্র-দর্শনের আবির্ভাব এই স্পৃহার- প্রধান নিদর্শন। হল্মস্ত এই গুঢ় ঐতিহাসিক নিয়মের চিত্র : হ্রাম্ভ এই অমুত ঐতি-হাদিক মানবপ্রকৃতির প্রতিমূর্তি। তুম্মস্ত সমগ্র ঐতিহাসিক মনুষাসমাজেব গুঢ়ার্থ-বোধক চরিতা। হয়স্ত ভূতকাল এবং ভবিষাৎকাল—উভয়কালের সমষ্টি। চন্মস্ত মসুযালাতির ইতিহাসলকিত নিয়তির ক**বিকল্পিত প্রতিমা।** তত বড় চরিত্র জগতের আর কোন নাটকে

আছে কি না সন্দেহ। কালিদাস বোধ হয় এত ভাবিয়া লেখেন নাই। কিন্তু কবির প্রতিভায় ভবিষাইতিহাসও নিহিত থাকে। কবি ভাবের চক্ষে সানব-প্রকৃতির অনস্তত্ত্ব দেখিয়া থাকেন এবং প্রতিভার গুণে মনুষাচরিত্রের সর্বাক্রীণ সৌন্দর্যা অনুভব করেন। তবে কলিদাসের সম্বন্ধ একটা কথা বলা যাইতে পারে। তিনি বৌদ্ধবিপ্লবের পর অন্থাহণ করেন।

ত্মন্ত প্রচলিত্যত এবং প্রচলিতপ্রথার অমুরাগী অথচ স্বাধীনচিস্তাশীল। ইহার <sup>4</sup> অর্থ কি ? আমরা দেখাইয়াছি যে প্রচ-লিতপ্রথার প্রতি অসুরাগ মনুষাহৃদয়ের একটি মোহের স্বরূপ। মোহ অন্ধ--যাহাকে অধিকার করে তাহাকে কিছুই দেখিতে দেয় না। তুল্ল সেই মোহের বশবর্তী হইয়াও স্বাধীন। ইহার অর্থ-ত্মন্ত অন্ধ হইয়াও অন্ধ নন। অর্থাৎ আবশাক হইলেই ত্মান্ত জ্ঞানেরদারা মোহের প্রকৃতি বুঝিতে পারেন—দৃষ্টি-নাশকারিতা দেখিতে পান। কিন্তু শুধু তা হইলেই কি হয় ? এমন লোক আ ছেন, যাহারা ছ্প্রাবৃত্তির প্রকৃতি বুঝিতে পারেন কিন্তু ৰুঝিয়াও চুম্পুবুজি পরিত্যাগ कृतिए भारतन ना। ना भारतियात

<sup>\*</sup> বোপ হয় প্রাচীনভারতে ঐতিহাসিক প্রাণাণীতে মানবপ্রকৃতি নিরুপণ করিবার রীতি ছিল না। কিন্তু ভাহাতে কিছু আইসে বার না। বৈ ব্যক্তি বালেন বিশেষ সম্বদ্ধে সামাজিক চরিত্রের গৃচ তত্ত্ব ব্রিতে পারেন, তিনি বে, ইতিহাস গাইলে সেই তত্ত্ব প্রতিহাসিক প্রাণাণীতে এ ব্রিতে পাবেন, তাহাতে সন্দেহ নাই। এমন স্থান বেলি বিজেয় মত ঐতিহাসিক প্রণাণীতে ব্রাইলে কোন দোব পড়ে না।

কারণ কি ? একটি কারণ তাঁহাদের সংপ্রার্ত্তির শক্তিহীনতা; আর একটি কারণ অভিত্তাবস্থা হইতে উপানশক্তিব অভাব। মনের এক অবস্থা হইতে অবস্থাস্তবে যাইতে হইলে চেটা বা উদ্যমের (effort) আবশ্যক। যে অবস্থা পরিত্যাগ করা যায় সে অবস্থা যতই অভিভাবকারী হয়, তাহা অভিক্রম করিবার চেটা তত্তই বলবং করা চাই। এই চেটার মূল—ইছাশক্তি বা will power।

হন্নস্তের মুনিশ্ববির প্রতি প্রেম এবং শ্রদা যে রকম প্রবল দেখিয়াছি ভাহাতে তাহাকে মোহ বলিয়া নির্দেশ করা যাইতে পারে। কিন্তু মুনিখ্যি অপেক। ভাল किनिराय अस्तावन स्ट्रेल, प्रश्नेष्ठ সহজেই সেই মোহ কাটিয়া ফেলিয়া সেই উৎকৃষ্টভর বস্তুটি লাভ করিবার **(ह्रां करतन। हेहात व्यर्थ এই यে कृत्र छ** সংপ্রবৃত্তির আধার। তাহাতে ভাঁহার বুদ্ধিবৃত্তি প্রথর বলিয়া তিনি সহজেই মোহের অনিষ্টকারিতা বুঝিতে পারেন। বুঝিতে পারিলেই সংপ্রবৃক্তি তাঁহার-মনকে অধিকার করে। অধিকার করিলে পর তাঁছার আক্র্যা ইচ্চাশক্তির সাহায়ে আয়াদে মোহমুগ্রাবস্থা হইতে অভিগ্ৰিড উৎকৃষ্ট অবস্থায় গমন করিতে পারেন। এখন মিজাসা এই — হল্মন্ত এই আশ্চর্যা ইচ্ছাশন্তি কোথার পাইলেন ? এ প্রশ্নের প্রথম উত্তর এই (य. नर्केन लिएक (गमन आंत्र आंत्र মানসিক গুলগুলি সমান পরিমাণে পায়

না, তেমনি ভাছারা ইচ্ছাশক্তিও সমান পরিমাণে পায় না। দিতীয় উত্তর এই যে মানসিকশক্তির মূলপরিমাণ যতই হউক নাকেন, সে শক্তি যতই প্রয়োগ করা যায় তত্ত বৃদ্ধিপাপ্ত হয়। ত্রুত্ব রাভা। পৃথিবীর কর্মকেল রাভাদিগের নাট্যশালা: সেইখানেই তাঁহাদিগকে অভিনয় করিতে হয়। নানাপ্রকৃতির লোকের সহিত, নানামতাবলমী সম্প্র काटबुद महिछ. अमःशा श्रद्रम्भविद्वांशी সমস্যার সহিত, অসংপ্য অভাবনীয় সহসাসন্তত বিপদের সহিত তাঁহাদের সংশ্রব। এই সকল পোলমালের মধ্যে থাকিয়া, এই সকল গোলমালের মীমাংগা করিয়া, ভডিংবং কার্যা করিতে হয়। দীর্ঘস্টিভা জগতের কার্যক্ষেত্রে অনর্থের मृत । । अन्रम्हाल निष्कत्र सूर्यकृः (१३ প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে চলে না, অপ্রথ वृक्ति इटेल हलाना। मीर्थस्की इटेल চলে না। পাঠক এখন সহজেই বৃক্তি বেন যে এইরূপ কর্দ্মকেত্রেই ইচ্ছাশ্রি প্রায়োগের বেশী প্রায়োজন এবং সেইজ্য ইচ্চাশক্তি বেশী আয়ত্ত এবং অভায হইয়া থাকে। নেপোলিয়ন, তালেরান পামাষ্ট্রন, ডিস্বেলি, বিস্মার্ক-এই সকল রাজা এবং রাজমন্ত্রিগণের অগী ইচ্ছাশক্তির কথা কে না স্নানে ? কণ্ট পর্বভায়নের মুখে আমরা শুনিয়াছি ত্মন্ত আসমুত্ত ভারতবর্ষের সমস্ত <sup>রার</sup> कार्या चत्रः कतिया थाक्त। (म व् इन्नरकत देखां मक्ति यामि वानी म वन व

অনারাসপ্রযোদ্য না হইবে তবে হইবে
কার ? প্রথম প্রস্তাবে আমরা ত্মন্তের
ষে আশ্চর্যা চিত্তসংযমের চিত্র ত্লিবার
প্রয়াস পাইয়াছি, পাঠক বোধ হয় এথন
সেই আশ্চর্যা চিত্তসংযমের গুঢ় তত্ত্ব
ব্রিতে পারিলেন। ত্মন্তের চিত্তসংযম
শক্তি এত প্রবলকেন? না ত্মন্ত পুরুষপ্রানের নাায় জগতের প্রতি সন্তাবপূর্ণ
হইয়া, প্রথরবৃদ্ধির অধিকারী হইয়া পৃথিবীর কর্মাক্তেরে বিচরণ করত ইচ্ছাশক্তি
সম্পূর্ণরূপে অভ্যন্ত করিয়াত্নে বলিয়া।

এইটা হন্বজের মনোগঠনপ্রশালীর গৃছ তত্ত্ব—গৃঢ় নাটকত্ব।

শক্ষলা লাটকের পঞ্চমান্তবর্ণিত প্রত্যাথান-দৃশাটা দেখিয়াই আমরা ছল্পন্ত
চরিত্রের গৃড়ভত্ব নিরুপণ করিছৈ সক্ষম।
সে দৃশাটা হল্পত্তর সামাজিক জীবনপ্রণালীর উদাহরণস্করপ। কিন্তু সে দৃশোর
ছেতু হর্কাশার শাপ। তাই আমরা প্রেণঘেই বলিয়াছি যে হর্কাশার শাপ শকুস্তলার উপন্যাদের প্রধান ঘটনা এবং সেই
ঘটনা আছে বলিয়াই শকুস্তলার উপন্যাদ
নাটক বলিয়া পরিগণিত ছইভেছে।

### --EOI 1834 1831 103---

## শিকা।

নহয় জীবনের উদ্দেশ্যনামক ুপ্রস্তাবে দেখান হইরাছিল, যে ভ্সিষ্ঠ ইইবার পর মন্থ্য সাভাইশ বংসর বয়স পর্যান্ত সমাজের ধার করিয়া থায়, তাহার পর এই ধার শোধ দেওয়া মন্থ্যার অবশ্য কর্ত্তব্য কর্ম্ম হয়। এই অবশ্য কর্তবাকর্ম সম্পাদন করিয়া যদি সমাজের আরো কিছু উপকার করা যায়, তাহা ইউলে মন্থ্যাজীবনের উদ্দেশ্ত সিদ্ধ হয়। অর্থাং ধার করিয়া যাহা থাইয়াছ, তাহা ত শোধ দিবেই; শোধ দেওয়ার উপর আরো কিছু বাড়তি ক্রা চাই।

যে সাতাইশ বংসর আমরা ধার ক্রিয়া থাই, সেই আমাদের শিক্ষার সময়ও দেহপুষ্টির সময় আমরা প্রতিভা-

শালী লোকের পক্ষে এ কথা বলিতেছি না। প্রতিভাশালী বাজিনিয়স ব্লিয়া এক একজন লোক আছেন আমরা र्यीकात कति। ইहाम्पत भंतीत পूष्टे ना **१३८७ ेशारत, ইशामत मकल मरनावृत्ति** স্বাক্ পরিচালিত না হইতে পারে, ত-থাপি ইহারা জগতের অনেক কাজ করিয়া য:ইতে পারেন। শরীর অহুত্ব, মেলাল খিট্থিটে, কুক্রিয়াসক্র, অণচ उँ। हारा. शृथिवी एक अरमक वर्ष वर्ष काष করিয়া অক্ষয়কীর্তি স্থাপন করিয়া গিয়া- ] আমরা এ প্রস্তাবে তাঁহাদের ় কথা বলিভেছি না। প্রতিভাশালী লোকদিগকে আমরা ভক্তি করি ভয়ও করি। তাঁহাদের কার্যাদারা

সমাস্থের উপকার হয় বলিয়া উক্তি করি।
তাঁহারা নিজে নানা ক্লেশ স্বীকার কবিয়াও বড় বড় কাল করিতে পারেন বলিয়া
বিস্মিত হই; কিন্তু তাঁহাদের দৃষ্টাস্তে
লগতে অনেক অনিষ্ট হয় বলিয়া আমরা
তাঁহাদিগকে বড় ভয় করি। দিনিয়স
দূব হইতে ভাল, কিন্তু নিকটে অতি
ভয় নক, তাঁহাদের দৃষ্টাস্তে অনেকের
ক্ষতি হয়। অতএব আমরা এ প্রস্তাবে
দিনিয়সের নামও করিব না, যাহা মন্থ্যাসাধারণের পক্ষে খাটে এইরূপ কথাই
কহিব।

সাধারণমহুষোর পক্ষে শরীরটি সবল দর্বাত্রে প্রয়োজন। তাছার পর মনোবৃত্তি-গুলিরও পৃষ্টিসাধন প্রয়োজন। মনুষ্যের यानावृक्ति किन श्रकादवत--वृक्तिमक्ति, হৃদয়বৃত্তি ও ইচ্ছাশক্তিবা কর্মকমতা। এই তিনেরই সাতাইশ বংসরের মধ্যে পরিচালনা চাছি। মহুষা পৃথিবীতে পড়িয়া আপনার শিক্ষাবস্থা অভিক্রম করিয়া বাহাতে সকল দিকে চকুরাখিতে পারে, সকল জিনিস ব্ঝিতে পারে, সকল প্রকার লোকের মুগ ছ:খ অমুভব করিতে পারে ও সকলপ্রকার কার্যা করিতে পারে, তাহার শিকা এই সাভা-ইশ বংসর বয়সের মধ্যে হওয়া চাই। শिका এकमूथी इउम्रा किছू न(इ, উहा বিশ্বভোমুখী হওয়া চাই। ভাষাদের দেশে প্রাচীনকালে ব্রাক্ষণেরা বাসনাই শিক্ষা পाইত,क्षिष्यता ताबाई ও गड़ाई निका পাইত, ছুভোর ছুভোরি শিখিত। এক

সময়ে ইউরোপেও ঠিক এইরূপ ছিল। এরপ এক মুখী শিক্ষার নিশ্চয় ফল অধী-নতা, নিৰ্কুদ্ধিতা। একমুখীশিকায় মাহুদ তৈয়ারি হয় নাকল তৈয়ারি হয়। যে कांग लाक्तित हातिनिक मझत शाक একমুখগণ সকলেই ভাহার অধীন আপনা হইতেই হইয়া পড়ে। অতএব যাহাতে সকল দিকে নম্বর জ্ঞা, ভাহার চেঠা " করা নিতান্ত আবশ্যক। স্থীকার করি (ग, नाजूरवंत भटक मकल विषय झाना নিতান্ত অসাধা, সকল কাজ করিবার ক্ষমতা কাহারও নাই। সকল বিষয়ে স্থকটি থাকা ও সকলের সহিত সন-त्वमना शाका এकाळ व्यमञ्जर। श्रीकाव করি, মাহুষের জ্ঞান ইচ্ছাও স্থায়বৃতি সকল ঢারিদিকে সীমাবদ্ধ। প্রাকৃতির नियममृह लोहमय (वड़ा निया मश्यारक বলিতেছে ভূমি এই পর্যান্ত যাইও ইহাব অধিক যাইবার ক্ষমতা তোমার নাই। এ সকল স্বীকার করি, তথাপি ষতটুড় মুমুব্যে জানিতে পারে ভত্টুকু জানা ত প্রয়োজন। ততটুকু জানিতে যে ক<sup>র্টি</sup> মনোবৃত্তি সতেজ ও সবল থাকা প্রয়ো-জন সে ক্ষুটিকে ত সতেজ ও স্বল 'রাপা চাই। এইটি শিক্ষার কার্যা এই<sup>টি</sup> শিক্ষকের ভার, এইটির ছন্য স্মাজ नाग्री।

শরীর ও মনের যেরূপ নিক্টসংগ তাহাতে শরীরের উত্রতির প্রতি সর্বাগ্রে লক্ষ্য রাধা উচিত। সমূষ্যের শরীরও কলের মত। অধিক দিন শরীর না

চলিলে ইহাতেও মরিচা ধরে, এবং श्रमिक वर्ता व्यक्षिक थाछ।हेरल हेहातंत्र कल विशिष्ट्रिया यांस, ठिक नगरत्र मम मिला (यमन घड़ी अप्तक जिन हल महित्र भ নিয়মিত প্রমেও মহুষাশরীর অনেক দিন টিকে। যে কয়েক বৎসর পুত্রের ভরণ-পোষণ করিতে হয়, সেই কয়েক বংসরে যাহাতে পুজের দর্বাঙ্গ স্থলররূপে পরি-ీ পুষ্ট হয় তিৰিষয়ে পিতামাতার বিশেষ যত্ন থাকে অন্তঃ সে বিষয়ে ইচ্ছা থাকে। কিন্তু অনভিজ্ঞতা প্রযুক্ত অথবা উদ্যোগ অভাবে অনেকে সম্ভানের দেহপুষ্টিসম্বন্ধ বাাঘাত ঘটান। কেছ কেছ কেবল স্লেহ-প্রবশ হইয়া তৎপক্ষে অনিষ্ঠ ঘটান। দৌজিওনা পজিয়া যাবে, শ্রম করিও না রাস্ত হবে, এ সকল স্নেহবাক্য কভদূর অনিষ্টকারী হইয়া পড়ে তাহার সমা-একণে আমরা করিব না। ম্লকথা শরীর পুষ্ট করা যে আবশাক তাহাতে কাহারও দ্বিত নাই। এই পুষ্টি-শকে যে শুভ হন্তের বা শুদ্ধ পদের পৃষ্টতা নয় সে বিষয়েও বোধ হয় কাহার অমত নাই। যে সকল লক্ষীছাড়া লোক পুত্রের ভরণপোষণ ও পুষ্টিবর্দ্ধনবিষয়ে मम्पूर्व डेमाभीन इहेबा मालपरमत आकृ <sup>করেন</sup>, তাঁহারা ভিন**্সকলেই পু**ত্রের भंतीत्रशृष्टिविषदम् मत्नात्वाभी चाट्टन।

কিন্ত মানসিক পৃষ্টিবিষয়ে এরূপ এক্মত নাই। কোন জাতি ধর্মশিক্ষাদানই পিতা-মাতার কর্ত্তব্য মনে করেন। কোন জাতি পূত্র যাহাতে অন্ন করিয়া খাইর। শীভ্র

পিতাকে অবাাহতি দিতে পারে, তদ্বি-বরে শিক্ষা দেওয়াই পিতার কর্ত্তব্যুমনে কিন্ত আমরা বলি যেমন শরীরের সর্কাঙ্গীণ পুষ্টি প্রয়োজন মনে-রও দেইরপে সর্বাঙ্গীণ পৃষ্টি বাজ্নীয়। **म**तीरतत भूरक रयमन याद्यात मर्स्सतीत সবল নছে সে ভাল বেহারা হইতে পারে না, ভাল মুটিয়া হইতে পারে না, ভাল দাড়ী হইতে পারে না, ভাল ৰাকী হইতে পারে না, মনের পক্ষেও দেইরূপ; যাছার মনোবৃত্তিসমূহ সম্যক্ পুষ্ট नहर, मে कथन ভাল উকীল হইতে পারে না, ভাল ডাক্রার হইতে পারে না, ভাল কবি হইতে পারে না, খুব উত্তম কণে কোন কাজই করিতে পারে না। কিন্তু তাই বলিয়া যাহার দেহ य्व পूडे नम्र मिकि वाकी मांड़ी इहेटड পারে না? অবশাই পারে, কিন্তু তাহার ভাল হইবার সম্ভাবনা বড় অল থাকে। সেইরূপ যাহার মন সমাক্ পুই नटह मिक छैकील, छाळात्र, कवि हहेटड পারে না? অবশা পারে, কিন্তু ভাল হইবার সম্ভাবনা অল্ল। একজন জোয়ান লোক ভাল বাকী इहेबाও यकि एतकात পড়ে সে অভি অলদিনের মধ্যে দাঁড়ীর কাজ, বেহারার কাজ বা যোগাড়ের কাজ অবায়াদে শিখিয়া লইতে পারে। কিন্ত এক জন রোগা বাঁকী তাহা কথনই পারে না। তাহার বাকী হইবার মত শরীর বনিয়া গিয়াছে; তাহার আর কিছু হইবার (या नारे। आत किছू इहेटल (शहन

যে পদার্থটুকু থাকা চাই দেটুকু তাহার জন্মে নাই। বহিজ্জগতে যেরূপ অন্ত-ৰ্জ্জগতেও ঠিক সেইরূপ। যাহার শিক্ষা বিশ্বভোমুখী ভাছার কোন একটি বিষয়ে ক্ষমতা অধিক হইলেও সে সকল কাজই মোটাস্ট করিতে পারে। করিতে গেলে দকল কাজই যে মোটামুট कता ठारे दा बाना ठारे, खाशा ताथ इत (कर्ट अन्नीकात कतिर्वत ना। श्रात्वयन উন্নতির মূল। ইহাতে কাহারও সন্দেহ माहे। नकल काज गाठामृति कति छ শিখিলে স্বাবলম্বনপ্রবৃত্তির প্রকৃত উরতি করা হয়। আর এক কথা এই, অতি প্রাচীনকালে পণ্ডিত হইলেই লোকে তাহাকে সর্বপ্তে বলিত। সর্বজ্ঞ ও অ ভ্রাস্ত এক কথা মহে, কিন্তু সর্বাজ্ঞপদের অথ িতদূর বাড়ান য ইতে পারে অধুনা-রুন ভট্টাচার্ঘ্যেরা বাড়াইয়া উহাকে এল'স্তদমপর্য্যায়ক করিয়া তুলিয়াছেন। ঋষিরাবা পণ্ডিতেরা যে সর্বজ্ঞ বলিয়া প্রথিত হইতেন ইহার কারণ কি ? শুদ্ধ ঋষিরাই বা কেন! আবিষ্টটল প্রাভৃতিও স্ক্তি বলিয়া গণা ইইয়াছেন ! ইহার কারণ তাঁহাটা যে সমাজে বাদ করিতেন সে সমাজে সাধারণংলাকের মন অপুষ্ট ছিল আর তাঁহাদের মন শ্মাক্ পুষ্ট ছিল অর্থাৎ মোটামুটি অনেক নিষয়ে তাঁহাদের कान हिन, ग्रुडताः मामाना लाक আপনার সঙ্গে তুলনা করিয়া '(তুলনার ष्यमन मामञी षात नाहे। उँशास्त्र ় সর্বজ্ঞ ঈশ্বীয়ুগৃহীত বলিয়া মনে করিত।

বান্তবিকও যখন সমাজের অভাব অল্ল থাকে, সমাজের সেই প্রথম অবস্থায় তুই পাঁচজনলোক পুতুমনা থাকেন,তাঁহা-দের দ্বারাই সামান্য সামান্ত সভাব পুরণ হয়, স্থভরাং সামান্ত অভাব পুরণের জন্য মোটাম্টি জ্ঞানে চলিত। এখনও সেইকপ গৃহত্বের সামান্য সামান্ত অভা-বের জন্য গৃহপতির নিজের মোটাম্টি স্ব জিনিস জানা চাই।

আর এক কথা। পৃষ্টমনা বাজিগণের
মধ্যে একম্থী শিক্ষা আরম্ভ হইলে সমাজের শ্রীর্দ্ধি হয় কিন্তু প্রথম নানা বিষয়ের
শিক্ষা আবস্থক: তাহার উপর একম্থী
শিক্ষা হইলে উপকার হয় নতুবা একমুখী শিক্ষা অনিষ্টকারী। তাঁতির একমুখী শিক্ষা, এই জন্য তাহার। উপহাসের
যাত্রায় এত অপটু মে তাহার। উপহাসের
স্থল হইয়া পড়িয়াছে।

অভএব আগে মোটামুটি শিক্ষা, তার
পর একবিষয় শিক্ষার প্রয়োজন। আগে
পর একবিষয় শিক্ষার প্রয়োজন। আগে
পর জিনিসের কিছু কিছু, তাহার পর
এক বিষয়ের স্বটা। এ বিষয়ে আর
একটী কথা আছে। মানুষ জ্বনিয়া
উকীল হয়, উকীল হইয়া কেহজনে
না। স্বভরাং আগে মানুষের শিক্ষা
তাহার পর উকীলের শিক্ষা। মানুষের
শিক্ষা অর্থে শরীর ও মনের স্মাক্ পুটি,
সকল বিষয়ে চিন্তা করিবার, ও হাত
দিবার শক্তি। তাহার পর কোন একটা
জিনিস সম্পূর্বরূপে আয়েন্ত করা।

माञ्चा मनाक यनि अकृषि भागवाद.

ঘরের সঙ্গে তুলনা করা যায়, তবে সর্কতোমুথীশিক্ষায় উহার সকল দার মুক্ত করিয়া রাখে। এই অসীম বিখ ব্রসাণ্ডে চকু-উন্মীলন করিলেই কত বিষয় দেখিতে পাওয়া যায় ভাহা হইতে অনেক জ্ঞানলাভ করা যায়; কিন্তু যাহার মনের সকল হারগুলি খোলা নাই, যা-ঁহাৰ মনোবৃত্তিসমূহ সমাক পৃষ্ট নহে, ভাহাব পক্ষে সমস্ত ই অন্ধকার। প্রস্ত गःहाव त्महे द्वात छनि त्थाना तम त्य দিবানিশি জ্ঞানসঞ্চয় করিতে পাবে ভাহাই নহে সে উহার বাবহারও করিতে পারে। মনে কব গোপগুলি পোলা। একটির নাম ব্যাকরণ, একটির নাম সাহিত্য, একটির নাম অলস্কাব, একটির नाम विकान, এक दिव नाम शैहे, এक दिव নাম লাইট ইত্যাদি। য়খন যে জিনিস্টি দেখিল সে ভাছাকে ভাছার আপন খোপে রাখিয়া দিল স্তরাং দরকার ত্ইলে ভারাকে আর হাতডাইতে হইল না। সে যেমন জনেক অধিক জিনিস দেখিতে পায়, তেমনি সেগুলিকে পবি-ফার করিয়া সাঞ্চাইতে পারে এবং দরকারমত বাবহার করিতে পারে।

অনেকে আপত্তি করিতে পারেন,
সর্কতোমুখী শিক্ষা থাকিলে প্রায়ই লোক
চিন্থাই করিতে পারে; ভাবিতেই পারে,
কাজ করিতে পাবে না। তাহারই
জনা আমরা বলিতেছি সর্কতোমুখী ও
একমুখী তৃইপ্রকার শিক্ষারই প্রয়োজন।
জ্ঞান চারিদিক্ হইতে আসিবে এক বা

তুইদিক্ দিরা বাহির হইবে। নচেৎ সে জ্ঞানে জ্ঞানবানের লাভ হইতে পারে সমাজের লাভ নাই। উভয়প্রকার শিক্ষা হইলে মনকে লাটিমের সহিত তুলনা করা যায়। লাটিমের কাঠ্ঠময়ভাগ সর্কভোম্থীবিদ্যা ও লোহময়ভাগ এক-মুথীবিদ্যা। সেই লোহময়ভাগের উপব লাটিম যেমন খোরে আমাদেব মতে উভয়প্রকারে শিক্ষিত লোকও সেইরূপ কাল কবিতে পারে।

যদি বিশ্বতোমুখীশিকার সজে সজে একম্থীশিকা থাকে ভাহা হইলে যে বিষয়ে শিকা ভাহার অনেক উপকার হয়। যদি একজন প্রকৃষ্ট্রপে শিক্ষিত লোক কোন এক বিষয়ে লাগিয়া থাকেন তাহা হইলে তিনি যে বিষয়ে লাগিয়া থাকেন দে বিষয়ের অনেক উন্নতি হয়. নহিলে সে বিষয়েব উন্নতির উপায় নাই। শুদ্ধ মোটামটি জ্ঞান থাকিলে কোন বিষয়েব উন্নতি হইবার সম্ভাবনা অল। কিন্তু তাই বলিয়া 🤏দ্ধ একমুখীবিদ্যায় বিষয়েব উন্নতি হয় না। মনে কব একজন দস্তচিকিৎসায় যাবজ্জীবন অভি-বাহিত করিল। সে অনেক দেখিল अनिल, किन्दु भारति भारति अना त्तांगमश्रद्ध किडू ना निथिया थारक, তাহা হইলে সে ব্যক্তি ভাল চিকিৎসক হইতে পারিবে না। মনে কর, দত্র উঠে নাই এমত কোন পঞ্চমবৎস্তবর বাল-কের চিকিৎসা কবিতে গেলে, বালকের চুলের প্রতি সে কথনই দৃষ্টিপাত করিবে-

ना, क्दन मरखदेहे हिकिएमा आदिख করিবে। যদি কেহ তাহাকে দেখাই রা **८**मग्र (य वालरकत চ्लख উঠে नारे, চিকিৎসক তৎপ্রতি দৃষ্টিপাতও করিবে না। যে কারণে কেশ উঠে নাই, সেই কারণে য়ে দস্তও উঠে নাই ইহা ভাহার একেবারে অনুভবই হইবে না, কেশের সহিত দত্তের যে এরূপ সম্বন্ধ আছে, ভাহা সে কোন মতে ব্ঝিতে পারিবে ন!। যদি আর একজন বছদশী দন্ত-চিকিৎসকের লিখিবার ক্ষমতা না থাকে ভবে তাহার দন্তচিকিৎসাজনিত অভি-জ্ঞতা তাহারই জীবনাবধি শেষ হইয়া গেল। বিধিতে জানিতে হইলে স্করাং অনা অনেক বিষয়ে শিক্ষা আছে অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে।

ভদ্ধ এক স্থী শিক্ষার আরে এক দোন
দেখাইব। আমাদের প্রাচীনকালে বৈদ্য
বিলয়া স্বভন্ত জাতি ছিল না, কি স্বভন্ত
প্রোফেশন ছিল না, ঋষিদিগের হতে
যতদিন বৈদ্যাশান্ত ছিল, ভতদিন শান্তের
উন্নতি হইতেছিল। তাহার পর শুদ্দ
চিকিৎসা বৈদ্যাদিগের ব্যবসায় হইল।
বৈদ্যেরা প্রকে শুদ্ধ বৈদ্যক পড়াই
তেন। ক্রমে শিক্ষা সংকীর্ণভাপ্রাপ্ত
হতে লাগিল। কাজেই এই সময়ে
সংগ্রহগ্রন্থ আরম্ভ হইল। অধিকাংশ
লোকই সংগ্রহ গ্রন্থ পড়িয়াই বৈদ্য হইতে

टेवनाभारञ्जब शैनावणात्र अ আগিল। স্ত্রপাত আরম্ভ হইতে লাগিল। প্রায়ই সংস্কৃত সংগ্রহগ্রন্থে দেখিতে পাওয়া যায় যে, অমুক বাক্তি দেখিলেনলোকের শক্তির হ্রাস হইয়া আসিতেছে, ছাত্তেরা আর শান্তের সকল গ্রন্থ পড়িয়া উঠিতে পারে না এই জন্য তিনি তাহার সার- • সংগ্রহ করিয়া প্রচার করিলেন। এলাকের শক্তির হ্রাস শব্দের অর্থ আর কিছুই নহে, সাধারণশিক্ষার সর্বতোমুখীশিক্ষার অভাব। বিদ্যা সংগ্রহগ্রন্থমাত্তে যথন দাড়াইল, তথন সে বিদ্যার উন্নতি আর इहेल ना। (म विष्णावान लाक महीर्गमना হইতে লাগিল। সংগ্রহগ্রহকার সর্বজ হইলেন তাঁহার গ্রন্থের উপর সরুকাট। আবন্ত হইল,ফাকি আরম্ভ হইল। বিষয়ে विमात शोतव दक्षि ना, अल्ह विमात গোরব হটল। পাঠ লাগানই বাছাত্রী হ্টয়া দাড়াইল।

অতএব শিক্ষার জনা ও শরীর পুটির জনা যে ২৭ বংসর আছে তাহার মধ্যে এই চ্ইপ্রকার শিক্ষাই দেওয়া প্রয়েজন, প্রথম সর্কাতোন্থীশিক্ষা ২২।২৩ বংসর পর্যান্ত, তাহার পর ৪।৫ বংসর একমুখীশিক্ষা। একপ শিক্ষিতলোক অনন্তশক্তির আধার হন, তাহাদের সংখ্যার যত বৃদ্ধি হয়, সমাজের শক্তির ততই উত্রোভর বৃদ্ধি হয়।

## বাঙ্গালার জ্ব।

বালালা যে তুর্দশাপর দেশ ইহা श्रित। (मभवरम् वाक्रांनिता धवर Cप-(भंत भामनकर्डुशन अहे इसभात कातन ্সর্বদা আলোচনা করিয়া थारकग । •কেহ বলেন, বাঙ্গালার চিরপরাধীনতাই এই फ्रम्भात कात्रन। (कश्र वर्लन, বাঙ্গালার লোকসংখাাবৃদ্ধি ইহার হেতু। क्ट बलन, वालांनिमिश्त भातीतिक এবং মানসিক দৌর্বলা জনাই বাঙ্গালা ছুদ্দাপর। কেছ বলেন, বাঙ্গালার कपर्या अनवायूरे मकन अनर्थत्र मृन। करन এ দেশে यত অনিষ্ঠ লোকসমূহকে পীড়িত করে, তাহা গণিয়া সংখ্যা করা ভার। একে বছপ্রভা-সহত্তে উৎপর ধনে খাইতে কুলায়না; ভাহাতে বিদেশে धन हिना गाहेट एह, मिलाशकी वीरमन ব্যবদা মারা যাইতেছে, ভাষার উপর স্থাদনে আরও প্রজাবৃদ্ধি হইতেছে। বিদেশী শিক্ষায় লোকের ধর্মলোপ ণাইতেছে, অথচ ধর্মান্সনিত সামাজিক কুসংস্থার সকল লোপ পাইতেছে না, ন্তন শিক্ষায় রাজনৈতিক আকাজ্ফা সকল পরিক্ট হইতেছে, কিন্তু রাজ-নৈতিক কাৰ্য্যক্ষেত্ৰ বিস্তৃত হইতেছে না। জাইনে হাত পা বাঁধা—মনোবৃত্তিসকলের

কুর্ত্তি নাই, পেটে থাইতে কুলায় না তব্ টেক্স দিতে হইতেছে। তাহার উপর সময়ে সময়ে ছর্ভিক্স, সময়ে সময়ে জল-প্রাবন, বাত্যাবিপ্লব, প্রাদেশে প্রদেশে সংক্রামক জ্বর। বাঙ্গালি হঃথী, তাহার উপর রোগগ্রস্ত।

অন্যান্য সকল ছংখের অপেক্ষা এই রোগছংখই বোধ হয় সর্বাপেকা গুরু-তর—আর সকল ছংখের মূল। রোগের জন্যই শারীরিক ও মানসিক দৌর্বলায়: শারীরিক ও মানসিক দৌর্বলায়ন্যই চিরপরাধীনতা। তিন কারণেই দা-রিদ্রা। আধুনিক দেশবংসল বাঙ্গালিরা কেহ সামাজিক, কেহ রাজনৈতিক সং-স্করণে উৎসাহশীল। কিন্তু রাজনৈতিক ও সামাজিক অনর্থের মূল যে রোগ, ভাহা হইতে উদ্ধারের জন্য কাহাকে কোন কথা কহিতে শুনা যায় না।

ইহার কারণও আছে। রোগ জলবায়্জনিত। দেশের জলবায়্পরিবর্ত্তন
করিবে কে ? বাঙ্গালা নিম্নভূমি; ইহার
মাটী ভিজে, অথচ রৌদ্র অভিশয় প্রথর।
ভিজে মাটীতে প্রথর রৌদ্র লাগিলে
মালেরিয়ানামে বিষময় বাস্থের সমৃত্তব
হয়। মালেরিয়া হইতেই বাঙ্গালায়

<sup>\*</sup> সরল জরচিকিৎসা। প্রথম ভাগ। গৃহত্ব আর, পাড়ার্গায়ের ড়াক্তারদের জ্ঞান ডাক্তার আমিছনাথ মুখোপাধ্যায় প্রণীত। কলিক্তা ১৬০ নং বছ্বাদার বীট। মূল্য ২০ টাকা।

সর্বভূক্ জর। অতএব বাঙ্গালার মাটী আরও উঁচু করিয়া না তুলিতে পারিলে, সুর্যোর তেজ অপ্রথর করিতে না পারিলে, বাঙ্গালার জর নিবারণ হইবার সম্ভাবনা নাই। বিদ্যাসাগর বা কেশব সেন, স্থরেক্স বন্দ্যোপাধ্যায় বা ক্রঞ্জাদ পাল সকলে মিলিয়া ধর্মাধরি টানাটানি করিলেও বাঙ্গালার মাটী এক ইঞ্চ উঁচু হইবে না। আর সুর্যোর তেজ কমান জেতাযুগে: যা হইয়াছিল, তা হইয়াছিল, আর বড় হইবার আশা নাই। স্থতরাং প্রোটুরটের দল, সেদিকে বড় ঘেঁসেন না।

দেশের নৈদর্গিক প্রকৃতির পরিবর্তন कदा यात्र ना वर्षे, किन्न (यशांतन मार्गल-রিয়া উৎপত্তির কারণসকল বিশেষরূপে সমবেত সেখানে অলবাযুব উৎকর্ষসংধন কর। মহুষোর নিতান্ত অসাধা নছে। गांगे डेंड कता यात्र ना नाहे, कि ह ভাহার জলনিকাদেব স্থপ্রণাণী করা यहिट भारत । जनिकारयव स्थानी হইলেই ভূমিৰ আর্দ্রতা কমিবে। আর্দ্রতা কমিলেই ম্যালেরিয়া কমিবে: স্থানীয় জলবায়ুর উৎকর্যসাধনের এইরূপ অনেক উপায় আছে। কয়জন দেশবংগল লোক. পেদিকে যত্র করিয়া থাকেন। ভাছার জনা কয়টা আসোসিয়েসান, কয়টা লভা হইয়াছে? কয়টা জ্রোবক্তায় হাত-তালির ঘটা পড়িয়াছে ? কয়খানা জ্বন্ন পান্ফুট ছাপা হইয়াছে? এ কথা बहेग्रा কালেজের ছেলে কগুবার

খাইয়াছে ? ঘোড়লোড়ের টালার কণা আনেক শুনা বার, এ বিষয়ে কয়টাকা টালা উঠিয়াছে ? বরং এ বিষয়ে রাজ্য পুরুষদিগকে কিছু প্রশংসা করিতে হয়। উাহারা কথন কখন জাের করিয়া এ সকল কাল করাইয়া থাকেন। দেশ-হিতৈষীবা ভাহাতে সাহায়্য কবা দূরে ' থাকুক, ববং রাজপুরুষদিগকে গালি' দিয়া থাকেন। গ্রণ্মেণ্ট জাের কবিয়া ভানকুনীর জলা সাফ করিলেন, ভাজ প্রান্ত দেশহিতৈষীর দল সেজনা গ্রণ্ধিক গালি দিতেছেন।

একা জরই বাঙ্গালার পরমশক্ত। ত্র্ভিক্ল, বাত্যা, জলপ্লাবন কালেভদ্রে
কখন কোন প্রদেশকে পীজিত করে।
কিন্তু জর প্রতাহ প্রতি গৃহে গৃহে লোকধ্বংল করিতেছে। ধাহাকে না মারিতেছে, তাহাকে নিস্তেজ, জাকর্মণা,
আমামুদ, জীবনভারবহনে অসমর্থ করিয়া
ত্রিতেছে। এই পরমংক্রর হাত হ
ইতে নিঙ্গতি পাইনার কি কোন উপায়
নাই ?

নিক্তির জনা বিবিধ উপায়। প্রথম যাহাতে জর না হয়, অর্থাৎ নিবারণোপায়। বিতীয় জর হইলে যাহাতে আরোগালাত হয়, অর্থাৎ চিকিৎসানিবারণের সম্বন্ধে উপায় কিছু বিলিয়াতে; যাহাতে ভানীয় জলবায়ু স্বাস্থ্য কর হয়, তাহা করিতে হয়। একং চিকিৎসাস্থ্যে কিছু বিলিব।

नता (मभवरम्ल वाक्रालिताः देशदत्रभ

দিগকে যতই পালি দিন না কেন, ইংরেজ হইতে ও দেশের যে কয়ট মহৎ
উপকার সাধিত হইয়াছে তাছা অবশ্য
ত্থীকার করিব। ইংরেজ হইতে পাশ্চাত্যবিদ্যা ও দেশে আসিয়াছে। ইংরেজ
হইতে মুদ্রাযন্ত্র ও দেশে আসিয়াছে।
ত্থানিতা দেশবাংসল্য প্রভৃতি মোহমন্ত্র
ইংরেজ হইতেই আমরা শিধিয়াছি।
আর ইংরেজ হইতে কুইনাইন ও দেশে
আসিয়াছে। বাঙ্গালায় জ্বনিকিৎসায়
কুইনাইন ওকনাত্র উমধ। বাঙ্গালির
গ্রমশক্রনিধনে কুইনাইন আমাদের
ওকনাত্র সহায়।

পঠক বলিবেন কুইনাইন যে জ্বের উষ্ধ ইহা ত আবাল-বুদ্ধ-কনিতা সক-লেই লানে, ইহা বলিবার জন্য এত বড় uक्ठा खावम (क्न ? खात्र छेडात अगरम এই विनटि इस, र्य क्यांहै। दश्रः व्यावानतृष्ठानिका मक्तवानिमध्यक ग्रह । कुरेनारेन मधरक अधिकाः भ ला কের অনেক কুসংস্কার আছে। অনেকে বলেন কুইনাইন খাইলেই জ্ব জাটকা-ইয়া যায়। উংহাদের বিশাদ আছে, य कूरेनारेन ना शारेलरे भी घरे खत ছাড়িত; এত ভুগিতে হইত না। এ ক্ণা দতা বটে যে, কুইনাইন না খাইলে এত ভূগিতে হয় না। কেন না রোগ ও রোগী শীঘই একত্রে নিকাষ পায়। জাবার অনেকের বিশ্বাস আছে, যে এ <sup>দেখে</sup> এত কুইনাইন আদিয়াছে বলিয়া এগন এত জার হয়। যখন কুইনাইন ছিল না তথন পোকের এত জর হইত
না। তাঁহাদের বিখাদের স্থলমর্থা এই,
যে কুইনাইন থাইলেই জ্বের ধাত হইরা
যার। অতএব কুইনাইন থাওয়া ভাল
নয়। অনেকে এই সকল বিখাদের
বশীভূত হইয়া, ষ্থাসময়ে কুইনাইন
বাবহার করেন না, নিতাস্ত বিপল্ল না
হইলে কুইনাইনে রাজি হন না। তার
পর কুইনাইন বাবহার করিয়া আভে
উপকার পাইলেই, কুইনাইন ছাড়িয়া
দেন। স্তরাং কুইনাইন তাঁহাদিগের
পাকে বিশেষ উপকারী হয় না।

ইহা অবশা স্বীকার করিতে হইবে,

যে, বহুতর লোক বাঙ্গালার দেখা যার

যে কুইনাইন খার আর অরে ভোগে।

ইহার এক কারণ অনেকে নির্দেশ কবেন যে, বাজারে যে কুইনাইন বিক্রয়

হয়, সাধারণ লোক যাহা কিনিয়া খায়

সে কুইনাইন ভাল নহে তাহারই দোষ।

যে কথা কিয়ংশরিমাণে সত্য হইলেও

হইতে পারে। কিয় সে কথা এখন

আমরা ছাড়িয়া দিই। প্রধান কারণ

চিকিংসার দোষ, উপযুক্ত সময়ে উপযুক্ত

মাত্রা এবং উপযুক্ত প্রণালীতে কুই

নাইন সেবন না করিলে, উপযুক্ত ফণ

কেন ফলিবে ?

চিকিৎসার দে: য তুই কাবণে হয়।
এক, চিকিৎসক স্থচিকিংসা না জানিলে,
কাজে ঝুজেই চিকিৎসার দোষ ঘটবে।
বিতীয় রোগী চিকিৎসকের ব্যবস্থাসুসারে
কার্যা না করিলে চিকিৎসার দোষ ঘ

টিবে। সর্বত্র স্থৃচিকিৎসক পাওয়া যায় ना। ्यांशांत्रा हिक्दिमाभारत स्मिकिङ धवर **श्वतक वड़ वड़ नगरबंदे छै**।हा-निगरक পাওয়া यात्र। त्म नकले छ।न न हेटल छाशामित्रत छे भयुक्त भूत्रकात इस मा। दुर्गम भहीश:ममकरन, स्य मकल খালে জরের অধিক প্রাত্রভাব,সেই সকল ভালে স্থানিক চিকিৎসক মিলেনা। দে সকল স্থানে জরের চিকিৎসা ছাতুড়ে-দিগের হাতে। ভাষারা কেবল ছই এক বংগর কম্পাউপ্তারি করিয়া কেহ তাহা भाउ कतित्रा, क्वतन कीतिकानिकीट्दत উপায়ান্তর অভাবে ডাক্রার হইয়া বসে। তাহাদিগের হইতে, স্থচিকিৎসা কথনই হইতে পারে না। দ্বিতীয় স্থচিকিৎসক মিলিশেও গৃহস্থ নিজে কিছু চিকিৎসা मा व्बारम, চিকিৎদার मम्पूर्व कनवाश्वि হইতে পারে না। চিকিৎসক কিছু, দর্বকেণ দকল রোগীর শিওরে বদিয়া शकिए शास्त्र मा। তিনি কেবল উপদেশ निम्ना शिवा थाक्तम, शृहत्य्व गर्या काशदे हिकिएनामयस् किছू বোধ শোধ না থাকিলে সে উপদেশমত मम्भूर्व कांधा इत्र ना। छाउलात विद्या গেলেন গায়ের ভাত কম পড়িতে আরম্ভ. হইলে কুইনাইন দিবে, তিনি চলিয়া গেলে গারের ভাত কম পড়িতে আরম্ভ इहेल-किंद्ध शृहञ्च ভाविल (य এक्वार्य धा ना कुषारेत क्रेनारेन अद्भावना रहेत्व मा; अत्र चाहेकाहेग्रा ्वाहेत्व। अनिटक রোগীর গা আর मा खुड़ाইशा

আবার জ্র আসিল, কুইনাইন থাওয়া इरेन ना, 6िकिৎमां भिक्त इरेन। কোন রোগীর অজীর্ উপস্থিত হইলে, ডাক্তার ব্যবস্থা করিলেন, তুমি শীতল बारा मिनाहेबा अहे छेवशी माशा माशा দেবন করিবে। ডাক্তার কিরিয়া আ-नित्रा दम्थित्नन, द्याभी वर्षाकात्मव कर्मभगत्र कटल मिनारें दा अध्यत्मवन कति তেছে। এবং তাহার পেটের পীডাও বাডিয়াছে। আর একরোগী শিরঃ-পীড়ায় পীড়িত হইলে চিকিৎসক উপ (मण कतियां कित्न त्य मानात्र कल्ली) **पित्रा मर्जामा भीउन खान डिजाहे** एउ থাকিবে, রোগী মাথার স্থাতপুরু মোটা নেক্ড়া জড়াইয়া তাহাতে জল থাব-ড়াইতে লাগিল। স্থতরাং সাথার যন্ত্রণা মা কমিয়া বাডিয়া উঠিল।

অতএব বাঙ্গালায় অরের মহৌষধ
আমাদের হাতে থাকিতেও চুইটি অভাবের
জনা বাঙ্গালাদেশ অরে ধ্বংস পাইতেছে।
প্রাণম অভাব অধিকাংশ স্থানের চিকিৎসকেরা অরের চিকিৎসা জানে না।
বিতীয় অভাব যেখানে স্থাচিকিৎসক
আছে, সেথানে গৃহস্থেরা চিকিৎসকের
উপদেশপালম করিতে জানে না। বিনি
এই ছুই অভাব দূর করিবেন, যিনি পন্নীপ্রান্মের হাতুড়েদিগকে অর্চিকিৎসা শিখাইবেন আর গৃহস্থাদিগকে সেই চিকিৎসার
মর্ম্ম বুঝাইতে শিখাইবেন তিনিই বাঙ্গালাদেশধ্বংসকারী অরক্ষপরাক্ষসকে পরাত্ত ও
নিহত করিবেন। ভাছাকে দেশহিতিকী

माधा भारतीक द्वांन विंट व्यमित्री शक्ति । এই পুণাময় সংগ্রীমে আময়া কেবল একজন বাঙ্গালিকে খুডান্ত দেখিডে शाहै। आमता विविद्यां एवं, वाक्रानात জ্ব হইতে দেশকে রক্ষা করিবার দিবিধ উপায়। এক স্বাস্থ্যরক্ষা--বিজ্ঞানের ্নিয়মপালন। দ্বিতীয় স্থচিকিৎসা। -স্বাস্থ্যর ক্ষার বিধি স্বদেশীয়দিগকে শিপাই-বার অংশ্য ডাক্ডার শ্রীযুক্ত বাবু যত্নাথ মুখোপাধারে কয়েক বৎসর ছইল শরীর-পালন নামে একথানি গ্রন্থ প্রথমন করেন। তাहा এ দেশে উত্তমরূপে প্রচলিত হইরা দেশের বিস্তর মঙ্গলসাধন করিয়াছে। विजीय डेशाय छिकिएमा। आय्य आय গৃহে গৃহে জ্বরের স্থৃচিকিৎদা প্রাচলিত ক্রিবার জন্ত তিনি সম্প্রতি জরচিকিৎদা नाम এकथानि उरकृष्ट श्रेष्ट श्रीवा कदि-য়াছেন। আমরা শে ছুইটি অভাবের কণা বলিয়াছি এই তুইটি অভাবই এই গ্রাহের দ্বারা পরিপুরিত হইতে পারিবে। এমন खत्रमा कथन्हे कता गाहेट शाद ना, যে এক**গানি ক্ষুদ্র গ্রন্থের প্রভাবে** বা-সালাদেশ হইতে অর একেবারেই ভিরো-हिछ इहेरव। किन्न देश वना याहेर ड পারে বে এই গ্রহণানি কিমা এইরাপ (कांन अंध, वाश्रामात्र आरम आरम थाठाविक धावः शृद्ध शृद्ध क्यीक इटेल দেশে যে জ্বরাক্রাস্ত রোগীর সংখ্যা किंगित, ध्रायनकार जिल्ला अहमःशाक লোক অনে মরিবে, তাঁহাতে আর কোন मत्मच्हे नाहै।

এইরপ এছ বলিতেছি ভাহার কারণ **এই, यে এই গ্রন্থানির কুয়েকটা বিশেষ** ত্তৰ আছে। এরপ গুৰ না থাকিলে क ध्यनीत अध्यत्रवाता देहे ना इहेगा অনিষ্ট হইবারই সম্ভাবনা। প্রথম তথ এই যে ইহার রচনা অতিশব সরল-্বে ইচ্ছা সে পড়ুক না কেন, বৃঝিবার कान कहे नाहै। ইशांत्र छावा थाछी-শিক্ষার ভাষার নায়ে সহজ কথাবার্ত্তার ভাষা। কিন্তু ইহা ধাত্রীশিক্ষার নারি কথোপকখনচলে লিখিত হয় নাই। (क्वन ভाষা मत्रन इहेटनहे (य ब्रह्मा সরল হইল এমন নছে। চিকিৎসা-শাস্ত্রান্ত হুরুহ তত্ত্বকল কঠিন ও কালবাাপী শিক্ষার আয়ত্ত, দেগুলি অশি-कि उत्क निश्र हैं उ रात, रकदन महन ভাষার লিখিলে হইবে না। বুঝাইবার को नव बाना हाहै। यह तातू त्य त्य मकत को नहत अमाधादन शरू धाळी-শিক্ষার তাহার পরিচয় আছে। ধাত্রী-শিক্ষা অপেকাও কোন কোন বিষয়ে জরচিকিৎসা আরও পরিষার। নিঞ চিকিৎসা করিতে করিতে লেখক যাহা (पिशार्यन ध्यम प्रानक छेपारतन দিয়া স্বীয় উপদেশগুলি স্পষ্টীকৃত করি-ब्राष्ट्रन ।

গ্রাছের দিতীয় গুণ এই, যে,যে গৃহছের যেমন ক্ষবস্থা তাহার প্রতি তেমনি বাবহার আছে। ক্ষনেক সময়ে ডাক্তা-বেরা দ্বিজের প্রতি এমন বাবস্থা করিয়া থাকেন, যে তাহা বড়মাস্থ্রেরই সাধা। এবং পলীগ্রামে যে সকল সামগ্রীর, হকুম করেন, তাহা নগর নহিলে পাওয়া যায় না। সে সকল স্থানে যহ্বীব্ অমু-কলগুলি বলিয়া দিয়াছেন।

ভূতীয়ও প্রধান গুণ এই,যে এখনকার প্রচলিত জরচিকিৎসাব সধ্যে মেটি সর্ব্বোৎকৃষ্টপ্রণালী তাহাই ইহাতে লিখিত হইরাছে, কিন্তু গ্রন্থ যথন যথুবাবুর ন্যায় উৎকৃষ্ট চিকিৎসকের লিখিত, তথন সে কথা আনাদের বলাই বাছলা। অনা চিকিৎসা অপেক্ষাকৃত যশস্বী হইলে হইতে পারেন, কিন্তু এরপ স্থদক্ষ, স্থবিজ্ঞ এবং কৃতকর্মা চিকিৎসক অতি বিরল।

চতুর্থ। গ্রন্থানি সম্পূর্ণ। জ্বণীজ্বের এমন কোন অবস্থা নাই—
জ্বের এমন কোন উপসর্গ বা উপদ্রব
লাই যে এই গ্রন্থে তাহার চিকিংসার
বাবস্থা নাই বা বাবস্থা করিবার সক্ষ
নাই। প্রথম ভাগে সকলগুলি শেষ
হয় নাই।

এই প্রবন্ধ লিখনে আমাদিগের তিনটা উদ্দেশ্য। প্রথম বাঙ্গালাব জুর, বাঙ্গালার প্রথম বাঙ্গালার জুর, বাঙ্গালার প্রথম শক্র হৈছে দেশকে মুক্ত করার জন্য দেশহিতৈবিগণ, চেষ্টিত নহেন। তাঁহারা চেষ্টিত হউন তাঁহাদিগের কাছে এই প্রার্থনা করা। বিতীয় কিবিধ উপায়ে এই শক্র পরাস্ত হইতে পারে, তাহার কিঞ্ছিৎ উল্লেশ করা। সূতীয় যঁত্নাবুর এই গ্রন্থ থানি, সে মাক্ষ্ণোদ্দেশে নিক্ষিপ্ত প্রথম শর বিশ্বা, সাধারণের নিক্ট পরিচিত করা।

গ্রন্থানি কিরপ প্রাঞ্জল, ও ইহা দে
সাধারণের ব্যবহার্গা, এই পরিচয় আরও
স্থান্ত করিবার জনা, আমরা উহা হইতে
ছই পাত উদ্ধৃত করিলাম। যেটুকু
উদ্ধৃত করিলাম সেটুকু যিনি পড়িবেন
তাহারই উপকার হইবে এইরূপ গ্রন্থের
স্কল স্থানে।

''এখন কুইনাইন খাওয়ার কথা বলিু। এর আগেই বলিয়াছি যে, ঘাম হইতে ष्यात्रष्ठ इटेलारे (त्रागीतक कूरेनारेन निर्द। देनटन **अरमक छ**।य्रशाय कूहे-নাইন থাওয়াইবার সময় পাওয়া যায় ना। कृष्टेनारेन थाउग्रांदेगात निव्रम अ-(नरक अरनक तकम नर्मन। किन्न आधि দেখিতেছি, ঘাম হইতে আরম্ভ হইলে ১০ গ্রেন, আবার জ্বর স্থাসিনার ছুইঘণ্টা আন্দাজ আণে ১০ গ্রেণ, সার এর মধ্যে इंडेमणे। अञ्चत इहे ८ जान कूहेनाहेन शाउ-मारेल ১००व मध्य २० जासगास जब ष्याना नक्ष इस्र। ध्व तक्य निग्नरम कुरे नाइन थाउगाइटल हिकिश्मक कानड স্বায়গায় অপ্রতিভ হইবেন না। কর, আজ বেলা ৮ টার সময় জ্ব ফাসিল সেই জর রাত্রি ৮ টার সময় ছাড়িল व्यर्थाए (यमन चाम इटेट ब्यांत्रध इटेन, অমনি ১০ তোণ কুটনাইন খাওয়াইয়া দিলে। তার পর চইঘন্টা অন্তর, অর্থাৎ রাত্রি ১০ টার সময় একবার, ১২ টার मगग अकरात, र हे। व मगग अकरात, 8 টার সময় একবার, ছই গ্রেণ করিয়া কুই-নাইন পাওয়াইলে। ভোর ৬ টার গুমুর

জ্পথি আবার জ্বর আসিবার ২ ঘণী। আগে ১০ তোৰ কুইনাইন পাওয়াইয়া जिला '(वना ৮ টाর সময় জার আসি-বার কথা, কিন্তু জ্বর আদিল না। রোগীর কান ভোঁ ভোঁ ক্রিতে লাগিল। তিন घन्छ। द्याशीदक कूरेगारेन नित्न ना। বেলা ১১ টার সময় ২ গ্রেণ কুইনাইন द्विता दिना २ छात्र मगग्र आत छ्हे গ্রেণ দিলে। তার পর ৬ টার সময় একে-वारत ১० धान क्रेनारेन খाওয়ारेয়ा **पिटन । यमि वन, ७ টाর সময় আ**বার ১০ (এ। कुरेगारेन निवास पत्रकात য়াছি, যে সময় জর আসিবার কথা, कुरेनारेन थां अवारेशा यिन त्र नमत्त्र अव আসিতে না দেও, ভবে ভার ১২ ঘণ্টা शत व्यावात व्यत व्याटम । दबना ৮ है।त সময় জর আদিবার কথা, কুইনাইন খাওয়ান হইয়াছিল বলিয়া, সে সময় জর আমিল না। রোগী মনে করিল আছ আর জ্বর আসিবেনা। চিকিংসকও णारे विनया हिनया (शतना किन्द्र दाखि ৮ টার <mark>সময় আ</mark>বার জুর আংসিল। विकिৎमक्तित्र कार्ट्स मःवान श्रिम् विकिरः দক আদিয়া বলিলেন, তাই ত, জ্ব আসিবার ত কথা নয়, তবে কেন এ विकम हरेन ? (अरे करना वर्ल्ड, (य স্ময় জর আসিবার কথা, সে সময় জর না আদিলে, ভার দশ ঘণ্টা পরে দশ <sup>(श्र</sup> क्रेनारेन चाउत्रारेमा (प्रवसा छाण। ভার শর দেখিলে রাত্রি৮ টার সময়ও

জর তাসিল না। তথন নিশ্চিস্ত হইলে।
রাজে রোগীকে জার কুইনাইন না দিলেও
চলে। কিন্তু ভোর ৬ টার সময় আবার
১০ গ্রেণ কুইনাইন দেওয়া চাই। তার
পর বেলা ৩ টা পর্যান্ত, ছই তিন ঘণ্টা
অন্তর ২ গ্রেণ করিয়া কুইনাইন দিলে।
৬ টার সময় একবারে ৫ প্রেণ কুইনাইন
থাওয়াইয়া দিলে। রাজে ১০ টার সময়
২ গ্রেণ দিলে। রাজে আর কুইনাইন
দিবার দরকার নাই। তার পর ভোর
৬ টায় ৫ গ্রেণ কুইনাইন দেওয়া চাই।

गत्न कत, त्रामवात किन दवना ७ छोत्र সময় জার আনাসে, আপার সেই জার রাতি ৮ টার সময় ছাড়ে। তার পর ঐ নিয়মে কুইনাইন খাওয়াইয়া, বৃহস্পতিবারের ভোর পর্যাপ্ত জুর আসিতে দিলেনা। এখন কি করিবে? কুইনাইন বন্ধ করিবে না, এখও জুর আসার আশকা করিয়া অল মাতায় দিনকতক কুইনাইন থাও-शाहेरत। धकरें जातिशा मिशिलाई आंत দিনকতক কুইনাইন খাওয়ানই উচিত বলিয়া রোধ হইবে। কেন না, যে জুব রোজ আদে কুইনাইন থাওয়াইয়া দৈ জ্ব বন্ধ করার পর, যদি আর কুইনাইন गा थाउगाउ, তবে आठ मिरगत् मिन আবার জ্র আসে। এতেই লোকে वरन क्रेनारेन थारेटन जुत चाह्कारेग्रा যায়। শারীর থেকে জুর একবারে যায় ना। यन किन्तु ना नत्र। धत्रकम ভावाই ] (नारकत जून। ५३ जूरनत • झरनाइ } माधात्रावत काष्ट्र, विश्वंष देखत लाकः

দেব মধ্যে, কুইনাইনৈর জন্ত প্রাশন্ত নাই। কুরে জুরে পোলা করিয়া কেলিতেতে, তর্ কুর আটকাইবার করে, কুইনাইনের কাছেও বাইতেছে না ।, ইতর
লোকদের সধ্যে সর্বদাই এরপ খটে।
এর ফল এই যে, চারি আনার কুইনাইন
আনিরা খাইলে বে জুব সারিত, সেই
জুরে জীবনটা নই নয়। এ ছংখ কি
রাবিবার জারগা আছে! পাড়াগাঁরে
লোকে ত এই জনোই জুবে এত মবে।
তবেই দেখ, যে জুব বোল আসে, কুইনাইন খাওয়াইরা সে জুব বন্ধ করার
পার, আট দিন পর্যান্ত কুইনাইন খাওয়ান
রড় দরকার। তবে জুব বন্ধ হওয়ার

উপসংহারে বিনি ধাত্রীশিক্ষা, শরীর পালন, এবং জুরচিকিৎসা প্রাণয়ন করিয়া সাধারণ লোকের অশ্বে হিতসাধন করি-য়াছেন, তাঁহাকে আমরা শত শত ধক্তবাদ্ধ প্রদান করি।

#### -- TOI ICE #3! HEB.

# মাধবীলতা।

· \*\* >0

যে নির্জনমনিবে ব্রহ্মচারী বাস করিতেন, চক্রালোকে ভাহার গান্তীর্থা বিশেষ বাড়িত। প্রকাশু প্রান্তরের মধ্যে প্রকাশু স্নির, সমুখে প্রকাশু মীর্ষিকা, পিতম পাগলা যখনই রাজে দেখিত, তথনই বড় বিমর্ব হইত। এ জগতে যে সে একা, ভাহার যে আর কেহই নাই, এ কথা কেবল এই নির্জন স্থানে আসিলেই, ভাহার মনে হইত। ইহা অসম্ভূব নহে। স্কালমাহাস্থা অভি স্থাত্র্যা, এই স্ক্রীই জীম্মা। ত্র্য, ক্ষ্মিক, বিশাস, বৈরাগ্য এ সকলই স্থানের ভবে আপনিই মনে উদর হর। এই কন্য আনেকে বলে স্থানাছ্যারী মছবোর প্রকৃতি। বালালার পাহাড় পর্যন্ত কিছুই নাই, একথানি কঠিন প্রভাৱ নাই, বালালার যাহা কিছু আছে সকলই কোমল, মুন্তিকা পর্যন্ত কোমল; জর ভাগে ভক হর, জর রসে বলিয়া যায়, জর ভবে আহত হর। আহরাও ঠিক সেইস্কুত কোমল; ভাগেই পুর্ব্বে চটি পরিতান, থীরে বীকে আ কুলিনিভান, পাকে যুক্তিকার স্থাকে, আহ্বাড়ন করি।

আৰম্ভা একণে বিশান্তি ক্তা পরিভেটি,

দন্ত করিয়া পা কেলিভেছি, কিছ ভাভাই বলিয়া আমানের প্রাকৃতিপরিবর্ত্তন

হয় নাই, আমরা বাহা ভিলাস তাহাই
আহি। অফুকুরণ-অফুরোধে মৃত্তিকার
কুতার পেরেক ফুটাইভেডি, কিছ পরে

হয় ত বাঙ্গালার অকে জুতার দাগ
দেখিরা চক্তের জল ফেলিব। জুতার
বা মোজার প্রকৃতির পরিবর্ত্তন হয় না,

যদি কখন বাঙ্গালায় পর্কত জন্মে মৃত্তিকা
কঠিন হর, আমরাও কঠিন হটব; নতুবা
যে আতিই আসিরা বাঙ্গালায় বাস ক
রিবে, সেই জাতিই ক্রমে আমানের ভারে
কোমলম্ভাবই হইবে।

একদিন গভীর রাত্তে কালীয়দহের কলে বিমর্বভাবে পিতম একা বসিয়া हिन। व्यत्नकक्षण हक्त छेठिशांद्य। मृत्त्र शास्त्रकृत्त युगवानि (मचवर समिवाट्स, পিত্ৰ ভাছাই দেখিতেছিল, আর মধ্যে মধ্যে অক্টখরে আপনা আপনি কি विष्टिहिन, अमें नगर उन्नावी धीदा ধীরে আসিয়া বসিলেন। পিত্ৰম তাঁ-शांक (कान कथांत्र मखांवन कविन ना, श्रनामनाक याद्या (प्रविट्डिक्स, छाहाहे দেখিতে লাগিল। ত্রহ্মচারী ভিজানা করিলেন, শিশুম কেমন আছ ? শিশুম प्र ना चित्राहेबा वनिन, छान चाहि। वक्रात्री विद्याना कतिरमन, शिक्रम তোমার সন্মের অবস্থা কৈমন ? কোন উত্তর লা দিয়া শিক্তম আন্তর্কুলের ধুন-अभि अञ्चलित्रश्री शिक्षण कविन्।

ঁ প্রদা। কিন্তু লোকের বৈধি হয় তোমার আর চিত্তবৈক্লা নাই। তুমি একণে আপনাব অবস্থা বুবিতে পারিয়াছ।

এই শেষ কথাম পিত্রম পাগলা ক্রমে ক্রমে ফিরিয়া বসিল, এক দীর্ঘ নিশ্বাস ভাগে করিয়া ব্রহ্মচানীর মুখপ্রতি চাছিয়া রছিল। সেই কাতর দৃষ্টি দেখিয়া ব্রহ্মচারী বাথিত চইলেন। জিজ্ঞাসা করিলেন, "পিতম কি জানা ভোমাব এ স্লানভা সংগাব সাঞ্জম যাহার নাই,কাতর হইবাব ভাহাব ত কোন কারণই লাই, মায়াই ছঃখের হেতু।"

পিতম কোন উপ্তর করিল না দেখিরা ব্রহ্মচারী আবার বলিতে লাগিলেন "কি জন্য যে তোমার মনকট্ট ভাছা আমি জানি না কিছ ভোমাব মৃণ দেখিয়া বৃবিতেছি যে ভোমাব মনকট্ট অভি গুরুত্ব। এ কট্ট নুত্র নতে, অভি পুরাহন বলিয়া বোধ ছইতেছে—"

পিতমেব শ্বীর চঞ্চল হইয়া উঠিল।
পিতম উঠিয়া দাঁড়াইল, ত্রহ্মচারীকে
কোন সৃত্তাষণ না করিয়া চলিয়া গেল।
ত্রহ্মচারী বিদয়া একদৃষ্টিতে পিতমের
দিকে চাহিয়া রহিলেন, পিতম দৃষ্টির
বাহির হইলে উক্ল হইতে উক্ল নামাইয়া
আপনা আপনি অফুট্মুরে বলিতে লাগিলেন "চমৎকার লোক নত হইয়া
গিয়াছে, এ বৃত্ত, অখচ স্বার মত ইহার
স্থ হাথের অফুড্র রহিয়াছে, না শানি
ভার বয়্বে ক্তই ছিল।"

এই সময় আবার শিক্ষম কিনিয়া

আসিল। ব্রহ্মচারীকে কিজাসা করিল "কুদ্র পক্ষীর হারা মন্থ্যের কোন অনিষ্ঠ হয় কি না ?"

বন্ধা কই তাকা আমি ত কিছু শুনিনাই।

পিত্য। তবে কেন অনেক দূর হইতে একটি কুদ্র পক্ষী রাজবাটীতে আনী ক্ হইতেছে ?

্রন। সকণেই ত পাথী ভাল বাদে, রাজা ভাশ পাথী দৃর ১ইতে আনাইবেন ইহার আর আ!+১ম্য কি ?

পিতম। রাজা আনাইতেছেন না।
রাজকুমারকে উপহার দিবাব নিমিত্ত
কোন বাক্তি বহু ব্যয় কবিয়া আনাইতেছে,তাহাই আমার সন্দেহ হইয়াছে।

ব্রহা। এ সন্দেহ তোমার অনর্থক।

পিতম। আছো, বলুন দেখি, লোকে যুষুকে ভয় কবে কেন ? বাটীতে গৃযুচরা গালি কেন ?

ব্রহ্ম। তাহা আমি বিশেষ জানি না।
পিত্ম। কিন্তু আমি অনুভব করিতে
পারি।
•

রেকা। কি অহুভব কর।

পিভম। কোন কোন পকী সময়ে সময়ে বিষাক্ত হয়। এক সময়ে বাঙ্গালায় হয় ত গুৰুপক্ষী বিষাক্ত হইয়াছিল;
যে বাটীতে গুৰু বাস করিত সেই বাড়ীতেই মড়ক হইত, তাহাই হয় ত গুনুর অপ্রাদ বাঙ্গালায় অদ্যাপি আছে। যে
পাথী আসিতেছে, সে পাণী বিষাক্ত নিক্ষা। আমি কলা পাথীয়ারা সাজিলা

রাজভারে দাঁড়াইয়া থাকিব। কলা রাজকুমারের জন্মদিন, আমার নিমন্ত্র হইয়াছে। আপনার হইয়াছে ?

বক্ষ। ভোষার কে নিমন্ত্রণ করিল ?
পিত্ম। রাজাবাহাছ্র; খোদ। অনার নিমরণ আমি গ্রহণ করি না,
বিশেষতঃ রাজবাটাতে—

ব্ৰা কেন ?

পিতম । কুট্ধবা<sup>চ</sup>তে অনোর নিম অণুক্রাফ্র

ত্ৰহ্ম। রাজাব শ**হিত তোমার কুটু** ধিতাকিরণ ?

পিত্য। একচাবীর সহিত একাদৈতোর কুট্রিতা যেকপে, রাজার সহিত দরি-দের কুট্রিতা সেইকাপ। অথাৎ ঘটনা-মূলক।

বৃদ্ধ। পাগলামি আরম্ভ করিলে ? কই পাগলামি করিতে গিয়া ভূমি ত কখন রাড় হও না, আজ রাড় কথা বলিতে আরম্ভ করিলে কেনে ?

পিত্য। অপরাধ লবেশ না, বড় গায়ের জ্বালা হইরাছে, ভাষাই বলিতেছিলাম যে আপনি নেমন শীঘ্র ব্রহ্মদৈতা হইবেন এই মুর্থ রাজা সেইরূপ শীঘ্র আমার মত দরিক্র হইবেন। কলা ভাষার বীজরোপন হইবে, আপনি একবার রাজবাটীতে যাবেন। রাজকুমারকে আশীর্কাদ করিতে যাবেন, আমি নিম্তান করিয়া গেলাম। আপনার দ্বারা রাজার কোন উপকার হবে না জানি, লোকের উপকার করা আপনাদের ধর্মান

বিক্ল, পরোপকার গৃছীর ধর্ম, আছা-উপ্কার উদাসীনের ধর্ম, তথাপি মন বুঝে না, কি জানি যদি কিছু হয়।

ত্রন। রাজার কি বিপদ?

পিতম। রাদার অপেক্ষা আমার বিপদ অধিক, কল্য বিস্তর আহার করিতে হইবে। অতথ্য একণে নিদ্রা যাই।

এই বলিয়া পিত্য কালীদহের একটি সোপান অবতরণ করিয়া শরন করিল। ব্রহ্মচারী বলিলেন, আইস পিত্য মন্দিরে শয়ন করিবে চল্।

পিত। ঘরের ভিতর শবন বড় বি-পদ, ইট কাঠে আমার বড় ভর হয়। আছো ব্লচারীঠাকুর, বলুন দেখি মানুষের আক্রতি আব প্রকৃতি কিরুপে সংশোধন হয়, বিশেষতঃ উদ্বের ভাগটা।

্রহ্ম। কিছু আহার কবিয়ে † বোধ হয় আজ কিছু জুটে নাই।

পিতম। ঠিক বলেছেন। কিন্তু কলা পোষাইয়া লওয়া যাইবে, আজ আর কিছু নয়। কিন্তু গঠনের দোষ না গেলে—এই বলিয়া পিতম চুপ করিল।

অক্ষারী দেখিলেন যে পিত্য গুনা ইল, অত্তর ধীরে ধীরে উঠিয়া নগরাং তিমুখে গেলেন।

>8

পরদিবস প্রাতে স্র্য্যোদয়ের পর পিত্য রাহ্যবাটীর দিকে চলিল। দূর

হইতে নহৰৎ গুনিয়া ভাবিল, আমার विनम्र बरेगार्ड, दम्र उ उर्देश्य आंत्रञ्ज ছইয়া গিয়াছে। রাজপুরীর দিকে দৃষ্টি-পাত করিয়া দেখে সকল মন্দিরে রক্তা-পতাকা উড়িতেছে। ছাদেব উপর শত শত খেত কপোত বসিতেছে, উভিতেছে, আবার বদিতেছে, আবার উড়িতেছে; স্থাকিরণে যেন আকাশে হীরা ছডাইয়া পড়িতেছে। পিতম কতকদূর অগ্রসর इटेग्रा (परिल, त्राजवादत विखत (लाक উপত্তিত হইয়াছে, নানাবিধ বাল্যোদাম হটতেছে, নহবংখানার বিশেষ শোভা **इ**हेबाए, बोशा नागातात छेशत ऋग्री-कित्र शिष्ठयां नष्करञ्जत नाम जनिएक । দশ বার্টি হস্তী সুসজ্জীভূত হইয়া माङ्ग्विता आहि। পিত্য অ।সিয়া মহানন্দে ভাহাদেব প্রদক্ষিণ করিতে করিতে কত কথা কহিতে লাগিল। একটর সম্মুখে দাঁড়াইয়া বলিল, ছি! মা! তুনি কেন সিঁখি পরিয়াছ ? তে।মার যে বয়স গিয়াছে। একটির পশ্চাতে গিয়া বলিল, কেন না, তোমার চন্দ্রহার কই ? তৃতীয়কে तनिन, जुमि भनाम (म माना भनिमाह, ভাষা কয় নরী গণা যাইতেছে না। মালফারা যুবতীর ল্যায় মাথা তুলিয়া, त्क क्लाहेबा कांडांख, पेंं। वजी कि সাত্নরী ভাল করে দেখাও। পাড়াব মেয়ের কাছে তোমার মান शाकित्व मा।

**এই भगग (मध्यानशूख नवक्मान** 

রাম্ববাটী প্রাবেশ করিছেছিলেন, পিত-নের কথা গুনিরা হাসিতে হাসিতে মিজ্ঞাসা করিলেন, কি পিতম! পাড়ার সেয়ের কাছে হাতীর মান কিসে?

পিত্য। জলছারে—নচেৎ আর কিসে । আছে। বলুন দেখি, ধনীরা হাতীকে স্ত্রীর ন্যায় সালায় কেন । আর একই জাতীর অলকার পরায় কেন । স্ত্রীর কপালে সিথি হাতীর মাথায়ও সিথি। স্ত্রীর পালে অলকা তিলকা, হাতীর গালেও তাহাই। শিকল, শিকলি, ঘণ্টা আর কিন্ধিনী এই প্রভেদ। আপ-দার চক্ষে হন্তিনী আর গৃহিণী কি এক রূপ বোধ হয় ।

নবকুমাব। বড় নয়, তবে গৃহিণী অন্তরের শোভা, আর হস্তিনী সদরের শোভা। বশ্তাপর উভয়েই সমান, উত্যেই বন্দিনী।

পিতম। ঠিক বলেছেন, শিকলের ক্ষপান্তর পারের মল। তাই ত তাই ত তাই ত । আমি চিরকাল মনে করিতান এই অলকারের ক্ষথিকি? এখন তাহা ব্রিলাম। কিন্তু এই মল ক্রমে ক্রমে ক্রমে তাহার পর ভাঙ্গিরা যাবে তভ্গিনে হল ত অনেক প্রশ্ব কেটে যাবে। কিন্তু মল ভাঙ্গিনে প্রশ্বের ক্পানা ভাঙ্গিনে।

নব। এত দুরদর্শিতা যদি ভোষার আছে, তবে শোকে তোমার পাগদ বলে কেন ? ैंं

পিতম। ভাল, বল দেপি, ভূমি

এমত চমৎকার স্থান, তথাপি লোকে তোমায় কুনস্তান, পিতৃশক্তর ধামাধরা বলে কেন ?

নৰকুমার আর কোন উত্তর নাকরিয়া রাজবাটীতে প্রাৰেশ করিলেন।
পিত্য আবার ফিরিয়া হতীর নিকট গিয়া
মহা আহলাদে নানা কথা কহিতে লাগিল।
এমত সমন্ত একবার চূড়াখন বাবু কর্মা।
ক্তরে বাহিরে আমিয়া দাড়াইলেন।
পিত্যকে বিজ্ঞানা করিলেন, "হাতীর
সংস্থিতি মিষ্টালাপ হইতেছে ?"

পিত্য। দেখুন দেখি বিধাতার অবিচার, হতীর এই প্রকাণ্ড শরীর, এই শক্তি, কিন্তু দেখুন ইহার চক্ষু কত কুজ। তাহাই বলিতেছিলাম ছি! মা! ভোমার বড় ছোট নজর।

চুড়াধন। চকু ছোট হউক, হন্তী পূপিবীর সকল বস্তুই ত দেখিতে পায়, কিছু ত আটক হয় না। বিশেষতঃ ব্যেরপ উহারা স্বভাবতঃ সতর্ক তাহাতে বড়চকুর স্বার বিশেষ প্রয়োজন নাই।

পিত্য। হাজার বৃদ্ধিনান্ হউক বা সতর্ক হউক, পশ্চাতের বিপদ কিছুই ত দেখিতে পার না। তাহাই আমার 'বড় কট হয়।

্চ্ডাণন। ভা ভোষার এত কট হয় কেন্

পিতম। পরের বিপলে আমার বড় কট হয়, নিজের বিপ্রে বরং সাহস হয়, পাগলের সঞ্চনই এই,ইহা বুরিতে পারেন ত। (পের এক্ট হতিনীকে নির্দেশ করিয়া) এই ভাত্মতীর বিপদে আমার যেমন কট, রাজার বিপদে সেইরূপ কট, আবার আপনার বিপদেও প্রায় সেইরূপ। কিন্তু এই তিনজনেরই দৃষ্টির দোব সমান। পশ্চাদৃষ্টি রাজার একেবাবে নাই, কেন না তিনি সকলকে বিশ্বাস করেন; আপনারও তাহা নাই, কেন না আপনি নিজের বুদ্ধিকে বিশ্বাস করেন। স্তীকে বিশ্বাস করিলে যেনন বিপদ, নিজ বুদ্ধিকে বিশ্বাস করিলেও তাহাই ঘটতে পারে। উভয়েই প্রলয়ঙ্করী, বিশেষতঃ ছ্শ্চরিত্তা হইলে। আপনার বুদ্ধি ছ্শ্চরিত্তা—ইতিপ্র্কে ছই একবাব ধরা পড়িয়াছে, আজ একেবারে সেরিয়া যাবে।

চূড়াধনবাবু অতি ভীত্রদৃষ্টিতে চাহিয়া রহিলেন, এমত সময় নবকুমাব আদিযা পশ্চাং হইতে বলিলেন, "কে বেরিয়া যাবে হে?"

পিতম। কেন **ণ চ্ডাধনবাব্র ছ**\*চ রিতাব্দ্ধি।

চ্ডাধন। পাগলের কথায় কান দিলে স্কল সময় কাজ চলে না, ফেব।

উভয়েই আবার পুরীপ্রবেশ করিলেন।
পিতম ছারে দাড়াইয়া ভিতরের কোলা।
হল জনতে লাগিল। পর্বতর দ্ব জলকলোলের নারে তাহা অতি মধুর বলিয়া
তাহার বোধ হইতে লাগিল। পিতম
হারে প্রবেশ করিলে, সেই কোলাহল
আরও ঘোরতর ও মনোহর হইয়া উট্লিল।
কিন্তু প্রাঙ্গণে আর সেরুপ কোলাহল বোদ

হইল না। পিতম চমৎকৃত হইয়া পরী-कार्थ व्यावात कितिल, दादत भक्त व्यक्षिक. প্রাঙ্গণে শব্দ অল, পিত্ম ইহার কারণ কিছু<sup>ই</sup> বুঝিতে পারিল না। পিতমের যাতায়াত দেশিয়া দারপালেরা নিষেধ করিল না। পাগলকে সকলেই শ্রহা একজন পিত্যকে নিকটে ডাকিয়া আপন অদৃষ্ট গণনা করিতে পিত্য মাথা নাজ্য়া বলিল, আমি বড় বাস্ত; শেষ একমৃষ্টি সিদ্ধি वाहित कतिया गकनाक किছू किছू किया চলিয়া গেল। ষারপালেরা দেখিল. যে দেরপ উংক্ট দিদ্ধি তাহারা আব কণন চক্ষে দেখে নাই। সকলে আশ্চর্য্য ছইয়া পাগলাবাহাত্রের প্রশংসা করিতে লাগিল। যে অবধি পিতমের প্রতি বাজাব অনুগ্রহ হটয়াছিল, সেই অবধি পিতমেব প্রতি রাজভ্তাদের বভ ভক্তি জনিরাভিল। অনেকে পিতমকে সাধক মনে করিত, সাধক না হইলে রাজার এত যত্ন কেন হইবে। ভক্তিছেতু দার-বানেরা পিতমকে "পাগলাবাহাছুর" निवृ, जना जाकर्गा निह्नि পारेग्रा म ভক্তি আরও বর্দ্ধিত হইল। অনেকে ভাবিল, যে কৈলাসপুরীতে যে সিদ্ধির বাবহার হয়, সিদ্ধপুরুষ কোনরপ যোগাড় कतिया (मरे निक्ति ज्यानियाहिन।

এক বৃদ্ধ চৌবে বলিল, "তাহা অসম্ভব নহে, যথন ভাল সিদ্ধি মহাদেবের নিমিত্ত আদে, তথন নন্দী তাহার কিছু। কিছু সিদ্ধপুরুষদের পাঠাইয়া দেন। বোধ

হয় পাগলাবাহাত্র হালফেল কিছু স্ও-াগাদ পাইয়া থাকিবেন। একবার এক বভ আজব শটনাক্রমে আমার পিডামহ কিছু পাইয়াছিলেন। তিনি তখন ছোকরা ছिल्न--- त्रुम ट्यांत विणवरमत हेरेत्व, ভগন তাঁহার বিবাহ হর নাই, বিরোধ कतित्रा वित्वकी इत । खार्थस इतिहादत किছूमिन शांकित्रा, शदत (कमात्रनाथ छा-ছিন হাত রাপিয়া একেবারে কৈলাসের -নীচে আসিয়া পৌছেন। তখন স্থ্য (एव हिलग्रा शिक्षाहित्तन। 'দুর হইতে কৈলাগ দেখিতে লাগিলেন; একদিকে কুদ্রাক্ষবন, ডিনি · Cकारम (महे ऋशाक्षवानत - বেখিতেছিলেন, এমত সমন্ন মহামারা · অগংজননী গ্ৰপতিকে গদিতে লইয়া এক আশ্চর্য্য সিংছের উপর আসওরার इस्त वनश्रेष्ठ वाहित श्रेरनन। स्म সিংছের যে দেমাক্ তাহা আর কি বলিব। ভাহাতে আসওরার হয়ে ছোকরা পাণপতি কতই খুসি, মার গদি হইডে হেলিয়া পড়িয়া দিংছের জ্ঞা ধরিয়া हिश्वित्वन (हिंडी कदिएडाइन) সিংহ মাথা নামাইয়া চলিতেছে; মহামায়া विवादिक्त, "हि! वर्म, मिःश्रक প্ৰপতি আরও ছেলিয়া লাগিবে।" পড়িরা মটা ধরিবার উদ্যোগ করিতেছেন, সিংছ ভর বেধাইবার নিষিত্ত ভ্রার ছাভিন কৈলাসপর্বত অমনি কাঁপিয়া উঠिল: अनुभक्ति चास्नारम छेडिरनन, कूज कूज ना हूँ फिरक गानि-

লেন, সকল অলম্বার বাজিয়া উঠিলগ গণেশক্ষননী সম্ভানের ত ए ধরিরা মুখ-চুখন করিলেন। এদিকে কার্ত্তিকের মার সঙ্গে সিংহ চড়িতে, পারেন নাই বলিয়া ধ্লার গড়াগড়ি দিডেছিলেন'; ভূসী সিদ্ধি ঘুঁটতেছিল উঠিতে পারিল না,আর এক-জন গিয়া মহাদেবকে ডাকিয়া আনিল।. পিতাকে সমূৰে দেখিয়া কাৰ্তিকৃষ আরও গড়াগড়ি দিতে লাগিলেন। মহাদেব পুরা চক্ষুতে চাহিতে চেপ্তা করিতে লাগি-লেন,তাহার পর ঈর্বৎ হাসিয়া বলিলেন, "बाहेन वरम, बामना इहेम्रान वृषवाहतन খাই। বৃষ কেমন মৰিমাণিক্যে দাজিয়া সিংহের ত কোন দাড়াইরা আছে। অলভার নাই।" এই বলিয়া ঘাঁড়ের শৃলের গায়ে তিশ্ল হেলাইয়া রাখিয়া আন্তরণ ঝাড়িতে লাগিলেন। ছোক্রা কার্ত্তিকেয় মৃত্তিকা হইতে উঠিয়া বজ্ঞ-বেগে গিয়া বৃষকে এক ধান্ধা মারিলেন, তাহার সকল কিছিণী ঝন্ঝন্ ক্রিয়া বাজিয়া উঠিল। বৃষ একটু হেলিল না, কেবল মন্তক নত করিয়া দিল। कार्तिक्य साँएक क्लान इहेट होताव धूक्धूकी हिँ जित्रा नहेता प्रत रफिनियां দিলেন। ভাষার পর একে একে বৃষের সকল অলভার কেলিয়া বিতে লাগিলেন। আমার পিতাম**হ** তাহা কুড়াইডে লাগি-लान। जानमात्र क्राहित्न कार्तित्वम দৌড়িয়া গিয়া ভৃতীয় সৃত্তে বে সকল বিভিন্ন ছালা ছিল<sub>ন</sub> ভাছাও কেলিয়া वित्नन, शिष्ठांबर फारांक क्रूफारेबा गरे-

**टाम । वर्षे मन्त्र इरेन्ड ह्वाड्** লোক গিয়া পড়িল, আমার পিতা-महित महिल महाहै कतिन। अक अक তরবারের চোটে পিভাষহ সকলকে ভুটুক্রা করিয়া কেলিতে লাগিলেন, भाष छे । इंटरेंड महास्मरवन्न जिम्न আসিরা মাথার পড়িল, কাছেই পিতা-মহ মরিলেন। কার্তিকের তিশুল ফে: লিয়া দিয়াছিলেন ভাহাই মরিলেন,নত্যা তাঁহাকে মারা কাহারও সাধ্য ना। চুয়াড়ের। অবভারগুলি বইল: किन्द जिन्न ब्यांत निष्क्रित गांष्ट्रेती व्यामा-त्मत वांगि त्शीकारेश मिश्रा त्मन, अम्। नि আমাদের বাটীতে ঐ ত্রিশূল আছে-निष्ठा श्रृषा इम्र। आत्र दामलीलात-সমর ঐ দিছি আমরা ছটি ছটি খাই। নেই অবধি কেহ আর আমাদের বাটার-নিকট মোচ উচা করিয়া বাইতে পারে-না। সেই অবধি এ পর্যান্ত দেখিতেছি, (य, व्यामारणत्र (शशित (कह नज़ारेक शंतिन नारे, (करन इरे अकबनमाळः न्हारेद मतिबाद्धन । आत (नरे नमय তিশ্লের যে খোসবু পাইয়াছিলাম, খদ্যাপি ঠিক সেইরপ রহিয়াছে।"

এই সময় নবকুমার আর চুড়াধনবারু अक्टक या**देरकहितनः; উভরে**ই গরের কতকাংশ **গুনিরাছিলেন, নবকুমা**র যাথা किबास्ता विश्वास्त्र, "८ होस्य ! सूष्ठे वादः।" ट्योदन अभाग रहेना छेखा क्रिक "वामानि चाम शिवुषामी वहर मात्राचा क्षिका समाह समा को स्टेन सामाह

কি পিতামহ ছিলেন না ? আমি তবে : কি আকাশ হইতে পড়িয়াছি ?"

और। ভূমি:এইমাত্র বলিলে ভোমার। পিভামহের বয়স তথন বিশবৎসর ছইবে, আবার বলিলে, তুমি সে সময় উপস্থিত -ছিলে,ত্রিশ্লের তৎকালিক সন্গন্ধ ভোমার · সর্গ আছে তাহা কিরূপে সম্ভব?

চৌবে। পশ্চিমদেশে তাহা সম্ভব। व्यापनारमत्र रमरण जाश व्याग्ठश वरहे, কিছ, আমাদের দেশের কথা খতস্ত। व्यामारमञ्ज रम्भ बीरत्रत्र रम्भः, रमशास्त्र । मकनरे महत्।

নবকুমার হাগিতে হাসিতে চলিয়াঃ পেলেন। চৌবে ঠাকুর তাহার অমুপ-স্থিতিতে নানা আফালন করিতে লাগি-লেন এবং বাঙ্গালির চরিত্রসম্বন্ধে নানা-थकां शानि पिट्ड नागिरतन्। वनिरानन्, व्यायात्मत्र (मध्य क्टह:---ঞ্জি চাহে ত কর ছম্মণকে সাত দোন্তি। মগর না করো কভু বাখালা মে বস্তি।।।

36

রাজবাটীর প্রথমপ্রাঙ্গণে নিমন্ত্রিত-বাক্তিরা সমবেত হইয়াছেন। তাঁহাদের-মধ্যে অধিকাংশই বসিয়া কথাবাৰ্তা क्रिडाइन, इसे बक्यन এখানে-रमधारन केल्लाहेका चारहर । मिटक **अशामरकता, यगित्रा भाषामा**ना क्तिर्छ्युक्त छ९कारम द्वनम द्रुष्टि-गावरे अन्य दिन् नावणादवव सङ्ग्रिकाः

বড় জ্বেন নাই; এই জনা শাস্ত্রালাপের
চীৎকার বড় অধিক গুনা যাইতেছিল না।
বিশেষতঃ রাজা তখন সভায় আইসেন
নাই।

আর একদিকে শতাধিক ভাট, সেরে-স্থানার পেস্থারের ন্যায়, পাগড়ি মাথায়, বিসিয়া আপন আপেন প্রাপ্তির কথা কহিতেছিল, মধ্যে মধ্যে সূর করিয়া একত্র রাজার গুণকীর্ত্তন করিতেছিল, আবার তৎক্ষণাং তাহা ছাড়িয়া আপন আপন ঘরের কথা কহিতেছিল।

রাজভৃত্যেরা নবাবী কায়দার পরিচ্ছদ
পরিয়া চারিদিকে বেড়াইভেছিল, সক
লেই নত্র, সকলেই যোড়হস্ত, সকলের
মুখেই সন্মানস্চকবাকা। এক্ষণকার
ভৃত্যেরা স্বাধীন হইয়াছে, মাথার কার
তাহাদের পাগড়ি বাবিতে হয় না, ফোড়হস্তে আর কথা কহিতে হয় না।
তথন নাপিত পর্যান্ত পাগড়ি বাধিত,
দাড়ি ধরিবাব পূর্বে তাহারা প্রণাস
করিত।

একণে প্রভ্রাও স্বাধীন হই সাছেন,
তাঁহারা আপেনইচ্ছানত পরিচ্ছদ পরিতে পারেন। অদা ধৃতি, কলা পায়জামা বা পেণ্টুলন; আরু বাকা সিথি,
কাল সোজা সিথি; তাহার নিমিত্ত
কাহাকেও একণে কৈফিয়ত দিতে হয়
না। আহারও ইচ্ছাত্ররণ, লোকের
ভয়ে কিছুই বর্জন করিতে হয় না।
বাবহারেও ভাহাই, লোকের ভয়ে কনাাকে স্পাত্রে দিতে হয় না। বোকের

ভয়ে দীনদশাপর হইরা থাকিতে হয় না অথবা প্রথার ভয়ে পৈতৃক মূর্যতা রক্ষা করিতে হয় না।

বাঙ্গালা একণে আছারে স্বাধীন, ব্যবহারে স্বাধীন, শিক্ষায় স্বাধীন, ব্যবসায়
স্বাধীন। বাঙ্গালা একণে যথার্থ স্বাধীন।
এতদ্র স্বাধীনতা বিলাতের কোথাও
আছে কি না ভাষা সন্দেহ। ইংরেজ
রাজা বলিয়া বাহারা বাঙ্গালীকে পরাধীন
বলেন, ভাঁহাদের স্বাধীনতাজ্ঞান আর
একরপ।

পিত্য ধীরে ধীরে রাজ্বসভায় প্রবেশ করিল, অতি কৃষ্ঠিতভাবে একপ্রান্তে গিয়া বিসল। অনেকক্ষণ পর্যান্ত নতশিরে থাকিয়া মন্তক তুলিল, তখন ঈষৎ হাসি হাসি মুখে ইতন্ততঃ চাহিয়া দেখিল কেছ্ তাহার প্রতি লক্ষ্য করে নাই। পিত্রম কতক নিশ্চিম্ভ হইল।

কিন্তু পিতমের মলিন বেশ, বিশেষতঃ
তাহার স্লানম্থ রাজভগিনী অনিমিক্লোচনে দেখিতেছিলেন। পিতম তাহা
কিছুই জানিতে পারে নাই। অন্তঃপুরবাসিনীরা অনেকে সভা দেখিবার নিমিত্ত
চীকের পার্ছে আসিয়া বসিয়াছিলেন,
সকলেই নিমন্ত্রিত ব্যক্তিদিগের দেখিতেছেন, তাহাদের কথাবার্ত্তা গুনিতেছেন
কেবল রাজভগিনী জ্যোৎস্লাবতী অনিমিক্লোচনে বৃদ্ধ পিতমের দিকে চাহিয়া
রহিয়াছেন। তাহার একজন পরিচারিকা জিজ্ঞাসা করিল, "ঠাকুরাণি!
সম্ন করে কি দেখিতেছেন ?"

জ্যাৎসাবতী। স্থা দেখিতেছি।
পরি। সুম কই যে স্থা দেখিবেন ?
জ্যোৎ। আমি নিজিত কি জাগরিত
ব্বিতে পারিতেছি না।

পরিচারিকা প্রশ্নের উপর প্রশ্ন করিতে
লাগিল,কিছ্ব কোন উত্তর না পাইয়া ক্ষাস্ত
•ইল; যেদিকে জ্যোৎসাবতী চাছিয়া
দ্বিয়াছিলেন, পরিচারিকা তাহা অনুসরণ
করিয়া দেখিল, রাজভগিনী পিতন পাগলাকে দেখিতেছেন। কোন হেতু নির্দ্দেশ
করিতে না পারিয়া আরও আশ্চর্যা হইল।
পিতমের রূপ আছে, না বয়ন আছে,
না অলৌকিক কিছু আছে যে তাহার
প্রতি রাজভগিনীর দৃষ্টি পড়ে। জ্যোৎস্নাবতীর ও বয়ন হইয়াছে, বুদ্ধা বলিলেই
হয়, তবে এ ব্যবহার কেন ? পরিচারিকা
আপনা আপনি অনেক ভাবিল, কিছুই
ব্রিতে পারিল না।

ক্যোৎসাবতী অনেকক্ষণপরে দীর্ঘনিধাস ভ্যাগ করিয়া পরিচারিকাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, ''মাতঙ্গিনি, তুই এই ছঃখী, এই দ্বিজ্ঞকে চিনিস গু''

পরিচা। চিনিমা, ও পাগল। জ্যোৎসাবতী। এর উপর আবার পাগল হইয়াছেন ?

পরিচা। ও আজ্বরপাগণ। পথে পথে বেড়ার, ভিক্ষা করে খায়, রাত্রে গাছতলায় পড়ে থাকে।

জ্যোৎসাবতী মুখে অঞ্চল দিয়া কা-দিয়া উঠিলেন। আধার তৎক্ষণাং চকু মুছিয়া চারিদিকে চাহিলেন। কেহ তাহার জেন্দন শুনে নাই, দেখিয়া জিল্লাসা করিলেন, ''যদি তুই জানিস তবে বল দেখি, সকল কথা বল দেখি। শুনি।''

পরিচা। আমি আর ত কিছুই জানি না, ওর নাম পিতম পাগলা এই জানি। এইখানে ঘুরে বেড়ায় এই দেখেছি।

জোংসাবতী। এত স্থান পাকিতে এখানে কেন ? তাই বা কেন জিজাদা করি।

পরিচা। ও কে মা, তবে, ওরে কি চেন, ওর বাড়ী কোথায় ?

ক্যোৎসা। পিতম! পিতম নাম কেন?
দাদা কি এ কালালকে দেখেছেন,
কথন আলাপ করেছেন? তিনিও কি
পিতম বলে কথা কন?

এই সময় বাদ্যোদাম হইয়া উঠিল, রাজা আদিতেছেন বলিয়া সভাসদ্ সকলে উঠিয়া দাড়াইল। পিতমও উঠিল। রাজা আদিয়া প্রধান প্রধান সকলের সহিত ছই একটি কণা কহিয়া আদনে উপবিষ্ট হইলেন। বিস্বামাত্র ভাটেরা মনোহর স্বরে স্তবপাঠ করিতে লাগিল, এই অবকাশে রাজা ইতস্তত: অবলোকন কবিতে লাগিলেন। পিতমের প্রতি দৃষ্টি পড়িল, কিন্তু রাজা কোন সম্ভাষণ করিলেন না দেখিয়া জ্যোৎসাবতী আপনা আপনি বলিতে লাগিলেন, "তবে কি আমার ভ্রান্তি? না তা নয়; হয় ভ্রাদা চিনিতে পারেন নাই।"

পরিচারিকা বলিল, 'ঠাকুরাণি, জাপ-

बात इशान शास १फि ८क निष्य वजून बा ।"

ভোগো 🖟 ইনি: এথানে: ক্ডদিন: ্ এসেছেন 🎨

পরি। অনেককাল; আমাদের ও আকি-ভোর দেখিতেছি, তা আমাদের বরস ত অধিক নর, কিন্তু সকলেই বলে পিতমঃ অনেককাল অবধি এখানে আছে।

জ্যোৎ। তৃমি কখন এই কালালের সঙ্গে কথা করেছ ৪

পরি। না মা, আমার ভয় করে। ফি জানি পাগল যদি কিছু বলে।

ব্যোৎ। এখানে অনেক দিন আ-ছেন ? অণ্ড আমি তাহা জানিতে পারি-নাই।

এই সময় আর একজন পরিচারিকা আসিয়া বলিল, "রাজকুমারকে আশীর্মাদ করিবার নিমিন্ড রাণীঠাকুরাণী আপনাতে ভাকিতেছেন।" জ্যোৎকাব্রুতী ধীরে বীরে উঠিয়া পেলেন।

রাণীয়াকে এক বিকৃত শ্যার রাণী
নানা অলকারে ক্সজিত প্রকে নইরা
বিদায়া আছেন। চারিদিকে আত্মীর
ক্রেনেরা বিদায়া রামক্ষাকের ভণবাাধ্যা
ক্রিতেছে, সঅ্থে এক বর্ণসাত্রে ধান্য
দ্র্মা প্রভৃতি আশীর্মাদের উপকরণ
রহিয়াছে। জ্যোৎসাক্তী আদিবায়াত্র
রাণী বলিলেন, "তুমি আশীর্মাদ না
করিলে আর কেছ আশীর্মাদ করিতে
পারিতেছেন না। সকলের আশীর্মাদ

করা হইলে রাইবের রাজনেরা আলীর্বাদ করিবেন। রাজা সভার নিরাফ্রেন ।''

এই সময় চুড়াধন বাবুর স্ত্রী রাজভূগি-मैं कि बिकामा क्रियम, " ६ कि बाल-कात पिरन ट्यामात हार्थ पने गरण्ड কেন ?" রাণী একবার জ্যোৎসাবতীর মুখপ্রতি চাহিয়া দেখিলেন। রাজভগিনী च প্রতিভ হইয়া স্বর্ণালহন্তে তুলিয়া. बाकक्याद्वत पिरक अक्षत्रत र्हेरनम । রাজকুমার তাঁহার অভিদল্ধি অনুভব করিয়া মাথা নাড়িতে, কাগিল। জ্যোৎ-সাবতী ধানাদ্ৰ্কা হল্পে ভূলিবামাক শিশু-माथा महादेश नदेन। शुद्रेश मा वंक-जनक हुलि हुलि वनित्नन, व्यत्र शास्त्र हतिका मिल्ड (शरम वह रायम करत, রাজকুমার আড় ঠিক তাই করিতেছেন। জ্যোৎসাবতী আশীর্কাদ করিলে একে একে সকলেই ফুল লইয়া আসিলেন, রাজকুমার তাহা দেখিয়া কাঁদিতে আরম্ভ করিলেন, কিন্তু কেই তাঁহাকে ছাড়িল না, সকলেই মাথার মূল দিতে লাগিল। মাধ্বীলভা মার জ্রোড় হইডে यायित्रा जन्म जन्म अधर्गत रहेता तानीतः নিকটে আসিল,একবার স্বৰ্ণাতের ছিকে . চাহিল, আবার রাণীর-মুখপ্রতি দেখিল। ভাহার পর একটা ফুল কুড়াইরা শইরা क्रांककुमार्वत्र निक्केश्वित्रा रक्षाः। क्रांमः

কুত্র হয়েখানি তুলিয়া কুনটি ছাড়িয়া: দিল। কুনটি রাজকুমারের-মাণা হি

जन न्यान कविन हो, मुशाब अफ्डा

(शहा भाषती आयात्र दसके द्रगि

कूड़ाइना गहेना कूछ हाउसीन पूनिना রাঅকুমারের কানপর্যন্ত হাতথানি শৌ-हिन। रगवात क्नांहे स्क्लिश निश्रा मांधरी कृत अञ्चलकाता त्रांबक्नाटतत्र চুন স্পর্ণ করিল। স্পর্ণ করিরা ফিরিরা দাণীর মুব জ্রতি চাহিল। রাণী আর একটি जान कृत शांक निमा विनातन, "क्त्र, ,ভূমিও আশীর্কার কর ভোমারই আশী-कीम मर्ভात ।" এই कथाय तालक्तिनी धकवाद बानीय मिटक हाहित्नम, धवाम त्रांगी किथिए अधिष्ठिष्ठ इंहेरनन । माधवी-লতা কুলটৈ তুলিয়া এক,দৃষ্টে দেখিতে লাগিল, বামহন্তে ছুই একটি ভাহার পাণড়ি ছি ড়িল, তাহার পর রাজকুমারের निक हा**क वा**का हेन्ना मिल। याथा प्लार्न व्वेन ना विनया त्मरेपिटक महिया (शन। আবার হাত বাড়াইয়া দেখিল আবার সরিয়া গেল। শেষ মাথায় ফুল দেওয়া रहेग। **माध्यी जा**पनारक कुर्डकार्या (मश्या चास्नारम इतिश मात्र त्कारफ গিরা উঠিব। মাতা পুনঃ পুনঃ মুবচুখন করিতে লাগিলেন।

এই সময় চূড়াধনবাবুর দ্রী বলিরা উঠিলেন যে, কই রাজভগিদী এর মধ্যে আবার কোথার পেলেন। রাণী অমনি ভীত্রগৃষ্টিতে চারিদিক দেখিলেন, ভাহার পর পরিচারিকাদিগকে বলিলেন ভোমরা কে, রাজকুমারকে রাজসভার লইরা যাইবে আইগ। একজন তৎক্ষণাৎ আসিয়া রাজকুমারকে জোড়ে লইল, সকলে সঙ্গে সঙ্গে অন্তঃপুরের ধার পর্যান্ত চলিল, রাণী কতকদ্র গিরা কিরিয়া আসিলেন। ক্রমে আর আর লকলেও ক্রিয়া আসিয়া রাজসভা দেখিবার জন্য রাণীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রেলেন।

রাজকুষার পভাস্থ হইবানাক প্রাশ্বনের।
সকলেই উঠিরা আলীর্কাদ করিতে
লাগিলেন। নহবৎ বাজিরা উঠিল।
রাজা শ্বরং রোজকুষারকে ক্রোড়ে লইরা
বাহির হইলেন। রাজহারে গিরা দরিত্র
দিগকে অর্থনান করিবার আলেশ করিলোন। মহা কোলাহল হইরা উঠিল।
চারিদিকের বাল্যোদ্যম ছাড়াইরা দরিত্রের চীৎকার উঠিল।

রাজসভার প্রায় অধিকাংশ লোকেই কাশালিবিদার দেখিতে বাহির হই-(लग, (करन मर्भ रात्रक्रम अशांशक একত্রে বসিয়া কি পরামর্শ করিতে তাঁহাদের কিঞ্চিৎ দূরে লাগিলেম। পিতম পাগলা একা বসিয়া থাকিল। পূর্বমত্ প্লান ও জনামনর। একজন ভাট আসিয়া জিল্ঞাসা করিল, তুমি त्य अधारम ? वाहित्व कोत्रानीविमात्र হ্ইতেছে, এখানে বসিয়া কেন ঠকি-তেছ। পিতম তাহার প্রতি চাহিল. **(कांन डेखन कतिम ना। क्यनमायदा** नवकुमात्र व्यानिशा बिकामा कतिरलन, ''বল দেখি পিতম;' বাদ্য অপেকা किरमत्र भक्त अधिक ?"

পিতম। ওনিতে ত পাইতেছেন।

नवकुमात्र। आह्यां, मतिदान ही एकात অপেক্। কিসের শক্ত অধিক ?

পিত্র। পুক্রশোকের।

এक्ष्मन ऋधार्यक विलिन, "स्निल, পাগলা কি খলিতেছে। পাগলার গে জ্ঞান আছে আপনাদের ভাষা নাই। আপনারা কোন বুদ্ধিতে আমাকে গৈণ্য হুইতে ৰলিভেছেন। আমি অনেক সহা করিয়াছি। এখন সকল শুনিয়াছি আর কেন সহা করিব। এতকালের কষ্ট হইতে আল মুক্ত হইব।"

এই সময় রাজা পুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া ফিরিয়া আসিলেন, সঙ্গে সঙ্গে আর সক-লেও আদিল। রাজা আদিবামাত সেই च रेपर्या ज्यथानिक चात्र व्हेश विनन, "পুত্রকে আমায় সমর্পণ করুন, এ সন্থান আমার।"

রাজা। আপনি কি চান ? অধ্যাপক। আমার পুত্র চাই। রাছা। তোমার পুত্র কোথা?

অধ্যাপক। সে আপনার ক্রোড়ে। রাজক্রোড়ে আমার সোনার চাঁদু,একবার দিন বুকে করি। বোধ হয় আমার কপা বুঝিতে পারিতেছেন না। আমায় পা-গল ভাবিতেছেন। আমি পাগল হই-• য়াছিলাম সভা কথা, কেন হব না? আমার খবে ছেলে ওয়ে। সে ছেলে আর কোগাও নাই। পীড়া

'**বিড়া নয়, মাতৃকোড় হই**তে ছেলে (शन। ७८७ (क ना भागन इम् (लाटक বলিল, ভৌত্তিক বাাপার; আবার কেহ বলিল, জাভহরণের কার্য্য, আমি তখন ভানি না যে, রাজার কার্যা। এখন প্রামাণ পাইয়াছি যে আমাদের মুভবৎদা রাণী মৃতকন্যা,প্রাসব করিরা এ হতভাগার কপাল পোড়াইয়াছেন। ভাহা যাহা हरे नात हरेया नियाटक, आमि निकल इंस বিশ্বত হইলাম, একণে আমার হারাধন মনপুণ করুন।

"এ কি ব্যাপার" বলিয়া রাজা পুত্রকে বুকের ভিতর করিয়া অন্দরে চলিয়া (शंदनन। व्यक्षांभिक मद्य मद्य याहेनांव উদ্যোগ করিলে, মুকলে তাঁহাকে নিরস্ত कतिश्र वृद्धाहेट उठ हो भारेलन। टक्ह কেহ তাঁহার হস্তধারণ করিয়া রহিলেন। ব্রাহ্মণ চীংকার করিয়া বলিতে লাগিলেন, "লকল অধর্ম অপেকা পুত্রহরণ অতি গুরুতর,অতএব সাবধান সাবধান, রাজার भारभ दाका नहे।"

এই সময় দেওয়ান অগ্রসর হইয়া বান্ধণকে বলিলেন, "মহাশয়কে পুত্র-শোকাকুর দেখিতেছি, আপনি আমার সঙ্গে আহ্বন, কে আপনার এই হর-বহায় গল্পা বাড়াইয়াছে তাহা শুনি। কিরূপ প্রমাণের ছারা আপনার এ ভ্রম बनाह्या नियाह छाहा वनित्वन हन्।"

# বঙ্গদৰ্শন ।

#### সপ্তম বৎসর।

৭৭ সংখ্যা।

### অভিজ্ঞানশকুন্তল।

৩। শকুন্তলা,—নাটকের চরিত্র।

আমবা দেখিয়াছি যে ছম্মন্ত অসীম নলেব অধিকাবী। ভাঁহার বাচ্বল দেবতাদিগেব কাছেও পবিচিত। মমুদোৰ শত্ৰু, কি দেবতার শত্ৰু, তিনি गकरमञ्जे प्रमनकाती-- गकरवात्र वि-জেতা। আমবা আবও দেখিয়াছি, যে भ्यक चानमानित्वसी, समिथिय, वह ম্চিষ্ণ। তিনি দিবারাত্রি রাজকার্যা केविया क्रांखि काबूडव करतम गा- मधाक প্রির বিশ্বদক্ষকারী কিরণবাদা ভাঁহাব काट्ट (उद्धारीन-अभीन भगनाश कार्या . **২**টলেও তিনি ভাষা সম্প্র কবিতে প্ৰামুপ নন-ভাঁহার অতুল দেহতত্ত গিরিচর হস্তীর দায়ে প্রাভূত বলবাঞ্চ । ত্মত পুরুষ প্রধান-ভাছার যে কয়টি धानत खेदाथ कतिनाम, तम कत्री शुक्रव-জাতির প্রণঃ র্মণীরত্ব শকুত্বলা সে বক্ষের নন। স্থীব্যের সৃহিত শকুভুগা भिरे गरिकमिना मानिनीमहीकीयन গ্রমর্থণীয় শাভিয়স্পরিগুড় তপ্লা

শ্রমের তকলভাষ জলসেচন কবিতে আসিতেছেন। তিনটিবালিকা দেখিছে প্রায় এক রকম—বয়সে প্রায় একরকম —এবত্রে প্রতিপালিভা—এক-মন, এক-প্রাণ, এক-আয়া। একটি স্থী শকুম্ভ-লাকে বলিতেছেন—

হনা শউস্তলে ততোবি ভাতকণত্ম অমনবক্থলা পিঅদবা ভি তকেনি, জেণ ণে'মাণিজা-কুস্ম-পবিপেলবাৰি ভূমং এ-দাণং আলবাল পরিউরণে নিউজা।

নবপ্রকৃতিত মলিকাকুল আর নবপ্রকৃতিত শকুন্তলাফুল একই বন্ধ। এটিও ঘেদন স্থান ওটিও তেমনি স্থান । এটিও ঘেদন নরম, ওটিও তেমনি নরম। এটিও ঘেদন নরম, ওটিও তেমনি নরম। এটিও ঘেদন মধ্বতাময়, ওটিও তেমনি মধ্বতাময়। এটিও ঘেদন ক্র, ওটিও তেমনি ক্র, কোনটি কোলাপ, কোনটি টাপা, কোনটি টাপা, কোনটি উপার, কোনটি

জবা, কোনটি ভারবেট, কোনটি পদ্ম, কোনটা কর্নিকার। এগুলির মধ্যে কোনটি ভাল কোনটি মন্দ। কিন্তু সকলেরই একটি সাধারণ গুণ আছে — সকলেই পুষ্পতাতীয় কোমলভার অধিকানী। সকলেই বে दुक्ककार्ष्ठ वा लड। तड्डू जनलञ्चन कदिया থাকে, সেই কার্চ এবং বজ্জ মপেকা কোমল। নব প্রকৃতিত সলিকাপুস্প দেই কোমলভার প্রাণ্যরূপ। (কন না ইছা যেমৰ কোমল, তেমনি কুছ, তেমনি পাতলা এবং তেমনি ফুট্ফুটে। ভাই অনস্যা বলিভেচেন,যে মহর্ষি কণু আশ্র মেব তরলভাগুলিকে শকুন্তলা অপেকা ভালবাদেন। (कन गां, भक्छनाव ८४६-পানি যে রকম কোমল, তাহাতে সেই र्छक्रनडाञ्चलिएड कन निया (वड़ाडेएड হঠলে, তাহা অন্দাই শ্রুরিই হটয়া আরে হটলও ভাট। পড়িবে। তিনটিনাতা বুকে জলসেচন করিয়:ই भक्छना (गन একেবাবে ভালুগালু চইয়া পড়িলেন এবং হাঁপাইয়া উঠিলেন। শ্রস্তাংসা বভিমাত্রশেহিতভাগৌ ব ছু

ঘটে ংকেপনা

দ্দাপি স্তনপেবেথুং জনগ্নতি খাসঃ প্রসাণাধিকঃ।

বঙ্কং কণ্শিরীয়রোধি বদনে ঘর্মান্তসা জালকং

বন্ধে অংসিনি চৈকহুত্তথমিতাঃ প্র্যাকুলা মুক্ষরাঃ ॥

কুত্র কর্নসের ভাবে শকুন্তলার কুত্র কার্ত্বতা এলাইয়া পড়িল; প্রমাধিকা

বশতঃ তাঁহার ধননী প্রাহিতশোণিত-লোড ধরতর হইয়া তঁ:হার কুন্ত লোহিত-বর্ণ করপন্নটীকে অধিকতর 👣।হিত্তবর্ণ করিয়া তুলিল; তঁছোর নিঃশ্বাস ঘনঘন পড়িতে লাগিল, এবং নবগৌবলোয়ত বক ঝাটকাবিকিপ্তত্যে:ভিষেনীর ন্যায় ভরঙ্গিত হটয়া উঠিল; তাঁহার হৃকে।সল মুগণানি স্বেদ্বিন্তে পরিপূর্ণ ইইল, এবুং সেই • সেদবিক্তে উ.হার কর্বের শিরীষ পূল্প-প্রণি অতি স্কোমণভাবে জড়াইয়া গেল; তাঁহার কেশ গুচ্ছ পদিয়া পড়িল; তাঁহাব অলকাগুলি তাঁছার হত্তের আব-রোধ না মানিয়া ভালিয়া ভালিয়া প-ড়িতে লাগিল। সামান্য শ্রমে শকুস্তলা-পুপাটী যেন বৃদ্ধালিত হটয়া পড়িল। र्यन कुछ वड्डावडी लडाही अन्नुनि-স্পর্শাস্থ্র করিছে ন। করিছেই সন্ধূচিত इटेबा ८गल! এই बनाई इश्रष्ठ विवा-ছিলেন যে শক্সলাকে তপশ্চৰ্য য় নিযুক্ত করিয়া মহর্ষি কণু স্থকে:মল নীলোৎপণ-शर्द्धाद (कामलंडम शार्द्ध इस्त्री क्रिनेडम भगीवृक्तरम्बना यभाषामाध्यात अ-য়াস পাইতেছেন।

ইদং কিলাব্যাজমনে:ছবং ৰপুঃ স্তপঃক্লমং চাধয়িকুং য ইচ্ছিতি।

জ্ঞবং স নীলোৎপলপত্রধারয়। শ্মীলতাং তৈভিতৃমূদিবঃবসাজি ॥

আসরা সকলেই পালার পাতা দেখি-রাছি—নীলললে বড় বড় পলপত্র ভাষিতে দেখিয়াছি। ল্বল সে পাতার প্রাণ-দে পাতা যেন কি মুক্ষু প্লীয়

শক্তিতে বাহির হইয়া পড়িয়াছে। যেন कि तकरम बन अक हे चन इंडे मा शांडा इंडेब्रा গিয়াছে। সে পাতা কি কোমল। কোমলতাম্থী শকুস্থলা নগদারা সেই পাতাতেই জকর কাটিয়াছিলেন। সে পাতার নধের আঘাত সহা হয় না। । নথম্পর্শে দে পাতা যেন গলিয়া যায়। স্মার ১/সেই বড় পাচাটিকে আন্তে चार्ड मृगांग इरेट इ डिंड्या टाल, পাতাটি অমনি যেন ভাঙ্গিয়া পড়িবে। সে পাতার আবার ধার কি গা ? যদি কোমণভার ধার থাকে তবে দে পাভার ধার সেই ধার। যদি কোমশতার কো-মলতা পাকে, ভবে সে কোমলতার নাম 'নীবোৎপলপত্ত্রের ধার।' শকুস্তল।র কোমলভা সেই রকম কোনলতা। यनि সে কোমলভার অপেকা বেশী কোম-লভা অগতে থাকে, ভবে ভাহা মহুষ্যের ৰৱনাতীত্ত। এখন সেই কোনণভার সহিত হয়তের বলিঠতার তুলনা করিয়া भिरत यथार्थ हे त्या बहरत त्य, इन्नर ए कित भयोकुक जवः कामक नीरनार-প্ৰপত্তের কথা বলিয়াছেন, স্বয়ং গ্ৰু छहे (महे भमी तृक्ष এवर डाहात मक् छलाहे সেই নীলোৎপলপত্ত। অগতে শারীরিক **গঠন এবং শারীরিক বলসম্বন্ধে পুরুষ** এবং স্ত্রীজাতির মধ্যে বণার্গই এত প্রভেদ। কর্মের মূল শারীরিক বল এবং <sup>(স্ই জন্য অগতের কর্মকেতা পুরু,ষ্র</sup> - दम्गीत नत्। সামाग्र सन्दर्गहन अभ-राज्या भकुष्ठनाटक रमनिमा एक विलाद

যে ইনি পৃথিবীর ভয়ন্ধর কর্মকেজে ভার পাইবার যোগ্যা ৮

**किन्द** वलशैना स्टेशाउ भक्नु जना व-লিষ্ঠা ; কোমল হইয়াও শকুন্তলা কঠিনা.; শ্ৰমকাতরা হইয়াও শকুওলা কঠস্হিষ্টু। আমর। দেখিয়াছি যে, একটি ক্ষুদ্র কল্স বহন করিতে হইলে শকুস্তলা ভারাক্রান্ত। (वास करद्रम; कामता (मिश्राहि (य **अकिए कुन कराम इटेंटि क्**टेंटि कि हाति। वृक्षभृत्व कनामहत्र कतिश्रा (वड़ाहेत्वई শকুস্থনা আলুগালু হইয়া পড়েন। কিন্তু কোমলহাদয়ে বিষম ছঃখভার ধারণ করি-য়াও শকুন্তলা স্থীর্থ পথ হাঁটতে শ্রান্তি অমুম্ভব করেন না। হিমালয় পর্বতের উপতাকান্বিত মহর্ষি কণেব আংশ্রম হইতে হস্তিত্রাপুর বড় কমদূর নয়। দেই **দृর**পথ অরণো পরিপূর্ব। অরণা**প**থে গ্রনাগ্রন করা বিষয় **ক্ট্রাধ্য।** যে-भारत अद्रेश नाहे, त्रिशात छाइछद्रवि। ভারতের উত্তর-পশ্চিমপ্রদেশে রবিকিরণ নিতায়ই অসহনীয়। আশ্রম হইতে যাত্রাকালৈ শকুন্তলার বিলম্ব দেখিরা শাঙ্গরিব কণ্ঠে বলিতেছেন---

ভগবন্দ্ৰমধিকঢ়ঃ স্বিতা ভত্রয়াত্র-

**७** व ठीमः।

সেই প্রির আশ্রমণদ পরিত্যাগ করিয়া খোকবিহ্বলা শকুস্থলা সেই প্রচণ্ড রবি-কিরণে হত্তিনাপুরাভিমুখে যাত্রা করিলেন। পথিমধ্যে কত্তই কট্ট শহ্ত করিলেন; করিয়া মধ্যাক্তালে ত্মন্তের রাজভবনে উপস্থিত ছইপেন। উপস্থিত হইয়াই ত্মুক্তের বাকাবাণ হৃদয়ে ধারণ করিতে লাগিলোন। কিন্তু তাঁহার দেহে ফ্রান্তির চিহ্নমাত্র নাই—পথশ্রমের প্রান্তিবিহ্নলতা
নাই—আতপতাপিতার আরক্তিমতা নাই
—দ্রপথগমনের স্বেদবিল্মাত্র নাই।
তথন তাঁহাকে দেখিয়া হ্মস্ত কেবল
এই মাত্র বলিলেন—
কেরমবগুঠনবতী নাতিপরিক্টশরীর-

नांबना ।

মধ্যে তপোধনানাং কিসলয়মিব পাঞ্

পত্রাণাম ॥

আবার শকুন্তলা তথন মাভূপদে আরোহণোদাতা। রমণি। তুমি কোমল-তমা হইয়াও কঠিনতমা; তুমি বলহীনা হইয়াও বলিষ্ঠা; তুমি শ্রমকাতরা হট-য়াও বিষম কন্তসহিফু! তুমিই স্ষ্টের প্রকৃত রহস্তা একদিন জনকনন্দিনীও এই অন্তত রহস্ত দেখাইয়াছিলেন। নির্বাসনাক্তা প্রাপ্ত হইয়া রাম শীতার निकडे निया विलालन—" श्रिया अवरण বিস্তর ক্লেশ সহা করিতে হয়। তথায় शिविक मात-विश्वी निष्ट निवस्य गर्छन করিতেছে: উহা নির্বর জলের প্রনশন্দ মিশ্রিত হইয়া কর্ণকুহব ব্ধির করিয়া হুদান্ত হিংশ্ৰহত্ব সকল উন্মন্ত হইয়া নিভায়ে সর্বাত বিচরণ করিতেছে, তাহার। সেই জনশ্ন্য প্রদেশে জামা-निशंदक प्रिथिताष्ट्र विगाम कतिएक आ-निट्द। नहीमकन नक्रकृष्टीक्रमःकून,

নিতান্ত প্রিল, উত্মন্ত মাতকেরাও সহজে পার হইতে পারে না। গ্রমপথে অন-বরত কুরুটরব শ্রুতিগোচর হয় এবং উহা কটেকাকীৰ্ ও শতাকালে আছেয় হইয়া আছে, পানীয় অলও সর্বত তুলভ नट्ट। मम्छ पिन भर्याष्ट्रेत्नत्र भत्र हा-ত্রিতে বুক্ষের গলিতপত্তে শ্যা প্রস্তুত করিলা ক্লান্তদেহে শর্ম এবং মিতাহারী হইয়া ভোজনকালে স্বয়ং পতিত ফলে কুধাশান্তি করিতে হয়। তপার বায় সভতই প্রবদ্বেগে বহিতেছে, কুশ ও काम बात्मानिक धवर कण्डेकवृत्कव শাধা সকল কম্পিত হইতেছে। রজ-নীতে খোরতর অশ্বকার, কুধার উদ্রেক সর্কাশ হয়, আশকাও বিস্তর। তন্মধ্যে বিবিধাকার বহুসংখা স্থীস্প আছে, তাহাবা পথে সদর্পে ভ্রমণ করিতেছে। স্রোতের নাায় বক্রগতি নদী-গর্ভর खेदरावा अमन**१५ ख**यरदाध कविया दहिः ষাছে। বুশ্চিক কীট এবং পভঙ্গ ও परम मभारकत यद्यवा मर्खनाई **खा**श क-রিতে হয়, কায়কেশও বিস্তর, এই कांत्र १ है । कहिए का बना स्ट १ वर्ष व निवातन कति, जुनि ख्थात्र गारे । বনবাদ ভোষায় সাজিবে না (১)।" কিন্ত বনবাস তাঁহাকে সালিয়াছিল কি ना छाडा मकलाहे बादनन । है जिहारमध আমরা এই রহস্য দেখিয়া গাকি। বিপদ্-वास मिल्मसारात थान वाहाहेवात जना

<sup>(</sup>১) হেমচক্স— অনোধ্যাকাও, ১৫৩--৫৪ পৃষ্ঠা। স্থানে স্থানে ত্ই এক পংক্তি ছাড়িয়া দিলাম।

कानी व्यानक ममाय श्रविकालि जिल्लान করিয়াছেন, অधির।শি তুচ্ছ করিয়াছেন, জলরাশি ভেদ করিয়াছেন। ভারতে व्यगीवीवष्ठ स्वर्तनाई स्विध्क शाख्या यात्र। व्यक्षाम्भभा (कामलान्नी वीत-प्रतर्भ श्रुकर्याख्य याष्ट्रराज्य, ग्रा-कामी याहेट उट्टन, कामक्र १ - देव बागांश याहे-'তেছেন। এ রহস্যের অর্থ কি ? আমা-त्तृत (वाध इश हैशत वर्थ धहे- भूक्ष, मतीरतत वरन विलिष्ठं; तमनी, कपरमत वरन বলিষ্ঠা। পুক্ষ স্কলিট ক্ৰেক্ষন: রস্ণী কেবল জদ্মের বেগে বেগবতী इन्टेश क्यांक्य। পুরুষ সর্বক্ষণই क्षभण्डत कर्याक्षाक विष्ठत्व करतन; त्रभी कर्नाहिए कथन छश्टित कर्याकात দেখা দেন। কর্মালতা পুরুষের স্বাভা-निक धर्मा, तमनीत कातकामारलक धर्म। কিন্তু রম্বী যথন সেই অবভায় পতিত হন, তখন তাঁহাতে এবং পুরুষেতে কোন প্রভেদ থাকে না—তথন কোমলভ্য নীলোৎপলপত্ত কঠিনতম শ্মীবৃক্ষ হইয়া एं है। श्लीकांकि यह व्याम्हर्ग देनभंदी তোর আধার বলিয়া জগতের প্রধান वहमागरक्षा भित्राविक।

যে হৃদয়ের গুণে শকুস্তলা বলিঠা,
আবার সেই হৃদয়ের গুণেই শকুস্তলা
বলহীনা। যে হৃদয়ের গুণে শকুস্তলা
কার্যা করিতে সক্ষম, আবার সেই হৃদয়ের
গুণেই শকুস্তলা কার্যা করিতে
অক্ষা রমণীহৃদয়ের এই আশ্চর্যা
বহন্য মহাক্রি কালিদান যে প্রকারে

(क्याहेबाडिन क्रांडित चांत्र (कान क्रि ८म थिकाद्य (क्थान नाहे। इञ्चल ताकः ধানীতে প্রভাগমন করিয়াছেন। করিয়া তাঁহার স্বাভাবিক রীতানুসারে রাজকার্য্যে गरनानिरवण कतियाद्या कियु भक्छना সকল কর্ম ভূলিয়া—প্রিয়তমা প্রিয়-ষদাকে ভূলিয়া-প্রিয়ত্মা অনপ্রাকে ভূলিয়া—আশ্রমের লতা মুগগুলিকে ভূলিয়া—কেবল হুমান্তকে ভাবিতেছেন। কুদ্র পর্ণকুটীরের ভিতর বামকরতলে গণ্ড স্থাপন করিয়া প্রস্তরনির্শ্বিত প্রতিমূর্তিব ন্যায় নিষ্পন্দভাবে চ্ন্নস্তকে ভাবিতেছেন। এমন সময়ে প্রজ্জনিত ছতাশনপ্রতিম মহর্ষি চুর্বাসা আসিয়া ভয়ত্বর স্বরে 'অয়নহং ভো' বলিয়া সেই কুলু কুটার-হিতা কুদ্র বালিকার সমুখে আভিথা-প্রার্থী হইয়া দাঁড়।ইলেন। সেই ভয়য়ব স্বরে সমস্ত আশ্রমারণ্য বেন কাপিয়া উঠিল। অদূরে প্রেয়ম্বদা এবং অনস্থা শকুন্তগাৰ ইষ্টদেৰতার পূজার নিমিত্ত পুষ্ণাচয়ন করিতেছিলেন, তাঁহারা যেন সিহরিরা উঠিলেন। কিন্তু ছ্মন্থনিমগা প্রস্তিবং নিশানা শকুন্তলা নিপান-ভাবেই রহিলেন। তথন তিনি তাঁহাতে নাই; তথন তাঁহার কাছে বংহাজগং शालस्मिभक्षः; मानवाञ्चा (यगन शहमाञ्चाक नीन इष, टब्मिन ख्रम्यनर्यय भक्षना তথন হুশ্বস্থার শীন। তথন যদি এই পৃথিবী-গ্রহ-নক্ষত্রময় এক্ষাও ঘোররবে ছিন্নভিন্ন হইয়া মহাপ্রলমে নিমগ্ন হইত, তাহা इरेल द्वास्त्रभी मकुखना मिरे

সঙ্গে সজে মহা প্রলম্বে মিলাইরা ষাইভেন, জানিতেও পারিতেন না যে কি ছইল! বজ্ঞগন্তীর স্বরে জ্র্প্রাসা শাপ দিলেন— আঃ কণমতিথিং মাং পরিত্তবসি।
.বিচিন্তর্যনী য মননামানসা
ভূপোনিধিং বেৎসি ন মা মুপন্থিতম্।
স্মরিষাতি তাং ন স বোধিতোহপি সন্
ক্থাং প্রমন্তঃ প্রপমং কুতামিব।।

এখনও সংজ্ঞা নাই ! জীবিভা শকুষ্কৰা এখনও জীবনহীন! তঃহার জীবন,জ্ঞান, (मर, रेमहिकमंक्ति-- मकनरे এथन डाहांत्र অতলম্পর্শ হদয়ে বিলুপ্ত। यथार्थहे चाउलन्तर्भा। প্রেমানলসন্তা-পিতা শকুত্তলা যুগন প্রথম চুক্সভের কথা বলেন, তখন প্রিঃস্দা বলিয়াছি-লেন যে বেগবতী স্রোত্রিনী মহাদাগ-রাভিমুখেই ছুটিয়া পাচক—ক্কোমল মাধবীৰতা চূতবৃক্ষকেই অভাইয়া উঠে। ছম্মন্ত নানাগুণে গুৰবান্— ঠাছার চরি-ত্তের বিস্তার অনস্ত সমুদ্রের ন্যায় অসীম चलिरल हे श्रा भक्षनाहित्र विश्वात नारे। डांशाङ इश्रास्त्र वाहर्त नारे, भवदेनপूना नाहे, मृत्रशामका नाहे, পাণ্ডিতা নাই, উচ্চ বিচারশক্তি নাই, অপরিমেয় কর্মনীলভা নাই, অপরিমেয় अम्भीनंडा नारे, अपविद्यम कार्यानकडा নাই। তাহার থাকিবার মধ্যে এক ছাদর चाहि। किस माज्यस्य गडीतका वनः অনত সমুদ্রের গভীরতা সমান। পুরুষ, **চরিত্রবিস্তারে সমুদ্রবৎ--রমণী, জ্বর**-গভীরভার সমূত্রব । পুরুষ ভালবাসার

সামগ্রীকে রমণীর সত তত আত্মগত করিছে পারে না--ভত আপনাতে মিশা-ইয়া লইভে পারে না—তত আছবিশ্বত হইয়া, ডভ অগ্ৰিশ্বত হইয়া ভাবিতে পারে না। পুরুষ-জ্বয়ের গভীরতা কম। সেই জন্ম পুরুষ বিরহে অক্টির হইয়া পড়ে। রমণীছদয়ের গভীরতা অপরি-(भम्। (मर्वे जना त्रभी विवदः कारय-चर्तव, कृषयमधी इटेशा थारक। इच्च स्टर् ভাবিতে ভাবিতে শকুম্বলা একেবাংর बीवनशैन अञ्जरम्हितं नााग्र म्थनस्थीना । कि स अनुतीय ' পूनर्मर्नगायत भक् खनारक ভাবিতে ভাবিতে ত্ময় অধীর, অন্থির, व्यत्नको। शासीगांबहे, डेन्नाद्वत्र नौत्र প্রাপল্ভ। শকুম্বলার হাদর অনস্তাধার - यडहे (कब इ:अ इडेक ना (म झन्यटक ছाপारेया উঠিया (पर वा छान क मध्यून করিতে পারে না, কারণ ছাদয়ের তুলনায় मक्छनात (मह এवः कान नारे विनित्रहे হুম্ময়ের হাদ্য পরিমিতাধার;— कारना अक्षे (वभी इटेटनरे दम समग्रत ছাডাইয়া উঠিয়া শরীরকে অন্তির করিয়া जुहन, खानक विश्वन कतिया करना হৃদ্ধের মোহে রমণী বাহ্তপণং ভূলিয়া यान, शुक्रव जुलिया यान ना। भक्षना সেই ভর্মর "অর্মহং ভো" গুলিতে পাইলেন না—সেই ভয়কর শাপ ভনিতে भारे**लन ना। किन्द इश्र**ष्ठ विस्तल-सम्बन विक्तन-सान, अवर मृद्धि छ शाप्त इहेमां ह विभावत च्यार्चत्रव अवन्याक वीत्रविकारम छेडिया काफारेटनम । क्षत्र इटक (मार्क.

বিহ্বল দেশিরা তাঁহাকে উত্তেবিত করিবার নিমিত্ত মাতলি মাধবাকে ভরপ্রদর্শন
করিয়াছিলেন। ছল্লন্ত মাতলিকে জিজ্ঞাসা করিলেন—'মাধবাং প্রতি ভবতা
কিমেবং প্রযুক্তম্।' সাতলি উত্তর
করিলেন—

'ভদিপি কপাতে কিঞিরিমিন্তাদিশি

পানুস্থায়াদায়য়ান্ ময়া বিক্তো দৃষ্টঃ

পাশ্চাৎ কোণয়িত্মায়ৢয়য়ৢ৽ তথা কৃতবা
মাজি।'

মাতলি সিদ্ধকাম ২ইলেন। শোক-শিহ্বন গুমান্তের কাছে বাহাজগৎ প্রবল নি মধমধ্যে ছম্মন্তের শোক-বিহ্বলতা কর্মাশীলভায় পরিণত হইল। কিন্তু হাদয়মৃত্যা শকুরলা ভয়ত্বর ছুর্বাসা-সত্ত্রে জ্লয়মুগ্ধাই রহিলেন। বাহাজগৎ বিলুপুট রহিল। হাদয়মগার িণেট্ড বা নিশেষ্ট্র ভাই রহিল। ल्मायुव कार्य बमनी (ह्रेश्लीला (मर्डे अपराज खरवर दम्बी निस्म्ह्या। समग्रे ব্যণীচরিত্রের প্রাণান ভিত্তি এবং প্রধান ক্রদয়ের গুণেই স্কীঞ্চ,তি পুক্ষপাতি ২ইতে ভিল্ল। কালিদ:দের শকুমলা সেই রমণী স্পররহতের উজ্জল-ত্য প্রতিমা। এবং সেই প্রতিমা পুরুষ চরিতের তুলনার উজ্জলতম অংশেকা এমন তুলনামূলক নারীস্ক্র গুড়িমা জগতের স্বার কে.ল নাটকে ना है।

धग्न शिकामा **धरे, शिवनस्व निवह** वेग्गीकृष्**व अञ्चलाल स्वन, भूक्तस्वर**व এত লাগে না কেন ? গুরুত ত পকুতঃ লাকে রাখিয়া রাজধানীতে গিয়া রাজ-कार्या कदिए वाशित्वन । किन्न वृत्रव्यक्रक ছাড়িয়া শকুন্তলা এমন হইলেন কেন। আমাদের বোধ হয় ইহার কারণ এই,---পুরুষ প্রিয়বস্তকে শুধু হৃদয়ে রাখিয়াই অনেকপরিমাবে সন্তই: রুমণী তা নয়। রমণী প্রিয়বস্তুকে চোকে চোকে রাখিতে চার। পুরুষ প্রিয়বস্তুর কল্লনাতে সমুষ্ট: রসণী পোদ প্রিয়বস্ত বাভিরেকে সভর নন। ১৮৭৯ সালের সেপ্টেম্বর মাসের Nineteenth Century তে অধ্যাপক বেশক A Dialogue on Human Happiness নামক একটি প্ৰবন্ধ লেখেন। এक है शुक्त चात्र अक है। त्रानी करवान-কথন করিতেছেন। রুমণী সতেজে विषयाहरू-" Heavens! do you know so little as to think that were a man in love really, he could endure to be absent, without necessity, a day from the woman he was in love with? No: he is never happy when away from সম্ভাবিত পুরুষ ইহার অর্থ বুঝিতে পারিলেন না, এবং বলিলেন বে ইছাকে যদি প্রশন্ত্র তবে গেন প্রণয়ের সহিত আমার কোন সম্বন্ধ না পাকে। किट्ड शाद्य गा। तन्नी समस्यत् वश्चरक गर्समाहे हारकत छेलत ताथिट हारहरा। ८म्डे निविष्ठ यथन अन्द्रित वश्र कार्क्त्र

অন্তরালে থাকে, তথন রমণী আপন হাদয়ের ভিতর লুকাইয়া করনার বলে অপ্রত্যক্ষকে প্রভাক করিয়া তুলেন, এবং সেই কল্পাসস্থত বস্তুতে প্রকৃত বস্তু বোধে মিশাইয়া গ'কেন। বমণী বাহা অব-लयन वाडित्वरक शांकित्व शाह्म ना। भुक्राव मन भारतक शतिमार्ग (महे मन-সাপেকা; কিন্তু রমণীক্ষণ বাহাজগং-সাপেকা। এবং সেই নিমিন্তই বাহা-জগতের অভাবে রমণী তাহার আশচ্যা জনয়াভান্তরে আশ্চ্যাত্ম বাহাত্রগতের সৃষ্টি করিয়া পাকেন। সে আশ্চরী বংহা-জগতের কাছে প্রাকৃত বাহ্যজগৎ অস্তিত্ব-থীন। পুরুষজাতির মধ্যে উচ্চশ্রেণীর কবি ভিন্ন আর কেহ সেরকম আশ্চর্যা বাহাজগৎ সৃষ্টি করিতে পারে না। রম্ণী-মণ্ডলে সকলেই উচ্চশ্রেণীর কবি। দার্শ-নিকেরা বলিয়া থাকেন এবং ইতিহাসেও एमश्री यात्र (ग (गंशांति क्रम्हास **श**ंहाक জগং, দেখানে বাহাজগং বিলুপ। যে শোগীর মনে প্রমান্তা প্রভাক, সে বেংগীর নয়নে বংহজগং অপ্রভাক-অভিনহীন। যে শকুতলার চক্ষে সন্মু থস্ বাহাজগং অপ্রতাক, সেই শৃকুত্তু লার হৃদয়ে দূববর্তী হুমন্ত প্রতাক। রমণী প্রভাকপ্রিয়, প্রভাকামুবাগী, প্রভাকাপেকী এবং সেই জন্য শেংকে এবং বিরছে রমণী এত অন্তর্লীনভাপ্রিয়। কালিদাস ভিন্ন আর কোন কবি এই নিগুড়তত্ব ব্ঝান নাই। পর্বকুটীরে ছুল্ল छ-निमधा भक्षना,--अपि छे०कृहे कति

প্রতিভার অক্ষয়, অনম্ভমহিমাপূর্ণ, উৎ-কৃষ্টভম কীর্ত্তি। এ কবি যাহাদের, ভাহারা যথাধই জগতে স্পদ্ধাক্ষম।

আমরা শকুন্তলার যে মূর্তিটী দেখি-় লাম সেটি স্ত্রীজাতির অন্তর্গীন মৃতি। নে মূর্ত্তিতে স্ত্রীকাতির অন্তিত্ব সম্পূর্ণরূপে অন্তর্নিহিত। সেমূর্ত্তি দেখিলে স্তন্তিত। হইতে হয়, বিশ্বিত হইতে হয়, ভীত হইতে হয়। এই আশ্চণ্য অন্তলীনতা ভাবপ্রারতার ফল। **এত ভাবপ্রা**খরতা (Intensity of feeling) আসরা বুঝিয়া উঠিতে পারিনা। এত ভারপ্রথরতা-পূর্ণ অন্তিত্ব আমাদিগকে প্রাহেণিকা বলিয়া বোধ হয়। আমাদের বোধ হয যে, যে মুহুর্ছকালের জন্য বাহাজগং দেখিয়াছে এবং বাহাজগতে বাস করি-ग्राष्ट्र त्र कथन এठ श्रञ्जर्निभ इटेटि পারে না, এত অন্তর্লীনতাপ্রাপ্ত হয় না। এই ভাবপ্রবাপুর্ব অন্তর্লীমতা দেখিয়া আনরা ভীত হই। আনাদের বোধ হয় যে যাহার এত ভাবপ্রথরতা সে যদি শকুন্তলার ন্যায় ভাল হয়,তবে পৃথিবীতে তাহার **অ্পেক। ভাল জিনিস আর** কিছুই इंटेट शादा ना, किन्द्र यनि (मञ्जूषी वत-চিত্রিত মেকবেপপানীর নাায় মক হয়, তবে পৃথিবীতে তাহার অংশকা মন জিনিস আর কিছুই হইতে পারে না। এবং জগতের ইতিহাদেও দেখা শার যে, পুরুষ যতই ভাল হউক না, ভাল স্ত্রীর মতন ভাল হইতে পারে না—এবং गडर गम इडेक ना, मन जीत महन

মন্দ হইতে পারে না। এই ভাবপ্রথ রভাপুর্ণ অন্তলীনতা দেশিয়া আমরা বিক্সিতও হই। আমাদের বেংধ হর বেন একথানা প্রকাশু হিমশিলাগণ্ড অনস্তকাল গিরিকন্দরাবদ্ধ হহিয়াছে---কখন গলে নাই, কখন গলিতে পারি-বেও না। কিন্তু রমণীকাদয় রহগাময়। • आवक्ष (इमिनाथ ७ यमन गरन, आवक्ष রমণীসদয়ও তেমনি গলে। এবং ছিম-শিলা গলিয়া যেমন তক, লভা, প্রস্তর সকলই ভাসাইয়া লট্যা যায়, রম্পীলদ্য গলিলেও তেমনি স্ত্রী, পুরুষ, বালক, तृषः. (कामलझम्यः, क्षित्रम्य मकलाक्टे ভাসাইয়া লইয়া যায়। কথাটি সভা কি गा, अञ्जानमक्ष्यालय विनाश मुभाषि পড়িলেই বুঝিতে পারা যায়। সেদুশোর श्राप्त (कामन, अनुवाशहादी, कृतिणामत, মানবপ্রকৃতিপ্রক,শক জিনিস আমবা ভার কোণাও দেখিম,ই। কিয়দংশ জ্ञूताम कतिया मिलाम:-

গৌভনী। বংগে! অকনবং স্থেহপূর্ণ ওপোবনদেশভারা ভোমার গগনে অনু-মতি কবিতেছেন। ইছানিগকে প্রশান কর।

শকুষ্ঠলা। (প্রণাস পূর্বেক করেন পদ গিরা জনাজিকে) সন্ধ প্রিরম্বদে, আমি যদিও আর্থ্যপূজ্রকে দেখিবার নিমিত্র উৎকৃত্তিত ইইয়াভি, তথাপি আল্মপরিভাগে আলার পা উঠিতেভে না। প্রিয়ম্বদা। তুমিই যে কেবল তপোন্বন্পরিভাগে কাত্র ইইয়াভ তাহা

নছে, তপোবনও ভোমার বিরহকাল উপস্থিত দেখিরা কাতর হইতেছে। মুগদিগের মুখের কুশাগ্রাদ পড়িরা ঘাই-তেতে, ময়ুরেরা নৃত্য পরিত্যাগ করি-য়াচ্ছ এবং লতাসকল পাঞ্পত্ত মোচন-চ্ছলে যেন অঞ্পাত করিতেছে।

শকু। (শারণ করিরা) পিতঃ ! লতা-ভগিনী বনজ্যোৎসাকে সম্ভাষণ করি।

বণু। জানি সেই লভাব উপর ভোমাব মোদরমেই আছে। এই সে দক্ষিণপার্শে আছে।

শক্। বনজ্যেৎরে ! তুমি সহকারের সহিত সনাগত হইলেও দ্রপ্রারিত শাখাবাহ হারা আমাকে প্রত্যালিঙ্গন কর। আমি আজে অবধি তোমাকে হাড়িয়া যাইতেছি।

ক: আমি তোমার জন্য অর্থে নেকণ ইচ্ছা করিয়ছিলাম ত্সি স্বগুনে সেই আয়ুনদৃশ সামী পাইয়াছ। আর এই নবস্থিকা সহকারবৃক্ষের সহিত্ত মিলয়াছে। এক্ষণে তোমার ও ইহার জনা ,আমার ত্তাবনা দ্র হইয়াছে। এইজাম দিয়া চল।

শকু। (সধীরয়ের প্রতি) স্থি, আমি এই লঙাটকে তেনাদের ছুজনের হাতে সঁশিয়া দিবাস।

স্থী। আফাদিগকে কংহার হাতে মঁপিলে ১

ক। অনস্থায় কাঁপিও না, তোম-য়াই ভ এখন শকুভলাকে প্রাংশাদ দিবে। প্রকলেই কাইভেছে) শকু। এই উটজচারিণী গর্ভগছবা মূগী মূণন ভালয় ভালয় প্রান্থ হইবে তপন তোমরা আমার নিকট লোক পাঠাইও। সে গিরা আমাকে এই প্রিয়সভাদ দিবে।

ক। না, আমবা ইহা ভূলিব না।
শকু। (গতিব্যাঘাত দেখিয়া) কে
আমাব বস্তু আটক ইতেছে ? (দেগিবার গিমিত্ত মুখ ফিবাইল)

ক। বংসে! বাজার মুখ কুশাগ্রার।
বিদ্ধ হুটলে তুমি কাতশোধক ইঙ্গুদীতৈলকেক কবিতে, তুমি যাজাকে শ্রামাক
ধানামুষ্ট দিয়া পোষণ করিযাছ,সেই ভোগার কাতকপুত্র মুগ ভোগাব অনুসংশ
করিতেছে।

শকু। বংস! আনি ভোমানিগকে ছাড়িয়া যাইতেছি, তুমি কেন আমার অনুসবণ কব। ভোমাব জননী ভোম'য় প্রাস্ব করিয়াই মরিয়া যার, তুমি সেই জননীবাতীত আমাব যাত্র এত বডট ভইয়াছ। এখন আমি অ'বার চলিলাম। এখন পিতাই ভোমার ভাবনা ভাবিবেন। যাও ফের। (বোদন কবিতে করিতে প্রাস্থন)

ক। বংশ তোমার উরতপক্ষর্ক নেতারয়ের দর্শনবাগোব নিরেধ করি-ভেছে। এই ভূমিভাগ উরতানত। বাংশাবরোধ হেতুইহা সমাক্-লক্ষিত না হওয়াতে তে:মার পদসা ন হইতেছে।

শার্পরিশ। ভগতন্তনা যায় যে নদী বা সরোগর পর্যান্ত সিগ্ধনাক্তিকে অহ গদন করা কর্ত্তনা। এট অদ্রে স্রো-বরতীব। যা বলিবার থাকে এখানে বলিয়া ফিরুন।

ক। ভাল, আইস আময়া এই কীর-বৃক্চছোরায় আশ্র লই।

(দকলের উপবেশম)

ক। বছমানাস্পদ ছ্মান্ডের নিকট বলিতে পারাযায় এমন কি কথ্যু বুলিয়া, দিব। (চিন্তা)

শকু। সখি, দেখ, চক্রবাক্ নলিনী-পত্রের অন্তবালে আছে। চক্রবাকী ত'হাকে দেখিতে না পাইরা সকাতরে চীংকাব করিতেছে। কিন্তু আমি এতা-বংকাল আর্যাপুত্রকে না দেখিয়া আছি। আমি চঙ্কব কার্যা করিতেছি।

জনস্রা। স্থা, এমন কপা বলিও না। এই চক্রবাকীও প্রিয়বাভীত দীর্ঘ-তরারজনীযাপন করিয়া পাকে। অংশা অতি গুক্তর বিরহজ্ঃগও সহনীয় করিয়া দেয়।

ক। শাঙ্গরিব, তৃষি শক্সলাকে সন্মুখে রাখিয়া আমার বাকাক্রমে সেই রাজাকে এইরূপ বলিবে।

শার্স । • মহাশর আক্রোকরন।

 অধিক হইবে, বধ্যস্থাণের তাহাবল। উচিত হয় না।

শার্স<sup>°</sup>। মহাশরের কথা গ্রহণ করি-লাম।

ক। বংমে। এখন ভোগাকে কিছু উপদেশ দেওয়া আবশাক। আগরা বনবাসী ছইলেও লৌকিক ঝাপার বৃ-ঝিয়া থাকি।

শার্স বৃদ্ধিমান্ বোকের কিছুই জ্বজাত থাকিতে পারে না।

ক। ত্মি এ স্থান ক্ইতে ভর্কুলে

গিয়া গুরুজনদিগেব গুজুষা করিও, সপদ্দীগণের প্রতি শ্রিম্নথীবং বাবহার করিও,
অগমানিত হইলেও পতির প্রতিক্লচাবিনী হইও না, পরিচারকদিগের উপর
অধিক অফুকুল কইও, এবং সৌভাগাকালে গর্বিত ক্ইও না। সুবতীরা এই
কপেই গৃহিনীপদ পায়। আর য'হাবা
ইহার বিপরীতাচরণ কবে, ভাহারা পতিকুলের যাতনাম্রক্রপ হইয়া থাকে। এই
বিষয়ে গৌভনীই বা কি বলেন দ

গৌ। বধুর প্রতি এইই উপদেশ। ব্যাহা, এই সকল মনে রাখিও।

ক। ২৭:স় ভূমি আমাকে ও স্বী-দিগকে আলিক্স কর।

শকু। পিতঃ! প্রিশ্নদা প্রভৃতি সংীবা কি এ স্থান হইতেই ফিরিয়া ধাইবে ?

ক। বৎসে ! প্রিয়ম্বদা ও অনস্থারও বিবাহ দিতে হইবে। তথায় মাও্যা ইহাদের উচিত হয় না। গৌতনী তো-মার সহিত ঘাইবেন। শকু। (পিভাকে আলিকন করিরা)
আনি এখন ভোনার অঙ্কচ্ত হইরা
করণে চক্ষনবৃক্ষ ছিল্ল চক্ষনশাখার ন্যায়র বিভিন্ন খাকিব ছ

ক। বংদে! তুমি কেন এইরপণ কাতর হইতেছ। তুমি মহাকুলোংপশ্ধ পতিব স্পৃহণীয় গৃহিণীপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া, ভাঁহার ঐশ্ব্যাসভাবে হর্মাহ গৃহ্-কাম্যে প্রতিক্ষণ বাস্ত থাকিব এবং পৃস্পদিক্ যেমন স্থাকে প্রদ্ব কবে সেই কপ অচিরাং এক প্রিত্র পুত্র প্রদান ক বিয়া অমার বিবহজনিত শোক অনুভবং করিতে পারিবে না।

শকু। (পিতৃচরণে প্রণাম করিলেন) ক। আমাব যথো সংকল তেমোব ভাষাই ইউক।

শকু। (স্থী দিগের সনিহিত হইয়া) স্থি, ভোমরা জ্জনে এককালেই থামায়-আলিগন কর।

স্থীরয়। (আলিজন করিয়া) স্থি, যদ সেই রাজা ভোষায় চিনিতে না পারেন, ভাষা হইলে তুমি তাঁহাকে এই তাঁহারই নামান্ধিত অঙ্গুরীয়টি দেখাইও।

শকু। আমি তোমাদের এই কপায় • ভীত হইলাম।

স্থীদ্য । বৈ ভন্ন পাইও না, নেহ অনিষ্ট আশিক্ষা করে।

শার্স<sup>ি</sup>। . বেলা দিতীর প্রাহর, তোমরা স্বর হও।

শকু। (আশ্রমাভিদ্ধী ইইয়া) পিতঃ করে আবার তথোবন দেখিকে ক্রক্র ক। শুন, তুমি বছকাল যাবং এই
সদাগরা পৃথিবীপতির মহিষী হইয়া,
পুত্তকে নিক্দিকে দিংহাদনে প্রতিষ্কিত
করিয়া পুত্তনাম্বপ্রকারক্ষণভার ভর্তার
সহিত এই শাস্ত আশ্রনে পুনর্কার বাদ
করিবে।

গৌ। বাছা, গমনকাল অতীত হই-তেছে, পিতাকে ফিরাইয়া দাও। অথবা শকুস্তলা অনেকক্ষণ ধরিয়া পুনঃ পুনঃ এইরূপ বলিবে, তুমিই ফিবিয়া যাও।

ক। বংসে! তপোহুঠানের ব্যাঘাত হইতেছে।

শকু। (পুনরায় পিতাকে আলিঙ্গন করিয়া) তোমার শরীর তপশ্চর্যায় পী; জিত, অতএব আমার জন্য আর অতি-য়াত্র উৎক্ষিত হইও না।

ক। (দীর্ঘনিখাসপুরিত্যাগপুর্বাক)
বংসে! তুমি পর্ণশালার হারদেশে যে
পুঁড়িধানোর পুলোপহার দিয়াছিলে,
ভাহা হইতে এখন অস্কুর বাহির হইয়াছে। আমি যখন তা দেখ্ব তখন
কিরণে আমার শোকসম্বরণ ইইবে!

(শকুন্তলা সহযাত্রিগণের সহিত নি-জ্ঞান্ত হইলেন)

আশ্রমপালিত। আশ্রমপ্রিয়। তাপদবালা চিরকালের জন্য আশ্রমত্যাগ করিয়া ঘাইতেছেন। শক্সলা সেই পবিত্র
আশ্রমের প্রাণস্থরপ। তাঁহাকে গমনোদ্যতা দেখিয়া শকুস্থলা-পালিতা আশ্রমটী
বেন শোক্রিহুবল হইয়া উঠিল। "মুগদুগের মুপের কুশপ্রাদ পড়িয়া,মাইভেছে,

ম্যুরেরা নৃত্য পরিত্যাগ করিয়াছে এবং লতাস্কল পাঞ্পত্রেচনচ্লে অঞ্পাত করিতেছে।" যাহাকে বাস-ञान **रहेर** विनाव निष्ठ इटेल, ममखः ৰাসভানটী বিরহকাতর বলিয়া অমুভব इस, दम यथार्थ हे दमहे वामकारनद ध्यान ! আল (প্রায়খন। প্রাভৃতির বোধ হইতেছে। যে, পণ্ড পক্ষী প্রভৃতি নানাবিধু প্রাণীরু শান্তিমর আশ্রয়খন সেই পবিত্র আশি-মটী প্রাণহীন হইয়া পড়িতেছে। আশ্রম-প্রাণা শকুন্তলাও বেন প্রাণহীন হইয়া পড়িতেছেন। তিনি যেদিকে চাহিতে-ছেন, দেইদিকেই তাহার স্বহন্তপ্রতি-পালিত, তাঁহার স্মধুর স্বেছপরিপ্ট তক, লতা, মৃগ, মৃগীদকল বিমর্বভাব ধারণ করিয়া রহিয়াছে। কর্মেক পদ গমন করিয়া তিনি আর পাকিতে পারিলেন না। বাাকুলিভাস্তঃকরণে ব-निश উঠিলেন—'পিত:! नडाङ्गिनी বনজ্যাংলাকে সম্ভাষণ করি।' পিতা ভানিতেন যে তাঁহার আশ্রমের স্কল পদার্থ ই ভাঁহার শক্ষলার প্রাণ এবং তাঁহার শকুত্বলা তাঁহার আশ্রমের সকল পদার্থের প্রাণ। তিনি বলিলেন--'কানি সেই লভার উপর ভোমার त्माप्ततस्य बार्छ। এই तम प्रक्रिन्थार्स রহিয়াছে।' অমনি শকুতলা বিদীর্ণ-क्षप्रय विनाम- वन क्षा विना पूर्वि সহকারের সহিত সমাগত হুইলেও দূর-অসারিত শাখাবাত্যারা আমাকে প্রভ্যা-লিগন কর, আমি আৰু অৰ্থি ভোমার

ছাড়িয়া যাইতেছি! পাঠক ফানেন যে
নবমরিকাটীকে শকুন্তলা বড়ই ভালবাসিতেন ৷ অলসেচনকালে নবমরিকাটীকে দেখিয়াই তিনি করনাপূর্ণ ক্ষেহোছিন্সত হাদয়ে বলিয়াছিলেন—

इना त्रभगीत्या क्यू कात्ना देशचा शा-দ্বনিহণ্ড রদিঅবাে সমুতাে জেণ্ণৰ ুকুস্ন্লোকা গোমালিমা অমং পি वर्ष्कननीय डेञाडा च क्यात्रा मह्यात्रा॥ তাই আজ শকুন্তল৷ তাহাকে শুধু मञ्चायन कतिया शांकिएक शांत्रित्वन ना। त्रम्बीतप्र त्रम्बीतरप्रत नाम मश्रीवस्टक বলিদেন—'স্থি! আমি এই লভা টিকে ভোমাদের তুলনের হাতে সঁপিয়া দিলাম !' স্থীৰয় আকুলিত প্ৰাণে বলিয়া ফেলিলেন—' আমাদিগকে কাহার হাতে সঁপিলে ?' আমরাও যদি তখন সেখানে থাকিতাম তাহা হইলে প্রিয়ম্বদা এবং অনস্মার নাায় বিগলিত হাদয়ে অঞ্পূর্ণ নয়নে তাঁহাকে বলিয়া ফেলিতাম— 'আমাদিগকে কাহার হাতে দঁপিলে?' তার পর সকলে অগ্রসর হইতে লাগি-लिन। भक्षनात्र शान कारहा वाक्-লিত হইতে লাগিল। ভাঁছার গর্ভমন্থরা मृगीवित्क त्विश्वि शहितन। शहिताः स्वर्भा विश्विष्ठवाना सम्मीत माह विलित्न- ' এই উট बहातिनी गर्छमस्त्रा स्त्री यथन छ। नम् छ। नम् अपन इहेर्द, ত্র্বন তোমরা আমার নিকট লোক भा**ठा**देख, *भा* शिषा वागाक वरे थिवयम निर्द ।' जारा ! कूजवानिकाव

श्रमय कडहे कानवागिएड शास्त्र कड ভাৰনাই ভাবিতে পারে! সে হাদয় আ্ল কত যাতন।ই সহা করিতেছে ! পরক্ষণেই আবার কি যেন ভাহ।র পশ্চাদ্রাগ হইতে গতিরোধ করিতে गातिन। पूर्व कित्राहेशा (प्रशिध्नन (य, যে মুগটীর মুণ কুশাগ্রহারা বিদ্ধ হইলে তিনি গ্ৰদ্ধে ক্ষতশোষক ইঙ্গুদীতৈলসেক করিতেন এবং যাছাকে শ্যামাকধ্নামুষ্টি দিয়া পোষণ করিয়াছেন সেই পুত্রধিক-প্ৰিয় মৃগটী মুণাগ্ৰ হারা তাঁহার অঞ্চল ধরিয়া টানিতেছে ৷ স্লেহ্নয়ী কাঁদিয়া ফেলিলেন। বনপত যাহার ত্লেহে মুগ্ধ, য:হার বিরহে আকুলিতপ্রাণ, ভাহার क्रमन (मिटन ममछ विश्वह्मम काँमिया উঠে—ফাটিয়া যায়—গলিয়া বেগবভী অোভিমিনীর ন্যায় প্রাবাহিত হইতে थाटक ! कैं। निया के। निया याहेबा छ যাওয়। হইতেছে না দেখিয়া শাক্ষ্ৰ विश्तन- ' ७१वन्, छन। यात्र त्य नही বা সরোবর পর্যাস্ত স্নিগ্ধব্যক্তিকে অমু-গমন করা কর্তব্য। এই অদ্রে স্বোবরতীর, যা বলিবার থাকে এথানে वितिश फिक्रमा' उथन मकरेल वर्षेत्रकः क्षाभाष উপবেশন করিলেন। উপবেশন করিলে পর মহর্ষি কলু ত্মন্তকে যাহা ৰলিবার তাহা শার্ম্মরবকে বলিয়া দিলেন, मक्षनारक याहा बनिवात छाहा भक्छ-नाक वनिश्नम। थेनिया भक्षनाक विशासन-' वर्षा ! जूबि चात्रादक व्यवः म्बीमिश्रक जानिकन कत्र।' मक्सना

कानिट्डन (ग कवु ठाँशक्ते नम्डियाहाती रहेर्दन न। किञ्च अन्त्रश्वमा अवः कान-স্মাকে ফেলিয়া যাইতে হটবে, তাহা তিনি মনেও ভাবেন নাই। এখন সহসং বুঝিলেন যে তাও তাহাকে করিতে হইবে। বুঝিয়া কাতরতম অপেকা কাতরস্বরে জিজ্ঞানা করিলেন-পিতঃ প্রিয়ম্বদা প্রাভৃতি স্থীরা কি এস্থান इरेट कितिया याहेरान १ छेउन शक-কূল হইল। কিন্তু স্থীলত্যা শকুন্তলা विकि गन्न । हाथिया वाथिया दिक्छि না করিয়া বিহ্বণহাদয়ে পিতাকে আলি-জন করিবেন। করিয়া স্থীর্যের কাছে গিয়া বলিলেন, স্থি! তোনরা হুজনে এককালেই স্থামায় অংলিজন কর। তিনহাদয়ে একছাদয়, একটির পর আর একটি ভাল শাগিবে কেন? তিন্ট সম্ভপ্রদার এক হইয়া গেল। তাই (निश्रा ममक विश्वज्ञ । १३ चा कर्मा श्वनग्रकुर्ण शनिशा পड़िल! मुमछ विश्व-মণ্ডল হাদয়ময় হট্যা সংক্রম মহাসাগ-রের ন্যায় উদেলিত হইতে লাগিল! खनग्रमी भक्छरल, यथारन कृति रभ-थारन श्रम शं जिल्ला आत कि इरे शाकिएड পারে না। তোমার কাছে বিশ্বস্থাও মলমুগ্র ! যাওয়া ত আর হয় না। শার্কর বলিয়া দিলেন যে প্রথররবি মধাগগনে উঠিয়াছেন। তণ্ন যেন **(5 जनाव्यात इहेगा, धका छहे गाहेर छहेर**व वृतिया, व्याध्यस्य नित्क এकवात भारतृष्टिः নিক্ষেপ করিয়া, সমস্ত পুর্বাস্থৃতিপরিনিত

যন্ত্রকাতরস্বরে শকুন্তলা জিজাসা করি-লেন-'পিতঃ কবে আবার ভগোবন দেখিব !' কাতরহাদয়ের শেষ নিশাস---সংস্রভ্যাগীর শেষ সামার ক্রন্সন—জ্ল-মগ্নপ্রায় তুর্ভাগার শেষ চীৎকার—সংসারে 🗎 ইহার অংপেক। যম্বণা আরে নাই। এ यञ्जना दम्बिटन युक कः दिसा यात्र, की वाका बिह्विया উঠে! कथां है करनुत श्रमत्य বালিল। ভিনি অনেক কথা কহিছৈ আরম্ভ করিবেন। তথন গৌতমী ব্যাঘাত वृथिया विशासन- वाहा! . शमनकास অতীত হইতেছে, পিতাকে ফিরাইয়া দেও। অথবা শকুন্তলা অনেককণ ধরিয়া পুন:পুন: এইরূপ বলিবে, ভূমিই ফিরিয়া যাও।' জ্ঞানময় ভাপসংখধান হতজান হইয়াছিলেন। সহসা যেন छानशाश्च इरेगा भक्षनांक कहिलन -- ' বংগে ! তপোত্ঠানের ব্যাঘাত হই-ভেছে।' ধর্মানুরাগিনী তাপদবালা পি-তার তপোমুঠানের বাাঘাত হইতেছে গুনিয়া আপনার সকল যন্ত্রণা ভূলিয়া গেলেন। তাহার কোমলহদ্য বলিষ্ঠ হইয়া উঠিল। তিনি পিভাকে পুনরায় আলিখন ক্রিয়া বলিলেন—'ভোমার দরীর তপশ্চর্ঘায় পীড়িত; অতএব আমার জন্য আর অতিমাত উৎক্ষিত হইও না।' তাপস্থধান দীর্ঘনিখাস পরিত্যাগ করিয়া উত্তর করিলেন-'वर्षा कृषि भर्गालात बात्रप्राम (य পুঁড়িধানের পুজোপহার দিয়াছিলে তাহা हरेट ज्यन बहुर वादित हहेत्राटहः

আমি যথন ভা দেপ্ব, তখন কিরপে चागाव (भाकमध्यत इटेंद्र !' विश्विक-इतियां कृष्ठतालिका এशन मृह्मना इटेबा **ঁসাম্বনাবাকারীয়োগ করিতেভেন**; দুঢ়-মনা পুরুষবব এখন বিগলিত হৃদয়া কুত্র বালিকা হইয়া দাঁডাইয়াছেন। धना ুবসণীকদর : সে কদরের কাছে জগতের .ইন্তুল্যু পুরুষও অবনত; জগতের লাপসকুল'চাৰ্যাও বিভিত্ত দে হৃদয় অভিযাত কোমল হইয়াও অভিযাত দৃঢ়। এ বহুসাকে ব্ঝাইবে। তার পর সহ্যাবিগণের সহিত শকুস্তলা নিদ্ধান্ত হটলেন। কাশাপাল্য প্রাণহীন হটল। विशासिय शामरभव वन-द्याप्या पुरिता! দে কৌশলে মহাকবি এই চমংকার বিদায-দুশোর করণবংসাদীপকতা উত্ত-বোত্র বুদ্ধি করিয়াছেন, তাহা মহাকবি সেরাপীয়র **প্রদর্শিত** এণ্টনীর বত্ত। বচনা-কৌশুল অংশকা কোন অংশে क्म् नम्।

শক্তবা কেন্দ্রনী! কিন্তু সে সেবের এটি প্রণালী আছে। প্রদান কেন্
সে প্রণালীর অফ্রামী নয়। কন্
আশ্রনের ত্রলভা মৃগ প্রভৃতি সকলকেই ভালবাদেন। আসরা অন্ত্রার ব বৃপে শুনিয়ভি যে ভিনিই শক্তবাকে জনসেচনকার্যো নিযুক্ত করিয়াছেন। ডমন্ত তাহার সমস্ত সাম্রাক্ষার প্রভাকিগ্রেক ভালবাদেন। হুতবলিকের উক্তবিধিকারির নিরূপণোপ্রক্ষে ভিনি এই
সাক্ষ্যে প্রচার করিলেন—

শেন মেন বিযুজাতে প্ৰজাঃ জিংগ্ৰেন বজুনা।

স স পাপাদৃতে তামাং হয়ত ইতি ঘুৰাতাম ।।

কে কোগায় কবে বন্ধুগীন হইবে, ভাগায় ठिकाना नाहे। किंदु (गर्डे गर्यन वसूरीन হইবে, হুপান্ত ভাছার বন্ধুখানীয় হইবেন। এ মেতের পাত্রবিশেষ নাই। প্রকাশের জনা পাত্রবিশেষ দেখিবার थार्याक्रम गारे, भावतिर्भय निकारी वानिनात शास्त्राचम गारे। এ जिन् শ্রেণীগত, পাত্রবিশেদনিহিত নয়। . কষ্ট্র না দেখিতে পাইলেও এ স্লেচের বিকাশ আছে। ভার এ স্বেহ পরেরদ্বারা কার্য্য কবিয়াই পরিভৃষ্ট হয়। কিন্তু স্ত্রীক্ষাতি-প্রতিন শকুস্তল;র সেহ এ জাতীয় নয়। সে সে.হর পাতে কলনায় পাকে না, নয়নপথেব বহিভুতি থাকে না। সে সেহের পাতা কে গু সে সেচের পাতা শক্ষণা বে আপ্রমে বাস করেন সেই আল্নের ভরালভা, দেই আল্নের মুণ্-পকী, হসত আশ্রমের দ্বীপুরুষ। সে ক্ষে'হব অবয়ব কিরূপ গুবলিছে গেলে সে লেই সাক'ব। শকুন্তল'র কাছে আখ্রের তরলতাগুলি ভাই ভগিনী, मृग गृगी अनि পूलकना।, পूला ७ नि हजा স্থা। তিনি কোন লতাটীকে বন-জোংলা বলিয়া ডাকেন, কে'ন লতা-টকে না জানি আব কি বলিয়া ডাকেন। পুক্ষের মেছ এ পদ্ধতিব নয়। বলিতে গেলে সে মেছ নিরাকার। আর শকু- জনা যাহাকে স্নেহ কৰেন, ভাহাকে কি নকমে নেই কৰেন ? তাঁহার নিজের মুখে ওনিয়ছি যে তাঁহাদের আশ্রমেব একটি মৃগী একটি বংস প্রসান করিয়াই মবিয়া যায়। তিনি সেই মৃগশাবকটীর জননীপর্প হইরা ভাহাকে স্কৃণাতে ধানা খাওঁরাইয়া, উষ্ণায় ছলপান কবাছিলেন। তিনি যপন জলসেচম করিতে যাম, তপন তাঁহার বোপ হয় যে আতপ্রাপিতা ভর্কলতাগুলি উংহাকে ভাহ্বান করিতেছে। মহর্ষি কবু বংলন—পাতুং ম প্রপমং ব্যবসাতি জলং যুশ্না-

সংসিক্তেযুগা

মাদত্তে প্রিয়ম **ওনাপি** ভবতাং ক্লেছে**ম** মা প্রবন্।

আদৌ বঃ কুইমে প্রবৃত্তিসময়ে যস্যা ভবভাৎসবঃ

সেয়া বাতি শকুস্থলা পতিগৃহং সকৈবিশু-

জ্ঞারভাষ্ ৷৷

এপানে স্থীজাতিব অ'র একরকমা
কট্ট্রাতিক লেশ দেখিতে। প্রক্ষের
শাবীরিক কেশ দেখিতে পাওয়া যায়;
রমণীব শারীরিক কেশ দেখিতে পাওয়া
যায় না। দ্বপথাসন, বৌদ্রে শ্রমণ,
অবিশ্রান্ত হস্তপদশ্চালন প্রভৃতি ইন্তির
প্রত্যক্ষ কার্যো প্রব্যের শাবীরিক কইস্কিন্ত্রের প্রক্রাণ। ক্রমার উপনাস,
উদ্ধান পিপাসাক্রেশভোগ প্রভৃতি ইন্তিন
যের অপ্রত্যক্ষ অবভায় রমণীব ক্রমহিফুতা। ভ্ইপ্রাব ক্রমহিক্তার মধ্যে

রমণীর কইসহিফুতাই গুরুতর। উত্তম-क्रार्थ भागाशत कतिया कडेमांचा कार्या करा अर्थका भागांशत ना कतियां कहे-সাধ্য कार्या करा व्यक्तिक टक्नंभकत । किन्तुं প্রযাপেকা কটসহিষ্ণু হটয়াও রমণীর কট অপ্রকাশ। যে কৃটে জগং রকিত कत्र, तम कहे जन्न (पश्चित्क भात्र गा। রমণীর প্রাক্ত বীরজ, রমণীয়ু প্রাকৃত, মহত্ব নিভূতে নিভ্ৰজভাবে অগতের মহৎ कार्गामाध्य निष्ठ नियुक्त कि हु यूँ जिया পাতিয়া না দেখিলৈ জগৎ সে বীরত্ব এবং সে মহত্ত দেখিতে পায় না। সে महत्व यम अन्यकाल थूँ जिया প। टियारे क्षा है एक इस्र । दश्की रख्न (यन व्यवस्था व নিভূতই থাকে! সেবছ জগতের কর্মা-क्षात्र जागित्व गिर्डक, निर्मंत्र, निफ्ल, 'বেলো' হটরা পজিবে। অন্টুরাট शिरलत गर्क व्यवनद्देन कविशा (कह (यन পৃথিবীকে মায়াশূনা, क्षत्रवृता, शःबी-मृता, कामीम्ना मा करते ।

একবার একটি মৃগশাবক তাহার জননীকে দেশিতে না পাইলা কাতরতাবে এদিক ওদিক করিলা বেড়াইভেছিল। দেশিয়া শ্রিম্বদা অনস্মাকে বলিলেন,

অণস্থ জন্ধ এমো ইদোলি আদিট্টী উন্মত্যো নিজপদকো মাদরং অত্যেসদি এন্দিংকোএম গং।

এই বলিয়া সেট মুগশাবকটীকে তা হার মার কাছে দিছে পেলেম। শক্ লাও এটরাপ করেন।

्रथम दुना माई छिट्छ (म, तम्मी<sup>न</sup>

অন্তৰ্গীনতাও বেমন প্ৰগাঢ়, বাছবিলী-নতাও তেমনি প্রগাড়। রমণী যেমন বাহ্মগৎ তুলিয়া আপনাতে মিশিতে পারেন, তেমনি আপনাকে ভূলিয়া ্বাহ্যজগতেও মিশিতে পারেন। স্থেমরী রমণী স্লেছের বস্তু পাইলে স্বরং ভাহার শুশ্রা করেন, শীরং তাহাকে লালন পালন কুরেন, স্বয়ং তাহাতে মিশিয়া याना भूकरमत (सर वस्त्रितास्त्रास्त्र নয়; পুরুষ রমণীর নাায় স্লেছের বস্তুকে ' कारल शिर्छ' कविश्रा जारथन ना ; কেহের বস্তর জন্য নিজের কুণাভৃষণা जुनिया यान ना, त्राकित्क मिना करत्रन ना, निवादक त्राजि करतन ना : स्थरहत वस्ट नीन इन ना। श्रुक्रस्त्र (यह মনে মনে পাকে; রমণীর ক্ষেত্ বস্ততে পাকে। পুরুষের স্বেছ abstract নিছিত: বনণীর ক্ষেছ concrete নিহিত। পুরুষের स्यर **अञ्चलग**र्शनवद्धः त्रम्शेत स्वर বাছৰগৎনিপ্ত। এই নিমিত্তই রম-गीरक जगनाजी नरन। এই নিমিত্রই রমণী শিশুর ধাত্রী, রোগীর চিকিৎসক, আভুরের বন্ধু, লগতের পালয়িত্রী। এই निभिड्डे कृत्त्रका नाहेतिएका (Florence Nightingale;) এই निमिखरे कुशामधी-ভগিনীসভাদায় (sisters of mercy)। श्र्कं अपने अपने अधिक विश्व कि <sup>রম্বী</sup>শ্বলয় সাকারপ্রিয়, জড়াসুরক্ত। महें बना बमनी मखरन रशीखनिकथर्म म-ৰ্পত্ৰ প্ৰবশ । সেইজন্য ১৭৯৩ সালের <sup>फहाशिविभादय क्याभी बार्चित्रक वा बावास</sup>

রোলেনের শিষ্য হইরা বিপ্লবের পক্ষতি শিক্ষা করিরাছিলেন। স্থাদ্যের
অতি উৎকৃষ্টভাব সকল ত্রীজাতির মনে
শুধু ভাবরূপে থাকে না; বস্তবিশেষের
সহিত সংযুক্ত কইয়া অবস্থান করে।
রম্ণীর আধ্য্যাক্সিকতা জড়জগংজড়িত
এবং জড়জগংসাপেক্ষ। এই নিমিন্ত
রম্ণীর ক্ষেহ সর্কাশ্ট কার্গ্যে পরিণত
হয়। জগতে 'সেণ্টিমেন্টাল' রম্ণী
নাই বলিলেই হয়।

কালিদাসের শকুস্তলা সেক্সপীয়রের পোর্লিয়া, রোদ্ধালিন্দ কি ইছাবেলার नाम अभवद्वि नन। छांश्रांक मिरल বোধ হয় তিনি সামান্ত হিসাবে বুদ্ধিমতী। তिनि পোর্শিয়ার নাায় নৈয়য়িক নন,ইয়া-. বেলাব নাম নীতিশাস্থবেতাও নন। আনাদের বোধ হয় যে তাঁহার বয়সে এবং ভাছার অবস্থাতে সে রকম হইলে ভাগও হইত না। আমাদের আরও (नाध इप्र (य कालिमान भक्छनारक শাধারণ স্বীলাভির আদর্শরপে চিত্রিত করিবার অভিপ্রায়ে তাঁহাকে হাদয়-क्षांन कतिशास्त्र । জীজাতির মধ্যে घ्टे **हातिही खानश्रधान था**क वरहे। 'কিন্তু সে ছুই চারিটী স্ত্রীপ্রকৃতির নিয়ম-বহিন্দ্র । छ। न अधान इहेट इहेटन त्रमनीत्क ध्यात्रहे त्रमनीशम এবং त्रमनी-ধর্ম পরিভাগে করিতে হয়। যিস্ মার্টিনো তাহার শ্বরচিত জীবনীতে বলিয়াছেন ষে, রম্ণী যদি পণ্ডিডা হইতে চান ভবে তিনি যেন সংসারাশ্রম প্রবেশ না করেন।

আর ষেধানে রমনী সংসারাশ্রম প্রবেশ না করিয়া পণ্ডিতা ছইবার উদ্দেশে যাব-জ্জীবন শাস্ত্রচর্চা করেন, সেখানেও রম-নীকে বড় একটা পূর্ণমনোরপ দেখা যায় না<sup>‡</sup>।

কিন্তু শক্তণার জীরত্বোপযোগী বৃদ্ধি যাহা আছে তাহা ঠিক পুরুষের বৃদ্ধির মতন নয়। পুরুষেব বৃদ্ধি বিচারশক্তি-শকুম্বলার বৃদ্ধি সে রকসের भूलक। আশ্রমের নিভৃতপ্রদেশে হুশ্বস্ত য়খন ভাঁছার হস্ত ধরিবার উপক্রম করেন ভুগন তিনি বার্ধার ভাঁহাকে এই বলিয়া निरम्ध कर्त्वन (य. अञ्चन এवः शुक्रज्ञानत সম্বতি বাডীত আমি আয়ুসমৰ্পণে অক্ষ। জ্ঞানপ্রধান ত্মস্ত বুকিসারা र्छ। हाटक वृक्षाहेवात ८५ छ। श.हेरलन ८ग, শুরুজনকে না জানাইয়াও তিনি আত্র-সমর্পণ করিতে পারেন। কুদ্রবৃদ্ধি শকুন্তলা সে যুক্তি গওন করিতে পারি-লেন মা, খণ্ডন কবিবার চেষ্টাও করি त्मन ना, उथाणि छक्ष प्रति नाम क्रिया নিষেণ করিতে লংগিলেন্) বিনি অভি জ্ঞানশকুন্তল পড়িয়াছেন তিনি জ্ঞানেন त्य कान श्रमान वृद्येष्ठ ठिक भीभाःम। करतन नारे: कृष्टद्वि भक्षना है कि गीमाः मा कतिशाहित्वत । ' व दश्ताद अर्थ कि ? ইহার অর্থ এই;—গুমায় বিচারশক্তি সহকারে ঐতিহাসিক প্রপা ধরিয়া মী-

মাংলা করিয়াছিলেন; শক্তলা উন্নতমনা
ধর্মান্তরাগিনী রমনীরক্তের নৈস্থিক সংপ্রার্ভির বলে মীমাংলা করিয়াছিলেন।
ছমতের মীমাংলা বিচারশক্তিমূলক;
শক্তলার মীমাংলা উন্নতহন্তরের অভিবাক্তি মাতা। অনেক প্রধান প্রধান
ইয়ুরোপীয় দার্শনিক্তিপন বলিয়াপাকেন
বে, প্রুষের জ্ঞান বিচারমূলক; রমনীর
জ্ঞান রমনীহাদয়ের অভিবাক্তি মাতা।
অন ইয়াট মিলের 'লিবটি' নামক
প্রবদ্ধের ভূমিকার এই কথা একরকম
স্পান্তালেরে লেগা আছে। কলিদানের
শক্তলা এই কথার একটি প্রমাণ।

শকুস্তলাচরিজের সমালোচনার আমবা যাহ। বাহা পাইলাস ভাহার সংক্রিপ্ত বিবরণ এই:—

- )। পুরুষের শরীর বলিষ্ঠ; রমণীব শরীর কোমল—রমণীর শরীর নাই বলি-লেই হয়।
- ২। পুরুষ শারীরিক বলে কট্টস্ইফু; রমণী হাদরের বৈশে কট্টস্ইফু। কট সহিফুতার রমণী পুরুষের অপেকা শ্রেট!
- ৩। কর্মানীলতা প্রধের স্বান্তাবিক ধর্ম, রমণীর জন্ধরে মবস্থাদাপেক ধর্ম।
- ৪। পুরুষ ক্তানে এবং শারীরিক বলে
  রমণীর অপেকা শ্রেষ্ঠ; রমণী ক্তাদ্যের বলে
  পুরুষের অপেকা শ্রেষ্ঠ। পুরুষচরিত্র
  বিস্তার গুণবিশিষ্ট; রমণীচরিত্র গভীরতা

<sup>&</sup>quot; অহিফেনগেবক শ্রীলন্তীবৃক্ত কমণাকান্ত চক্রপত্তী নহাশর অহিফেনের নেশার স্ত্রীক্ষাতির বৃদ্ধিকে নারিকেশের মানার সহিত তুলনা করিয়া বলিয়াছেন শে তিনি সোনা কথন আধ্বানার শেশী দেখেন নাই।

গুণবিশিষ্ট। পুরুষের অন্তর্গীনতা এবং বাহাবিলীনতা কম; রসনীর অন্তর্গীনতা এবং বাহাবিলীনতা অপরিমেয়।

ু ৫। রস্ণীর আধ্যাত্মিকতা পুরুষের আধ্যাত্মিকতা অপেক্ষা অনেক অধিক। কিন্তু পুরুষের আধ্যাত্মিকতা অনেকটা পুর্ণীন; রস্ণীর আধ্যাত্মিকতা সম্পূর্ণ রূপে ভুত্ত্বগংসাপেক।

উ। পুরুষের বৃদ্ধি বিচারশক্তির ফল; রুম্বীব বৃদ্ধি ক্লয়েব অভিবাক্তি মাতা।

৭। রমণী বৈপরীতোর আধার— কোমল হইয়াও কঠিন, ফুর্বল হইয়াও বলিঠা, শ্রমকাতর হইয়াও কঠদহিফু, নরম হইরাও দৃঢ়, ব্দিমতী হইরাও বিচারশক্তিহীন, আগাাল্মিক হইরাও জড়ভগৎসাপেক। জগতে রমনীর ন্যার রহসা আর নাই।

ন্ত্রীপ্রকৃতির এত উচ্জ্বল, প্রশস্ত এবং প্রাণাঢ় চিত্র কালিদাদের অভিজ্ঞানশকু-স্থল ভিন্ন আর কোন নাটকে নাই। একটি সামান্য ঘটনা অবলম্বন করিয়া এত বড় ছবিও অনা কোন কবি তুলিতে পারেন নাই। জগতের নাটককার দিগের মধ্যে কালিদাস অধিতীয় শিল্পী। শিল্প-প্রতিভার সেক্সপীয়রও তাঁহার সমকক্ষ নন।

--FF1 CF1ES 153--

### कारलङोिक ।।

আমরা কালেজে যে শিক্ষা পাই সে
শিক্ষা কোন কাজেরই নহে। উহা না
একমুখীশিক্ষা না সর্কতোমুখী শিক্ষা।
উহা যে একমুখীশিক্ষা নহে তাহা প্রমাণ
করিবার প্রায়েজন নাই। কারণ উহাতে
আমাদের কোন বিষয়েই সম্পূর্ণ শিক্ষা
দের না। উহা সর্কতোমুখী শিক্ষাও
নহে। কারণ উহাতে শারীরিক শিক্ষার
নামও নাই, যাহাতে শুলুরুরর উরতি
হয় উহাতে তাহার কিছুই নাই, যাহাতে
ইচ্ছাশক্ষি বা কর্মক্ষমতা বৃদ্ধি হয় তাহাও উহাতে নাই। উহাতে আছে গুড়
ক্রেকটি বৃদ্ধিবৃত্তির পরিচালনা তাহাও
উচ্চতর বৃত্তিবসমূহের নহে। প্রধানতঃ

কেবল আরণশক্তির উন্ভির দিকেই মধিক দৃষ্টি।

সভা বটে এক্ষণে সর্ক্ত জিয়াসিয়ম হটয়াছে কিন্তু ভাহার উলতি নাই।
কর্ত্পক্ষের ভাহাতে দৃষ্টি নাই। সভা
বটে ফুলে কাবাপাঠ হয় কিন্তু ভাহা
ফদয়রভিসম্হের পরিচালনার জন্ত নহে
তদ্ধ ভাষাশিক্ষার জন্ত। আর বই
পড়িয়া বে হৃদয়রভির পরিচালনা সেও
বিভ্রনা মাত্র। ইচ্ছা বা কর্মক্ষমভার
মধ্যে আমাদের পাকে পাশকরা স্থভরাং
ভাহা ভিন্ন জন্তবিষ্কে আমাদের কর্মক্ষমভা বড় একটা নাই।

যাহা একটু আমরা কালেতে শিখি

তাহাও শিখিবার উপায়ও ভাল নহে। कामजा नव निधि वहे शिक्षा। विधाना যেন আমালের চক্ষুনামক একমাত্র জ্ঞানে ক্রিয় প্রদান করিয়াছেন অপর-ইঞ্জিয় যেন কোন কাজেই আহেস না। যে সকল জিনিস ঘরের দারে আছে তা-হাও আমরা কেতাব পড়িয়া শিখিতে যাই। দেখিয়া ও শুনিয়া আমরা কিছুই मिथि ना। य किनिम একবার দেখিলে তৎক্ষণাৎ শিখিৰ এবং জ্বামে ভূলিতে भातिव मा. (महे जिनिम आमारतत কেতাবে পড়িয়া তিনমাদে বুঝিতে হইবে ও মুখস্থ করিয়া পরীকা পর্যান্ত মনে রাখিতে হইবে। শিখিতে আমোদ হয় এমন করিয়া কোন শাস্ত্র বা কোন বিষয়ই শিখান হয় না। তাহার উপর যদি আবার মাষ্টারে যত্ন করিয়া বুঝাইয়া (नन जाहा हहे(ल ९ इम्। হইয়া মাষ্টারগণ (একে ত ডাওনিসি-মদের বংশ) ভাহাতে আবার ইংরেজী পড়িয়া কৃক্ষেত্রাজ হইয়াছে। প্রোফেসরদিগের ত কথাই ष्यात्र वालन जुमि वृक्ष यात्र नाहे वृक्ष আমার নাম বাহির হইয়া গিয়াছে, আ-মার মাসিক বেতন বাড়িবে বই কমিবে ना।

যদি নিমভাষার শিক্ষা দেওয়া হয়
তাহা হইবো অনেকটা সহজে হয়। ডাহা
না হইরা এক অভি কঠিন অভি দ্রবর্তী
আভিন ভাষার আমরা শিক্ষা পাই।
ভাষা সেই ভাষাটি মোটামুটী শিখিতে

রোজ চারি ঘণ্টা করিয়া অন্ততঃ আটদুশ বৎসর বাগে। ভাষা শিক্ষারী অথচ किছूरे नरह, ভाষাশিকা কেবল जना ভাল बिनिम निथिनात উপায়---উহার্ভে শিথিবার পথ পরিচার হয় মাত্র—সেট পথ পরিষার হইতে এত সময়বায় ও এত পরিশ্রম। তবুও কি সেঁভাষা বুঝা যাম 2 তাহার যে৷ কি! বাঙ্গালা চুইলে এই কেতাৰী জিনিদই আমরা কত অধিক পরিমাণে শিখিতাম। ইংরেজীতে আ मत्रा कथन कथा कहि ना। अथन जामत्रा हेरदब्बीट - विशिषा व व क निश्च ना অথচ আমাদের জ্ঞান-উপার্জ্জনের এক माज वात हेरदिकी। हेरदिकी व्यामात्मत যাহারা ইংরেজের সংসর্গে আসিবেন ভাঁহাদের ইংরেজী শিক্ষার ভাই বলিয়া ছয় কোটা इष्ठि वक लाक देश्त्वकी পড़िया मतित्व (कन १ विलाद, इंश्टब्स यथन ब्रास्ता, मक-लाहे कान ना कान ममरत्र हेश्द्राध्वत मःगर्श व्यामिटवन । श्रीकात । हेः दिशी ভাষা শিক্ষা কর ভাল করিয়াই শিক্ষা कत्र। हेश्ट्रकीए अक कमिट्ड इहेर्द, ইতিহাস পড়িতে হইবে, ৰিজ্ঞান শিথিতে হইবে ইহার অর্থ কি ? বালালা দিয়া देश्द्रकी भिथ ना (कन ? देश्द्रकी पिया শাস্ত্র শিখিতে যাও কেন ? আরও অধিক छः त्थन कथा **এই यে आमारमन** मः कृष् निशिष्ठ इहेरन इरदि बिम्र मिशिष्ड स्य ।

(यक्त कि कि कि के कि कान अब ह्य

ইংরেজি শিক্ষা অয় হয় আর পারিশ্রম
আনস্ত করিতে হয়। আর শিক্তিজিগের
সহিত অশিক্ষিতের মনোমিল পাকে
না; শিক্ষিতগণ যেন একটি নৃতন ভাতি
হইয়া দাঁড়ান। অত্যস্ত অধিকপরিমাণে
শ্রম করিয়া অতি অয় জ্ঞানলাভ হয়।

যাও বা শিখি তাহাও শিপিবার জনা

শ্রিশ্না; জ্ঞান অর্জ্ঞানের জনা শিথি
না। শিথি এক্জামিন পাশ করিবার
জনা। আছে। করিয়া পড়ি; বেমন প্রশ্ন
দিক, ঠকাইতে পারিবে না এ জনা
পড়ি না, কেমন প্রশ্ন দিবে বাছিয়া বাছিয়া তাহাই পড়ি, অনেক সময়ে মাটার
মহাশবেরাও তাহাই পড়ান। ইহার এক
ফল এই বে যপন এক্জামিন নাই তপন
পড়ি না, এক্জামিনের সময় রাত দিন
পড়ি। লাভ এই হয় কতকগুলা গুরুপাক জিনিস উদরস্থ হয়, সব হজম
হয় না। রাতজেগে যাহা পাঠ কয়া
বেশা, তাহা সাস্থানেকের মধ্যে ভূলিয়া
বাই।

অতএব নেথা পড়ার যে উদ্দেশ্য

—মনোবৃত্তিনিচন্নের সমাক্ ফ্রি—ভাষা
একেবারেই হয় না। যে চিন্তাশক্তিবলে
শিক্ষিভদিগের দারা সমাদের উপকার
ইইবে ভাষা হয় না। চিন্তা করিবার
শক্তি নাই অথচ জ্ঞান আমি বড় বৃঝি,
ইহার অনেক দোষ, কালেফী শিক্ষায়
সে দোষগুলি সমুদ্মই ঘটে। যদিও
চিন্তাশক্তি ফুইচারিজনের ক্ষম্মে ভাষাও
শ্নার উপরে। যদিও একুপ হুইড, ভবে

এইরপ কল হইত। কিন্তু চিন্তা abstractএর উপর। যাহা আছে তাহার উপর নহে। যাহাই হউক, তবুও চিন্তাম্যোতঃ প্রবাহিত হইলেই সেটি বাস্থ্যীর। কিন্তু তাহাত হয় না।

অতএব কালেন্দ্রী শিক্ষায় চিস্তাশক্তি
উত্তেজিত হয় না, উহা শুদ্ধ পরীক্ষা উভীণ হইবার জনা, এক্ষনা উহাতে জ্ঞানফর্জন হয় না। জ্ঞান-মর্জন একটুআগটু হইলেও ইংরেন্সীমুখে অর্জন করিতে হয় বলিয়া সেই একটুকুতেই
অনেক শ্রম লাগে, যাহা শিপি ভাহাতে
বৃদ্ধিবৃত্তিও তুই পাঁচিটার মাত্র চালনা হয়,
হাদমবৃত্তি ও ইচ্ছাশক্তিশ্র কিছুই হয় না।
কোন একটি বিষয়াও সম্পূর্ণরূপ-শিক্ষা
হয় না; অতএব উহাদ্বারা পরিণানে
যে করিয়া খাইবে ভাহাও হয় না।
কালেকে না একমুণী শিক্ষা হয়, না
সর্বভামুখী শিক্ষা হয়।

 কিছুমাত্র ক্রিই হয় না। গুদ্ধ যদি বাপ্

যা বা গুরুজনের চোকে, চোকে থাকিছ,
তাহা হইলেই এ সকল লাভ গুলি ক্ষরগুট হইত। সংসারে প্রবেশ করিয়া তাহাদিখকে অনেক কটে এই সকলগুলি
শিখিতে হয়। অনেকে হয় ত অনেক
জিনিস একেবারেই শিখিতে পারে না।
ক্ষশিক্ষিতের সহিত সমবেদনা প্রায়ই
থাকে না। ইত্যাদি ইত্যাদি।

অভএব কালেকীশিক্ষা সম্পূৰ্ণ শিক্ষা নহে। প্রথম, কালেজে যাহা শিক্ষা र **६**श। উচিত, তাहाई आमारात्र कालास অল শিকা হয়। সকল খাস্থের কিছু किছ পড़ान একেবারেই হয় না। কর্তার ইচ্ছা কর্মা হয়। একজন কর্ত্তার খেয়াল इरेल, अत्रीपितमा पड़ान आत्र इरेल. किन्छ ভূগোলবিদ্যা উঠিয়া গেল। ভূ-গোল পড়িলে দেশীর কুসংস্থার যত শীঘ্র অপনীত হয় এত আর কিছুতেই হয় না। সেই ভূগোল উঠিয়া গেল। আর धक्कन वनित्नन, इत्र विषय शत्रीका ছেলেরা পারিবে কেন ? পাঁচ কর ৮ আর धक्यन विल्लान, भारति द्वा इय তিন কর। স্থতরাং সমস্ত ৰুদ্ধবৃত্তির পরিচালনা হয় না। ওছ কেতাব প-**জिया गिथिएक स्टेटन इयेहा विषय गिथा** कठिन इम्र वर्षे, किन्नु यनि এक এक विषय छे एक इ अशाश्राक्त निक्रे तिह গেই বিষয় শিকা হয় ও কতক দে<del>থিয়া</del> ভনিয়া শিখিতে পারে ভবে অনেক बितिम करत भिका हहेरछ भारत।

কালেন্দ্রী শিক্ষা শশ্পূর্ণ করিতে ছইলে, উহার সঙ্গে সঙ্গে গার্ম্ছা শিক্ষা চাই, সামানিক শিক্ষা চাই। প্রাকৃটিকল শিক্ষা চাই, হাতে ছাতীরারে অনেক কাজ করা চাই। ঠেকিরা শিধা চাই, প্রো-ফেশন শিক্ষা চাই।

कामारमत्र (मर्म देश्द्रकी निका कार-र्त्तत्र शूर्वि आ्मारमत्र रमभीत्र क्रज-সম্ভানগণ যে শিকা পাইত, সে শিক্ষা সম্পূর্ণ শিকা। কালেমী শিক্ষার সহিত তুলনা করিলে কেতাবী জিনিস তাহারা কিছুই শিখিত না। ভাছারা না ভূগোল শিথিত, ना ইতিহাস सानिত, ना विकान জানিত, না গণিত জানিত। কেতাবী বিষয়ে তাহাদের শিক্ষা অল থাকিলেও ভাহারা অন্যানা সকল বিষয়ে অর পরি-याम जामारमञ्ज जाराका जाराक जारिक কেমন করিয়া নম্র বিনীত रहेर्ड रह, श्वक्रमानंत्र शक्रि छक्ति क्तिर्छ इष्ठ, रक्मन क्रिया अज्ञ मंग्रू, আম ও অর্থায়ে স্কর্তি সংগার চালাইতে হয়, গুৰুত্বালী করিছে হয়, তাহা স্থন্দররূপে শিখিত। পিতার সহিত त्म नर्वा कितिक, नकन विनिम् (पश्चि, সকল সমাজে হাইড, সে যেন জন্মিয়া व्यविध मासूब इहेवाद बना এश्रिन्टिन् ना শিক্ষানবীশ থাকিত। क्षनकात्र गड नः**नाव इटेट्ड, नशाय इटेटड** विव्हित হইরা অর্ণ্যবাস করিতে হইত না। যদিও কেতাবী শিক্ষা অল হইড, সর্বা-প্রকার শিক্ষিত লোকের সংগর্গে আসিয়া

त्म बदनक व्यवाधनीय विषय भागना আপনি শিণিত। সোটামুটি সে সনেক विषय सानिछ। (नकारन स्वादन छै-রতি ছিল না। অভানগীমা এত বর্দ্ধিত इय नाहे, शुह्रताः शाहीनकात्न व्यर्शाय সমাজের প্রথম অবস্থায় যেমন মোট।মুট বিদ্যা ছিল ভ্ৰমনত ঠিক তেমনি ছিল; व्यात त्रहे (माठामृष्टि श्रिनिम व्यथिकाः भ উদ্রুষ্টান মানিত ও পিথিত। এখনকার ছেলে যদি লেখা পড়া করিতে গেল অমনি বাপ মা বলিয়া বদেন "রাম আমার সংসারের কোন কাজই করিবে ना, ध कर्या व्यामात तामरक कतिए पिछ না, রামের সময় নষ্ট হবে।" রাম ওদ্ধ লেখা পড়া করিয়াই সময় কাটাইলেন। यथने काटलक इटेट्ड वाहित इटेटलन. একটা গাছবানর বাহির হইলেন। যদি ভাল চাকরী পাইলেন, কি মেলা টাকা রোলকার করিশেন এক রকম চলিয়া ्शन, निक्रत माँ फि्रा मुक्तनान । मनाब्ब (शत्यन यमि, (यशादन अम्बद्धन (लाक णाष्ट्र (मशान (ग्रांगन यिन, वक्शार्म विशिश दृष्टित्व । कारनम ना (कमन করিয়া লোকের সঙ্গে মিশিতে হয়, मिलिएक शाहिरणम मात्र कारक कामिन त्रागाहे। रमधा शङ्ग निश्तित कि इम्न, वड षाइडावी नवत्नादकत माम कथाहे करहम ना। आश्रदा दागरक (वन कानि, वारमत कहकारतत रममाज नाहे, ७६ শिकात (मार्य विषातात निमा इहेगा कारणको विकाय रम. च श्रमनंग घरनक

कत्रा (शव। कंट्यिकी निकात खेटनक উৎকৃষ্ট গুণ আছে বলিয়াই আমরা উष्टात (मास्थानर्गत এन यञ्जवान इहे-(मणीय कारलकी আসাদের শিক্ষার প্রাধান গুণ এই যে উহাতে স্বাধীনচিস্তাশক্তি উদ্রেকের যেমন স্থানিপা এমন আর কিছুতেই নাই। সামাজিক অভাচারে, সাংসারিক (পিতৃষাতৃক্ত) অত্যাচারে, শিক্ষকদিগের অভ্যাচারে চিম্বাশক্তির শ্রীবৃদ্ধি হইতে পারে না; অংমাদের কালেজে এ তিনের একটিও নাই। আমাদের কালেজের ছাত্রগণের কুগংস্থার যত অল এত আর বে:ধ হয় কোগাও নাই। কিন্তু কালেজী শিক্ষার श्वनकीर्त्तन आभारमत आतमाक नाहे, छ-হার শত দোষসত্ত্বে আমরা উহাকে ভাল-বাসি ও আমরা এরণ স্থন্দর শিকা পাই-क्रा हि विकास व्यापना निगदक क्रुडार्थ मन করি। এবং এইরূপ সনে করি বলিয়াই ব্দা উহার দোষকীর্ত্তনে প্রায়ুক্ত হইয়াছি। যাহা হউক আনাদের সংস্কার এই যে আর হুই সময়ে ছুই জাতিব অতি উৎকৃষ্ট শিক্ষা হটয়াছিল, সেই তুইটির সমাক্ वर्गना कतिया डाहारमत रमाव छन निर्वताहन कतिव। পाঠकशन (मिथिद्यन काल्निकी শিক্ষার কত উন্নতি হইলে উহা সম্পূর্ণ শিক্ষা বলিয়া গণা হইতে পারিবে। কালেজীশিক্ষার যদি দোবসকল অস্ত-হিত হয় তবে ইংটি পৃথিবীর সকল জাতীয়শিকা অপেকা উৎকুষ্ট শিকা ক লিয়া পরিগ্লিত হইতে পারিবে।

আমরা যে ছুইট শিক্ষার কথা বলিতেছিলাস তাছার একটি ভারতবর্ধের
আব একটি গ্রীসের। একটি ব্যাক্ষণ
দিগের আর একটি এথিনীরদিগের।
একটিতে ব্যক্ষণ হৈয়ারি হইত আর
একটিতে সিটিজেন হৈয়ারি হইত আর
একটির ফল সংস্কৃত সাহিত্য ও ভারতে
ব্রহ্মণজাতির চিবপ্রাধান্য আর একটির
ফল গ্রীক্ আর্টস্, গ্রীকসাহিত্য, গ্রীকচিন্তাব চিরপ্রভ্র । তুই জাতিই জগ
তের প্রথম ও প্রধান শিক্ষক, উভরের
শিক্ষা হইতেই অমৃত্ময় ফল উৎপর্ম
হইয়াছে।

ব্ৰাহ্মণগণ হয় ১৮ না হয় ২৭ না হয় ৩৬ বৎসর পর্যাম্ভ গুরুকুলে বাস করি তেন। তৎকালপ্রচলিত বাব ীয় শাস্ত **ভা**ছাবা व्यभाष्य कतिरहत्। বেদান্ত দর্শন সাহিত্য, ব্যাকরণ চিকিৎসা তাহারা এ সমস্তই কেতাব হইতে শিপ-গুরু তাঁহাদিগকে শিধাইছেন. তাক ও শিষ্যে পিতাপুত্র সম্বন্ধ। জন ভাল বাসিয়া শিখাইবাৰ জনা যত্ন করিত আব একজন ভক্তি করিয়া শিখি-বার জন্য যক্ত করিত। শিকা উত্তম হইত। শিষা গৃহতালিতে ওকর সৃহা মতা করিভেন স্তবাং পিতামাতা হইতে বিচিছর হইয়া পড়িলে যে শিক্ষা হওয়া অসম্ভব সে শিক্ষা অতি সহজেই হইত। ওক তাহাদিগকে লোকের সভিত কিবল বাবহার করিছে হয় কিরূপে সংসারের ক্ৰিতে হয় তাহা দেখাইয়া

बिटडन। (कर्म्यका कीर्यात्र अक्टूरक चात्रक निविद्या। श्वक छैशिहाहिशदक সমাজে বাইতে শিণাইতেন, গুরু বেবানে যাইতেন শিষ্য ভাষার সক্ষে পাকিত্ই **भिराटक जारमक भा**डीदिक পরিশ্রম করিতে হটত। কিন্ত শিষোর গৃহস্তীবনে যা কিছু আবশাক হইত গুরু সমস্ত শিশাইডেন, কেমন করিয়া নিতা নৈমিত্তিক কার্যা করিতে হয়, যাগ यक कतिए इस् विहास कतिए इस् মোকর্দমার নিষ্পত্তি করিতে হয়, বাবস্থা দিতে হয় এই ৩৬ বৎসর মধ্যে ভাহারা সব শিকিত। ভাছারা প্রাকৃটিকেল ও থিয়োরেটিকেল তুইরকমই শিবিত। বাহির হইমা যথন এরূপ একটি শিক্ষিতত্তার্মণ সংসারক্ষেত্রে অবতীর্ণ ইইলেন, তিনি সমাজের মৃটিমান্ শক্তিমন্ প হইলেন। বভ বভ রাজার৷ ভাঁহাব ভোষামোদ করিতে লালিলেন। যিনি তাঁহাকে আপন রাজাে তাপন করিতে পারিলেন তিনিই মনে করিলেন আমার রাজা ধনা হইল। উ,হাকে সকলে অগ্নির সহিত তুলনা করিভ, কারণ অগ্নির যেমন ভেচঃ ভাঁহা-রও তেমনি।, অসমি যেমন সর্বাভুক্ ভিনিও তেমনি মর্মব্যাপিনী বিদ্যার আধার, অনস্তশক্তির আধার। আমরা এখানচইতে বেশ দেখিতে পাইতেছি তাহার শিকার অনেক দোষ ছিল। कांशत बिका व्यत्नको (धारकमनाल, তিনি ব্রাহ্মণের যাহা দারকার ভাহাই শিপিতেন। সামুষের যাছ। দরকার

ভাছা ত শিখিতেন না,ধর্মানমনীয় সনেক কুসংকার উচ্চার থাকিয়াই বাইত। ব্রাহ্মণের শিক্ষার মধ্যে পুরোহিতের শিক্ষা ' অনেক থাকিত। পুরোহিতশিক্ষায় कनानिका এकেবারে হইত না, अकृति (টেষ্ট) বলিয়া যে জিনিস তাহার তাঁহারা मण्युर्व बिरताधी हित्तन। बाक्रव नृष्ठा . গীতুদ্ধি শিখিলে পতিত হইতেন। তাঁহার শিক্ষার এত দোষসত্ত্বেও তাঁহার ব্রাহ্মণের শিক্ষা সম্পূর্ণ ই হইত। আগে সর্কভোমুগী শিকা ভাহার পর একমুখী শিকা না হ-हेबा, এक भूशी निकात खना यछ पृत छ द्वा-জন, সর্বতোমুখী শিক্ষা ততদূর পাইত। গ্রীকেরা কেতাব পড়িয়া অতি অল শিখিত। কথাবার্তা নাটাশালা, সভা-গৃহ প্রভৃতি হইতে তাহাদের শিকা হইত। হৃদয়বৃত্তির পরিচালনা তাহাদের সম্পূর্ণর হইত। তাহাদের মৃত উৎ ক্ট ক্লচি আর কোন জাতির কি আছে ? তাহাদের নাটক, তাহাদের ভাহাদের ভাস্করকার্য্য, ভাহাদের রুচি-শিক্ষার উৎকৃষ্ট পরিচয় দিতেছে। শ্রী-রিক শিকা ভাছাদের মত আর কাহা-রও হইত না, ভাছাদের মেলায় পারি-তোষিক দেওয়া इटेंड সেই পারিভোষিক পাইত বলিয়া সকলেই ব্যায়াম করিত. भंबीदात मर्काणीय शृष्टि खीकपिरगत <sup>বেমন</sup> হইত এমন কি **ভা**র কথন কোন অতির হইরাছে ? তাছাদের মধ্যে শারী-রিক দোষবিশিষ্ট অন্ধ, কুজ, বঞ্চ অভি পন ছিল। সৌন্দর্য্য ভাষ্টদের প্রায় সক

লেরই ছিল। বিশ্রীলোক কাণা খোঁড়া কুৎসিত ভাহাদের দেশে হইতেই পা-রিড না। ভাহারা সকলপ্রকার শিক্ষার खना शाहेस पिट; (इरतारणांचेम हेकि-হাস লিখিয়া পড়িলেন, পারিভোষিক পাইলেন, যে, যে কোন কাজই করুক ना, यनि छाहाटक माधादन त्लाटकद मर्खाय इहेन अमनि श्रीहेख। উৎসাহে গ্রীকদিগের যে সর্বাঙ্গীণস্থনর শিকা হইবে আশ্চর্যা কি! বুদ্ধিবৃত্তির পরিচালনা ত্রীদে যত হইয়াছিল, এত আর কোন জাতির হয় নাই; সাহিত্য বিজ্ঞান দর্শনের যে শুদ্ধ সূত্রপাত হইয়া-ছিল এমন নছে, অনেক উন্নতিও গ্রীদে হইয়াছিল। কর্মক্ষমতা গ্রীকদিগের মত আর কাহার ছিল ? ছই পাঁচজন লো-কের প্রতিজ্ঞায় যেখানে পারস্যরাজ্যের অক্ষেহিণী স্গাকরস্ট নীহারবৎ দ্রবী-ভূত হইয়া গেল, তাহাদের মত কার্য্য-ক্ষমতা দৃঢ়প্রতিজ্ঞা কাহার ? বাস্তবিক গ্রীকবিশেষ এথিনীয়দিগের মত সর্বা-সীণ শিকা আর কোন জাতির কথন হয় নাই। কিন্তু এত উংকৃষ্ট শিকা তাহার। বিনাপরিশ্রমে লাভ করিত। শুদ্ধ বিনাপরিশ্রমেই বলি কেন তাহারা আমোদ করিয়া শিথিত। ইম্চাইনিস সফোক্লিস ভাহাদের শিক্ষা দিত। তাহারা শুদ্ধ আমোদের জন্য থিয়েটারে আসিত অথচ কিছু না কিছু শিবিয়া যাইত। আবার নাগরিকদিগকৈ রাজ্যের গমন্ত কার্য্য করিতে হইত,তাহাতে তাহা-

দের প্রাক্তিকাল শিকাও অনেক হইছ।
নাগরিকগণ বিচার করিতে শিখিত, যুদ্ধ
করিতে শিখিত, মন্ত্রিসভার পরামর্শ
দিতে শিখিত অথচ কাজ করিতেছি
বলিয়া কাছারও গারে লাগিত না।

বান্ধণদিগের শিক্ষা ধর্মপ্রধান, গ্রীকদিগের সৌন্ধর্যপ্রধান। স্ক্তরাং গ্রীকদিগের শিক্ষা ক্রমে ছড়াইয়া সমস্ত
নাগরিকগণমধ্যে পরিব্যাপ্ত হইয়াছিল;
ব্রাহ্মণদিগের উচ্চতর শিক্ষা গুটাইয়া
ক্রমে অল্পংখ্যকমাত্র লোকে ক্রম্ত হইয়াছিল। গ্রীকেরা ইচ্ছা না থাকিলেও
আপনি শিধিতে বাধ্য হইড, ব্রাহ্মণেরা
অনেক যত্ন ৪ শ্রম করিয়া শিধিত।

আমাদের ফালেজী শিক্ষা ও ছুইরের।
কোনচীরই মত নহে। কিন্তু দোষ
সংশোধন করিরা লইলে ইহা হইতে
গ্রীকদিপের অপেক্ষাও উচ্চতর শিক্ষা
হইতে পারে। কারণ আমাদের শিক্ষার
বাধীন চিন্তার বড় প্রাবৃদ্ধি হইবার
সন্তাবনা। গ্রীকদিপের কুসংস্কারাপর
নাগরিকগণের দোবে তাহা কুথুনই
হইতে পারিত না। বেধানে সক্রেতিস্কে
নান্তিক ও দেবহেষী বলিরা বধ করিল,
তাহাদের চিন্তাশন্তি আধুনিক বান্ধালি
শিক্ষিত ব্বকদিপের মত উন্নতর্মপিনী
ছিল কেমন করিরা বলিতে পারি।



#### শশ-ধর।

স্থান--গৃহ-চুড়; সময়--গভীর-নিশি।

পার না কি শশ-ধর, ঢালিতে কিরণ-
এই দগধ-পরাণে ?

অনস্ত-আকাশ-তল, অনস্ত এ ভূ<sup>°</sup>মগুল,
কর নিত্য আলোকিত কিরণ প্রদানে,
পার না কি এক বিশু ঢালিতে এ প্রাণে ?

₹

নিরেট, নির্মাণ ওই প্রাকৃতির বৃক্তে—
কেন এতৃই আদর ?
ও কি আশা করেছিল,কিবা আশা না প্রিল?
প্রান্দে পরিপূর্ণ উহার অন্তর;
ও কি জানে চন্ত্রাগোক কত সিধ্ককর!

শশ-ধর,
প্রকৃতির শ্না-বন্ধ শুধুই দেখিলে—

এ অনস্থ-কাল ধরে !

দেখ দেখি একবার, গুলা-বন্ধ অভাগার,
কি আছে স্কান এই আণের ভিতরে,
কত স্থা শুক্ষ এই পঞ্জা পুঞ্জে !

ছ্থী-মানবের মন এই লিগ্নালোকে—

শশি দেখ একবার ;
গগনের কক্ষে কক্ষে, অনন্ত-সাগর-বক্ষে,
হেরিরাছ কি নক্ষত্র, কি রঙন ছার—

দেখ দেখি হভাশের হুদর-ভাঞার !

কত পৃথী, কত বিশ হয়েছে বিনষ্ট—
এই প্রাণের ভিতরে !
কত তারা কক্ষ-চ্যত! কত রত্ন ভত্মার্ত !—
আধারে পড়িয়া আছে কন্সরে কন্সরে;
কত্ নদী—কত সিদ্ধ—শুড় কণেবরে !

কুন বক্ষ ছাজি তবে কেন শশ-ধর—
শ্নো ঢালিছ কিরণ ?
যাহার বুকের মাঝে, নিরাশার বস্তু যাজে,
কর তার বুক ভরি কৌষ্দী ক্ষরণ;
সে বুঝিবে কি মধুব তোমার কিরণ।

কি মধুর বেশে শশি কিরণে ভোমার—
আন্ধ সজ্জিত ভ্বন!
উর্দ্ধে নীল-নভন্তন, নিয়ে পৃথী-বক্ষ:-স্থল,
ভাসিতেছে শুক্লালোকে স্বপ্নের মতন।
পার না কিও আলোকে ভাসাতে জীবন?

.শ্ন্য মকভূমি ওই স্থ-দূর-প্রান্তর,
তাও—শেভিছে কেমন !—
বালুকার বালুকার, চন্ত্র-কর-প্রতিভার,
কি বর্ণ—কি কৃষ্টি ক্রি করেছে ধারণ!
পার না কি এই বর্ণ ক্রিডে কীবন ?

প্রাসাদের মৃলে গুই<sup>নি</sup>পন্ন'' সরোবর— পাল ক্ষত মলোহর ! পূর্ব-বক্ষ ক্ষোৎলা-মর, নক্ষত্রের সর-প্রার, পোভিতেছে শান্ত-ভাবে—সলিল নিথর; ওই শান্তি, হয়-চিন্তে কডই স্থানর ! নিশা-নাথ,
এত শাস্তি, এত স্থা, কেন অকারণ—
ঢাল ওই সরোবরে ?
শীতল-হুদর তার, কেন নিশ্ব কর আর,
নাহিক বিবের জালা উহার অস্তরে,
বুণা জোৎসা ঢাল তাহে এমন আদরে।

> 0

>>

আহো !

এই পূর্ণিমায় হেন প্রাসাদের চুড়ে—
আদ কত শত নরে,
খুলিয়া হৃদয়-বার, দেখিতেছে অনিবার,
কত স্থতি—কত স্বপ্ধ—উন্মন্ত-অস্তরে,
উথলিয়া জীবনের নিক্স-সাগরে।

١,

আর আমার মন,
সেই পূর্ণিমার সেই প্রাসাদ-শিধরে—
আমি কি দেখি এখন!
নেত্রে করে অশ্রু-ধার,বুকে ঢাকা অন্ধকার,
দগ্ধ,আশা—দগ্ধ, স্থতি—তাপে দগ্ধ মন;
ন্তুপীকার-ভশ্ম-রাশি আমার শীবন!

10

শশধর,
কত দগ্ম-হর্ম্মা-পথ কর আলোকিত-তব মধুব-কিরণে;
বিনষ্ট-পদেপর বিক্লে, দগ্ম-গৃহে কক্ষেক্
চালিরাছ এই শান্তি পীযুব-ক্ষরণে,
কেন নাহি চাল তবে এ দক্ষ-জীবনে ?

<sup>\*</sup> Disinterred remains of the ancient city of Pompeii.

পাতিয়া দিয়াছি বক্ষ কিরণে ভোমার---চিত্তে ঢাল একবার: ছড়ায়ে জ্যোছনা-রাশি, কর আলোকিত—হাসি. चाँधात्र, जाँधात्र-मत्र कीवन चामातः;

ভাঙ্গা-ঘরে চাদ-আলো দেখি একবার।

পারিবে না ? বুঝিয়াছি, জ্যোৎসায় এ প্রাণ-

কভু হাসিবে না আর:

তবে यनि मर्थ-इटन, त्मरे कीन-निश्वा करन, জলে উঠে কোন মতে আলোক ভাহার, जिनिय-श्रिमा शास स्टेरिय मधात ।

ত্রাশা !-- যে কীণালোক হয়ে ক্ষীণ-তর---ক্রমে হতেছে নির্মাণ, আজ কোন পুণা-বলে,সে শিথা উঠিবে জলে, কে করিবে তৈল-সেক-কার ছেন প্রাণ্ (य कतिरव---(म (य (महे कठिन-भाषान !

**图 字:** —



## মাধবীলতা।

:6

সায়ংকাল অতীত হইলে পর কিঞিৎ বিলম্বে রাজা বহির্বাটীতে পুনরাগমন করিলেন। দেওয়ানের সমভিব্যাহারে नाना कथात शत्र जिल्लामा कतिरागन, " কতকগুলি ভট্টাচার্য্য আমার কুমারকে কাড়িয়া লইতে আসিয়াছিলেন কেন ? আমি তাঁহাদের ভাব ঠিক বৃথিতে পাবি নাই, ব্যাপার্থানা কি ? সতা সভাই কি তাঁহারা আমার ক্রোড হটতে আমার সন্তান কাড়িয়া লইতে গিয়াছিলেন ?"

একপ্রকার ভাহাই বটে, मभत्रथ नारम এकक्षन छो। हार्य। मरन করিয়াছেন যে, রাজ্কুমার তাঁহার সন্তান, তাহাই তিনি মহারাজের নিকট সন্তান চাহিয়াছিলেন।

বোধ হয় ভট্টাচাৰ্য্যমহাশ-য়ের। দিবসেই চক্রে বসিয়াছিলেন। তাহার পব. তাঁহারা কিরুপে ক্ষাম্ব হই-(लग १

দেও। কান্ত ভাঁহারা এখনও সম্পূর্ণ कारण इन नाई, त्वांभ इम्र डांहात्रा এই দাবি আবার মুধ্যে মধ্যে করিতে আসি-নেন; কিছ আট্র ভীহাঞ্গিকে বিশেষ করিয়া লিকের পরিয়াছি টি

' রাজা । তবে 🕼 তাছারের সতাই এই ধারণা 🕈 👑

(म. ७ ग्रान् এই সময় भः क्लिप बाक्ष गरम व সমুদয় কণার পরিচয় দিলেন। রাজা ष्टे अक्वात मध्यादि नमा **है।निरम**न। প্রকাশ্যে চিন্তা করা তাঁছার অভাাস ছিল; তিনি মৃত্ত্বে বলিতে লাগিলেন,

ব্ৰহ্মণ-অধ্যাপক-শাসব্যবসায়ী-এক अन नत्र, प्रदेशन नत्र, प्रानकश्वी---मकलारे ७- भागन नरर--- यामात मरन ভাঁহাদের কাহার ত শক্তা নাই---उँ। हात्रा (कन मिथा। विलावन ? व्यवमा তাহাদের কথার কোন বিশেষ হেতৃ ুথাকিতে পারে—তাঁহারা বলিয়াছেন, ধরাণীক তুইলন স্থী এ কথা জানে," স্থীরা ত আমার লোক, ব্রহ্মণেরা যথন ভাহাদের কথার উপর নির্ভর করিয়াছেন. তথন বুঝা যাইতেছে যে, ইহার মূল কিছু আছে। যাহাই হউক, আগার ভগিনীও এ কগার অব্খ কিছু জানেন, আমার ভগিনী—রাজভগিনী, কখন তিনি মিখাা বলিবেন না, ভাঁহার স্বামী জীবিত থা কিলে, তিনিও আজ মহারাণী—একণে कान्नानिनी-किছूट इश्न नाहे-नकन সময়েই হাসিমুপ, অথচ একটু মান-জ্যোৎসাবতী ঠিক নাম, গণ্ডীর অথচ আলোকসয়-কিন্ত একটু মান-তাহার মানতা আর ঘুচিবে না। আৰু জোংসা वडी हरकत जल (कलाइन, इम्र ड मतन কি বাথা পাইয়াছেন<del>্</del>যাণী বলেন জোৎসাবতী আৰু চোখের सन दिस्सिन অনঙ্গল করিয়াছেন, জীজাতির মন।— এই বলিয়া রাজা সশব্দে জাবার নস্য-গ্রহণ করিলেন। দে ওয়ান্মহাশর বলি-

"আমি মনে করিয়াছিলাম, এ বিষয়ের কোন ভদস্ত আবশাক হইবে না। আমার স্পাষ্ট বোধ হইরাছিল বে, কোন

(লন:--

রাজশক্র এই কথা রটাইরাছে। দশরথ ভট্টাচার্য্য কভকটা সাদা লোক, রটনার কৌশল বুঝিতে না পারিয়া রাজসমক্ষে আসিতে সাহস করিয়াছেন।"

রাজা। তা বটে, কিন্তু কণাটা এই যে রাজভগিনী সাক্ষী, তিনি ত রাজ-শক্রর দলে নহেন। তাঁহার কণা আমি কথন অবিখাস করিতে পারি না।

দেও। রাজভগিনী ত সাক্ষী নহেন, বাক্ষণেরা তাঁহার নাম উল্লেখ করেন নাই। রাজভগিনী এ কথা অবশ্র জানেন এই অফুভব আপনিই করিতেছেন।

রাজা। তা সত্য, তাঁহাকে এ কথা অবশু জিজাসা করিতে হইবে। কিজ পরের সন্থান পিও দিলে আমার পিতৃ-পুরুষ গ্রহণ করিবেন লা; তবে এমন সন্থান বইরা কেবল অধ্বাচিরণ করিবার ফল কি ?

দেওয়ান। এখনও ত স্থির হয় নাই
যে রাজকুমার দশরথ ভট্টাচার্য্যের পুত্র,
যদি তাহা মহারাজের প্রতীতি জন্মে,
তথন কর্ত্তব্য বিবেচনা করা যাইবে।
কিন্তু এই সময় য়াজশক্ররা মহারাজের
অভিপ্রায় জানিতে পারিলে,নানা ব্যাঘাত
ঘটাইবে।

ন রাজা। না, আমি কোন কথাই এখন বলিতেছি না; রাজভগিনীকে জিজাসা না করিয়া কিছুই স্থির করিতে পারিতেছি না, তাঁহাকেও কোন কথা এক্ষণে জি-জ্ঞাসা করিব না; তিনি বোধ হয়, কোন রূপ মনোব্যথা পাইরাছেন।

জ্যোৎদাৰতী ৰাজবৈক সে দিবস বড় মনের কটে ছিলেন, তাঁহার প্রতি রাণীর মনোভদ হইরাছে বৃঝিতে পারিয়াছিলেন। উৎসবের দিনে জোৎসাবতী চক্ষের জল কেলিয়াছেন,বলিয়া রাণীর প্রথম বিরক্তি জন্মে; তাহার পর রাজকুমারকে আশী-র্বাদ করিবার সময় জ্যোৎস্লাবভীকে খুঁলিয়া আনিতে হইয়াছিল বিলিয়া রাণীর চিত্তবিকার আরও অধিক হয়. শেষ রাণী যথন সভাদর্শনে গিয়াছিলেন. मकन जीलाकरे छेठिया मां एवर बाहित. কেবল জ্যোৎস্বাবতী উঠেন নাই: রাণীকে স্মান করা দুরে থাক, একবার ফিরিয়াও চাহেন নাই; এই তাচ্ছিলা রাণীর অসহা বোধ হইয়াছিল, এমন কৈ তিনি আর **নেখানে ভিলার্ক অপেক্রা**ী **দা** করিয়া भवनमन्दित जानिया भवन कवित्नन ।

দশরথ দেবশর্মা গোপনে যে ছইজন
দাসীর নাম করিয়াছিলেন, তাহারা রাণীর
সর্ব্বদাই সঙ্গে থাকিত, রাণীর মনের
গতি বিশেষ ব্বিত, অতএব রাণীর সঙ্গে
সঙ্গে শরনাগারে আসিয়া বাজনহন্তে ইচ্চাপূর্ব্বক জ্যাৎসাবতীর আপক্ষে ছই একটি
কথা বলিতে আরম্ভ করিয়া দেখিল, রাণীর
রাগ বরং তাহাতে বহ্নিত হইতে লাগিল। কাজেই দাসীরা ক্রমে ক্রমে
ছর ক্রিরহিল, সাবধানে জ্যোৎসাবতীর
ছই একটি দিক্ষাবাদ আরম্ভ করিল;
এমন, সময় অপর একজন পরিচারিকা
অতি ব্যক্ত হইরা শরনগৃহে প্রারশ কবিরা বলিল, 'ঠাকুরাণী কোণার ? বিষম

বিপদ্ উপস্থিত; অনকতক লোক রাজকুমারকে লইরা পলাইতেছিল । " "রাজা
কোপা!" বলিরা রাণী বাছিনীবৎ সম্বর্গে
উঠিলেন। পরিচারিকা বলিল, " রাজকুমারকে বৃকে করিরা তিনি অন্তঃপুরে
আসিতেছেন।" রাণী শিখিলোদ্যম হইরা
আবার পর্যাক্ষে বসিলেন। পরিচারিকা
চলিরা গেল।

যে ছুইজন দাসী রাণীকে বাজন করিতেছিল, একজন বলিল, "আমরা তা আগেই জানি, রাজভগিনীর মহলে রাম না হতে রামারণ হয়ে গিরাছে। আজ ছেলে কাড়িয়া লইতে আসিবে পরামর্শ হয়েছিল, আমরা ডাহা পুর্কেই শুনিরাছিলাম।"

রাণী। কি শুনেছিলি ? প্রথম দাসী। আমাদের সে সকল কথা বলিতে সাহস হয় না।

বিতীয় দাসী। আমাদের বলা ভালও হয় না, আমরা যেমন লোক সেইরূপ থাকাই ভাল, আমাদের কথায়
রাজঘরে মনান্তর হইলে আমাদের সে
কলঙ্ক রাবিবার স্থান হবে না।

বালী। আমি সকল কথা শুনিতে চাই, আমার বৈক-শেষৰ কথা যে গোপন করিবে, আমার বাটীতে তার স্থান হবে না।

প্রথম দাসী। আমাদের উভর সহট, তা আর ভর করিলে কি হবে, রাগ করিবেন না; একদিন আমরা ছইজনে রাজভানীর মহলে গিরা ভনিরাছিলাম

य এতদিনের পর রাজবংশে পিওলোপ रता। -(ग द्वान कामना नाननशानन করিতেছি, সে ছেলে নাকি কোন্ বাম্ন-প্রসবের সময় যথন আপনি (सर्व । মুচ্ছা যান, তখন নাকি রাজভগিনী মরা মেয়ে ভূমিষ্ঠা দেখে, কাদিতে কাদিতে আপন মহলে চলে যান, ভাহার পর जामहा ना कि कान शहरक मिरा तिह মরা মেরে কোন্ বামুনদের আঁতুড়ে রেখে, তাদের নাকি ছেলে আপনার আঁতুড়ে এনে দিই। স্বাবার নাকি টাকার লোভে আমরা এ কাল করে-ছিলাম; চোৰখাগিরা বলে কি, রাজপুত্র হলে वड़ घो। हरव, व्यत्नक मान धान হবে, তাই নাকি আমরা হলনে পরামর্শ करत (इल वमन करत्रिकाम।

রাণী। তোরা রাজভগিনীর মুখে এ কথা ভানেছিলি?

প্র, দা। না,তার মুখে কেন ? আমাদের কি এত সাহস হয় যে আমরা সে
কথা বলিতে পারি। আর পাঁচলনে
এ কথা বলিতেছিল, তবে ছিনি সেখানে
বসে ছিলেন। তা তার বলা কাজেই
হল বই কি, ছিনি ছ বলিলেন না যে
একথা মিখা।

রাণী তৎক্ষণাৎ সিংহীর ভার ফুলিরা উঠিলেন। মাথা বাঁকাইরা প্রথম লা-সীর প্রতি চাহিরা রহিলেন। তুর্দম রাগহেতু কিরৎক্ষণ কথা কহিতে পারি-লেন না। তাহার পর কথকিৎ ধৈর্যা অবলম্ম করিয়া ব্লিকেন, "তোমরা একজন বাও, জ্যোৎসাবভীকে বল গিরা, যে যত দিন ভিনি আমার মললাকাজ্জী ছিলেন, তত দিন তার এ বাটাতে থাকা ভাল দেখাইরাছিল।"

প্রথম দাসী চলিয়া গেল। করেক পদ গেলে আবার রাণী ভাহাকে ফিরা-ইয়া বলিলেন,"ক্যোৎসাবতীকে ডাকিয়া ভাঁহার নিজের মহলে লইয়া গিয়া এই কথা বলিবে। আমার মহলে এ কথা বলিবে না।"

দাসী বিনীতভাবে জ্যোৎসাবতীকে 
ডাকিয়া তাঁহার মহলে লইয়া গেল। 
তাঁহার পাদমূলে বসিয়া ছই একবার 
চক্ষের জল মুছিল, তাহার পর বলিল, 
"রাণীঠাকুরানীর কি হয়েছে, সকলকেই 
কটুবাক্য মুলিতে আরম্ভ করিয়াছেন, 
এমন দিন ব্যার না বে অনর্থক তুই 
একবার আম্রা তিরস্বার না ধাই—"

জ্যোৎ। তাই বলে তোমরা কিছু
মনে কর না, তিনি স্বাভাবিকই একটু
রাগী, রাগটা পীড়ার মধ্যে, রাগ যার
আছে ভার উপর দরা হয়। যদি
ত্রীলোকে রাগ করে কথা কর, তাহা
হইলে বড় কুংসিত দেখার, ত্রীলোকের
রাগ শুনিলে আমার বড় লক্ষা হয়।
গর আছে বে, সত্যভামা একবার রাগ
করে একজনকে গালি দিতেছিলেন,
এমন সমর প্রকৃষ্ণ একখানি দর্শণ লইরা
ভাহার সন্মুধে ধরিলেন, সত্যভামা আপনার রাগভরা মুধ দেখে বড় লক্ষিত
হলেন, আর সেই অবধি ক্থন তিনি

রাগ করে কথা কছেন নাই। রাগ হলে চুপ্করে থাকিতেন।

দাসী। তা যাহাই হউক, আমাদের উপর রাগ করে যাহাই বলুন, আমরা সকলই সহা করি, কিন্তু এখন যে বাড়া-বাড়ি আরম্ভ করিলেন।

"কেন, আবার কার উপর বাগ করে কি বলেছেন ?" এই কথাট জোংসাংবতী কুন্তিভভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন, সঙ্গে সজে তাঁহার মুখ মণিন হইয়া

দাসী। তা আপনি ত বুঝেছেন। জোং। তা হোক্, রাণী আমার উপর জন্ম জন্ম রাণ করুন।

দাসী। তিনি রাগ করে বলিলেন যে—

জ্যোৎ। যাহাই বলুন, লৈ কথা আমার আর গুনাইবার আবশাক কি?
দাসী। আবশাক আছে বই কি,
তিনি যে সে কথা গুনাইবার জন্ম আমার
পাঠালেন।

জ্যোৎ। তুমি বল গে "বলে এসেছি, তাহা গুনে অনাথিনী জ্যোৎস্নাবতী অনেক কেঁদেছেন," তাহা হইনেই ত্ রাণীর তৃপ্তি হবে ?

দাসী। না, তিনি বলেছেন আপ-নাকে এখান হতে চলে যেতে, না গেলে তাঁহার ভৃপ্তি ইবে না।

দাসী এই বলিয়া চলিয়া গেল, বাই-বার সময় জ্যোৎসাবভীর প্রতি আর ফিরিয়া চাইতে পারিল না। · >>

সেই দিবস রাত্রি ছুই প্রাহরের সময় জ্যোৎসাবতী ছাদের উপর শরন করিয়া চল্লের প্রতি চাহিয়া আছেন, নিকটে তাহার পরিচারিকা মাতঙ্গিনী বসিয়া আছে, মধ্যে মধ্যে বলিতেছে, "রাত্রি অধিক হয়েছে ঘরের ভিতর চলুন।" জ্যোৎসাবতী বাক্যছারা কোন উত্তর না দিয়া দীর্ঘনিখান ফেলিয়া বা অঞ্চলে মুখ মুছিয়া উত্তর দিতেছেন। যথনই মাত্রিলা কথা কহিতেছেন। যথনই মাত্রিলা কথা কহিতেছেন; মুথে কথা নাই, চক্ষে জল নাই বর্গণোলুখ মেছের নাায় স্থিরভাবে আছেন।

অনেককণ পরে জ্যোৎসাবতীর চকে জল আদিল। পূর্ণিমার রাজি মেঘা-वृष्ठ इहेरल ज्ञानत्कारिका प्रिथिया (यमन कथन कथन लाग कैरिए, (कारिया-বভীর সানমূথে চক্ষের জল দেখিয়া সেইরূপ মাত্রিকী কাঁদিল। মাত্রিকী হয় ত ভাবিল, জ্যোৎসাবতীর মনো-বেদনা বাভিল। মাত্রিনী অরবয়স্থা: वृक्षिण नां, य यथन विषय अफ़ वहिट्ड থাকে তখন এক ফোঁটাও জল পড়ে ना- वड थामिलारे कन रहा (कारिया-বতীর হৃদয়ে যতক্ষণ ঝড় বহিতেছিল, ততক্ষণ চকে জল আইগে নাই; ঝড় मनी ভূত हरेन, जांत्र हरक बन जांतिन। মাত্রিনীর ঘন ঘন নিশাস শুনিয়া ভ্যোৎসাবতী ভাহার মুখঞ্জি ফিরিয়া চাছিলেন, শেষ উঠিয়া তাহার চক্ষের

জল মৃছিয়া দিলেন। জোৎসাবতী দেহময়ী—সকলকেই ভালবাসিতেন, সকলকেই ভালবাসিতেন, সকলকেই ভালবাসিতেন, সকলকেই সেহ করিতেন, বিশেষতঃ আবার ছংখীদিগকে; যে নিজে ছংখী, সেই কেবল অন্যের ছংখ ব্বিতে পারে। মাতলিনী পিতৃমাতৃহীনা, আশ্রহীনা, বিধবা,বিশেষতঃ সে মাতৃসবোধন করিত বিল্যু জ্যাৎসাবতী তাহাকে বিশেষ স্বেছ করিতেন।

মাতলিনীর চক্ষের জল মুছিয়া জ্যোৎ লাবতী জিজ্ঞাসা করিলেন, "মাতি! তুই কাঁদিস্কেন ?"

মাতঙ্গিনী উন্তর করিল, "এখন আপনি তবে কোথায় যাবেন?"

জোৎসা। আমার আর এ জগতে স্থান কোধা ?

মাত। কেন—আপনার শ্বভরবাড়ী ?
ভানিয়াছিলাম আপনার শ্বভর রাজা
ছিলেন, আপনি কেন সেইখানে যান্
না.। আপনার সঙ্গে ত সম্বন্ধ ঘুচে
নাই।

জ্যোৎসা। সুচে গেছে বৈ কি; আর এখন কি সম্বন্ধ ! শশুরবাড়ীর কথা মনে ক্রিতে বড়ু কষ্ট হয়।

এই বলিরা জ্যোৎসাবতী অনেকৃষণ পর্যান্ত নীরবে বসিরা রহিলেন। মাত্তিদী আর কোন কথা বলিতে সাহস করিল না। শেষ জ্যোৎসাবতী দীর্ঘ-নিখাস ভ্যাগ করিলা বলিলেন, "সে শশুরবাড়ীর কথা মনে করিব না কেনই বা বলি। দিবানিশি যে সেই কথাই

আমার ৰূপ, সেই কথাই লরে আমার স্থ্য, সেই কথাই লয়ে আমার ছংখ। আজ আবার যে আল্যন্ত সে সকল কথাই মনে পড়িতেছে।"

মাত। আপদার খণ্ডরবাড়ীর কি ক্রা মা ? আমি কোন কথা কখন শুনি নাই।

জ্যোৎ। হল্দির জাঙ্গাল দেখেছ ?

মাত। দেখেছি—সেই জাঙ্গাল দিয়ে
আমার মামার বাড়ী গিয়াছিল।ম।

জ্যোৎ। তার ধারের গাছগুলি কত বড় হয়েছে ?

মাত। সে সব খুব বড় হয়েছে। বটগাছ থেকে ঝুরি নেমে অনেকদ্র অবধি অন্ধকার হয়ে আছে।

জ্যোৎ। সে জাঙ্গাল দিয়ে লোকজন চলে ?

মতে। বড় নয়—কখন কেহ যায়।
কেহ যায় না বলিয়া তাহার মাঝখানে
বড়জলল হয়েছে।

স্থোধ। তবে ঠিক আমার অদ্টের মত হয়েছে।

মাত। কেন মা ?

জ্যোৎ। সেই জালাল আমার বিয়ের সময় হয়। সেই জালাল দিয়ে আমার শশুর বিয়ে দিতে এসেছিলেন।

মাত। বিষের পর আপনি খণ্ডর-বাড়ী গিয়েছিলেন ? °

জ্যোৎ। ভা ত যেতে হয়। সেখানে গিয়ে যোল বংসর থাকি; তার পর চিরত্:খিনী হয়ে এখানে আবার ফিরে আসি ব

জ্যোৎসাবতী এই বণিয়া চক্ষের জল মুছিলেন।

মাত। তা---এতদিনের মধ্যে এঁরা আপনাকে আর আনেন নাই কেন?

জ্যোৎ। এ সকল রাজকায়দা। আন্

মার তেমন বিপদের সময় বড় ইছে।

হয়েছিল, একবার এখানে এসে কাঁদি।

আমি তখন সতের বৎসরের। বিপদের

কি জানি। সংসারের কি জানি,কপালের

কথাই বা কি জানি।

মাত। কেন মা, কি হয়েছিল।

**ছোৎ। কি হ**য়েছিল তার কোন-খানটা বলিব, যখন তাঁর বয়স ২২ বৎসর তখন সেই সর্কনাশ হয়, তার পূর্বে আমি কত স্থাপ ছিলাম; ভাবিভাম পৃথিবীর স্থই বুঝি এইরূপ, এ স্থ शांक कि यात्र, मकल्बत्र क्लाल घाउँ কি না ঘটে, তাহা একবারও মনে ভাবিতাম না, আপনার স্থথে আপনি ভুবে থাকিতাম, তাঁর যত্নে অঙ্কু হয়ে থাকিতাম। এজগতে কাহারও যে কর আছে তাহা একেবারে জানিতাম না, তাঁরে আদর করিতাম তাতে স্থা, আবার তাঁর সঙ্গে ঝগড়া করিতাম তাতেও স্থথ। তাঁরও স্থাবের সীমা ছিল না। কিন্ত কি তার ছবুদ্ধি হয়েছিল আমার লেখা পড়া শিখাইতে আরম্ভ করিলেন। আমি শিধিতে কৃত আপত্তি করিতাম, পারে ধরে পর্যান্ত বলিভাম, বে "আমাদের লেখা

পড़ा निधिष्ठ नारे, निधिस्त अनुष्टे मन इस ।" जिनि जाहा किहूरे अनिर्जन না. আমার সকল কথা হাসিয়া কাটা-ইতেন, ৰলিতেন, "ন্ত্ৰী রামায়ণ পড়িলে यि शामी मात्र, ज अमन शामी मताहे ভাল।" এ কথায় বড বাথা পাইতাম। চোথের জল মুছিয়া পড়িতে বসিতাম। তিনি আমাকে পড়াইয়া পাখী পুড়াইতে, যাইতেন: হাসিয়া বলিতেন, "এটিও তোমার মতন-খাঁচায় থাকে, ভানে না যে কেন এ খাঁচা, কেন আপনার এতরপ, কেন এত মিষ্টস্বর, কেন বা এ স্থা, কেন বা এ চক্র, কেন বা এ পৃথিবী, কেন বা এ জগং।' আমি হাসিয়া বলিতাম, "বল, এ ছুটীর মধ্যে কারে ভালবাস।" এ কথা জিজ্ঞাসা করিলেই হাসিয়া পলাইতেন, তার হাসি কি আর ভূলিতে পারিব? পাখীটও তার হাসি বুঝিত, তার হাসি ভনিলে স্থে দে কত কথাই কহিত, আমি ভাবি-তাম যে আমা অপেকা বুঝি পাধী তাঁরে (वभी जामत्र कतिन। আমার মধ্যে মধ্যে হিংসা হইত,আমি তখন আর কার হিংসা করিব ? তিনি চলিয়া গেলে তার হাসি কি কথা না শুনিতে পাইলে পাথীট নীরবে থাকিত, আমি রাগ করে তার খাঁচা ধরে কত গালি দিতাম, পাথী একবার এ কাণ একবার ও কাণ ফিরাইয়া আমার গালি গুনিত, কোন উত্তর দিত ना, একবার একবার খাফাইয়া আমার আহুল ঠোকরাইত, আমি আবার গালি

ভিনি ঘরে আসিলে ভাঁর দিতাম : সাক্ষাতেও গালি দিতাম, বলিতাম, "ও আমার সভীন।" তিনি হাসিয়া উঠি-় তেন, পোড়া পাখী সৈ হাসি শুনিবামাত্র আবার আপনার স্থর ধরিত। কত কথা কহিত, তিনিও যেন তার সকল কথা বুঝিতেন, দেই মত ভাহার দক্ষে আমোদ • করিছেন। জামি রাগ করিয়া বসিয়া থাকিতাম, তখন বুঝিতাম না যে তাঁরে পাথীটি পর্যান্ত সকলে ভালবাসে। উঠানে বাহির হইলে উহিতি পায়রায় আসিয়া ঘেরিত, যে তাঁর শরীরে বসিতে না পাইত, সে তাঁরে বেড়িয়া উড়িত, তিনি মুধ তুলিয়া তাহাদের সঙ্গে কণা কহি-তেন, উদ্ধর্থথানি কত স্থলর দেখাত।

রাজবাটীতে যত হাতী ছিল, সকলে তাঁরে চিনিত, ভালবাসিত। তাঁর স্নানের সময় পুদ্রিণীতে সকলগুলি আসিত; তাঁরে লটয়া ভালে কত্ট খেলা করিত। ওঁডে বসাইয়া কেহ তাঁরে জলে নামা-ইত, আর সকলে সেই সময় শুঁড় দিয়া তাঁর গায়ে ঘল ছিটাইত। এক একদিন প্দরিণীর ধারে যখন জলচৌকিতে বসিয়া তিনি তৈল মাথিতেন সেই সময় কোন হাতী হয় ত জল হটতে ধীরে ধীরে শুঁড়ের আগা বাডাইয়া তাঁর শরীর ম্পূৰ্শ করিত, জার অঞ্চম্পূৰ্ণ না করিলে যেন সে আর থাকিতে পারে না। জলে নামিতে দেরি হতেছে বলে কোন হরস্ত হাতী হয় ত জল-চৌকি ধরিয়া টানিত, তিনি হাসিয়া গালি দিয়া ললে বাঁপাইয়া

পড়িতেন; অলের ভিতর লুকাইতেন, আর সকল হাতীরা তাঁরে খুঁজিয়া বেড়াইড, আমি ভয়ে আড়াই হয়ে জানেলার বিসরা থাকিতাম, তার পর তিনি একদিকে ভাসিয়া উঠিলে সকল হাতী সেই দিকে গিয়া পড়িত। শেষ তিনি সকল হাতীর ভঁড়ে এক একবার করিয়া দাঁড়াইলে তাহাদের তৃপ্তি হইত। তাহার পর মান হইলে একটা হাতী ভঁড় দিয়া ছাতি ধরে বরাবর তাঁকে দরজা পর্যান্ত দিয়া যাইত।

স্থানের পর পূজা করিতে বসিতেন। তণ্ন তাঁর কি আশ্চর্যা মূর্ত্তি হইত, মুধ দেখে বোধ হইত, যেন এ পৃথিবীতে আর তাঁর কোন সংস্পর্নাই। যথন চকু মুদিয়া ধ্যান করিতেন, স্মুখের দেবতারা তাঁর মুখের দিকে একদৃষ্টিতে চাহিয়া थाकिएडन। लाक विनिज, দেবতারা তাঁর সঙ্গে কথা কহিতেন। তা হবে, আশ্চর্যা কি ! তার সঙ্গে কণা कहिट्ड (प्रवडालित हेड्डा इट्ड शादत. মাহয়ের মধ্যে তাঁর মত পবিত্র আর কে ছिল ? মার निक्ট বদে আহার করিতেন, কোন কোন দিন আহারের পর মার কোলে মাথা রাথিয়া একটু শয়ন করিতেন, তখন তাঁহার মুখখানি শিশুর মত কোমল হইত যেন আদর-ভরা।

তার পর বিষয়কার্য দেখিতে যাই-তেন, যে পর্যান্ত তিনি কাছারিবাটীতে যাতারাত আরম্ভ করিরাজিলেন, দেই পর্যান্ত দেওয়ানের ভয় হইয়াছিল। তাঁকে সকলেই ভালবাসিত, কেবল দেওয়ান্ বিষ দেখিত; সেই দেওয়ানই আমার কাল হয়েছিল; কিছ ভিনি থাকিতে দেওয়ান্ কিছু করিতে পারে নাই।

' তার সকলই গুণ ছিল, কেবল এক দোষের নিমিত্ত সকলেই তাঁর নিন্দা कत्रिज; जिनि (हर्ष्ट) करत्र विश्व षानि-তেন। বিপদ না ঘটে এই সকলের চেষ্টা, কিন্তু তাঁর চেষ্টা ছিল কিসে বিপদ আমি তাঁরে কত বলিতাম. তিনি কিছুই শুনিতেন না, হাসিয়া বলি-তেন, "অনেকে মধ্যে মধ্যে পা না টেপাইলে কণ্ট পায়, আমারও সেইরূপ गर्धा गर्धा विशास ना शिष्टल वर्ष कर्ड হয়।" আমি অবাক্ হয়ে শুনিতাম। একবার কোন দেশে কাছারী দেখিতে গিয়াছিলেন, বাটা আসিতে পথে খন-লেন যে, দূরে এক পুদ্রিণী ভীরে ভাকা-তেরা বড় দৌরাখ্য ক্রিতেছে, পূর্বাদিন একল্পন ভদ্রলোকের কন্যা পাকী করে খণ্ডরবাড়ী যাইতেছিল, এমন সময় ভাকাতেরা তাহাদের সকলকে মেরে (क्रालाइ। छान मनीता विलन, अभाष या अब्राहरव ना, खरन डिनि वनिरनन, के পথেই যেতে হবে। এই বলে বৌ সেজে পান্তীতে উঠিয়া সঙ্গীদের ফেলে চলিয়া গেলেন, শাত আট জন ডাকাত-কে ধরে বাটা আনিধেনন, কিন্তু তাহাদের সঙ্গে লাঠালাঠি করিবার সময় একজন ডাকাত খুন হয়। সেই অবধি আমার কপাল ভালে, কেমন তাঁর ধারণা হয় যে
তাঁর লাঠিতেই ডাকাড মরেছে, অথচ
সে সময় তাঁর হাতে লাঠি একেবারে
ছিল না। যার লাঠিতে মরিয়াছিল সে
আপনি স্বীকার করেছিল, ব্ধনীস্ত
পেয়েছিল তথাপি তাঁহার সন্দেহ ঘুচিল

প্রথমে তিনি পূজা ছাড়িলেন, কারণ জিজ্ঞাসা করিলে বলিতেন, আমি এখন অন্তচি—দেবতারা আর আমার পূজা তার পর ক্রমে ক্রমে नर्वन ना। অন্যমনস্ব হইতে লাগিলেন, এক এক-বার বলিতেন, প্রায়শ্চিত্ত করিব, অন্যের জন্য মরিলেই এ পাপের প্রায়শ্চিত হবে। আমি কিছুই বুঝিতে পারিতাম না, কেবল বুঝিতাম সে মুখে আর হাসি নাই। শেষ একদিন বেড়াইতে গিয়া দেখিলেন যে পথে একটা ছুরস্ত ছেলে ইট হাতে করে একজন পাগলকে বলিতেছে, ''আমি ভোৱে মারিব ৷'' পাগল ভয়ে হাঁ করিয়া কাঁদিতেছে, যত-বার বালক বলিতেছে, "এই মারি" ততবার পাগল কাঁদিয়া উঠিতেছে; এই দেখে তিনি কেমন ব্যাকুল হলেন, হয় ভ ভয় পেলেন, তিনিও যেন ভয়ে काॅं निया छेर्छन, छात्र এहेक्सन त्वांथ हत्ना, কিন্ত বাড়ী এসে তাহা আর কিছুই वित्र भावित्व मा। आधि विनवाम. ''পাগলের কারা দেখে ভূমি ভর পেরেছ কেন, তুমি কেপেছ নাকি 🙌 অসনি ভিনি আমার মুধ চাপিরা বলিলেন, "ও

কথা কেন বলিলে? আমার ভর করিতেছে; তবে কি সতাই,—'' এই
বলিয়া আমার হাত ছিনিয়া পলাইলেন।
. আমার নিকট হইতে পলাইয়া মার
নিকটে গেলেন, ছই হাতে মার পারের
খুলা সর্বাক্ষে মাখিতে মাখিতে বলিলেন
." মা, আমার পীড়া হয়েছে, তোমার
চর্ণরেণু মাখিলেই আমি ভাল হব।''
মা এই কথায় কাঁদিয়া উঠিলেন, কারা
দেখিয়া আবার ভয় পেয়ে বলিলেন,
"তবে সত্যই।'' অমনি সেইখান হইতে
পলাইলেন, একবার আসিয়া পিতাকে
প্রণাম করিলেন,পিতা ভাবিলেন,অসময়ে
এ প্রণাম কেন ? কিন্ত তিনি কোন কথা
না বলে চলে গেলেন।

রাত্রে আর তাঁকে কেছই খুঁজিয়া পাইল না। সেই দিন অবধি রাজবাড়ী শুনা হলো।

চারিদিন পরে একজন জেলে আসিরা
সম্বাদ দিল যে রাজপুত্রকে পাওরা
গিরাছে। শুনিবামাত্র রাজবাড়ীর সকলে
জেলের সঙ্গে ছুটিল, গ্রামের লোকও
পালে পালে পোল। আমি একা বসে
মনে মনে করিতে লাগিলাম গৈ, এবারে
তারে পেলে আর তিলার্দ্ধের ঘন্য ছেড়ে
দিব না: একবার ভারে দেখিতে পেলে
হয়। অনেকক্ষণ পরে আবার পালে
পালে লোক ক্ষিরে আসিতে লাগিল,
রাজবাটীরও লোক সকল কিরে আসিল;
কিন্তু তাঁর আসার কথা কেহু বলে না।
আমি ছটকট ক্রিতে লাগিলাম, শেষ

রাজমহলে কারার গোল উঠিল, আমি তখনও কিছুই বুঝিতে পারিলাম না; কিন্তু কেমন একটা আতলা হলো, আমি शिश्रा नुकारत दहिनाम, आश्रीन नुकारन ভ কুসম্বাদ লুকান থাকে না; ক্রমে শুনিলাম, নদীতীরে তাঁর দেহের সং-কার আরম্ভ হয়েছে, জেলে জাল ফেলিতে গিয়ে তাঁর দেহ পাইয়াছিল. তাই রাজনাটীতে খবর দিতে এসেছিল, কেহ তার কথা প্রথম বৃঝিতে পারে নাই শেষ নদীরধারে গিয়া বুঝিতে পারিল। তার পর আমার কি হলো আমি কিছুই বুঝিতে পারি নাই। যথন উঠে বসিতে পারিলাম, তথন একদিন শ্রাদ্ধের কথা আমার কাণে গেল, আমার যে কি সর্বাশ হয়েছে তখন কিছু কিছু বুঝিতে পারিলাম। সর্বনাশের কথা আমার আগে সকলেই বুৰেছিল. পোড়া আমি কেবল বুঝিতে পায়রা আর সেরূপ গোল-मांग करत ना, कार्निसन नौरह हुन करत বদে পাকে। একদিন স্নানের সময় জানেলায় বদে পুন্ধরিণীর ধারে তার ছিলাম, এমন সময় একটি হাতী দৌড়িয়া সেইখানে আদিল, সঙ্গে সঙ্গে কত লোক ছিল, কিন্তু ছাতীর কাছে কেইই আসিল না। লোকৈ ভেবেছিল হাতী কেপেছে; কিন্তু হাতীটি ঘাটে আসিয়া দাঁডাইয়া রহিল; ভিনি এই হাতীটিকে বড় ভাল বাসিতেন, এই হাতীটিই তাঁরে হাতী

धतिङ, धरे रांडीहिरे धक धकिन खरव থাকিত, আর তিনি ভার পেটে ঠেদ দিয়ে বসে বাঁশী বালাতেন। হাতীটি অনেক ক্ষৰ পৰ্যান্ত খাটে দাঁডায়ে এদিক ওদিক ফিরে ঘুরে দেখিতে লাগিল, আমি বেশ বুৰিতে পারিলাম তাঁরে খুঁজিতেছে, এক-বার তাঁরে চীৎকার করে ডাকিল, শেষ জলে নামিল, মনে করিল, তিনি জলের ভিতর কোথাও লুকায়ে আছেন; কত-বার ডুব দিল, কতবার মাথা তুলে চারিদিকে দেখিতে লাগিল। ভাবার জল হতে উঠে জলচৌকির নিকট माँछान. जनकि मतारेश (प्रथिन। हाडी कि हाय, कि भूँ बिट्ट एक, माह्य তা ব্ঝিল, কাছে এদে গা চাপড়ে বলিল, "আর কেন থোঁজ? সে ধন হারিয়ে গেছে।" হাতী সে কথা কিছুই গুনিল না, দাড়ায়ে রছিল, একজনের হাতে একটি ছাতী ছিল শুঁড় দিয়া তাহা काष्ट्रिया नहेन, बन्दिकोकित छेशन ऋत्वक ভাছা ধরিয়া রছিল, ভার পর যেন তাঁরে স্নান করাইয়া বাড়ী আনিতেছে এই ভাবে ছাতী ধরে দরজা পর্যান্ত আসিল; এই দেখে মাহত কেঁদে উঠিব। জানেলা থেকে আমার দাসীরা मकल खेठाहेबा निरम श्रम ।

ভার পর প্রাদ্ধ। প্রাদ্ধ করিতে আমার লরে গেল, আরোজন দেপে ভা বৃথিতে পারিলাম। আমি প্রথমে কাঁদিতে কাঁদিতে কিরে আসিলাম, আর কোন মতে গেলাম না। শেষ আমার

খণ্ডর নিজে এদে একবার কাঁদিতে লাগিলেন, একবার সাধিতে লাগিলেন। আমি তথন আর কি করি, মিছে করে বলিলাম যে, "তিনি ত মরেন নাই, তিনি আবার ফিরে আসিবেন। জেলের কথা ভনে যে দেহের সংকার করা হয়েছে, সে দেহ ত তাঁর নহে।, যারা দেখিতে গিয়েছিল তারা-কেবলাকাপড় দেখে চিনেছিল; কিন্তু অন্যলোকে কেহ যদি তাঁর কাপড় পরে থাকে গ্"

এই কথা ভানে আমার খাভর অবাক্ হয়ে দাঁড়াইয়া রহিলেন। তার পর বলি-লেন, "সভা কপা, আমি কেন এভক্ষণ ব্ঝিতে পারি নাই। আমার চাঁদ বেঁচে আছে। আবার আদিবে ঠিক কথা। আমি দেওরান্কে বলি গিয়ে।

কিন্তু পাষণ্ড দেওয়ান্ তাঁর সকল কথা উন্টাইয়া দিল। আবার খণ্ডর এনে জেদ করে ধরিলেন বে "শ্রাদ্ধ করিতে হবে, নতুবা তাঁর গতি হবে না, প্রেত অবস্থায় কত কট্ট পাবেন।" আমি আর কি করি: শ্রাদ্ধ করিলাম।

মাতদিনী। আপনার খাওড়ি কিছু বৈনিলেন না, আপনি তাঁর কোন কথাই ত বলিতেছেন না।

জ্যোৎ। তিনি বুধা মামুষ ছিলেন, কথন কথন তাঁর জ্ঞান থাকিত না। আমার বিবাহের পুর বরাবর দেখেছি বেশ সহজ লোক ছিলেন; কিছু যথন ভনিবেন যে, তাঁর সর্কনাশ হয়ে গেছে তিনি কথাও কহিলেন না, একদিন কাঁদিলেনও না, আমি কাঁদিলে বলিতেন, আমার ছেলের অকল্যাণ হবে।
তিনি যতদিন বেঁচে ছিলেন, রোজ আমার কপালে দিশুর পরায়ে যেতেন।
কিন্তু অধিক দিন বাঁচিলেন না। আন্
মার খণ্ডর দিনকতক শোক করিলেন,
তার পর ক্রমে ক্রমে পুল্রশোক পর্যান্ত
ভূলৈ গোলেন; বুড়ালোকের শোক কত দিন থাকে?

মাত দিনী। শোক নাকি আবার বুড়া যুবার পূপক্!

জ্যোৎ। বিস্তর পৃথক্। তা আমার
খণ্ডর হতে দেখেছি। একবংসর না
ঘাইতেই তিনি পোষাপুত্র লইলেন।
একদিনের জন্যও আপন পুত্রকে শ্বরণ
করিলেন না। তার পর আর এক
কাণ্ড হরে গেল, যার অদৃষ্ট মন্দ তার
যত্রণা পদে পদে, বিধাতা যেন তারে
এক্বার মেরে ভৃপ্তি হন না।

আমি বিধবা হবার দশবৎসরের পর একদিন বৈকালে পাঁচজনে একত্রে বসে আছি, এমন সময় আমার খাণ্ডড়ির একজন দাসী ছুটে এসে বলিল, "আবার যে কি শুনিতে পাই।" খাণ্ডড়ির সরণের পর অবধি দাসী আর রাজবাড়ীতে থাকিত না; কখন কখন আমার সঙ্গে দেখা করিতে আসিত। আমি তারে জিজ্ঞাসা করিলাম "কি কথা শুনিতে পাও ।" মে বলিল, "এবার সত্য সত্যই নাকি রাজকুমার ফিরে এসে

ছেন, তিনি ফার্নবাগে বসে আছেন বাপকে ধবর পাঠায়েছেন, রাজামহাশয় সেধানে এই গোলেন।"

**এই ममग्र आत्र এक जन (मोड़ारमोड़ि** এসে বলিল, "আমি এই তাঁরে স্বচক্ষে (मध्य धनाम, वड़ कान इत्म (शह्बंनः প্রথমেই আমার সঙ্গে দেখা, আমি ফাল্পনবাগের পুকুরে জল আনিতে গিয়া पिथि घाटि अक्बन मन्नामी बंदम আছে। কে আর বল সন্ন্যাসীর দিকে ফিরে চায়, আমি কলসী হাতে জলে নামছি এমন সময় সর্যাসী আমার ডেকে বলিলেন 'কাদম্বিনি আমায় তোমরা চিনিতে পার ?' আমি অবাক্ হয়ে তার মুখ দেখিতে লাগিলাম, মনে হতে লাগিল ঠিক যেন আমাদের রাজ-কুমারের মত, কিন্তু তিনি ত নাই। তার পর তিনি আমার মনের কথা বুঝিতে পেরে হাসিমুখে বলিলেন, 'তবে আমায় আর বুঝি চেনা যায় না।' সে হাসি দেখিবামাত্র আর আমার সন্বেহ্রহিল না; আমি কাঁদিয়া উঠি-नाम, शनाम काপড़ निया व्यनाम करत যোড় হাতে বলিলাম, আর এথানে কেন ? তিনি বলিলেন, 'আমার বিশম্ব আছে;' আমি বলিলাম যে, তবে এই সময় বৌ-রাণীকে খবর দিই গে, তিনি সে. কথার কোন উত্তর না দিয়ে বলিলেন, 'তিনি নাকি এখন বড় বিজ্ঞ হয়েছেন ? বিজ্ঞবতীকে একবার বিজ্ঞাসা ক্রা আবৃশাক যে কোন বিজ্ঞতার দক্রণ

ভিনি দীৰিত খামীর প্রাদ্ধ করেছেন।' ভা আমি আরু কোন কথার উত্তর মা করে ঘাটের উপর কলদী রেখে একে-बादा क्रुटि अमिह; वाड़ी व बारे नारे।" এই সন্ধাদের পর আমার মহলে चाह्नात्मत रहें डेर्फ शंग, हातिपरिक मकल हुठाहुछि करत्र वाड़ी शतिकात করিতে লাগিল। আমি নির্জ্জনে গিয়ে कॅमिए वाशिनांग. (कन कॅमिनांग ভাহা क्वांनि नां, অনেককণ ধরে কাঁদি-লাম। ভার পর সেখানে দাসীরা আমার চুল বাঁধিতে গেল, আমি বারণ করিলাম না, তার পর তাহারা যথন আমায় অবস্থার পরায়, তখন আমি বলি-লাম, ষে এখন রাখ তিনি এসে আমার चार्थान भवारेश पिटवन, मागीया बनिन, "সে কি কথা৷ তিনি কি এসে আপনার এই বিধবার বেশ দেখিবেন প' আমি কোন কথা বলিলাম না। দাসীরা গ্রনা পরাইল। পরে তিনি এসে প্রথমে আমার কি বলিবেন আমি তাঁকে कि वनिव এই कथाई मान मान दक्वन छाविट नाशिनाम। कृत्म मुद्गा हला. उथन ७ जिन अलन ना, मान कत्रिनाम বাপের কাছে এই দশবংসরের কটের কথা পরিচয় দিতেছেন; তার পর রাত্রি **এक धारत राम भामि धक्यमाक विश-**লাম যে,ভোমরা একজন রাজম্হলে যাও मचाम कि सानिया आहेग। तम विनम यावात छेशात नारे, पत्रणा वसः। ८५%-शांत्नत एक्ममण एव अवादनवा एवळाव

চাবি विश्रांट्य ; याता त्रांश्र शुद्धात नवान এনেছিল, ভারাও বাড়ী যাইতে পায় मादे। आभाव वड़ भामह हाला, किह বুৰিতে পারিলাম না। সমস্ত রাভ: चामता नकरल वरम बहिलांग, रकान সমাদ পেলাম না, দরজাও কেহ খুলে क्लिना। (म क्लि (मन, जांद्र शद क्लि रान, এইরপে আটদিন গেল দরজার. চাবি কেহ খুলে दिन ना। এই आरमन এই আসেন মনে করে মানুব কর্মিন বলে থাকিতে পারে! ক্রমে আমার শরীর অবদন্ন হয়ে পড়িল, আমি অজ্ঞান হলেম, জ্ববিকার বলে আমার ठिकिश्मा चात्र इता. चामि कत्रमिन ष्यकान हिलाम छा कानि ना, यथन আমার জ্ঞান হলো, তথন আমার किছ्हे मान हिलाना, कारम कारम मकन कथा भाग हता, जाभि भयाष शाफ नक-লের মুখের দিকে চাহিয়া থাকিডাম, কে-হই আমায় কিছু বলিতনা; জিজাসা ক্রিতে আমার সাহসও হইত না; একদিন আমি সাহস করে জিজাসা ক্রিলাম, যাহা শুনিলাম, তাতে আর এ প্ৰাণ ৱাখিতে ইচ্ছা হলো না। ঘুৰ্ভাগীৰ প্ৰাণ কি বাহিৰ হয় ? সেই আমি আৰু বেঁচে আছি।

মাতলিনী। আপনি কি ওনিলেন ?
ক্যোং। যে দিন তিনি কিনে এলেন, কান্তনবাগ হতে পিতাকে একথানি পত্ৰ লিখিলেন, পত্ৰ পাইবামাত্ৰ
রাজা ফান্তনবাপে সুটলেন, সেধানে

शिश श्वरंक दूरक करत कछ कैंकिरनम, ভার পর যথন আমার খাগুড়ীর মরণের क्या इएडिल, उथन दम्ख्यानम्हान्य ফাল্পনবাগে গেলেন: কিন্তু তিনি রাজ-পুত্রকে চিনিতে পারিলেন না। রাজা স্বয়ৎ চিনিয়াছেন,দেওয়ান চিনিতে পাক্ষন বা না পারুন, তাহাতে আর কি ক্ষতি ? রাজা ব্লিলের, "এখন তবে বাড়ী চল;" রাজ-পুত্র রাজার সঙ্গে উঠিতেছিলেন, এমত সময় দেওয়ান্ বলিলেন, "একটা কথা আছে, ভ্ৰমক্ৰমে প্ৰাদ্ধ করা হইয়াছে, कर्ण वाठी यादेवात शृद्ध छो। वार्यात निक्र वावचा लख्या व्यावभाक; यपि তাঁহারা প্রায়শ্চিভের ব্যবস্থা করেন, তাহা हहेल (मणे कर्त्रा हाहे।" বলিলেন, "এ কথা সঙ্গত বটে, আমি এখনই বাটী গিয়া ভটাচার্যাদের ডাকাই-তেছি।"

রালা বাটী গেলে রালপুত্রের সেবার
নিমিত্ত করেকজন চাকর ফান্তনবাগে
আসিল, তাহারা সকলেই নৃতন লোক,
রালপুত্র তাহাদের কাহাকেও চেনেন না,
তাহারাও কেহ রালপুত্রকে চেনেন না।
রালপুত্র তাহাদিগকে পুরাতন চাকরদের
সমাদ একে একে জিজ্ঞাসা করিলেন,
তাহারা বলিল, "পুরাতন চাকর আর
রালসরকারে কেহই নাই।" রালপুত্র
কিছু আশ্চর্যা হলেন, কিছুই হেতু অমুভব
করিতে পারিলেন সা।

পরদিবস প্রাতে পেকার আসিয়া বাহুপুত্রকে বলিল,"বলি আপনাকে রাহু-

পুত্র বলিয়া গ্রহণ করা হয়, ভাষ। ইইলে একটা প্রায়শ্চিত্ত করা আবশ্যক; ভট্টা-চার্য্যেরা এইরূপ ব্যবস্থ। দিয়াছেন: ভাহার উদ্যোগ করিতে ছই একদিন বিশ্ব হইবে, অতএব যে পর্যান্ত তাহা না হয়, সে পর্যান্ত আপনি এই ফাল্পনবাগে थाकित्व। याद्यां आश्रनात्र कान कर्षे শা হয়, তাহার নিমিত্ত রাজাবাহাতুর আমাকে পাঠাইরাছেন।" এই কথায় রালপুত্র কিঞ্চিৎ বিরক্ত হলেন, জিজাসা করিলেন, "(যদি রাজপুত্র বলিয়া আপ-নাকে গ্রহণ করা হয়) এ কথা বলিতে কে তোমায় শিখাইয়া দিয়াছেন ?" পেস্কার বলিল, "রাজাবাহাত্র নিজে, ডিনি যেমন বলিতে বলিয়াছেন, আমি ঠিক (महेक्षभ निर्वापन कविशाहि।"

রাজপুত্র তৎক্ষণাৎ পিতাকে একথামি পত্র লিখিয়া একজন চাকরের হস্তে দিয়া বলিলেন, "এই মুহুর্তে রাজবাটী যাও. পত্রখানি রাজাবাহাছরের হাতে দিবে. व्यनाथां नां इया" हाकत्र "(य व्यक्ति" विनश्च विनांत्र दहेन: श्राह कारनक বিলম্বে উত্তর আনিল। উত্তরধানি দেওয়ান্ মহাশয়ের স্বহন্তের লেখা; কিন্তু তাহার শিরোভাগে রাজার দস্তথত ছিল। রাজপুত্র পত্রধানি ছই তিনবার পড়ি-লেন, তাহার প্রথমভাগে স্বেহপূর্ণ বাক্য, শেষভাগে বিপরীত কথা। রাজপুজের वड़ मत्मह इहेगै; किन्छ (म पिवम আর কিছু বলিলেন না। রাজে ভাঁহার মনে इहेन त्य, जिनि इहे नियम चानिया-

ছেন, বিধাৰবাদীরা এ দখাদ অখণ্য
পাইরাছে; জ্বণ্চ কেহ এপর্যান্ত উহিছে
বেথিতে জাসিল না, ইহার ভাংপর্যা
কি ? সকলেই ত ভাহাকে ভাল বাসিত।
পরিষিত্স একজন চাকরকে ভাকিয়া
জিক্ষাসা করিলেন, "তুমি এ প্রামের
প্রধান প্রধান লোকদের চেন।" সে
উত্তর করিল, "আমি কাহাকেও চিনি
না।" রাজপুত্র বলিলেন, "কোন প্রভাতন
জামলাকে জামার নিকট ভাকিয়া জান।"
সে উত্তর করিল, "প্রাতন জামলা
কেহই আর রাজবাটীতে নাই।" রাজপুত্র
আশ্চর্যা হইলেন—সাবেক কোন চাকর
নাই, দরওয়ান নাই, জামলাও নাই,
তাৎপর্যা কি!

পরদিন প্রাতে রাজার নিজ হাতের এক পত্র পৌছিল; তাহাতে লিখিও ছিল, " নগরবাসীদের মধ্যে রাষ্ট্র যে ভূমি त्राक्रभुद्ध नर्, क्लांबाकात्र अक्सन देवस-বের সন্তান, আমার ছুর্ভাগ্য শুনিয়া আমার প্রভারণা করিতে আসিরাছ; যদি তাহা সত্য হয়, তাহা হুইলে ভোমার চেষ্টা বৃথা; ভোমার এথানে থাকাও বুথা। স্থার যদি তুমি সভাই चात्रात्र शुळ इंड, छाहा हरेल चनात्रारमहे বৃদ্ধিতে পারিবে বে,এই অবস্থার তোমায় श्रह्म कडित्न (मारका विश्वान कवित्व, (य चामि देवकृद्वत मखान धारण कृतिशाहि। যৰি আমার পৌতা ইয়, লোকে ভাষাকে रेक्कटवड श्रुष्ट वनिरव, ध कनक इरेटनः मानता (क्रहे भूषी हर ना; अठवर

कृषि निरक्षे विरवहना कतिया कार्य আমার বিবেচনার উপর कदिएव । নির্ভর করিও না; আমি বৃদ্ধ হইয়াছি, তাহাতে প্রশোকাকুন, এ সময় সক-লেই আমায় প্রভারণা করিতে পারে, তাহা না হইলে সে দিবদ ভুমি 'পুত্ৰ' বলিয়া পরিচয় দিবামাত্র আমি ভোমায় (कन वृत्क कतिवा कें। शिनाम १ कि हुई । (एथिनाभ ना, अनिनाभ ना, कान जन्छ है করিলাম না: আমি তখন একেবারে ভাবিলাম না যে, যে সম্ভান মরিরাছে. यारात (पर पार कतारेशाहि, यारात आह করাইয়াছি, সে সম্ভান আবার কিরুপে ফিরে আসিবে? অতএব তুমি আর কোন চেষ্টা করিও না, এ পত্রের উত্তর षामि हारे ना, উखत मिल तम भव আমার নিকট পৌছিবে না; আমার সহিত সাক্ষাৎ করাও বুথা, ভাহার cb है। क्रिलिश माकार इटेरव मा; वतः ত:হাতে তোমার ক্ষতি হইবে।"

রাজপুত্র পত্ত পাইয়া অনেককণ পর্যান্ত বসিয়া রহিলেন, ভাছার পর হঠাৎ উঠিয়৷ বৈঠকখানা হইতে বাছির হইলেন; পেয়ার আসিয়া জিজ্ঞাসা করিল, "কোথার বাইতেছেন?" রাজপুত্র বলি-লেন, "রাজবাটা।" পেয়ার বলিল, "ঘাইতে নিষেধ।" রাজপুত্র ভাছা গ্রাহ্ম না করিয়া চলিয়া গেলেন। পেয়ার ভৎক্ষণাৎ একজন বোড়সঙ্বার- রাজ-বাড়ীতে পাঠাইয়া দিলেন; রাজপুত্র নেখানে কাসিয়া ভেবিলেন, রাজহারের

সন্মুখে কয়েকজন বলিষ্ঠ সিপাছী যেন ভাছারই নিমিত্ত দাঁড়েইয়া আছে; ভাছা-দের মধ্যে একজন অগ্রসর হইয়া জিক্সাসা বৈরিল, "আপনি কি চান ?" রাজপুত্র वितास, "शांकपर्यत ।" तिशाही छेखत করিল,"নিষেধ আছে।" তথাপি রাজপুত্র • অগ্রদর হইলেন, সিপাহী পথরোধ করিল, •রালপুত্র,ভাহাকে দুরে নিকেপ করিয়া ताबवां विशादमं कतिए (हरे। भारेतन, তখন আর সকল সিপাহী আসিয়া তাঁ-হাকে শৃগাল কুরুরের মত ধরিল, তিনি প্রথমে রাগে চীৎকার করিয়া উঠিলেন; দিপাহীরা ভাঁহার হাত পা বাঁধিল, শেষ िन विनात, "बात शासाबन नाहे, এখন আমি বুঝেছি।" সিপাহীরা ক্ষান্ত হইল। তিনি আপনার ঘারে আপনার চাকরের হাতে বাধা পড়িলেন, সেইখানে পিতা বঙ্গে, ফিবেও চাহিলেন না। অণুষ্ঠ মন হলে পিতাও শক্ত হয়।

সিপাহীরা ভাষাকে স্থানান্তরে লইরা গেল। পথে বিস্তর লোক অমিল; সকলেই " লালরাজা" বলিয়া উপহাস করিতে লাগিল, কেছ কেছ গারে ধুলা দিতে লাগিল। রাজপুত্র আর মুখ তুলিলেন না।

আটদিনের পর আমার মহলের দর্যা খ্লে দিলে আমার দাসীরা গিরা স্থাদ আনিল; অথ্যেই স্কল কথা জানিতে পারি নাই; ক্রুখে জানিলাম। তথ্ন আমি নিজে রাজ্মহলে পিরা খণ্ডরের পারে কাদিরা পড়িলাম। ভিনি ব্লিশেন, "যাহা শুনিরাছ সকল মিণ্যা। একজন ছষ্টলোক জাল সেজে এসেছিল, আমি ভারে বাঁধিরা দেশছাড়া করে দিরাছি।" আমি বলিলাম, "আপনি তাঁকে নিজে চিনেছিলেন, তাঁরে পেরে কত কোঁলে-ছিলেন, তবে এরূপ কেন করিলেন?" ভিনি উত্তর করিলেন, "আমি চিনিলে কি হয়, আমি রস্ক, আমার ভ্রম হতে পারে; কিন্তু দেওয়ান্ তাঁরে বাল্যকালাবধি দেখে আসিতেছে, দেওয়ানের ভূল হবার ত কোন কথা নছে। যথন দেওয়ান্ বলিল "এ ব্যক্তি রাজপুত্র নছে" তখন অবশাই আমার সন্দেহ হইতে পারে।"

আমি বলিলাম দেওয়ান্ তাঁকে নিশ্চরই

চিনেছিলেন, কেবল আপনাকে তাহা
বলেন নাই। আপনি কি তুলে পেছেন
যে দেওয়ানের প্রকে আপনি পোষাপুত্র
লয়েছেন ? আপনার পুত্র কিরে আসিলে
দেওয়ানের অবশ্য ক্ষতি আছে, কাঞ্চেই
দেওয়ান্ মহাশয় আপনার নিকট মিথা।
বলিয়াছিলেন ।

এই কথার খালরমহাশর অনামনক হই লেন; কপবিলম্বে বলিলেন, "এমন হবে না; এত অধর্ম আচরণ দেওরান্ কথনই করিবে না। আমি তারে চিরকাল প্রতিপালন করেছি, তার কত উপকার করেছি, আমার সে নিতান্ত অমুগত, দে কথন এমন অধর্মাচরণ করিতে পারে না।. যে ব্যক্তি এসেছিল, তার আকার অব্যব ক্তকটা আমার ছেলের স্তেপ

নিলেছিল বটে, কিছ বর্ণ সে নয়, মুখের সে হাসি নয়, শরীর তেমন নয়ম নয়, আবার কডকঙলা লাড়ি আছে। তবে এরে দেখিলে তারে মনে পড়ে বটে। ভাজেই ছেওয়ানের কোন দোষ ছিল না।
—কিছ আবার এক কথা আছে, দেওয়ানের সকে কথা কহিতে কহিতে যখন প্রথম আমার সন্দেহ উপস্থিত হয়, তথন আমি তাহারে বলিয়াছিলাম 'আর একবার আমি নিজে গিয়া সন্দেহভঞ্জন করে আসি।' কিছ দেওয়ানই তাহার বাধা দিয়াছিল।"

আমি সময় পাইয়া বলিলাম, "প্রথম সন্দেহও বােধ হয় দেওয়ান্ মহাশয়ই উথাপন করে থাকিবেন।" রাজা ভাবিয়া বলিলেন, "তাও সত্য, কিন্তু গ্রাম-তদ্ধ লোক তাহাকে ভালরাজা বলেছে, কেহই ত চিনিতে পারে নাই। সকলেই ত তারে দেখেছে।"

আমি উত্তর করিলাম, "প্রামের কেইই ত তাঁকে দেখে নাই। কান্তনবাগে কাহারও যাবার ছকুম ছিল না, ছেও-রান্মহাশর নিজের লোক তথার রাখিরাছিলেন, কাহাকেও তথার যাইতে দেন নাই; যদি কেই যাইতে পাইত, তাহা হইলে সকলেই তাঁরে চিনিত। তিনি যথন এসে প্রকরণীর ধারে বসেছিলেন, ডখন কাদ্দিনী ভাঁহাকে দেখিবামাত্র চিনেছিল। তিনি ত তখন তার কাছে "রাজপুত্র" বলে পরিচয় দেন নাই, তখন কাহারও কাছে নিজের পরিচয় দেন

নাই, আপনাকেও তথন পত্ত লেখেন
নাই; কাদখিনী বেমন দেখিবা মাত্র
তাঁকে চিনেছিল, দেখিলে আর সকলেও
সেইমত চিনিত। আর কেহই না/
চিমুক, আপনি ত তাঁকে চিনেছিলেন।
তবে যে লোকে আলরাজা বলে গোলযোগ করেছিল তাহা তাহাদের দোষ নর;
দেওরান মহাশর লোকের কাছে যেম্ন
পরিচর দিরাছিলেন, লোকও তেমনি
বলাবলি করেছিল। কেহ ত ফান্তনবাগে প্রবেশ করিতে পায় নাই।"

রাজা অনেককণ অবধি নীরবে রহিলেন, তার পর দীর্ঘনিখাস ত্যাস করে
জিজাসা করিলেন, ''এতদিন আমার এ
সকল কথা বল নাই কেন ?'' আমি
বলিলাম, ''দেওয়ান্মহাশয় আমার মহলে
আটদিন চাবি বন্ধ করে রাধিরাছিলেন,
কাজেই আমি কোন কথা বলিয়া পাঠা
ইতে পারি নাই।''

আমার খণ্ডর বলিলেন, " এখন দেওরানের ষড়যন্ত্র বৃদ্ধিতে পারিলাম, আমার
হৃদ্ধ পাইয়া আমার এই চুর্গতি করেছে,
আমার সোণার চাঁদকে ভাড়াইয়ছে।
যাবার বেলা ছেলে আমার কত ব্যথা
পারে গেছে; আমার নাজানি কি ভাবিয়া
গিয়াছে! আমি কি নরাধম! আমি এখনই ভারে খুঁলিজে চারিদিকে লোক
পাঠাইব।"

আমি বলিলাম, "এক্ষণে লোক পাঠান বুঁথা, তাঁকে অনুসন্থান করে এমন লোক আপনার আর একটিভ নাই।

যাহারা আপনার লোক ছিল, তাহারা नकलारे धरक धरक ছেড়ে शिवाह ; এখন যাহারা আছে, তাহারা কি আমলা, क्षि हांकड़, कि निशाही, नकत्नह (म अवारनव लाक, म अवारनव रेव्हा ना থাকিলে তারা কখনই অমুসন্ধান করিবে ুনা।" রাজা বলিলেন, "বটে, আমার এমন অৰ্ছা করেছে! আমি এখনই দেওয়ানকে তাড়াইব।'' এই বলিয়া মহা রাগত হয়ে বাহিরে গেলেন, আমিও আমার মহলে 'আসিলাম। তখনই দেওয়ান্কে বরখান্ত করিয়া রাজবাটী হইতে চলিয়া যাইতে অনুমতি পাঠাইলেন। দেওয়ান্রাজাক্তা শুনিয়া প্রথমে ঈষৎ হাসিল, তার পর মুখ ভার করে যোড়হাতে রাজসভায় গিয়া এক-পার্ছে দাঁড়াইয়া জিজাসা করিল, "দাসের কি অপরাধ ছয়েছে ?" তাহার নম্রতা (मर्थ ताबात किकि द तांश किमल। ताला ববিলেন, ''তুমি ষড়যন্ত্র করে রাজপুত্রকে তাড়াইয়াছ, অতএব তুমি এই মুহুৰ্ত্তে আমার বাটী হইতে যাও। यणि द्राष्ट-প্ত্রকে তল্লাস করে পুনরায় আনিতে পার, তবেই আমার এখানে মাঝর ভোমার স্থান হবে; নতুবা এই প্র্যান্ত।'' দেওয়ান্ वाबाव भा धविद्या चित्रत, "क्रमा क्क्रम, আমার কোন অপরাধ নাই; আমি कान यक्षत्र सानि ना, खादा इटेल অনেক ক্লান অব্ভাধরা পড়িতাম। আমি वानकान भवति धरे ब्राज्यवरूटिय थिविभागिक इंदेश जागिरकहि। जागि

নিতাত অহুগত বলে সামাস্ত মুক্রীর र्भंग हरेट क्या क्या एवश्वास्त्र श्रम পেরেছি, এডদিন কথন ত আমার কলছ ছিল না। বোধ হয় এতদিনের পর আমি नष्टेम्ब (मृद्ध शंकिव, व्यथवा এछिम्दन्त्र পর আমার কেহ শক্ত জুটে থাকিবে, নতুবা জানত আমি কোন অপরাধ করি नारे।" त्रांचा विकामा कतितनम, "जूमि আমার পুত্রবধূর দরভার চাবি দিয়াছিলে কেন?'' দেওয়ান্ তথন ব্ঝিল,যে আমার দারা এই কাও হইয়াছে। দেওয়ান **७**थन (याष्ट्रास्ट विनन, "निर्कान इहेरन সে সকল কথা নিবেদন করিতে পারি।" রাজা নির্জ্জনে গেলে দেওয়ান বলিল, "সকল কথা আপনার সাক্ষাতে বলা উচিত নয়, কিন্তু কি করি বলিতে হই-তেছে। রাজবধূর চরিত্রসম্বন্ধে মহাশয় অবশ্র এত দিন কিছু শুনিয়া থাকিবেন, সে সকল কথা আমার বলা ভাল হয় না। সম্প্রতি তিনি নিজে পত্র লিখিয়া এই জালরাজাকে আনাইয়াছিলেন; ভদ্র ঘরে এই জনাই স্তীলোককে লেখাপড়া निथात्र ना । जामि विद्युष्टना कविनाम, যদি ছইজনে এই সময় চিঠি লেখালিখি চলে, তাহা হইলে শেষ ভয়ানক কলঙ্ক রটিবে; তাহাই আমি আপনাকে না জানাইয়া পত্রযাভায়াতের পথ বন্ধ করি-বিশেষতঃ কাদস্বিদীনামে রাছিলাম ৷ একজন জীলোক মধ্যবর্তিনী জুটিয়া ছিল। জালরাজা আসিয়াই ভাষার ধারা अथर शब शार्शन, आमि नमत्त्र नचान

शादेना अन्यदेश प्रश्नात प्रांवि पिशाहिलाम। कापिनी कि तथा याँग्छ अपान नारे, कार्कर शक्छ प्रांवापानि रश्न नारे। ज्ञादि ना प्रिता दांध रश्न ज्ञानग्रांकांश्व शक्क जिन प्रति हिला याँग्रेडिन,
दक्त ना भ्यं यथन ज्ञानशाका द्वित्वन
द्व, डाँग्रेड श्रंड ध्वा श्रंड अपन
द्वा उपनि क्षिण प्रांवित क्षिण प्रांवित अपन
भावात धनम्यादि कि प्रति व्याम प्रांवित व्याम व्य

রাজা পেয়ারকে ডাকিয়া বিজ্ঞাসা
করার পেয়ারও তাহাই বলিল। আমি
সেইদিন হইতে আর খণ্ডরবাটীতে স্থান
পাইলাম না; তৎক্ষণাৎ দরজার পাকী
আসিল। বিদারের সময় খণ্ডরকে
প্রণাম করিব বলিয়া এত জানাইলাম,
খণ্ডর তাতে একেবারে কাণ দিলেন
না, শেষ বলিয়া পাঠাইলেন, যে তিনি

ছুশ্চরিকার মুখদর্শন করেম না; আমি কাঁদিতে কাঁদিতে পাকীতে উঠিণাম। সেই অবধি আমার শুগুরবাড়ীর সম্বদ্ধ ঘুচিরা গিরাছে।

মাতলিনী। আপনার কি বরদান্ত।
ত্যোৎ। অভাগীর, বরদান্ত চিরকানই
আছে; যাহারা ভাগাবতী ক্ষেত্র কোনে
নিজা বার, ভারাই একটুতে কাতর
হর। যাহার অদৃষ্ট মন্দ, তাহার বরদান্ত
আপনিই হর।

মাত্রিনী। যিনি এসেছিলেন, তিনি সতাই কি রাজপুত্র ?

জ্যোৎ। আমি তাঁরে ত তথন দেখি নাই। কাদবিনী দেখেছিল; সে কেনই বামিথাা করে বলিবে ?

মাত্রিনী। তবে **আপনি ত** বিধবা নন ?

জ্যোৎ। তিনি বেঁচে **আছেন, আ**মি তাঁরে দেখেছি।

# -- East 103-(East 103---

## भानाहक्त।.

ইংরেজি কেতার সন্মান বালালিরা বড় বুবেন না, শীত্র বুঝিবেন এমনও বোধ হর না ৷ ইংলও ও বালালা পরস্পার বেরপ কুর, পরস্পারের বাবহারও সেই-রূপ দুর ৷ আমরা হাততালি বিরা উপহান করি, ইংরেজেরা হাততালি বিরা "বাহবা" দেন ৷ বৈপরীত্য বড় সামার নর। আমাদের চক্ষে নতশির, নিরদৃষ্টি
নত্রতার লক্ষণ, সাহেবদের চক্ষে তাহা
অপরাধের অকাট্য প্রমাণ; তাহারা
ভাবেন, 'বখন এই ব্যক্তি মুখ তৃলিয়া
চাহিল না, তখন ইহার বিকল্ম আর
প্রমাণের বাফ্লি কি ?' উভর জাতির বনের
গতি শ্বতর, এই জনা ইংসেজেরা আমা-

मिगरक व शर्वास वृतित्व शाबिरणन ना, আমরাও ইংরেজদের বৃধিলাম না। গবর্ণ-**८म**न्डे जामारमत डेनकात अवः डेरनार्ट्य নিমিত্ত কভই কৌশল করিতেছেন, কিছ আমরা কেবল এই জনাই ভাহার অধি-কাংশ ব্ৰিতে পারি না,তাহার অনেকগুলি গ্রহণ করি না । কেলারাম বিখাস " টার অঁক্ ইভিরা" হইলেন, ভাঁহার ভাতা খেলারাম তাহা কিছুই বৃঝিল না। क्लाताम यति निज्ञारम (शतनम, उथात কেহই ভীছার নৃতন সন্মান অফুভব ক্রিতে পারিল না; ফেলারাম কান্দেই चुवी इहेरलम मा। "द्वात चाव् देखिया" হওয়া অপেকা ফেলারাম যদি কোথায়ও মালাচন্দন পাইতেন, ভাছা হইলে বোধ হয় তিনি অধিক সুখী হইতেন; কেননা সে সন্মান লোকে দেখিতে পায়, আত্মীয়স্বজনে বুবিতে পারে। যে শ্রেষ্ঠ, व नर्सक्षान, क्वन महे मानाहमन পায়: যখন শত শত লোক একত্ৰ সম-বেত হয়, তথন সর্বসন্থাধ সর্বপ্রধানকে गानाहम्मन क्रिया जन्मान करा हर। किशक्नां क्रमान क्षेत्र क्ष गर्नथ्यधानत्क मर्नामा मन्त्रान कतिहा থাকে। সেধানে কেলারাম দর্শ্বা—ভার অব্ ইভিয়া—বসিয়া থাকুন, লোকে তাহাকে ভিজ্ঞাসাও করিবে না; মালা-<sup>চन्मन</sup> विवाद अभव छीहांब विटक रकह চাহিরাও **দেখিবে 'না।'' ভবে সমাজে** "होत जर् देखियात" नवान करें ?

धरे बना यनि अनुवादनत मान व्यक्तात

করিবার করা বে বিলাভী পদ্ধতি ভারতবর্বে লানীত হাইরাছে, তাহা বোধ হর ভাল থাটিভেছে না। নামের পরে নাইট কম্পানিয়ান প্রভৃতি সেকেল্লে কথা যুভ্রা দেওরা হইতেছে, কিন্তু সে বোড়া দেওরা করটা লোক দেখিতে পাইতেছে কিন্তু লানিতে বা বুবিতে পারিতেছে ?

" होत जब है खिन्ना" वा ভারতনক্ত বাহার। হইরাছেন, ভাহাদের মধ্যে ছই একজন হর ত জানেন, বে ভাহাদের কিরণে ভারতের কোন সংশই আলোক-মর হর না, ভারতের অনেক লোকই ভাহাদের আলোক দেখিতে পার না। তাহাই ভাহাদের মধ্যে কেহ কেহ বিবে-চনা করেন,যে লোকের উচিত, "होর অব ইগ্রিয়া" বলিরা ভাহাদের মালাচক্ষন দের, অন্ততঃ গ্রপ্থেণ্ট সে সম্বন্ধে কোন হতুর দেন। পূর্ক্কালের মালাচক্ষন যে দেখিরাছে, সেই জানে বে ওবেদ্দ কিরপ সমাদর এ দেশে সর্কা। করা হইত; কাজেই ভারতনক্ষত্রের মনে মালাচক্ষনের কন্য লোভ হইতে পারে।

কিন্তু মাণাচন্দ্ৰনের আর গৌরব নাই।
যে অবধি বালালির ছ্রদৃষ্ট আরম্ভ ছইরাছে, সেই অবধি ভালমন্দ বিচার
করিবার আর আমাদের শক্তি নাই।
কাহাকে পূলা করি, কাহাকে সন্মান
করি, কাহাকে আদর্শ করি, এ সকলের
আর কিছুই ঠিকানা নাই। বোধ হয়
সন্মানোপবোগী লোক বাদালার থাকিলে

ताहानांव जनना तांव वर्षक करें।
ताहानांवांवां क्ष्मिक विकास कर्मिक वर्षक कर्मिक क्रिक कर्मिक क्रिक कर्मिक क्रिक कर्मिक क्रिक कर्मिक क्रिक क्र

विकास वह कृतिन श्री शृष्टि निविद्य वात्र हर्षेत्राद्य द्वार दवर स्थित्य एस्न, दवसन कृत्यांचा कहा स्था । क्षेत्राद्यस स्थित्रात कार्ष्मिक्ष दस, दस निवास स्थानाद्यस साव्यन्त्रक्षाः स्था सामान्यस्य सावस्य सा स्थाप्त स्था सामान्यस्य सावस्य स्था स्थित्य सा । स्थानाव्यस्य स्था स्थानाव्यस्य सामान्यस्य स्था ente sur l'avent en el soit enter : aux l'en contre : als frails un con lesses contre mis parque con l

क्रमेकिक कार्यक क्रमेकि विकीश क्रमेकि वार्यक त्या क्रिकेट क्रमेकिक क्रमेकि

किशिक कांकारे चन्न, त्यात इव माना क्यानव वीकि विदेश बांक्या कांन गरह। वर्ष विकास कांक्या बांग्याक्यान त्यका वर्ष कांचा वर्षण केंक्यि सक्य।



# বঙ্গদৰ্শন ।

## मश्रम वरमत्।

৭৮ সংখ্যা।

# মুচিরামগুড়ের জীবনচরি

শীদর্পনারায়ণ পুতিতৃও প্রণীত।

#### প্রথম পরিচেছ্দ।

নুচিরাম গুড়মহাশয় এই জগৎ পবিত্র করিবার জন্য, কোন্ শকে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, ইতিহাসে তাহা লেখে না। ইতিহাস এরূপ অনেকপ্রকার বদমাইসি করিয়া থাকে। এ দেশে ইতিহাসের সাক্ষাৎ পাওয়া যায় না,নচেৎ উচ্তি বাবস্থা করা যাইত।

বশোদা দেবীর গর্ভে সাফলরাম গুড়ের ঔরসে তীহার জন্ম। ইহা ছংখের
বিষয় সন্দেহ নাই; কেন না উচ্চবংশের
কথা কিছুই বলিতে পারা এগল না।
তবে ইহা বলা ঘাইতে পারে যে, তিনি বাদ্ধবলাস্তব। গুড় গুনিয়া কেহ
মনে না করেন যে তিনি মিট্টবিশেষ
হইতে জন্মিরাছিলেন।

সাফলরাম গুড় কৈবর্ত্তের ত্রাহ্মণ ছিলেন। ভাঁছার নিবাস সাধুভাবার মোহনপলী অপর ভাবার মোনাপাড়া।

মোহনপরী ওরফে মোনাপাড়ার কেবল ঘরকতক কৈবর্তের বাস। গুড়মহাশয় এক बाक्सन-रियम धक हजा बज़नी श्राटनांकमत्री करत्रन, रामन এक विकूरे পুরুষোত্তম, যেমন এক বার্তাকুদগ্ধ গুড় মহাশয়ের অন্নরাশির উপর শোভা করি-তেন,তেমনি সাফলরাম একা মোহনপল্লী উচ্ছল করিতেন। শ্রাদ্ধশান্তিতে কাঁচা কদলী আতপ ততুল এবং দক্ষিণা, ষষ্ঠা माकात्मुत शृकात्र अञ्जलीभनामिए नात्रि-কেল নাড়ু, ছোলা, কলা আদি তাঁহার লাভ হইত। স্থুতরাং যাজনক্রিয়ায় তাঁহার বিশেষ মনোযোগ ছিল। তাঁহারই এখর্যোর উত্তরাধিকারী হইরা সুচিরাম গুভক্ষে জন্মগ্রহণ করিলেন।

জন্মগ্রহণের পর মৃতিরাম দিনে দিনে বাড়িতে লাগিলেন। দৈখিয়া যশোদা, সেটা বালকের অসাধারণ পোরুষের লক্ষণ বিবেচনা করিরা, অভিশয় গর্কা- ষিতা হইলেন। যপাকালে মুচিরামের অরপ্রাশন হইল। নামকরণ হইল মুচিরাম, এত নগেন্দ্র গজেন্দ্র চক্রভূষণ বিধুভূষণ থাকিতে তাঁহার মুচিরাম নাম হইল কেন তাহা আমি সবিশেষ জানি না, তবে ছুইলোকে বলিত যে, যশোদা দেবীর যৌবনকালে কোন কালো কোলো কোঁকড়া চুল নধরশরীর মুচিবাম দাসনামা কৈবর্ত্তপুত্র তাঁহার নয়নপথের পথিক হইয়াছিল, সেই অবধি মুচিরাম নামটি যশোদার কালে হিছ লাগিত।

যাহাই হউক যশোদা নাম রাখিলেন
মুটরাম। নাম পাইয়া মুটরামশর্মা
দিনে দিনে বাড়িতে লাগিলেন। ক্রমে
মা, "বাবা" "ছ্" "দে" ইত্যাদি শক্
উচ্চারণ করিতে শিখিলেন। তাঁহার
অসাধারণধীশক্তির বলে নিছাকারায় এক
বৎসর পার হইতে না হইতেই স্পণ্ডিত
হইলেন। তিনবৎসর ঘাইতে না ফাইতেই
অহাসতি মুটরাম মাকে পিতৃ উচ্চারণ
করিতে এবং বাপকে শালা বলিতে
শিখিলেন। যশোদা কাঁদিয়া বলিতেন,
এমন শুনের ছেলে বাঁচ্লে হয়।

পাঁচবৎদরে সাফলরাম গুড়মহাশয়
কিছু গোলে পড়িলেন। যশোদা ঠাকুরাণীর সাধ, পাঁচবংদরে পুত্রের হাতে
গঙ়ি হর্ম। সর্ব্ধনাশ! সাফলরামের
তিনপুক্ষের মধ্যে সে কাল হর নাই।

মাগী বলে কি ? যেদিন কথা পড়িল, সেদিন সাফলরামের নিজা হইল না।

যম্নার জল উলান বহিতে পারে, তব গৃহিণীর বাক্য নজিতে পারে না। স্থতরাং সাফলরাম হাতে খড়ির উদ্যোগ দেখিতে লাগিলেন; কিন্তু ছুর্ভাগ্যবশতঃ তিন ক্রোশের মধ্যে পাঠশালা বা গুরুমহাশয় नाहै। (क लिया পड़ा मिथाहेर्व? বিষয়বদনে বিনী ভভাবে সাফলরাম यशामा (मरीत श्रीभामभाष এই সম্বাদ ञ्चित्विक इहेरनन । यूर्माना विल्लन, "ভাল তুমি কেন আপনিই ছাতে খড় निया क, थ, निथा अना।" माकन दान একটু স্নান হইয়া বলিলেন, "হাঁ তা আমি পারি, তবে কি জান শিষ্যদেবক यञ्जभारतत ञ्रालाय-च्याञ्जि कि तांत्रा হইল।'' শুনিবামাত যশোদা দেবীর মনে পড়িল আজি কৈবর্ত্তেরা পাতিলেবু मिया शियारह। विलित्नन, "अधः प्रिट भिष्म-" ५ रे विशा পতि পু ख शाना ्य-त्यामः त्मवी विषक्षमत्म मञ्ज्यसम्बद्धाः शाहि-লেবুদিয়া পাস্থা ভাত খাইতে বসিলেন। অগ্ড্যা মুচিরাম অন্যান্ত বিদ্যা অভ্যাদে माञ्चाग इरेलन। অন্যান্ত বিদারে 'মধো—'' পরা অপরাচ''—গাছে ওঠা, करन (डावा, जवः मरन्त्रम हृद्रि। देकवर्छ যজগানদিগের কলাণে গুড়ের ঘরে मन्त्रभाव अछाव नाई। नातिरक्लमन्त्रभ এবং অন্যান্য যে সকল জাতীয় সন্দে-খের সঙ্গে ছানার সাক্ষাৎ বা অসাক্ষাৎ (कान शकांत्र मचक नाहे, याहा मर्जना

মুচিরামের খরে থাকিত, সে দকল
মুচিরামের বিদ্যাভ্যাদেব কারণ হইল।
কৈবর্ত্তের ছেলেদের সঙ্গে মুচিরামের
প্রভাছ একটি ন্তন কোন্দল হইত—
ভানা গিয়াছে কৈবর্তদিগের ঘরেও খাবার
চুরি যাইত।

নবম বংসরে মুটিরামেব উপনয়ন ছইল। তার পর সাফলরাম এক বং-গঁর প্রের্থকে সন্ধা আহ্নিক শিথাইলেন। একবংসবে মুটিরাম সন্ধা আহ্নিক শিথিয়াছিলেন কি না আমরা জানি না। কেন না প্রমাণা-ভাব। তার পব মুটিরাম কথন সন্ধাা আহ্নিক করেন নাই।

তার পর একদিন সাফলরাম গুড় অকস্মাৎ ওলাউঠারোগে প্রাণত্যাগ ক-রিন।

## দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

যশোদার আবে দিন যায় ন:। যজ মানদিগেব পৌরোছিতা কে করে ? কৈব র্তেবা আবে একছর বামন আনিল। যশোদা সন্নকটে—ধ.ন ভানিতে আবেস্ত করিলেন।

ষথন মৃতিরামের বয়স দশবংসর,
কৈবর্ত্তেরা চাঁদা কবিয়া এপটা বারো
ইয়ারি পূজা করিল। যংত্রা দিবার জন্ত বারোইয়ারি; কৈবর্ত্তেরা শস্তা দরে হারাণ অধিকারীকে তিনদিনের জনা বায়না করিয়া আনিয়া, ক্লাগাছের উপর সরা জ্ঞালিয়া, তিনরাত্তি যাত্তা শুনিল। মৃচিরাম এই প্রথম যাত্তা শুনিল। যাত্তার গান, যাত্তার গল্প জ্ঞান্তা, এই প্রথম শুনিল: চূড়া ধড়া ঠেলা লাঠিদহিত সাক্ষাৎ ক্লফ এই প্রথম দেখিল। আহলাদ উছলিয়া উ-ঠিল। নিশ্চিত সম্বাদ বাখি, যে পরদিন মৃচিরাম, গালাগালি মাবামারি বা চুরি বা মাতাকে প্রহার, এ সকলের কিছুই কবে নাই।

মৃচিরামের একটা গুণ ছিল, মুচিরাম ञ्च कर्छ। প্রথম দিন যাত্রা শুনিয়া বছ-যত্নে একটা গানের মোহাডাটা শিথি-য়াছিল। প্রদিন প্রভাত হইতে মাঠে মাঠে সেই গান গাইয়া ফিরিতে লাগিল। रेमवार हातान अधिकावी लाहा हाट, গুলবিবীতে হতমুখপ্রকালনাদির অনু-বোধে বঃইতেছিলেন—প্রভাতবাযুপরি-চ:িত হইয়া মুচিবাদের স্কল্পর অধি-কারীমহাশয়ের কালেব ভিতর গেল। কাণে ্যাইতে ঘাইতে মনের ভিতর গেল-মনের ভিতৰ গিয়া, কলনার সংখ্যো, টাকাব সিদ্ধুকের ভিতরও প্রবেশ করিল। অধিকারীমহাশয়েব নিকট গলার আওয়াল, টাকার আও-য়াজে পরিণত হয়। সে দোষে অধি-কারীমহাশ্র একা দোষী নহেন-জিজাসা করিলে অনেক উকীলমহা-শয়ের৷ ইহাব কিছু নিগৃঢ় তুত্ব বলিয়া দিতে পারিবেন। **তাঁহাদের কাছে**ঙ

গলার আওয়াজ টাকার আওয়াজে পরি-ণত -হয়। উকীলবাব্দেরই বা দোষ কি—Glorious British Constitution! —হায়! গলাবাজি সার!

অধিকারীমহাশর—মাসুবের সঙ্গে প্রেম করেন না—ব্রিটিষ পার্লিমেণ্টের সভ এবঞ্চ কুরঙ্গিণীসদৃশ সমুষ্যকণ্ঠেই মুগ্ধ— অভএব ভিনি হাত নাড়িয়া মুচিরামকে ডাকিলেন। মুচিরাম আসিল। তাহার পরিচর জিজ্ঞাসা করিরা বলিলেন,

"তুমি আমার যাত্রার দলে থাকিবে ?"
মূচিরাম আহলাদে আটখানা। মাকে
জিজ্ঞানার অপেক্ষা রাখিল না—তখনই
সঙ্গে যায়। কিন্তু অধিকারী মনে
করিল যে, পরের ছেলে না বলিয়া লইয়া
যাওয়া কিছু নয়। অতএব মুচিরামকে
সঙ্গে করিয়া তাহার মার নিকট গেল।

ভানরা যশোদা বড় কাঁদা কাট।
আরম্ভ করিল—সবে একটি ছেলে—আর
কেহ নাই—কি প্রকারে ছাড়িয়া দিবে ?
এদিকে আবার অর জুটে না—যদি
একটা থাবার উপার হইতেছে—কেমন
করিয়াই বা না বলেন ? বিধাতা কি
আর এমন স্থযোগ করিয়া দিবেন ?
আমি না দেখিতে পাই তব্ত মৃচিরাম
ভাল পাইবে, ভাল পরিবে! যশোদা
যাত্রাওয়ালার হুঃথ জানিত না.। অগতাা
পাঁচটাকা মাসিক বেতন রফা করিয়া
যশোদা মুচিরামকে ছারাণ অধিকারীর
ছত্তে সমর্পন করিল। তার পর আছা-

জিয়া পজিয়া খামীর জন্য কাঁদিতে লাগিল।

## ভৃতীয় পরিচেছদ।

मूर्तिताम व्यक्त मिरनरे रमिशन (य याका-ওয়ালার জীবন স্থারে নয়। ওয়ালা কেবল কোকিলের মত कतिशा ভाলে ভালে মুকুলভোজন করিয়া বেড়ায় না। অরদিনে মুচিরামের শরীর भीर्य इहेगा এ গ্রাম ও গ্রাম ছুটাছুটি করিতে করিতে সকল দিন আহার হয় না; রাত্রি জাগিয়া প্রাণ ওঠাগত: চুলের ভারে মাথায় উকুনে খা করিল; গায়ে খড়ি উড়িতে লাগিল; অধিকারীর कानमनाय कानमनाय पृष्टे कार्ण धा रहेल। ७४ ठारे नम्न; व्यक्षिकां में महा-শয়েব পা টিপিতে হয়, তাঁকে বাতাস করিতে হয়, তামাক সালিতে হয়, আরও অনেক রকম দাসত্ব করিতে হয়। দিনেই মুচিরামের সোণার মেঘ বাষ্প-র।শিতে পরিণত হইল।

মুচিরামের আরও ছর্ভাগ্য এই যে,
বৃদ্ধিটা বড় তীক্ষ নহে। গীতের
তাল দে, পুছরিণীতীরস্থ দীর্ঘরক্ষে কলে
না, ইহা বৃঝিতে তাঁহার বছকাল গেল।
কলে তালিমের সময়ে তালের কণা
পড়িলে, মুচিরাম অন্যমনক্ষ হইত—
মনে পড়িত, মা কেমন ভালের বড়া
করে!—মুচিরামের চক্ষু দিয়া এবং রসনা
দিয়া জল বছিয়া যাইত।

আবার গান মুখন্থ করা আরও দার

কিছুতেই মুখন্থ হইত না—কাণমলার
কাণমলার কাণ রালা হইয়া গেল।
ক্তরাং আদরে গায়িবার সময়ে পিছন
হইতে তাঁহাকে বলিয়া দিতে হইত।
তাহাতে মধ্যে মধ্যে বড় গোল বাঁধিত

সকল সময়ে ঠিক শুনিতে বা ব্ঝিতে
পারিত না। একদিন পিছন হইতে
বলিয়া দিতেছে—

''নীরদকুস্তলা--লোচনচঞ্চলা দধতি সুন্দর্ক্রপং''

মৃতিরাম গায়িস—''নীরদ ক্স্তলা—''
থামিল—আবার পিছন হইতে বলিল,
''লোচনচঞ্চলা''—মৃতিরাম ভাবিরা চিস্তিরা গায়িল ''লুচি চিনি ছোলা।''
পিছন হইতে বলিয়া দিল ''দ্ধতি স্থান্দর
রূপং''—মৃতিরাম না ব্বিয়া গায়িল
''দ্ধিতে সন্দেশ রূপং।'' দেদিন
আর গায়িতে পাইল না।

মৃতিরামকে ক্লফ সাজিতে হইত—
কিন্তু ক্লফের বক্লবা সকল তাহাকে
পিছন হইতে বলিয়া দিতে হইত—
কেবল "আ—বা—আ—বা ধবলী"
ট মৃথস্থ ছিল। একদিন মানজ্ঞান বাআা
হইতেছে—পিছন হইতে মৃতিরামকে
বক্তা শিধাইয়া দিতেছে। ক্লফুকে
বলিতে হইবে "মানম্মিরাধে! এক-বার বদন তুলে কথা কও।" মৃতিরাম
সবটা শুনিতে না পাইয়া কতকদ্র
বিলিল, "মানম্মিরাধে একবার বদন
ভূলে—" দেই সম্মের বেহালাওয়ালা

মৃদদীর হাতে তামাকের ককে দিয়া বলিতেছিল "গুড়ুক খাও—" শুনিয়া মৃচিরাম বলিল "রাধে—একবার বদন ডুলে—গুড়ুক খাও।" হাসির চোটে যাত্রা ভাদিয়া গেল।

মৃচিরাম প্রথমে বৃঝিতে পারিল না—
হাসি কিলের,—যাত্রা ভাঙ্গিল কেন ?
কিন্তু যথন দেখিল অধিকারী সাক্ষমরে
আসিরা একগাছা বাঁক সাপটিয়া ধরিয়া,
তাহার দিকে ধাবমান হইলেন, তখন
মৃচিরাম হঠাৎ বৃঝিল, যে এই বাঁক
তাঁহার পৃষ্ঠদেশে অবতীর্ণ হইবার কিছু
ওক্তর সম্ভাবনা—অভএব কথিত পৃষ্ঠদেশ স্থানাস্তরে লইয়া যাওয়া আভ প্রায়েলন। এই ভাবিয়া মৃচিরাম অকস্থাৎ নিক্ষান্ত হইয়া নৈশ অস্ককারে
অন্তর্হিত হইল।

অধিকারীমহাশয় বাঁকহন্তে তৎপশ্চাৎ
নিজ্যন্ত হইয়া, মৃচিরামকে না দেখিতে
পাইয়া, তাহার ও তাহার পিতা পিতামহ
মাতা ও ভগিনীর নানাবিধ অযশ কীর্ত্তন করিতে লাগিলেন। মৃচিরামও
এক বৃক্ষান্তরালে থাকিয়া অক্ট্রন্থরে
অধিকারীমহাশয়ের পিতৃমাতৃসম্বন্ধে তক্রপ
অপবাদ রটনা করিতে লাগিল। অধিকারী মৃচিরামের সন্ধান না পাইয়া
সাজ্যরে গিয়া, বেশত্যাগ করিয়া, বার
কল্প করিয়া শয়ন ক্রিয়া রহিলেন।
দেখিয়া মৃচিরাম বৃক্ষভায়া ত্যাগ করিয়া,
কল্পবাসমীপে দাঁড়াইয়া অধিকারীকে
নানাবিধ অবক্তব্য কদ্ব্য ভাষায় মনে মনে

সংখাধন করিতে লাগিল; এবং উভয় হ-তের অসূষ্ঠ উখিত করিরা তাহাকে-কদলী ভোজনের অসুমতি করিল। তৎপরে ক্ষকবাটকে, বা কবাটের অন্তরালস্থিত অধিকারীর বদনচক্তকে একটি লাথি দেখাইয়া, ম্চিরাম ঠাকুরবাড়ীর মন্দিরের রোয়াকে গিয়া শয়ন করিয়া রহিল।

প্রভাতে উঠিয়া অধিকারীমহাশর গ্রামা স্তবে যাইবার উদ্যোগ করিতে লাগি-**(लन। कुनित्तन मृ** जिताम चार्टित नार्टे —কেছ কেছ বলিল তাহাকে খুঁজিয়া चानित ? चिथकात्री महा भाग शानि निया বলিলেন, "জুট্তে হয়, আপনি জুট্বে, এখন আমি খুঁছে বেড়াতে পারি त्न।" मन्नान्तिख त्वहाना श्राना वनिन. "ছেলেমাতুষ—যদি নাই জুটতে পারে —আমি খুঁজে আনিব।" অধিকারী धमकाइटलन-मत्न मत्न इच्छा मृहिः রামের হাত হইতে উদ্ধার পান, এবং সেই সঙ্গে ভাহার পাওনা টাকাগুলি ফাকি দেন। বেহালা ওয়ালা ভাবিল-মুচিরাম কোনরূপে জুটিবে। স্থার কিছু বলিল না।

যাত্রার দল চলিয়া গেল—মৃচিরাম
ছুটল না। রাত্রিজাগরন—দেবালয়বরুতে সে অকাতরে নিদ্রা দিতেছিল।
উঠিয়া দল চলিয়া গিয়াছে শুনিয়া,
কাঁদিতে আরম্ভ করিল। এমন বৃদ্ধি
নাই যে অধিকারী কোন পথে গিয়াছে,
সন্ধান করিয়া সেই পথে যায়। কেবল
কাঁদিতে লাগিল। প্রারিবামন অমুগ্রহ

করিয়া বেলা তিনপ্রহারে ছুইটি ঠাকুরের প্রসাদ খাইতে দিল। থাইয়া, মুচিরাম কায়ার দিতীয় অধ্যায় আরম্ভ করিল। যত রাত্রি নিকট ছুইতে লাগিল, তত ভাবিতে লাগিল—আমি কেন পলাইলামা আমি কেন দাঁড়াইয়া মার থাইলাম না!

বিজ দর্পনারায়ণ বলে, এবার যখন, বাঁক উঠিতে দেখিবে, পিঠ পাতিয়া দিও। তোমার গোঞ্জীর বাপচৌদপুরুষ, বুড়া সেনরাজার আমল হইতে কেবল পিঠ পাতিয়া দিয়াই আসিতেছে। তুমি পলাইবে কোঝায় ? এ স্থসভাজাতের অধিকাবীরা মুচিরাম দেখিলে বাঁক-পেটাই করিয়া থাকে—মুচিরামেরা পিঠ পাতিয়াই দেয়। কেহ পলায় না—রাখাল ছাড়া কি গোরু থাকিতে পাবে হে বাপু ? ঘাস জলের প্রায়েজন হট-লেই, তোমাব যখন রাথাল ভিল উপায় নাই তথন পাঁচনবাড়িকে প্রাতঃপ্রাম কবিয়া গোজন সার্থক কর।

## .চতুর্থ পরিচেছদ।

কশানবাব একজন সংক্লোদূত কায়ত।
আতি ক্ষুদ্র লোক—কেন না বেতন এক
শত টাকা মাত্র—কোন জেলার ফৌজদারী আপিদের হেড কেরাণী! বাঙ্গালাদেশে মনুষাত্ব বেতনের ওজনে নির্ণীত
ত্র—কেল কত বড় বাদর তার লেজ
নাগিয়া ঠিক করিতে হয়। এমন অধঃ

পতন আর কথন কোন দেশের হয় নাই। বন্দী, চরণশৃত্ধলের দৈর্ঘ্য দেখা-ইয়া বড়াই করে।

ন্ধানবাব ক্ষুদ্র বাক্তি—ল্যাজ খাটো, বানরত্বে খাটো—কিন্তু মহুষাতে নহে। যে প্রামে হারাণ অধিকারী এই অপূর্ব্ব মানভজ্ঞন যাত্রা করিয়াছিলেন, ঈশান বার্র সেই প্রামে বাস। যাত্রাটা যে সমরে ছইয়াছিল, সে সময়ে তিনি ছটি লইয়া বাড়ীতে ছিলেন। যাত্রার ব্যাপার তিনি কিছু জানিতেন কি না বলিতে পারি না; যাত্রার পরদিন সন্ধ্যাকালে তিনি পথে বেড়াইতেছিলেন, দেখিলেন, একটি ছেলে—শুদ্ধারীর, দীর্ঘকেশ—অমুভবে যাত্রার দলের ছেলে—প্রে দাড়াইয়া কাঁদিতেছে!

ঈশানবাবুছেলেটির হাত ধরিয়াজি-জ্ঞাসাকরিলেন,

"কাঁদ্ছিদ কেন বাবা?" ছেলে কথা কয় না। ঈশানবাৰুজিজ্ঞাদা করিলেন,

" তুমি কে 🕶

ছেলে বলিল, "आমি মুচিরাম।"

त्रेगा। ज्ञिकारमत्र ८ इतः?

मृति। वामनामतः।

त्रेणा। (कान् वामनरमतः ?

মৃচি। আমি শুড়েদের ছেলে।

ঈশা। তোমার বাড়ী কোথার ?

र्<sup>ह । आगारमत वाकी स्थानाभाका।</sup>

भेगा। (म क्लाशा ?

ত। ত মৃচিরামের বিদারে মধ্যে নছে।

বাই হোক, ঈশানবাবু অরসমত্ত্রে মুচিরামের হুর্ঘটনা বুঝিয়া লইলেন। "ভোনাকে বাড়ী পাঠাইয়া দিব" এই বলিয়া মুচিরামকে আপনার বাড়ী লইয়া প্রগণেন ; মুচিরাম হাত বাড়াইয়া স্বর্গ পাইল। ঈশানবাবু ভাহার আহারাদি ও অবস্থিতির উভ্য ব্যবস্থা করিয়া দিলেন।

কিন্তু মোনাপাড়ার ত কোন ঠিকানা হইল না। স্কতরাং মুচিরাম ঈশান-বাব্র গৃহে বাস করিতে লাগিল। সে-খানে আহার পরিচ্ছদের ব্যবস্থা উত্তম, এবং কাণমলার অত্যস্তাভাব, দেখিয়া মুচিরামও বাড়ীর জন্য বিশেষ ব্যস্ত হইল না।

এদিকে ঈশানবাব্র ছুটী ফ্রাইল—
সপরিবারে কর্মস্থানে যাইবেন। অগত্যা
মূচিরামও সঙ্গে চলিল। কর্মস্থানে
গিয়াও ঈশান মোনাপাড়ার অন্থসন্ধান
করিলেন, কিন্তু কোন সন্ধান পাইলেন
না। অগত্যা মূচিরাম তাঁহার গলায়
পড়িল। মূচিরামও, যেখানে আহারের
ব্যবস্থা উত্তম, সেখানে গলায় পড়িতে
নারাজ নহে—তবে ঈশানবাব্র একটা
বাবস্থা মুচিরামের বড় ভাল লাগিল না।
ঈশানবাব্ বলিলেন, 'বাপু, যদি গলায়
পড়িলে তবে একটু লেখা পড়া শিখিতে
হইবে।' ঈশানবাব্ তাহাকে পাঠশালায় পাঠাইয়া দিলেন।

এদিকে মুচিরামের মা অসকে দিন হইতে ছেলের কোন সম্বাদ না পাইয়া পাড়ার পাড়ার বিস্তর কাঁদাকাট করিরা বেড়াইরা শেষ আহার নিজা ত্যাগ করিল। আহার নিজা ত্যাগ করিরা রূপ হইল। ক্লগ্ন হইয়া মরিয়া গেল।

### পঞ্ম পরিচ্ছেদ।

এদিকে, যশোদানক্ষন প্রীপ্রীমুচিরাম
শর্মা—ঈশানমক্সিরে স্থবিরাজমান—সস্পূর্ণরূপে মাতৃবিস্থত। যদি কখন
মাকে মনে পড়িত তবে সে আহারের
সমর—ঈশানবাব্র ছরের প্রকৃত্তমন্তিকা
সন্নিভ সিদ্ধার, দানাদার গব্যন্থত, স্পন্ধি
বোলে নিমগ্ন রোহিতমৎসা, পৃথিবীর
ন্যায় নিটোল গোলাকার সদ্যভর্জিত
পূচির রাশি—এই সকল পাতে পাইলে
মুচিরাম মনে করিতেন, "মা বেটী কি
ছাই-ই আমাকে খাওয়াইত!" সে সমরে মাকে মনে পড়িত—জন্য সমরে
নহে।

মৃতিরামের পাঠশালার লেখা পড়া সমাপ্ত হইল—অর্থাৎ গুরুমহাশর বলিল, সমাপ্ত হইরাছে। মৃতিরামের কোন গুল ছিল না এমত বলি না; তাহা হইলে এ ইতিহাস লিখিতে আমি প্রার্থ্ত হইতাম না। মৃতিরামের কঠস্বর ভাল ছিল বলিরাছি—গুণ নম্বর এক। গুণ নম্বর ছই, তাহার হস্তাক্ষর অতি স্থক্ষর হইল। আর কিছু হইল না। ঈশান বাবু মৃতিরামকে ইংরেজি ক্লে পাঠাই-লেন।

মুচিরাম, থেড়ে ছেলে, স্কুলে ঢুকিরা বড় বিপদ্পান্ত হইল। মাষ্টরেরা ভাষাসাকরে, ছোট ছোট ছেলেরা থিল্থিল্ করিয়া হাসে। মুচিরাম রাগ করে কিন্তু পড়ে না! স্থতরাং মাষ্টরেরা হারাণ অধিকারীর পথে গেলেন। আবার কাণ্মলার কাণ্মলার মুচিরামের কাণ্রালা হইরা উঠিল। প্রথমে কাণ্মলা, ভার পর বেত্রাঘাত মুট্টাঘাত, চপেটাঘাত, কীলাঘাত, এবং ঘুসাঘাত। ঈশান বাব্র ঘরের তপ্তলুচির স্থোরে মুচিরাম নির্কিবাদে সব হলম করিল।

এইরূপে মুচিরাম, ভপ্তবৃচি ও বেত খাইয়া, স্থলে পাঁচ সাত বৎসর কাটা-हेन। किছू इहेन ना। श्रेमानवात् তাহাকে স্থূল হইতে ছাড়।ইয়া লইলেন। ঈশানৰাবুর দয়ার শেষ নাই—মাজি· ষ্ট্রেট সাহেবের কাছে ভাঁছার বিশেষ প্রতিপত্তি—মুচিরামের হাতের লেখাও लान-क्रेमानवाव् मृहिबाटमत अकृष्टिमम টাকার মুছরিগিরি করিয়া দিলেন। বৰিয়া দিলেন "ঘুদ খাদ লইও না वाभू, जा इत्न जाड़ाहेबा निव।" मूहि-রাম শর্মা প্রথম দিনেই একটা ছকুনের চোরাও নকল দিয়া আটগণ্ডা প্রদা हांड कतिरमन, धरः मन्नात अन्नकांन পরেই, ভাহা প্রতিবাসিনী কুলটাবিশে-(यत शामभाषा छेरमर्ग कतितन।

এদিকে ঈশানবাবৃত প্রাচীন হইয়া আসিরাছিলেন। তিনি ইহার পরেই পেন্সন লইরা স্কর্ম হইতে অবসর হই- লেন এবং মুচিরামকে পৃথক্ বাসা করিয়া
দিয়া, সপরিবারে অদেশে প্রস্থান করিলেন। মুচিরাম ঈশানবাবুকে একটু
ভন্ন করিত—এক্ষণে ভাহার পোরা বারো
পড়িয়া গেল।

## ষষ্ঠ পরিচেছদ।

গৈায়া বারো—মুচিরাম জেলা লুঠিতে লাগিল। প্রথমে লোকের কাছে চাহিয়া চিন্তিয়া হুইচারি আনা লইত। তার পর मां विवा । एकन् त्राथंत्र धान छनि অমীদার ভোর করিয়া কাটিয়া শইতে উদ্যত, সাহেব দয়া করিয়া পুলিষকে ত্কুম দিলেন, ফেলুর সম্পত্তি রক্ষা क्तिरव। সাহেব एक्म मिलन, किन्न পুলিবের নামে পরওয়ানাখানি লেখা আর হর না। পরওয়ানা লেখা মৃচিরামের হাত। পরওয়ানা যাইতে যাইতে ধান थाक ना ; क्लू मूहित्राम् क कहाका, इरे छाका, जिन्होंका, हात्रिष्ठांका, क्रांस পাঁচটাকা স্বীকার করিল-তৎক্ষণাৎ পরওয়ানা বাহির হইল। তথন মাজিট্রে-টেরা স্বহস্তে জোবানবন্দী লইভেন না -এক এক কোনে বসিয়া এক এক-জন মৃহরি ফিস্ফিস্ করিয়া ভিজাসা করিত, আর যাহা ইচ্ছা ভাহা লিখিত। শাফীরা একরকম বলিত, সুচিরাম আর पदक्म (कारानवन्त्री निविष्टकन, त्याक-দ্যা বৃঝিরা কি সাক্পপ্রতি চারিআনা, . षांठेषाना, अक्षेत्रका शाहेरकम । स्माक-

দ্মা বৃঝিয়া মৃচি দাঁও মারিতেন; অধিক টাকা পাইলে সব উণ্টা লিখিতেন। এইক্লপে নানা প্রকার ফিকির ফন্দীতে মৃচিরাম অনেক টাকা উপার্জ্জন করিতে লাগিলেন—ভিনি একা নহে, সকলেই করিত—ভবে মৃচি কিছু অধিক নির্লজ্জ —কথন কথন লোকের টেক হইতে টাকা কাড়িরা লইত।

যাই হৌক, মূচি শীঘ্ৰই বড়মানুষ হইয়া উঠিল-কোন মুচি না হয় १--অচিরাৎ দেই অক্তনামী প্রতিবাসিনী অৰ্ণালভাৱে ভূষিতা হইল। মৃদ্, গাঁজা, थिन, চরদ, আফিল-- याहात मात्र क-করিতে আছে, এবং যাহার নাম করিতে. नारे - मकनरे मूहिवांवृत शृह्दक ष्रहर्निन আলোক ও ধুমময় করিতে লাগিল। মুচিরামেরও চেহারা ফিরিতে লাগিল-গালে মাস লাগিল-ছাড় ঢাকিয়া আ-मिल---वर्व खाभान व्यमात छाष्ट्रिया मिलीत নাগরায় পৌছিল। পরিচ্ছদের বৈচিত্র बन्निए नागिन-भाषा, कारना, नीन, জরদা, রাঙ্গা, গোলাপী প্রভৃতি নানা বর্ণের বত্তে মৃচিরাম সর্বদা রঞ্জিত। রাত্রি দিন মাথায় তেড়িকাটা, অধরে • তাবুলের রাগ-এবং কঠে নিধুর টগা। স্থভরাং মুচিরামের পোরা বারো।

দোষের মধ্যে সাহেব বড় খিট্থিট্
করে। মুচিরাম একে খোরতর বোকা,
কোন কর্মাই ভাল করিরা করিতে
পারিত না, ভাষাতে আবার হুর্জ্কর লোভ
—স্কুল ভাতে মুচিরাম প্লালি খাইড!

সাহেবটাও বড় বদরাগী—শনেক সমরে
মুচিরামকে কাগজ পআ ছুড়িরা মারিত।
কখন খাইতে খাইতে সাহেব "রিপোর্ট"
শুনিতেছে—সে সমরে মুচিরামকে কটি
বিসকট ছুড়িরা মারিত। সাহেবের
ভিতরে ভিতরে হৃদরে দরা ছিল।—
নচেৎ মুচিরামের চাকরী অধিক বাল
টিকিত না।

সৌভাগ্যক্রমে সে সাহেব বদলি হইয়া গেল—ফার একজন আসিল। ইংলণ্ড হইতে আসংদিগের রক্ষণাবেক্ষণজনা যে সকল রাজপুরুষ প্রেরিত হয়েন অনে-কেই সুবৃদ্ধি ও সুপণ্ডিত বটে, কিন্তু মধ্যে সধ্যে এক একজন অতি নির্ব্বোধ ব্যক্তি উচ্চবেতন পাইবার জন্য প্রেরিত হইয়া থাকেন। এই সাহেবটি তাহারই একজন।

এই নৃতন সাহেবটির নাম Gronger ham—লিখিবার সমরে লোকে লিখিত প্রসারহ্যাম—বলিবার সময়ে বলিত গলারাম সাহেব মোক-দ্দা করিতে গিয়া, কেবল ডিয়মিশ করিতেন। ইহাতে ছইটি স্থবিধা ছিল — এক, এক ছত্র রায় লিখিলেই হইত, ছিতীয় আপীল নাই। অন্যান্য সকল কর্মের ভার সেরেস্তাদার এবং হেড ক্রেনীর উপর ছিল। যতদিন সাহেব এ জেলার ছিলেন, এক্দিনের জন্ম একখনি চিঠি সহত্তে মুশাবিদা ক্রেন নাই—হেড কেরাণী সব করিত।

সাহেব প্রথম আসিরা, মুর্চরামের

कारनारकारना नश्व छिष्क भन्नीक्रि দেৰিয়া, এবং ভাছার আভূমিপ্রণত ডবল সেলাম দেখিয়া একেবারে সিদ্ধান্ত করি-লেন, যে আপিদের মধ্যে এই সর্কা-পেক্ষা উপযুক্ত লোক। সে বিখাদ তাঁহার কিছুতেই গেল না। যাইবারও कान कारन हिल ना-किन ना काज কর্মের তিনি খবর রাখিতেন না একদিন আপিদের মীর মুন্সী, মিরভা গোলাম সফলির খাঁ সাহেব, ছনিয়াদারি নামাফিক মনে করিয়া ফৌত করি লেন। সাছেব, পর্দিনেই মুচিরামকে ডাকিয়া তৎপদে অভিষিক্ত করিলেন। মীর মুন্সীর বেতন কুড়িটাকা-কিন্ত **(वज्रान कि करत ? भर्मा कि कि बिरत भ**ति-পুত। অভবামরবৎপ্রাক্ত মৃচিরাম শর্মা ক্ষধিরসঞ্চয় করিতে লাগিলেন।

দোষ কি ? অন্তরামরবং প্রাক্ত বিদ্যামর্থক চিন্তরেং। ছইটা একজনে পারে
না—দি ওলিনিস্ হইতে দর্পনারায়ণ পৃতিতৃত্ত পর্যান্ত কেছ পারিল না। সুচিরাম
বিদ্যাচিন্তা করিতে সক্ষম নহেন—
কোষ্ঠীকে লেখে নাই—অতএব বিষ্ণুশর্মার উপদেশাসুসারে মৃত্যুভয়রহিত
হইয়া অর্থচিন্তায় প্রাবৃত্ত। যদি সেই
"হিতোপদেশ" ওলি অধীত হইবার যোগা
হয়—যদি সে গ্রন্থ এই উনবিংশ শতাকীতেও প্রার বোগা হয়—ভবে মৃচিরামও প্রাক্ত। আর এ দেশের সকল
সকল মৃচিই প্রীক্ত।

বিষ্ণুশৰ্মা ভারতবর্ষে মাকিয়াবেলি—

চাণক্য ভারতের রোশকুকেল। যাহারা এইরপ গ্রন্থ বিদ্যালয়ে বালকদিগকে পড়াইবার নিম্নম করিয়াছে, দর্পনা-রায়ণ ভাহাদিগকে পাইলে বেত্রাঘাত করিতে ইচ্চুক আছেন।

#### সপ্তম পরিচেছ্দ।

ু স্চিরাম ছইতিন বংশর মীর মুস্পীগিরি করিল—ভার পর কালেক্টরীর পেকারি খালি হইল। পেকারিতে বেতন পঞ্চাশ টাকা—আর উপার্জনের ত কথাই নাই। মুচিরাম ভাবিল, কপাল ঠুকিরা একখানা দ্রণাস্ত ক্রিব।

তথন কালেক্টর ও মাজিট্রেট পৃথক্
পৃথক্ বাক্তি হইত। দেখানে সে সময়ে
হোম নামা এক সাহেব কালেক্টর
ছিলেন। হোমসাহেবের মেজাজ মরজি
কিছু বেতর। মুচিরামের আর কোন
বৃদ্ধি ছিল না—কিন্তু সাহেবের মেজাজ
বুঝা বৃদ্ধিটা ছিল; প্রার বানরগোগ্রীর
সে বৃদ্ধি থাকে।

দর্পনারারণ ভবে কে বানর ? যে মেজাজ বুঝে, না যাহার মেজাজ বুঝিতে হয় ? যে কলা খার, না ফে কদণী প্রলোভন দেখার ?

মৃতিরাস একথানি ইংরেজী দরথান্ত লিথাইরা লইল—মৃতিরামের নিজবিদ্যা দরখান্ত পর্যান্ত কুলার না। যে দরখান্ত লিখিল, স্তিরাম তাহাকে বলিয়া দিলেন, "দেখিও যেন ভাল ইংরেজি না হয়। শার যা ছৌক না ছৌক, দরখান্তের ভিতর যেন গোট। কুজি '' মাই লার্ড'' আর '' ইওর লার্ডশিপ'' থাকে। কার সেই রকম দর্থান্ত লিখিয়া দিল। তথন, শ্রীমৃচিরাম বেশভূষায় প্রবৃত্ত হই-লেন। আপনার চারখানির চিলা পার-জামা পরিভ্যাগ করিয়া, থানের ধৃতি শ্রীঅঙ্গে পরিধান করিলেন; চুড়িদার আন্তীন আল্লাকার চাপকান পরিত্যাগ পূর্বক, বুকফাক বন্ধক এয়ালা ডিলে আন্তীন লাংক্লাথের চাপকান গ্রহণ করি-त्वन । नाष्ट्रमात्र भागिष् रक्षित्रा मित्रा, স্বহন্তে মাথায় বিড়া জড়াইলেন; এবং টাদনির আমদানি নৃতন চক্চকে জুভা ভ্যাগ করিয়া চটিতে চাক্লচরণম্ব মণ্ডন করিলেন। ইতিপূর্কে গঙ্গারাম সাহেবকে हतिरम्क तकम टमनाम कतिमा, काँगाना কাঁদো মুথ করিয়া, একথান স্থপারিস চিঠি বাহির করিয়া লইয়াছিলেন। এই-রূপ চিঠি, দর্থান্ত ও বিহিত সজ্জাসহিত সেই শ্রীমৃতিরামচক্র, যথায় হোমসাহেব এললাষে বসিয়া ত্নিয়া জলুস করিতে-हिल्न, जुथाय शिया मर्नन मिट्नन।

উচ্চটকে, রেল দেওয়া পিঁজরের ভিতর, হোমসাহেব এজলাষ করিতে
\*ছেন। চারিদিকে অনেক মাপায় পাগড়ি

ও বিদিয়াছে—লোকে কথা কহিলেই

চাপরাশী বাবাজিউরা দাড়ি ঘুরাইয়া

গালি দিতেছেন—সাহেব নথ কামড়াইভেছেন এবং মধ্যে মধ্যে পার্শস্থ কুকুর
টিকে কোলে টানিয়া লইভেছেন । এক

কোঁটা গুড় পড়িলে যেমন সহস্র সহস্র

পিপীলিকা তাহা বেষ্ট্ৰন করে, খালি চাকরীটির মালিক হোমসাছেবকে তেমনি উমেদওয়ার ছেরিয়া দাঙাইয়াছে। ८वव छेटममञ्जातिरात मत्रशंख छनिः তেছেন। অনেক বড় বড় ইংরেজিনবীশ चानिशां ह्व-(मरकत्न (केंत्रा (केंत्रा স্বলার্শিপ হোল্ডর। সাহেব তাহাদিগকে এক এক কথার বিদার করিলেন। "I dare say you are well up in Shakspeare and Milton and Bacon and so forth. Unfortunately we don't want quotations from Shakspeare and Milton and Bacon in the office. So you can go, Baboo." অনেকে শামলা মাণায় দিয়া, চেন ঝুলাইয়া, পরিপাটী বেশ করিয়া আদি-রাছিলেন; সাহেব দৃষ্টিমাত্র তাহাদিগকে विषाय पिटनन। "You are very rich I see; I want a poor man who will work for his bread. You can go." भागना (हरनद मन, অভিম্মাসমুধে কুরুদৈনোর নাায় বিমুগ इहेट नाशिल। वाकि बहिल मूहिबाम, **এবং তাঁহার সমকক্ষ জনক**য়-বানর। সাহেব মৃতিরাদের দরখান্ত পড়িলেব—' हांत्रिया विलिट्गम.

"Why do you call me, my Lord? I am not a Lord."

মুচিরাম যোড়হাতে হিন্দীতে বলিল,

" বন্দি কো মালুম থা কি হজুর লার্ড

ববানা হেঁয়।"

এখন হোমসাহেবের সঙ্গে একটা লার্ড হোমের দ্রসম্বন্ধ ছিল; সেই জন্য তাঁহার মনে বংশমর্যাদা সর্কদা জাগ-ক্ষক ছিল। মুচিরামের উত্তর শুনিয়া আবার হাসিয়া বলিলেন.

"হো সকতা; লার্ড ঘরানা হো সক্তা; লার্ড ঘরনা হোনে সে হি লার্ড, হোতা নেহি।"

সকলেই বৃঝিল, যে মুচিরাম কার্য্য সিদ্ধ করিয়াছে। মুচিরাম ঘোড়হাতে প্রভা তার করিল,

" বান্দা লোক কে ওরাতে হজুর লার্ড ইের।"

সাহেব মৃতিরামকে আর ছই চারিটা কথা জিজ্ঞাসাবাদ করিয়া তাহাকেই পেঝারিতে বহাল করিলেন।

Struggle for existence! Survival of the Fittest! মুচির দলই এ পুথিবীতে চিরক্ষী।

## অফীম পরিচ্ছেদ।

ষ্চিরাম বাব্—এখন তিনি একটা ভারি রক্ষ বাব্; এখন তাঁহাকে তথু
ম্চিরাম বলা যাইতে পারে না—ম্চিরাম
বাব্ পেস্কারি পাইলা বড় কাঁকরে পড়ি-লেন। বিলাব্দিতে পেস্কারি পর্যান্ত
কুলার না—কাল চলে কি প্রকারে?

শুচিরামবাব্র বোঝা বাহিত হইল।
ভলগোৰিক্ল চক্রবর্তী নাইন একজন

তাইদনৰীশ সেই কালেট্টরী আপিসে ধাকে। ভলগোবিন্দ বারবৎসর তাইদ নবীশ আছে। সে বৃদ্ধিনান, কর্মাঠ ভালেক্টরীর সকল কর্মা কাম বারবংসর ধরিয়া শিথিয়াছে। কিন্তু মুরুবিব নাই---ভাগ্য নাই-এ পর্যান্ত কিছু হয় নাই। তাহার বাসাধরত চলে না। মুচিরাম তাহাকে অবলম্বন করিলেন। আপনার বাসায় লইয়া গিয়া রাখিলেন। ভক-(शांविक मूर्तिवांत्मत वानांत्र बांत्क, बांत পরে, গৃহকর্মের'সহায়তা করে, রাত্রি काल वावुत घटत वाहिटत सामारहवी করে এবং আপিসের সমস্ত কাল কর্ম করিয়া দের। মুচিরাম ভাহাকে টাকাটা निक्तिः (मञ्जादेशा (मन। खब्दशावित्मन সাহায্যে মুচিরামের কর্ম কাজ মাহেশের রণের মত গডগড করিয়া চলিল। হোম সাহেব অনেক প্রখংসা করিভেন। বিশেষ মুচিরাম বিশুদ্ধপ্রণালীতে সেলাম क्तिक, धवः "मारे नार्ड" धवः " हेयत আনর" কিছুতেই ছাড়িত,না।

মৃচিরামব।বুর উপাজ্জ নের আর সীমা রহিল না। হাতে অনেক টাকা জ-মিয়া গেল। ভজগোবিন্দ নলিল, টাকা ফেলিয়া রাখিবার প্রয়োজন নাই— ভালুক মূলুক করুন। মূচিরাম সম্মত হইলেন, কিন্তু যে জেলায় কর্ম করে সে জেলায় বিষয় খরিদ নিষেধ। ভজ-গোবিন্দ বলিল যে বেনামীভে কিন্তুন। কাহার বেনামীতে ? ভলগোবিন্দের ইচ্ছা ভজগোবিন্দের নামেই বিষয় খরিদ হয়,

কিছ সাহস করিয়া বলিতে পারিল না। এ দিকে মুচিরাম কাহারও বাসার গর ভনিয়া আসিলেন, যে স্ত্রীর অপেকা আত্মীয় কেহু নাই। কথাটায় ঠাহার मण्पूर विचाम हरेन कि ना जानि ना-किंद मान मान कावित्वन य जीत नाम বিষয় করাই বেনামীর শ্রেষ্ঠ। এই **এখানকার দেবোন্তর।** আগে লোকে করিত ঠাকুরের নামে-এখন বিষয় করিতে হর ঠাকুরুবের নামে। উভয় স্থলেই বিষয়কর্তা ''দেবাইৎ'' মাত্র -- পরম ভক্ত-- পাদপদ্মে বিক্রীত। এই রূপ রাধাকান্ত জিউর স্থানে রাধামণি, मामञ्चल देव चारन मामाञ्चलवी (पवी মালিক হওয়ায় ভাল হইয়াছে কি মন্দ रहेबाए बानि ना-जटन जकी कथा वुका यात्र। चार्श मिलाद रशाल है **নেবাইংকে থাইতে হইত চরণতুলসী**— এখন, খাইতে হয় চরণ-পাণমুখে কি বলিব ?

স্ত্রীর বেলামীতে বিষয় করা শ্রেয়ঃ
ইহা মুচিরাম বৃবিলেল কিন্ত এই সকলে
একটা সামান্য রক্ম বিল্ল উপস্থিত
হইল—সুচিরামের স্ত্রী নাই। এপর্যান্ত
তাহার বিবাহ করা হর নাই—অসুকলের
অভাব ছিল না। কিন্তু এন্থলে কর্মকর
চলিবে কি না তিষ্বিয়ের পেকার মহাশর
কিছু সন্ধিহান হইলেল। ভলগোবিশের
সঙ্গে কিছু বিচার হইল—কিন্তু ভলগোবিশ একপ্রকার ব্রাইয়া দিল বে
এ স্থলে অসুকর চলিবে না। অতএব

মুচিরাম সার্থাহণে কুতসঙ্কল হইলেন। কোন কুল পবিত্র করিবেন, ভাহার অবেষণ করিতেছিলেন, এমত ভন্নগোবিন্দ জানাইল যে ভাঁহার একটি অবিবাহিতা ভগিনী আছে—ভলগোবি-ন্দের পিতৃকুল উচ্ছল করায় ক্ষতি নাই। অতএব মুচিরাম একদিন সন্ধার পর শুভলগ্নে মাথায় টোপর দিয়া, হাতে স্তা বাঁধিয়া, এবং পট্টবন্ত পরিধান कतिया छलकानी नामी, खबरगानित्मत সহোদরাকে সৌভাগ্যশালিনী করিলেন। তাহার পর হইতে ভদ্রকালীর নামে অনেক জমীদারী পত্তনী খরিদ হইতে नाशिन। ভদ্রকানী হঠাৎ জেলার মধ্যে এক্তন প্রধানা ভুমাধিকারিণী হইয়া मांडाहरनन ।

#### नवम পরিচেছদ।

ভদ্রকালীর ঘাদশ বংসর বয়সে বিবাহ
হয়—মৃচিরামের এমনই অদৃষ্ট—বিবাহের পর ছই বংসরের মধ্যেই ভদ্রকালী
চৌদ্দ বংসরের হইল। চৌদ্দবংসরের
হইয়াই ভদ্রকালী ভলগোবিন্দের একটি
চাকরির জন্য মৃচিরামের উপর দৌরাত্ম্যা
আরম্ভ করিল স্কুতরাং মুচিরাম চেটা
চরিত্র করিয়া ভলগোবিন্দের একটি
মুহরিগিরি করিয়া দিলেন।

ইহাতে মুচিরাম কিছু বিপর হইলেন।

একণে ভ্রুগোবিন্দের নিজের কাল

ইইল—নে মনোধোগ দিয়া নিখের কাল

করে মুচিরামের কাজ করিয়া দিবার তাহার তত অবকাশ থাকে না। ভক্ত-গোবিন্দ স্থপাত্ত-শীঘুই হোম সাহেবের প্রিরপাতা হইল। মুচিরামের কাজের य मकन कृषि इहेट नानिन, द्याम সাহেব তাহা দেখিয়াও দেখিতেন না। আভূমিপ্রণত সেলাম এবং মাই লার্ড বুলির গুণে সে সকলের প্রতি অব্ধ হইয়া রহিলেন। মুচিরামের প্রতি তাঁহার দয়া অচলা রহিল। ভুর্ভাগাবশত: এই সময়ে হোমসাহের বদলি হইয়া গেলেন. তাহার স্থানে ঋড সাহেব আসিলেন। ঋড অতি বিচক্ষণ বাকি। অতি অল मित्न वृत्यालन-मृहिताम **এक्**षे दुक्कः ভ্রষ্ট বানর-অকর্ম। অথচ ভারি রক্মের ঘুষথোর। মুচিরামকে আপিস হইতে বহিষ্ণুত করা মনে স্থির করিলেন। কিন্তু ঋড সাহেব যেমন বিচক্ষণ তেমনি দয়া-শীল ও ন্যারবান। মিছে ছুতাছলে কাহাকে অন্নহীন করিতে নিতান্ত অনি-ष्ट्रक; काहारक धरकवारत यत्रशैन कतिरा जिल्ला मुहिताम रा विश्व ভূসম্পত্তি করিয়াছে—ঋড সাহেব তাহা জানিতে পারেন নাই। ঋড সাহেব মুচিরামকে ছুইএকবার ইস্তেফা দিতে विवाहित्वन वर्षे, किन्न मूहिताम हात्थ অল আনিয়া ছুই চারিবার "গরিব খানা বেগর মারা যায়েগা" বলাতে তিনি নিরস্ত হইয়াছিলেন। তার পর, তাহাকে পেষ-कात्रित जूना द्वज्य शावकात्रित माद्रा-शहे पिट हाहिबाहित्वन-अनाना

মফস্বলি চাকরি করিয়া দিতে চাহিয়া-हिलन,-किंख आवात मूहिताम कार्य জল আনিয়া বলে, যে আমার শরীর ভাল নহে মফল্বলে গেলে মরিয়া যাইব —হন্তুরের চরণের নিকট থাকিতে চাই। সূতরাং দয়ালুচিত ঋড সাহেব নিরস্ত , হইলেন। কিছ তাহাকে লইরা আর .কালও চলে না। অগত্যাঋড সাহেব মুটরামকে ডিপ্টি কালেক্টর করিবার सना शवर्यायत्ये तिर्वार्धे ক্রিলেন। সাহেব বাঙ্গালি **নেই সময়ে হোম** আপিসে সেক্রেটরি ছিলেন—রিপোর্ট পৌছিবামাত্র মুচিরাম ডিপুটি বাহাছরিতে नियुक्त इहेरलन ।

## मनम পরিচেছদ।

মুচিরামের মাথায় বজ্ঞাবাত হইল।
তিনি পেছারিতে ঘুষ লইয়া অসংখ্য
টাকা রোজগার করেন—আড়াইশত
টাকার ডিপ্টিগিরিতে তাঁছার কি হইবে।
ম্চিরাম দিছাস্ত করিলেন—ডিপ্টিগিরি অখীকার করিবেন। কিন্তু ভজ্ঞানি
বিন্দু ব্রাইলেন—যে অখীকার করিলে
অড সাহেব নিশ্চর ব্রিবে যে ম্চিরামী
ঘ্ষের লোভে পেছারি ছাড়িতেছে না—
তাহা হইলে শীঅই ভাড়াইয়া দিবে।
তথন ছইদিক্ ঘাইবে। অগ্ডাা ম্চিরাম ডিপ্টিগিরি খীকার করিলেন।

ম্চিরাম ডিপ্টি ছইরা প্রথম রবকারী দত্তপতকাশীন পড়িরা দেখিলেন, লেখা

আছে ত্রীযুক্ত বাবু মুচিরাম গুড় রার বাহাত্র ডিপোটি কালেক্টর। প্রথমটা वड़ है जाइनाम इंडेन-किन्त भिष किडू লজ্জাবোধ হইতে লাগিল। যে মৃত্রি রবকারী লিবিয়াছিল তাহাকে ডাকিয়া विनातन "ও (इ---' ७५' है। नाहे লিখিলে! শুধু মুচিরাম রায়বাহাত্র লেখায় ক্ষতি কি ? কি ভান, আমরা গুড় বটে, কিন্তু আমাদের খেতাব রায়। তবে যখন অবস্থা তেমন ছিল না, তথন রায় খেতাব আমরা লিখিডাম না। তা, এখন গুড়েও কাজ নাই---রাম্বেও কাজ नारे, अधू मूर्तिताम तात्रवादाद्वत निधि-লেই হইবে।" মুহরি ইঙ্গিত বুঝিল, হাকিমের মন সবাই রাখিতে চায়। সে মুহরি দিতীয় ক্লবকারীতে লিখিল, "বাবু মুচিরাম রায়, রায়বাহাত্র।" মুচিরাম (मिथियां किছू वनित्नन नां, मख्यक क-রিয়া দিলেন। সেই অবধি মুচিরাম ''রায়'' চলিতে লাগিল; কেহ লিখিত ''মুচিরাম রায়, রায়বাহাতুর,'' কেহ লি-খিত "রায় মুচিরাম রায়বাহাত্র।" মুচিরামের একটা যত্ত্রণা ঘুচিল-তড় পদ্বীতে তিনি বড় নারাল ছিলেন, এখন সে জালা গেল। তবে লোকে অসাকাতে বলিড "গুড়ের পো"— অথবা " খড়ে ডিপুটি।" আর ইকুলের ছেলেরা কবিতা করিয়া ওন।ইয়া ওনা-ইয়া বলিত,

> ''গুড়ের কল্সীতে ড্বিরে' হাত বৃধ্তে নারি সার কি মাত ?"

কেছ বলিড, `
'পরা মালসার খুসি নই।
'ও গুড় ভোর নাগরী কই 🕍

286

মৃচিরাষ তাহাদের তাড়াইরা মারিতে গেলেন, তাহারা তাঁহাকে মুথ ভেঙ্গাইরা, উভয় হতের অনুষ্ঠ সম্পূর্ন করাইরা, উচ্চে:শ্বরে কবিতা আওড়াইতে আওড়াইতে প্লাইল। লাভের মধ্যে মৃচিরাম লখা কোঁচা বাঁধিরা আছাড় ধাই-লেন—ছেলেদের আনন্দের সীমা থাকিল না। পের মৃচিরাম শ্বুলের ছেলেদের মানে মানে কিছু সন্দেশ বরাদ্ধ করিয়া দিরা সে বিপদ হইতে উদ্ধার পাইলেন। কিন্তু আর একটা নৃতন গোল ইল। শীতকালে থেজুরেগুড়েলুর সন্দেশ উঠিল—ময়য়ারা তাহার নাম দিল ডিপ্টি মণ্ডা।

বাজারে যাহা হউক, সাহেবসহলে মুচিরামের বড় স্থগাতি হইলে। বৎসর বংসর রিপোর্ট হইতে লামিল, এরপ স্থোগ্য ডিপুটি আর নাই। এরপ স্থগাতির কারণ—

প্রথম। মুচিরাম ওড় মুর্থ,কালে কা-জেই সাহেবলিগের প্রিয়।

ষিতীর। সুচিরাম অতি সামানা ইং-রেজ জানিত; যাহারা ভাল ইংরেজি জানিত,তাহাদিপকে খাটো করিবার জন্য সাহেবেরা বলিভেন সুচিরাম ইংরেজিভে স্থাকিত; অথচ পাণ্ডিত্যাভিষানী নহে। ভাহারা বলিভেন, সুচিরাম ভাহার অদেশ-বাসীদিপের দুটাক্তম্প।

ভূতীর। মুচিরাম নির্কিরোধী লোক

ছিলেন; স্থাছেবেয়া অপনান করিলেও
সন্ধান বোধ করিতেন। একবার জিনি
কমিশানর সাছেবের সঙ্গে সাক্ষাৎ করিতে
গিয়াছিলেন। সাহেব তথন মেমসাহেবের সঙ্গে ঝগড়া করিয়া গরমমেজাজ
ছিলেন, এতেলা হইবা মাত্র বলিলেন,
''নেকাল দেও শালা কো!' বাহির
হইতে মুচিরাম শুনিতে পাইয়া সেইখান
হইতে মুচিরাম শুনিতে পাইয়া সেইখান
হইতে মুহ ছাতে সেলাম করিয়া বলিলে,
''বছৎ খুব হঞ্র। ছামারা বহিনকো
ধোদা জিতা রাধে।''

চতুর্থ। তোবামোদে মৃচিরাম অদি-তীর। তাহার পরিচয় অনেক পাওয়া গিয়াছে।

পঞ্চম। মৃচিরাম ডিপুটির হাতে প্রার্
হপ্তম পঞ্চমের কাজ ছিল—অন্য কাজ
বড় ছিল না। হপ্তমপঞ্চমের মোকদ্মার একে সহজেই বড় বিচার আচারের প্রয়োজন হইত না—ভাতে আবার
মুচিরাম বিচার আচারের বড় ধার ধারিতেন না—চোধ বুজিয়া ডিক্রী দিতেন—
নপির কাগজও বড় পড়িতেন না।
স্থতরাং মাস্বাবার দেখিয়া সাহেবেয়া ধন্য
ধন্য করিতে লাগিল। জনরব যে মৃচিরামের একেবারে হঠাৎ সর্বোচ্চ প্রেনীতে
পদর্কি হইবে। কভকগুলা চেকড়া
টোড়া শুনিয়া বলিল, "আরও পদর্কি?
ছটা পা হবে না কি হ"

হুর্ভাগ্যক্রমে এই সমরে চট্টগ্রামের কালেক্টরীতে কিছু গোলবোগ উপস্থিত হুইল। গোল মিটাইবার জনা সেধান- কার কমিশানর একজন ভারি বিচক্ষণ ভিপ্টি কালেন্টর পাইবার প্রার্থনা করি-লেন। বোর্ড বলিলেন—বিচক্ষণ ভিপ্টি? সে ত মুচিরাম ভিন্ন আর কাহাকে দেখি না—তাহাকেই চট্টগ্রাম পাঠান হোক। গবর্ণমেন্ট সেই কথা মঞ্জুর করিয়া মুচিরামকে চাট্টগ্র বদলি করি-লেন।

স্থাদ পাইয়া মৃচিরাম বলিলেন, এই-বার চাকরি ছাড়িতে হইল। भाना हिल, ठांढेगा (शत्वरे लाटक জ্বর প্রীহা হইয়ামরিকাযায়। আবরও শোনা ছিল যে চাটিগা যাইতে সমুদ্র পার হইতে হয়—একদিন একরাত্তের পাড়ি। স্থতরাং চাটিগাঁ যাওয়া কিপ্র-কারে হইতে পারে? বিশেষ ভদ্রকালী —ভদ্ৰকালী এখন পূৰ্ণযৌবনা—দে বলিল, "আমি কোন মতেই চাটিগাঁ৷ যাইব না-কি ভোমায় যাইতে দিব না৷ ভূমি যদি যাও, তবে আমি বিষ থাইব।" এই বলিয়া ভদ্রকালী একটা বড় থোবা লইয়া ভেতুঁল গুলিতে ৰসি-লেন। ভদ্ৰকালী তেঁতুল জাল বাসিতেন — মুচিরাম বলিতেন ''ওক্তেভারি অম হয়—ও বিষ !'' তাই ভদ্ৰকালী তেঁতুল ওলিতে বদিলেন-মুচিরাম হাঁ হাঁ করিয়া নিষেধ করিতে লাগিলেন—ভদ্র-কালী তাহা না শুনিয়া "বিষ থাইব" <sup>বলিয়া</sup> সেই ভেঁতুলগোলায় লবণ ও मर्कता मः रवांश भूक्षक आधरमत हारनत অর মাথিয়া লইলেন। মুচিরাম অঞা-

পূর্ণ লোচনে শপথ করিলেন যে তিনি
কথনই চাটগাঁ যাইবেন না। ভদ্রকালী
কিছুতেই শুনিল না—সম্দায় ভেঁতুল
মাথা ভাতগুলি থাইয়া বিষপাণ কার্য্য
সমাধা করিল। মুচিরাম ভৎক্ষণাৎ
চাকরিতে ইস্ভেফা পাঠাইয়া দিলেন।

স্থল কথা, মৃচিরামের জমীদারীর আয়
এত বৃদ্ধি হইয়াছিল, যে ডিপুটি গিরির
নামান্য বেতন, তাঁহার ধর্তব্যের মধ্যে
ছিল না। স্ক্ররাং সহজে চাকরি ছাড়িয়া
দিলেন।

#### একাদশ পরিচেছদ।

চাকরি ছাড়িয়া দিয়া মুচিরাম, ভক্তকালীকে বলিলেন, "প্রিয়ে!" (তিনি
সকের যাত্রার বাছা বাছা সম্বোধন পদগুলি ব্যবহার করিতেন) "প্রিয়ে! বিষয়
যেমন আছে—তেমনি একটা বাড়ী
নাই। একটা বাড়ীর মত বাড়ী করিলে
হয় না ?"

ভন্ত। দাদা বলে এথানে বড় বাড়ী করিঙল, লোকে বল্বে ঘ্ষের টাকায় বড় মামুষ হয়েছে।

মুচি। তা, এখানেই বা বাড়ী করায় কাল কি ? এখানে বুকপুরে বড়মান্থ্যি করা যাবে না। চল, আর কোথাও গিয়া বাদ করি।

ভদ্রকালী সম্মত হইলেন, কিন্তু নিজ পিত্রাল্য় যে গ্রামে সেই গ্রামেই বাস করাই বিধেয় বলিয়া পরামর্শ দিলেন। ফলে ভদ্ৰকালী আর কোন গ্রামের নাম বড় জানিতেন না।

মুচিরাম বিনীতভাবে ইহাতে কিছু আপত্তি করিলেন। তিনি গুনিয়াছিলেন যত বড় মামুষের বাড়ী কলিকাছায়—তি-নিও বড়মামুষ,স্তরাং কলিকাতাই উ:হার বাস্যোগ্য এইরূপ অভিপ্রায় প্রকাশ করিলেন। এখন ভদ্রকাণীর এক মা-তুল, একদা কালীঘাটে পূজা দিতে ষ্মাৰিয়া, এক কালে কলিকাতা বেড়াইয়া গিয়াছিলেন, এবং বাটী গিয়া গল করিয়া ছিলেন, যে কলিকাতার কুলকামিনীগণ সজ্জিতা হইয়া রাজপণ আলোকিত করে। ভদ্রকালীর সেই অবধি কলি-কাতাকে ভূতলম্বর্গ বলিয়া বোধ ছিল। তাহার অনেকগুলি অলফার হইয়াছে, পরিয়া সর্বজননয়নপথবর্ত্তিনী **ब**बेट उ পারিলে অলফারের সার্থকতা হয়---ভদ্রকালী তৎক্ষণাৎ কলিকাভায় বাস করার প্রস্তাবে সম্মতা হইলেন।

তথন ভলগোবিল ছুট লইয়া, আগে
কলিকাতায় বাড়ী কিনিতে লোগিল।
বাড়ীর দাম গুনিয়া,মুচিরানের বাব্গরির
নাধ কিছু কমিয়া আসিল—যাহা হউক,
টাকার অভাব ছিল না,—অট্টালিকা জীত
হইল। বথাকালে মুচিরাম ও ভদ্রকালী
কলিকাতায় আসিয়া, উপস্থিত হইয়া
নুতন গৃহে বিরাজমান হইলেন।

#### षानम পরিচেছদ।

ভদ্রকালী কলিকাতায় আসিয়া দেখিলেন, তাঁহার মনস্কামনা পূর্ণ হইবার
কোন সন্থাবনা নাই। কলিকাতার
কুলকামিনী রাজপথ আলোকিত করা
দূরে থাকুক, পনীগ্রাম অপেকা কঠিনতর
কারাগারে নিবছ। যাহারা রাজপথ,
কলুষিত করিয়া দাঁড়ায়, তাহাদিগেঁর
শ্রেণীভূক্ত হইবার ইচ্ছাভদ্রকালী রাখেন
না—স্বতরাং তাঁহার কলিকাতায় আসা
বুণা হইল। বিশেষ দেখিয়া কলিকাতায়
আসের অশক্ষার দেখিয়া কলিকাতায়
লীলোক হাসে। ভদ্রকালীর অলক্ষারের গর্ম্ব ঘৃচিয়া গেল।

মুচিরামের কলিকাভায় আসা বুধা হইল না। তিনি প্রতাহ গাড়ি করিয়া বাজার যাইভেন, এবং যাহা দেখিতেন তাহাই কিনিতেন। বাবুটি নৃতন আম-দানি দেখিয়া বিক্রেভ্গণ পাঁচটাকার জি-निम् (पड्भेड है।को दाँकिड, धरः নিতান্তপক্ষে পঞ্চাশ টাকা না পাইলে ছাড়িত না। হঠাৎ মুচিরামের নাম वाकिया ८४न-एय वावृष्टि मधूरकः विरम्ध । পাড়ার যত বানর মধু দুটিতে ছুটিন। জুরাচোর, বদমাশ, মাভাল, শুম্পট, নিকৰা, ভাল ধুতি চাদর ফুডা লাঠিতে অঙ্গণরিশোভিত করিয়া, চুল ফিরাইয়া, সন্তাধণ করিতে বাবুকে মৃচিরাম ভাহাদিগকে কালিকাভার বড় বড় বাবু মনে করিয়া ভাহাদিকে বিশেষ

আদর করিতে আরম্ভ করিলেন। তাহারাও আত্মীরতা করিয়া তাঁহার বৈঠক
খানার আড্ডা করি ন—তামাক পোড়ার,
খবরের কাগল পড়ে, মদ খায়, তাস
পেটে, বালানা বালায়, গান করে,
পোলাও ধ্বংসায়, এবং বাব্ব প্রয়োলনীয়
এবং অপ্রয়োলনীয় দ্রবাসামগ্রী কিনিয়া
আনে। টাকাটায় আপনারা বার আনা
র্বাক্ষা রাখে, বলে দাঁওয়ে যোভয়ে
সিকি দামে কিনিয়াছি। উভয়পক্ষের
স্রপের সীমা রহিল-না।

যে গলিতে মুচিরাম বাড়ী লইয়াছি-লেন, সেই গলিতে একজন প্রথমশ্রেণীর বাটপাড বাদ করিতেন। তাঁছার নাম রামচক্র দত্ত। রামচক্র বাবু প্রথম শ্রেণীর বাটপাড়-একটু ত্রান্তি বা এক খানা কাটলেটের লোভে কাহারও অমুগতা করিবার লোক নহেন। তাঁহার তিত্য গৃহ, প্রস্তরমুকুর কাষ্ঠ কাচ কার্পেটাদিতে সকুত্বম উদ্যানতুলা রঞ্জিত; তাঁহার मद अयोकास व्यानक श्रामा वाद्यान् शान-চালা বাধিয়া সিদ্ধি ঘোঁটে; আন্তাবলে অনেকগুলি আখের পদ্ধবনি শুনা যায়-তিন্ধানা গাড়ি আছে, সোন্ধোধা তকা. शैवावाया शृहिनी. हाएउटनाटि वायन ইংরেজ থাদক,'এবং ভাড়াবাধা 'কাগন'' — সকলই ছিল। তথাপি তিনি ছুয়া চোর,—জুয়াচ্রিতেই এ সকল হইয়া-हिन। जिनि यथम अनित्नम, है।कांत বোঝা লইয়া একটা আমা গৰ্দত পাড়ায় আসিয়া চরিয়া বেড়াইভেছে, তথন

ভাবিলেন, যে গর্জভের পৃষ্ঠহইতে টাকার বোঝাট নামাইয়া লইয়া তাহার উপকার করিতে হইবে। আহা! অবোধ পশু! এত ভারি বোঝা বহিবে কিপ্রাকারে— বোঝাট নামাইয়া লইয়া তাহার উপকার করি।

প্রথম প্রব্যোজন, মৃচিরামের সঙ্গে আলাপ পবিচয়। রামচক্র নাবু বড় লোক—মৃচিরামের নাড়ী আগে ঘাইবেন না। ইঙ্গিত পাটয়া একজন অফুচর মৃচিরামের কাণে তুলিয়া দিল, রামচক্র বাবু কলিকাতার অতি প্রধান লোক, আর মৃচিরামের প্রতিবাসী—মৃচিরামেব সঙ্গে আলাপ করিবার জন্য অতি ব্যস্ত। স্কৃত্যাং মৃচিরাম গিয়া উপস্থিত।

## ত্রয়োদশ পরিচেছদ।

তিনি নাগরিক জীবননির্বাহে মৃচিরা-মের শিক্ষাগুরু—কলিকাতারপ গোচারণ- ভূমে তাঁহার রাখাল—কালীঘাট হইতে চিতপুর পর্যান্ত, যখন মৃতিরাম বলদ হথের গাড়ি টানিয়া যায়, রামবাব্ তথন তাহার গাড়য়ান; সথের ছেকড়ায় এই খেঁড়া টাট্টি জুড়িয়া, রামচক্র পাকা কোচমানের মত মিঠাকড়া চাবুক লাগাইতেন। তাহার হস্তে ক্রমে গ্রাম্য বানর সহরে বানরে পরিণত হইল। কি গতিকের বানর,তাহা নিমোদ্ভ পত্রাংশ পড়িলে বুঝা ঘাইতে পারে। এই সময় তিনি ভলগোবিশকে যে পত্র লিখিয়াছিলেন, তাহা হইতে উদ্ভ করা গেল—

''তোমার পুত্রের বিবাহ শুনিয়া আছলাদ হইল। টাকার তেমন আরু কুল্য করিতে পারিলাম না—মাপ করিও। ছইখানা গাড়ি কিনিয়াছি-একখানা বেরুষ—একখানা ব্রোনবেরি। একটা আরবের যুড়িতে ২২০০ টাকা পড়িয়াছে। ছবিতে, আয়নাতে, কাবণেটে অনেক টাকা পডিয়া গিয়াছে। কলিকাতার এত খরচ তাহ। জানিলে কথন সাসি তাম না—দেখানে সাত সিকায়, কাপড় ও মজুরিদমেত আমার একটা চাপকান তৈয়ার হইত—এখানে একটা চাপ-কানে ৬৫ টাকা পড়িয়াছে। একসেট রূপার বাসনে অনেক টাকা লাগিয়াছে। थान, वांछि, श्रिनात्र, त्म वात्रत्वत्र कथा विवादि ना- व त्रि टेविट्न बना। वतकनारक आभात इटेग्रा आभीवितान করিবে।"

এই হলো বানরামি নম্বর এক। তার

পর, মৃচিরাম, কলিকাতার যে কেছ

একটু থাতিযুক্ত, তাহারই বাড়ীতে,
রামচক্র বাবুর পশ্চাতে পশ্চাতে যাইতে

আরম্ভ করিলেন। কোন নামজাদা
বাবু তাহার বাড়ীতে আসিলে জন্মসার্থক মনে করিতেন। কিসে আসে

সেই চেট্টায় ফিরিতেন। এইরূপ আচরণে, রামবাবুর সাহায্যে, কলিকাতার

সকল বঙ্কিঞ্লোকের সঞ্চে তাঁহার

আলাপ হইন। টাকার মান সর্ব্ব্রে;
মুচিরামের টাকা আছে; স্ক্তরাং সকলেরই কাছে তাঁহার মান হইল।

ভার পর মুচিরাম কলিকাভার ইংরেজ
মহল আক্রমণ করিলেন। রামবাব্র
পরিচয়ে যত ছোট বড় ইংরেজের বাড়ী
যাভায়াত করিলেন। অনেক ধায়গাতেই ঝাটা লাখি থাইলেন। কোন
কোন স্থানে মিঠ কথা পাইলেন।
অনেক স্থানেই একজন মাতালো জমিদার
বলিয়া পরিচিত হইলেন।

তার পর ব্রিটিষ ইণ্ডিয়ান আসোদিরেশ।নে চুকিলেন। নাম লেখাইয়া
বংসর বংসর টাকা দিছে লাগিলেন।
রামচক্র বাবুর সঙ্গে প্রতি অধিবেশনে যা
•ইতে আরম্ভ করিলেন। রামবাবু ক্থিত
মহামহিমমহাসভার "একটী ৰড়কামান।"
তিনি যুগনই বড়কামান দাগিতে যাইতেন এই ছোট মুচিপিন্তলটি ক্রমে মুথ
খুলিয়া পুটপার্ট করিতে আরম্ভ করিল।
মুচিরামও ব্রিটিশ ইণ্ডিয়ান সভায় এক ঘন

বক্তা হইয়া দাঁড়াইলেন। তিনি বকিতেন মাথামুণ্ড, কিন্ত ছাপার বিজ্ঞাপনীতে যাহা বাহির হইত, সে আর একপ্রকার। মুচিরাম নিজে তাহার কিছুই বুঝিতে পারিতেন না। যাহারা বুঝে, তাহারা পড়িয়া নিন্দা করিত না। স্থতরাং • মুচিরাম ক্রমে এক্সন প্রসিদ্ধ বক্তা ুবলিয়া খ্যাতিলাভ করিতে লাগিলেন। (यंथात लाटक वफ्रलाक विवाशना হয়, মুচিরাম ভাহার কোন যায়গায় বাই-তেই ছাড়িত সা। বেলবিডীরে গেলে বড লোক বলিয়া গণ্য হয়, স্বভরাং সে বেলবিজীরে যাইত। যাইতে যাইতে সে লেপ্টেনাণ্ট গ্রপরের নিকট স্থপরি-চিত হইল। লেপ্টেনাণ্ট গবর্ণর তাহাকে একজন नम्र. नित्रश्काती, नित्रीह लाक वित्रा खानित्वन। অমীদারী সভার একজন নায়ক বলিয়া পূর্ব্বেই রামচক্রের নিকট পরিচয় পাইয়া ছিলেন।

যুল্ডাতি বাঙ্গাল কে জিলে একটি পদ খালি হইল। একজন জ্মীদারী সভার অধিনায়ককে তাহাতে প্রতিষ্ঠিত করিবেন, ইহাই লেপ্টেনেন্ট গ্রন্থর বাহাত্র স্থির করিলেন। বাছনি করিতে মনে মনে ভাবিলেন, "মুচিরামের ন্যায় এ পদের যোগ্য কে ! নিরহঙ্কারী নিরীহ—ইংরেজি কহিতে ভাল পারে না—জ্যুতাব তাহা হইতে কার্য্যের কোন গোল্যোগ উপস্থিত ইইবে না। জ্যুত্রব মুচিরামকে বাহাল করিব।"

णिवित्रं अन्द्रित्न वातू म्वित्राम तात्र

বাঙ্গাল কে জিলে আসন গ্রহণ করি-লেন।

## **ठ**ष्ट्रक्रम পরিচ্ছেদ।

বড় বাড়াবাড়িতে অনরেবল মুচিরাম রায়ের রুধির শুকাইয়া আসিল। ভল্ল-গোবিন্দ ফিকিরফন্দিতে অল্ল দামে অধিক লাভের বিষয়গুলি কিনিয়া দিয়াছিলেন —তাহার কার্য্যদক্ষতায় ক্রীতসম্পত্তির আয় বাড়িয়াছিল-কিন্তু এখন তাহা-তেও অনাটন হইয়া আদিল। ছুই একখানি তালুক বাঁধা পড়িল-রামচক্র বাবুর কাছে। রামচন্দ্র বাবুর সকল এত দিনে সিদ্ধ হইয়া আসিতেছিল—এই ঘন্য তিনি আত্মীয়তা করিয়া মুচিরামকে এতবড় বাবু করিয়া তুলিয়াছিলেন। রামচক্র অর্দ্ধেক মূল্যে তালুকগুলি বাঁধা রাখিলেন—জানেন যে মুচিরাম কখনও শুধরাইতে পারিবে না—অর্দ্ধেক মৃল্যে বিষয়গুলি তাঁহার হইবে। আরও তালুক রাধা পড়ে এমন গতিক হইয়া এই সময়ে ভলগোবিক আসিয়া উপন্থিত হইল। সে শুনিয়াছিল যে গবর্ণর প্রভৃতি বড় বড় সাহেব তাহার ভগিনীপতির হাতধরা—এই স্থােগে একটা বড় চাকরি যোটাইয়া লইতে **इहेरव— এই ভরসায় ছুটি লই**য়া কলি-কাতায় আসিলেন। আসিয়া গুনিলেন মুচিরামের গতিক ভাল নহে।° তাহার উদ্ধারের উপায় বলিয়া দিলেন।

বলিলেন, "মহাশন্ন, আপনি কথন ভালুকে যান নাই। গেলেই কিছু পাওরা যাইবে। ভালুকে যান।"

মৃচিরাম আনন্দিত হইল, ভাবিল, তাই ত। এমন সোলা কথাটা আমার মনে আসিল না।" মৃচিরাম ধুশী হইরা, ভলগোবিন্দের কথার স্বীকৃত হইল।

চন্দনপুর নামে তালুক—সেইথানে वां व (शामन। अकामिश्व व्यवशा वज् ভাল। সে বংসর নিকটবর্তী স্থান সকলে হর্ভিক উপস্থিত—কিন্তু সে মহলে किছू ना। कथन मृहितांम श्रीकांपिरधंत निक्र मात्रन साथे वादान नारे। मूहि-वाम निर्कित्वाधी लाक-ठाशामत छे पत কোন অভাচার করিতেন না। আজ ककरगावित्सव भवामार्भ क्यांत्रीत छैन-স্থিত হইয়া বলিলেন, "আমার কন্যার বিবাহ উপস্থিত-বড় দারগ্রস্ত হইয়াছি, কিছু ভিকা দাও।" প্রকারা দয়া कदिन-थन प्रथ थाकित स्मीमाद्रक সকল সময়ে দয়া করিতে প্রস্তা स्मीपांत व्यानियारक नयान পार्देया, भारत পালে প্রকা,টে কৈ টাকা লইয়া মুচিরাম দর্শনে আসিতে আরম্ভ করিল। মুচি-রামের চেষ্ট টাকায় পরিপূর্ণ হুইতে माशिन, किन्ठ देशाल चात्र धकिराक, একপ্রকার : সৌভাগ্যের তাঁহার আর छेमग्र ट्रेन।

প্রকারা দলে দলে মৃতিরাম্দর্শনে আসে—কোন দিন পঞ্চাল, কোন দিন यांहे, कांन मिंन भाभी, कांन मिन একশত এইরূপ। যাহাদের বাড়ী নি-कर्षे छाइ। ता मर्भन कतिया कितिया यात्र. যাহাদের বাড়ী দূর, তাহারা দোকান হইতে খাদ্যসামগ্রী কিনিয়া একটা বাগা-নের ভিতর রাধিয়া বাডিয়া খায়। মহালটি একে খুব বড়— মুচিরামের এত, বড় জ্মীদারী আর নাই—ভাহাতে গ্রাম श्वनित्र मरशा विन श्रांन श्रांत शाकाँग्र. क्रे ठाविष्म अप्रांक आय वाँधिया थाहेबा गाहेटल इहेड'। এक मिन व्यक्ति দুর হইতে প্রায় একশত প্রজা আদি য়াছে-ভাহাদের বাড়ী একটা ভারি बना शांत्र ; निकाम श्रकारम, डाहारमत বেলা গেল: ভাছারা বাড়ী ফিরিতে পারিল না ৷ বাগানে রাঁধাবাড়া করিতে লাগিল। রাত্রি থাকিয়া প্রাতে যাত্রা করিবে। ভাষারা যথন থাইতে বদিল. সেই সময়ে নিকটম্ব মাঠপার হইয়া, অখ্যানে, একটি সাহেব খাইতেছিলেন। मार्ट्यित नाम भीन अस्त । जिनि ঐ জেলার প্রধান রাজপুরুষ-মাজিট্টেট मारहबि छान लाक-नाविवान--हिटेडियी, धदः পরিভামী। দোষের মধ্যে বৃদ্ধিটা একটু ভোঁতা। পূর্বেই বলিয়াছি সে বৎসর ঐ অঞ্লে **এकটা ছ**র্ভিক হইয়াছিল; সাহেব ছ-क्षिक उपायक वाहित इहेग्राफिलन। ৰিকটস্থ কোন গ্ৰামে তাঁহার তামু পড়ি-बाहिन-छिनि এপन अधादबाहर छा. ब्रा बाहेर जिल्लान। याहेर वाहेर

দেখিতে পাইলেন, এঁকটা বাগানের ভিতর কতকগুলা লোক ভোজন করি-তেছে।

দেখিয়াই সিশ্বাস্ত করিলেন, ইহারা
সকলে ছর্জিকপীড়িত উপবাসী দরিদ্র
লোক, কোন বদান্য ব্যক্তি ইহাদের
'ভোলন করাইতেছে। স্বিশেষ তত্ত্ব
জানিবার ল্লন্য, নিকটে একজন চাসাকে
দেখিয়া তাহাকে জিজ্ঞাসাবাদ আরম্ভ
করিলেন।

এখন সাহেবটি, লোক বড় ভাল হই-লেও আত্মগরিমাবর্জিত নহেন। তাঁহার মনে মনে শ্লাঘা ছিল যে, জিনি বাঙ্গালা বড় ভাল ভানেন। স্বতরাং চাসার সঙ্গে বাঙ্গালায় কথোপকথন আরম্ভ করিনেন।

সাহেব চাসাকে ভিজ্ঞাসা করিলেন,

"টোমাডিগের গ্ড়ামে" ডুর্ভাথ্থা।
কেমন আছে ?"

চাসা ত জানে না ডুর্ভাধ্ণা কাহাকে
বলে। সে ফাঁফরে পড়িল। ডুর্ভাধ্থা
কোন বাক্তিবিশেষের নাম হইবে, ইহা
একপ্রকার স্থির হইল। কিন্তু "কেমন
আছে ?" ইহার উত্তর কি দিবে ? যদি
বলে যে সে ব্যক্তিকে আমি চিনি না,
তাহা হইলে সাছের হয় ড, এক ঘা
চাব্ক দিবে, যদি বলে যে ভাল আছে,
তাহা হইলে সাহের হয় ড ডুর্ভাধ্থাকে
ডাকিয়া আনিতে বলিবে; ভাহা হইলে

কি করিবে ? চাস: ভাবিয়া চিব্রিয়া উত্তর করিল, "বেমার আছে।":

"বেমার—Sick?" সাহেব ভাবিতে লাগিলেন, "Well, there may much sickness without their being any scarcity—the fellow doesnot understand perhaps; I am afraid these people don't understand their own language—I say ভূব্ছাধ্থা কেমন আছে—অটিক আছে কিয়া অল্ল

এখন চাসা কিছু ভাব পাইল।

স্থির করিল যে এ যখন সাহেব, তবে

অবশ্য হাকিম (মে দেশে নীলকর নাই)

হাকিম যখন জিজ্ঞাসা করিতেছে যে

ডুর্ভাখ্থা অধিক আছে কি অর আছে—
তথন ডুর্ভাখ্থা একটা টেক্সের নাম না

হইয়া যায় না। ভাবিল কই আমরা ভ

ডুর্ভাখ্থার টেক্স দিই না; কিন্তু যদি
বলি যে আমাদের গ্রামে সে টেক্স নাই—
তবে বেটা এখনই টেক্স বসাইয়া যা
ইবে। ,অভএব মিছা কথা বলাই
ভাল। সাহেব পুনরপি জিজ্ঞাসা করিলেন,—

" টোমাডের গ্ড়ামে ডুৰ্ভাখ্বা অধিক কিয়া অর আছে ?"

চাসা উত্তর করিল,

" হজুর আনোদের গাঁলে ভারি ডুর্-ভাগ্ধাআছে।"

সাহেব ভাবিলেন, "Humph! I

'গ্রামে। † ছর্ভিক

thought as much—" পরে বাগানে যে সকল লোক খাইতেছিল, তৎপ্ৰতি षत्रुनिनिर्द्भनं कतिया जिळामा कतिरनन, "কে বোজন করিল ?" (উদ্দেশ্য " कत्रार्रेन'')

চাসা। প্রকারা ভোজন কোছে। সাহেব, চটিয়া, "টাহা আমি ভানেthey eat, that I see-but who pays ?--টাকা কাছাড় ?"

এখন সে চাসা জানে যে যত টাকা व्यामिट उट्ह, मक गई सभी मारतत मिसूरक याहेटल्ट ; त्म निष्यु किছू पिया আসিয়াছিল-অতএব এবার বিনা বি-লম্বে উত্তর করিল.

" होका क्यीमाद्वव"

সাহেব। Ah! there it is; they do their duty-अभीमादतत्र नाम कि?" চাসা। মুচিরাম রায়।

मारहर। करें जिनम वाबन कड़ि-য়াছে ?

চাসা। তা ধর্মাবতার প্রকারা রোজ (तां क्यांत्म, थां श्रा मां श्रा कर्ता সাহেব। এগ্ডামের নাম কি ? हामा। हजनभूत्र।

হাতে পেন্সিলে লিখিলেন.

For Famine Report.

"Babu Muchiram Ray, Zemindar of Chinnapur-feeds every day alarge number of his ryots." সাহেব তথন ঘোড়ার চাবুক সারিয়া

টাপে চলিলেম। চাসা আসিয়া প্রামে রটাইল, একটা সাহেব টাকায় আট আনা হিসাবে টেক্স বসাইতে আসিয়াছিল, চাসামহাশয়ের বৃদ্ধিকৌশলে বিমুধ হই-श्राट्ड ।

**अनिरक मीन्अरमन् नारहर यथाकारन** ফেমিন রিপোর্ট লিখিলেন। পারাগ্রাফ শুধু মুচিরামরায়সম্বন্ধে । ভাহাতে প্রতিপন্ন হইল, যে মুচিরাম क्रमीमात्रमिरभत्र व्यामर्भक्षम । এই इः मगर्य व्यवनान कतियां मकन श्राका श्रुलित প্রাণরকা করিয়াছে।

রিপোর্ট কমিশানরীতে গেল। ক্যি-শানরের হস্ত হইতে কিছু উজ্জলতর বর্ণে রঞ্জিত হইয়া—ক্ষিশানর সাহেব লেখক **ভाল-गवर्गसाफे (शल। शवर्गसाफेद** এই বিবেচনা—যে যার প্রজা সেই যদি ছর্ভিক্ষের সময়ে তাহাদের আহার যোগায়, ভাহা হইলেই "ছর্ভিক্ষ প্রশ্নের" উত্তম মীমাংসা হয়। অভএব মৃচি-वाटमत नाम वनामा समीनाविनगरक দশানিত ও উৎসাহিত করা নিতান্ত कर्छवा। जब्बना वान्नाल शवर्राभणे ভারতবর্ষীর গ্রন্মেন্টের নিকট অহুরোধ সাহেব নোটবুক বাহির করিয়া তা- করিলেন যে, বাবু মৃচিরাম রারমহাশয়কে -পাঠক একবার হার হার বল-রাজা-বাহাত্র উপাধি দেওয়া যায়।

> ইভিয়ান গ্ৰন্মেণ্ট বলিলেন তথান্ত। গেলেট হইল, রাজা মুচিরাম রায়<sup>বাহা</sup> ছুর। ভোষরা স্বাই আর একবার হরি বল।

### **अ**ভिक्रान-्भक्रुस्त ।

#### ৪। ছুম্মন্ত এবং শকুন্তলা।

যে পুরুষ এবং যে রমণীর ইতিহাস ल्हेश चिक्कानभकुष्ठन नांहेक, बाहा-দের অদৃষ্টপট অভিজ্ঞানশকুন্তলরচয়িতা ,কর্তৃক চিবিত হইয়াছে, তাহাদিগকে পুণক্ভাবে দেখা হইয়াছে। সে পুরুষ পুরুষ্চরিত্রের আদর্শব্রণ এবং সে রমণী রমণীকুলের উচ্চপ্রতিমা তাহা দেখা হইয়াছে। ছুইটি ভিন্ন অংগতের ভিন্ন প্রকৃতি ভিন্নভাবে পর্যালোচনা করিয়াছি। কিন্ধ যে শক্তির গুণে সেই হুই ভিন্ন অগৎ ভিন্নতাসত্ত্বেও এক হইয়া গেল, ভিন্ন পথ ছাড়িয়া একপথে চলিতে লাগিল, সে শক্তির প্রকৃতি এবং পরিমাণ এখনও দেখা হয় নাই। সে শক্তির নাম প্রেম। এখন অভিজ্ঞানশকুন্তলের প্ৰেমতৰ ব্ৰিয়া দেখিতে হইতেছে। আমরা পূর্বে বলিয়াছি যে, অভিজ্ঞান শকুন্তলের পরীক্ষা--- অভিজ্ঞানশকুন্তলের নায়কের মনের এক অংশেরছারা অপর অংশের পরীকা। সে মনের এক অংশ দেখিয়াছি; এখন অপর অংশ দেখিতে रुहेर्त। (म मरमद ममख (मश) हहे-<sup>য়াছে</sup>, কেবল রিপুমন্তভা দেখা হয় নাই। এখন সেই রিপুশ্বতার প্রকৃতি धवः পরিমাণ দেখাইব।

আশ্রমপ্রবেশকালে চ্ছাস্তের দক্ষিণ বাহ স্পান্তি হওয়াতে তিনি ভাবিলেন— শান্তমিদদাশ্রমপদং ক্রুতি চ বাহুঃ কুতঃ ফলমিহাস্য।

অপবা ভবিতব্যানাম্ ধ্যরাণি ভবস্তি

সর্বত ॥

हैशत वर्ष धहै:-- धहै वास्रमभूम শান্তিময়। এমন শান্তিময়ত্থানে আমার বাহু স্পন্দিত হইল, ইহার ফল কি হইতে পারে, এখানে ত স্তীলাভের সম্ভাবনা নাই। অথবা এমন হইতে পারে বে, ভবিতব্যের বলে সকলস্থানেই স্তীলাভ ছম্মন্ত ধার্ম্মিক; হিন্দুশাস্ত্রে তাঁহার অগাধ ভক্তি। শাস্ত্র স্মরণ করিয়া তিনি স্ত্রীলাভের কথা মনে করিয়া বিশ্বিত इहेलन। किन्द्र व विश्व दिव कांत्र । कि ? এ বিশ্ববের কারণ-- পাস্তমিদমাশ্রম-পদং।' অর্থাৎ, স্থানটি শান্তিময় তপ-স্যাশ্রম বলিয়া তাঁহার বিশ্বয়। সংসারা শ্রমবাদী সংসারধর্মনিরত বাক্তিদিগের বাদস্থান হইলে তাঁহার এ বিশায় হইত না। এ সকলই সম্ভব। কিন্তু এ বিশ্ব-যের আরও একটু অর্থ আছে। তাহা "ভবিতব্যানাং দ্বারাণি ভবস্তি সর্ব্বঅ" এই কয়টি কথায় প্রকাশ। এ কথার व्यर्थ এই-जीनां इंटरन इन्नज स्थी वह अञ्ची इन ना; जी मरबंध इश्रह পুনরার স্ত্রীলাভ করিতে পারিলে আপ-नाटक छात्राचान महन करतन। अधु হিন্দ্ধর্মে 'আছাবান্ বিলয়া যে তিনি এইরপ ভাবিলেন তা নয়। কিছু বেশী জীপ্রিয় না হইলে তিনি বোধ হয় এইরপ ভাবিতেন :—" এ কি! আমার পরিণয় কার্য্য সম্পান্ন হইয়া গিছাছে, তবে কেন আমার দক্ষিণবাছ স্পান্দত হয়? ইহার কি আর কোন অর্থ থাকিতে পারে? জানি না দেবতাদিগের কি অভিপ্রায়।" কিন্তু তিনি এরপ ভাবিলেন না। কেবল তপস্যাশ্রম বলিয়া তিনি বিশ্বিত হইলেন, বিবাহিত বলিয়া বিশ্বিত হইলেন না। তিনি কিছু বেশী জীপ্রিয়।

তার পর আশ্রমে প্রবেশ করিয়া
শকুস্থলা এবং তাঁহার স্থীদমকে দেথিবা
রাত্র তাঁহার মনে যে ভাবের উদয় হইল,
ভাহাও তাঁহার স্ত্রীপ্রিয়তার এবং রূপামুরাগের ফল। সে ভাব এই—
"গুদ্ধান্তর্লভিমিদং বপুরাশ্রমবাসিনো
দ্বিজনসা।

म्बीक् छाः चन् छ्टैनक्नानन्छ। वन-

সতৃ।তি: ॥

যদি সামানা আশ্রমবাসিনীগণের

শারীরিক সৌন্দর্য্য রাজান্তঃপ্রবাসিনীগণের মধ্যে হুর্লভ হইল, তবে যে দেখিতেছি উদ্যানসতা বনলতার কাছে

শরাজিতা। অলোকসামান্যরূপরাশি
দেখিলে লোকে চমৎকৃত হয়, মুগ্ধ হয়,
মন্ত্রাহতের ন্যার তিন্তিত হয়, হলয় আমদ্দে পহিপ্লত হয়, মুধে বাঙ্নিশন্তি

হয় না, অথবা উচ্ছাসময় ভতিবাক্য

নির্গত হয়। ছ্মস্তের এ সকল কিছুই তিনি ভাপসবালাদিগের ক্রপরাশি দেখিয়া আপনার ক্রপসীদিগের নিন্দা করিলেন। আমরা এইরূপ বুঝি त्य, त्य भूक्ष वा त्य त्रमी काना जी অথবা অন্য পুরুষ দেখিয়া আপনার পত্নীর অথবা আপনার পতির নিন্দা, করে, তাহার ণালমা অভিশয় বলবতী। वकून छनात्र ऋन्म ब्राक्त (पश्चित्र) (य मक्न কুলক।মিনীরা আপন আপন পতির निका कतियाहित्वनः छाडामिशत्क (कह কখন ভাল বলে নাই এবং ভাল মনে করে নাই। যাহাদের ভোগলালসা একান্ত বলবতী, তাহারাই উপভে:গ্য বস্তুর তুলনা করিতে ভালবাসে। হুম-স্তের ভোগলালসা যে বড়ই প্রবল এবং সে জন্য তিনি যে একটিমাত্র ভোগ্যবস্তুতে পরিতুট নন, তাহা অভিজ্ঞানশকুয়লে স্পষ্টাক্ষরে লিখিত আছে। হইতে ফিরিয়া আদিয়া হ্র্কাদার শাপ-প্রভাবে শকুন্তলাকে ভূলিয়া গিয়া হুমন্ত একদিন মাধৰ্যের সহিত বসিয়া আছেন এমন সময় এই গীতিধ্বনি প্রবণ করি-লেন-

অহিণবসহলোলুবো তুমং
তহ পরিচ্ছিত চ্তমঞ্চরিং।
ক্মলবসইমেন্তণিব্দো
মহত্যর বিস্কারিদো সি ণং কহং॥
হে মধুকর! তুমি মধুর লোভে লালারিত হইরা চ্তমঞ্চরীকে সেই ভাবে
চুদ্দ করিলে, এপন কেবল ক্মলের

সহবাসে নির্ভ হইয়া বল দেখি কেমন কোরে সেটকে একেবাবে ভূলিলে ?

মাধবা জিজ্ঞাসা করিলেন, এ গানটির অর্থ কি ? ত্রস্ত বলিলেন— সক্তত্ত্বত প্রনয়েংহয়ং জনঃ। তদ্যা দেবীং বস্ত্মতীমস্তবেন মহ

ত্পালম্ভনং গতোহস্মি।
•স্থে মাধ্বা মৰ্চনাত্চ্যভাং হংস্পদিকা
নিপুনমুপালকোহস্মীতি।

শ্পষ্টই দেখা ঘাইতেছে যে হ্মস্ত উপভোগদম্বন্ধে কিঞ্চিৎ চঞ্চলচিত্ত। তিনি একটি ভোগাবস্ত লইয়া থাকিতে পারেন না। তিনি নৃতন ভোগাবস্তর পক্ষপাতী। এই নিমিস্তই মহাকবি তাঁহাকে অগাঢ়প্রন্থাী বলিয়া নিন্দা করিয়াছেন। শকুস্তলার চিত্রদর্শনকালে বস্মতীর ভয়ে তাঁহাকে সেই চিত্র লুকা-ইতে দেখিরা সাহ্মমতী ভাবিতেছেন— অগ্ল সংক্ষতিভালো বি পঢ়মসংভাবনং

. অবেক্ণদি।

সিচিল সোহদো দানিং এসো।

ইনি আনোর প্রেমে তলাতচিত্ত হই
য়াও পূর্বপ্রান্ত্রের সম্মান রাখিতেছেন।

এক্ষণে বস্থমতীর প্রতি ইহার প্রান্ত্র

শক্তলাকে প্রথম দেশিয়া গিয়া ত্মনত
মাধব্যের কাছে তাঁছার প্রতি অন্ত্রাগ
প্রকাশ করিলে পর মাধব্য পরিহাস
করিয়া বলিল, যে যথন আপনার অন্তঃ
প্র জীরত্বে পরিপূর্ণ, তখন এই বালিকার প্রতি আপনার অন্তরাগ কেসন ?—

না,যে বাক্তির মিষ্ট পর্জ্ব খাইরা অক্ষচি
হইরাতে, তাহার ঠেতুলের প্রতি অমুরাগ
যেমন। তাহাতে হয়স্ত উত্তর করিলেন যে
তুমি যদি তাহাকে দেখিতে তাহা হইলে
এমন কথা বলিতে না। কিন্তু আমাদিগকে বোধ হয় বলিয়া দিতে হইবে
না যে মাধবোর পরিহাদ বড় পরিহাদ
নয় এবং সে পরিহাদের অর্থপ্ত হাই।

ফলতঃ হুম্মস্থের রূপভৃষ্ণা এবং ভোগ-লাল্যা অতিশয় বলব্ডী। সেভোগ-লাল্যার আধিকা দেখিলে তাঁহাকে নিন্দা করিতে ইচ্ছা হয়। তিনি শকুস্ত-লাকে পরিণীতা ভার্যা বলিয়া চিনিতে পারিতেছেন না। তাঁহাকে গ্রহণ ক-রিলে অধর্ম হইবে বুঝিতে পারিতেছেন। তাঁহাকে গ্রহণ করিবার জন্য অমুরোধ-পীড়িত হইয়াছেন বলিয়া ঋষিকুমার-দিগের অপমান করিভেছেন। তথাপি সেই শকুন্তলার অবগুঠনমুক্তরূপরাশি দেখিয়া মনে মনে ভাবিতেছেন--ইদম্পনুতমেবং রূপমক্লিষ্টকান্তি প্রপদ পরিগৃহীতং সাান্নবৈতি ব্যবসান্। ল্যর ইব বিভাতে কুল্মস্তস্ত্রারং ন চ পলু পরিভোক্ত্ং নৈব শক্ষোমি

এই অক্ষত রূপরাশি আমার সম্পুথে
আসিয়া উপস্থিত। আসি কি ইহাকে
পূর্ণে বরণ করিয়াছি । কই মনে ত হয়
না। অমর যেমন হিমাছেল কুলপুপটি
ভয়ে ভোগ করিতেও পারে না, আবার

হাতুষ্।।

ছাড়িতেও পারে না, তেমনি আমিও ফাঁপরে পড়িলাম।

আমরা প্রথম প্রস্তাবে বলিয়াছি যে 
ছ্মন্তের অসাধারণ চিন্তসংযমশক্তি না
থাকিলে তিনি কণ্বের পবিত্র তপস্যাশ্রম
কলম্ভিত করিয়া ফেলিতেন। এপন
বোধ হয় কথাটি অভ্যুক্তি বলিয়া কাহারপ্ত সংশয় থাকিবে না। রূপবতী রমণী
দেখিলে হয়স্ত লালসায় অধীর হইয়া
পড়েন। কেবল উয়তশিক্ষা, উয়ত
ধর্মক্তান এবং অসাধারণ চিন্তসংযমশক্তি
ভাহাকে ব্যক্তিচার হইতে নির্ত্ত করে।

শকুম্বলা কুপবতী; শকুম্বলা রূপ-বতীর মধ্যে রূপবতী। তাহাতে আবার छिनि योवत्न भन्नार्थन कदिहाएइन। ভাঁহাকে দেখিবামাত্র হ্মন্তের মনে এক ৰুতন ভাবের সঞ্চার হইল। যে ভাব व्यथस्य व्यक्षे । ''प्रीकृष्ठाः चन् खरेनः क्रमानगठा वनगठा छिः," এই जूननाय সেই ভাবের প্রথম অক্টুক্রি। এ तकम जूनना न्डन প্রেমের পূর্বলকণ याहात चुन्दती त्रम्बी चाट्ड (म चिन কোন নৃত্ন রমণী দেখিয়া উভয়ের ভুলনা করিয়া নৃতন রমবীকে প্রাধান্য (मन्न, ভाहा इहेला (यहे जूननारक न्डन প্রেমের পূর্বলক্ষণ বলিয়া ব্রিতে হয়। বেধানে নৃতন বস্তর তুলনায় পুরাতন वञ्ज निक्छ विनम्ना (वाथ इम्, अहसारमहे ন্তন বস্তুতে স্পৃহা জন্মিয়া থাকে। কিন্ত এ ভুলনায় স্পৃহাস্চক কিছুই নাই। এ তুণনা কেবল স্থার পূর্মগামী যান- দিক অবস্থাবাঞ্চক। তার পর ছয়ন্ত
শক্ষলাপথকে যাহা ভাবিলেন, তাহাও
স্থাহাতক নয় কিন্ত তাহাতে স্থার
আভাস আছে।. তিনি ভাবিলেন—
কথমিয়ং সা কণুছহিতা।
অসাধুদলী খলু তত্তভবান্ কাশ্যপঃ য
ইমামাশ্রমধর্মে নিযুত্তো।
ইদং কিলাব্যাল মনোহরং বপুত্তপঃ

ক্ষমং সাধ্যিত্থ য ইচ্ছতি। ধ্রুবং স নীলোৎপল পত্র ধার্যা শ্মীলভাংচ্ছেত্র্যুধির্বাবস্যতি॥

ইহার মর্ম্ম এই যে এমন কোমলাঙ্গীকে কঠিন আশ্রমধর্মে নিযুক্ত করিয়। কণ্
অবিবেচনার কার্য্য করিয়াছেন। কোমল নীলোৎপল পত্রের ছারা কঠিন
শমীরক্ষ ছেদন করা যেমন অসম্ভব,
এই কোমলাঙ্গীর ছারা সেই কঠিন
আশ্রমধর্ম প্রতিপালিত ছওয়াও তেমনি
অসম্ভব।

ভপদ্যাশ্রমে তপশ্বিকন্যাকে দেখিয়া 
ছন্মস্কের ন্যায় চিত্তদংব্যক্ষম ধর্মবীরের
মনে একেবারে বলবতী স্পৃহার উদ্রেক
হওয়া অসম্ব । কিন্ত হ্মস্ক স্তীপ্রিয় ।
'দ্রীকৃতাঃ ধলু গুলৈকদ্যানলতা বনলভাভিঃ' এই তুলনাভেই ভাঁহার স্ত্রী
প্রিয়তা প্রকাশ। তবে যথন তিনি
শক্তলাকে তপশ্চ্যার অযোগ্যা বলিয়া
ভাবিলেন, এবং কণুকে নিন্দা করিলেন,
তখন ভাঁহার নিন্দাবাদের মূলে কিঞ্জিৎ
আয়ণৃষ্টি নিহিত আছে । মানুষ বখন
ছল্ভ অথবা এক অবস্থাপন বস্তুকে

সুলত অথবা অন্য অবস্থাপয় করিতে हात्र **ज्थन आब्रहे (मधा यात्र (य दब**हे हे-চ্ছার মূলে ষেই বস্তপ্রাপ্তির স্পৃহা নিহিত যাহার কোন দুরস্থিত বস্ত बारह। পাইবার স্পৃহা হয়, সেই বলিয়া থাকে य धरे रस्त्री निकारे शकित जान हम् এবং ইহার নিকটে থাকাই উচিত। যাহার কোন উদ্যানস্থিত পুষ্প লইবার रें छ्रा हम, त्मरे विनम्ना थात्क त्य वर्ष মাতুষের বাগান সাধারণের জীড়াছল হওয়া উচিত। যাহার কোন অস্তঃ-পুরস্থিতা স্থলরী বিধনারমণীকে গ্রহণ করিবার ইচ্ছা হয় সে সেই রমণীর वाशीयमिटगत काट्ड की यांधीन छात बाद-শ্যকতা প্রতিপন্ন করিতে যদ্ধবান হয় **এবং 'क्वाना निम्दियत्र' निमा क्षारस्य निकारात्र**स করিয়া থাকে। व्यर्थ (पर दक्षा जारा मान असन ম্পৃহার উদ্রেক হইয়াছে। ভার পর তিনি যাহা শুনিলেন, তাহাতে বুঝিলেন যে কণের অভিপ্রায় যাহাই হউক, শকু-खना এবং ভাঁহার সধী दश्य मानिशक ভাব ঠিক তপস্থিকনারে মতন নয়। তিনি এই কথোপকথন গুনিলেন-

শকু। সহি অন্ত্র অদিপিবদ্বৌ वक्षण शिष्यः वहा विकश्चिम कि निष् लिहि मांव बर ।

थन। उहा

এখ প্রেছরবিখারইত্তরং भरुत्भ (कायन ए हे वान ह।

<sup>म</sup>र्डन। रनिरनन-श्रिय्यन। आगात

বুকের বঙ্কল অভিশয় জাঁটিয়া কাধিয়াছে, অতএব, অনস্য়ে, তুমি এটা একটু আরা করিয়া দেও। প্রিয়খদা উত্তর क्तिलन--(ভाষার निष्कत (योवलक জোরে তোমার পরোধর বিস্ত হই-बाष्ट्र, তा ज्यामारक त्माय मिरन कि इरव १ ছম্বের মন যাহা চায় এত তাই। তপস্বিকন্যারা আশ্রমধর্মপ্রতিপালনে नियुक्त ; किन्ह जाञ्चमधर्मा छिन्न जना विय-युष्ठ उ। हारमञ्ज मरन ए। न भाहेग्रा थारक। তাঁহারা যৌবনের মর্ম বুঝিয়াছেন এবং योगरनत विषय कथावाडी कहिन्ना था-(कन। এ সব দেখিয়া শুনিয়া স্পৃহাবান্ হুমধ্যের বিদ্নাশকা কমিবার কথা। বস্তু-তঃ সে আশকা কমিয়া ম্পৃহা এবং ম্পৃহা-অনিত অভিনিবেশ বাড়িয়া উঠিল। তিনি শকুত্তলার শারীরিক সৌন্দর্য্যে মুগ্ধ হইয়া তাহার প্রশংসা করিতে লাগিলেন। মুহ্রপরে শকুস্তলাকে কেশরবৃক্ষমূলে কি-किः (इनिया माँ एवित पित्र शिय-चना वनिरमन (य, ठिक (वांध इरेट्डिइ যেন এই কেশরবৃক্ষীর একটি লভার স হিত পরিধর হইয়াছে। তপত্মকন্যাদিগের মানসিক অবস্থা আরও প্রকাশ পাইল। ছ্মন্তের বিদ্বাশস্থা আরও কমিয়া গেল; তাঁহার স্পৃহাবিচলিত মন আরও বিচলিত হইল; তিনি সেই বর্দ্ধিতস্পৃহার বলে শকুম্বলার ওষ্ঠ, বাহু, প্রভৃতি এক একটি অবের সৌন্ধর্য দেখিতে লাগিলেন---चर्वः किमल्यत्रागः (कामल्विष्टेशाङ्गः

कातिरणी वाह ।

২৬৯

क्रूश्वित राष्ट्रभी वः योगनगरत्र्यु नवस्य ॥

অফুরাগ যত বৃদ্ধি হয়, লোকে অফুরাগের বস্তু তত্ত তর তর করিয়া দেখে।
লোকে যখন কোন বস্তুর প্রতিঅংশে
সৌন্দর্যা দেখে, তখন বৃদ্ধিতে হয় যে
তাহাদের মন সেই বস্তুর প্রতি অফুরাগে
পরিপূর্ণ হইয়াছে। হয়ত্তের মনও এখন
শকুন্তুলার প্রতি প্রবল অফুরাগপূর্ণ।
শকুন্তুলার প্রতি অস্তে সৌন্দর্যা দেখিতেছেন, এমন সময় অনস্রার মুণে শুনিলেন যে শকুন্তুলা নিজে বৃক্ষের সহিত
লতার বিবাহ দিয়া থাকেন—কোন
বৃক্ষের পত্নী করিয়া দেন, কোন লতার
পতি করিয়া দেন।

ইলা শউস্তলে ইঅং সঅংবরবছ সহ-আরম্ম ভূএ কিদনাসহেমা বনজোসিনী তি গোমালিমা গং বিস্থারিদাসি।

भक्षना উত্তর করিলেন:--

ভদা অভাণং বি বিস্ন্যরিম্বং। (লভাসুপেত্যাবনোকা চ) হলা রমণীরে ক্ষু
কালে ইমম লদাপামবমিহণম বই অরো
সংবুভো। গবকুস্মজোকাণা বনজোসিনী
বদ্ধপারবদাএ উবভোশক্ষমের দহজারো।
স্থি, রমণীর সময়েই এই লভা ও
পাদপের মিলন হইয়াছে। দেখ, বনজ্যোৎসা অলে নবকুস্মের যৌবন আর এই সহকার ভক্ নবপল্লবধারণ করিয়া
সম্ভোগস্থের কেমন উপফুক্ত হইয়াছে।
এতক্ষণ হলম্ভ প্রিরম্পার মুখেই অনেক কথা গুনিয়াছিলেন। গুনিয়া

শকুত্তলার মনের ভাবও অবখ্য বুঝিতে-ছিলেন। কিন্তু এপন স্বয়ং শকুন্তলার मृत्थ जातक कथा खनित्तन এवः भक् স্থলা কি করিতে ভালবাসেন তাহাও क्वानित्वन । অানিলেন যে শকুন্তলা বৃক্ষ এবং লভার মধ্যে বিবাহ দিতে ভাল-वारमन धवर पिशित्मन एग जिनि नव-मिका अवः महकादित मिनन् (प्रशिशाः তাহাদিগকে জীপুরুষ ভাবিয়া পর্ম-হর্ষেৎফুল। আবার হৃষ্ট প্রিয়ম্বদা তখনি অনস্যাকে বুঝাইয়া দিল, যে শকুন্তলাব নিজের উপযুক্ত পতিলাভের ইচ্ছা হই-য়াছে বলিয়া পতিপ্রাপ্তা বনজােৎমার প্রতি নির্নিষে নয়নে চাহিয়া আছে। এবং শকুম্বলা সেই কথা শুনিয়া প্রিয় স্বদাকে বলিলেন—তোমার নিজের বুঝি সেই ইচ্ছা হইরাছে। শকুন্তলার মান-সিক অবস্থার বিষয় জানিতে আর কিছু বাকি রহিল না। ভাঁহার মন এগন মিলনকল্লনাপুর্ব; তাঁহার ভাবনা এখন मिनात्तर ; डीहार कीवन अभन अभग এবং সে শ্বপ্ন নৰপ্ৰাক্ষ্টিত ধৌবনের অপরি-ফুট সঙ্গীতে সজীতষয়। সেই সঙ্গীত-ধ্বনি ভ্রত্তের কর্ণে বাজিল। তাঁহার লাবদা মিলনকামনায় পরিণত হইব। **भक्षनारक बाद्याकना। गरन** তিনি তথনি বিবাহসমধ্যে সন্দিহান হইলেন। কিন্তু শকুন্তলার মন জানিতে পারিষা উাহার প্রধান আশহা এখন ঘুচিয়া গিয়াছে। তাহার মন উৎসাহপূর্ব। ভিনি শকুষলার জা<sup>তি</sup>

निनंत्र कतिरवन विविद्या श्वित्रमहत्त हरे-লেন। লালসার বস্তকে ঈপ্সিত অবস্থা-পুর বুঝিতে পারিলে লোকে তাহা অধিকার করিবার জন্য সাহস বারাতাসহকারে উপায় চিস্তা করিয়া থাকে। ছমন্ত এতকণে শকুত্তলার স-হিত অধিকারের ভাব সংযোগ করিলেন। ুতার পর শকুস্থলাকে ভ্রমরতাড়না হ ইতে পরিত্রাণ করিবার নিমিত ছম্মন্ত বুক্ষাস্তরাল হইতে নিজ্যস্ত হইয়া তাপস-বালাদিগের সমুথে উপস্থিত হইলেন। महमा (कान श्रष्ठावणानी श्रक्रववहरू (मिश्रिल क्युप्रवानिकात मान (य চकिछ्त्र ভাব হইয়া থাকে, ভাহা শমিত হইবার পরেই শকুম্বলা মনোবিকার অনুভব কবিলেন :---

কিং গুক্রু ইমং পেক্ষিত্ম তপোবন বিরোহিণো বিআরম গমনীতা দ্ধি সং-বুতা।

ইহাকে দেখিয়া আমার তপোবন-বিরোধী মনোবিকার জ্বিল কেন ?

কুজ হরিণী একেবারে ব্যাধশরাহত।
প্রির্থদা এবং জনস্রা শকুস্তলার মনের
ভাব ব্রিলেন। শকুস্তলা উহিদের
কাছে এবং ছল্পস্তের কাছে লুকোচুরি আরম্ভ করিলেন। প্রিয়ম্বদা কি আনস্মা ছল্পস্থান্ধ উহির মনের মতন
কণা বলিলেই তিনি বাগ করিতে
লাগিলেন। তিনি সত্কভাবে কিস্ত
বেন চোরের ন্যায় ভয়ে ভয়ে ছল্পস্তকে
দেখিতেছেন, কিন্তু ছল্পস্ত তাহার পানে

চাহিয়া দেখিলেই তিনি চকু কিরাইরা লইতেছেন। শকুন্তলাসম্বন্ধে গ্রাম্ভের এখন যেরপ মনের ভাব, তাহাতে তাঁহার (क्वन हेहाई कांना आवभाक (य भकु-স্থলার সহিত তাঁছার বিবাহ হইতে পারে কি না। তিনি ওনিলেন যে শকুস্তলা क्रक्तियकना। এवः शिव्रचमा छाहारक चारता विनया मिन त्य कवृ भक्षनात्क উপযুক্ত পাত্রে সমর্পণ করিতে অভি-লাষী। কথাটি শকুন্তলার খুর মনের মতন হইল। কিন্তু তিনি রাগ করিয়া চলিয়া যাইতে উদ্যত হইলেন। প্রিয়-খনা তাঁহাকে আর হুইটি গাছে জন দিবার অঙ্গীকারের কথা শ্বরণ করিয়া ছম্মন্ত তাঁহার শ্রমকাতরতায় কাতরতা প্রকাশ করিয়া তাঁহার ঋণের विनिमस निष्मत अञ्जूती शिव्यवादक দিলেন। প্রেমের ক্ষেত্ময় মূর্ত্তি প্রক-টিত হইল। অঙ্গুরীটি পাইয়া প্রিয়ম্বদা শকুন্তলাকে ঋণমুক্ত করিয়া চলিয়া যাইতে অমুমতি দিলেন। কিন্তু শকুন্ত-লার এথুন চলিয়া ঘাইবার সাধ্য নাই। তিনি রাগ করিয়া প্রিয়খদাকে বলি-লেন-

কা তুমং বিসজ্জিদকক্ম ক্লিদকক্ম বা।
আমাকে তাড়াইয়া দিবারই বা তুমি
কে আর ধরিয়া রাখিবারই বা তুমি
কে ?

প্রথম প্রেমসঞ্চারের সমর রমণী অধিক্তর লজ্জাশীলতাহেতু এইরূপ লুকোচুরিই করিয়া থাকে। রমণী শীঘ

यदनद कथा विलट्ड शांद्र ना। त्रम्भीत **अश्विष इपद्रगठ। (४ यठ इपद्राधीन,** বাহা অভিব্যক্তি তাহার তত কইকর। त्म कष्टे त्रम्शीमश्राम मध्याक्र प्रधातन कः রিয়া লুকোচুরি প্রভৃতি রমণীয় কুটলভায় অভিবাক্ত হয়। বেখানে রমণী পুরুবের সহিত বেশী মিশামিশি করে, সেখাদে ন্নশীর বাহা অভিবাক্তি কতকটা অভান্ত সেই জন্য রম্ণীর হইয়া পড়ে। প্রেমের ইতিহাস, অথবা বলিতে গেলে রুমণীর সমস্ত ইতিহাস, ইউরোপে এক ন্নকম, এসিরার কিছু ভিন রকম। শকু-ন্তলা হিন্দুরমণী। স্বতরাং উাহার প্রেম-স্কারের সঙ্গে সঙ্গে লুকোচুরির ব্যাপার किছू (वणी। ध नब्डामीनठा धरः **লুকোচুরির আরো এডটু তাৎপর্ব্য** আছে। যে দেশের ভাবে এবং শিক্ষার শরীর আত্মার তুলনায় অতি অপবিত্র, দে দেশে শারীরিকসভোগস্চক প্রসঙ্গ-মাত্রই কিছু লব্দা উৎপাদন করিয়া थारक। এবং সেই निमिखरे मि मिर्म প্রেমের সহিত পুকোচুরির কিছু ঘনিষ্ট-সক্ত্র। ইউরোপের ভাব এবং শিক্ষা **७ तकरमत नत्र ७वः ८मर्ट सना रेडे-**ব্ৰোপাৰ কাৰ্যের নাম্বিকাগৰ প্রেমপ্রসঙ্গে क्षक त्रक्म व्यनमञ्जा वनिरमहे हत्र। किख ভারতের এই ভাব এবং এই শিকা। এবং শকুন্তবা ভারতরমণী এবং ব্রন্ধ-সেবানিরত ভাপদবালা। সেই জনাই इत्राखन निक्रे हरेड গ্ৰহালে ভাষার পায় কাটা ফুটিল এবং তাঁহার

বস্ত্র পাছের ভালে আট্কাইয়া গেল। তথন হুমন্তও যেমন তাঁহাতে মজিয়াছেন তিনিও তেমনি ছম্মতে মলিরাছেন। তবে তিনি এক রক্ষে মনিয়াছেন. ছুমত আর এক রকমে মলিয়াছেন। তিনি হুপ্নতকে দেখিবামাত্রই মলিয়াছেন. ছুমন্ত ভাঁছাকে দেখিবামাত্র नारे। इत्राखन एश्रममकादान महत्र महत्र জ্ঞানের কার্য্য হইয়াছে; স্মতরাং সে শ্রেম একটু একটু করিমা বাজিয়া উঠি-য়াছে। ইনি যে দেখিতে পাই তপশ্বি-কন্যা, ইনি বোধ হয় ব্ৰাহ্মণকন্যা—ছম্মন্ত मर्या मर्या এই मकन विष्कृतस्मा कति-**ষাছেল। বোধ হয় কোন কলিত** বিল্ল প্রকৃত বিদ্ন বলিয়া জানিতে পারিলে হ্মস্ত শকুস্তলার মোহ ঝাড়িয়া ফেলিয়া চলিয়া যাইতেন। কিন্তু হুন্নস্তকে দে-ধিয়া শকুম্বলা সে রক্ষ কোন বিপ্রকল্পনা করিলেন না। তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার मन धारकवादबरे विविधा रहेशा छेठिल, তাঁহার জ্ঞানের কার্য্য কিছুই হইল না। বোধ হয় সে প্রেমের কোন বিদ্ন ঘটিলে সেই প্রেমানলেই ভিনি ভন্মীভূতা इटेडिन। . त्रमनी क्षत्र-क्षथान वित्राहे প্রয়ম্ভ এবং শকুম্বলার প্রোমসঞ্চারের এই ভিন্ন প্রণাদী।

হ্মন্ত এবং শকুন্তলার প্রেমসঞ্চার হইয়াছে। তাঁহারা পরস্পারে এমনি মুঝ, যে কাহারও কাহাকে হাজিয়া থা-কিতে আর ইছোঁ হয় না। কিন্ত হাজিয়া থাকিতে হইল। হ্মন্ত আশ্রম হইতে চলিয়া গেলেন; শকুষ্থলাও আশ্রমকুটীরে প্রবেশ করিলেন। এই বিচ্ছেদের পর যে পর্যান্ত না উভয়ের মিলন

হইল, সে পর্যান্ত ছইজনের ইভিহাস

কতকটা একরকম কতকটা ভিল্লরকম।
উভয়েই পরস্পারের চিন্তা করিতে

গাগিলেন। কি দিবা, কি রাত্রি সকল

শুম্রেই সেই চিন্তা। চিন্তা করিয়া
করিয়া উভয়েই শীর্ণ, ছর্বলি, আহারনিদ্রাবিজ্ঞিত।

কামকামকপোল মাননম্রঃ কাঠিনা-

মুক্তবনং মধ্যং ক্লাস্ততরঃ প্রকামবিনতাবংসৌ ছবিঃ পাড়ুরা।

শোচ্যা চ প্রিরদর্শনা চ মদনক্লিষ্টের-

মালক্ষ্যতে

পত্রাণামিব শোষণেন মক্তা স্পৃষ্টা লভা মাধ্বী ॥

ভাবিয়া ভাবিয়া শক্ষলার ত এই দশা-হইয়াছে। ছগ্নত্তেরও ভাই ঘটিয়াছে। প্রিয়ম্বদা অনস্যাকে বলিতেছেন:—

गः সোরাএসী ইমস্মিং সিণিদ্ধ দিত্তি এ ফ্ইনাহিলাসো ইমাইং দিক্ষসাইং পজ্জা-ক্ষরিকাশে লক্ষীকাদি।

এবং হুমন্ত নিজে এই কথা বলেন:—

ইদমশিশিরৈরন্ততাপাদ্বির্গ মণীকৃতং

নিশি নিশি ভুজনাতাপাদপ্রসারিভির-

শ্ৰুভি:।

অনভিল্লিতজাখাত। সং মৃত্ৰমণিবদ্ধনাৎ

কণকবলয়ং অন্তং অন্তং ময়া প্ৰতিসাৰ্য্যতে।।

এ কি বৰম চিস্তা ? গুম্বের সম্বন্ধে

এ প্রশ্নের উত্তর দেওয়া সহজ, শকুস্তলার সম্বন্ধে তত সহল নয়। কারণ ত্মস্তের সম্বন্ধে এ চিস্তার বাহাক্তি আছে, भंक्षनात्र मदस्क वाराकृर्छि नाहे। इत्रख আশ্রম হইতে চলিয়া গিয়াই নিজস্থা माधरवात कांट्ड मकल कथा विलिट्ड লাগিলেন, কিন্তু শকুন্তলা নিজস্থীদয়ের কাছে কোন কথা বলিলেন না। ত্ৰুস্ত শকুন্তলার রূপের কথা মনে করিতে লাগি-লেন; তাঁহাকে দেখিয়া শকুন্তলা কি कतिशाहित्नन छाहा ভाবিতে नागित्नन; আবার কি রকম করিয়া শকুন্তলার महिठ (मथा इहेरव छांहा विस्वहमा করিতে লাগিলেন। শক্তলা ভাঁহাকে **मिश्रा कि कतियाहित्तन, (महे भर्गा-**लाहनारे इत्रास्त्रत मत्म थावल। পর্যালোচমার প্রকৃতি এই:---কামং প্রিয়া ন স্থলভা মনস্ত তন্তাব-

দর্শনায়াসি । অকৃতার্থেইপি মনসিজে রতিমুভয় প্রার্থনা কুকুতে ॥

(প্রিতং কৃষা) এবমাম্মাভিপ্রায়সম্ভাবিতেই-জনচিত্তবৃত্তিঃ প্রার্থিয়িতা বিড়ম্বাতে। স্নিগ্ধং বীক্ষিত মন্যতোহপি নম্ননে যং-

প্রেষয়স্ত্যা তয়া

যাতং যক্ত নিতৰয়োগু কৃতরা মন্দং বিলাসাদিব।

মাগা ইত্যুপক্ষরা যদপি সা সাহ্যমুক্তা স্থী

সর্বং তৎ কিল মৎপরারণমহোঁকামী স্বতাং পশাতি ॥

করিলেই প্রিয়াকে পাইবার সম্ভাবনা নাই, কিন্তু আগার মন তা বুঝে না। সে দদা তাঁহারই অহুরাগ-नर्मत्न डेर्ङ्क। এशन्छ मत्नात्रश शूर्न হ্য় নাই বটে, কিন্তু পরস্পর পরস্পরের অমুরাগ দর্শন করিরা একপ্রকার আনন্দে উন্মত্ত। (ঈষৎ হাস্য করিয়া) ছঃ এই-রূপে প্রণয়ী বাক্তিপ্রতারিত হয়। সৈ ভাবে ভাহার আপনার মনে যে যে ভাবের উদয় হইতেছে তাহার প্রিয়-জনের মনেও অবিকল সেই সকল ভাবের উদয় হইতেছে। তিনি অন্য मिरक यमुञ्जांत्र नयननिरक्ष कतियार्छन, আমি ভাবিয়াছি সেটা আমাকে দেখি-ষাই। তিনি গুরু নিত্ত্বের ভরে মন্থর-ভাবে গমন করিয়াছেন, আমি মনে করিয়াছি আমাকে দেখিয়াই তাঁহার গতি विनाम जनम इहेश পড়িতেছে। প্রিয়ম্বদা তাঁহাকে চলিয়া যাইতে দেখিয়া আটকাইলে তিনি স্থীর প্রতি কোপ প্রকাশ করিলেন, সেটীও আমার মনে इहेन (य आमात्रहे जाता। कामी वाकि আপনার ভাবে ভোর হইয়া সকলি আপনার বলিয়া দেখে।

क भर्गात्माहनात वर्ग-मत्मह। ८ थेत्याय व्यक्ति व्यक्तित स्थापन वृत्याय वृत्य ना, निम्हिष्ठ हहेन्ना उम्महान हन, व्याय छ हहेन्ना अधानिक मत्म करता मक्छ नात्क कर्कात काव हान्न क्षिमा कृष्ठ क्ष व्यक्ति मत्मह क्रिया भन्नक्ष्म निम्हत वृत्यित्मन त्य मत्नाविकान है क्ष क्ष वहान कान । -- বলবদস্বস্থশরীরা শকুস্তলা দৃশ্যতে।
তৎ কিময়মাতপদোধ: দ্যাৎ উত যথা মে
মনসি বর্ত্ততে। অথবা কৃতং সন্দেহেন
অনন্যজ্যোশীরং শিথিশিতমূণটেলকবলয়ং
প্রিয়ায়া: দাবাধং কিমপি কমনীয়ং বপ্-

विषय्।

সমস্তাপঃ কামং মনসিজনিদাপপ্রসর্যোলন ক্ প্রীমনৈ সং স্ভগমপরাজং মৃব্ভির্ ॥ কিন্তু কান্তুলাকে তাঁহার পীড়ার কারণ প্রকাশ করিতে অনুরোধ করিলেন, তথন শকুন্তলার উত্তর প্রতীক্ষায় হল্মপ্ত ভ্রাকুলিত হইয়া পড়িলেন, চিন্তুইছ্র্যারকা করিতে পারিলেন না।
পৃষ্ঠা জনেন সমহংশস্থবেন বালা
নেমং ন বক্ষাতি মনোগতমাধিহেতুম্।
দৃষ্টো বিবৃত্য বহুশোহপ্যনয়া সত্যা

যাহারা চিরদিন ইহার ছু:খে ছু:খী ও স্থে স্থাী গেই সধীরা জিজ্ঞাসা করিতে-ছেন,ইনি এখন আর মনস্তাপের কারণটা লুকাইতে পারিবেন না। ইনি তৎকালে বারংবার সভ্স্ণ দৃষ্টিপাতে আমার প্রতি প্রাথম প্রকাশ করিলেও এই সময়টা (ইনি কি বলেন তাহা শুনিবার জন্য) আমার মন অভির হইয়া উঠিতেছে।

মত্রাস্তরে শ্রবণকাকরতাং গভোহস্মি॥

শুধু থেম কেন, সকল বিষয়েই মানুষ যাহার বেশী অভিলাষী হয় তৎসম্বন্ধ ম্বিনিশ্চয় হুটুয়া ও সন্দেহসংক্ষ্ক হুট্যা থাকে। কিন্তু শকুন্তলার বোধ হয় এ, রকম সন্দেহ হয় নাই। এ রকম সন্দেহ

युक्ति शर्मारभद्र कन । तमनी श्रमग्रमर्कत्र । সে হৃদ্ধ বিচলিত হইয়া উঠিলে রম্ণী क्रमस्त्रत वर्षे शहिवात सनाहे वाकिन दन, পাওয়া সম্ভব কি না ভাষা বিবেচনা करतन ना। यनि रम यञ्च भान. छान्हे: नटि विद्रष्ट: थिनी इटेब्रा थारकन, अथवा ু গুকাইয়া শুকাইয়া মরিয়া যান। \* প্রিয় ্বদা এবং অনুস্থার অনুরোধে মনের क्षा श्रकांभ कतिया भकुखना मधीवयरक वित्तनः--

তং ভই বো অবুমদং তহ বচচ হ জ হ তম্ম রাএসিণো অণুকম্পনিজ্জা হোমি। অগ্লহা অবস্সং সিঞ্ছ মে তিলোদ অং।

অতএব তোমাদের যদি মত হয় ভ যাতে সেই রাজর্ষি আমার প্রতি দয়া প্রকাশ করেন তাহার উপায় কর, নত্বা আমার জীবনের আশা পরিত্যাগ কর।

তবে শকুস্তবার একটি সন্দেহ হইয়া-ছিল। তিনি ভাবিয়াছিলেন যে তিনি इम्रास्त्रत रयांगा कि न!। श्रिम्मना यथन তাঁহাকে পত্ৰ লিখিতে বলিলেন, তখন তিনি বলিলেন :---

চিস্তেমি অহং। অবহীরণভীক্ষং উপ (ववहे (म किस्र शः।

ष्यका करतन এই खरा यागात श्रमग्र কাঁপিতেছে।

কিন্তু এ সন্দেহ প্রকৃত যুক্তিমূলক मत्निर नम्। अ मत्निर्द्त नाम ख्या। যাহার অন্যের ইচ্ছার উপর জীবন এবং মৃত্যু নির্ভর করে, ভারার সেই ইচ্ছা ভানিবার সময় এইরূপ ভয় হইয়া থাকে। প্রেমসঞ্চারের পর মিলন না হওয়া প্রাপ্ত যে অবস্থা আমরা বর্ণনা করি-তেছি তাহার আর একটা লক্ষণ যন্ত্রণা। এ যম্বণার ছইটী কারণ-সন্দেহ এবং আসঙ্গলিপা। তন্ত্রো আসকলিপাই প্রবল কারণ। এই কারণ চুম্মন্ত এবং শকুন্তলা উভয়েই বর্তমান। জর্জুরিত দেহ। উভয়েই উত্তপ্রশো-ণিত। উভয়েই জ্লিয়া যাইতেছেন। কিন্তু এ জালায় চুত্মন্ত অধীর, অস্থির: শকুछना श्रीप्र टिडनामृगा, विकनान्न, উত্থানশক্তি রহিত। ত্মন্ত ছট্ফট করিয়া বেডাইতেছেন এবং প্রতিনিশ্বাসে প্রজনিত চুলীর নাায় অগ্নি উদ্গীরণ করিতেচেনঃ---

(নিখাস ফেলিতে ফেবিতে) সেই তাপসভন্যা যে পরাধীনা ইহা আমি বিলক্ষণ জানি, এবং তপস্যার কিরূপ উগ্ৰপ্তাৰ তাহাও বিলক্ষণ জানি, তথায় আমি ভাবিতেছি। কিন্তু পাছে তিনি " আপন ইচ্ছায় কিছুই করিবার শক্তি নাই। তথাপি দেই হুৰ্লভ বস্ত হুইতে হৃদয়কে কিছুতেই ফিরাইতে পারিতেছি না।

<sup>\*</sup> বিষমবাবুর শৈবলিনী রমণী বলিয়া উন্মাদগ্রস্তা। সেও এই কথার একটি <sup>বিকর্মাত্র। তাঁহার কুন্দনন্দিনীও এ কথার একটি প্রমাণ। কিন্ত যে সকল</sup> বঙ্গীয় কবি এবং উপন্যাদলেখক অসিদ্ধমনোরথ নারিকাকে যোগিনী সাজাইয়া শশানে মশানে পৃষ্ঠে ছবিছাবে ঘুৱাইয়া লইয়া বেড়ান, তাঁহারা জীপ্রকৃতি বড় . একটা বুঝেন বলিয়া বোধ হয় না।

(মদনপীড়া প্রকাশ করিয়া) হে ভগবন্ কুস্মাযুধ! আপনি এবং চন্দ্র, আপনারা উভয়ে নিজ কোমল ও বিশ্বস্তমূৰ্ত্তিতে প্রণোভিত করিয়া প্রণম্পীড়িত বাক্তি গণকে প্রতারিত করিয়া থাকেন। আপ-নার শর স্থকোমল কুস্থমে রচিত এবং চন্দ্রের রশ্মি শীতল স্থাময়, কিন্তু আমার নিকটে ত ইহার সম্পূর্ণ বিপরীত দেখি-কারণ চক্র হিমগর্ভ রশ্মিদারা তেছি। অগ্নিবর্ষণ করিতেছেন আর আপনিও কুস্থমশরকে বজ্ঞের ন্যায় কঠিন করিয়া-ছেন। তপস্বিগণ যজ্ঞকার্য্যের অবসানে আমাকে গমনে অহুজা দিয়াছেন,একণে কোন্ স্থানে গিয়া প্রাস্তি দূর করি। (দীর্ঘনিশাস পরিত্যাগ করিয়া) একমাত্র সেই প্রিয়তমার দর্শন ভিন্ন আর শান্তি কোথার ? এই দারুণ রৌদ্রের সময় শকুন্তলা স্থীজনের সহিত প্রায়ই মালি-নীতীরস্থিত নিকুঞ্চেশে অবস্থান করিয়া থাকেন, অতএব সেই স্থানেই গমন করি। (গ্রন করিয়া স্পর্শস্থ অমুভব করত) আহা! এই স্থানটা শীতেলবায়ুর সঞ্চারে কি মধুর! আমার অঙ্গ সকল না কি অনঙ্গবহিতে জলিতেছে, তাই এই পদ্মসৌরভপূর্ণ মালিনীনদীর শীতল 🕤 বাতাসটুকু 'বারংবার গাড়রপে আলিঙ্গন করিতে ইচ্ছা হইতেছে। শকুস্তলা এই বেতসলতাবেটিত লভা-মণ্ডপে অবস্থান করিতেছেন, কেন না, ইহার এই সিকভাময় দারদেশে নৃতন

পদ্চিক্ সকল পতিত রহিয়াছে, আর এই পদচিহ্ন সকলের পূর্বভাগ উচ্চ রহিয়াছে আর পশাস্তাগ অখনভরে বালু-কায় বসিয়া গিয়াছে। অতএব লভাস্ত-त्रात्न थाकिया त्रथि। (त्रदेक्रथ क्रिया थानत्म) थाः! थायात ठक् क्र्डारेल।\* যাহার অন্তঃপুর স্থন্দরী রমণীতে পরি-পূর্ণ ভাহার এরূপ অবস্থা দেখিলে কে না বলিবে যে ভাছার রিপু যথার্থ ই ছর্দম-নীয়, আসঙ্গলিপা কিছুতেই মিটিবার এ অতি ভয়ানক অবস্থা। রকম অবস্থায় মাহুষ হিতাহিতবিবে-চনাশূন্য হইয়া পড়ে এবং ঘোর-অনিষ্টসাধনে সক্ষম হয়। কিন্তু এ অবস্থার, এ যন্ত্রণার একটি বিশেষ লক্ষণ আছে। যন্ত্ৰণায় বাহ্ এ জ্ঞান অতিশয় তীব্র। যে চন্দ্রশ্মি অনা সময়ে 'খবরে' আসে না, যে শীতল বায়ু অন্য সময়ে গায়ে লাগে না এ যন্ত্রণায় সে চক্তরশ্মি, সে শীতল্বায়্ তীব্রভাবে অমুভূত হয়। এ যন্ত্রণায় বাহালগৎ ভয়ানক প্রভাবশালী। কিন্ত শকুন্তলার যন্ত্রণা এ রকমের শকুন্তলা । মুমুর্র ন্যায় প্রাশায়িনী। ছন্মছকে দেখিয়া অৰ্থি তিনি যেন ভাঙ্গিয়া চুরিয়া পড়িয়াছেন। এক পা নড়িবার শক্তি নাই। যদিও তাঁহার বাহ্যিক দৃশ্য মুম্বু<sup>র</sup> ন্যায় তাঁহার অস্তর বিষম জালায় জ্লিয়া याहेर ७ हा । (म जाना ७७ क्षरन (य

<sup>\*</sup>স্থানাভাবে ইহার মূল দেওয়া হইলনা।

তজ্জন্য তিনি একরকম বাহামুভূতি-সে আলায় ভিনি পল্পত্র-রহিত। সঞ্চালিত বায়ু অহুতব করিতে পারেন সে আলায় বাহুদগৎ ভাঁহার কাছে অন্তিবহীন। সে আলায় একটি কথাও তাঁহার ওঠখনিত হয় নাই। তুই অনের যাতনার তুই রকম আক্রতি। ্একজন যাতনায় ছট্ফট ্করিয়া বেড়ায় এবং বাক্যে এবং নিখাসে অগ্নি উদ্গীরণ করে। আর একজন যাতনায় মুমুর্র नांत्र भिथिनाम् ७ वर मृत्वत नांत्र निछक । इरे बरनरे त्यन बात्यव शिवि । কিন্তু একটা গিরির গর্ভন্থ অগ্নি সতেজে শিখর ভেদ করিয়া উৎক্ষিপ্ত হইতেছে **এবং দ্রে অদ্রে বিক্লিপ্ত হইতেছে**; আর একটি গিরির গর্ভন্থ অগ্রি শিধর ভেদ করিতে না পারিয়া সেই গর্ডকেই বর্দ্ধিতবিক্রমে দগ্ধ করিয়া ফেলিতেছে। এখানেও দেখিতেছি যে পুরুষ এবং রম্ণীর মধ্যে প্রভেদ এই যে পুরুষের অভিব্যক্তি আছে, রমণীর অভিব্যক্তি নাই। এই মূলীভূত বৈপরীতা কালি-দাস যেমন আঁকিয়া দেখাইয়াছেন, আর कान कवि एउमन (मधान नाहे।

তার পর মিলন। প্রিরম্বদা এবং 
অনস্যার সমুধে ছমন্ত বলিলেন:
পরিগ্রহব্চত্বেহলি বে প্রতিঠে কুলন্ত মে।
সমুদ্রবসনা চোর্বী সধী চ যুবয়োরিরম্॥
বলিও আমি বহুপদ্ধী গ্রহণ করিয়াছি
কিন্ত এখন হইতে হুইটা বন্ত আমার
হৃদ্যে প্রতিষ্ঠিত হুইল—একটা আমার

আসমুদ্র সাম্রাজ্য আর একটা ভোষা-দের সধী শকুত্বলা।

শুমান প্রাক্ত প্রেমের একটা প্রধান
উপাদান। ছ্মান্তের প্রেমের সেই উপাদান এখন বাক্ত হইল। দেখিয়া প্রিয়দদা এবং অনস্মা সরিয়া গেলেন।
তখন রিপ্রান্ত ছমন্ত শক্তলাকে ধরিবার চেটা করিতে লাগিলেন। শক্তলা
উঠিয়া চলিয়া যাইতে উদাত হইলেন।
ছমন্ত বলপ্র্বিক তাঁহাকে প্রভিনিবৃত্ত
করিলেন। তখন শক্তলা বলিয়া
উঠিলেনঃ—

পোরব রক্ধ অবিণয়ং মৃষ্ণসংতন্তা বি ণছ অন্তণো পহবামি।

পৌরব! শিষ্টাচার ভঙ্গ করিও না। আমি লালসাবতী সত্য, কিন্তু আমার নিজের উপর আমার কোন ক্ষমতা নাই।

এই কথা শুনিয়া গুমন্ত তাঁহাকে গান্ধৰ্ক বিবাহের ইভিহাস বলিয়া এইটা ব্যাইতে চেষ্টা করিলেন যে শুকুলনের অমুমতি ব্যাভিরেকেও তিনি' আত্মসমর্পণে সক্ষম। শকুন্তলা ব্বিলেন না। তথন গুমন্ত তাঁহাকে বলিলেন যে আমি তোমাকে এখন ছাড়িব না; ছাড়িব কথন, না—

অপরিকত কোমলস্য বাবৎ কুস্থমস্যেক নবস্য বট্পদেন। অধ্রস্য পিপাসতা ময়া তে সদয়ং স্কারি গৃহতে রসোহস্য॥

যথন তোমার কোমল অক্ষত অধরের

মধুপান করিয়া আমার ধরতর পিপাসা নিবৃত্ত হইবে। এই বলিয়া তিনি অজি আয়াতুরপ কার্য্য করিবার চেষ্টা করি-किन्तु भक्ता छाहात्रहे नाम ভোগতৃফাতুরা হইয়াও তাঁহাকে প্রতি-নিবৃত্ত করিবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। नज्जामीनात नज्जामीनजा এখনও প্রবল: জ্ঞানহীনার জ্ঞান এ সময়েও পরি হার। কিন্তু সংযতচিত্ত চুম্মস্ত একে-বারে বিহ্বলমতি; জ্ঞানপ্রধান গুল্লস্ত मम्भूर्व छानशैन। यथन दाहाबग९ ज्लित विषय अनिष्टे घटि जशन त्रम्बी वांशबंगे जूल ना, भूक्ष जूल। অবশেষে হুম্মস্কের যাহা ইচ্ছা তাহাই इरेल। तिश्रु अग्नी इरेल। नाग्निश्वामन সংযত্তিত ধর্মবীরের পদখলন হইল। त्म शक्ष्यंगत्नत कात्रन त्महे धर्मावीत्त्रत প্রবণ রিপু। ছম্মন্ত ব্ঝিতেন যে গান্ধর্ম বিবাহ যুক্তিগঞ্চ নয়; ছ্ম্মন্ত বুঝিতেন যে শকুন্তলার আত্মসমর্পণক্ষমতা নাই। শকুন্তলাকে প্রথম দেখিয়া গিয়া হুমন্ত মাধবোর কাছে তাঁহার অতুল রূপের বর্ণনা করিলে পর মাধব্য তাঁহাকে বলি-লেন যে আপনি যত শীঘ্ৰ পারেন সে क्रथवङीरक प्रथम कविवाब रहेंडा कक्रन, विवय कतित्व इत्र उ त्म कान हिक्का-মন্তক ঋষির হাতে পড়িবে। তাহাতে তিনি বলিয়াছিলেন:--

> পরবৃতী খলু তত্তত্তবৃতী। ন চ সন্নিহিতোহত গুরুজনঃ।

তিনি পরাধীনা এবং তাঁহার গুরুজন গুছে নাই।

এখন শক্ষলা স্বয়ং সেই কথাই বিলিতেছেন। কিছু এখন ভিনি সে কথা না শুনিয়া শক্ষলাকে ব্ঝাইডেডেলেন যে তিনি আয়ুসমর্পণে সক্ষম, তাঁহার গুরুজনের সম্মৃতি লইবার আব-শাকতানাই। এ রহস্যের অর্থ— হর্দমনীয় রিপু। শক্ষলাকে কাছে পাইরা হ্মন্ত তাঁহার উন্নত নীতি, উন্নত বৃদ্ধি, উন্নত বিচারশক্তি, অসাধারণ চিত্তসংয্মক্ষমতা সকলই হারাইলেন। প্রথব রবি মেঘাচ্ছন্ন হইল।

ছমন্ত এবং শকুন্তলার মধ্যে দাম্পত্য সম্বন্ধ সংখ্যপিত হইয়াছে। তাঁহাদের পরস্পরের প্রতি কি রকম ভাব তাহা দেখিতে হইতেছে। আমরা मिथियां एयं इया कि इ तिभी तिश् পরবশ। তিনি ভোগলালসা চরিতার্থ করিয়া কণের আশ্রম হইতে নিজ রাজ-ধানীতে গমন করিয়াছেন। ভোগলাল্যা চরিতার্থ ক্রিয়াছেন বলিয়া ভাঁহার শকুস্তলা-প্রেমের উচ্ছেদ হয় নাই। শকুস্তলা তাঁহার হৃদয় দৃঢ়রূপে **अ**धिकांत्र कतिवारहन—तम क्रमाय मंकू-खना-एश्रम जीवन थाकिए উচ্ছिन्न हरे-বার নয়। অঙ্গুরীয় পুনর্দশন করিয়া ছ্ম্মস্ত যে ভয়ানক যন্ত্রণভোগ করেন তাহাই তাঁহার শকুস্তলা-এথমের গড়েছের পরিচয়। কিন্ত মহাক্বি সে পরিচয় অপেকা একটি সহলগুণে আশ্চর্যা পরি-

চন্ন দিন্নাছেন। ছ্র্বাসার শাপে ছ্মস্ত শক্ষলাম্বতি হারাইরাছেন। হারাইরা একদিন মাধব্যের সহিত বসিরা আছেন। এমন সময় একটি মনোহর গীতিধ্বনি প্রবণ করিলেন। করিয়া ভাঁছার মন এক অণৌকিকভাবে গলিয়া গেল। সেভাব এই:—

• কিং মুখনু গীতমাকণ্য ইষ্টজন বির-হাদ্তেহিপি বলবছৎক্টিতোহিমি। অথবা রম্যাণি বীক্ষ্য মধুরাংশ্চ নিশম্য শব্দান্ পর্যুৎস্কী ভবতি হ'ৎ স্থাতোহিপি জন্তঃ। ভচ্চেত্রদা ক্ষরতি ন্নমবোধপুর্বং ভাবস্থিরাণি জননাস্তরসৌহৃদানি।।

কই আমার ত কোন ইটবস্তর সহিত বিচ্ছেদ ঘটে নাই, তবে এই গীতপ্রবণ করিয়া আমার প্রাণ এত আকুল হইল কেন ? অথবা কোন রম্য বস্ত দেখিলে বা কোন মধুর শক্ষ শুনিলে স্থাধর অবস্থায়ও যে মামুষের মন আকুল হইয়া উঠে, সে বোধ ছয় তখন পূর্বজন্মের কোন স্থাদ্য প্রণামের বস্তাকে অজ্ঞাতভাবে অয়ণ করে।

কি কোমল, কি গন্তীর, কিপবিত্রভাব! এ ভাবের গাঢ়তা বিবেচনা করিলে
চমৎকৃত হইতে হয়! যে বন্ধুত জন্মান্তরপরিপ্রহেও স্থতিপথে থাকে সে বন্ধুত্ব
কত পবিত্র, কত গাঢ়, কত মিষ্ট। ত্যস্ত শক্তলাকে ভূলিয়া গিয়াছেন,কিন্তু শক্তঃলার অফুট স্থতি আজিও তাঁহার মনকে
এই অলৌকিকভাবে পরিপুরিত করিভিছে। তুর্কাসার শাপে ত্যস্তচিত আজ শকুত্তলাসম্বন্ধে মহাপ্রলয়প্রস্ত। সেই মহাপ্রলয়কেও ভেদ করিয়া সেই প্রেম ফুটিরা উঠিতেছে। মহাপ্রলয়েও टम तक्म ८०० देश व्यवस्था व्यवस्था विश्वस्था । ত্তের শকুন্তলা-ত্থেম যথার্থই গাড়তম, পবিত্রতম, কোমলতম্। কেনই বাসে त्म ब्रक्म न! इहेर्द ? भकू-ন্ত লা শুধু তাঁহার শারীরিক সৌন্দ-র্থোর স্বারা ছ্মস্তকে পরাজয় করেন তাঁহার মানসিক সৌন্দর্য্যের দারাও তিনি সেই পুরুষপ্রধানকে পরা-জন্ন করিরাছেন। ত্মস্ত এবং শকুস্তলা যে কয়দিন দম্পতিভাবে কণের আশ্রমে हिल्न, डांशास्त्र (म क्य्रमित्न बीवन-व्यनानीत विषय महाकवि किছू वरनन নাই। সে বিষয়টি তিনি পাঠকের দৃষ্টি হইতে যবনিকাচ্ছাদিত রাখিয়াছেন। একটিবারমাত্র একটি মুহুর্ত্তের জন্য সেই যবনিকার একটি পার্ম সরাইয়া দেখাই-য়াছেন। কিন্তু দেই মুহূর্ত্তমধ্যে দেই সঙ্কীৰ্ব দার দিয়া মহাক্বিণ এক আশ্চৰ্য্য নৈতিক । বিপ্লব দেখাইয়াছেন। তিনি **दिन्यार्थित एवं श्रम्य श्राम, वी**त्र श्राम ত্মন্ত শকুন্তলার কাছে বসিয়া শকুন্তলা-ময় হইয়াছেন, পুরুষের পৌরুষভাব হারাইয়া রমণীর রমণীয় প্রাপ্ত হইয়া-ছেন। পৌরবসভার শকুন্তলা বলিতে-ছেন :--

নং এক সিং দি মহে গোমনি সাম স্বাধ ননিনীপত্রভাষণগৃষ্ণ উদসং তৃহ হথে সমিহিদং সাসি তক্ষণং সো মে পুত্র কিদ্যো দীহাপকো ণাম মিঅপোদ্যো উনচ্চিদো। তৃএ অনং দাব পটমং পিমউ তি অমুম্মিনা উবছে দিদো উঅ-এণ। ণ উণ দে অপরিচ্মাদো হখ-রাসং উবগদো। পচ্ছা তদ্মিং একা মএ গহিদে সলিলে তেণ কিদ পণ্যো। তদা তুমং ইখং পহসিদো সি সকো সগদ্ধেল্প বিশ্বসদি হবে বি এখ আরপ্তযো তি।

একদিন আমরা উভয়ে নবমলিকামণ্ডপে বিদিয়াছিলাম, আপনার হত্তে
পদ্মপত্রের ঠোডায় জল ছিল, তৎকালে
আমার কৃত্রিম পুত্র দীর্ঘাপালনামে সেই
হরিণশিশু আদিয়া উপস্থিত হইল।
এই তবে অথ্রে জলপান করুক ইহা
বলিয়া আপনি স্নেহস্তরে তাহাকে নিকটে ডাকিলেন, কিন্তু সে অচেনা বলিয়া
আপনার নিকটে আসিল না। অনস্তর
সেই জল আমি গ্রহণ করিলে সে আসিয়া পান করিল। আপনি তাহাতে
উপহাস করিয়া বলিলেন, সকলেই
স্কলেন বিশ্বাস করে, তোমরা ছ্লনেই
জললা কিনা।

যে গুমন্ত বীরবিজ্ঞানে শাণিতশর হন্তে হরিণ তাড়না করিতে করিতে আশ্রমে প্রবেশ করিয়াছিলেন, এখন সেই গুমন্ত সেই আশ্রমে বসিয়া একটি বালিকার সহিত বালিকার ন্যায় হরিণের শুশ্রমা করিতেছেন! ক্রিনহুদর প্রস্কর্থান কোমলহুদর বালিকা হইয়া পড়িয়াছেন! ক্রম বালিকার হৃদয় সসাগরা পৃথিবীর রাজাকে পরাজয় করিয়াছে! এই নৈতিক

পরাজ্যের গুণেই ত্মন্তের শকুন্তলা-প্রেম এত কোমল, এত গাঢ়, এত পবিঅ, এত স্থারিভাবপূর্ণ। সে প্রেম এত বড় বিপ্লব ঘটাইরাছে বলিয়াই মহাপ্রালয় ভেদ করিয়া ফ্টিয়া উঠিতে পারিল। এবং সেই নিমিত্তই হিন্দুশাল্পজ্ঞ ত্মন্ত হিন্দুপতির পদগৌরব ব্রিয়াও কশাপা-প্রমে শকুন্তলার কাছে নতশিরে, নতজামু হইয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিয়াছিলেন।

হুমান্তের প্রতি শকুম্বলার প্রেম এক আশ্চর্যা পদার্থ। সে প্রেমের তুলনা नारे, পরিমাণ নাই, সীমা নাই। সে প্রেম একটি আশ্চর্য্য শক্তি। সেই শ ক্তির গুণেই কোমলতাময়ী শকুন্তলা কণের আশ্রম হইতে হস্তিনাপুর ইাটিয়া গিয়াছিলেন। সে প্রেম একটি মন্ত্র। সেই মন্ত্রে আহত হইয়া শকুরুলা ছর্কা-সার ভরম্বর শাপ শুনিতে পান নাই। সে প্রেমের একটি প্রধান উপাদান বি ছম্মত ভাষাকে গদক্বিধানে বিবাহ করিয়া একটি অবধারিত সময়ের मर्था डाहारक हिनाश्रात नहेगा गारे-(यन वित्रा हिन्दा (श्लन। ছুর্বাসার শাপপ্রভাবে তাঁহাকে ভূলিয়া এদিকে অবধারিত সময় অভীত হইরা গেল। অনস্রা ছ্মন্তের উপর চটিয়া উঠিয়া ভাছাকে গালি দিতে व्यावस कवित्तन :--

পড়িবুদা বি কিং করিসং। গুমে উইদেস্থ বি নিঅকরণিস্থ হথপালা পদ-রম্ভি। কামো দানিং দাকামো হোছ জেন অসচ্চসংছ কণে সুরহিঅ আ পদং কারিদা।

কিন্তু শক্তবার রাগ হইল না। তিনি পতিকে সন্দেহ করিলেন না, গালি দিলেন না। তিনি মুগ্ধহদয়ে, সন্দেহশ্নামনে প্নরায় পতিদর্শনপ্রতীক্ষা করিতে লাগি-লেন। আশ্রম হইতে বিদায় গ্রহণকালে চক্রবাকের জনা চক্রবাকীকে সকাভরে দীৎকার' করিতে দেখিয়া তিনি জন-স্মাকে বলিলেন:—

হলা পেক্থ নলিনীপত্রন্দরিদং বি সহ-অরং অদেক্ণন্তী আহুরা চক্কবাই আর-ড়দি ছক্করং অহং করেমি।

স্থি, দেখ, চক্রবাক্ নলিনীপত্তের
অস্তরালে আছে। চক্রবাকী তাহাকে
দেখিতে না পাইয়া সকাতরে চীৎকার
করিতেছে। কিন্ত আমি এতাবৎকাল
আর্য্যপুত্রকে না দেখিয়া আছি। আমি
হছর কার্য্য করিতেছি।

এ কথার রাগ বা সন্দেহের চিহ্নাত্র
নাই। এ স্লেহের কথা, আদরের কথা,
হদরের মিষ্টতার কথা। অবিখাসীর
সম্বন্ধে রমণী এমন কথা কর না।
আবার তথনই তাঁহার স্থীবৃর তাঁহাকে
বিনিরা দিলেন যে যদি হল্লস্ত তোমাকে,
চিনিতে না পারেন, তাহা হইলে তুমি
তাঁহারই নামান্ধিত অঙ্গুরীয়টি দেখাইও।
কথাটি শুনিবামাত্র শক্ষণা একটিবার
মাত্র যেন শিহরিয়া উঠিয়া পরক্ষণেই
সব ভ্লিয়া গেলেন। ভ্লিয়া গিয়া
পথিমধ্যে সেই অঙ্গুরীয়টিই হারাইয়া

**(क्लिल्न)** (श्रेममत्री मत्रनावाना पृथि-वीरक সরলহদয়ের সর্ব্বোৎক্রষ্ট প্রতিমা (मशहेतन। (म क्रमाय त्थायत वस्त्रमहत्क সন্দেহ স্থান পায় না। অগাধ ceta বিখাসমূলক। যেখানে অগাধপ্রেম সেই খানেই এই রকম সরলতা। শকুস্তলার প্রেম এত অগাধ, এত বিশাসমূলক, এত সরলতাময় না হইলে. তিনি স্থীদ্বয়ের উপদেশ শুনিয়া অগ্রে অঙ্গু-রীয়টি বস্তাঞ্চলে আঁটিয়া বাঁধিতেন **এবং মধ্যে মধ্যে श्रृं किया দেখিতেন** সেটি যথাস্থানে আছে কি না। কিন্ত তিনি তাহা করেন নাই। বোধ হয় কোন কোন বিজ্ঞ পাঠিকা বলিবেন যে শকুন্তলা বড় বোকা মেয়ে। বলি যে এমন স্থমিষ্ট বোকা মেয়ে জগ-তের আর কোন কবির কল্লনায় উদ্ভূত হয় নাই। শকুন্তলা অগাধপ্রেমে মুগ্ধ থাকিয়া এক মুহুর্ত্তের জন্যও পতিকে অবিশ্বাস করেন নাই এবং পতির নিকটে অন্যায়াচরণ আশস্তা করেন নাই। সরলাবালার প্রথম আশস্কা পতির কথা গুনিয়া<sup>®</sup> জন্মিয়াছিল। গৌতমী এবং শাঙ্গরিব যথন তুম্মত্তকে শকুস্তলাকে গ্রহণ করিতে বলিলেন তথন ছম্মস্ত वितासना :---

কিং চাত্রভবতী ময়া পরিণীতপূর্বা।

ইহাকে কি আমি পূর্বে বিবাহ করি-য়াছি ?

এবং তখনই শকুস্তলা ভাবিলেন :— হিজমং সংপদং দে আসন্ধা।\*

<sup>\*</sup> Monier Williams এ কথার এই অর্থ করিয়াছেন:- O my heart, thy

এখন আমার হৃদয়ের একটি আশ-কার কারণ অভিল।

শকুস্তলার প্রেমের আর একটি প্রধান উপাদান সম্ভ্রম । শকুন্তলা যাঁহাকে পতিরূপে গ্রহণ করিয়া হৃদয় সমূপ্ৰ क्रियाहिन छै। हार्क (महे श्रमाय श्रमा (म्वडा विनया मञ्जन करतन। ভাগিনীর জীবনের সর্বাপেকা ছঃখপুর্ণ সময়ে এই পতি-সম্ভ্রম তাঁহাকে এক অনির্বাচনীয় শোভায় শোভিত এবং মহিমায় মহিমারিত করিয়াছিল। পতি-কর্তৃক কুলটা বলিয়া পরিত্যক্ত হইয়। শকুন্তলা পতিহীনার ন্যায় মলিনবেশে छथक्रमात्र मीर्घकान कर्छात्र धर्माहत्रात অভিবাহিত করিরাছেন। সহসা সেই পতির সাক্ষাৎলাভ করিলেন। তাঁহাকে (मिश्राहे डाँहात शमग्र जानत्मारकृत হইল। কিন্তু হুন্মন্ত অমুভাপে শীর্ণ এবং বিবর্ণ হটয়াছেন বলিয়া তখনও তিনি পতিকে পতি বলিয়া ভাল চিনিতে भारतन नारे। किंद्र मिट्ट मृहूर्खरे হুম্মস্তের কথা শুনিয়া তাঁহার সন্দেহ ঘুচিয়া গেল। তখন তিনি কি করি-লেন ? 'জেছ অজ্জ উত্তো,' আৰ্যাপুলের জন্ন হউক, অফুটস্বনে এই কথা বলিবার পর বাষ্পাকুললোচনার কণ্ঠ অবরুদ্ধ হইস, তিনি নিতক হইলেন। শকুস্তলার नीर्चकानशामी इः अधन मृह्र्छ मस्य

रुहेब्राष्ट्र। (य प्र:४ व्यटनक वर्त्रद्र ४-রিয়া ভোগ করিয়াছেন, সেই তুঃখ এখন তাঁহাকে এক মুহুর্ত্তকালের মধ্যে ভোগ করিতে হইল। যেন স্থদীর্থ স্রোতস্বতী সহসা একমৃষ্টিপরিমিত স্থলে গুটাইরা পডিয়া বিপরীত তেকে উৎসাকারে छेठिए नाजिन। ध तकम मृदूर्ख धकरि ভয়।নক পরীকা। সে পরীক্ষার রমণী প্রায়ই ভাঙ্গিয়া পড়েন। তিনি হয় মৃচ্ছাপর হন, নাহয় পতির গলা জড়া-हेब्रा धतिब्रा मुर्क्शानिवात्रग करतन। हेडे-রোপীয় সাহিত্যে এ কথার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওয়া যায় কিন্তু সে পরীক্ষায় मक्छनात (म तकम किছुरे इरेन ना। তিনি আশ্চর্যা গান্তীর্যাসহকারে অটল-ভাবে দাডাইয়া রহিলেন। এ গান্ধী-ব্যাৰ মূল পতি-সম্ভম। বেখানে সম্ভমের অধিক্য সেইখানেই অসীম শক্তি,অসীম গান্তীৰ্য্য—দেখানেই ছৰ্বলতা দেখাইতে লজ্জা হয়, মন আপনিই দৃঢ় এবং महिमार्श्न इहेबा डेटिं। तम मिकि, तम গান্তীর্যা, সে মহিমা অতীব মনোহর। ব্ধন দেহ এবং মন ভাঙ্গিয়া পড়িবার কথা ভখন যে অটল এবং গন্তীর হইয়া . থাকে সে জগতের একটি প্রধান সৌন্দর্য্য এবং আরাধ্য বস্তা। শকুন্তলা পত্নী বলিয়াই এত অটল, এত গম্ভীর, কেন না হিন্দুপত্নীই পতিকে শ্রেষ্ঠতম

worst misgivings are confirmed. যেন শকুস্তলা পূর্বাবিধি এই রকম আশহা ক্রিতেছিলেন! কিন্তু তাহা হইলে শকুস্তলার চরিত্র, শকুস্তলার হৃদর কলন্ধিত করা হয়। বোধ হয় পঞ্জিতবর নে চরিত্র এবং সে হৃদয় বুঝিতে পারেন নাই।

বলিয়া পরম সম্ভমের সহিত ভালবাদেন। হিন্দুপত্নীর হিন্দুপত্নীত্ব কেহ যেন ঘুচায় না! হিন্দুপত্নীকে ইউরোপীয় পত্নীর नात्र मागावामिनी कतित्म छाहात हिन्तू-পত্নীত্ব ঘুচিয়া যাইবে। কিন্তু সকলেরই মনে রাখা উচিত যে, গুভাদৃষ্টবশত জগ-তের শুশ্রষা যে ভাগ্যবতীর স্বাভাবিক <sup>°</sup> ধর্ম এবং কর্ম তাহার পক্ষে পুরুষ্ জাতির সম্বন্ধে সাম্যভাব অপেকা সম্ভ মের ভাব বেশী উপ্যোগী এবং উপকারী। শকুম্বলার হৃদয় এক আশ্চর্যা পদার্থ। म छन्दात छानवामा अवाध, विश्वाम

অগাধ, ক্ষেহ অগাধ, সম্রমকারিতা অপরি-মেয় কোমলতা অনিক্চিনীয়, সরলভা চমৎকারিণী। সে হৃদয়ের কাছে পুরুষ-প্রধান ছমন্ত চিরকালের জন্য পরা-জিত। সে হাদয়ের মৃত্মধুব নিখাসে ত্দিমনীয় রিপুপরবশ ত্মান্তহ্দয় এক আ-শ্চর্য্য নৈতিকবিপ্লবে চিরসংস্কৃত। সে হৃদয় জগতের একটি আবশ্যকীয় মহো-পকারী নৈতিক শক্তি। পুরুষজাতির সংস্কাব এবং উন্নতির নিমিত্ত সে হৃদ-য়ের সৃষ্টি।

#### 

### রত্বতত্ত্ব।

ष्यामत्रा वक्रमर्गात्म (य ''त्रञ्जत्मा'' ना-মক প্রস্তাব লিখিতে আরম্ভ করি, এ প্রস্তাব ভাহারই অবয়বমাত। প্রকাশিত প্রস্তাবে মুক্তানম্বনীয় কতিপন্ন অনাণ উদ্ধৃত করিয়া মুক্তার জাতিনিব্য় প্রভৃতি প্রকাশ করা হইয়াছিল, সম্প্রতি ভাহার দোষ, গুণ, বর্ণ ও মৃল্যাদি নির-পণবিষয়ক কভিপয় প্রমাণ উদ্ধৃত কং । ঘনং ৫ সিগ্রহণ ৬ সচছায়ং ৭ তথা-রিয়া উপস্থিত প্রবন্ধ লিখিত হুইল। প্রাতনকালের তত্ত্বিৎ লোকেরা কি রূপে মুক্তাপরীকা করিতেন, তাহা বিবৃত করা যাইতেছে।

মংসাপ্রাণের মতে মুক্তাফলের গুণ ल्यान्यः ৮ चार्षेते वरः त्मावत व्यथान व्हा ३० है। ভন্মধ্যে ৪টা মহাদোষ এবং ৬টি মধাম দোষ, অতাে ইহার যথাক্রমে গুণ সকল বর্ণনা করা যাই-তেছে পশ্চাৎ দোষের বিষয় বর্ণিত इट्रेंद्र ।

শুণ যথা।

"সুতারঞ্চ সুবৃত্তঞ্চ ২ স্বচ্ছঞ্চ ৩ নির্মাল-

ফুটিত ৮ মেৰ চ।

षर्षे खनाः गमानाजा स्मोक्तिकाना

মশেষতঃ। মৎসাপুরাণ।

রত্বতব্বিৎপণ্ডিতেরা মুক্তাফুলের যে ৮টি মহাওণ নির্ণয় করিয়াছেন, ভাহার প্রত্যেকের নাম এই-- স্থতার (১) স্বর্ত্ত (২) আছে (৩) নির্মাণ (৪) ঘন (৫) স্লিগ্ধ (৬) সচ্ছার (৭) ও অফুটিড (৮)।

" স্থভার" নামক গুণ কাহাকে বলে ভাহা উক্ত হইতেছে যথা—

তারকাছাতিসংকাশং '' স্থতার'' মিভি গদ্যতে।''

গগনমণ্ডলক তারকার নাার ছাতি-বিশিষ্ট হইলে, মুক্তার সে গুণটির নাম "স্ক্তার।" এই স্ক্তার-মুক্তা অতি ছর্মভ।

স্ব্রগুণ কি তাহাও উক্ত হইয়াছে, যথা — "সর্বতো বর্ত্বং যচ্চ স্ব্রুং তরি-

গদাতে।"

যাহা সকল দিকে সমান স্থগোল তাহা "স্ববৃত্ত।"\*

স্বচ্ছ গুণ ু্যথা—স্বচ্ছং দোষবিনিশ্ব্ ক্তং।" ৪ প্রকার মহাদোষ ও ছয় প্রকার মধ্যম দোষ না থাকিলে, তাহা "স্বচ্ছ ' বলিয়া বাবসূত হয়।

নির্দাল গুণ যথা—'নির্দানং মলবর্চ্জি-ভং।'' মলরহিত হইলেই সে নির্দাল ইহা সকলেই বিদিত আছেন।

ঘনগুণ যথা—''গুরুতং তুলনে যদা তদ্ধনং মৌক্তিকং বরম্।'' যাহা ওলনে ভারি তাহা ঘন। এই ঘন মুক্তা সর্বা-পেকা শ্রেষ্ঠ।

न्निश्रक्षण यथा—''त्न्निहिरेनंत विनिश्रस्य प्रदक्षिश्रम्भिकि श्रमाटक।'' याहा त्न्नह

(মৃত তৈলাদি) অক্ষিতের নাার দেখার, ভাহা সিশ্ব গুণ বলিয়া খাতে।

সজায়গুণ যথা— "ছায়াসমধিতং যচ সচ্ছায়ং তরিগদাতে।" যে মুক্তার কোন না কোন ছায়৷ (কাঙ্কি) বর্তমান থাকে, তাহা সচ্ছায় মুক্তা নামে কথিত হয়। (মুক্তাফলের ছায়া কি ? তাহা ছায়া- 'পরীক্ষাম্বলে প্রকাশ পাইবে।).

অফুটিতগুণ—''ব্রণরেখাবিহীনং যন্তং-স্যাদক্টিতং শুভম্।''

যে মুক্তার ত্রণ অর্ধাং কোন প্রকার ছিল্রাকার চিচ্চ নাই বা কোন প্রকার রেখা নাই, সেই (বেদাণ) মুক্তা অফ্ টিত বলিয়া গণা এবং তাহা অতীব গুভ-দায়ক। বস্ততঃ বেদাণ মুক্তাই ম্লা-বান্।

মুক্তাসম্বন্ধীয় নির্দিষ্ট ৮টি গুণের কথা বলা হইল। বস্ততঃ এতদ্বিন জন্য কয়েকটি লক্ষণ আছে, বাহা থাকিলে রম্ভত্তপরীক্ষকেরা ভাদৃশ মুক্তাকে মহা-রম্ম বলিয়া বিবেচনা করিয়া থাকেন, সেই কয়েকটি মহাপ্তণ এই—

''ভ্রাত্নিষ্ণু কমলং কাস্তং মনোজ্ঞং ফুর-তীব চ।

' শ্রবতীব চ স্বজানি তন্মহারত্ব সংজ্ঞিত্য্।'' অপিচ,

''খেতকাচসমাকারং গুজাংগুশত-যোজিতম্।''

শশিরাজপ্রতিচ্ছারং মৌজিকং দেবভূষণম্।

<sup>&</sup>quot; মৃক্তাফলের গঠন নামাপ্রকার (নিম্বকল, চিপিটক, ধান্য, প্রভৃতি) হই গা থাকে, তর্মধ্যে সুস্তুত গুণের সূক্তা অতি মূল্যবান্।

ভাজিক্—দীপ্তিবিশিষ্ট। কোমল—
লাবণাযুক্ত। কান্তং—ইচ্ছোক্তেক্লারী
গুণবিশিষ্ট। মনোজ্ঞ—মনোছর। যদি
এই সকল গুণ থাকে, আর ফুরণ হয়
অর্থাৎ যদি আলোক বহির্গত হওরার
ন্যার এবং তেজ গলিয়া পড়ার ন্যায়
'লেধার, তবে তাদৃশ মুক্তা মহারত্ন নামে
'ব্যবহৃত হয়। এবং যে মুক্তা হচ্ছে ও
স্কুল্র কাচের সদৃশ আকারবিশিষ্ট ও চক্ররশিত্লা ছারাযুক্ত হয়, সে মুক্তা দেবভূষণ অর্থাৎ হল্লভ। ফলতঃ গ্রন্থান্তরে
মূল্যবান্ উত্তম মুক্তার সাধারণ লক্ষণ
এইরপে নির্ণীত হইরাছে। যথা—

প্রমাণবদেশীরবরশ্বিযুক্তং নিতং স্ববৃক্তং সমস্ক্ররদুং। অক্রেডুরপ্যাবহতি প্রমোদং। যম্মেক্তিকং তদ্ওণবং প্রদিষ্টং।"

'প্রমাণবং' অর্থাৎ দেখিতে বড়।
'গৌরব, অর্থাৎ ওলনে ভারি। রশ্মি
অর্থাৎ তেলোময় লাবন্য। যদি এই
কয়েকটি গুল থাকে, আর বর্ণ শুল্র, গঠনে
মগোল, ছিছে সমান ও স্ক্লতা থাকে,
দেখিলে অফেতারও আমোন উপস্থিত
হয়, তাহা হইলে নেই মৃক্রার গুল আছে,
বলা যায়।

প্রাচীন রদ্ধান্তে এইরপ মুক্তাসখকীয় বহুতর গুণের বিচার করা হইমাছে, বুধা প্রস্তাববৃদ্ধির জ্বে তাহার
উল্লেখ করা হইল না। মুক্তাসম্বন্ধীর
যে সকল দোবের উল্লেখ জাতে, তত্তাবতের মধ্যে গরুজপুরাণোক্ত ক্রেকটি

প্রবল প্রবল দোষের বিষয় বর্ণনা করা যাইতেছে।

স্কাসম্বন্ধে যে সমস্ত দোৰ আছে, তন্মধ্যে ৪টি মহাদোষ, ৬টি মধ্যম দোৰ, এবং এতভ্নি ছই একটি ক্ষুত্ত ক্ষুত্ত দোষও আছে। যথা—

''চত্বারঃ স্থা মঁহাদোষাঃ ষন্মধ্যাশ্চ প্রস্কীর্ত্তিতাঃ।

এবং দশ সমাধ্যাতা তেষাং বক্ষ্যামি| লক্ষণম্ ।'' ''শুক্তি>লগ্নশ্চ মৎস্যা২ক্ষো অঠরঞ্চাওতি

রক্ত৪কম্ ত্রিরতংক চিপীটক্ষ৬ ত্রাশ্রং৭ ক্লশক৮

মেব চ ॥ কুল্মপাৰ্শমনুক্তি ১০ মেক্সিক চন্দ্ৰত

ক্বশনপার্থমবৃত্তঞ্চ> মৌক্তিকং দোধ-বস্তবেৎ।।"

মুক্তাগন্ধকে চারিটি মহাদোষ এবং ছয়ট মধামদোষ। সর্বাদমেত দশটি দোষ রত্নপরীক্ষকগণ কর্তৃক আখ্যাত হইয়াছে। এই দশটি দোষের নাম ও লক্ষণ ক্রমে বলা যাইতেছে।

শুক্তিলয়, মৎসাক্ষ, জঠর ও অতি
রক্ত; এই চারিটি মহাদোষ বলিরা
গণা। বিবৃত্ত, চিপীট, ব্যাশ্র, ক্লশ, ক্লশপার্য ও অবৃত্ত, এই ছয়প্রকার দোষ
মধ্যম বলিরা খ্যাত। প্রথমোক্ত শুক্তিলগ্ন প্রভৃতির লক্ষণাদি কিরপ ? তাহা
উলিখিত ক্রক্রমধৃত গ্রুড়পুরানের প্রমাবেই নির্দিষ্ট আছে যথা—

> ७ किनध---''यदेव करमाम मर्गम ७ कि-धर्मा विভাব্যতে खिक्तिशः मयाशांजः मानाः

कुर्वकात्रकः।"

যে মুক্তার কোন এক প্রদেশে ভগ্ন শুক্তিথণ্ড (বিফুকের শব্দ) সংশ্লিষ্ট থাকে, ভাহা "শুক্তিলয়" নামে খ্যাত এবং ভাহা কুঠরোগের সাকর্ষক।

২ মৎস্যাক্ষ।—''মীনলোচনসন্ধাশো দৃশান্তে মৌক্তিকেডু যঃ।

মংস্যাক্ষঃ স তু দোষঃ স্যাৎ পুত্রনাশকরো ধ্রুবম্।"

কোন কোন মুক্তার কোন কোন প্রাদেশে মৎস্যের চক্ষ্র নাার একপ্রকার চিহ্ন দেখা যার। প্রক্রপ দৃশ্যটিকে মৎ-স্যাক্ষ বলে। এই মৎসাক্ষ মুক্তা ধারণ করিলে ধারকের পুত্রনাশ হইরা থাকে। ভ কঠর।—"দীপ্রিহীনং গতছারং ফঠ-রং তহিত্ব ধাঃ।

তন্মিন্ সন্ধারিতে মৃত্যুজারতে নাজ-সংশয়: ।''

যাহার দীপ্তি ও চারাবিহীন, তাহার নাম ''জঠর।" এই জঠর জাজীর মৃকা ধারণ করিলে মৃত্যপ্রাপ্তি হইরা থাকে। ৪ অতিরক্ত।--"মৌক্তিকং বিজ্মচছার মতিরক্তং বিভূর্ধাঃ। দারিজ্ঞানকং যত্মাৎ ভত্মান্তং-

পরিবর্জন্মেৎ।।"

কোন কোন স্থানের স্কার প্রবাদের
ন্যার রক্তাভা জনিরা থাকে, সেই সকল
স্কা রত্নাত্তে "অভিরক্ত" নামে নির্বাচিত হর। ডাহা ধারণ ক্রিলে দ্রিজ্তা

জন্মে বলিয়া এই শ্রেণীর স্কাবর্জন করিবেক।

৫ ত্রিবৃত্ত।—"উপযুগপরি ভিষ্ঠস্তি বলয়ো যত্র মৌক্তিকে।
ত্রিবৃত্তং নাম তস্যোক্তং
সৌভাগাক্ষয়কারকম্।"

যে মুক্তার উপয়ুপির বলি অর্থাৎ ' শুরের নাার রেখা খাকে ভাহার নাম' "ত্তিরুত্ত।" এই ত্তিরুত্ত মুক্তাখারবে সৌভাগা ক্ষরপ্রাপ্ত ইরা থাকে। ৬ চিপীট।—"অবৃত্তং মৌক্তিকং যচ্চ চিপীটং যরিগদাতে।

> भोक्टिकः धिग्रटङ यেन ভদ্যাকীর্দ্রির্ভবেৎ দদা।"

যাহা "চিপীট" বলিরা উক্ত হইরাছে, তাহা অবৃত্ত মধ্যে গণ্য (অর্থাৎ হ্রগোল নহে) যে মহ্যা এই " অবৃত্ত" মুক্তা-ধারণ করে, সে সর্বাদাই অয়শোভাগী হর।

৭ ত্রাশ্র।—''তিকোণং ত্রাশ্রমাখ্যাতং' সৌভাগ্যক্ষকারকম্।''

ত্রিকোণাকারে যে মুক্তার গঠন নিশার হয়, তাহা ''ত্রোশ্র' নামে খ্যাত। ত্রাশ ুমুক্তা সৌভাগ্যের হানিকর।

৮ कृम।—''तीर्षः यद्धः कृमः (श्राखः श्रक्षाविभागकात्रकम्।"

দীর্ঘাকার মুক্তা "কুল" সংজ্ঞাপ্রাণ্ড হয়। এই মুক্তা বৃদ্ধিনাশক বলিয়া প্রাণ্ডি সিদ্ধা

৯ কুশপাৰ্থ।—নিৰ্ভগ্ন মেকতো যচ্চ কুশ পাৰ্খং ভছ্চাতে।"

যাহার কোন এক প্রদেশ ভগ্ন বা ভগ্ন প্রার অথবা নির্ভগ্ন অর্থাৎ বক্র বা বন্ধুর, তাহাকে "कुणभार्च" वना यात्र। এই কুশপার্থ মুক্তাও নিক্দনীয়।

১- অবৃত্ত।--- অবৃত্তং পিড়কোপেতং সর্বর সম্পত্তি হারকম্।"

† পিড़कायूक मूकाणन "चव्छ" नारम বাৰস্ত হব। এই অবৃত্যুকা ধারণ कतिता मक्त मण्यु छि नहे हम।

অত:পর বক্তবা এই যে, মুক্তাসম্বন্ধে খাণ ও দোষ যাহা পুরাতন রত্নতব্বিৎ পণ্ডিতেরা নির্বাচন করিয়া গিয়াছেন, ভাহার সমুদ্র সকলন করা ছ:সাধা ও निर्द्धायन। এ विवय व्यवभा काउवा यून यून विषय छिन मः करण वाङ करा

[ इरेन । পूर्व्स दिंग ग्राधा ग्राधा मूका-সম্বন্ধীয় ছায়াও কান্তির কণা বলা হই-রাচে, তাহার অভিপ্রায় ুগরে বিশদরূপে वाक करा बाहेरन। कना का कि छ छा-য়ার প্রভেদ এই যে, মুক্তার লাবণাবিশে-বের নাম কান্তি আর বর্ণবিশেষের নাম চানা। 'ভরতরসপ্রকরণ' নামক গ্রন্থে মুক্তাফলের কাস্তির সহিত উপমা দিরা ''লাবণা কাহাকে বলে ?'' ভাহা ব্ঝান र<sup>हे ब्राहि ।</sup> प्रकारिक वि अक्षाब हेन्-টলে চিক্কণভাব দৃষ্ট हुद्द, ভাহাই স্ত্ৰী-भद्रीदवद सावना।

> ক্রমশ:। জীরামদাস সেন।

--<del>हिला ३३ दिला १९३</del>--

## পশ্চিমদেশে বাঙ্গালার দ্বর।

खना यात्र, बाजानात श्रीहाब्बत हेना-नीः मिन्नी, नाटहात भर्यास सन्न कति-शाष्ट्र। राज्ञानित भरक हेटा म्लक्षात विषय वरहे। अनाडेठात सन्य वात्रानाम, একণে সেই ওলাউঠা পৃথিবী রসাতল লার আল অভিক্রেম করিয়াছে, এখন वित्रानात नाम मर्सव मर्सकर्छ উচ्চा विष इहेरव।

क्लवध्य नाम वानालात अन्त हित-कान वानांनात वद्ध हिन, कथन घटतत

वाहित हम नाहे, क्थन अमिक अमिक নজর করে নাই; একণে আবার এ ন্তন প্রবৃত্তি তাহার কেন হইল বলা যায় না। বাদালির ছৈলেরা ভারতবর্ষের সাবেক সীমা কেন উল্লন্ডন করিতে আরম্ভ দিতেছে। আনবার বাজালার জ্ব বাজা- , করিয়াছে ভাহা ব্ঝা যায়, কিন্ত জ্ব কেন আপন ঘরের বাহির হইল তাহা व्वा यात्र ना।

> বাঙ্গাবার জ্বর পশ্চিমদেশে কেন গেল **এই नहेन्रा** अशास्त्र (प्रशासन कारमान्त रुरेट्ट ; अस्मकात्न हेहा निक्ठि

<sup>†</sup> फ्रक्षित नावि हिरूटक शिष्का वटन।

হইরাছে বে, ইট্ট ইণ্ডিরা বেলপ্তরে নির্দ্ধিত হওরার পর পশ্চিমাঞ্চলে এই জর গিরাছে। কাজেই সকল ভর্ক মৃদ্দীভূত হইরা শেষ ছইটি অকাট্য কার্য়ণে আনিরা দাঁড়াইরাছে, একটি এই বে বালালার জর রেলের গাড়ি চড়িরা পশ্চিমে গিরাছে। অপর হেড়, এই বে রেল-ওয়েরছারা পরঃপ্রণালী কর্জ হওরার পশ্চিমে জর আরম্ভ হইরাছে।

উভর হেতৃই সঙ্গত বলিয়া বোধ হয়।
গাড়ির স্থবিধা হইরাছে, অভএব বাঙ্গালার জর যে তীর্থবাত্তা করিতে বাইবে
তাহা সম্পূর্ণ সন্তব। আবার রেলওয়েয়ারা
পর:প্রণালী বে কৃষ্ণ হইরাছে, তাহাও
নিশ্চয়। বিশেষতঃ, সকলেই বলে যে,
কেবল রেলয়ের নিকটবর্ত্তী গ্রামসমূহেই
এই জর প্রবেশ করিয়াছে, দ্রগ্রাম
সমুদর পূর্ববং সচ্ছন্দে আছে।

কিন্ত বাঁহারা বলেন বে, গাড়ী চড়ে 
অর পশ্চিমে গিরাছে; ভাহারা সামান্য লোক হউক ভাহাদের সংখ্যা নিভাস্ত 
অধিক, অতএব বহুতর ব্যক্তির সল্ল 
ছাড়িয়া অনকতক লোকের অর্থসরণ করিতে পারা যার না। আমরাও কাজেই 
বহুচেটা করিয়া সেই বহুজনম্বলভূক্ত 
হইয়াছি।

আমরা একবার রেলওরে উঠিরা হগণী হইতে বর্দ্ধানে ঘাইডেছিলাম, ছই এক জোল গেলে একটি বিদ্ধী অর্থাৎ বিবিপোকা মাঠ হইতে উড়িতে

উড়িতে আমাৰের গাড়ীতে করিল, এবং গাড়ীর ভিতর উড়িয়া विकारेख नामिन। গাড়ী বায়ুবেগে ছুটতেছে, কিছ তথাপি বিদ্ধী আপন दिश बाडाईन मा : मार्क द्यक्रभ नवानि চালে चुबिबा, किविबा, छेठिबा, नामिबा উড়িতেছিল, সেইদ্নপ উড়িতে লাগিল **এবং क्राम जामारमत नरम श्रीत प्र**भ क्ताम **भव श्रम। (हे** श्रम माम गर्भा मध्या (व इटे अकि नीनक वा काक উড়িতেছিল, তাহারা ছই মিনিটের মধ্যে পশাতে পড়িতে লাগিল: কিছু বিলী দশক্রোশ পথ ক্রীড়া করিছে করিছে গেল। মাঠে উড়িলে বিলী শতহত্তও টে্ণের সঙ্গে ঘাইতে পারিত না: কিন্তু গাড়ীর ভিতর উড়িতেছিল ব-লিয়া দশকোশ গেল। ইহাতে এই **छेभनकि इटेट्ड भारत रय, विनी र**य বায়ুতে উড়িতেছিল, সে বায়ু গাড়ির সঙ্গে সঙ্গে যাইভেছিল, মাঠের বায়ুর গাড়ীর পশ্চাতে পড়তেছিন না। বদি এ কথা সভা হয় যে, গাড়ীর ভিতরের বাহু গাড়ীতেই থাকিয়া যার, তাহা **इहेरन वाजानात वायू अ**ठाइ वह-ু পরিমাণে পশ্চিমে চালান বাইতেছে খী-কার করিতে হইবে। নিত্য ত অর গাড়ী যার না! বালালার বিষ একণে কার্ফেই পশ্চিমে অনারাসলভা হইরাছে। <sup>এই</sup> कता द्रमश्रद्धत श्रादारे यात्रामात कत भीश, एक्या यात्र, अञ्चल अरक्**वा**रत नाहे।

# বঙ্গদশন।

#### সপ্তমবৎসর।

৭৯ সংখ্যা।

---EE : 12 ---

### স্থতন খাজানার আইন সম্বন্ধে কলিকাতা রিবিউএর মত।

রেণ্টকমিশনের রিপোর্ট বাছির হই-প্রায় বংসরাবধি ধরিয়া এই রিপোর্ট প্রস্ত হইযাছে। ঝড বৃষ্টির আগে সব নিধর হইয়া যায়. জল থমথমে মারিয়া যায়, গাছপালার পাতা পর্যান্ত নড়ে না, রিপোর্ট বাহির হইবার পূর্বে বাঙ্গালার রাজনৈতিকক্ষেত্র সেই রূপই ছিল। যেমন নিস্তব্ধ বিস্তীর্ণ इप लाई निक्ल क्रिल ठारिनिक् व्यात्नाष्ट्रिक इहेब्रा डिटर्ग, निख्क मःवान-প্রসমূহমধ্যে ২১শে জুলাইরের রিপোর্ট পড়িয়াও ঠিক তাহাই হইয়াছে। রিপোর্ট বিল'ও কাগলপত महेम्। (न्नामाने शिष्केषानित्र श्वारशा ४०८। नक्रवत्र পড়িবার অবসর হয় নাই, হইবার क्षां नारे अथह मकत्नरे जानन जानन মত প্রকাশ করিতে,কুন্তিত হয়েন নাই। क्ट वनिमान, श्वांत तिर्शार्ध कत्र, আর বিশই কর, রায়ভের সঙ্গে স্থায়ী

বন্দোবন্ত না করিলে কিছু হইবে না।
কেছ বলিলেন, বাপু যা ছিল বেশ ছিল,
আবার কেন ঘুমন্ত বাঘ জাগান হয়।
কেছ বলিলেন, জমীদারের সর্ক্রনাশ
হইল, কেছ বলিলেন, প্রজার শোষণ
করাই রাজার উদ্দেশ্য। এই সমন্ত
গোল্যোগের মধ্যে কলিকাতা রিবিউ
উচ্চৈ:ম্বরে বলিয়া উঠিলেন:—

The permanant settlement is a great accomplished fact in Bengal, and can already claim an antiquity of nearly a century; it has only just recovered from the position of unstable equilibrium into which it was—we still cling to the belief—unintentionally thrown by the Act X of 1859. The elaborate draft Bill in two parts is designed to upset it, it does not

purpose this and that minor alteration in the multiform system of rights which has grown under the shadow of the permanant settlement, but it deliberately aims a decisive blow at its fundamental condition:

'-But that two handed engine at the door Stands ready to smite, once and smite no more.'

অর্থাৎ দশসালা বন্দোবন্তে যে সব

শব্দ জমীদারকে দেওয়া হইয়াছিল, ৫৯

সালের ১০ আইনেই তাহার প্রায় সবই
লোপ হইয়াছে, যাও কিছু ছিল এইবার
ভাহাও গেল। আইন সাঁকারির করাত

হইয়া দাঁড়াইল আগু হইলেও কাটিবে
পিছু হইলেও কাটিবে।

এই সহক্ষে কলিকাতা রিবিউএর প্রবন্ধ হং পৃষ্ঠা। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালারের একজন প্রধান ছাত্রের লেখা। যেমন কলমের জোর, তেমনি লেখার বাঁধনি, তেমনি স্ক্র দৃষ্টি। কিন্তু হইলে কি হয় লেখা দেখিলেই বোধ হয় কোন উকীলের বক্তৃতা; কেবল মকেলের দিকেই টান। লেখার সবই ভাল কেবল গোতম আর আরিষ্টটালের পিওদান ও আদাপ্রান্থ। আজি কালি যদি গৌতম খারি স্ক্র নির্দ্ধাণ করিতেন তাঁহাকে দিনীরত্য chapter এর হেডাভাস ছল জাতিনিগ্রহণ্ডানের উদাহরণের জন্য

আর কোথাও যাইতে হইত না। এক আগুনাবুর প্রবন্ধনাথেই সন পাইতেন। প্রবন্ধটী ইংরেজিতে লিখিত; কিন্তু ইংরেজি যেই পড়িরাছে সেই হাসিয়াছে বাস্তবিক ইংরেজিতে তাহার খণ্ডন অনাবিশাক। এইজনা বাসালারই তাহার খণ্ডন করিতে আমরা প্রবৃত্ত হইয়াছি।

युक्तिभाष्टरात्र शृद्ध वकि कथा वना আবশ্যক। প্রবন্ধবেশক State Literature এর উপর বড় চটা, ভাঁহার মতে আইন পাশ হইবার পূর্বেবি যে সকল মিনিট, রিপোর্ট, ও অন্যান্য লেখালেখি চলে সে সকল ভ্যাগ করাই লোকের কর্ত্রবা। তিনি চান যে, লোকে আইনে যা আছে ভাহারই অমুষামী হইয়া কার্য্য कक्रक। किन्नु चाहित्तत्र चर्यावस्त्र मत्त्रह হইলে যেখানে ব্যাখ্যা বৃদ্ধিবলাপেকার উপর নির্ভর করিতে হইবে, সেধানেও মিনিট রিপোর্ট ইত্যাদির পাঠের প্রয়ো-জন নাই। কিন্তু অ,মাদের মতে এ विशार्षे आपि अमृत्या, **উहादा आ**हेरने व অর্থবৈশদা পক্ষে যেরূপ সাহায়া করে এত আর কিছুতেই করে না। লে**থ**ক টেট লিটবেচরের উপর চটা অথচ আত্ম-স্থার্থসিছির জন্য তিনিও Pemberton Leigh সাহেবের মত উদ্ধার করিতে কস্থর করেন নাই। (৩৫৯ পৃঃ)

তিনি বলেন চিরত্বারী বন্দোবত কণ্ট্রাক্ট বই ত নর। বেমন নোট কণ্ট্রাক্ট তেমনি উক্ত বন্দোবতও কণ্ট্রাক্ট। চুক্তি অতি কটিন এজক মনেকে উহার অনেক প্রকার অর্থ করিয়া পাকে। তথাপি উহা চুক্তি ভিন্ন আর কিছু নহে। এই চুক্তিতে বর্তমান জমীদারদল যে লাভ-প্রপ্র হইয়াছেন তাঁহারা তাহার পূর্ণ মুল্য দিয়াছেন, ইত্যাদি, ইত্যাদি।

আনাদের মতে উহা চুক্তি নহে উহা আইন; বাণভাপক সমাজ্বারা

নীপিবিদ্ধ; উহা হইতে অনেক চুক্তি উৎপল্ল হইয়াছে কিন্তু উহা নিজে চুক্তি নহে।
যদি চুক্তি হয় কে কে সে চুক্তি করিল ং
গ্রন্মেণ্ট আরে জ্মীদার। প্রজা এ
চুক্তির মধ্যে কেহ নহে। যাহার জ্বা
ভাহার মত না লইয়া, ভাহাকে জিজ্ঞাসা
না করিয়া সামান্য কর্মচারীকে ভ্রামী
বিস্য়া প্রকাশ করিবার গ্রন্মেণ্ট কে ং

পারমানেট সেটলমেট যদ চুক্তি হয় তবে উহা তোরের চুক্তি আইনমতে উহার কোন মূলা নাই। যদ আশুবাবুব কথামত উহা চুক্তি, সিদ্ধ চুক্তিই হল, তবে উহা দ্বারা কি প্রজাদের ভূষণ বাজেয়াপ্র করা হয় নাই। উহা কি যথেচ্ছাচার প্রণালীর চূড়ান্ত নিদর্শন নহে? তাহা হইলে এক কলমের খায় ৩ কোটা প্রজাব সমস্ত জমীপ্ত স্বস্ত কাড়িয়া লইয়া জন্ত কতক ধনী লোককে ভূমিতে নির্ট্টি স্বস্থান বলিয়া স্বীকার করা, খোর মূর্থতার কর্মা হইয়াছে। এমন পারমানেটে সেটল মেট যত শীত্র উরিয়া যায় ততই ভাল।

আরও এক কং।, যদি এই বন্দেংজ টুকিই হয়—যদি উহা আগুবাবু ঘ:হা ব্লিয়াছেন ভাই হয়,—যদি সমগু ইতিহাসের মুগুপাত করিয়া সমস্ত যুক্তির শ্রাদ্ধ করিয়া চিবস্থায়ী বন্দোবস্ত চুক্তিই হয় তথাপি জমীদারেরা চুক্তিভঙ্গ অপ-রাধে অপরাধী হইয়াচেন। ১৭৯৩ অন্দের প্রথম রেগুলেশনের সপ্তম ধারায় লিখিত আচে—

To discharge the revenues at the stipulated periods without delay or evasion and to conduct themselves with good faith and moderation towards their dependant Talukdars and Ryots, are duties at all times required from the proprietors of land and a strict observance of those duties is now more than ever incumbent upon them in return for the benifits which they will themselves derive from the ordes now issued.

যদি দশশালা বন্দোবস্ত চুক্তিই হয়
তবে প্রজাদিগের প্রতি সদ্বাবহাব করাও
সে চুক্তির এক করার। কিন্তু জমীদাবেবা কি এই করারমত কাজ
কবিয়াছেন 
বিভাগিরা কি প্রজাদিগের
প্রতি সভা সভাই good faith and
moderation দেশালয়
বন্দোবস্ত ১৭৯৩ খ্রীপ্রান্থে চিরস্তায়ী হইয়াভে। আজিও একশত বংসর পূর্ব
হয় নাই; ইহারই মধ্যে খোদকস্ত রায়তের নাম লোপ হইরাছে। প্রগণা

नित्री थ,--- याहात अधिक थांकना आतात्र कत्रा वित्रमिन चारैनिविक्क,--व्यथाविक्क এবং যুক্তিবিরুদ্ধ,—জমীদারেরা উঠাইয়া দিয়াছেন। সর্বত আইনসঙ্গত হউক আর নাই হউক, থাজনার বৃদ্ধি লইয়া টানাটানি করিয়াছেন। তাঁহাদের জালায় কত প্রভা দেশত্যাগ করিয়াছে। কত স্থানে গৃহদাহ গ্রামদাহ করিয়া তাঁহারা প্রজাকে উৎথাত করিয়াছেন। স্থানে স্থানে তাহাদের প্রতি এতই অত্যাচার कत्रा इहेब्राएइ (य, वश्रामणीय निर्कीत, নিরীহ প্রভাগণও আর সহা করিতে না পারিয়া বিদ্রোহী হইয়াছে। এই কি তাঁহাদের good faith and moderation ? কর্ণোয়ালিস তাঁহাদিগকে যে कद्राद्य मण्णांना वत्नावछ क्रथ हुकि मिश्राहिन एम कदात कि छत्र रश नाहे? একপক হইতে করার ভঙ্গ হইলে সে চুক্তি কি বাতিল ও নামঞ্র হয় না? অতএব শুদ্ধ এই এক করারভঙ্গ অপ-द्राध वण्डः मण्णाना वत्नावछ कि উঠাইয়া দেওয়া উচিত নয় ?

কিন্ত বাস্তবিক দশশালা বন্দোবস্ত
চুক্তি নহে--উহা ব্যবস্থাপকসমাজ হইতে
বিধিবদ্ধ আইন। নচেৎ হইপক চুক্তি
করিয়া তৃতীয় পক্ষের স্বত্ব লোপ করা
দক্ষার চুক্তি ভিন্ন আর কিছু নহে।
প্রকৃত ভৃষামীকে ত্যাগ করিয়া আর
একজনকে ভৃষামী বলিয়া খীকার করা
চুক্তির কর্মা নম। আইন ভিন্ন উহা
ভার কেহু করিতে পারে না। এবং

দশসালা বন্দোবন্তের আইনে তাহাও করে নাই।

আমাদের ভারতবর্ষে অতি প্রাচীনকাল **ट्टेट्ड ध्रमारे ज्**मित मानिक। जामा-रमत रय मखन ও পাটোরারী প্রথা প্রচলিত আছে তাহাতে প্রভার স্বত্ব সাবাস্থ করিয়া দিতেছে। জমীর দক্রণ থাজানা (rent) আমাদের দেশে ছিল না। মহুতে তাহার উল্লেখ নাই। সংস্কৃত কোন পুস্তকে খাজানা দিবার উল্লেখ নাই। কাহার কত করে রাজস্ব দিতে হইবে,সেই সম্বাদ্ধ মন্ত্র বলিয়াছেন "ধান্তা-নামষ্টমোভাগঃ ষষ্ঠ দাদশ এব বা," অর্থাং शास्त्रात वर्ष व्याः म व्यथेत। व्यष्ट्रेम व्यथता দাদশ অংশ রাজাকে করম্বরূপ দিতে হইবে। রাজার জমী কর আর নাই কর তোমাকে রাজস্ব দিতে হইবে। এইজন্য अधिता वत्न कूड़।हेशा (य अक्ट्रेशिंहा धाना সংগ্রহ করিতেন, ভাহারও যঠাংশ রা-জাকে দিতেন। প্রজারা সকলই রাজাকে কিছু না কিছু দিত, কেহই রেয়াত পা<sup>ই</sup>ত কামার কুমার ছুতার প্রভৃতি সকলেই রাজস্ব দিত অথচ হয় ত তাহারা কেংই জমি করিত না। এইরপ করের নাম বরং রাজ্য revenue হইতে পারে কিছু উহা খাজানা নহে। সময়ে বৃটীষ গবর্ণমেণ্ট ঘেমন নানা প্রকার টেক্স বসান সেইক্রপ আমাদের দেশে চিরস্থায়ী টেকা ছিল জমির খালনা স্বতন্ত্র ছিল না। সেই টেক্স বা রাজ্ব কখন কখন রাকারা বৃদ্ধি করিতেন।

२२७

সম্যে স্থানে তীহারা কর রেয়াতও করিতেন। প্রকা ক্ষীণ এবং রাজা অত্যা-চারী হইলে ছুর্বাহকরভার তাহারা কট্টে সৃষ্টে বছন করিত কিছু ফাক পাইলে তাহারা বিদ্রোহ করিতেও ছাড়িত না। এই রূপে ক্রমে মুসলমানদিগের অধিকার কালে প্রভার টেক্স ছাড়িয়া ভূমির টেক্স হয়,সেই টেক্স কিছু কিছু করিয়া বাড়িয়া, আকবরের সময় এক তৃতীয়াংশে দাঁড়ায়। ইহার নাম আসল জমা। ক্রমে মুসল-मारनता नाना कात्रगरभाषः आत्र किहू किছু आमात्र कतिछ, छाहात नाम चार-ওয়াব। বুটীষ গবর্ণমেণ্টও দেওয়ানী পাইয়া অবধি বরাবর ঐরপ আবওয়াব আদার করিয়া আদিয়াছিলেন। অক্রে প্রথম আইন ছারা যথন সমীর খহ চিরকালের জনা জমীদারকে দেওয়া হয় তথন এই আবেওয়াৰ ইতাদি সমস্ত আসল জমাভুক্ত হইয়া যায়। তাহার পর আবওয়াব ইত্যাদি আদায় করা এককালীন বন্ধ করিয়া দেওয়া হয়। (১৭৯৩ শালের অস্ট্রম আইনের ৫৪ ও ৫৫ ধারা) অথাৎ প্রজার নিকটছইতে কোন বাবে আর অধিক কর শইব না, श्रीकांत्र कताहेशा अवः ८म्ट अवर्द्धनीय कत निर्फिष्ट कतिवात छात समीमाद्यत छेशत निया गवर्ग्य क्यीनात्रक हित्रनिटनत <sup>मठ</sup> ज्ञामी वि**नम्ना चीकात कतिरन**न। **घठ ६ व मर्गाला वस्मावस्त्र विल्ल छैहा** ভদ অমীদারের সহিত চিরস্থায়ী বন্দো-<sup>বস্ত</sup> ব্ৰায় না উহাতে প্ৰ**লার সহিতও** 

চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত বুঝার। এ কথা আমরা যে আজি বলিডেছি এরপ নহে আমাদের পূর্বেও অনেকে বলিয়া গিয়া-ছেন। কিন্তু আশুবাবু State Literature উপর বড় চটা। এইজন্য তাহা ছাড়িয়া আইনের কথা ধরিয়া দশশালা বন্দো-বস্তের ঐ অর্থ দেখাইতে চেটা করিব।

এই সময়ে আমাদের একটি কথা কেবল বলিতে হইবে। কেছ জিজ্ঞাসা করিতে পারেন যদি প্রজার সঙ্গেই চিরস্থায়ী বন্দোবন্ত হইল তবে জমীদারকে ভূমামী করিবার লাভ কি ? প্রজার খাজানা যদি বৃদ্ধি করিতে না পারিলেন তবে জমীদার ভূমামী হইলেন আর না হইলেন তা-ছাতে ক্ষতিই বা কি, বৃদ্ধিই বা কি প এ প্রশ্নের উত্তর এই যে লর্ড কর্ণোওয়া-लिम वान्नालात स्त्रीमारवता (य कि ধাড়ুর লোক তাহা ভাল করিয়া বুঝেন নাই। জমীদারেরা যে আশী বংসরের মধ্যে চিরপ্রচলিত পরগণানিরিখ উঠা-ইয়া দিতে পারিবেন তাহা তিনি স্বপ্নেও ভাবেন ছাই। থাজানা ও করদম্বন্ধে যে সব নৃতন নৃতন মত উনবিংশ শতাকীতে বাহির হইয়াছে তাহা তাঁহার সময়ে হয় নাই। তিনি শোর সাহেবের আপত্তির উত্তরে বলিয়াছিলেন অমীদারের উপস্বত্ব বুদ্ধির ছুইটা মাত্র উপায় থাকিবে। পতিত ভূমির পুনরন্ধার এবং উৎকৃষ্টতর मत्रा উৎপাদনে প্রজাদিগকে প্রবর্ত্তন कता। अभीमात, (य शासना वृद्धित सना উৎপীড়ন করিয়া আপনার লাভবৃদ্ধি করিবে এবং প্রজার সর্বনাশ করিবে ইছা তাঁহার একেবারে অভিপ্রায় ছিল লা। কার্যোও তিনি, তাহার কোন পথ রাখিয়া যান নাই। তৎপ্রনীত অষ্ট্রম আইনের ধারাগুলি উদ্ধৃত করা উচিত কিন্তু স্থানাভাবপ্রযুক্ত কেবল ছুইটী ধারা উদ্ধৃত করা গেল।

Asiyats, under the denomination of abwab, mathout, and other appellations, from their number and uncertainty having become intricate to adjust, and a source of oppression to the Raiyats, all proprietors of land and dependent Talukdars shall revise the same in concert with the Raiyats, and consolidate the whole with the assal into one specific sum.

In large Zemindaries or estates the propriators are to commence this simplification of the vents of their Raiyats in the Parganas where the impositions are most numerous, and to proceed in it gradually till completed; but so that it be effected for the whole of their lands by the end of the Bengal year 1198 in the Bengal districts, and of the Fasli and Wilayate year 1198 in the Bihar

and Orissa districts, these being the periods fixed for the delivery of pattas, as hereafter specified.

55. No actual proprietor of land or dependent Talukdar or farmer of land, of whatever description, shall impose any new abwab or mathaut upon the Raiyats, under any pretence whatever.

Every exaction of this nature shall be punished by a penalty equal to three times the amount imposed; and if at any future period, it be discovered that new abwab or mathaut have been imposed the persons imposing the same shall be liable to this penalty for the entire period of such impositions.

আশুবাবৃও অনেক ধারা উদ্ভ করিয়াছেন, কিন্তু উপরোক্ত যে ৫৪ ও ৫৫
ধারার উপর সমস্ত নির্ভর কবে, সেই
ছইটি না দিয়া তাহার কেবল marginal
note ছইটি তুলিয়া দিয়া ঠিক উটি।
বুঝাইয়াছেন। আমরা ঐ ধারার ব্যাখ্যাছলে তাহা প্রদর্শন করিব।

বে সব নির্মাবলীতে জ্মীদার বাধা হইবেন, তাহার প্রথম এই। আনল নামা ভিন্ন কেহ প্রভাবা তালুকদারের নিকট থাজানা আদায় করিতে যাইতে গারিবেন না।

ংয়। আগরেওয়াব ইত্যাদি আগদল জমাভুক্ত হইয়াযাইবে।

তয়। ১১৯৮ বঙ্গাব্দের মধ্যে সর্ব্ধন্ত আবওয়াব আদি জ্বমাভূক হইয়া যা-ইবে। কোন্প্রাজাকে কত জ্বমা দিতে হুইবে, তাহা স্থির এবং নির্ণীত করিতে হুইবে।

৪র্থ। ইহার পর কেহ আর ন্তন আবওয়াব লইতে পারিবে না। যদি কেহ লয়, ভাহাকে ৩ গুণ জরিমানা দিতে হটবে। যদি ভবিষাতে প্রমাণ হয় য়ে, কোন জমীদার বরাবর আবওয়াব লইয়া আসিভেছেন, ভাহা হইলে ভাঁহাকে বরাবর যত আরওয়াব আদায় করিয়াছেন, সমস্ত জরিমানা দিতে হইবে।

ধন। অধনীদার ও প্রকার প্রায়ই থাজানামাত্র লইয়া সম্বন্ধ থাকিবে। প্রদাবে বে কোন প্রকার শসা ইচ্ছা উৎপাদন করিতে পারে। কিন্তু যেখানে এরূপ প্রথা আছে, যে অন্য প্রকার শসা উৎপাদন করিলে অধিক রাজম্ব দিতে হয়, সেখানে সেই প্রথাই বলবৎ থাকিবে।

৬ ঠ বিজ্ঞানের রাজত্ব কি নিয়মে ।

নইতে হইবে, তাহার পাকা বন্দোবস্ত করিবার পাট্টা দিতে হইবে। ঐ পাট্টায়
প্রদাকে কত থাজানা দিতে হইবে,
তাহা ঠিক করিয়া লেখা থাকিবে।

<sup>৭ম।</sup> পাটায় বেখানে হার ধরিয়া <sup>রাজস্ব</sup> দিতে হয়, সেখানে হার এবং যেথানে শসো রাজন্ম দিতে হয়, সেথানে শসাদানের নিয়মের পাকা বন্দোবস্ত থাকিবে।

৮ম। জ্বমীদারেরা পাট্টার উক্ত নিয়-মাত্র্যায়ী ফরম প্রস্তুত করিয়া কালেক্ট-রের অনুমতি লইয়া দেওয়ানী আদা-লতে বেজেইরী করিবেন।

৯ম। জমা নির্ণীত এবং দ্বিরীক্বত হইয়া গেলে জমীদার যদি প্রজাকে সেই জমীর পাট্টা না দেয়, তাহা হইলে রায়তের পাট্টা লইতে মোকদ্দমা করিবার সমস্য ব্যয় জমীদারকে দিতে হইবে।

১০ম। রায়ত কিম্বা পেটাও ইজারদারদিগের সহিত এই বন্দোবত্তের পূর্বে যে বন্দোবত্ত ছিল, তাহা যদি এই সকল নিয়মের বিরুদ্ধ না হয়, তাহা হইলে উহা বন্দোবত্তের মেয়াদের শেষ পর্যান্ত বলবৎ থাকিবে। জুয়াচ্রি করিয়া বন্দোবত্ত করিলে, সে বন্দোবত্ত বলবৎ হইবে না।

১১শ। কোন জমীদার নিম্নলিখিত
কারণ বাতীত খোদকন্ত রায়তের পাট্টা
রদ করিতে পারিবে না। যে সকল
'কারণবশতঃ পাট্টা না মঞ্র হইবে তাহা
এই। জ্যাচুরি করিয়া পাট্টা লইলে,
পারগণা নিরিখ হইতে তিনবৎসরের
মধ্যে রাজন্ব ক্ম হইলে, জ্যাচুরি করিয়া
রাজন্ব রেয়াত পাইলে, কিছা পারগণার
জারীপ হইলে।

**>२** । >>>৮ भारतत मरश समी-

দারেরা সকল প্রজাকে পাটা দিবেন।
১১৯৮ শাল অতীত হইয়া গেলে, প্রজার
সহিত পূর্ব্বোক্ত নিয়মের বিরুদ্ধ কোন
প্রকার বন্দোবস্ত, আইনাত্মাদিত হইবে না। যে সকল অমীদার আবওয়াব
ইত্যাদি জমাভুক্ত করিয়া প্রজাকে পাটা
না দিবেন, তাঁহারা রাজস্বের জন্য
নালিশ করিলে সে নালিশ না মঞ্জুর
হুইবে।

এই সমস্ত ধারার অর্থ এই যে, গবর্ণ মেন্ট বেমন জমীদারের সহিত চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিলেন, জমীদারও প্রজার সহিত তজ্ঞপ চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করি-বেন। যে জমা স্থির হইবে তাহার উপর আরে এক পশ্বসা লইতে পারিবেন না।

বন্দোবন্তের পূর্ব্বে গবর্ণমেণ্ট জমীদাবের কাগজপত্ত দেখিরা,মোট আদারের
৯ ভাগ নিজে লইলেন এবং একভাগ
জমীদারের জন্য রাখিয়া দিলেন, কিন্তু
প্রজার বেলা প্রজা কত দিতে পারিবে
এবং ভাছার উৎপন্ন কত ক্ছিছুই না
দেখিয়া আরওয়াব ইত্যাদিতে সে যাছা
যথার্থ দিত, ভাছাই ভাছার ন্যায় দেয়
বলিয়া স্থির করিয়া দিলেন। প্রজার
প্রতি কোনরূপ উৎপীড়ন যাছাতে না

হয়, লর্ড কর্ণোয়ালিশ ভাহার বিশেষ ব্যবস্থা করিয়াভিলেন।

কর্ণোয়ালিশের সমস্ত আইনগুলির
মধ্যে প্রজার উপর রাজস্ববৃদ্ধির নামও
নাই। বরং পুর্বে আবওয়াব প্রভৃতি
নানা কারণে প্রজার নিকট যে অধিক
রাজস্ব আদার করা হইত, তাহা চিরকালের জন্য উঠাইয়া দেওয়া হইল।
প্রেজার থাজানা চিরকালের জন্য বাঁধিয়া
দেওয়া হইল আইনে কেবল ইহাই
দৃষ্টি হয়।

নিয়মমত রাজস্ব দিলে প্রজার যোত উচ্ছেদ করা আমাদের দেশে কথন ছিল না, কর্ণোরালিশের আইনেও যোত উচ্ছেদের কোন বিধান নাই। যে ক্লমক একবার ক্লিকার্য্যের জনা\* ভূমি লইল, সে যতদিন রাজস্ব দিবে,ততদিন সে ভূমি তাহারই থাকিবে এই আমাদের দেশে চিরস্তন প্রথা। যোত ছাড়াইয়া দেওয়া ও রাজস্ব বৃদ্ধি করা, এ দেশীয় লোকের অক্লচিকর, তবে প্রজা ছর্মালারকে খুমী করিবার জন্য নজর প্রভৃতি সময়ে সময়ে দিত, কিন্তু রাজপ্রের উপর একপয়সা বৃদ্ধি করিতে তাহারা কথন চার না, এবং এখনও অর্থাৎ দশ আইন পাস

<sup>\*</sup> মৌরসী, মকররী, মেরাদী প্রভৃতি পাট্টা বাস্ত, উবাস্ত, বাগাতপ্রভৃতি স্থলেই চলিত, কৃষিকার্য্যের জন্য ভূমি লইলে ঐরপ পাট্টা চলিত নহে, কৃষকেরা প্রায় পাট্টা লয় না, ১৭৯৩, ১৮৫৯, ১৮৬৮ শালে পাট্টা লইবার এত স্থবিধা করিয়া দিলেও অতি অর লোকেই পাট্টা লইয়াছে। কৃষকরায়ত একটু পুরাণ হইলেই তাহারা কদীমী রায়ত কহিত। তাহাদের স্বন্ধ প্রায় মৌকসীর নাায়।

হইবার পরও অনেক জায়গায় জমীদার
চারিপয়দা রাজস্ব বৃদ্ধি করিতে চাহিলে
প্রজারা জদীদারকে দশটাকা নজর
দিবে, জমীদারের আমলাকে দশটাকা
বৃদ্ধ দিবে, তথাপি সে চারিটা পয়দা
বৃদ্ধি দিতে চাহিবে না; কর্ণোয়ালিশের
আইনে যথন ঐ নজরাদি আইনবিকদ্ধ
করিয়া প্রতিপর হইল, যথন আবার
১১৯৮ শালের মধ্যে আবওয়াব আদি
অন্তর্ভুক্ত করিয়া রাজপের সোট স্থির
করিয়া সেই রাজ্যে পাটা দিবার কথা
রহিল, না দিলে রাজ্যের নালিশ চলিবে
না এমত বন্দোবস্ত রহিল,তথন সেপাকা
চিরয়ারী বন্দোবস্ত নয় ত কি?

প্রকাদিগের রক্ষার জন্য বিশেষ বিধান করা আবশাক বলিয়ালোকে যথন কর্ণো য়ালিশকে পীড়াণীড়ি করিয়াছিল, তখন ভিনি তাহার উত্তর नियाहित्नन (य. শত শত বংসর হইতে প্রচলিত স্থানীয় হার এবং পরগণানিরিখ কেছই উন্তবন ক্রিতে পারিবে না। এই চিরস্কনপ্রথা ध्वामिरशव शविकांन कविरत। कि क বাঙ্গালি জমীদার যে কভদুর স্বার্থপর, নৃশংদ এবং স্বার্থসিদ্ধির জন্য ভাহারা क्ड गर्हिड, नाायविक्रम ଓ समञ्ज कार्या ক্রিতে পারেন ত.হা উদারচেতা লর্ড কর্ণোয়াশিশ কিছুই জানিতেন জানিলে তিনি আরু রাজস্থনির্গ এবং शिष्ठीमान कार्यात्र छात्र के समीमात्रदमत <sup>ইন্তে</sup> সমর্পণ করিভেন नाः (भर्गे ं निष्कृष्टे कतिया मिटलन । स्वभीमात्ररमत হাতে দেওয়ায় ফল হইয়াছে এই বে,
ঐ সকল রেকর্ড রক্ষিত হয় নাই, ঘাহাঞ
বা হইয়াছে, তাহাতে প্রজার সর্প্রমাণ
বই আর কিছুই হয় নাই। ক্যাছেল
সাহেব তাহার কব্ডেন ক্লবের প্রবন্ধে
এই রেকর্ড না রাখাই গ্রন্মেণ্টের প্রধান ভূল ও বল্পীয় প্রভার প্রধান অনর্থ
স্থির করিয়াছেন।

আমাদের দেশে রায়তেরা জানিত, জমী করিব থাজানা দিব। থাজানা বাড়ান, যোত ছাড়ান এ সকল তাহাদের পক্ষে নৃতন; এবং যথন, দশশালা বন্দোবস্তে উহার কথা নাই, তথন উহা রায়তের পক্ষেও চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত। ক্যামেল সাহেব লিখিয়াছেন, "There are in them (regulations) expressions which would seem to imply that no more is to be taken from any class of ryots, old or new, than the customary rates in the neighbourhood."

লর্ড কর্র্নালিশ জমীদারী ফেরাবীর তলা পর্যান্ত বৃক্তন আর নাই বৃক্তন, তিনি জমীদারদের তত বিশ্বাস করিতেন না, এবং গবর্গমেণ্টের রাজস্বটা ঠিক ঠিক আদায় হইয়া যার সেই দিকেই তাঁহার অধিক নজর ছিল বলিয়া তিনি তাঁহা-দের উপর কতকটা নির্ভর ক্রিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। এই জন্য তিনি প্রজার, রক্ষার্থ পুর্কোক্ত ধারাসকল প্রশাসন করিয়াও একটি ক্ষমতা নিজ

হন্তে রক্ষা করিয়াছিলেন 🖟 সেটি এই---It being the duty of the ruling power to protect all classes of people and more particularly those who from their situation are most helpless, the Governor General in Council will whenever he may deem it proper enact such regulations as he may think nec cessary for the protection and welfare of dependent Talukdars. Ryots and other cultivators of the soil, and no Zemindar indepen dent Talukdar or actual proprictors of land shall be entitled on this account to make any objection to the discharge of the fixed assessment which they have respectably agreed to pay.

এই ধারার প্রাক্ত কর্থ এই যে রায়তদের বক্ষা করিবার জন্য গবর্ণমেন্ট ভবিবাতে আইন করিবেন, জমীদারু সেইজন্য
ক্রবধারিত থাজানা দিতে পারি না বলিয়া
কাপত্তি করিতে পারিবেন লা। কিন্তু
আশু বাবু বলেন উহার কর্থ অন্যরূপ।
ভাহা প্রতিপন্ন করিবার নিমিন্ত ভিনি
১৭৯৩ শালের দিতীর রেগুলেশনের
মুখবন্ধ হুইতে একটি বাজা উদ্ধার
করিয়াছেন। এবং সেটি বড় বড় অক্ষরে
ছাপাইয়াছেন। সেট এই—

No power will then exist in the

country by which the rights vested in the landholders by the regulations can be infringed or the value of the landed property affected.

অর্থ এইরূপ করা হইরাছে যে বলি
অমীলারের স্থান্থ হস্তক্ষেপ করিবার উপ
যুক্ত ক্ষমতাই এ দেশের মধ্যে কাহারও

না রহিল তবে গবর্ণরজেনেরল ইন্
কৌন্দিল উক্ত স্থান্থ কিরুপে হস্তক্ষেপ
করিতে পারেন গ অর্থাৎ প্রান্তার রক্ষার

অন্য গবর্ণর জেনেরলেরও আইন করার
ক্ষমতা নাই। অর্থাৎ ৯৩ শালের প্রথম
আইনের অন্তম ধারার অন্যরূপ অর্থ।

কিন্তু আগুবাবু প্রবিশ্বের শেষ অংশ লিখিবার সময় গোড়া ভুলিয়া গিয়া-हिल्न। कलिकाडा त्रिविडे ७৮৮ पृष्ठी। "None but a fool or madman will deny the power of the legislature to redistribute property in land and indeed private property of every other description." किंद ভিনি আবার নিজেই বলিয়াছেন, ध (प्रत्मेत वर्षा क्रमीमादित चर्च इन्डर्क्न করিতে পারে এমন ক্ষমতা কাঁহারও থাকিবে না। এইরণে তিনি আপনার পদেই আপনি কুঠার মারিয়াছেন। তিনি विकीय दाक्षालभागत छेनदां क रा भागी উদ্ধার করিয়াছেন ভাকা "চকুরোগে-मम्र्रात कर्निकियां कहिः मरहर ।" वहे অখ চিকিৎসার বচনটি মহ্যাচিকিং-

দায় ব্যবহাত করিলে যেরপ ফল হয় তত্তপ ফলপ্রস্ব করিয়াছে। লান অভাব প্রযুক্ত বিতীয় রেওলেশনের মুখবন্ধটী তুলিয়া দিতে পারিলাম না। দিতে পারিলে পাঠকগণ দেখিতেন যে के दिशासमान होता (करन मान चार्रा-•লভ উঠিয়া বায়ও ভাহার কার্যা দেওয়ানী আদালতে সমর্পণ করা হয়। তাহার মধ্যে প্রভার স্থাপক্ষ আইন করিবার ক্ষমতা কাহারও রহিল না এমন কোন क्षाई नाहे, थाकिवाइं अ महावना नाहे। আশুবাবুর উদ্ধন্ত পদের কৈবল উপর এবং শেষ অংশ পড়িলেই উহার অর্থ বোধ হইবে-এই জনা আমরা ভাষা উद्धात कतिया मिलाम, आमता এ निषद्य আর অধিক কথা কহিব না।

অংশটুকু এই---

The collectors of the revenue must not only be divested of the power of deciding upon their own acts but rendered amenable for them to the courts of judcature and collect the public dues subject to a personal prosettion for every exaction exceeding the amount which they are authorized to demand on behalf of the public and for every diviation from the regulations prescribed for the collection of it; no power will then exist in the country by which the

rites vested in the land-holders by the regulations can be infringed or the value of landed property affected.

অর্থাৎ কালেক্টর নিজে অত্যাচার করিয়া নিজেই বিচারপতি হইলে জমীদারের
অত্যের প্রতি হস্তক্ষেপ করিবার যে
সন্থাবনা তাঁহার থাকিত ভাহা আর
থাকিবে না। বাবস্থাপক সমাজের এবং
গবর্ণর ক্লেনেরলের ক্ষমতার সহিত ঐ
power শব্দের কোন সম্পর্ক নাই।
আশুবাব্ ভাহা পাকা উকীলের নাায়
গোপন করিয়াছেন।

তিনি Right Hon'ble T. Pemberton Leaguesএকটি রাম হইতে একটি পদ উদ্ধার করিয়া বলেন যে রাজকার্যনির্ব্বাহপ্রণালী সুন্দর্রূপে চালা-ইবার জনা এবং প্রস্তাদিগের অবস্থা উল্লুত করিবার জনা East Indian Company बभीमात्रक छुन्दाभीकाल পবিণ্ড করিয়া এবং তাহাদের সদয समा हित्रालित समा शित कतिया निया স্থাসনের সর্বাপ্রথম সোপান করিয়া पिट्न । डिनि व्हान कहे श्रथम (मा-পান ১৭৯৩ শালের ২২ শে মার্চের মন্তি-সভাধিট্ড গ্র্বর ভেনারেলের ঘে:ষ্ণা পত্র !! আভবাবু ঘোষণাপতেরও কিয়-म**९**ण উद्धात कतिशास्त्र किन्न ऋष्टेमशातात কি অর্থ তিনি করেন, কোন স্থানেই খুলিয়া বলেন নাই। তিনি বলেন আমরা উহার কি অর্থবোধ করি ভাষা

যোষণাপত্রের উদ্ধৃত অংশ পড়িলেই অমুমান করিতে পারা যাইবে। এরপ অর্থ অমুমান করিয়া লওয়ার ভার পাঠ-(कद्र इट्ड (म्ख्या वड्र मन्द्र नहरू। তাঁহার ঘোষণাপত্রের উদ্ধৃত অংশ পড়িয়া আমরা ত বিশেষ কিছু অসুমান করিতে পারিলাম না। ভবে যেন একটু একটু বোধ হয় যে, লোকে বুঝবে অমী-দারেরা পুর্বের পুলিষ-বিচার প্রভৃতি যে সকল রাজ্কীয় ক্ষমতা পাইয়াছিলেন সেই ক্ষমতা উচ্ছেদ করিবার জনা নৃতন নৃতন আইন প্রস্তুত করিবার ভার গবর্ণর (सारावा दाथिता। कि इ. श्रेथिम (देश) লেশন বরাবর পড়িয়া আসিলে কথনই এরপ অর্থ হয় না। সমস্ত প্রথম রেও-(लमरनद मर्था समीपारदद रप अयोगी क्लिनाती देखानित नाम व नारे गक 9 নাই। স্বতরাং মাঝে হইতে ভাহার ष्यद्वेमधातात स्मीमादात (को समाती क्रमता নিষেধরণ অর্থ কিরুণে হইবে তাহা আমরা ব্রিভে পারিলাম না।

900

তিমি বলেন চিরস্থায়ী বন্দোবত রূপ চুক্তি করিবার সময় জমীদারকে ভাহার অনেক মূল্য Valuable consideration **मिटिंड इटेग्राहिन। अदनक करें मरु** করিতে হইমাছিল। তাহার একটি এই যে हाका ख्या, बना बदना, ममछ मरहउ লাটের ঠিক তারিখে রাজস্ব আদার দিতে इहेटन,ना फिट्ड भावित्य समीमावी निनाम

रहेट्य, आत्र यमि निनाटम त्राज्यस्य वाकि होका ना डेर्फ ज्दर स्मीमाद्वत स्रनाना সম্পত্তি বিক্রেয় হইবে। আগুবাবুর মতে এই Valuable consideration। তাহার মতে ইহা অতি কঠিন নিয়ম। কিন্তু মুব भिन कृतिशांत देदक्**छे, मूर्म**दात हाजह. करमन, अभीनाती थान कता, अभीनादीत थान वत्नावछ, सभीनातीत चवत्नालू. এ সকলের চেয়েও কি পূর্ব্বাক্ত নিয়ম এত কঠিন ? হইতেও পারে। কেহ কেহ বলিতে পারেন যে'সাবেক আমলে ভ্রমী-দারকে নবাব কয়েদ করিত, মারিত, না হয অপমানই করিত। মুদলমানেরা ত টাকা লইতে পারিত না, স্কুতরাং তাহা অপেকা কিন্তীতে কিন্তীতে টাকা দে-ওয়া বড়ই শক্ত। বড়ই Valuable consideration t

আভবাবু যে আর এক কথা কেন বলেন নাই তাহা বলিতে প:বি না। ১০ শালের **हर्ज्य आहेटनद न्यम मध्य ध्**कामग शातात्र अभीमात्रक वाकी शालानात म<sup>ा</sup>य কয়েদ করার যে কথা ছিল মেও ত দশশালা বন্দোবস্তরূপ চুক্তির এক অংশ। ১৭৯৪ খালের তিন আইনের ও ধারায় তাহা বন্ধ করা হ**টয়াছে। গ**বঁণ্ণেট এইরূপ করেদ করার ক্ষমতা ত্যাগ করার एकन सभीमारत्रत्र निक्रे कि किছू क्रिलिपूर्ग লইয়াছেন ? লন নাই, ভবে গ্ৰণ্নেট এখন প্রভার রক্ষার ভান্য আইন করি-

<sup>\*</sup> আমরা কিতীশবংশাবণীচ্রিতে পড়িয় ছি যে অনেক স্থলে মুসলমানের क्षे व्योषाद्वत्र व्योषात्री काष्ट्रिया करेया क्ष्यनगद्वत्र त्रावादक पित्राह्म ।

তেছেন জমীদারগণ নানা কথা তৃলি-তেছেন কেন? তাহার পর আভবাব্ footnoteএ লিখিয়াছেন।—

It would be interesting to compute the sum total of other real or personal property sold in the 75 years between 1793 and 1868;

ইহার উত্তরে আমরা বলিতে পারি, क्षत्रीनादत्रता এहे करत्रक वर्मदत्रत्र मरशा নানা উপায়ে যে অর্থসঞ্চয় করিয়াছেন পূর্ব্বোক্ত অংশ তাহার শতাংশের অদ্ধাং-শও নহে। আর এই কয়েক বৎসরের मध्य थाकात कि इहेग्राष्ट्र, समीमादतता যাহা লোকসান দিয়াছেন তাহা আইন অমুসারেই দিয়াছেন। কিছু প্রায় তিন কোটা প্রকা তাঁহাদের শাসনের গুণে তাঁচাদের দ্যাধর্ম্মের গুণে জনীর মালিক ঘুচিয়া প্রায় ইচ্ছাধীন রায়ত tenant at will इटेग्रा উठिम्राट्ट। " अधिकाः मह লা্ঠী জুতা ও গৃহদাহ ইন্ড্যাদির দারা ও মান্তন মাণ্ট ভিক্ষা গোমস্তার পার্কণি হিসাবালা নজর ইত্যাদি আইনবিক্ত व्यानारयत ८ हाटि मन्द्रं वास हरेबाहा। গবৰ্ণমেণ্ট এত পুলিষ,দেওয়ালী ও ফৌজ-দারী কাছারী স্থাপন করিয়াও ত প্রজার প্রতি জমীদারের অভ্যাচার নিবারণ ক तिर्छ भारतन नाहे। अथन अभी नारतत नार्यय शामछा मकचल इटी कडी; এখনও নানা স্থানে ভাহারা স্বরিমানা

করে রামের ধন ভামকে দের, ভামের ধন হরিকে দের। কিন্তু গরিব প্রশাদিগের জন্য কণা কছেন এমন লোক কোথার ? জমীদারের হুগ্নে চিনির ক্রটি ইইলে তাহা লইয়া চীৎকার করিবার লোক দেশগুদ্ধ মিলিবে কিন্তু গরিব প্রশাষ যে পাস্তাভাতে একটু লবণও জ্টিয়া উঠে না তাহা কে দেখিবে! কে তাহাদিগের হুংখনিবারণ করিবে! যাহারা প্রসাদের একমাত্র ভরদা সেই শিক্ষিত যুবকদলও ক্রেমে নানা কারণে জমীদারদিগের দলের সেনাপতি বা জন্মদাস হইয়া দাড়াইতেছেন।

হে বঙ্গবাসী ছুর্মল নিজীব রায়তবৃন্দ। ভোমরা ভর্মা ভাগে কর। ভোমাদের (कहरे वसू नारे, ट्लामाम्बत हरेगा कुकथा কয় এমন লোক একটিও নাই। ইংরেজী শিক্ষার দেশের যে উন্নতি হইতেছে সে ভোমাদের জন্ত নছে। সে ধনবানের জনা। জানিও, শিক্ষিতলোক লমীদার বা তালুকদারের জনা। কেন না তাহারা পয়সা বার করিতে পারে। শিক্ষিতলোক তোমাদের কেছ নছে। তোমরা নিজে বৃদ্ধিমান হইতে চেষ্টা কর লিখিতে পড়িতে ও আপন খব ব্ৰিয়া লইতে তোমরা নিজে আপন সাহায্য করিতে পারিলে ঈশ্বর ভোমাদিগের সহায় হইবেন। ত্রিটিষ গ্রণ্মেণ্ট

<sup>\*</sup> रथरमत अलाहारत रय कल श्रमात नर्तनाम ररेबाह लाहात लाहिका गरेम्थ it would be interesting to compute.

ভোমাদের রক্ষার্থ নানা যত্ন করিয়াও তাঁহারাও সফলপ্রয়ত্ন হইতে পারেন। ভোমাদের রক্ষা করিয়া উঠিতে পারিতে- ভোমরাও বাঁচিয়া যাও নচেৎ ভোমাদের ছেন না, ভোমাদের চকু কর্ণ ফুটলে ভরসা নাই। আশা নাই।

### 

# षिद्धानगरूखन।

### ৫। ইহার অর্থ।

**ह**जूर्य क्षेत्राटव जामना मिश्रहेन्नाहि य ছন্মন্ত কিছু বেশী রিপুপরবশ, কিন্তু রিপু-পরবর্শ বলিয়া তিনি অধার্শ্মিক নন। তিনি বছস্ত্রীসবেও শকুম্বলার লোভ সম্বরণ করিতে পারিলেন না বটে; কিন্ত ভাই বলিয়া তাঁহার শকুস্তলার প্রতি चानकि यरश्रकातात्री छ्वातारत्रत चानकि नम् । এ कथा भूटर्स त्यारेम्ना छि। এখन छ বলি যে রিপৃশ্বত হুমন্ত অসাধারণ চিত্ত-সংযমসহকারে শকুন্তলার ভাতিকুল প্রভৃতি নির্ণয় করিয়া শেষে শক্ষলাকে ष्यिकात कतिवात (हरे। कतित्राहित्नन। প্রথম প্রস্তাবে দেখাইয়াছি বে, শকুষ্ক-লাকে দেখিবামাত্র ছম্মস্তের পরীকা चावस इब-- डाहात तिशु धवः धर्मः ভাবের মধ্যে যুদ্ধ উপস্থিত হয়। সে যুদ্ধে काँहार धर्माछात सन्नी हरेन्नाहिन। धर्माछात জরী হইরা হ্মস্ত এবং শকুত্রলাকে পৰিত্ৰ পরিণয়স্তে বন্ধন করিয়াছিল। त्म পরিবরের অর্থ-ছবাস্পদ-কামোরত গ্ৰেচ্ছাচারীর ক্ষর্যাবাদনা-পরিভৃত্তির নিমিত্ত ক্ষণিক সম্ভ্র নর। সে পরি-

ণরের অর্থ—জীবনব্যাপী পবিত্র পতি-পত্নীর সম্ম । কিন্ত সে পবিত্র পরিণয়ের ফল কি হইল †

সে পবিত্র পরিণয়ের প্রথম ফল---नात्रक नात्रिकात यद्मगमञ्ज विरुद्धन। পতि-কর্ত্তক অপমানিত হইয়া শকুস্তলা কশ্য-পাশ্রমে থাকিয়া অনেকবৎসর ধরিয়া ভয়ানক যন্ত্রণাভোগ করিয়াভিলেন। পত্তিপ্রাণা পতিহীনার ন্যায় সকল স্থাৰ क्लाश्चलि निया (कामल क्लार्य विषय विष्ट्रमाधि शात्रण कतिहा अस्टरत अस्टर দশ্ব হই রাছিলেন। স্বেহ প্রাণা স্বেহ ময়ী मर्स्वारकृष्टे स्थरहत्र भगार्थ हात्राहेवा ज्य-क्षारम मीर्चकाल हाहाकात कतिमाहित्तन। আসমুদ্র ভারতসামাজ্যের রাজ্ঞী অসহায়া 'অনাপার ন্যায় বহুকাল কাদিয়া কাদিয়া কাটাইয়াছিলেন। চন্ত্ৰবংশতিলক, পৃথি-বীর রাজকুলভিলক ছ্মান্তের প্রতিষ্ঠিত মহাদেবী সর্বলোকোপেক্ষিতা অধ্যত্যা কাঙ্গালিনীর ন্যায় ধূলিধুসরিত অঙ্গে माछि इहेबा माछिट मिनाहेबाहित्नन। হ্মত্ত শকুত্তপার বিচেচ্নে উন্নাদগ্রত।

নিরপরাধা সতী সাধ্বীকে নির্ভাবে নির্ভাবিকা তাড়াইয়া দিয়া ধার্মিক-প্রধান ছ্মন্ত অনুতাপে দগ্ধহদয়, জীণ, দীণ, আহারনিজাবর্জিত, আকুলপ্রাণ, শোকবিহ্বল।

সে পবিত্রপরিবয়ের দ্বিতীয় ফল---ছায়কনায়িকার আত্মীয় বন্ধুগণের যন্ত্রণা। ্অপমানিত শকুন্তলাকে রাথিয়া গৌতমী, শার্করব প্রভৃতি যখন আশ্রমে ফিরিয়া যান তথন তাঁহারা যে কি বিষম শোক-ভারে ভারাক্রাস্ত ইইয়া গিয়াছিলেন তাহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়। শকুন্তলা ভাহাদের সকলেরই আদরের বস্তু। আশ্রমপ্রাদেশে হ্মান্তের অবস্থান কালে শকুন্তলার যে পীড়া হয় ভাহার প্রক্লত কারণ বুঝিতে না পারিয়া সমস্ত আশ্রমবাসী এবং আশ্রমবাসিনী শশবান্ত रहेशा छेठियाहित्सन। আবার যপন গোতমী প্রভৃতি আশ্রমে আসিয়া সেই নিদাকণ কথা জ্ঞাপন করিলেন ভখন যে পবিত্র ব্রহ্মচিস্তানিমগ্র ব্রহ্মনামপূর্ণ তপদ্যাশ্রম অকিঞিৎকর সংগারাশ্রমের ন্যায় মোহমুগ্নের হাহাকারে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছিল ভাহাতে. অমুমাত্র मत्मर इहेट्ड भारत ना। (म कथी ওনিয়া ঋষিকুলপতি কলের জদয়ে কি ভয়ানক আঘাতই লাগিয়াছিল। শকুস্তলা कर्वृत व्याववायू—' कवृत्रा क्वलरङक्कृ-সিতম্।' আর প্রিয়খদা এবং অনস্থার ত क्लारे नाहे। छाहात्रा (म क्ला छ-নিয়া যে কি ক্রিয়াছিল তাহা ঠিক

করা ছঃগাধা। আবার মেনকা কন্যার নিমিত্ত যারপর নাই কাতর এবং শোকা-ভিনি কন্যার হু:খে অস্থির হইয়া হুমস্তের মনের ভাব জানিবার নিমিত্ত সাত্মতীকে হস্তিনাপুরে পাঠা-हेग्रामिटनम । **ब्हेंक्र** ए एक्पारन শকুম্বলাকে ভানিত এবং ভাল বাসিত সেই তাঁহার নিমিত্ত ব্যাক্ল, শোকসম্বপ্ত। ওদিকে হুম্বস্তের রাজপুরীও শোকনিময়। তাঁহার কর্মচারিগণ ভীত, উৎক্ষিত, শোকাতুর। তাঁহার রাজপুরবাসিনীরাও তাঁহার অসুমতিক্রেমে চির-প্রচলিত-ব্যক্তোৎসব বন্ধ হওয়ার হস্তিনা-পুরের রাজবাটী যেন একটি প্রলয়ন্করী च हेनात्र इत्राय शाहित्रध--- मिः नयः, निष्ठक, निदाननः!

সে পবিত্র পরিণয়ের তৃতীয় ফল—
রাজার অমঙ্গল। আমরা প্রথম প্রতাবে
দেখাইয়াছি যে জ্মন্ত মহা পরীক্ষায়
পড়িয়া রাজকার্য্য ভূলেন নাই। আমরা
বলিয়াছি যে সে পরীক্ষায় তিনি জয়ী
ছইয়াছিলেন। এখনও আমরা সেই কথা
বলি। কিন্তু আরো একটি কথা আছে।
অঙ্গুরীয় পুনর্দর্শন করিয়া যখন তাঁহার
শকুন্তলার স্থৃতি ফিরিয়া আসিল, তখন
ভূনি ঘোর য়য়ণায় দয় হইতে লাগিলেন।
সে য়য়ণায় তাঁহার স্মাভাবিক মানসিক
অবস্থার যে রকম পরির্ভন হয়, রুজ
কঞ্কী তাহা বর্ণনা করিয়াছেন। সে
বর্ণনার কিঞ্জিয়াজ উভ্ত করিলেই
চলিবেঃ—

রমাং বেষ্টি যথা পুরা প্রকৃতিভি র্ন প্রতাহং দেবাতে।

তিনি এখন পৃর্বের মত মনোহর বস্তুতে প্রীত হন না এবং অমাত্যবর্গকে প্রতিদিন আহো প্রদর্শন করেন না।

তবেই দেখা যাইতেছে যে ত্মস্তের যন্ত্রণা রাজকার্যাবিভাগেও সম্পূর্ণরূপে ফলশুনা নয়। অমাতাগণের প্রতি রাজার আছে।ভাব রাজ্যের পক্ষে মঙ্গলের বিষয় নয়। রাজা এবং অমাতামগুলী উভয়েই ভাল হইলে সে আন্বাভাব আগু অনিষ্টসাধনে অক্ষম হয় বটে, কিন্তু দীর্ঘকালভায়ী হইলে সে আভাভাব ভাল রাজ্যেও প্রজাবর্গের অমঙ্গলের কারণ হইয়া উঠে। ফলতঃ অমাত্য-বর্গের প্রতি রাজার আস্থাভাব রাজ্যের भक्त यन वहे जान नय। (म आहा-ভাব ক্ৰণমাত্ৰ স্থায়ী হইলেও এককালে দে। যশুনা নয়—ছোর অনিষ্টকারী না হইলেও কিরৎপরিমালে কার্যাবিশৃষ্থলতা উৎপন্ন করিয়াই থাকে। কিন্তু ছুম্বন্তের যে তথু অমাতাগণের প্রতি কিছু, আন্থা-ভাব হইরাছিল তা নয়। তাঁহার যন্ত্রণা আরো কিছু ওক্তর অনিষ্ট্রদাধন করিয়া-ভিনি ধর্মবীর এবং চিন্তবীর। যে চিত্তবীর সে কোন অবস্থাতেই চিত্ত धर्म এक्वाद्य हात्राम ना। ছুম্ম ও ঘোর পরীক্ষার পড়িয়া তাঁহার চিত্তধর্ম **क्षा कार्यानं नाहे। यह अहै** পরীকার শুরুত্ব বিবেচনার তাহার চিত্ত-ধর্ম বর্দ্ধিতগৌরবে প্রকাশ পাইরাছিল। কিন্তু সে পরীক্ষার তিনি যে সম্পূর্ণরূপে অবিজ্ঞিত ছিলেন এমন কথা বলা যায় না। যন্ত্রণাবিহ্বলাবস্থার তিনি যখন রাজকার্যোর বাবস্থা করেন তখন এইরূপ বলিয়াছিলেনঃ—

বেতাবতি মন্বচনাদমাত্যমার্যাপিশুনং ক্রছি চিরপ্রবোধার সম্ভাবিতমস্মাভিরদ্য ধর্মাদনমধ্যাসিত্ং যৎ প্রত্যুবেক্ষিতং পৌরকার্যামার্যোগ তৎ প্রমারোপ্য দী-রতামিতি।

ৰেত্ৰবন্তি, আমার কথায় অমাত্য আর্থ্য পিশুনকে গিয়া বল যে অনেক বেলায় জাগিয়াছি বলিয়া ধর্মাসনে অধিকৃত্ হ-ইতে আজ আমরা অসমর্থ। তিনি পৌরকার্য্য যাহা দেখিয়াছেন তাহা লিখিয়া দিন।

বস্ত্রণায় ছ্মান্তের রাত্রিতে বিদ্রা হয় নাই এবং সেই জন্য তিনি আল বিচারাসনন বসিতে অক্ষম। কি গুরুতর কি লঘুতর সকল কার্যাই তিনি স্বরং করিয়া থাকেন। কিন্তু আল তিনি সে প্রণালী অনুসরণে অপক্ত। আল তিনি নিজের আসনন প্রধানামাত্যকে বসাইয়া আপনিকেবল গুরুতর কার্যা পর্যালোচনা করি-তেছেন। প্রলাবংসল রাজকার্য্যারক হয়স্ত আল প্রতিনিধি ছারা রাজকার্য্য করিতে বাধ্য। তবে ছ্মস্ত প্রক্ষপ্রধান, চিন্তুসংযমে অমিতবল, রাজধর্মপ্রতিপালনে দৃঢ়ামুরালী। তাই আলিকার পরীকাতে তিনি সম্পূর্বরূপে পরাভূত নক-ভাই আল প্রক্ষপ্রধান প্রক্রপ্রধান

নই রহিয়াছেন। হ্রান্ত হ্রান্ত না হইলে আজ ভারতের কি হুর্দশা ঘটিত তাহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়।

দেগা গেল যে ছম্মন্ত এবং পকুন্তলার প্ৰিত্ৰ প্ৰিণয় হইতে তিনপ্ৰকার অম-লল ঘটিল :- স্থাং ত্মন্ত এবং শকুন্তলার •জন্মল; ত্মন্ত এবং শকুন্তলার আংখ্রীয়-শ্বজনের অন্সল; ভারতসাম্রাজ্যের অনুসল। কার্যা চুইটা লোকের কিন্তু ভাহাব ফল কোটি কোটি লোকের দ্বারা রোমিও এবং জুলিয়েটে अन्त्यंत्र यन्त्र (महे श्रकातं इहेग्राहिन। "By the introduction of the Prince in his political power, Shakspeare gives a public interest to the private history of the lovers. A whole community is represented in a state of ardent excitement, by which the public good is endangered: the Prince intercedes between the two contending parties, and thus, what in other respects was a private concern, becomes a matter of public and political importance, affecting the whole constitution of society and the common good." সেকাপীয়রকে ঘটনাকৌশলের দারা এই সভা বুঝা-<sup>ইতে</sup> হইয়াছে; কালিদাসকে ভাহা <sup>করিতে</sup> হয় নাই, কেন না ভাঁছার নাট- কের প্রণয়ী নিজেই রাজা। তবে তিনি
এই মহাসতা ব্বিতেন বলিয়া তাঁছার
লায়কের প্রশক্ষের ইতিহাস এমন প্রধালীতে বলিয়াছেন বে তাঁহার পাঠক
সেই মহাসতা ব্বিজে পারেন। সে
সতা এই—বাক্তিবিশেষের পরিণয় শুধু
সেই বাক্তিবিশেষের শুভাশুভের কারণ
নয়; তাহা সমস্ত সমাজের শুভাশুভের
কারণ। ইহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের
প্রথম অর্থ।

দেখিলাম যে ত্মন্ত এবং শকুন্তলার প্ৰিত্ৰ প্ৰিণয় হইতে বিষ্ময় ফল ফ্লিল। এখন জিজ্ঞাসা এই-- विষময় ফল কেন ফলিল? ইহার প্রথম উত্তর, ত্র্বাসার ত্ৰ্বাসা শাপ দিয়াচিলেন বলিয়া গ্রন্থ শকুস্তলাকে ভূলিয়া গেলেন, ভুলিয়া গিয়া ভাঁহাকে ভাড়াইয়া দিলেন. তাড়াইয়া দিয়া তাঁহাকে অস্থা করি-লেন এবং খেষে আপনিও অসুখী হই-লেন। কিন্তু জিজ্ঞাস্য এই যে, যে শাপ হইতে এত অনিষ্ঠ উৎপন্ন হইল गहाकवि द्रकन रम भाग रमखबाहरतन। ইহার উত্তর এই যে, তুর্বাসা শকুস্তলার কাছে অতিপা প্রার্থনা করিয়াছিলেন. °শকুন্তলা সে প্রার্থনা শুনেন নাই। ভাপসাশ্রমে অতিথিসেবা একটি প্রধান কর্ত্তব্য শকুস্তলা তাহা জানিতেন। প্রা-চীন ভারতে তপস্যাশ্রমে সর্বদাই অতি-থির সমাগম হইত এবং আশ্রমবাসী-দিগের সেই সকল অতিথির সেবা

<sup>\*</sup> Dr. Ulrici র Shakspe are's Dramatic Art নামক গ্রন্থের ১৭৮ পৃষ্ঠা।

করিতে হইত। শকুস্তলা প্রাভৃতি সেই অভিথিসেবা-ধর্মে দীক্ষিত হইরাছিলেন এবং সে ধর্মের উৎকর্ষ ব্ঝিতেন। শকুস্তলা প্রভৃতিব সম্প্র ত্মান্ত উপস্থিত হইবানাক্র অনস্থা ব্লিয়াভিলেন—

দাণিং অদিহিবিদেস্গাহেণ। হল। সউন্দলে গছে উড়্যং ফল্মিস্সং অগ্যং উবহব। ইদং পাদেশিক জাতবিস্সদি।

আপনার ন্যায় অভিথিকাতে তপসার বৃদ্ধি ইটতেছে। ওলো শক্তলে,উটজে যাও এবং ফলযুক্ত অংঘা আনয়ন কর। এই পাধুইবার জল।

আবার যখন শকুস্তলা রাগের ভান করিয়া চলিয়। যাইতে উদ্যুত হন, তখন অনস্য়া তাঁহাকে বলিয়:ছিলেন—

সহি ণ জুত্তং অকিদমকাবং অদিছি-বিদেসং বিসজ্জিল সক্তলদো গমণম। স্থি, অক্তুসংকার অভিথিকে ত্যাগ করিয়াসচ্ছনের চলিয়াবাওয়াউচিত নয়। মহাকবি দেখাইলেন যে শকুম্বলা অতিথিয়েবার কর্ত্তবাতা এবং উংকর্ষ সকলই বুঝেন। তার পর ভিনি দেখাই লেন যে শকুন্তলা চন্মন্তচিম্ভায় নিমগ্র থাকিয়া অভিথি কিরটেয়া निर्देशन. অভিথি শকুত্বলাকে শাপ দিয়া গেল। हेशात कार्य कि ? हेशात कर्य धहे य প্রের মৃত্ই পবিত্র এবং উৎকুষ্ট পদার্থ इडेक, (म यनि मामाजिक कर्डवामाधानत প্রতিবন্ধক হয়, তবে ভাহাকে দুষ্ণীয় विषया विद्यालना क्षित्र हा हो दिवस । শকুত্তলা পতির চিন্তা করিভেছিলেন।

পতিচিন্ত। কিছু অপবিত্র কার্য্য নয়। কিন্তু সে চিন্তায় তিনি এতই নিসগ্ন যে অভিথির সমাগ্য জানিতে পারিলেন না এবং দেই জনা শাপগ্রস্ত হই গেন। ইহার ভার্থ এই যে জ্লায়ের অতি পাণিত্র ভাবও অপবিত্র হইয়া পড়ে যথন তাহা ম। द्वरक नमास जुलाहेबा राष्ट्र । हेरात. অর্থ এই যে, অগ্রে সমান্দ পরে আপার - काश अनारतत किया भारत काशनीत চিন্তা। আপয়ার চিন্তা অতি বিশুদ্ধ অতি প্রশংসনীয় ইইলেও তদুবায়দ অপবের চিস্তা বিলুপ্ত হয়, তবে তাহা আত অওদ্ধ, অতি নিল্নীয় হইয়াপড়ে। পবিত্র প্রেম অতি উৎকৃষ্ট বস্তা। কিয় বে প্রেম যদি সামুদকে সমাজ ভুলাইয়া (मञ्ज, ७ (व टारा अधिभग अशक्षे इरेश পড়ে। এ কথার অর্থ এই যে প্রণয়ের প্ৰিত্ৰতা বা অপ্ৰিৱতা শুধু প্ৰণয়ী অপব৷ প্রণানীর নিজের মনের পবিত্রতা বা অপবিত্রতা দ্বারানিরূপিত হয় না। সমাজও তাহার একটা প্রধান নিরূপক। শকুত্বল। এই নৈতিক নিয়ম ভঙ্গ করিয়া-ছিলেন বলিয়া এত কষ্ট ভোগ করিলেন। তিনি পৰিত্ৰন্তন পৰিত্ৰভাবে প্ৰণয় क्तिशाहिरलन। किन्द्र अधु ठाँशाव मन পবিতা হইলে কি হইবে ? তিনি প্রণয়ে মুগ্ধ হটয়। সুমাজ ভূলিয়া তাঁহার প্রণ<sup>য়কে</sup> পূর্বনাত্রায় পবিত্র করিতে পারেন নাই। তাহার প্রণ্যের পবিত্রতা অসম্পূর্ণছিল। সেই জন্য তাহার অদৃটে এত ছঃপ। আর মহাক্ষি যদি প্রকৃত তব্জাপন

করিয়া থাকেন ভবে ঘিনি যেখানে প্রণয়ে মুশ্ধ হইয়া সমাজকে ভূলিবেন ভাঁহারই অদৃটে এইরূপ ছঃখ ঘটবে। ইহার একটী অর্থ এই বে, রমণীৰ নাায় যে হৃদয়প্রাধান এবং হৃদয়েব মোহে বেশী মুগ্ধ হয়, ভাহার হাদয়কে শিক্ষা দ্বারা কর্ত্তবার °পথে রাথিতে হয়, এবং সমাজদেবা গুবং অপরের নিমিত্ত চিস্তা সেই শিক্ষার প্রধান আজে এবং উপকরণ। রমণীব যে অন্তৰ্নীনভাব ভাব তৃতীয় প্ৰস্তাবে বণনা করিয়াছি তালা আত্মনম্বন্ধে হইলে সমাজবিরোধী। সে ভাব অধিক প্রভায় পাইলে সমাজের অনিইলাধন করে। সেই নিমিত্ত সে ভাবকে শিক্ষা দ্বারা সীমাবদ্ধ করিতে হয়। কিন্তু সে শিক্ষা সহজে লাভ হয় না এবং হইবার নয়। শক্ষলা জন্মানধি পরোপকারত্রতে তাতী থাকিয়াও সে ভাব দমন করিতে অক্ষম हरेगाहित्नन। व्यत्नक हेर्रेदाशीय मार्गनितकत्र अ गत उठ (म.माम्ल्य उपायणाय জীপুরুষের প্রেম আপনাদিগের মধ্যে অধিকপরিমাণে আবন্ধ থাকিয়া সমাজের অনিষ্টকারী হয় এবং সেই নিমিত্ত মানু ষের সে অবস্থায় প্রবেশ করা অফুচিত। অমিরা মাজুষকে এ রকম বাবভা দি ना, (कन ना आमत्रा हेट्टिक भागत्वत <sup>বাবস্থা</sup> মনে করি। কিন্তু আমবা এ কথা খীকার করি যে এখনও মনুষোর মধো দাম্পতা প্রণয় কিছু বেশী পরিমাণে মোহ मुक्षकाती विश्वता ममास्त्रमञ्जलक किছू খনিষ্টকর। এবং দেইজনাই আমরা

বলি যে দম্পতির প্রণয়কে শিক্ষা ছারা সমাজের অনুকৃল করা কর্ত্তব্য । তৃত্মস্ত-নিমগ্রা শাপগ্রস্তা শকুস্তলার মর্থপ্র তাই। তাহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের দিতীয় মর্থা অভিজ্ঞানশকুস্তল জগতের একথানি প্র-ধান সমাদ্ভব্বস্থাপক নাটক।

শকৃত্লার মোত একানার শাপের একটা কারণ বটে। কিন্তু দেই কাবণের অস্কুরালে আব একটা কাবণ আছে। শকুত্রলা সমস্ত বাহ্যজগং ভূলিয়া গুমারকে ভাবিতেছিলেন বলিয়া গুর্বানা তাঁহাকে শাপ দিলেন যে গুমার তোমাকে ভূলিয়া যাইবেন। গুমারও তাঁহাকে ভূলিয়া গাইবেন। গুমারও তাঁহাকে ভূলিয়া গাইবেন। শকুত্রলা তাঁহাকে তাঁহাকের বিবাহেব প্রমান দেখাইতে তাহিলেন। শকুত্রলা তাঁহাকে তাহিলেন। শকুত্রলা লাইকে তাহিলেন। শকুত্রলা লাইকে তাহিলেন। শকুত্রলা লাইকে তাহিলেন।

डेमाटः कहाः। (तम कथा।

তথন শকুন্তলা অঙ্গুরীয় বাহিব করিতে
গিয়া দেইপলেন যে অঙ্গুলিতে অঙ্গুরীয়
নাই। গুন্মত্ব তাঁহাকে চতুবা কুলটা
বলিয়া পরিহাস করিতে লাগিলেন।
কিন্তু অঙ্গুরীয় সওয়ায় যদি বিবাহের
অনা প্রমাণ থাকিত তাহা হইলে ত
কোন গোল হইত না। গুন্মন্ত নিজেইত
পবে মাধব্যকে বলিয়াছিলেন— মাধ্বা
ডুমি কেন আমাকে তথন বিবাহের কথা
মনে ক্রিয়া দেও নাই, এবং প্রথমবৃদ্ধি
মধ্বা উত্তর করিয়াছিলেন যে আপনি

भक्षनाव [विषय**] शामा**टक (व त्रकम বলিয়াছিলেন ভাহাতে আমি এইরূপ वृतिशंहिलांग (य जाहांत महिक जाननात বিবাহ হয় নাই। অন্ত প্রমাণ থাকিলে ছ্র্বাসাও শকুন্তলাকে সে রকম শাপ দিতে পারিতেন ্না এবং দিলেও তাহা কার্য্য-কর হইত না। কিছু সে বিবাহের অন্ত প্রমাণ ছিল না, কেন না সে বিবাহ গোপনে দম্পর ইইয়াছিল। গোপনে সম্পন্ন হইবার কারণ কি? না ছম্ময়ের क्रमनीय विश्व। क्यारखद क्रमंगनीय রিপুট তুর্বাসার শাপের এবং সেই শাণো-স্থৃত সমস্ত অনিষ্টের অবাস্থর কারণ। কিন্তু সে বিপু অপবিতা নয়। চ্মন্ত রিপুন্মন্ত বটে কিছ ছুরাচার নন। তিনি শকুম্বলাকে কলঙ্কে ডুবাইবাব নিমিত্ত ভাঁছার সহিত মিলনপ্রার্থনা কবেন নাই। তিনি শকুন্তলাকে পত্নী করিয়া-ছিলেন—আসমুদ্র ভারতরাজ্যের র জী করিয়াছিলেন। কিন্তু চুর্ক্মনীর রিপু-পরবশ হইয়া তিনি কৰের প্রতাাগমন অপেকা করিতে না পারিয়া গোপনে শকুন্তলাকে পত্নীতে প্রতিষ্ঠিত করিয়া-हिट्टन। এবং সেই बनाई वागनि এত কট পাইলেন, শকুষুণাকে এত কট্টে ফেলিলেন এবং সমস্ত ভারত-द्राक्षाटक विभम्श्रन्थ कडिटलन। व्यर्थ এই यে ७४ ७ का छः कतरा विवाह कतिरल विवाह निक दश ना, अधू श्रमदत्र विनगरक विवाह यान ना। . विवाह শামাজিক স্থপত্ঃখের নিয়ন্তা; অতএব

সমালকে সাকী করিয়া, সমাজের সম্মৃতি লইয়া বিবাহ সম্পান করিতে হয়। মহ্ন যোর হৃদর সকল সময় এক কথা কয় না।

অজ্ঞাতহদয়েখেবং বৈরীভবতি দৌহদম্। (অভিজ্ঞানশকুস্তল, পঞ্মারু)

যাহার হৃদর অপরিজ্ঞাত তাহাতে প্রীতিবন্ধন এইরূপ বৈরিতায় পরিণ্ড হুইতে পারে।

षादर्श এक कथा। मगाम नमूराहित ত্রের উন্নতির প্রধান কারণ। মনুষ্ট চরিত্রে বাহা কিছু ভাল, উৎকৃষ্ট এবং মহং আছে তাহার অধিকাংশই কেবল সমাজ আছে বলিয়া বিকাশ পায় এবং দেখিতে পাওয়া যায়। দ্বিতীয় প্রস্থাবে ত্মন্তচরিতোর বিশ্লেষণে আমরা এ কথাব পরিকার প্রমাণ পাইয়াছি। আমরা দেখিয়াছি যে আত্মেতর ভাবের কাচে আত্মভাবের লয়েই সে চরিত্রেব গৌ-त्रव এवः উৎकर्ष। आगारमृत राम अवन मानिक भक्ति ध्वर कत्रवा ध्वतृति আছে তাহা সমাজ-সেবায় নিযুক্ত না হইলে পবিত্যভালাভ করে না। সমাজ-সেবার নিযুক্ত হইলেই সে সকল শক্তি **এवः श्रवृत्धि महदमः यूक्ट इत्र।** नरहर পশুপ্রবৃত্তির ন্যায় হেয় হইয়া <sup>থাকে।</sup> **माम्पञानवक्छ नमाक्र**म्पाय छे९मगी-কৃত না হুইলে হীনতা এবং অপবিএতা দোৰে দ্ধিত হয়, কেন না তাহা <sup>১ইলে</sup> ভাহা পশুপক্ষীর মিলন অপেকা <sup>বড়</sup> अकृष्ठे । अभाव के अविक्र

নীতির প্রাকৃত উৎস এবং উদ্দীপক।

এবং সেই জনাই সমাজকে সাক্ষী করিয়া,

সমাজের সমতি লইয়া, সমাজের মঙ্গলের

নিমিন্ত জীপুরুবের বিবাহস্ত্তে আবদ্ধ

হওয়া উচিত। ছল্লস্ত সে প্রণালীতে

শক্সলার পাণি গ্রহণ না করিয়া মহা
পাপ করিলেন এবং মহা অনিষ্ট ঘটাই
শেন। ইহাই অভিজ্ঞানশক্সলের তৃতীয়

অর্থা অভিজ্ঞানশক্সলে সমাজভব্বের

একখানি প্রাধান কাব্য।

কিন্তু ত্থান্ত যে চিত্তসংগমে অক্ষম হইয়া মহাপাপে পতিত হইলেন, ইহা কি ভয়ানক কথা। মহাকৰি যে প্ৰাণা-নীতে এই মহাপাপের উৎপত্তি ব্যা-য়াছেন তাহা বিবেচনা ক'রলে আমরা সমস্ত মহুধাজাতির নিমিত্ত ভীত ဧ ছঃথিত হই। ছয়স্ত সকল গুণের আধার। তিনি রাজা হটয়া, সমগ্রভারভের রত্ত্র-ভাঙারের অধীশ্বহুইয়াও বিলাসবিদ্বেষী। दिनि मान कहिएल निवादांक विनाम-সাগবে মগ্ন হট্য়া পাকিতে পাবেন এবং বিচিত্রপ্রণালীতে বিলাসবাসনা পূর্ব ক-রিতে পারেন। কিন্ত তিনি তাহা করেন না। তিনি পুরুষ প্রধানের নায় निवात्राजि श्रक्तत्याशरगाशी कार्या नियुक्त । उँ। हात्र व्यात्मान शाम श्वास श्रुवस्य व वाक्षक। विभाग समूर्वाग्रहास मधारू विवित्र विभागक्षकाती कित्रनदाणि कुछ

করিয়া পর্কতশৃত্ব হইতে পর্কতশৃত্বাস্তরে বিচরণ করিতেই তাঁহার আমোদ। রাজকার্য্যে তাঁহার প্রগাঢ় অমুরাগ, গভীর অভিনিৰেশ, অপরিমের শ্রমশীলতা। বাছবলে তিনি অধিতীয়; শক্রদমনে ক্ষিপ্রহন্ত, আগ্রহচিত্ত, অদীমদাহদ। তিনি মামুষ, আত্মসেবায় অনুরক্ত। কিছ সমাজদেবার্থ আত্মবিসর্জন আব-খাক হইলে তিনি তাহা অবলীলাক্রমে করিতে পারেন। তিনি মানুষ, মানু-ষেব নাায় মোহমুগ্ধ হন, কিন্তু আবশাক इन्देश के अनुकालिएक व गांत्र गिरम्बम्(धा মোহজাল কাটিয়া খণ্ডখণ্ড কবিতে পাবেন। তিনি গুরুজনসম্রুমকারী কিন্তু স্বাধীন চিস্তাশীল। তিনি সংগ্রন্তির थान्छ चाधात-विशासत वसू, महि-एत প্রতিপালক, সকলেরই হিটেমী। चिन चात्रभामत्न वीद्रायकं। भारत ऋপछित्र, हिळ्बिमात्र ऋनिপून, অন্তবিদায় স্থদক। তিনি পুরুষত্বের প্রতিমা—শক্তির জীবস্ত মূর্তি। তিনিও,বিপুর শাদনে খলিতপদ। রিপু কি ভয়ানক বস্তু! রিপুর কি অসীম शक्ति। दिश्रमवा कि विषय, कि मृग्गीय কার্যা। এ কথা অভিজ্ঞানশকুত্বল ভিন্ন আর কোথাও লেখে না। সেরূপীয়রের রোমিও এবং জুলিয়েটেও এ তত্ত্ব দেখিতে পাই না। • রোমিও এবং জুলিয়েটে বাছ

শ সমাজের মঙ্গলের নিমিত্ত উদ্বাহ—এ কথা বোধ হয় উনবিংশ শতান্ধীর বঙ্গীয় সমাজ্বসংস্কারক-নিন্দিত হিন্দুশাল্প ভিন্ন আর কোথাও লেখে না। বাইবেলের ত কথাই নাই—ভাহাতে লেখে যে বিবাহ না করিতে পারিলেই ভাল হয়।

অগৎ রিপুসেবার প্রতিকূল বলিয়া রিপু সেবা অনিটের চেতু হইল। অভিজ্ঞান শকুন্তলে অন্তর্জগৎ রিপুসেবার প্রতিকৃন রিপুगেবা অনিষ্টের হেতৃ থাকাতেও হইল। বাহ্লগৎ পরিবর্ত্তনশীল। অত-এব রোমিও এবং জুলিয়েটের এমন অর্থ হইতে পারে যে বাহ্যগ্রণ অনুকূল থা किटन त्रिभूरमवा पृष्ठभीय नय। উন্নত-নৈতিক-নিয়ম-শাসিত অংধাংগ্রিক জগৎ অপরিবর্তনীয়। অপরিবর্তনীয়ের সম্বন্ধে যাহা দূষণীৰ ভাহা সকল সময়েই দৃষণীয়। বাহাশক্তি প্রবল্ভম হইলেও তুর্বল। কিন্তু আধ্যাত্মিক শক্তি সকল সময়ে এবং সকল অবস্থাতেই প্রবল। মানব প্রধান মনু বলিয়াছেন--অরক্ষিতা গৃহে রুদ্ধাঃ পুরুষৈরাপ্ত কারিভিঃ। আস্থানমাস্থনা যাস্ত রকেয়ন্তা: সুর দি এ।।। এবং কবিগুরু বাল্মীকি বলিয়াছেন:--ন গৃহাণি ন বস্তাণি ন প্রাকারান্তি বস্ত্রিবাঃ। নে দৃশারাঞ্জ সংকারা বৃত্তমাবরণা স্তিয়া। অভ্রব বংছপজি অভিক্রম করিয়। যে রিপু কার্যা করে ভাহাকে প্রবল विविद्या (वाध इम्र मस्म् नाहे। किन्न ষ্মাধ্যাত্মিক শক্তি অভিক্রম করিয়া যে রিপু কার্যা করে তাহ কে প্রবল্তম অ (भका ध्ववन विषय् (वाध इय । এই নিমিত্তই রে:মিও এবং জুলিয়েটের ইতি-হাদ পাঠ করিলে আমরা ওদ্ধ দেই नात्रकातिकात संना कः चित्र हहे। किय ত্মন্তের 'ইতিহাস পাঠ করিলে আমেরা সমত মানবজাতির নিমিত্ত ভাবিত হই।

যণন দেখি যে রোমিওতে প্রাণয় এবং রিপুনাওতা বই আবে কিছুই নাই তখন गत्न इत्र त्य च्यात त्कान मानमिक भक्ति থাকিলে রোমিওব ন্যায় রিপুন্মত হইয়। সংসারের তু:পভাগী হইতে হয় না। কিন্তু যপন দেখি যে ত্মন্ত সমস্ত মান-সিক শক্তির আধার হইয়াও রিপুরান্ততা-ৰশত বিষম পরীক্ষায় নিকিপ্তা, তগন-শুপু হ্মন্ত কেন সম্ভ মানবলাতির निभिन्न हिन्ति इहे। अपिटक मान्य-ভাতিব ইতিহাস এবং অবস্থা প্রাণ্ লোচনা করিলেও ত সেই চিম্বার উদয इत्र। मञ्चामात्व हे वाजि । तिशू श्रधान, ब्रिश्व भागरन नौधिक्ष है। भागाना त्ला কের ত কথাই নাই। যে স্কল মহা-পুক্ষ জগতে বিদা।, বুদ্ধি, উরত্নীতি, উল্লুত চিত্তসংব্স-শক্তি, বীরত্ব এবং উদারতার আদশস্বল তাহারাও রিপুর শাসনে হীনগোবৰ। একটি মাত্রনাম করিলেই পাঠক এ কথার অর্থ ব্ঝিবেন। সে নাম ভাকেবর সা। আক্ররর গা অংশেষ ওংগ ভূষিত ছিলেন; কিন্তু গাঁ इ.व 'न ७,४१८ छत्र' कथा (नाम इत्र मकः **्लाठे घातत्र छ छ। ८६ म**ा सार्च गक-८ त्रष्ठे ष्मगञ्ज (कागर्व वर्णन (म मार्थः ध्व বুড়কাপাবুভি ছাড়িয়া দিংল, ভাহাব রতিপ্রবৃত্তি অন্যান্য সকল चार्लका बनवडी बनिया (बाध हा। कि**ड** गानवज्ञाित ≗हे गानमिक ध्वर ঐতিহাসিক তত্ত্ব সেকাণীয়রের বোমিও un: क्वित्त्रटि शास्त्र। यात्र ना, कार्न

দাসের অভিজ্ঞানশকুষ্ণলে পাওয়া যায়।
ফলতঃ অভিজ্ঞানশকুষ্ণল এই তত্ত্বেই
দৃশাকাবা। ইহাই অভিজ্ঞানশকুষ্ণলের
চতুর্থ অর্থ।

অভিজ্ঞানশকুন্তলের প্রায় সদস্ট বু-বিয়া দেশা হইল। কিন্তু এখনও কিছু , দেখিতে বাকি আছে। মহাকবি ছল্লন্ত ্রবং শকুন্তলার চরিত্র যে ভাবে চিত্রিত ক্রিয়াছেন,ভাহা বিবেচনা ক্রিলে স্পষ্টই বোধ হয় যে, ছল্লন্ড এবং শকুন্তলা পুরুষ এবং প্রাকৃতির প্রতিকৃতি। পুরুষের অর্থ – -জগতের হৃদ্দা, অনপলাপা, অপরিবর্ত্ত-নীয় উপাদান; প্রাকৃতির অর্থ — জগতের यून, अभागा, भविवर्त्तनभील উপा-দান। প্রথম এবং দিতীয় প্রস্তাবে আমরা হয়ন্ত-চরিত্রের যে বাাগ্যা করি-য়াছি, ভাহার একটি মর্ম্ম এই যে, ত্মস্ত জনপ্রধান এবং উ:হার মনের এমন একট ভাব আছে যে, তিনি নানাবিধ অবৃহায় পড়িয়াও সেই ভাবটি রকা করেন। তিনি যথনি কোন মোছে অভিভূত হইতেছেন, তথনি আমরা मिंग (य, जिनि (महे भाह काछ। है प्रा তাহার পৌরুষভাব ধারণ করিতেছেন। এই দৃশা দেখিলেই বোধ হয় ত হাতে এমন একটি ভাব আছে যাহা অপরিবর্তনীয় এবং অনপলাপ্য। কি স্ক শকুন্তলাতে আমরা সে রক্ম কোন ভাব দেখিতে পাই না। তিনি ভিন্ন ভিন অবস্থায় ভিন ভিন ভাব করেন; কিন্তু যখন ভিন্ন ভিন্ন

অভিভূচ, তপন তাঁহাকে গুম্বস্থের ন্যায় कान धकि निर्मिष्ठ जात्रत मिरक थान-মান দেখিতে পাই না। যেন ভাঁচাতে কোন অনপলাপ্য, অপরিবর্ত্তনীয় উপা-দান নাই। অধিকন্ত, তৃতীয় প্রস্তাবে भक्छला-छत्रित्वत्र नााशा वित्वहमा क-রিলে বৃঝিতে পারা যায় যে, শকুন্তলার मन concrete महक, ज्ञारखत मन abstract প্রিয়; শকুন্তলার হাদয় জড়জগৎ-সাপেক্ষ, ত্মান্তের হৃদয় ভাহার বিপরীত। এই এক কথা। আবার দেখি যে, পবিত্র তপ্যাশ্রমে রিপুদেবারূপ জড়জগতের কার্যা হইতেছে; ব্রহ্মনিষ্ঠ, ব্রহ্মাত্মক ঋষিক্লপতি কণু শকুন্তলাকে সংসারা-শ্রমে প্রেরণ করিতেছেন; এবং দেব-তুলা কশাপ চ্মন্ত এবং শকুন্তলাকে দম্পতির পৈ পুনর্মিলিত দেখিয়া আহলা-দিত চিত্তে আশীর্কাদ করিতেছেন। এই मक्न विरवहना क्रिल, त्वांध इश्र त्य, ত্মন্ত এবং শকুন্তলা পুরুষ এবং প্রকৃতির দৃশামান মূর্ত্তি। আবার কুমারসম্ভব প-ড়িয়া আমরা জানি যে কালিদাস সাঙ্খা-মতাবলম্বী ছিলেন, এবং কুমারসভবে সাখ্যদর্শনের পুরুষ এবং আধ্যাত্মিক মিলন চিত্রিত করিয়াছেন। **এবং সেই কালিদাস হ্বাস্থের মুথ দিয়া এইরপ বলাইয়াছেন:**—

অদ্যাপ্তি নৃনং হরকোপবছ্নিন্থার জ্বলভ্যোক ইবাস্বাশৌ।
ভ্রমন্যথা মন্মথ মধিধানাং ।
ভন্মাবশেষ: কথমেব মুক্ষঃ।

বোধ হয় আজিও হরকোপানল স্মুক্তে বাড়বানলের ন্যার নিশ্চয়ই তোনতে জ্বানতেছে। নচেৎ, হৈ মক্সথ, তুমি জন্মাবশিষ্ট হইলেও বিরহীদিগের পক্ষে কেন এরপ উষ্ণ হও।

এই সকল কারণে স্পষ্টই বোধ হয় रिय क्यातमञ्चरित रियम भूकर वदः आकृ তির মিলন চিত্রিত হইয়াছে, অভিজ্ঞান শকুন্তনেও তাই হইয়াছে। ভবে কুমাবসম্ভবের এবং অভিজ্ঞান-শকুন্তলের পুরুষ-প্রকৃতির মিলনের প্রভেদ এই যে, কুনাবসম্ভবে পুরুষ এবং প্রাকৃতির মিলন আধাাত্মিক ভাবে মিলন, অভিজ্ঞান-শকুন্তলে পুরুষ এবং প্রকৃতির মিলন সাংসারিক ভাবে মিলন। এই প্রভেদ-বশতঃ কুমারসম্ভবে মদন ভস্মীভূত र्हेन, व्यञ्छान-भक्षात मन्न कशी हरेत। हेश्व कार्य এहे (य, अविज्ञ-খীর ন্যায় আধাাজ্মিকভাবে জীবন্যাত্রা निर्काह करिएंड इटेल श्रकुंडिएक निर्मेष्ठ করিতে হয়, কিন্তু সংসারাশ্রমে থাকিয়া সংসারধর্ম পালন করিতে হইলে প্রাক্তরে প্রভাব স্বীকার করিতে হয়। **আ**ধাা-ত্মিক জগতে পুরুষেরম্বারা প্রাকৃতি শাসিত হয়; সংসারাশ্রমে প্রকৃতিরহারা পুরুষ শাসিত হয়। ∙এই প্রভেদ ব্ঝাইবার জনা মহাকবি শকুস্তলাকে লইয়া ত্ম (स्त्र भक्षांनन (क्षांहेलन, जवः वस्र्-মতী, হংসপদিকা, প্রভৃতি রাজ্ঞীদিগকে ত্মত্তের ইতিহাসের মধ্যে আনয়ন করিয়া পঠিককে 'বুঝাইলেন যে, অগতে প্রক্র-

তির বলে জীপুরুষের বোগসাধন হয় বলিরা ছম্ম গুধু শকুস্থলাকে লইরা বিপদ্প্রস্থ নন, আরো অনেক রমণী লইরা বিপদ্প্রস্থ। এবং জগতের অবস্থা পর্যা-লোচনা করিলে বুঝিছে পারা যার যে মসুষামাত্রই ছ্মান্তের ন্যার বিপদ্পান্ত। ইহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের পঞ্চম অর্থ।

কিন্তু প্রকৃতির বলেই জীপুরুষের : भिलम यनि रुष्टित नियम इहेल, उत्त त्म নিয়মসস্তাবনীয় বিষময় ফল নিবারণের উপায় কি? মহাকবি ভাহাও বলিয়া দিয়াছেন। ছ্র্বাসার শাপেরছারা ছ্ম ন্তকে মহাপধীক্ষায় মিকেপ করিয়া এবং সেই পরীক্ষায় ছ্মান্তকে জয়ী করিয়া महाकवि (प्रथारेबाएइन (य मसूरामरनत শক্তি অসীম এবং অপরিমেয়, প্রকৃতি यडहे वनवडी इडेक, मञ्द्रात मन छन-পেক্ষা বলবান। মাতুষ চেষ্টা করিলে **উक्ত नित्रम मञ्चादनीय दिवसय क्ल नि**वा-রণ করিতে সক্ষম। কিছু সে চেষ্টা অরা-রাসে স্থাসিত্ব হইবার নয়। প্রাকৃতি বড় ভয়ানক শক্তি। সে শক্তি দমন করিতে इहेटन माञ्चरक राजवाद्यरतत यूर्कत नाति বিপরীত যুদ্ধ করিতে হইবে। করিলে 'তবে সংসারাশ্রম স্থা, শাস্তি এবং পুণোর ভাশ্রম হইবে। (म द्रवश्र একটি ভয়ানক রণস্প। প্রত্যেক মমুষ্যকে বীরপ্রধান হইতে **रहेर्द, नरहर शान-ऋधित्र जवः यञ्जनात्र** হাহাকাররবে\* রবস্থ পরিপূর্ণ হইরা

<sup>&</sup>quot; विक्रमवायूत्र विवद्धरक्छ ८मई त्रव छना वात्र ना ?

উঠিবে। আরো একটি কথা আছে। চুত্মন্তের ইতিহাদে দপ্রমাণ ছইতেছে যে মানসিকশক্তি এবং ঐক্রিমিকশক্তি ছইটী भृगक् धदः श्वाधीन भागार्थ, मानमिकशक्त প্রবল হইলেই যে ঐক্সিরিকশক্তি দমিত চইবে এমন ভির্নিশ্চয়তা নাই। অত-এব ঐলিপ্রিকশক্তি দম্ন করিতে হইলে শুধু মানসিকশক্তির উপর নির্ভর করিলে সকল সময়ে অভিল্যিত ফল্লাভ নাও ছইতে পারে। সেইজনা মানসিকশক্তির সহিত সমাজ-শক্তি যোগ করা আবশ্যক। অর্থাৎ সমাজের গঠনপ্রণালী এবং সামা-জিক বিষম এমন হওয়া চাই বে দেই लवाली এবং निष्ठामत वाल लांकित ক জি য়িক শক্তি প্রশায় নাপাইয়া দমিত অভিজানশকুমলে চটরা আইসে। कालिमान এই মত न्लेडाकरत শকুস্তলার হারা তিনি করিয়াছেন। व्याहेबाएइन य शासर्य विवाह म्मनीय; এবৃং বসুমতী, হংসপদিকা প্রভৃতি রাজী-গণের ছারা তিনি বুঝাইয়াছেন যে বছবিবাছ বিষম অনিষ্টকারী। তিনি দেখাইয়াছেন যে উভয়প্রকার বিবাছই প্রকৃতি বা ঐক্তিয়িক শক্তির ফল এবং ঐদ্রিকশক্তির প্রতিপোষক। ঙিনি ' অভিজ্ঞানশকুস্তলে এই শিক্ষা দিয়াছেন যে थेकित्रिक्नकि सम्म क्रिए इटेल उर् मानिमक मक्ति श्राद्यांश कदित्व हिन्दि না, সমান্তকে স্থুসংস্কৃত এবং নীতিপ্রবণ ক্রিয়া সমাজ্ঞাপ মহা শক্তিও প্রয়োগ ক্রিতে হইবে ৷ অভিজ্ঞানশকুস্থল মান-

দিকশক্তি এবং সমাজশক্তির মহাকাব্য। ইহাই অভিজ্ঞানশকুস্তলের বর্চ অর্থ।

উপরে যাহা বলা হইল, তাহার মর্ম্ম এই যে, অভিজ্ঞানশকুম্বল ভারতের একটি প্রধান দার্শনিক তত্ত্বের দৃশ্যকাবা। (वनायनर्गत्न वत्न (य, शूक्ष्यहे महा এবং দৎ, প্রকৃতি অথবা জড়জগং মিখ্যা এবং অ-সং-পুরুষই পদার্থ, প্রকৃতি ছায়ামাত। সাঝামতাবলম্বী কালিদাণ অভিজানশকুন্তলে দেখাইয়াছেন যে. পুরুষও যেমন সতা, প্রকৃতিও তেমনি সতা; পুরুষও যেমন সং, প্রকৃতিও তেমনি সং, পুরুষও বেমন পদার্থ. প্রকৃতিও তেমনি পদার্থ। অভিজ্ঞান भक्षान ध्वकृष्ठि एय तक्य छेड्डनवर्त চিত্রিত হইরাছে, যে রকম প্রভাবশালী मुष्ठे दश, य त्रकम स्वाधीन-कात्राविभिष्ठे দেখা যায় ভাহাতে নিশ্চয়ই বোধ হয় যে মহাকবির মতে, অন্তিত্ব এবং প্রভাব সম্বনে, প্রকৃতি পুরুষের সমকক্ষ পদার্থ —ছায়া বলিয়া উড়াইয়া দিবার জিনিস নয়। প্রাকৃতি যে ছায়া নয়, প্রাকৃতির र्य वक्षे याधीन,वक्षे महाअज्ञावनाती. একটা বিষম সত্য-অন্তিত্ব আছে, অভি-জ্ঞানশকুরলে তাহা উজ্জলতম অকরে লেখা আছে। সেই মহাতত্ত্ব যেন অভিজ্ঞানশকুস্তলের প্রাণ। অভিজানশকুত্তল কাব্যাকারে সাখ্যা-पर्नत । **देशहे अख्छानभकुछ** त्वत अर्थ-তবের চরমগীমা। এত অর্থ আর (कान काटका करव रक रमिश्राद्ध ?

# চন্দ্রগুপ্তের সংক্ষিপ্ত জীবনী।

আর্যাাবর্তে সগধনামে যে জনাদ ছিল বৈদিক সময়ে তাহাকে কীকট বলিত। বিশা। ভরাসল্ল নূপতি মগধ-লেশে নিজ হ'জারাপন করেন। তাঁহার সময় হইটেই এই দেশ মগধন মে পরি চিত। মগধের অধুনাতন নাম বেছাব জ্বাসন য্যাতিপুল পুরুর বংশেহপর এবং মগধবংশীয় মহাবল পরাক্রান্ত ভূগালগণের আদিপুক্ষ। গয়ার পূর্ব হৈত রাজগৃহে তাঁহার রাজধানী ছিল। তিনি পাওবদিগের সমসাময়িক নৃপতি এবং ভীমের সহিত দক্ষুজ নিহত হয়েন। বারানসী নগরীতে জরাসন্ধ যে জয়ক্তপ্ত নির্দ্যাণ করিয়া-ছিলেন; মুসলমানেবা তাহা ভাগিয়া কেলিয়াছে। ছাবিংশতিজন নৃপতি জরা-সন্দের সিংহাসনে রাজত্ব করেন। বিষ্ণু-পুরাণের মতে মগধবংশের স্থিতি সহস্র বংসর পর্যান্ত নিরূপিত আছে, অর্থাং এই ছাবিংশতিজন ভূপাল একসহস্রবংসর মুগধ্সিংখাসন অধিকার করিয়াছিলেন। শেষ নৃপতি রিপ্ঞর স্নীক নামে ভাঁছার ত্রাত্ম। সভিবের হল্তে নিহত হন। ताक। नून स्नीक डीशांत शूल टामााउटक মগধসিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন। ইইার পরে পঞ্চদশব্দন মহীপতি মগধ্রাজ্যে देहारमत्र ताज्यकान ब्रांक्ष करवन। বিষ্ণুরালের মতে চারিশত নবতি বং

সর। মহারাজ মহানক্ষী ইহাঁদিগের
পঞ্চলশতম। ইহাঁর মহাপদ্ম নামে এক
তনর জ্যো। এই মহাপদ্মই ইতিহাসে
নক্ষনামে প্রোথিত হইরাছেন। মহাপদ্মনন্দ শ্রাগর্ভ সমুভূত ছিলেন। ইহাঁর করেল
প্রাণ এবং বাবত্ব বিদিত
হইয়াছিল। কেহই তাহার শাসন উন্ন
ভ্যন করিতে সমর্থ হইত না। যদাপি
ইনি শ্রার গর্ভে জ্যারাছিলেন, তথাপি
তাহার সামাজিক প্রতিপত্তি হির ছিল।
মহাপদ্মনন্দের নব পুত্র জ্যায়াছিল।
এত্তির তাহার ওরসে মুরানামী দাসীব
গর্ভে চক্রপ্রধামে আর এক পুত্র ছইয়াছিল। এই চক্রপ্রধার সংক্ষিপ্ত জীবনী
আমরা এ প্রতাবে স্কলিত করিব।

নন্দের পরবোকগমনান্তর তাঁহার নব প্রেরা রাজা অধিকার করিবেন। তাঁহারা চক্রগুপ্তকে উপযুক্ত বৃত্তি দিতে চাহিলেন, কিন্তু রাজ্যের অংশ দিতে অসক্ষত হইলেন। চক্রগুপ্ত তাহা গ্রহণ করিবেন না বলিয়া তাঁহারা তাঁহাকে মারিবার উপক্রম করেন। প্রাণভয়ে ভীত হইয়া চক্রগুপ্ত পঞ্চনদ্র্রদেশে পলাক্ষন করেন। তথার তক্ষণীলানিবাসী চাণক্যপত্তিকের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। চাণক্ষোর সহিত তাঁহার বাদিন প্রথম আলাপ হয়, সেদিন তিনি দেখিলেন বে, চাণক্য তক্ষণেচনপূর্মক কতক

গুলি কুশাস্কুরের মৃলোচ্ছেদ করিতেছেন এবং তাঁহাকে আপনার কার্যোপযোগী ব্যক্তি স্থির করিয়া তাঁহার সহিত মিলিত হইলেন। চাণক্য অতিশয় বৃদ্ধিনান্ এবং রাজনীতিশাস্ত্রে সমাক্ বৃহ্পর ছিলেন। এতাদৃশ সহায়প্রাপ্ত হইয়া চক্রপ্রপ্র মগধে প্রত্যাগননের উদ্যোগ করিলেন।

গ্রীদদেশীয় ইতিহাদলেখকেরা বলেন (ग, ठक्क छन्न यथन भक्ष नम् अदम् एन हि-লেন, তথন মহাবীর আলেক্ছাভার ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন, এবং বিপাশা-শিবিরসয়িনেশ নদীভীবে हक्त इश्र कारलक्षा इरिवर समागिरवर्ष প্রবেশ করিয়া আলেক্ডাডারের সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন। চন্দ্রপ্রের বাচালতা ও স্বাধীনভাবে বাক্সপ্রয়োগ হেতু সেকলার ভাঁগার উপর একণা কুন্ধ इटेग्नाडित्यन (य, जिनि शतायनवादा आध्यतका मन्नामन ना कतिरल, निन्ध्य তাঁহাকে মারিয়া ফেলিভেন। পবে তিনি কুত্মপুরে পলায়ন করেন, তথায় নবনন্দ নরপ্রিগণ একতা মিলিত হুইয়া বাজহ করিতেছিলেন। তাঁহাদিশের সময়ে রাজগৃহ ছইতে রাজধানী ভানাতঃ রিত হটয়া কুসুমপুর বা পাট্লিপুলে শংস্থাপিত হয়। কথন যে স্থান: স্থিত হইয়াছিল, তাহা আমরা জনত নিট। নন্দনরপতিগণ প্রকারঞ্করারা প্রজাবটোর <sup>পর্ম অ</sup>মুরাগভাজন হইয়া উঠিলেন। রাক্ষদ নামে অনৈক নীতিজ ত্রাক্ষণ ইহাঁদিগের অতিপ্রাচীন স্চিব ছিলেন। রাক্ষ্যের অক্তত্তিম স্থামিভক্তি এবং রা-জ্যেব হিত্তিস্ত্রনহেত্ স্ক্রেই তাঁহার প্রাশংসা করিত।

একদা চাণকা রাজবাটীতে কোন কার্য্যোপলকে নিমন্ত্রিত হইয়াছিলেন। তথায় কোন কারণবশতঃ তিনি নদ-নুপতিগণকর্ত্ত অপমানিত এবং সভা হইতে বহিস্কৃত হয়েন। এই নিদারণ অবমাননা জন্য তিনি নন্দ্রপতিদিগের ध्वः म मर्त्वभभएक शिष्ठि का करवन । शरुव म প্রতিজ্ঞা রক্ষা হইয়াছিল। চাণকোর यएन। ও वृक्तिकोशाल চलाखश्र निव মাতৃগণকে উপাংখনিহত করেন এবং সিংহাসনে আক্ত হুইয়া চাণ্কাকে নিছের মন্ত্রিত্বে ববণ কবিলেন। তংপারে উগ্রনামক একজন নন্দপুত্রদিগের পক্ষীর রাজা চল্ল গুপের বিনাশের উপায় कत्रना कवित्व, जिनि निभागवीका इहेर्ड माहाया आर्थना करतन এवः উত্তাপন্তাক পরাজিত কবিয়া সিংহাসনে দুড়তররূপে ममानीन कायन।(১) এ निषद बामदा আনাদিগের মতামত প্রকাশিত কবিব

এ দিকে সমাতাবাক্ষণ সচফে চাপ্রাক্ত্র নক্স্পতিগণের সম্চেত্র
সক্ষান করিয়া নগর হইতে বহির্গতহইয়া
মল্যকেতৃনামক জনৈক পার্কভীয় রাজার
সহিত মিশিত হইলেন। ইহার সহিত

নিলিত হইয়া চক্রগুপ্তের অনিষ্টদাধনে প্রবৃত্ত হইলেন এবং মলয়কেতৃকে কুস্থম-পুর আক্রমণ করিতে বলিলেন। মলয়-কেতু সমুদায় নন্দরাজ্য পাইবেন বলিয়া আক্রমণের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। রাক্ষসের মন্ত্রণাকৌশলে কুলুতদেশের অধিপতি চিত্রবর্মা, মলয়দেশের রাজা সিংহনাদ, কাশ্মীরাধিপ পুরুরাক্ষ, সিন্ধু-দেশভূপাল সিস্কুদেন এবং বহুতুরস্থ সৈন্য-শালী পারসীকপতি মেঘাক্ষ প্রভৃতি য়েচ্ছরাজ্বগণ মলয়কেতুর সহায় হইল। অন্যান্য পার্থিবগণও মলয়কেতুর পৃষ্ঠ-পোষকতা করিতে স্বীকার করিল। ভদ্ৰত, পুৰুষদত্ত, হিঙ্গুরাত, বলগুপু, রাজ্সেন, ভাগুরায়ণ, রোহিতাক্ষ, বিচয়-বর্মা প্রভৃতি চক্রগুপ্তেব সংহাথায়ী প্রধানপুক্ষগণ মলয়কেতৃর সভিত যোগ দিল। কুমুমপুরে জৈত্রহাত্রার ফনা খশ, মাগধ, চেদি ও হুনদৈনাগণ সমাগত হইতে লাগিল। পান্ধার ও যবনভূপাল গণ এবং শকভূপতিগণ সঞ্জিত হইতে नाशिन। সত্ত্রই কুস্থমপুর অংবরোধ क्रिट मनग्रक्यू चरेम्ना श्रम्म क्रि-लान वर मिन मिन नगरतत निक्रे वर्खी इहेट नागितन। मर्खबरे छेश्मार अ षाधावनात्र मृष्टे इटेप्ड नाशिन। मकरनहे ভাবিল চক্রগুপ্তের আর রক্ষা নাই। অমাত্যরাক্ষস কেবল এই বুদ্ধবিগ্রহের फ्रतमात्र ना थाकिया हक्त श्रद्धित विनारभत्र निगित वर्क विषयमी कना। शाशुरन निरद्धािक कतिरलन, এবং यञ्जनिर्मान,

বিষ্প্রদান প্রভৃতি কার্যো কয়েকজন প্রণিধি প্রেরণ করিলেন এবং জন্যান্য जातक नीजिकोशन श्रीशां कतितन। অমাতারাক্ষ্মের এই স্কল কৌশল-দেখিয়া নীতিজ্ঞ চাণকা ভীত হইলেন ক্ৰ মে ভাহা অন্তথা করিতে আরম্ভ করিলেন। চাণক্য প্রথমতঃ নিজ আজ্ঞাবহ অনুচরগণকে এবং কার্মানিপুণ্ চরদিগকে মলয়কেতু এবং রাক্ষদের নিকটে দাসত্ব স্থীকার করিতে প্রেরণ করিলেন। তাহারা স্থরেই উভয়েরই অতান্ত বিশ্বস্ত ভূতা হইয়া উঠিল। অমাতা রাক্ষস ভাহাদিগের দ্বারা যে যে কার্যা করিতেন,চাণকা তৎসমস্ত জানিতে পারিতেন; অমাতারাকাস কিছুমাত বুঝিতে পারেন নাই, যে ভাঁচ্র সেবকণর্গ চাণকোর লোক এবং ওঁছোর সর্বাশ করিতে উদ্ধাক্ত। কোন বাজি চন্দ্রপ্রের পক্ষ এবং কোন্ ব্যক্তি বিপক্ষ, ভাহা বিশেষরূপে জ্ঞাত হইবার নিমিত্ত চাণকা নানাভাষাকুশল চরসকল নিযুক্ত করিয়াছিলেন; তাহারা ভিল ভিন্ন বেশধারণ পুর্বাক নানাস্থানে ভ্রমণ করত তত্ত্ব লোকদিগের আচারবাব-হার অবগত হইতেছিল এবং কুত্মপুর-বাসী নন্দনরপতির অমাতা ও বন্ধুবান্ধ<sup>ব</sup> দিগের গুড় ব্যাপার ও উপায় নিপ্ণরূপে অসুসন্ধান করিয়া বেড়াইতে লাগিল। শেষ তিনি রাক্ষ্মের বিশ্বস্ত বাক্তিদিগ্রে পर्याष्ठ चरम् जानित्वन ।

চাণকা আনিতেন যে অমাত্যরাক্ষ

স্বার্থশূন্য, ভক্তিসহকারে তাঁহার কর্মব্য সম্পাদন করিতেন এবং কি প্রকারে প্রভুর শ্রেয়ঃ হইবে তাহাই অননাচিত্তে চিস্তা করিতেন। অনেক লোকেই স্বার্থসিদ্ধির জন্য সক্ষাংশালী প্রভূকে त्मवा करतः; किञ्च त्राक्रम तमक्रम हिर्मन "না। চাণকা বিবেচনা করিলেন যে র্কিসকে হস্তগত করিয়া চক্রগুপ্তের মন্ত্রিত্ব স্বীকার করাইবার প্রয়াস পাওয়া নিতান্ত আবিশাক। রাক্ষের বৃদ্ধি, বিক্রম এবং ভক্তি, এই ত্রিবিধ গুণ ছিল বলিয়াই চাণকা তাঁহাকে চক্রগুপ্তের মন্ত্রী করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন। যাহা-দিগের বৃদ্ধি, বিক্রম ও ভক্তি এই তিন গুণ থাকে, ভাহারাই প্রেক্ত ভূতা এবং ভাষাদের হইতেই স্বামীর সর্ক্ষালেই যথার্থ মঙ্গল হইবার সন্থাবনা। স্করাং চাণকা রাক্ষদকে হস্তগত করিতে যভদুর সাধা যত্ন করেন। প্রথমতঃ রাক্ষস ও মলমকেতৃর বিচেছদ উংপাদন করিবার निभिष्ठ চानका अक कोमन कथिएनन; রাক্ষ্যের নামমুদ্রা দ্বারা অক্ষিত একথানি প্র চন্দ্রগুপ্তের নিকটে প্রেরণ করি-<sup>[लन</sup>, [मरे भव भथिमधा हानकात থেরিত মলয়কেতুর বিশ্বস্ত সেবকদিগের <sup>দারা</sup> ধৃত এবং মূলয়কেতৃর স্মীপে আ নীত হইল। তদদশ্নে রাক্ষদের প্রতি <sup>মলয়কেতুর সন্দেহ বন্ধমূল হইলে তিনি</sup> অগতারাক্ষদকে অংহ্বান করিয়া আনো এবং ভদিষ্ক বিনিধ প্রশ্ন उँशिक किछः। मा कतिरमन।

পত্রের মর্মা কিছুই জানিতেন না, তিনি এবিষয়ে সম্পূর্ণ নির্দ্ধোষ ছিলেন; স্থতরাং তিনি সত্তর প্রদানে অসমর্থ হইলেন। ইহাতে মৃশ্ববৃদ্ধি মলয়কেতৃ র∤ক্ষসকে অপমানিত এবং স্বসকাশ হইতে দূরীভূত করিলেন। এবং চিত্রবর্মা প্রভৃতি পাঁচ জন মিত্রবাজকে মারিয়া ফেলিজেন। এই জনা অপরাপর রাজারা "মলয়কেতৃ অতি অবিবেচক ছুরুভি" ইছা বিবেচনা করিয়া, বিশেষতঃ ভয়বিহ্বল সৈভগণকে পলায়ন করিতে দেখিয়া আপনাদিগের বিষয় সম্পত্তিরক্ষার নিমিত্ত মলয়কেতুর দেনানিবেশ পরিত্যাগপূর্বক স্বস্থরাজে। প্রারাকরিলেন। তদনস্তর ভদ্রতী, পুরুষদত্ত প্রভৃতি চাণকাপ্রেরিত প্রধান-পুরুষগণ মলয়কেতুকে বন্ধ কবিয়া ফেলিল। তৎপবে রাক্ষস ছঃথিতান্তঃ-করণে কুসুমপুবে আগমন করিয়া প্রচ্ছন্ন-ভাবে অবস্থিতি কবিতে লাগিলেন। চাণকা তাহা জানিতে পারিয়া আরু একটা কৌশলপ্রয়োগ দারা তাঁহাকে হস্তগত করিলেন। একদিন চন্দ্রপ্রের সমভিব্যাহারে তাঁহার নিকট গমন করি-লেম এবং আপনি অমাত্যরাকসকে প্রণাম করিয়া যথাবিহিত বহুমানপুর: সর চন্দ্রগুরে তাঁহাকে প্রণাম করিতে বল-বেন। অমাতারাক্ষস চক্রপ্তথকে 'বিজয়ী; इउ" विद्या आंभी स्वान क्तिरलन।

এইকপে রাক্ষম হস্তগত হইলে চাণকা কাঁহাকে চক্সগুপ্তোর সচিবকার্গোর ভার গ্রহণ করিতে অমুরোধু করিলেন অং-

মাত্যরাক্ষস অগ্ডা৷ ভাহাই করিছে স্বীকৃত হইলেন। ভৎপশ্চাৎ চাৰকা **চক্র গুরে সমীপে রাক্ষ্যের নানাবিধ** সদ্গুণ বর্ণনা করিয়া তাঁহাকে মন্ত্রিছের চিহ্নস্তরপ শস্তপ্রদান করিলেন। অমাত্য-রাক্ষস চন্দ্রগুপ্তর শস্ত্রগ্রহণ করিয়াছেন, এমন সময়ে রাজপুরুষেরা মলয়কেতৃকে হস্তপদে বন্ধ করিয়া ছারদেশে স্থাপিত कतिल। ब्राक्ष्युक्रस्वता कि कतिएक इंटेरव এই বিষয় চাণকাকে জিজ্ঞাদা করিলে, চাৰকা বলিলেন যে এক্ষণে অমাত্য-রাক্ষস রাজকার্য্য করিবেন, স্থভরাং ভাঁ हारक निरंदरन करें। त्राक्षम ख्यन চন্দ্রগুরেক বলিলেন, "রাজন্, তুমি ত জানই যে অ।মি মলয়কেতৃর সহিত কিছু-কাল বাস করিয়াছিলাম, অতএন ইহার व्यागत्रका कत्र।" हन्द्रच छ हानहकात घूरथङ्ग निरक निदीक्कन कदिरल, डिनि ব্লিলেন ''চন্দ্রগুপ্ত, অমাতারাক্ষ্যের এই প্রথম প্রার্থনা রক্ষা করা উচিত।" ভদমুদারে চক্রগুপ্ত মলয়কেতৃকে পৈতৃক রাজা প্রদান করিলেন এক সম্মানের সহিত তাঁহাকে নিজ পৈড়ক রাজাে शार्व। हेया मिर्दान ।

চক্রগুপ্ত রাজের ভীননীর এই স্থানে হন্ত রাক্ষণ নামক নাটক শেষ হইয়াছে। এই নাটকে চাণকোর বৃদ্ধিচাল্রী এবং রাক্ষণের অকৃত্রিম প্রভৃতিক্ত অভি স্পষ্ট রূপে বর্ণিত হইয়াছে। চক্রগুপ্তের জীব-নীর শেষভাগ প্রাণ প্রভৃতি অন্যান্ত গছ হইতে সক্ষন ক্রিতে প্রবৃত্ত হুইলাম। বায়পুরাবে চক্সগুরের রাজ্যকাশ আটাইশ বংসর নিরূপিত আছে। কুনারিকাপতে এবং অগ্নিপুরাণে লিখিত
আছে যে চালকা এবং চক্সগুপুর কলিমুপ্রেব
২৭৯০ বংসরে স্কুক্ত পাপের প্রায়শ্চিত্ত
করিবাব নিমিত্ত নর্ম্মণাতীরন্থিত শুক্রশীর্ণে গমন করেন। এক্ষণে কলিমুগের
৪৯৮২ অফ চলিতেছে। স্কুতরাং শুক্রশীর্ণে গমন ৩১২ পূর্ব্ব গ্রীষ্টাব্দে ঘটিয়া
ছিল।

স্থলপুরাণে লিখিত আছে যে কলিযুগের ২৬৯০ বংসর গত ছইলে নন্দরাজা
এবং তাহার একশত বংসর পবে অর্থাঃ
২৭৯০ অন্দে চক্রপ্তপ্তের রাজ্য আব্দু
হটবে। ইহা কুম্বিকাপণ্ডের মুম্র
নিরপণের সভিত মিল হয়। ফুন্পুরাণের
বহন—

''তভোপি ত্রিসহয়ের দশাধিকশতভায়। ভবিষারকরাকাঞ্চালকো। যান্তান

યાઉ ∵ે

অর্থং তিনসহত্র বংসরের তিনশত
দশ বংসর অবশিষ্ট থাকিতে নলবালোর
আরস্থ। অনেকে ''লিসহত্রেষ্'' থানে
''দিসহত্রেষ্'' পঠে করিয়া একসংগ্র
বংসর পশ্চাতে ফেলেন। ভাগবাতর
দাদশদক্ষেব প্রথম অধ্যায়ে স্ট ইবানা
মহানন্দীর পুত্র মহাপদ্মানন্দ এবং তিঃ ব
হুমালা প্রাকৃতি অন্ত পুন্ ছিবা। এই
মহাপদ্মন্দু এবং ভাগর পুত্রগন একশত
বংসর পৃথিবী ভাগ করিয়াছিলেন।
ভাগবত্রের মতে ইছারা প্রীক্ষিং নূপ্

তির জন্মের ১৫১০ বংসর (এভবর্ষসহস্রঞ্চ শতং পঞ্চ দশোন্তরং) পরে রাজত্ব করিতে ভারস্ত করেন এবং একশভ বংগর রাজত্ব করেন। ইহার মতে পরীকিৎ কলিমুগের অশীতি অবেদ জন্মগ্রহণ করেন। স্থতরাং কলিযুগের ১৬৯০ অদে নন্দরাভা কাল। অভএব ১৭৯০ कनित करन वा ১০১२ शूर्व औष्टै।रम চন্দ্রগুপ্তের রাজ্যকাল হইয়া পড়ে। কিন্তু ইহার সহিত পূর্বেকাক্ত সময়ের ঐক্য হয় না। প্রাচীন ভারতের কোন রাজার সময়নিরূপণ প্রায় অস্তুর। ত বে চল্লগুপ বিষয়ে যাহা **কিছু** পুবাণাদিতে পাওয়া গিয়াছে ভাহা পাঠকমহাশয়কে উপহার দেওয়া গেল, তিনি ইহার ভিতর হইতে সারগ্রহণ করিবেন। বৌদ্ধ গ্রন্থে চক্রপ্রত্তের রাজ্যকাল চৌত্রিশ বর্ষ নিদিষ্ট আছে। বৌদ্ধনতে চক্ৰগুপ্ত ৩৯৬ পূর্ব খ্রীষ্টাবেদ সিংহাদনে আরোহণ করের। পুরাণমতে ভিনি ২৫ বৎসর निक॰ फरव मगस्त्राका भागन कतिया यानवनीला मचत्र करत्रन। কোন মতে ২৯২ পূর্ব গ্রীষ্টাব্দে তাঁহার मृङ्ग रम ।

চক্রপ্তথ নিজপ্রতাপ ভারতবর্ধের অনেকত্ত বিস্তার করিয়াছিলেন এবং পঞ্চনদ প্রদেশ হইতে এীক্ বা যবন-দিগকে দ্রীভূত করিয়া দিয়াছিলেন। প্রবাদ আছে যে তিনি দাক্ষিণাত্যে ফ্রুনদীর তটে চক্রপ্রেনগরী নামে এক নগরী সংস্থাপিত করেন। ত

विका लारकही हिन्द्र छार छेत्र हे हिहान বিশেষরপে অবগত আছে। মুদারাক। সের রচয়িতা এবং টাকাকার উভয়েই जल्मभीव (नाक। यवन(मनानी (मनि-উক্স ভারতবর্ষে নিজ অধিকার পুনঃ প্রাপ্তির জন্য আর একবার ভারতবর্ষ আক্রমণ করিতে অগ্রমর হয়েন। কিন্তু চক্রগুপ্ত স্বদৈনাসামস্ত সম্ভিব্যাহারে তাঁহার গভিরোধ করেন এবং তাঁহাকে পরাজিত করিয়া সন্ধি করিতে বাধ্য करतन। मूजवाकारगत (भरव (य यवन দিগের অক্রেমণের উল্লেখ দৃষ্ট হয় তাহা এই আক্রমণ। মগধরাজ্য পরাক্রাস্ত না থাকিলে যবম**হ**ন্ত হইতে ভারতব**র্ষ** রক্ষা করা ভার হইত। চল্রগুপ্তের महिङ यनगरमनाপতिর मन्नि ७०२ औ**ष्टे।टक्** হইয়াছিল। চক্রগুপ্তের রাজ্যে প্রজা-निट्धत स्थक्कन दृष्टि धवः मामा**जिक** উন্তি হইয়াছিল। প্রাকৃতিবর্গ মগধ-রাজ্যের শান্তিছায়াতে নির্বিল্লে স্থথে কালহরণ করিভ, কোন উপদ্রব বা অত্যাচারের শকা ছিল না।

চক্রগুপ্তের রাজধানী পাটলিপুত্ত নগর গঙ্গার উপক্লে স্থিত এবং পঞ্চক্রোশ দীর্ঘ 'ও একক্রোশ প্রস্তে বিস্তৃত ছিল। তৎ-কালে ইহা বাণিজ্যের একটী প্রধান স্থান ছিল। নদীর বক্ষে শত শত বণিক্পোত ভাসিতে দেখা যাইত। নগরের মধ্যে নানাশ্রেণীর কারু শিল্লকর বাস করিত এবং অগণ্য পণ্যবহল বিপণি ও আপণ্-মালা রাজপথের শোভাসম্পাদন করিত

হস্তিগণ অলম্বত স্থচাক হাওদা পৃষ্ঠে করিয়া গম্ভীরপদ্বিক্ষেপ পূর্ব্বক রাজ্বপণে ইতন্তভ: বিচরণ ও যাতারাত করিত। অখারোহিগণ তুরঙ্গমপৃষ্ঠে বিচিত্রগভিতে ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ করিত। রাজা স্বরং রণক্ষেত্রে সেনাপতির কার্য্য এবং ধর্মাধি করণে বিচারপতির কার্য্য করিতেন। চক্রত্তপ্ত অভিশয় রণকুশল সেনাপতি এবং অভি স্থবিজ্ঞ বিচারক ছিলেন। ভাঁছার চারিলক্ষ বেতনভোগী স্থির সৈন্য (standing army) ছিল। তিনি মুগরা-भील हिटलन এবং भत्रामनशातिनी यवनी-গণপরিবৃত হইয়া মৃগয়ার্থ বহির্গত হই-তেন। তাঁহার রাজ্যে সভাতার আলোক मर्क्ज विकीर्व इदेशाहिन। बाडिएडम এবং পৈতৃকব্যবসায়াহ্মরবপ্রথা সমাক্ প্রচলিত ছিল। রাজ্যের নানাবিভাগে स्याना बाबशुक्यमिरावदावा स्टाकः ভাবে রাজ্যশাসনকার্যা ও শান্তিবিধান সম্পাদিত হইত। প্রজাদিগের গৃছে স্থ শান্তি বিরালমান ছিল। প্রজারা স্থা স্বচ্চন্দে কাল্যাপন করিত। বৃণিক্ ও भित्रोता दारकात विविधक्यकारत **উ**ञ्चिक সাধন করিত। তাহারা চক্রগুরের রাজ্যে স্বস্কার্য্য করিতে অনুমতিপ্রাপ্ত' আমরা প্রস্তাব শেষ করিব। হইয়াছিল বলিয়া রাজাকে কর দিত। অধুনাতন ইংরেজরাজ্যে বাবসারীরা এবং শিলীরা আইনখারা স্বক্তি হইয়া नित्राभाम चचकारी कात्र बनित्रा त्रासाटक কর দিয়া থাকে। অন্তলিশ্মাণ এবং পোতনিশাণের খতত্র ক্রিয়ালয় ছল

এবং সেই মেই স্থানে অৱশত্ত্ৰ ও পোত সকল নিৰ্মিত হইত। রাজা ব্রাহ্মণ দিগকে অভিশয় সম্মানপ্রদর্শন করিতেন। প্রতিবৎসর তিনি ব্রাহ্মণদিগকে লইয়া এক মহাসভা করিতেন এবং তাঁহাদিগের সহিত রাজ্যের ও প্রজাদিগের উন্নতির উপায়চিষা করিতেন। চন্ত্রপথ চতু-. বিঁধ রাজবৃত্ত সমাক্ সাধন করিতেন.। नावास्माद अर्थाभाक्तन, त्मेरे अर्थेव वर्षन, ভाषांत्र त्रक्रम धवः मरक्षकाद्व তাহার বাম এই চারিটী কার্যাই তিনি উত্তমরূপে বুঝিতেন। চক্সগুপ্ত বৌদ্ধ ছিলেন না, হিন্দু ছিলেন। তাঁহার পৌত্র ष्यामक (वोष इरेग्राहित्मन এवः ष्रातक বৌদ্ধ স্তুপ ও মঠ নির্মাণ করিয়াছিলেন। **চক্ত থের রাজ্যসময়ে সমাজে "অহিং**সা পরমো ধর্ম:" এই মত প্রচলিত হইয়া সমাজকে অল্লকাল পরে বৌদ্ধর্ম অব-লম্বন করিবার উপযোগী করিতেছিল। **हक्ष ७८३**व बाकाकारम ध्वर ड्रांशंब পুত্রপৌত্তের সময়ে মগধরাক্য অত্যন্ত সমৃদ্ধ ও প্রবলপরাক্রাস্ত হইয়াছিল। মধধরাকা হইতে ভারতবর্ধের কি উপ-কার হইবাছে, ভাছার উল্লেখ করিয়া

যথন শাক্যসিংহ মগধে পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন, তখন মগধ ছই চারিটি কুত্র কুত্র রাজ্যে বিভক্ত ছিল। কিয় যখন আলেক্জাঙার ভারতবর্ধ আক্রমণ করেন, তথন মগধ সাতিশন উন্ত, এই হুইশত বা नमुद् ७ व्यवन।

আড়াইশত বংসরের মধ্যে পূর্বোক্ত কুদ্র রাজাগুলির সমবার হইয়া মগধসাত্রা-ভোর উৎপত্তি হয়। কি কারণে এই রাজ্যসকল সমবেত হইরাছিল, ভাহা ভানিবার কোন উপায় নাই। ভারত-বর্ষে যে রাজ্যের রাজা পরাক্রান্ত ভাঁহার . রাজ্যেই প্রজাদিগের স্থাশান্তি ও সমৃদ্ধি দেখিতে পাওয়া বার। **মগধদান্ত্রাজ্য** অতি প্রবল পর্যক্রাস্ত চিল বলিয়াই প্রজাদিগের মুধ্যাছ্দা ও निद्रांश्रम মগধরাজগণ পৃত্তি দিকার্যাধারা ध्यक्षानिरात स्थ्यक्त काविधान यक्नीन ছিলেন। মগধরাজ্য তৎকালে ভারত-वर्षत्र श्रांगचक्रभ इहेत्राहिन। যখন সেকলর ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন. তথন পঞ্চনদপ্রদেশের রাজগণ ভাঁছার প্রতাপ সহা করিতে অসমর্থ হইল। কিন্তু মগধের গর্জ্জনে তাঁহার জ্বয়ে ভীতির সঞ্চার ছইল এবং ডিনি আর **शृक्षित ना आंत्रिया शक्षनम्थातम् इहे**-তেই স্বরাদ্যাভিমুখে প্রতিপ্ররাণ করি-किष्ट्रिन शरत आवाद यथन সেক্সরের অন্যতম সেনানী সেলিউক্স ভারতবর্ষ আক্রমণ করেন, তখনও মগধ হইতে ভারভরকা হয়। সেলিউকস 'বর্ণনা করিতে প্রবৃত্ত হইলাম না। চল্র থথের সহিত যুদ্ধে পরাজিত হইয়া मिक क्रिट्ड वांचा इहेब्राहिस्तन । मगंध गोबोका ना शिक्टन (वांश इत, छात्रछ-

वर्ष किछूमिन श्रीकमिश्तंत्र अधीरन था-किछ। मूखात्राकरमत्र ८ मध्य ८ ययन-দিগের আক্রমণের কথা দৃষ্ট হয়, তাহা বোধ হয় সেলিউকদের আক্রমণের ৰূপা। অতএব মগধ হইতে ভারতবর্ষের ছ্টটি প্রধান উপকার সাধিত হয়। একটি প্রকৃতিদিগের অধন্বচ্ছলতাবৃদ্ধি ও সামাজিক উন্নতি। বিতীয়টা ভারত-বর্ষের বিদেশীয়দিগের আক্রমণ হইতে রক্ষাসাধন। যতদিন মগধের বলবিক্রম বিদ্যমান্ ছিল, ততদিন আর কোন বহি:শত্রু ভারতবর্ষে প্রবেশ করিতে সাহস করে নাই। মগধরাজ্য হইতে আর একটা ট্রপকার হইরাছে। তাহা দাকিণাত্যে আধিপতাবিস্তরি। অশোকরাজের সময়েই ঘটে। অশোক নুপতির রাজ্যকালে দাক্ষিণাত্যের অনেক স্থান ও সিংহলদেশ বৌদ্ধর্মেদীকিত হয় এবং ভাৎকালিক ব্রাহ্মণগণ মহারাষ্ট্র, স্রাবিড়, কেরল, তৈলস প্রভৃতি প্রদেশে পৌরাণিক্যত প্রচার করেন। মগধসাদ্রার তৃতীয় উপকার। ইহার বিশেষ বিবরণ এ প্রস্তাবের প্রতিপাদ্য विषय नटह विनय आमत्र आमा हेरात সময়ান্তরে ইহা বিবৃত করিবার অভিলাষ ब्रह्मि ।

इ म।



# মাধবীলতা।

২ ০

পরাদ্বস প্রাতে মাতক্ষিনী একজন
বৃদ্ধা পরিচারিকাকে বলিল, "আরি,
আমার চাকুরীতে ইস্তফা—ঠাকুরাণী
আমার খুঁজিলে তাঁহারে ব্ঝাইরা বলিও
আমি চলিলাম।" বৃদ্ধা জিজ্ঞাসা করিল,
"সে কি! তুই কোথার চলিলি?"

মাত। তা এখনও ঠিক জানি না।

वृद्धा। (कन हिन ?

মাত। আর চাকুরী করিব না।

बुद्धा। कि कदा शाविध

মাত। ঘটকালী করে।

বৃদ্ধা। ও জাবার কি কথা? তা একটু থেকে যা, ঠাকুরাণী উঠিলে ভারে বলে যাসু।

মাত। তাঁরে বলা হবেনা।

वृद्धा। (कन ?

মাত। তাঁরে দেখিলে যাইতে পারি-বনা।

বৃদ্ধা। তাতোর গিরে কান্স কি ? মাত। আমার কাল আছে, আমি

इतिनाम् ।

এই বলিয়া মাতজিনী চলিয়া গেল।
বৃদ্ধা একবার ডাকিয়া বৈলিল, "তোর
পাওনা পাইয়াছিল?" মাতজিনী কোন
উত্তর করিল না। বৃদ্ধা আপনা আপনি
বলিতে লাগিল, "মর। ছুঁড়ি, পাগল
ব্রেছেনা কি?"

মাতঙ্গিনী রাজবাটী হইতে বহির্গত হইরা একবার বাটীর দিকে ফিরিয়া চাহিল, সজলনগনে মনে মনে বলিল, ''মা নিজা যাও,—নিশ্চিক হইরা নিজা যাও, এ দাসী তোমার তোমার স্বামীক সিংহাসনে আবার বসাইবে।''

অপরাক্তে মাডলিনী ব্রন্ধচারীর সহিত সাকাৎ করিবার নিমিত্ত ভাঁহার মন্দি-রাভিমুখে(গেল। ছুপথে ছই একটি পুরু-বের সহিত সাক্ষাৎ হইলে, তাহারা মাত-क्रिमीत था विकार विकार नार्म हो हिल। মাতদিনীর 🕻 মনে পড়িল, যে সে যুবতী; কিন্তু তৎক্ষণাৎ মুষ্টিবন্ধ করিয়া অঞ্ল ধরিয়া মাখা নাড়িয়া সদর্পে চলিরা গেল, মন্দিরের সমূথে পেীছিলে তিগার্দ্ধ ইতস্ততঃ না করিয়া প্রবেশ कतिन; उथाइ त्क्ह नाहे (प्रिया मित्र इहेट वहिर्गछ इहेबा कानीपर ভটে ব্রহ্মচারীর প্রতীক্ষার বসিয়া বহিল। সায়ংকাল উপস্থিত, বৃদ্ধচারী আসি লেন না কৈমে য়াতি একপ্ৰহয় অভীত **रहेन, ७ थन्छ उन्हातीत् (**एथा नाहै। মাতলিনী অৰকার দেখিয়া 'একবারমাত্র किकिर हक्त रहेबाहित, किंद भरत (म চাঞ্চা আরু রহিল না। দহের সোপাৰে বসিরা মন্দিরের প্রতি बाजि छ्हेशहरवव চাহিয়া রহিল। সময় ব্ৰহ্ণায়ী মশিষ হইতে বহি<sup>ৰ্গত</sup> হইলেন দেখিরা মাতদিনী কিঞ্চিৎ বিশ্বরাপর হইল, কিন্তু সে দিকে মন না দিরা নির্ভর্গিতে ব্রহ্মচারীর সমূধে আসিরা দাঁড়াইল। ব্রহ্মচারী বিজ্ঞাসা করিলেন, "কে?" মাতদিনী উত্তর করিল, "ভিধারিণী।"

ব্রন্ধ। অসমরে ভিক্ষার নিমিত্ত কেন ? আর আমি নিজে ভিক্ষুক আমার নিকট ভিক্ষা কিরপ ?

মাত। আপনার নিকট ভিকা ক-রিতে আদিতে গেলে বোধ হয় এই ঠিক সময়। আর আপনার নিকট কেবল মাত্র একটি পরিচয় ভিকা করিতে আদিয়াছি।

ব্রহ্ম। কি পরিচয়?

মাত । আপনি রাজ্জামাতাকে চিনি-তেন ?

ত্রন্ধ। না—কিন্তুদে পরিচরে ভো-খার কি প্রযোজন ?

মাত। রাজজামাতার নিবাস কোপার ছিল আপনি জানেন ?

বন। আনি—তকপ্র।

মাত। রাজসামাতার নাম কি ছিল জানেন ?

বৃদ্ধ । জানি—বিলয়রাজ। কিছ অরে কোন কপার জামি উত্তর দিব না। ছমি বল, ভোমার এ সকল কপায় কি প্রোজন •

মাত। আমি বিজয়রাজকে পুঁলিতে বাইব—তাহাই আপনাকে ভিজ্ঞাসা করিতেছি। ব্ৰন্ধ। বিভয়রাককে তোমার কি প্রয়োজন ?

মাত। বিজয়রাজ আমার মাতার
নিকট বছকাল অবধি ঋণী আছেন,
সেই ঋণ আদায় করিতে আমি তাঁহার
নিকট যাইব।

ত্রন। কে ভুমি ?

মাত। আমি বিধবা--অনাধা।

ব্ৰহ্ম। কিছু যুবতী দেখিতেছি।

মাত। বৃদ্ধ ব্ৰহ্মচারীর ভাহা চিনিতে পারা উচিত হয় না।

ত্রন্ধ। এই অন্ধকারে একাকী যুবতীর প্রান্থরে আসা আরও উচিত হয় না। 🔭

মাত। বিপদ্গত্তের সে বিচার থাকে না। অভ্যেরও সে বিচার করা অস্তার। ব্রন্ধ। আমি আবার জিজ্ঞাসাকরি, "কুমিকে ?"

মাত। স্থামার যাহা দেখিতেছেন, আমি তাহাই। ইহার অধিক পরিচর আনু আমার নাই।

ব্ৰহ্ম। বিজয়রাজকে তোমার মাতা

থপন ঝীণে আবদ্ধ করিতে সক্ষম হইয়াছিলেন, তথন তাঁহার পরিচয় বিলক্ষণ
আচে তবে তাঁহার পরিচয় দিতে তোমার
আপরি কি ৪

মাত। কোন পরিচর আমার জিজ্ঞানা করিবেন না। আমি আপনাকে '
ভক্তিকরি, ভাছাই আপনার নিকট আসিরাছি। আমার সহায়তা করিতে পারেন, আপনার ধর্ম আছে; সহায়তা

না করেন, বলিয়া দিন তক্ষপুর কোন পথে যাইব।

বন্ধ। বিজয়রাজের বছকাল মৃত্যু হইরাছে; তক্ষপুরে তুমি অনর্থক যা-ইবে।

মাত। তাঁর আর কে আছে।

ব্ৰহা এক ভাই আছে।

মাত। আপনি তাঁরে চিনেন ? তিনি কিরপ ব্যক্তি ?

বন্ধ। আমি চিনি, কিরপ বাজি ভাষা ঠিক বলিতে পারি না, তিনি একণে যুবা—আমরা বৃদ্ধ, যুবার কিম্বা যুব-ভীর চরিত্র অনুভব করিতে পারি না।

মাত। তাঁর ছই এক ট্র কার্যা যদি দেখিয়া থাকেন, আমায় বল্ন আমি অফুভব করিব।

ব্রন্ধ। আমি তক্ষপুরে অনেকদিন যাই
নাই, যখন যাইতাম তখন ধনমদে জিনি
উন্মন্ত ছিলেন। তাঁহার দান্তিক তা অতিশব্ধ বলিয়া বোধ হইত। কোন
রাজা, কি প্রভা, কি পণ্ডিত, কাহাকেও
তিনি গ্রাহা করিতেন না। এমন কি
তাহার জন্মদাতাকেও তিনি লক্ষ্য
করিতেন না। একদিন তাঁহার তাকিয়ায়
লাখি মারিয়াছিলেন। আর পিতাকে
চাকরী হইতে বরপান্ত করিয়াছিলেন।

মাত। পিতাকে বরণাত করিয়া ছিলেন কি, বুঝিলাম না। তাঁহার পিতা রাজা ছিলেন, তাঁহাকে কিরপ বরখাত করিয়াছিলৈন ?

বন। তাঁহার অক্সদাতা রাজা হিলেন

না। তিনি রাজার দেওরান্ ছিলেন।
রাজা সেই দেওরানের পুত্রকে পোষ্যপুত্র
লইরাছিলেন। বিজ্ঞরাদের ভাই
এমনি কুড্র ধে রাজ্য পাইবামাত্রই
দেওরানের দেওরানী কাড়িরা লইলেন।

মাত। কেন, তাহা কিছু মানেন ? বন্ধ। তাহা আমি ঠিক, ভানিনা, কাল মাহাত্মে এসকল ঘটে।

माछ। এখন দেওয়ান্ কে ?

বন্ধ। বলিতে পারি না, তবে ওনি য়াছি যে বিভায়রাজের সময় যে সকল আমলা ছিল, উঁহার ভাই ভাহাদের সক-লকে ভাকাইয়া নিজ নিজ কর্মা দিয়া-ছেন আর তাঁহার জনকের নিয়েজিত সকল লোককে ভাড়াইয়াছেন।

মাত। ছুইটিই শুভ সম্বাদ, এখন তক্ষপুরের পথ বলিয়া দিন, আমি আমার ঋণ আদায় করিতে পারিব।

ব্হন। এই চুইটা পরিচয়েই ডুমি কি বুঝিলে ?

মাত। আমি এই ব্ৰলান বে বিজয়রাজের ভাই বৃদ্ধিগান্— লনকের শৃঠতা বৃবিষ্ণাছেল।

ত্রক্ষ। ভাছা আমিত কিছুই বুঝি নাই--ভাল, ভূমি ভক্তপুরে যাইবে, ভোষার সঙ্গে আর কে হাইবে?

माउ। जांशनि याहेर्वन।

বন্ধচারী চক্ষু বিক্ষারিত করিরা মাত দিনীর দিকে চাহিয়া রহিলেন; কির ক্ষকারে ভাহার মুধ্কিছুই দেণিতে পাইলেন না। মাতদিনী আর উভরের चाराका ना कतिया मृहर्द्धक मरश मनिवादियां कविवा कम्खन् वानिवा ব্ৰহ্মচারীর হাতে षिय। জিজাসা করিলেন,—"এ কি ?"

মাত किनी वितन, "हनून।"

° ব্ৰহ্ণাৰী অবাক্হইয়া আবার মাত-क्रिनीत मिरक চारिया त्रहिलन; (याज-দিনী বলিল, "ভাবিতেছেন কি ? আপ-নাকে যাইতে হইবে। আমিত পুর্বেই বলিরাছি আমার আর কেহ নাই যে আমার সঙ্গে যাইবে। আমি যুবতী, অল্যে আমার সঙ্গে গেলে ভাল দেখা-हेत्व ना, अञ्चर आशनि गाहेत्वन। আপনার এখানে থাকিয়া কি লাভ ? কাহার উপকার করিবেন ? আমার সঙ্গে গেলে আমার উপকার হইবে। অতএব চলুন।"

ব্ৰহা তোমার নাম কি ? মাত। আমার নাম "মাত কিনী।" বৃদা। তোমার বড় সাহস। মাত। বড় সাহস না হইণে বড়

করিলে, ভোষার মত স্তীলোক কৈ षामि उ कथन (मिश्र नाई। <sup>ইচ্ছা</sup> হ**ই**তেছে যে তুমি তক্ষপুরে গিয়া कि कत्र जाहा व्यामि (मिथा

মাত। ভবে চলুন। वन। आसि नहा।

मशत स्तिष्ठ वामि नारे।

মাত। चानिहै। विनष इहेरन चांशनि वाहेत्छ शातित्वन ना। আজি বাত্রা করে কতকদূর গিয়া বিশ্রাস कदिर्वन।

वक्काती शामित्रा वितासन, " आक्रा, চল, দেখা ্যাউক, ইহার পর আর কি আছে।"

তাহার পর উভয়ে তক্ষপুর উদ্দেশে যাতা করিলেন।

### २ऽ

যে অপরাহে মাতলিনী ব্রহারীর সহিত সাক্ষাৎ করিতে যাইভৈছিল, সেই অপরাকে পুটুর মার প্রতিবাদিনী পদা কে-শবিনাদে করিয়া, রক্তবস্ত্র পরিয়া, মুখ-খানি তৈলে●মাৰ্জিত করিয়া ছারে माञ्चित्राहित्नन; अयत ममत्र पृष्टेकन व्यभारतारी शथ मित्रा ८वटश व्यवहालना করিয়া গেল। পদ্ম ভাহাদের দেখিয়া অভি চঞ্চল হইলেন, ''এইবার আসিতে চেন''ব-লিয়া বস্ত্র যথাস্থানে নাস্ত করিয়া যেন অক্তমনত্তে বাহিরে আসিলেন, যেন কিছু হারাইয়া গিয়াছে বলিয়া ভাহা খুঁজিতে वाशित्वनः गर्धा मर्धा पश्चिकत्तत्र अधि কটাক্ষ করিতে লাগিলেন, কিন্তু অখা-এক্ষ,। ভূমি আমান্ন বড় আশ্চর্যান্নিত্ত, রে:হীদের পর কোন শিবিকা বা লোক-জন নাদেখিয়া হতাখাদ হইয়া আবেরে यथात्रात्न व्यक्तावर्धन कतिर्वन। অবধি পুঁটুর মার পরিচর্যায় রাজা मात्र मात्री नियुक्त कतिया पियाहितन, দেই অবধি পদ্ম প্রায় প্রত্যাহ অপরাক্ষে **এইরপ-বেশবিন্যাস করিয়া দ্বারের অন্ত**-রালে দাড়াইয়া পথের লোক দেখিতেন।

পালার বরস ্বিংশতি বংসর কিন্তু দে-খিলে জিংশংবর্ষীয়া প্রোচা বলিয়া বোধ रहेक, भागमवर्गा, विश्वाकी, मीर्चनवना, क्रयुग चिं जून। भाषांत्र युवामहान স্থান বী বলিরা পদ্মের পশার ছিল; কিন্তু পদ্ম ছুশ্চরিত্রা বলিয়া ভাহারা কথন সন্দেহ कतिङ ना, खशह शच हेमानीः पूर-খানি তৈলম।জিভিত করিয়া হারের অস্ত-রালে যে ভাবে দাড়াইয়া থাকিতেন,ভাহা দেখিলে নিজ পাড়ার না হোক্, অপর পাড়ার যুবারা সন্দেহ করিলে করিতে পারিত।

পদ্ম যে কেন বাবে দাড়াইয়া থাকিত, ভাছা কেবল সোহাগী দাসী বুরিয়াছিল। অশ্বারোহীর পশ্চাতে সেহািগী পথ দিয়া যাইডেছিল, পদ্মের প্রতি কটাক্ষ ক-রিরা ঈষৎ হাসিল। তাহার হাসি দেশিয়া পালের মুখ পাঞ্বর্ণ ছইয়া গেল, তৎক্লণাৎ পদ্ম বারক্ষ করিয়া অস্ত:পুরে গেলেন, আর চারি পাঁচ बिरम (म बाद जामितन সেই অবধি সোহাগীর প্রতি পদ্মের বিশেষ বীভরাগ জন্মিল। পাড়ার স্ত্রীলোকমধ্যে একদিন পুটুর মার কথা हरेटडिकन, मकरनरे छारात निकाराम, ভिद्वाहाशास्त्र (इटन, खाराता नाकिखारम्ब করিতেছিল। পদ্ম বলিল, পুঁটুর মার কোন দোৰ নাই, যত দোৰ ঐ সোহাগী माशीत। थे छ এই मर्सनाम पहारे-शांक ; त्रांका कि निष्म (प्रशिष्ठ धरग-ছিলেন, ঐ মাগীই ত সন্ধান দিয়াছিল। ঐ ত বারের পাশে ছুঁড়িকে 'সেদিন

मां करत दार्थ शिवाहिन। धक्षन विनन, छ। नम् ध त्रिमिकार घটना नग्न, अरनक मिन अविध कथाल পুড়েছে, দেখ নাই মাধ্বীলতা ঠিক রাজার মত ? আগে ত কখন মিজেকে দেখি নাই, এখন কাণায় বৃঝিতে পারে বে, মাধবীর ছাতের গড়ন, ঠোটের গড়ন, মুখের গড়ন ঠিক রাজার মত।

পদ্ম। আমরা যথন পুঁটুর মার কাছে আদর করে বলিতাম, তোর পুঁটু যেন রাঅকুমারী, পুঁটুর মা তথন মুগ টিপে টিপে হাসিত; এখন বুঝিলাম কেন श्तित, हुँ फ़ि अमिरक मास्त प्रिशित পাই, ভিতরে এতখানাং ভালা জিজ্ঞাসা করি মাধবীলতার পেটে এর পর যে ছেলে হবে সে কি রাজার ধন দৌলত পাবে 🔈

প্রথম প্রতিবাসী। তাকেমন করে পাবে? মাধবীলতা ত রাণীর গর্ভের मञ्जान नत्र, एक्टल (भारत्र कि क्टलके क्य, विवाह कवा जीव गर्छ ना हरन कि विषय भाष १

পায়। তবে, পরে রাঞার রাজা কে পাবে ? লোকে বলে রাজকুমার কোন্ ছেলে নিতে এগেছিল।

প্র, প্রতিবাসী। সে আবার কথা ? ভবে রাজা কি অভ্যের ছেলে চুরি করে এনেছিলেন ?

ছি, প্রতিবাসী। তিনি সকল পারেন, मक्न करतन, Coiर अत डेनत प्रविष्ठ न বৃদ্ধ বয়সে কি কাণ্ড করিলেন। বারে এক রোগে ধরে ক্রমে ভারে সকল রোগে খেরে।

পদ্ম। তা এখন আমাদের পাড়ার পোড়া কপালির দশা কি হবে ? লোকে যে বলিতেছে তারে নাকি পাড়া ছাড়া করে দেবে, এ কথা কি সত্য ?

°, প্র, প্রতিবাসী। সত্য মিথা। কেমন করে জান্ব বোন্। রাজা ঘাহার সহায়, প্রজায় তাহার কি ক্রিবে ? তবে নাকি রামসেবককে সকলে ধরে একদিন লজ্জা দিবে। সকলে বলিবে যে তোমার কালামুধ, তোমার মুখ পুড়ে গেছে।

দি, প্রতিবাসী। তার মার-লাভ কি ? যা হবার তা হয়ে গেছে, রামসেবক গোবেচারা তারে মনোছ:খ দিয়ে আর লাভ কি ?

• পথা। লাভ আছে বই কি, রাম দাদা শাদা লোক, এ সকল কিছুই জানেন না,• তাঁরে বলে দিলে ছুঁড়িকে লয়ে তিনি এখান ছইতে দুরে যাবেন, তাহা হইলে পাড়ার কলক যাবে।

সোহাগী এই সময় উপস্থিত পাকিলে বিলত্ব, ''পাড়ার কলম্ব থাক্ না থাক্ পালের কণ্টক মাবে।'' পুঁটুর মাকে পদ্ম বাস্তবিক কণ্টক ম্বরূপ বিবেচনা করিতেন, পদ্ম আনিতেন বে, তিনি স্ক্রেরী, গৌভাগ্য পাড়ায় ঘাহা কিছু ঘটবে তাহা তাহার ভিন্ন আরু কাহারও সম্ববেনা। তিনি থাকিতে রাআর নম্বরে পুঁটুর মা পড়া অসম্বত হইরাছে। তবে

যে এ ঘটনা ঘটিয়াছে কেবল সোহাগীর অবিচারে, অতএব ভাবিলেন সোহাগী মকক। কিছু আবার ভাবিলেন, পূর্বেস্কে গোরাকি হন্তগত করিতে পারিলে, আজু আমারই অনৃষ্টে এই সকল মুখ ঘটিত। পূটুর মা চক্থাকি ভোমায় বঞ্চিত করেছে।

শংলার মনে যেরপে আলোচনা হইতেছিল, পাড়ার আরও ছই এক যুবতীর মনে দেইরপ ভাব কিছু কিছু আদিয়াছিল। ছই একটি গৃহিণীরাও দেই মতাবলম্বী ছিলেন, তাঁহাদের কন্তারা থাকিতে পুঁটুর মার অদৃষ্টে এই সৌভাগ্য উচিত হয় নাই, কাজেই পুঁটুর মার প্রতি তাহাদের সকলেরই বিষদৃষ্টি অশ্বিয়াছিল। এই সকল গৃহিণীরাই পুঁটুর মার কলক্ষরটাইয়াছিল, তাহারাই এক্ষণে রাম্পেবককে লজ্জা দিবার বিশেষ উদ্যোগী হইয়াছিল।

পণা বলিল, আমার,ইচ্ছা হয়, আমি
গিয়ে একবার কালামুখীকে তুকথা শুনাইয়া আসি । আমি এই ভাবি, তার মুখে
ভাত উঠে কেমন করে।

পল্মের মা। তোর সে সকল কথায় কাজ কি, তোর কি মাধা ব্যথা পড়িল যে, তৃই ছুকথা শুনাতে যাবি।

পশ। আমার যে বহা হয় না।

বান্তবিক' পদ্মের অসহ্য হইরাছিল।
সন্ধার সমর মাতাকে লুকাইরা পদ্ম পুঁটুর
মার . খড়কীছারে গিরা দাঁড়াইলেন,
পুঁটুর মাকে ডাকিরা বলিলেন, '' ওলে।

कानामूची এकहा कथा वनि स्टान वाटि।" এই আহ্বানে পুঁটুরমা প্রমাপ্যারিত হইরা হাসি হাসিমূখে পল্লের নিকট ञ्चरनक मिरनत शत शरमात्र সহিত সাক্ষাৎ, ভাবিলেন পদ্ম তাঁহাকে कडरे मिट्टे कथा विलाद, डाइांब अना कछरे चांस्नाम कतित्व. छाहारे इत छ পল্ল এই সম্য়ে একা আসিয়াছে। পুঁটুর মা আরও ভাবিলেন যে, আমার এত বস্তু, এত অলম্বার ত আবিশ্যক नारे: हेशांत्र कठक शंधा शतिरम छाहारक कडरे चनतं (मधारा, चडवा वरे সময় তাহাকে ডাকিয়া চুপি চুপি क्षू मिरे; চুপি চুপি বা কেন, আমি দিলে কে রাগ করিবে ? তিনি (খানী) দরিজ ছিলেন বটে, কিন্তু এই ঐশর্যোর দিকে ত একবার ফিরিয়াও চান না, তবে কেন তিনি রাগ করি-(वन। त्राहाशीहे वा तंकन वकित्व ? ভার কি ক্ষতি ? হয় ত সে রাণীকে বলে দিবে, তা আমি তার হাতে ধরে তখন বারণ করিব।

এই ভাবিতে ভাবিতে পূঁটুর মা পুকরিশীর কুলে পদ্মের নিকট গিরা উপস্থিত
হইলেন। পদ্ম বলিলেন, "ওলো
কালামুখী, বল দেখি, বুড়া রাজার
মন কেমন করে ভূলালি ?"

शृष्ट्र या। आपि ज्नारे नारे, शृष्ट्रे ज्नारेबारक।

পর। তা বই কি! এরেই বলে পোরনামে পোরাভি বভার। হা কালা- মুখী! ভোর মরণের কি আর জারগা ছিল না; ছরত বল্বি নইলে এ ধন দৌ-লত কোথা ছইতে আসিত। তা অমন ধন কড়ির গলার দড়ি, অমন কাপড় পরার গলার দড়ি, অমন গছনা পরার গলায় দড়ি, ধিক্ তোরে, ছার কপালী!

পুঁটুর মা। কেন ঠাকুর ঝি, খামি কি করিলাম ?

পন্ম। আহা কিছু জানেন না, আবার বলেন কি করিলাম, রাজা তোরে এত ভালবাসে কেন, তোরে এত গহনাপাতি দেয়কেন, আর কাহাকেও দেয়নাকেন?

পুঁটুর মা। আমি পুঁটুর মা বলে আমার রাজা এই সকল দিরাছেন, তিনি পুঁটুকে বড় ভালবেদেছেন।

পদা। বলি, রাজা আর কাহারও
পুঁটুকে ভালবাদেন না কেন, ছেলে
মেরে ত আর অনেকের আছে। এ
সকল কি ঢাকা থাকে ? না ব্রিতে
বাঁকি থাকে ?

পুঁটুর মা। কি ঠাকুরঝি, তবে বল নারালা আমার কেন ভালবাসেন ?

পন্ন। আমরি নেকি, কিছু ভানেন দা।

পুঁটুর মা। না সভ্য বলিতেছি <sup>কই</sup> আমি ভ কিছু জানি না।

পদ্ম। বখন দালা তোর গলার বিট দিবেন তখন ড বলিডে পারবিনে <sup>যে</sup> আফি কিছুই জানি না।

পूरिव मा। ভোশাৰ পারে ধরি ঠাকুরবি

আমায় বলে দেও। আমি জানিনা এই জন্ত এখন আমার বুকের ভিতর কেমন ৰবিতে লাগিল।

भग्ना **उ**दद बरन विद ? ध्वकांख বলিতে হবে-না বলিলে ভূমি মানিবে না ? (কৰ্ণে ছই তিনটি কথা)

পুঁটুর মা ভাহা শুনিয়া অবাক্ হয়ে পালের মুধপ্রতি চাহিয়া রহিল, পদা हिन्दा याहेवांत्र ममम विनया त्रात्नन, ''এখন টের পাও গহনা পরা কেমন ত্ববের।"

### २२

প্রদিব্দ প্রাতে রাজা অন্তঃপুর হইতে বহিৰ্কাটীতে যাইতে যাইতে वक्शांत मांड्रिलन; वक्षन मांगीक ব্লিলেন, ''জ্যোৎসাবতীর সহিত এক-বার সাক্ষাৎ করিতে আমার ইচ্ছা ইইবাছে।" দাসী তৎক্ষণাৎ রাজভূগি-নীর মহলে প্রবেশ করিল। রাজা যটির-ধারা ভূপতিত একটি বিৰপত নাড়িতে লাগিলেন, আর আপনা আপনি অফুট স্বরে ছই একটি কথা বলিতে লাগিলেন। এমতসময় রাজভগিনী আসিয়া প্রণাম शिश कें फ़िरिलन। ब्रांका विलिलन, "দেধ দেখি, কি অন্তার ৷" জোৎসাবতীর **छत्र इहेन : छावित्मन, त्रानीत्र टा**छिनिदि-বরণ রাজা শৃষ্ণ তীহাকে ভিরন্ধার ব্রিতে আসিরাছেন।

অরপরে রাজা আবার মাথা নাড়িয়া वितित्व, " दक्ष चन्नाव, दक्ष चनवरु,

কে এখানে বিৰপত্ৰ ফেলিয়া গিয়াছে, হয় ত এই বিৰপতে আমি পূজা করে থাকিব।" এই বলিবামাত্র জ্বোৎস্নাবতী मयरक विद्वलंखीं जुलियां महेरनमः, तांका वितालन, "(प्रथ, यन जान जांग्रशीय विद-পত্রটী ফেলা হয়। আর একটা কথা লিজাস। করি, তুমি কি উত্তর দাও •ৃ'' এই वित्रा ऋषिक हुन कतिया तहिरलन; জ্যোৎস্বাবতী কোন উত্তর করিলেন न। দেখিয়া পুনরায় बिख्डांगा করিলেন, ''তুমি কি বল ? আমি ত সে সময় ছিলাম না।" জ্যোৎসাবতী ধীরে ধীরে জিজামা क्तिलन, "(कान् नमय १"

রাজা। যে সময় রাণী প্রস্ব হন। জ্যোৎ। আজ্ঞা করুন। সে সময় আমি উপস্থিত ছিলাম।

রাণী কি সম্ভান প্রসব वोद्धा । करत्रन ?

ব্যোৎ। এক মৃতকন্তা প্রথমে ভূমিষ্ঠ হইতে দেখিরাছিলাম।

তার পর রাজা আনর কোন কণাই না গুনিয়া বছিৰ্বাটীতে চলিয়া গেলেন: ভ্যোৎসাৰতী বলিতে লাগিলেন, ''এ **ए दिल्लन, এবং নভশিরে একপার্ছে, সম্বন্ধে আরও বিশেষ কথা আছে।"** वाका ভাহাতে কৰ্ণাত ও टनन ना, मखांत्र शिवा ध्वकार्य वनि-লৈন, "ভট্টাচার্যোরা যে কথা উথা-পন করিয়াছেন, তাহা . সম্পূর্ণ সত্য; রাজকুমার আমার পুল নহেন। রাণী মৃতক্তা প্রস্ব করিয়াছিলেন, আমি বিশেষ করিয়া তদন্ত করায় সকল কথা কানিতে পারিয়াছি; অদ্য ভট্টাচার্যাদিগের আসিবার কথা আছে—এখনই আসি-বেন; আমার ইচ্ছা বে ছেলেটকে পোরাপুত্র লই।"

এই কথা গুনিবামাত্র সভাসদ সকলে
বিমর্থ ছইলেন। দেওরান্ মহাশর জ্ঞুক্টী
করিয়া একবার রাজার দিকে কটাক্ষ
করিলেন, কিন্তু কোন কথা বলিলেন না।

এই সময় পিতম পাগলা আদিয়া উপস্থিত হইল। কেছ তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিল না দেখিয়া সে একপার্থে দাঁড়াইয়া একবার রাশার দিকে, একবার চূড়া ধনের দিকে চাহিল; কিছুই বুঝিতে না পারিয়া ফিরিয়া যাইবে কি অপেকা করিবে ভাবিতেছিল, এম্ভ্রময় রাশা বলিলেন, "পিতম, আমার দশা এখন ভোমারই মত হইল।"

পিতম দেওরান্কে বিজ্ঞাসা করিল, "কি হইরাছে?"

দেওয়ান্ কোন উত্তর দিখেন**্না।** একজন সভাসদ বলিবেন,

"রাজকুষার ভট্টাচার্যাদিগের পুত্র আমাৰ হইয়া গিয়াছে।''

ভনিবা মান পিতম হাসিরা রাজার দিকে চাহিরা ধনিল, "আপনার সত' রাজা ছই একটি দেখেছি, কিন্তু এমন স্কর্প্যা দেওরান্ আমি কখন দেখি নাই।" দেওরান্কীর কর্ণে শেষ কথাটি পেল। দেওরান্ আপনা আপনি বলিলেন, " আমি সত্যই অক্ষা দেওয়ান্।"
রাজা। এ সকল কথা যাক্, এখন
কি কর্ত্তব্য ভোমরা আমাল পরামর্শ
দাও। আমি কিছুই ব্রিতে পারিতেছি না।

পিতম। পরামর্শ আপনি এখন কেবল চূড়াখনবার্জে জিজ্ঞাসা করুন। চূড়াখনবার্বড় পরামর্শী। চূড়াখনবার্শ ভূবনেশ্বরের পরামর্শী।

এই কথা শুনিবামাত্রই চূড়াধনবারু কলের পুজনীর স্থায় সহসা উঠিয়া দাড়াই-লেন। দেওয়ান্ চূড়াধনবারুর প্রতি এক-বার কটাক্ষ করিয়া পিতমকে জিজ্ঞাস। করিলেন, "সে কিরপ ?"

পিতম। আমার মনে নাই।

এই বলিয়া পিতম চলিয়া গেল। कछकमूत्र (शरम धक्री कृष्णवर्ग साँज् আসিয়া পিতমের পথরোধ করিয়া দাড়া ইল; পিতম যাঁড়কে জিল্ডাদা করিল, ''হৈরব, কেমন আছ ?'' ষাঁড় মুথ তুলিয়া মাগা নাজিল, অল অগ্ৰস্থ হইয়া পিতমের ऋक्षत्र मिटक शला वाष्ट्राहेबा मिन; পিতম যত্নে তাহার গলায় হত্তমার্জনা क्रिटिक क्रिटिक विकास क्रिन, ''देखबर, ভোমার উদরের সংবাদ বল, ভূমি ত আমার মত উম্বপনায়ণলোক, বল দেখি शंक क्या कि कृष्टियाहिन ? आयात मठ वृष्क्ठरम शक्षित्र कि दक्ष्यम नख्यर्ग कित्र রাছিলে? ভোষার বড় দেখে, কেহ ভোগায় না ডাকিলেভূমি ৰাও না। লোকে ভো<sup>মায়</sup> क्नि **अक्टिंग** क्रिक्र शास्त्र

ভোমার কি দরকার ? ভোমার বিরাট-বৃর্ত্তিতে কে ভূলিবে<sup>\*</sup>় ভোমার<sup>\*</sup>কোম-লভা কে দাঁড়াইরা দেখিবে ?ভোমার এই প্রস্তরন্ত প্র নবপল্লবের কোমলতা চিনিয়া কে ভোমায় বাহবা দিবে; তুমি আমার নিরেট মেখ, তুমি এইখানে দাড়াও, আমি একবার স্নান করে অংসি।" °এই বলিয়া পিতম আপনার ঝুলি ভৈর-বের শৃক্ষে ঝুলাইয়া গাতাবল্ল ভাহার পৃষ্ঠে किनिया निक्षेष्ट श्रुकविगीटक ना-मिल। এই সময় অনেক ছেলে আসিয়া জুটিল ; তাহারা দুরে দীড়াইয়া ভৈরবকে बात्र कतिरा नाशिनं, रेखबर ''हानना তলার" বরপাত্তের নাায় গম্ভীরভাবে দাঁড়াইয়া রহিল, তাহাদের কোন কথা গ্রাহ্ম করিল না। পিতম আন সিলে ভাহার অলসিক্ত (W-**লিয়া** ভৈরব পিত্রমের গ'তেলেহন করিতে আরম্ভ করিল। বালকেরা হাসিয়া বলিল, "পিতম, ভোমায় ভৈরব বংদ ভাবিয়া আদর করিতেছে ?' পিতম হাসিয়া উদ্ভর করিল, 'ভোর আসায়কে चानत कतिरव ?" (हासता मकाल এक-वारका विनन्ना छेडिल, ''आमना आनद ক্রিৰ।" এই ব্লিয়া সকলেই পিত্মকে <sup>ঘেরিরা</sup> ধরিল, কেহ হত্তে, কেহ ভাসু-দেশে, কেহ পৃষ্ঠদেশে চুম্বন করিতে শাগিল। ভৈত্তৰ ভাষা দেখিয়া কিঞ্ছিৎ जनवर्षे स्टेबा सीटब बीटब छनिया গেল।

धर नमन घर हाजियन व्यक्तिनानी

সেখানে আসিয়া দাঁড়াইয়াছিল, তাহারা
দ্বে দশরণ ভট্টাচার্যাকে দেখিয়া রাজপুত্রের প্রসঙ্গ আরস্ত করিল। ক্রমে পিডমকে একজন জিস্তাসা করিল, "সভাই
কি সাজকুমার দশরথ শর্মার পুত্র গু"
পিতম বলিল, "দশরথের পুত্র রাম।
অনেক দিন তিনি বনে গেছেন।"

প্রথম প্রতিবাদী। পিতম, আমরা ত
কিছুই বৃঝিতে পারিলাম না। তৃমি
এগন রাজবাদীতে গিরা থাক--কি শুনিতে
পাও ? এ রাম দশরথের পুত্র কি ?—না
সে কথা মিথা। ?

পিতম। সে কথা ভ্রনেশ্বর বলিতে পারেন, সে দিন রাত্রে তাঁহার মন্দিরে বদে কথা হয়। তাহা তানিয়া থোদ পাষাণ ভ্রনেশ্বর দশরথকে বারণ করি-লেন; বলিলেন, "চূড়াধনের কথা তানিস না।"

এই শুনিবামাত্র একজন বালক গাইয়া উঠিল, "ভূবনেশ্ব কথা কয়।
ছেলে দশরথের নয়।" সকলে হাসিয়া
বলিল, "বেশ্বেশ্বেশ্।" অমনি ভার
সকল বালকেরা নৃত্য করিতে করিতে
এক্তে গাইতে লাগিল:—

ভ্ৰনেশ্বর কথা কয়। ভেলে দশকণের নয়।।

দশরণ তাহা দ্র হইতে শুনিতে পাইয়া তাঁহার সঙ্গীদেব মুথপ্রতি চাহিলেন; ছেলেরা সেইদিকে গাইতে গাইতে যাইতে লাগিল; দুদশর্প তাহা-দিগকে চীৎকার করিয়া গালি দিলেন>

"এত বড় মজার থেণান" বলিয়া বালকেরা অধিকতর আনন্দে হাসিয়া হাসিরা আরও গাইতে লাগিল; ঝের দশর্থ হতে ইটক লইলেন। তাঁহার সন্ধীরা তাঁহাকে নিরম্ভ করিতে লাগি-লেন; তিনি শুনিলেন না দেখিয়া অগত্যা ভাঁহার সন্ধীরা ভাঁহাকে ত্যাগ করিয়া যেখানে প্রতিবাসীরা দাঁড়াইয়া त्रक (पश्चिष्डिंहन, भिरं पिर्क हिन्दिन। পিত্ৰ বাহা বলিয়া গিয়াছিল, তাহাতে সকলে স্থির করিয়াছিল रि मनदर्थत मावि मिथा, व्यथम यथन দশর্থ দাবি উপস্থিত করেন, উপস্থিত ব্যক্তিগণ সকলে ভাষাতে আহলাদিত হইয়াছিল; রাজার চরিঅসম্বন্ধে সন্দেহ করিবার উপলক্ষ পাইয়া কতই কথা, कछरे भन्नामर्भ, कछरे निम्मा कतिना-हिन। निन्मा ध मःमाद्र भद्रम स्थ ; मभत्राथत मावि উপলক্ষে সে হংগ-ভোগ হইয়া গিয়াছে, আর তাহাতে রস নাই, তখন নিন্দার শ্রোভ ফিরি-বার সময় হইয়াছে, কাজেই প্রভি-বাসীরা যথন দশরথের দাবি মিথা৷ वित्रा मत्मह कतिवात उपनक्त भारेन, আবার ভাহারা চরিতার্থ হইল, একজন তখন रनिन, "किंक कथा, अमन कि कथन হইতে পারে ? রাজা কেন পরের ছেলে চুরি করে আনিবেন ? তাঁহার পুত্র না रहेत्व छिनि धनाबारम भाषाभूख नहे-তেন; তাহার কিসের ছ:খ ? - দেশে **এड ছেলে থাকিতে ভিনি কেন गन्नी**-

ছাড়া দশরথের পুদ্র লইতে যাইবেন।
আমাদের ছেলে হয় ত নে স্বতন্ত্র কথা।
এ মিথ্যা দাবি বোধ হয়। টাকা পাইবার প্রত্যাশায় দশরথ এই দাবি
সাঞ্চাইয়াছে।"

ছি, প্রতি। তাহার আর সন্দেহ
নাই, নতুবা পিতম এ কথা বলিবে
কেন ? পিতম ত পাগল নহে, পিতম্
সিদ্ধপুরুষ; কেবল ঠাট করে ফেরে—
যেন কতই পাগল, কিছু কিছুই নয়—
সকল জানে, ভ্বনেখরের মন্দিরে রাজে
কি হয়েছিল তাহা পর্যান্ত জানে।

ভূতীয় কাতিবাসী। পিতম কি বলিল, আমি বুঝিতে পারিলাম না।

প্রতি। বুঝিতে পারিলে না ?
চুড়াধনবাবু দশরথকে কিছু টাকার লোভ
দেখাইরা এই কার্য্যে নামাইরাছেন।
নামকুমার যদি দশরপের সন্তান বলিয়া
জনরব থাকে, তাহা হইলে রাজার
অবর্ত্তমানে চুড়াধনবাবু রাজ্য পাইবেন।

চতুর্থ প্রতি। সেই দেঁতো কটাচুল।
হারামজাদা ! তার আমি হাড় ভালিব—

 এমত সময় দশরথের সঙ্গীরা উপুস্থিত

হইরা বিজ্ঞাসা করিলেন "ব্যাপারখানা
কি,ছেলেরা এ কি বলে ?"

প্র, প্রতি। বাহা সত্য, তাহাই বলে।
চতুর্ব, প্রতি। দশর্থ শর্মাকে সঙ্গে
করে একবার রাজবাটীতে যাও, ব্যাপার
শুনিতে পাবে দেখিতেও পাবে। চূড়া
ধনবার ধরা পড়েছেন, দশর্ধকে ধ্রিতে

সিপাছী এখনই ষাইবে; কিন্ত ঐ দেখিতেছি তিনি আপনিই ধরা দিতে আসিতেছেন। ভ্ৰনেখরের মন্দিরে রাত্রে যে পরামর্শ হয়ে ছিল, তাহা এখন প্রকাশ হয়েছে।

দশরথ এই সমন্ব উপস্থিত হইলে তাঁহার সঙ্গীরা বলিল, "দশরথ, এই সকল জন্ত্র লোকে কি বলিতেছেন, গুন। জুমি কি একদিন রাত্রে জ্বনেশ্বরের মন্দিরে গিরা চ্ডাধনবাব্র পরামর্শ মতে এই মিথ্যা দাবী উপস্থিত করে ছিলে ? তাহা হইলে এই সমন্ত্র বল, স্থামাদের আর কেন মজাও, একথা রাজসভার প্রকাশ হইরা পড়িয়াছে।"

দশরথ চারিদিক দেখিতে লাগি-লেন। সকলের মুখপ্রতি চাহিলেন, শেষ পলারন-উন্মুখ। এই সময় এক-জন প্রতিবাসী বলিল, "সে ছড়ে বালি! সিপাহীরা আগতপ্রায়।"

দশরথ। আপনাদের সাক্ষাতে বলি-তেছি আমি এক পরসা লই নাই; আমি ত টাকার প্রত্যাণী নই? এই সমর একজন বালক বৃলিল, "ঐ সিপাহী আসিতেছে।" দশরথ আর । ফিরিয়া চাহিলেন না,পলাইলেন।

ંર૭

দশরণ পনাইলে পর এই সকল ব্যক্তি একত্রিত হইরা রাজসভায় উপস্থিত ইইলেন। যে অধ্যাপক পূর্বে দশরণের পক্ষ হইয়া দেওবান্কে মকল বৃদ্ধাত

অবগত করিয়াছিলেন, তিনি অগ্রসর व्हेता याज्यस्य ताजात्क विमालन, " यहाताल, आमारतत अनताथ रहेबारह, मनवर्थ वाज्ञां (भाकविह्न इहेब्रा কেবল পরের পরামর্শে রাজকুমারকে नांवि कतिबाहित्नन। ज्वत्नचतित्र म-ন্দিরে বে পরামর্শ হয়, তাহা এক্ষণে প্রকাশ হইয়া পড়িয়াছে, আমরা সে পরামর্শের কথা পূর্বে তনি নাই; তাহা হইলে কলাচ লশরথের সঙ্গে আমরা আসিতাম না। দশর্থ একণে পলাইয়াছেন, তিনি নিডাস্ত পরের পরামর্শে এই কুকার্য্য করিয়াছেন; অতএব আমাদের একান্ত প্রার্থনা যে সে দরিদ্র ত্রাহ্মণকে আপনি ক্ষমা করেন। তাহার অপরাধ গুরুতর নহে, ষিনি তাঁহাকে লওয়াইয়াছেন, তিনিই প্রধান অপরাধী।"

রাজা কথা কহিবার পূর্বেই দেওয়ান্ বলিলেন, "যিনি প্রধান অপরাধী তাহা আমরা জানিয়াছি, এক্ষণে আপ-নারা বিদ্বায় হউন।"

ভটাচার্যোরা বিদার হইলে, রাজা জিজ্ঞানা করিলেন, "তবে মৃতক্ঞার কথাটা কি, আমি ভাল বুরিভে পারি-ভেছি না।"

দেওরান্। এখনই ব্বিতে পারিবেন,
আমি রাবিধাইকে ডাকিতে পাঠাইরাছি। আমার ইচ্ছা যে রাজদাসীদের
ডাকিয়া এই রাজসভার সে সর্বদ্ধে হুই
একটা কথা জিজ্ঞাসা করা হয়।

রালা। আবস্তক নাই, আমি খন্নং ভাহাদের জিঞানা করে আনিভেছি।

রাজা উটিয়া গেলে, চুড়াধনবার বি্মর্থসুথে ঈষৎ হাসিয়া বলিলেন, 'পিতম
পাগল বিলক্ষণ ধূর্ত, এক কথা রটাইয়া
কলরথ বাচক্ষতিকে ভাল ভর দেখাইরাছে। নিক্র পিতম পাপল দ্শরথকে
পথ হইতেই তাড়াইয়াছে।''

দেও । সম্ভব। পিডম ধুর্ত না হই লে জুবনেখরের মন্দিরে যে বে ব্যক্তি উপভিত ছিলেন, তাঁহাদের নাম রাজসভার
বলিয়া ফেলিত।

চূড়াধন। বেখানে আপনার সত দেওয়ান্ উপস্থিত, সেখানে পাগ্লেরও বিজ্ঞতা করে।

দেও। ষেধানে আপনার মত ব্যক্তি থাকে, সেধানে বিজ্ঞতা আরুশাক, ভালা না ইবল বিয়াদ্বি হয়।

এই সময় এক্ষন নকিব আদিয়া উচ্চৈঃখনে বনিল, "সভা বরণাত, রাজা বাহাত্র অহম হইয়াছেন।"

সভাভত ইংল রাজা জন্মর হইতে আসিরা এক নির্জন বরে অতি রিমর্বভাবে
বসিলেন। তৎক্ষণাৎ ঘরের ছার ক্ষম
হইল। রাণীর মহলে গিরা রাজা বড়
যত্রণার পড়িরাছিলেন। রাণীকে স্কৃত
কল্যার কথা জিজানা করিলে ভিনি ফণিনীর জার মাধা তুলিরা রাজার প্রতিথর দৃষ্টিপাত করিলেন। রাজা
কিঞ্ছিৎ অপ্রতিক্ত হইরা ব্লিলেন,
শ্বাহ্য প্রাতে জ্যোৎস্থাব্তী আনার,

বলিয়াছিলেন যে, তুমি এক মৃতক্তা প্রাস্থ করিছাছিলে: তাহাই আমি সে बिकांगा করিতেছি।" কণা শুনিবামাত্র রাণী অভি ক্রমভাবে विशासक "(ब्याएबावडी ब्यामात शत्रम भक्तः (मरे थाशामा ब्रहेडियार एत. রাজকুমার আমার সন্তান নহে। ভাহা-बरे वाल ভট্টাচার্যোরা আসিরাছিল। আপনার ভগিনী নিজের সংসার আলা-ইয়া আসিয়াছে, একণে আমার সংসার শ্বশান করিতে বসিয়াছে। ছুশ্চরিতা বলে একবার ভাছার খণ্ডর তাড়াইয়াছে, এবার আমি ভাড়াইব। আপনি তাড়াইতে না দেন, আমি নিছে সংগার ভাগে করে যাব, আপনি ভগিনী লয়ে বাজা ককন।"

রাজা। দ্বির হও, আমার বলিতে ভ্ল হইরাছে, হয় ড ভূলে আমি জ্যোৎকা বতীর নাম করিয়াছি।

রাণী। আমি আর সে সকল তোক-বাকা শুনিতে চাই না। এগনই পাকী আনিতে পাঠান, হয় ভাছাতে জ্যোৎনা-বভী উঠিবে, নতুবা আমি উঠিব।

এই বলিয়া রাণী বেগে ক্যোৎসাবতীব মহলে গেলেন। রাজা কর্ত্তবাকর্ত্ব কিছুই বৃশ্বিতে না পারিয়া বহির্কাটীতে গিয়া বদিয়া রহিশেন।

অপরাক্তে একজন পরিচারিকা সেই কক্ষের হার খুলিয়া ঈবৎ মুখ বাড়াইয়া বলিল, "রাজভাগিনী রাজগৃহ ভ্যাগ করিয়া গেলেন।" রাজা জিঞাসা করিলেন, "কো ধার গেলেন ?''পরিচারিকা উদ্ভর করিল, ''কানি না।'' রাজা উদ্ভরীর্বারাচ ফু আ বুত করিলেন। পরিচারিকা চলিয়া গেল।

পর্দিবদ প্রাতে রাজ্যভার সকলে
বিমর্বভাবে উপবিষ্ট আছেল, রাজ্য জন্যমনকে কি ভাবিভেছেন, এনভসমর
ক্ষতকগুলি শিবিকাবাছক আসিরা জানাইল, "রাজ্যভাগিনী কলা সদ্ধার পূর্ব্বে শিবিকা ত্যাগ করে পদরকে গেলেন, আন
মরা এত মিনতি ক্রিলাম, তিনি ভানলেন না; বলিলেন, আর আমার
"পান্ধীর প্রয়োজন কি । এখন অ বি
কালালিনী।"

শুনিবামান রাজা গাজোপান করিলেন;
পিতম পাগলা অন্যমনকৈ দূরে বসে ছিল,
উঠিরা গেল; এই সমর দেওয়ান্ মহাশরকে একজন আনাইল যে রামিধাই
উপুছিত। রামি প্রবাম করিয়া ঘোড়করে
য়াড়াইল; রাজা কক্ষান্তবে যাইতেছিলের, রামি ধাইকে দেখিরা জিজ্ঞানা
করিলেন, ''রাণীর কি সন্তান ভূষিঠ
হইরাছিল গু''

রামি ধাই। প্রাথমে এক কন্যা। রাজা। ভবে কি রাজকুমার রাণীর গর্ভে নক্ষে নাই।

বামি বাই। রাজকুমারও আপনার সন্তান; প্রথমে কন্তা অন্মে, পরে বালকুমার ভূমিষ্ঠ হন। রাণী তথন অ-আন অবস্থার ছিলেন, কন্তাটি অন্মিলে মৃত মনে করে আমরা ভারার সংকার করিতে যাই, সেই সময় কোণা হইতে বিভম পাগলা জানিয়া তাহাকে লইয়া
পলাইল; রাত্রে একটি ব্রাহ্মণের ক্ঞানেই
ভূমির্চ হইয়াই মরে, তাহার জননী দেই
মৃত সন্তান জোড়ে করে গুইয়া থাকে।
কন্যাটি মরিয়াছে এ কথা বলিলে,
জমনি ক্ঞাকে জোড়ে টানিয়া চুমা
থার। সে ঘুমাইলে পিতম পাগলা
তাহার জোড় হইতে মৃতক্ঞা চুরি
ক্রেমহারাজের ক্ঞাকে তাহার জোড়ে
রাথিয়া আসে। সেই জোড়ে আপনার ক্ঞা জীবতা হয়—অদ্যাপি
জীবিতা আছে, আমরা ভরে এ কথা
এপর্যাস্ত বলিতে পারি নাই। এক্ষণে
রাজভগিনী এসকল ব্তান্ত জানিতে
পারিয়াছেন, কাজেই বলিডে হইল।

রাজা। এ কি কাও ওনি!

দেও। অসম্ভব নহে; কিন্তু রামি
বলিতেছে যে, মহারাজের মৃতকন্তা
আক্ষণীর ক্রোড়ে দিরা পিতম সেই
বান্ধণীর মৃতকন্তা উঠাইরা লয়, এ
কথার তাৎপর্য্য ভাল ব্রিতে পারিতেছি
না, পিতমকে একবার এই সময়
ভাকিলে ভাল হয়।

রালা। এখনই ডাকিতে পাঠাও; কৈন্ত তাহার নিকট সরল উত্তর পাওরা দার।

রামি ধাই। পিতম পাগলা যখন
ভূমি হইতে মৃতদেহ উঠাইরা লইরা
পলাইন, আমবা ঠক্ ঠক্ করিরা কাঁপিতে লাগিলাম। ভাবিলাম, সঁর্জনাশ
হুইল, পাগলা হয় ত পিশাচ, সকলই

ক্রিভে পারে। তাহার পদ যথন প্তिम मृङ्गार नरेत्रा পুছরিণীতে নামিল, তখন আরও ভয় হইল। चांत्रज्ञा भगारेगाम, छटत चात्र व कथा मृद्ध जानि नारे। छारात शत जामात ভগিনীর কাছে সকল বুড়ান্ত ওনিলাম। ব্ধন পিড়ম ব্রাদ্ধনীর স্থতিকাপ্রারে टारामं करत, उपम आयात डांगनी হারাধাই জাগ্রত ছিল, তাহাকে পিডম दनिन, "(कांन कथा ध्यकांन कतिन् ना তোর ভাল হবে।" তাহার পর যধন পিতম আক্ষণের মৃতক্তা দইয়া গেল, **७ वन महात्रात्वत्र कञ्चा** कानिता छैठिन। আমার ভগিনী উটিয়া কলাকে হয় থাও-ষাইতে লাগিল।

রাজা। তবে তোমার ভগিনীকে ভাকিতে পাঠাও। পিতম কই !

শ্ৰক্ষন পরিচারক বলিল, "পিডম ঐ আসিরাছে।"

রাজা। পিতৰ,তুমি আমার ক্ডাকে কোথার রাখিয়া আসিয়াছ?

পিতম। আপুনার ভগিনীকে আ-পুনি কোণার পাঠাইরাছেন ? মরা কভার স্থান লওয়া অপৈকা জীবিত ভগিনীর তত্ত্বরা ভাগ।

রাজার চক্ষে জন আনিন। চক্ষু দেশতাগী হা সুছিয়া দেওয়ান্থে বলিলেন, "উলোগ করিপ্রে বন, জোৎসাবতীর সন্ধানে আমি বর্ম যাইব। সে পদত্রজে কো-ভারে বনে বনে বেড়াইতেছে; জামিও রাজা। ভ পদত্রকে ভাষার অন্তব্যানে মাইব। জামার কলা।

भागात छतिनी थेठ कहे शहरण्डह, भागि कि राम भाषी हिंदि।"

দেও। পিতম, ভোমার যাহা জি-জ্ঞাসা করি, স্পষ্ট উত্তর দাও; এ সময় পাগলামি কর মা।

পিতম। পাগলের পাগলামি আছেই, পাগলের কথা বিখাদযোগ্য নহে। চূড়াখনবাবু কোধা, তাঁহাকে যে আফ বড় দেখিতেছি না।

রাজা। এখন আমার ক্লার স্থাদ বল।
পিত্য। আপনি কোন্কন্যার কথা
বলিতেছেন ?

রামি ধাই। যে কস্তা মরিরাছে মনে করিরা আমরা মাটাতে প্তিডেছিলাম, ভূমি দৌড়িরা আসিরা লরে গেলে।

পিতম। কবে ? আমার মনে নাই।
রামি ধাই। ঐ আমার ভগিনী
আসিরাছে। উহার নিকট সকল শুমুন;
বল্ত লা—এখন পিতম বলিতেছে কিছু
মনে নাই।

হারা ধাই। মদে করে কি হবে, সে কল্পা ভ আর এখানে নাই।

ब्राषा। ८कन १

রামি ধাই। পাড়ার লোকেরা ব্রাহ্মণীকে টুদানীং বড় জালাতন করিতে জারভ করিয়াছিল। শেষ তিনি মেয়েটা লয়ে দেশত্যালী হরেছেন।

রালা। কাহার বাটীতে আমার ক্যা প্রতিপালিত হইত ?

পিতম। আপনার রামরেরহকের বা-টীতে।

ালা। ভবে নিক্ষুই বীৰ্বীণ্ডা দানাৰ কলা !

# বঙ্গদৰ্শন

### , **সপ্তম**বৎসর।

৮১ मःখ्या।

### বঙ্গোনয়ন।

পঞ্চম পরিচেছদ। বাঙ্গালাব রোগ।

বাশালার যভঞাকার অমঞ্চল আছে, ব্যাপক অর\* ভাহাদের মধ্যে সর্ব-প্রধান।

ছ্শিকিংস্য গুলাউঠা বোগ সাণাততঃ
অধিকতর জন্নাক বলিয়া বোধ হর
বটে, কিছু বাপক অবে যজ্ঞপ শারীরিক
ও মানসিক দৌর্কাণ্য হয়, তজ্ঞপ জন্য
কোন-রোগেই হয় না। এই মহারোগের সমস্ত কারণ নির্দেশ করা স্কঠিন।
নিদান জর্বাং রোগের কারণনির্গ্য অতি
ছক্ত শাস্ত। দুশ্বাক্তি একত্র গ্লাবান যুইতে প্রিষ্ধার বৃষ্টিতে ভিজে।

এক জনের সামান্য জর হয়, এক জন জবিকাবে প্রাণভ্যাগ করে, এক জনের কফের কোপ হয়; এক জনের সাংঘাতিক বজাকাশের সঞ্চার হয়। অবশিষ্ট ছয়বাক্তির কিছুই হয় না। যদির্ভিতে ভিজাই প্রথমান্ত বাক্তির জরের এক-মাত্র কারণ হয়, তবে সকলেরই সামান্য জর কেন না হইল ? বস্ততঃ রোগীর শরীরে নিহিত আভ্যন্তরিক কারণের অফ্সন্মান্য না করিয়া কেবল বাহ্যভৌতিক কারণের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে রোগের প্রস্কৃত নিদ্বান হয় না। পাকান্তরে ছয়ন্বক্তিকে স্কন্থ দেখিয়া অনেকেই এই সিদ্ধান্ত করিতে পারেন, যে রোগীর শবী-

ু অনেকে এপিডেমিক্ জরকে সংক্রামক জর বলেন। বসস্ত, হাম ও উপ-দংশ রোগের বেমন সংক্রমণ দেখিতে পাওয়া যায়, জরের তেমন কিছুই নাই। অনেক ব্যক্তিক এককালে জয়াক্রাস্ত দেখিয়া, সংক্রমণ সম্মান ফুকিসিল নহে। জনক ব্যক্তিক প্রাক্তির ক্রাম্বিক জর হয় না। এপিডেমিক্ জরকে ব্যাপক ঁরের পূর্কাবস্থাই বোগের মৃলীভূত কারণ; বৃষ্টিতে ভিন্না উপলক্ষনাত্র। ভারেক कातरन रहारधंत प्रेरण छत्र; उन्नरेश পরিদৃশামান কোন একটি কারণ সাধা-রণ লোকে ভানিতে সারে; চিকিংসক इब्र ७ माधारण व्याकारशका किছू छान বুংঝন; কিন্তু সমস্ত আভায়রিক কার-ণের বিষয় অন্তর্নী ভূপবান্ বাতীত (कहरे काशिएक शास्त्रक गा।

ं (১) हे हैं त्याभी व हिकि श्मरक हा बरम न धक्षकाव नागवा विष भावीतमाधा था-(तुम् कतिर्देश भनिवास छ । कृथस क्थस স্বলবিরাধ অন্তর উৎপত্তি হয়। এই বিষ্বাযুর ন্নে মাজেরিয়া রাজা ष्ठित्रचत शिद्ध दरलग शार्गलदिवादे÷ श्रीशांग কারণ ভূমির নিয়প্তবের অর্প্রচা। এই भारत महाराज्य विकास का विकास का स्थापन का হুটুক, ইহা যে অনেকদুব সঙ্গত তঃহার गत्मह गाँहै। यागरा चार्या प्राप्त (प्रशिशा हि যেখানে ব্যাপক জরের অধিক প্রায়ুর্ভবে, (मर्थानकाद दूक्ति ए। पित्र पड़ (उन्न। বিশেষতঃ কচুগাছগুলি দেখিলে বেংশ হয (यम धक धक्षि कलाशास्त्र (उडे इ, এবং সিক্তভূমিবিলাগী রক্ত এর ও ভূপায় বিরাজ করে। ভূমির নিয়ন্তর প্রচুর • (salt-water lake ) না বাকিড, क्षत्र ना शाहेरल बना करू । लाल-ভেরভার এনন তেল হয় না।

श्चिमालयाहरलय प्रमुख छल मणी निवा নিৰ্গত হয় নান অনেক জল সম্ভল ভূমিতে প্রথেশ করিয়া ভাষাঃক্ষার্ক্র করে; धरे कातरवर दिमालरम् इतारे खंड छमा-

नकः, এই কারবেই तत्रभूत, निगाधभूत, প্ৰিয়া ও চল্পারণের উত্তরভাগ এগন অস্বাস্থাকর। 🔭 🐣

পকास्ट्र हेहा बना यहिट भारत, त्य >२५७ मध्यत छ। छ छ छ। चिन मात्म निष्या (जना बनाय अविक इरेश)हिल। সে বৎসরে জ্বের অধিক প্রাত্তীব না हरेग्रा একবৎসব পরে কেন इन्तर् এই প্রান্ত্র ক্রমরা কাহারও নি कठे शाहे नाहे; किन्न आपना बनिट्ड পারি এইরাণ ঘুট একটি উদাহরণ ধারা ताका निगचरवत गरण्य थ छन हम ना।

(२) यश धीत हित सला भार मारल तियात অতি প্রধান আকর। বিলময়প্রদেশে জ্ববের প্রাছ্ডাব এই বাক্যের প্রাত্যক अभाग। हेछे। निरम् अ विष হইতে শ্রংকালে এত ম্যালেরিয়া উথিত হয় যে রাত্রিকালে পথিকগণ ভাহার নিকট দিয়া চলিতে পারে না। চলি-লেই জবহর। অগভীর জলাশয় যদি लननःषु इस, छाइ। इहेटल कांद्रश्र व्यवाशः कत्र देश । जामारमञ्ज (मरम (मार्ग) वा থার যে সংস্কার আছে, ভাষার মূল এই। কৃলিকাভার পূর্বদিকে যদি ধাণা ভাষা **হইলে কলিকাতা অধিকতর স্বা**য়া-কর হুইত। কলিকাতার ফিভার হাস পাতাল স্থাপিত হওয়ার পূর্বের, <sup>রাজ-</sup> धानीत क्षथान क्षथान छाक्तात्रमार्ट्य धक्रवाका **के** मह अकाम क्रिशिक्षित्त । মেদিনীপুৰ ফেলার দক্ষিণে হিজ্<sup>লির</sup>

নিকটবর্ত্তী স্থান যে অস্বাস্থ্যকর হাহার কারণ এই যে অগভীর লবণান্থ নিকটে আছে। এই কারণেই ২৪ পরগণা এবং যশোভরের দক্ষিণে স্থান্তবন জ্বাধিকৃত হইয়াছে। বাপরগঞ্জের স্থান্তবন গ্রে অণেকাকৃত ভাল,ভাহার প্রধান কারণ এই যে তথাকার নদীসকল পদ্মার বেণী; ভাজারা প্রচ্র অলবন জ্বান্তবন স্থান্তবন কারণেই অস্বাস্থাকর ছিল। স্থান্তবি কারণেই অস্বাস্থাকর ছিল। স্থান্তবি কারণেই অস্বাস্থাকর ছিল। স্থান্তবি একপ্রকার হিরোহিত হইয় ছে। ভাহা তেই লাভেন্দে এখন পূর্ণ্ডেশ ভাল হইয়াছে।

करत्रकवरगत हरेल कर्नल (इश् হগলি ভেলার ব্যাপকজ্ঞরের কারণায় সন্ধান করিয়াছিলেন। তিনি আপন विकालगीट अवाम क्रियाद्वर, "কোন কোন বিলের একপারে বিশক্ষণ बत, घनतभारत किडूने नाने नलिल र्ग। " शार्र ह विख्डामा कतिए शास्त्रम, थमन देश्याम कार्य कि १ हेश्य हे छुव এই ছুটতে পারে 'যদি গুট গ্রাণের जनाना निषदम अवशा नगान इस, उर्द শে এটো অধিক রৌদ্রপায় ও যাহাতে \* विश्वमकात्वत्र महुनाय चार्क, (महे आंभ অংশেক ক্রেড স্বাস্থাকর। আর সর্টমাস ওয়টিসন আছিপর করিয়াছেন, যে वित्तत शार्थ निविष् तुकानि शाकिशा বদি নিলের বায়ু প্রতিরোধ করে; ভাহা <sup>इडे</sup>रच ३ शारमत मणना

(७) निषी छताते इश्या ध्वतः निषीत

रिखाङ नम्भ इश्या महा भनिएक मृत्।

गेड भंडाकीरङ काश्मित्रवाद्यात वालालाः
रणभगरमा गर्माश्रमान वालिकाद्यान हिना।
हेरदब महामी, अलगाङ, कार्यानी,
रेमिन अ किम्नुनीरिक नगत পरिश्र्नी भानित, छश्र श्राप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भ्राप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भ्राप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भ्राप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भ्राप्तमान भ्राप्तमान भारक। ध्वाप्तमान भ्राप्तमान भ्राप्तमान

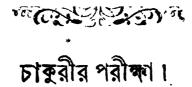
কাশিসবাভাবেৰ ভাষঃপ্ত্ৰেৰ কারণ **७** इ.स. इ.सी. इ.सी. व.सी. व.सी. व.सी. व.सी. গৈয়দাবাদের পূর্বদিক দিয়া ছিল, একণে পশ্চিম্নিক দিয়া হইরাছে। তাহাতে नमीत पुरश्या गर्ड मार्गितग्रात चाकन নিল ১ইরাছে। নদীব গতি পরিবর্তনের অল্লণাল প্ৰেট মহাসাৰি হয়; একাণেও ঐ নগর জবানীর্ণ জনপদ বলিয়া বিখাতি ष्ठार्छ। म्विभिन्नावान रक्षणात रममन ভাগীংগীৰ ভূপুর খাত অনিষ্ঠ উং शामन कडिएडरफ, नमीवा (क्रवाय उ মুদ্ধা, বেডনা, ও কে:দল্লে ত্ৰবস্থা, यानाश्य देवनात्र अन्दिष्ट क्वार्य, इत शहरावात्र जानिश्रमा, नाउँहैनमी. सुडीनतीय अपबर्षेटा, छशनी दक्तास कानामनी अ सवस्र होत हुने कि महा स्वरा-স্থোর সূল হটলাভে।

सामारमन दाक्षणक्षणान (का अरवः

शक्ष कतिया व्यापनारमत उपात ताब-নীতির পরিচয় দিতেছেন। তাহাতে তাঁহাদিগকে সাধুবাদ দিতে হয়; কিন্তু লুপ্ত প্রায় নদীগর্ভের সংস্কার করিলে ছেশের ষত হিত হর; এমন আর কিছ-ভেই হইবে না। লোকে অপেকাকৃত शिर्मन सन गाइँदि, त्याकाश्वर वानि

(कात श्रविधा इहेर्द, अवः श्राटशात दृषि **इ**हेब्रा य:त्रशत ना**हे अक्रल ह**हेट्य। প্রভিন্সাল পব্লিকওয়ার্কস্ শেবের काधिकाः म এই कार्याहे आयाग कता কর্ম্বর।

e1, e1, 5 i



विवाह छेलनाक स्वत्न क्ललविहत्यव शासाबन हम, शृद्ध हाक्त्री উপनक्ष (महेन्न्य आप्राज्य हरेड। उपकारन বিখাস ছিল যে; কর্মদক্ষতা কেবল अरक्राहर अञ्चर, व्यमरक्राहर इर्लंड। সে বিশ্বাসের বিশেষ হেডুও ছিল; ভং-কালে শিক্ষা কুলগত ছিল, এক্ষণে আর छाशा नारे, अकरण भिका मकतकूरनरे मुख्य, कार्यामका । कार्क्स मकल কুলেই পাওয়া যাইতে পারে। কাঞেই कार्यामक वाकि निक्षांठन कहा किছ क्रिंग इड्राइ

(यागावाक्टिक कार्या नियुक्त कड़ा त्य णि कठिन छ। हा नक (लव मः स्वाब नाहे। माधादन इ: विश्वः म चार् ए ए, डेशबृक्त याक्तिवारे कार्या नियुक्त रहेवा शास्त्रन, किन्न बाहाता किकिश विस्थि सार्तन, खारापतम् च था । दहेवना देरने छ ।

(म्राय अक्षान अधान वाकि वाशनारक মল্লিড্রপদে নিযুক্ত হইবার সম্ভাবনা বুঝিরা আপন কর্ত্তবাকার্য্যের তালিকার निथियाছिद्वन (य, काशि मडी इहेशा (कवम (याशात्माकरकृष्टे ब्राह्मकार्या नि-युक्त कतिव। छिनि खानिएछन ध्य এইটি বড় সহজ নছে, ইহার নিমিত্ত বিশেষ প্রতিক্রা আবশাক। অবোগা ব্যক্তিরা অনুরোধের জয়পভাকা তুলিয়া मर्खनाइ मर्बल माडाहेबा बाद्य, ত্তাহাদের উন্নত্ত্বন করা অতি কঠিন। धरेषना उल्युक्त वाक्तिक कार्या नियुक्त कता इत ना।

हेनानीः विकासाल श्रुक्त स्वता अञ्चलात्यत मृत्नात्कम कतिवात निमिष्ठ व्यवः (यात्रा ব্যক্তিকে সহজে নিরাকরণ করিবার নিমিও क्क छेशाम छेष्ठावन कतिमा**ट्य**न, उदि পরীকা। পরীকা একবে সকল গা

জোই প্রচলিত হইরা উঠিয়াছে। আমা-দের দেশেও প্রায় ৩২ বংসর হইল কডকাংশে আরম্ভ হরাছে।

পরীকা দিয়া চাকুরী করা একণকার
নিরম। যাহারা পরীকা দিতে অসমর্থ
অথচ চাকুরীর লোভ রাথে, কেবল
ভাহারাই পরীকার বিদেষী হওয়া সম্ভব।
ভাস্তর যদি আরে কেহ ইহার বিদেষী
গাকেন, ভাহা হটলে হেও অনুস্কান
করা আবিশাক।

উমেদার বাতীত্রসভাই অনেক লোকে এই নির্মের বিরোধী দেখা যার; তাঁহারা সুক্তকঠে স্বীকার করেন যে, উপযুক্ত কর্মচারী নির্ম্বাচন করিছে গোলে পরীক্ষাই ভাহার একমাত্র উপার। অথচ আবার চুপি চুপি জিজ্ঞানা করেন, 'ভাল! পূর্বকালের ডেপুট মাজিট্রেট অপাক্ষা এক্ষণকার ডেপুট মাজিট্রেটরা অথাকা এক্ষণকার ডেপুট মাজিট্রেটরা অথাকা কেন? পূর্বেপ্ত মাজিট্রেটরা অথাকা ছিল এক্ষণেও ত সেই পরীক্ষা আছে।' আবার বলেন "উকীলদের পরীক্ষা পূর্বেক ছিল এখনও আছে, ভবে পূর্বকালের উকীল অপোক। এক্ষণকার উকীলেরা ভাল কেন?''

এ কথার প্রথমেই আগত্তি হইস্তে,
পারে যে, একণকার ডেপ্টি সালিট্রেটরা যে অপেকাক্ত অযোগ্য, অথবা একণ-কার উকীলেরা যে অপেকাক্ত উপায়ক ভাহার প্রমাণ কি ! প্রমাণ পুরাতন লোক, এই প্রস্তাবলেশক ভাহার সংখ্য একজন। যাহারা উভয় সম্বের কর্মা-

চারী দেখিয়াছে, তাছাদের প্রমাণ গ্রহণ
না করিবে আর প্রমাণ নাই। কিন্তু
ভাষাদের প্রমাণ যদি গ্রহণ করা যায়,
ভাষা ইইলে স্বীকার করিতে হর যে
পরীকাসন্ত্রেও প্রকানকার ডেপুট মাঞ্জিট্রেটগণ অযোগ্য। পরীকা সত্তেও যদি
একপ হয় ভবে পরীক্ষার প্রয়োজন ?
যোগাবাক্তি নির্বাচন করিবার নিমিত্ত
পরীক্ষা যে একসাত্র উপায় অথবা
বিশেষ উপায় ভবে ত'হা নিগ্যা ইইল ?
অন্যদেশে পরীক্ষাহার যোগ্যা লোক
নির্বাচন ইইভেছে, অস্তর্তঃ কভকাংশে
ইইভেছে, কিন্তু আ্যাদের দেশে ভাষার
বিপরীত ফল কেন হয় ভদত্ত করা
ভাষাদ্যক।

शृत्र्व यरकारन जागारनत (नरम छेशः যুক্ত ব্যক্তি বড় পাওয়া যাইত না, তখন গ্ৰৰ্ণমেণ্ট উপস্কু লোক সংগ্ৰহ করিতে সক্ষম হইরাছিলেন; একণে যোগালোক বাঙ্গালার সর্বত শত শত পাওয়া যায়, অথচ যোগ্যলোক রাজকার্যো নিযুক্ত হয় না, ইছার ছেতু कि ? এই कथा वहेंग्रा नात्रानिता मधा মধো গোপনে আন্দোলন করিয়া থাকেন। व्यत्न कियान कित्रवाद्य (म, भवर्ग-(मणे अकरन हेड्डाशृक्षक अस्पर्क লোক নিযুক্ত করেন, ত ছাদের মধ্যে क्रिक्वरुगत् अविध এक्ট। क्था हिं-सार् रा जिमाति माह्य यथन है:-লণ্ডের রাজমন্ত্রিপদে নিযুক্ত ছিলেন,সেই স্ময় এক 1 র তথার কথ। উপস্থিত হয়

(व हेन:७ इंटेंड जात जिसक covenanted servant) কৰনাতেডিড সারবাণ্ট পাঠाইবার প্রয়েমন নাই, এই সন্দি সাহেবদের বেতনে ভারতবর্বের অনর্থক खानक व्यर्थात्र इरेटिए। वित्यसः **(फ्रग्**डिमाबिट्डेडेएक तमस्य (यक्त डेशयूक ব্যক্তি দেখিতে পাওয়া যায়, একণে क्यमासारम् क्षिकार्भ कार्या छाहारम् इ उन्त गिर्ভत कता घाउँ टड शादा। फिगरतिन मा (इ.) डाहाएंड **छावित्वन मन्**षि ठाकरत्रा বেত্রদ্বারাভারতের অনেক টাকা ইংলওে कानिट्डाइ, डीइ।रमत मःगा कमं इंडेरन ইংলতের অর্থাগম কম হইবে। অতএব এই আশস্কায় ডিসরেলি সাহেব গো-शान निरम्भ करत्रन (य, कात रगन विरम्भ উপযুক্ত वात्राशिटक डेक्टशन ना एन बता হয়, তবে এখানে দেখানে ছই একটি ভাল লোককে কর্ম দিলে ক্ষতি নাই द्र ना नित्न निन्न। इहेर्द। धनिङ्क এরণ অসুলক কণা বাঙ্গালিমহলে রটিনে ভাহরে আর অঃশ্চর্যা কি ? নিতা যাহা হয়, ত হার সামানা ব্যতিক্রন (मवडारमन (मशिल त्य वामानिता **(माधार्त्राभ करत (म वाक्रांगित्रा (माक-**বাহিক্রম निर्माहन সম্বন্ধ সামানা ভিদরেলি PICEAST বে (मिशिट्स या देश्टब अवाक्रमात्रवटक (माष्ट्रातार्थ कः तिर्व देहात चात काण्ड्या कि ? ता**व**गश्रीत গোপনঅভ্যতি প্রশ্বে তাহাদের এভদ্র বিশ্বাস যে ভাছায়া অনারাসে , শলিরা थारकन "यनि (शालननिरयम ना भाकित्व

**कट्य वात्रमामाटवला यो समीमार्वेश**ण যে শ্ৰেণীর লোকদের কুঁড়ি কি পটিশ টাকার চাকর রাবেন এক্ষণে সেই খ্রে-बीत (लाकरमन शर्गरमण होतिमन পাঁচশত বেতন দিয়া কেন হাঁৰিতেছেন।" সামবা স্বীকার করি ঐ শ্রেণীর লোক একৰে ভেপ্টি মাজিট্রেটের মধ্যে অনেক **(मणा यात्र वर्षे, किन्न डारांत्रे (स्कृ** গ্ৰণ্যেণ্টের কোন কুঅভিদক্ষি নছে: গ্রবর্ণেটে নির্পেক হট্যা কেবল পরীক্ষাদারা সেই সকল লোক নিযুক্ত করিয়াছেন। যদি ভাষাতে অত্পযুক্ত वाक्ति निवृक्त स्टेशा शास्त्र डंटन रम দোষ পরীকারে। তাহার পরিচয় সং-(कर्ष (मुख्या य,हेर्ड्स) त्याक निक्ताहरनत পরীকাই खना गर्वारकृष्ठे छेशाच मरमह नारे कि উপযোগী পরীকা এণগান্ত উদ্ভাবিত হয় गारे। এই बना जून इरेट एड अयर অনেক দিন পর্যান্ত এই ভূগ চলিবে।

ষপন প্রেসাহেব গবর্ণৰ ছিলেন, তম্ন এই নিয়ম করা হয় যে পরীকা করিয়া ডেপুটি মালিট্রেট নিযুক্ত করিতে হইরে, নিযুক্ত করিছা আবার ভাষাদের পরীকা। লাইতে হইরে। পুর্কো এ প্রাথা ছিল না, নিযুক্ত হইবার পূর্কো মার কোন পরীকা হইত না, প্রেসাহেব ভাষা প্রথম করিলেন, করিয়া ভাবিলেন, আর অযোগ্য লোক ডেপুট মালিট্রেটীপদে নিযুক্ত হইতে পারিবে না। নিযুক্তর পূর্কে পরীকা, নিযুহক্তর পারে পরীকা,

শুনিলে ভাহাই আপাত্ৰঃ বোধ হয়। किस क्र्डागावणकः ट्यामारकरवत्र इहेट्डरे जावंड विस्मातिय करवांशा उ সামান্য লোক নিযুক্ত হইতে আরম্ভ ছইল। প্রেসাহেব বোধ হয় ভাবিয়া-किटलन (य. यांगांता मञ्जास्वराभास्त्र, याहाता अंचाबारमहे " स्थातित्यत" (वा-গাড় করিতে পারে, সচরাচর ভাহা-্রাই ডেপ্টিনাজিট্রেট হট্যা থাকে; ভাহারা অবোগা হইবেও এ গদপ্রাপ্ত **इहेना भारक।** कात याशास्त्र नः मः (शीवव नांहे, अपह याशाना कि टाहावां এ পদ প্রায় পায় না; অভএব এ কুঞা-थात भगरवाम कतिवात निभिन्न शतनंत मार्ट्य मर्ममाधावनक छाउ कविल्य (य, (य (कह डेक्डा करतन डिनि পू सीएए निम्ननिष्ठ अकृष्टि भरीका विद्रा আপনার নাম ডেপুটি মাজিট্রেটী রেকে-ষ্টরীতে লেখাইতে পারেন, ডেপ্টি गाबिरहेि किरम (महे शतीरकाछीर्न-(पत्र (प्रवत्रा शहरत। तला जावभाक व शत्रीकां है वड़ कठिन नटह, এक है रेश्द्रिक, এक ट्रे व्यक्ष्माञ्ज, रेटिशम এই करेग्रा (गरे, भनीका। णागःरिमत्र (तर्भ वालटकता ऋूल महः भन (मश्रा इहेत। केग्रंचन मार्ङ् विष्य यादा काश्वास करत्र (करल সেই সম্বন্ধে এই পরীকা। সরলচেতা नियम यह कहिरल গ্রেসাহেব এই मामाल क्यांनी, आंधा क्याहायान गा-চিলা উঠিল। ভাছারা আপনাদের ক্যো-<sup>গাতা</sup> কানিড, তাহারা কমিনকাণে হেড

কেরাণী বা হেড মাষ্টার হইবার প্রভাগা क्षित्र मा अकारन छाहारमञ् খুলিল, অনায়ালে পরীক্ষা দিয়া ভাছারা ए प्रिमासि दुउँ इहेट नाशिन। কের রহস্য করিয়া এই সকল ভেপ্টিদের ''গ্ৰের গাধা'' বলিয়া থাকেন। এর সাংহৰ আপনার ভূল শেষ ব্রিয়াছিলেন। कि कृषित भरत्रे तिहै भवीका वस कति-য়াভিগেন। গ্রের-সকল ডেপুটিই গাখা নহেন, গুণবান ব্যক্তি অনেকে আছেন मस्मह नाहै।

(श गांट्रिन भन्न काश्य गांट्न भन-র্ব হুইলেন। তিনি জানিতেন বালা-নির। শিক্ষাদোষে ত্র্বল অভএব ব্যা-য়ান শিক্ষার উৎসাহ দিবার নিমিত্ত एप्रिमाबिद्धितिम वनिर्द्धत भातित्छा-যিক স্থির করিলেন। তাহাদের প্রাণ-মত: কার্যপ্রণালী শিক্ষার নিমিত্ত সব্ ভেপ্টপদ নৃতন সৃষ্টি করিলেন, যাহারা ष्यचारताहर्य, मञ्जद्राव, भनमकानरम विन-কণ পটু ভাহারাই সৰ্ডেপুটি হইবার অধিকারী হইল। এই পদের নিমিত্ত मागागांत्र अतिश खगाविन यात्र धकरू ष्यारेन ज्ञानिदल हे इटेंद्र এ हेन्न थिखा-বের বিজ্ঞাপন প্রচার হইলে আবার গ্রামা স্ব্নমাস্টার দিগের মধ্যে উৎসাহ পড়িয়া গেল। কের। ি ও মৃহরিদলের ञ्चित्रात खना शवर्तत गार्टश्व एक्म निर्णन যে তাহারা করিপ জনাবনিদ প্রভৃতি শिका कतिवात निभित्त हुछ गहिरन जना- রাসে ছুটি পাইবে। স্থবিধার জার সীমা
রহিল না। সেই সকল মুছরি, কেরাণি,
গ্রামাশিক্ষক প্রথমে সব্ডেপ্টি হইরা
ক্রেলে ডেপ্টিমালিট্রেট হইরাছেন।
ক্যাম্বল সাহেব হস্তপদের গুণ পরীকা
করিয়া ভাহাদের নিযুক্ত করিরাছিলেন
ক্রেই জন্য কেহ কেহ রহস্য করিয়া ভাহা
দের "ক্যাম্বলি উট" (Campbell's
Camel) বলেন।

কিরূপে অযোগ্য ও সামান্য ব্যক্তিরা ইদানীং ডেপ্টিনাফিট্রেটি পদলাভ ক রিতে পারিয়াছে তাহা বোধ হয় এই সংক্ষিপ্ত পরিচয়দারা অনায়াসে অমূভব হইতে পারিবে। ইংরেক কর্মচারী এ দেশে প্রয়োজন ইহা বিলাতে প্রভি-পত্ন করিবার নিমিত্ত অবোগ্য বাঙ্গালিকে উচ্চপদে আসীন করা হয় নাই। প-রীকা করিয়া তাঁছাদের নিযুক্ত করা হই-যাছে,যদি তাহাতে অযোগ্যবাক্তির পদ প্রাপ্তি হইয়া থাকে সে দোষ পরীকার।

পরীক্ষার দোষ গুণ তুই আছে। পরীক্ষার গুণ আছে বলিয়া সকল দেশেই
পরীক্ষা আরম্ভ ইরাছে, পরীক্ষা থাকিলে
অক্রোধের বল হাস হইরা বার। একণে
বিনাপরীক্ষার, কেবল অক্রোধের বলে, 
গুলার কেহ মুজেফ হইতে পারেন না।
ডেপ্টেমাজিট্রেটিতে অদ্যাপিনে নিরম বল
বং হর নাই, হইবারও বিলম্ব আছে,
তথাপি ক্র্যুক্তি দিন্ত বিনম্ব গ্রুক্তি
ক্যাম্বল সোহেবের সম্বের হইরাছিল।
একবার ভিনি এক্সন অস্বাহেবকর্ত্তক

অসুকদ্ধ হইরা বলিরাছিলেন যে, অংপনার জ্রাভপুন্তকে আমি একারেক ডেপ্ট মান্ধিষ্টেট দিতে পারি না, তিনি উপযুক্ত হইলে অনারাসে নেটিব নিবিল-নার্কিনের অর্থাং সব্ডেপ্ট পরীক্ষা দিতে পারিবেন। তাহা হইলে অরু দিনের মধ্যে ডেপ্টিমান্ধিষ্টেট অনারাসে হইতে পারি-বেন। পরীক্ষার প্রথা ছিল বলিয়া ক্যাম্বল নাহেব অমুরোধে উপেক্ষা করিঙে পারিরা-ছিলেন। পরীক্ষার অকট্যে মিয়ম থাকিলে কেহ অমুরোধ করিতে আইসে না। কাজেই উপযুক্ত ব্যক্তিকে মনোনীত করিবার বাধা কমিয়া যার।

পরীকা সম্বত ও শ্রেয়: বলিয়া সর্বত্তে প্রচলিত ইইতে আরম্ভ হইরাছে। প্রকৃত भत्रीका इरेटन छाहारे वर्षे, किस य প্রণালীতে আমাদের দেশে পরীকা আরম্ভ হইরাছে তাহা প্রায় অসমত। যে কাৰ্যো মে গুণ আবশাক ভাছা উমেদারের আছে কি না করাই পরীক্ষা। কিন্তু পরীক্ষার পূর্বের্ম ত্তির করা চাই যে, কোন পদের নিমিত্ত কি কি গুণ আবশাক। পূর্বাচ্ছে তাহা দ্বির করিয়া পরীকা করিলে সেই প-রীকা সার্থক হয়। নতুবা আসাদের গবর্ণমেণ্ট বেরপে পারীক্ষা করেন, দেই-রূপ পরীক্ষা অনর্থক। যদি নিয়ম কর यात्र त्य विश्विभाष्ट (मिश्रेत्र) "छाक त्रगात" নিযুক্ত করা ঘাইবে ভাহা হইলে সঙ্গত इत। किंचु यनि यना गात्र, विश्विंभन (म अया वाहरव गानिएडेग দেশিয়া

তাহা হইলে কে না উপহাস করে ?
বলিষ্ঠপদ মন্থামাতেরই প্রয়োজন স
ক্ষেত্র নাই ৷ কিছু মাজিট্রেটী কার্যোর
নিমিত্ত যে তাহা বিশেষ আবশাক ইহা
কেহ প্রতিপর করিতে চাহিলে কে
ভাহাতে কর্ণপাত করে ?

• গ্র্বিমণ্ট অপেক্ষা লোকে পরীক্ষক ভাল, অনেককে গবর্ণমেণ্ট উকিলির চাপ দিয়া ছাড়িয়া দেন, তাহার পর লোকে ভাহাদের বাছনি করে। গবর্ণ-মেণ্টের পরীক্ষার তাঁছারা সকলেই যোগা, পরীক্ষায় ভাছাদের লোকের श्रह्म খনেকেই অযোগ্য; তাহাই তাহা-দের ভাবস্থার তারতমা। আইনজ হওয়া উচিত সত্য, গুটিকতক গুণ তহির উাঁচাদের আর থাকা আবিশ্যক, ভাহা না থাকিলে (करत चारेन चाना द्रशा स्त्र। शवर्ग-राणे त्रहे धन छनित भद्रीका এ कराइत क्रिन ना. काटक है एमशा यात्र का है टन त প্রীকা দিয়া যোগাতার সাটিফিকেট হাদিল করিয়াও অনেক উকিল, অযোগ্য বলিয়া আদালতে প্রায় অগ্রাহ্য হইয়া थात्कन; कृष्टिंग्रहे विलिट्ड इहेरव क्रेक्स्त <sup>টিকিলের হে পরীক্ষা আছে তাহা</sup> ममञ्जूर्व ।

ডেপ্ট নাজিট্রেটাসম্মেও সেইরূপ।

চাহাদেরও কেবল আইনের পরীকা

ইরা থাকে। কিন্তু সকলেই নিত্য

থিতে পান যে, কেবল আইন জানি

টি নাজিট্রেটি ভাল হয় না। আই-

নজমাত্রেই যদি ভাল মাজিট্রেট হইড, তাই। হইলে পরীক্ষোন্ডীর্ণ মাজিট্রেট-দের মধ্যে আর তারতম্য থাকিত না, সকলেই ভাল মাজিট্রেট হইতেন। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে দেখা যার পরীক্ষো-ন্তীর্ণদের মধ্যে অনেকে অযোগ্য আছেন।

বিচারকদিগের পক্ষে আইন জানার আবশাকতা আছে সত্য, কিন্তু মাজিট্রেটগণ কেবল বিচারক নহেন, তাঁহাদের জন্য কার্য্যের নিমিত্ত অন্য গুণ আবশাক; কেবল আইনের পরীক্ষায় সে
সকল গুণের পরীক্ষা হয় না; বিশেষতঃ আইনের নিত্য পরিবর্ত্তন হয়,
একসময় গুটিকতক আইনের পরীক্ষা
করিয়া ছাড়িয়া দিলে ভবিষাৎ আইনমন্থন্তে পরীক্ষা হইয়া রহিল এ কথা
বলা অসকত। তবৈ বড় জোর এইমাত্র বলা যায় যে, একবার যে ব্যক্তি
উদ্যোগ করিয়া আইনের পরীক্ষা দিতে
পারিয়াছেন, তিনি উদ্যোগী পুরুষ।
তাহার ক্মরণশক্তিও আছে।

কিন্ত উদ্যোগ আর শ্বরণশক্তি কেবল
এই ছই থাকিলেই লোকে বিচারাসনে
অসুবার যোগ্য হয় এমত নহে। বিচারপতিদের নানাগুণ আবশ্যক, গবর্গমেণ্ট
তাহার একটিও পরীক্ষা করেন না, বোধ
হয় করিতেও পারেন না। অপক্ষপাতিতা বিচারপতির পক্ষে নিভান্ত
আবশ্যক, একণে ভাহার কোন পরীক্ষা
নাই,এইরূপশত শত বিব্রের ক্রেন্টিরই
পরীক্ষা হয় না, কেবল আইদের

भन्नीका इत्र । अधिक कि (यही गर्सश्रधान, সেই চরিত্রের পরীকাই নাই। তাহাই বলিতেভিলাম গ্রথমেণ্টের পরীকা অভি ष्ममण्पृर्व। এक बन विठात পতি मस्या मस्या কোর্ট ফি গোপনে আত্মগাৎ করিতেন, হ-होर धरा ना शिक्षत जिनि बनाशि विहात-পতির উচ্চ খাসনে খাসীন থাকিতেন, গাবর্ণমেণ্ট ভাঁহাকে পরীকা কবিয়া বিচারপতির পদ দিয়াছিলেন কাড়েই লোকে ভাঁছাকে বিশ্বাস কবিতে বাধা, ना कतिला भवर्गामण्डे क व्यवमानमा कता ह्य। शैशिक विधान कवित्व ला-কের সর্কনাশ হয়। এঅবস্থায় সচ্চরিত দেখিয়া বিচারপতি করা গ্রন্মেণ্টের कर्खवा, छाडा ना कतिल शवर्गस्थित विष्ये कृषि। त्यांगा अत्यांगा विठात ना করিয়া রাজপ্রতিনিধিরা চাকুরি বিতরণ करतन, डाहाता (मनायन डेमन (मनाम-ह निश् যান, কিন্তু পশ্চাতে দে কণ্টক क्फेक हा चिहा यान । সমাজের অঙ্গে বিদ্ধ হয় ভাহাতে বিদেশী গবর্ণমেণ্টের ভাখ্যাতি ভাগ্ম।

চরিতের পরীক্ষা করা অতি কঠিন।
সহংশলতে হইলে সচলিত্র হর, ইহা
পুর্বের বিখাস, অদ্যাপিও সে বিখাস
কতকাংশে আছে। এইকনা গবর্ণমেণ্ট
পুর্বে বংশ অফুসন্ধান করিতেন;
কুনা যার এক্ষণেও তাহা করিয়া
ঝানেন; কিছ তাহার ফল বড় দেখা
যার রা
আইবে, অনেক লোক
ক্ষেণ্ড উচ্চপদে নিযুক্ত হইতেছে।

বছত: ভাছাতে কোন কতি নাই, যদি কর্মচারী নিজে পবিত্র হন, তবে পূর্বা-পুরুষ অপবিত্র বলিয়া কি হানি ? কিন্তু পদাকাজকীরা নিজে পবিত্র কি লা, ইহা অসুদ্রান করিবায় নিমিত্ত প্রণ্মেণ্ট কি উপায় অবলম্বন করিয়া ভাহা আমরা জানি না। चाटनटकर धारणा ८ए এই অञ्चलकानगयदक भन्दर् মেণ্টের কোন উপায়ই নাই। সম্ভব। আমরা গুনিয়াছিলাম যে ডেপুট माशिष्ट्रिके शमाकाक्की दकान वाकिमश्च গ্রব্দেণ্ট একবার একজন ডিব্রীপ্ট মালি-ষ্ট্রেটকে অমুসন্ধান করিতে একখ;নি "ডিমি অফিসিয়াল" পত্র লিখিরাছিলেন, मासिट्डिंगे गाहित (म. वास्किटक निष्व চেনেন না,অভএব উমেদারের নিবাসং অঞ্লে তথাকার ডেপ্টিমাজিট্রেটবে সেইরপ এক পত্র লেখেন। ভেপ্ট্রাঞ্ ষ্ট্রেট খাঁ বাহাছর নৃতন আসিয়াছেন,কাফ কেও জানিতেন না, কাজেই তিনি থানা **ग**व्हेन्टकोत्रदक निशित्तन, गव्हेन्टक ক্টার যথানিয়মে তলবি পরওয়ানা পাঠা (मन। **भव्रश्वाना इत्छ छ्हेब**न करनी ইলে বাবুর চক্স্বির হইল, ক<sup>নে</sup> ৰলদের সঙ্গে অগত্যা তাহাকে আসা माय यार्टेट इंटेन, छीहांत जन्मत्र<sup>म्हा</sup> কারা উঠিব, পাড়ার লোকেরাও "আই विनिद्या विभाग सम्बर्ध महारूष्ट्र अकाम कतिएक नाशिन । त्मिष <sup>कुर्मिन</sup> बाब् भावना माटहरवड मञ्चर हेर्ना

∌ট্লে তিনি তীহার এঘাহার লইতে আরম্ভ করিলেন। নাম, ধাম, পিভার নাস, জাতি, পেশা, বিষয়সম্পত্তি, কি विनां, कछ विनां, (क्यन हतिन, আমুপুর্বিক সকল প্রশ্ন করিরা শেষ বর্ণা-निश्राम (बाश्रमारम निशित्तन रय এ ব্রাক্তি সচচরিত্র ও ভন্তবংশ বটে। हेड्डाक (छ्रश्रीरमिल्डिडि (मश्रा राहेर्ड . পারে।

এ কথা যদি সভা হয়, তবে রহসোর विषत वर्षे, किन्न चारकरेश इत। চরিত্রের পরীক্ষা অতি কঠিন, কোন রাজ্যেও তাহা অসম্পর হর না। ইং-ল্ড হইতে বিশেষ প্রীকা করিয়া (ग मकन मनि मारहतरक अ (मर्भ छज, श्वाहिट्डें छि शामत निमिष्ठ शांठान इहे-ভেছে ভাঁহাদেরও চরিত্রপরীকা হয় বাঃ গেছলে চরিত্রপরীকার কোন

উপায় নাই, দেখানে বোধ হয় সকল लाकरे मछविख, महावानी, अवः महाभन्न विनिशा व्यञ्चय कतिया लहेट इस्। যতক্ষণ তাহার অনাথা ম্পষ্ট না দেখিতে পাওয়া যায়, ডতকণ এ অত্তৰ ভিন্ন আরে উপার নাই।

আমরা এপর্যান্ত যাহা বলিলাম,ভাহার मःरक्ष्म ७ हे दि अञ्चलास " हाकूबी" দেওয়া অপেকা পরীকা করিয়া চাকুরী দেওয়া ভাল। কিন্তু প্রকৃত পরীক্ষা আবশ্যক: যে পরীক্ষা এক্ষরে গ্রৰ্-মেণ্ট করিয়া গাকেন তাহা অসম্পূর্ব।

আসাদের আর একটু বলিতে ইচ্ছা (य अव्यागा वाकि ताककार्या नियुक्त হটনে নে কতি, তাহা গবর্ণর সাছেব বা ক্মিগ্নর সাহেবের নহে। ক্ষতি স্মা-ভের ।



७। 'खनाना वाक्किशन। শক্ষণার সহিত তুম্বস্তের প্রণয় অভি-জানশক্তলের বর্ণনীয় বিষয়; জুলি-রটের সহিত রোমিওর ভাণর রোমিও वरः ज्वित्रहोत्र वर्गीत विषय। इहे ানি নাটকের বর্ণনীয় বিষয় এক, কিন্ত র্থনার অন্যদী বিভিন্ন চ্ছুক্তের অন্

(शंक्ष वाहा शिविषक नारे; (दागिवत প্রণয়ের বাহা প্রতিবন্ধক আছে। শকু-खनात व्याचीय असन नकरनतरे हैक्स যে তুল্লভের দহিত তাঁহার বিবাহ হয়; বোমিওর আত্মীর অপন কাহারো ইচ্ছা नत (य जूनियारित महिन जाहात दिवाँ इ इस् । এই প্রভেদ বশতঃ রোমিও এবং क्लित्रां वांश्यभेष वार्यकांक् अवन ; অভিজ্ঞানশকুস্তলে অন্তর্ভগৎ অপেকা-इंड थारल--(त्रामिश धरः क्लिप्तरहे ঘটনার বাছলা; অভিজ্ঞানশকুত্তলে ঘট-नीत चत्रका। (यशीरन चन्द्र महन महन স্থোনে বাহালগতের আবশাকতা কম; रयथारन बन्ध विश्वित स्मर्भारन वाहाज्ञ १९ कारक कारबरे धारत। अधिकद्व (य সে নাটকের ব্যক্তিগণ একশ্রেণীভূক্ত না इहेबा, इहे वा उट्डाधिक क्षांक्रिक्सी (अ-গীতে বিভক্ত হয়। কিছু যে নাটকে বাহা-জগৎ নায়কের প্রতিবাদী নয় সে নাটকের ব্যক্তিগণ বিক্ষ শ্ৰেণীতে বিভক্ত হয় ना । अध्यक्षानमकुष्ठता वाशंक्रशः नाग्र-**(क**त्र श्रेष्टिवामी नरह धरः (प्रहे कना অভিজানশকুত্তবের প্রায় সমস্ত ব্যক্তি धक (मंगीजुङ, पृष्टे এक घन छाड़ा नक लाई ছ্মান্তের স্বপক্ষ তংহাদিপের মধ্যে কণু সৰ্কাংশেই প্ৰধান :

মহর্ষি কণু অভিজ্ঞানশকুর্বলের আথায়িকার ভিতিত্বানীর। তিনি শকুস্তলার পালক পিতা। শকুস্তলার ঐতিক অদৃষ্ঠ তাঁলারই ইচ্ছাত্বামী। তিনি ইচ্ছা করিলে শকুস্তলাকে যাব-জ্যীবন তপশুর্যায় রাণিতে পারি-তেন; তাঁহার ইচ্ছা না হইলে শকুস্তলা কথনই সংসারাশ্রমে প্রবেশ করিতে পাত্রন না। ছ্রম্ভ অরো ভাঁহার অভিজ্ঞায় জাত চইয়া পরে শকুস্তলাকে লাভ ক্রিতে বত্নশীল হয়। প্রকৃষ্ণলাও তাঁ-

হার অভিপ্রায় জানিতেন বলিয়া গুম্বত্তের প্রশাসন্তি করিতে অভিলাধিনী হন। গুম্বত এবং শক্তলা—এই গুই ব্যক্তির মূলে মহা-ঋষি কণু। মহর্ষি কণু অভিজ্ঞান শক্তালের মেরদণ্ড।

कि চমৎকার মেরুদণ্ড! মহর্ষি কণ্ডে ব্ৰিয়া উঠা যায় না। কলনা উ:হাকে, অঁটিতে পারে না। চিন্তা তাঁহাকে আয়ত্ত করিতে গিয়া সমম্ভ্রমে স্রিয়া দাড়ায়। তিনি স্বৰ্গ এবং মন্তা; তিনি हैहकाम এবং পরকাল; ভিনি পুরুষ এবং প্রকৃতি; ডিনি মোছ এবং বৈরাগ্য: তিনি চিন্তা এবং স্বায়; তিনি শান্তি এবং তেজ। মহর্ষি কণু ভারতের এক-জন প্রপাতনামা ঋষি। তিনি সংসারা-শ্রম পরিত্যাগ করিয়া, পার্থির স্থপ ভৃচ্ছ कतिया, वृष्यनीय (जाशनानमा दिनहे করিয়া, জগতের মোহমুগ্ধকারী মায়ালাল কাটিরা ফেলিয়া. দেহ, মন, আত্মা, সক লই ব্ৰহ্মবায় উৎদৰ্গ কৰিয়াছেন পৃথিবীর হুখ, পৃথিবীর সম্পদ, পৃথিবীং यम, পৃথিবীর সর্ব্যাদা, পৃথিবীর গৌৰ ইছার কিছুই ভাহার প্রার্থনীয় ব্রি বেধি হয় না ৷ এ সকলই ভাঁহার কা সামানা, মুলাছীন, अकिशिश्कर। পাৰ্থিবতায় সমস্ত পৃথিবী মুগ্ধ সে <sup>পাতি</sup> বতা তাঁহার কাছে হতশক্তি, হত<sup>প্রভা</sup> মহিমাশুনা: পৃথিবীর মে<sup>[হনী ম</sup>ি ভাছার কাছে বিলুপ্ত। পার্থিব পদাং সহিত ভাহার চিস্তা, ভাহার হা<sup>নয়, †</sup> হার কর্মক্ষমতা, ভাঁহার কিছু<sup>রই সং</sup>

नाहे। পাर्थित भमार्थ छाहात्र हत्क नि-कृष्ठे, क्कूजगटमत्रहे (यांगा। जीहांत्र मृष्टि স্বৰ্গাভিমুথে। তিনি মৰ্ত্তালোকে আছেন কিছ বেদালোক ভাঁহার প্রকৃত বাসস্থান। পার্থিব পদার্থ ভাঁছাকে পরিবেইন করিয়া আছে,কিন্তু তিনি পার্থিব পদার্থের নিকট নাই। তিনি পার্থির পদার্থে পরিবেটিত. ক্রিছ্র তিনি পার্থিব পদার্থের শাসন অতি-ক্রম ক্রিয়াছেন। তিনি বেন মনুষ্যা-পেক্ষা আনেক উচ্চতর মহাপুরুষের नाात्र भृथिवीत डेकंटन म विष्तत्र कटतन। তিনি দিবারাত ঈশ্বরের কার্য্যে নিযুক্ত। यात्र, यख्त, धान, आताधना-हेशहे তাঁছার একমাত্র কার্যা, একমাত্র স্থ, একমাত্র অভিলাষ। তাঁহার চিস্তা ব্রহ্ম विषयक, डांशांत क्षम बक्रावादाधनाय, তাঁহার আশা ত্রহ্মপদে—তিনি পৃথিবী তাগি করিয়া ব্রহ্মলোকে রহিয়াছেন। বন্ধবলে ভিনি বলীয়ানু । তিনি তুম **८ छत्र नाग्र वीतश्रक्य नन; क** छित्र-যোদ্ধার নাায় তাঁহার বাত্ৰণ তিনি শন্তবিদারে অধিকারী নন। থাপি ভিনি শক্রদমনে সক্ষম। আশ্রমের সরিকটন্ত পর্কতপ্রদেশ রাক্ষ্য-নামধের অনার্যভাতির বাসস্থান। রাক-সেরা দলবন্ধ হইয়া পর্বত প্রদেশ হইতে আসিয়া সমরে সমসর আশ্রমবাসীদিগের यककार्यात्र धवः जनम्हर्गात विरम्नार-शामन करता किछ जाम्हर्यात विषय थरे रा, यथन महर्ति कर् बाखरम बारकन उपन छाहाता आध्यभवाभी पिरशत देवति

ভাচরণে সাহসী হয় না। ছয়ভের আশ্রমপ্রদেশে অবস্থানকালে রাক্ষসেরা আশ্রম আক্রমণ করে। ঋষিগণ উপা-রাত্তর না দেখিয়া ছ্য়ভের বাত্বলের প্রার্থনার ভাহাকে জানাইলেন যে— কণুসা মহর্ষেরসালিধ্যাৎ রক্ষাংসি নঃ

हेडिविच्रम् १ भागविष् । (२ म मा ।) মহর্ষি কণু উপস্থিত না থাকা ছেতু রাক্ষ্যেরা যাগ্যজ্ঞের বিঘ্ন করিতেছে। কণ্রে কি প্রভাপ! তিনি উপস্থিত धाकित्न इत्रस्र वनविक्रमभानी त्राकरम-রাও তাঁহার আশ্রমেব নিকট আসিতে সাহস করে না। তাঁহার বাছবল নাই। কিন্তু তাঁহার এমন কোন আধ্যাত্মিক বল আছে যাহার কাচে বাহবলপ্রাধার্শ ত্রাচার মন্ত্রাহতের নায়ে হাতদাহদ এবং নিবীর্ঘা। কপাট কাল্পনিক নয়। আধাা-আ্বিক তেজেরছারা দৈহিকশক্তির অপ-নয়ন আমরা সকলেই স্বল্পরিমাণে (मिश्रा थाकि। यहर्षि कन आशाश्चिक শক্তির পূর্ণায়ত প্রতিমূর্বি। তাঁহার काष्ट्र व्यमःशा दिन्दिकवल श्रेषान बाक्रम যে মন্তাহত বিষধরের ন্যায় নিজীব **इ**हेब्री थिकिरव छाहा व्यमञ्जय नय । किन्न य गराश्वकरषत कारह महत्र महत्र क्रमे-ছুরাচার বলবীর্ঘাহীন ভীরুর नीव ন্যায় ভাগোদাম এবং ভর'কুল, সে মহাপুরুষের মহিমার কে ইয়তা করিবে। ভাঁহার অসীম এবং অসাধারণ আধ্যা-ছাক শক্তির কে পরিমাণ ্তাহার আধাাত্মিকতার • বিস্তার

গভীরতা কে বুবিয়া উঠিবে ৷ তিনি রক্তমাংস মন, তিনি আত্মা; ভিনি মাতুৰ নন, তিনি সন্ত্ৰ। কিন্তু আধ্যাত্মি-क्छांत्र वरन छींहात स्मन वाहाशाखान, তেমলি বাহাজান। অনতিবিলম্বে শকুন্ত-লার ভাগ্যে বিষম কটভোগ আছে ভিনি ভাগ কানিতে পারিরাছেন। পারিয়া ভাষার প্রতিবিধানার্থ সোমতীর্থে প্রমন করিয়াছেন। ভাঁহার অনুপতিতি-কালে ছম্মত্ত এবং শকুস্তলার পরিণয় হটনা গেল। কিছ কাহারও কাছে পরিবয়সম্বাদ না পাইরা ও আশ্রমে আসিয়াই---

मणः डांडकचारान धकाः चहिननिर्द्यः कि हिमा धुमाडे विकास हिल्ला विकास মাণশ্ব পাবতা এবৰ আহই পড়িআ। बरक् स्मिच्चभद्रिनिचा विव विद्धा व्यटगाः অণিক্রা সংবৃত্তা। অক্র একা ইসি পড़ितक्षित्रः जूमः छकुरना मञ्जामः विम-জ্বামি তি।

কণু এ কথা কেসন করিয়া জানি-লেন ? প্রিরম্ব। বলেন যে তিনি এইরূপ चाकामवानी छनियाहितनः :---**इयादञ्चनाहिङः ८७८मा मधानाः** कृत्दः

. জুব:। অবৈহি ভনরাং প্রক্রপ্রগর্ভাং শনীমিব।। হে বন্ধান ক্যাকে অগ্নিগ্র भेभीनजांत्र नाम शृथिवीत अञ्चलस्त्रत নিমিত সুত্রতনিহিত তেজধারণ করিতে-**८इन स्नानित्**।

यथार्थहे (मवरनारक डिकादिङवाका ना ইজিয়াপোচর ঘটনার আধ্যাত্মিকজ্ঞান 📍 ध अत्मत भी भारमा धक्रत निर्श्वासन । কিন্তু আকাশবাণীর অর্থ বাহাই হউক. এ কণা নিঃশৃদ্ধচিতে বলা যাইতে পারে যে, যে মহাপুরুষে আধ্যাত্মিকতা প্রবল তাঁহারই আকাশবাণীতে অধিকার---যাঁহার আধ্যাত্মিকতা কম তিনি দেশকাল অতিক্রম করিয়া ইন্দিয়াগোচর ঘটনায় क्षांगलां कतिए शादान ना। क्ष আশ্চর্য্য আধ্যাত্মিকভার প্রণে দূরে থা-কিয়াও ছম্মন্ত এবং শকুন্তলার পরিবয়ের বিষয় ভানিতে পারিয়াছিলেন। বাহা-জগৎ মহাঋষির আহার অধীন-অংখার चाकाताही-चाचात की हात शमार्थ। যখন স্বামিভবনগহনার্থ শকুন্তলা বেশ-বিনাাগ করিতেছেন, তথন ছইজন খ্যিকুমার ঠাহার নিমিত্ত মহামূল্য জলভার আনয়ন করিল। ১গীত্মী চুম্কিতভাবে क्रिकामां क्रिला---

वष्ट्र गांत्रक कृत्मा अमर। वाहा, नातम, ध मव कार्याय शाहरम ? নারদ উত্তর করিলেন-

ভাতকাশাপপ্রভাবাং ।

ওক্প্রধান কাশ্যপের क्षभार्य । তথনগোত্মী পুনরার জিজাসা করিলেম-किः भानभी मिकि।

তিনি কি ভাঁচার মান্সিকশকিশারা ७ गक्न रुघन कतिश्राह्म १

কণ সানসিকশক্তিৰালা সে সকল माकामवानीत वर्ष कि ? देहा कि. एयन करवन नाहे वर्षा, किन्न ग्रेशिय নহমে এ রকম প্রশ্ন হইতে পারে তাঁহার
মানসিকশক্তি যে একরকম অসীম
ভাহা সহফেই বৃথিতে পারা যায়।
বাহাজগৎ তাঁহার অপরিসীম অনস্তগভীর আধাাত্মিকতার অন্তভূত। তিনি
বাহাজগতে না থাকিরাও বাহাজগতের
অধিকারী। তিনি যেন অনস্তাকাশে
উঠিয়া ক্ষুদ্র পৃথিবীকে তাঁহার নথদর্পনত্ত করিরা অসীম ব্রহ্মাণ্ডের অংস্থায় নীন
হইয়া রহিয়াছেন। বাহাজগৎ তাঁহার
নথদর্পনত্ব বলিয়াই তাঁহার বাহার্প্রভাব
থত অমুভূত। পৃথিবী কেমন করিয়া
ভাহার ইয়ভা করিবে ?

ৰণু ধীর এবং গন্তীরস্বভাব। ইহা তাঁহার আধ্যাত্মিকতা এবং চিস্তাশীলভার ফল। অন্তর্দশী আত্মাপ্রধান ব্যক্তি-मार्व्य शङीत हहेगा थारक। শাৰ ব্যক্তি ধীর। অভিজ্ঞানশকুস্থনের চতুর্থ আন্ধ পাঠ করিতে করিতে কলেুর ধীর এবং গম্ভীর স্বস্ভাব দেখিয়া মোহিত **ঁহইতে হয়—মন স**স্তমে পরিপূর্ণ হইয়া উঠে। বোধ হয় যেন কোন পূজাতম मश्यूकरवत मण्रस् मे। डाहेग्रा चाहि---क्तरत्र कटस्त्र मक्शत हरा ना,मरन हरा रयन তাঁহার কাছে আসিয়া উন্তি . এবং পৰিঅভালাভ করিয়াছি, অথচ তাঁহার निकटि याहेट छत्रमा इय ना, निकटि यादेवात व्यव्यागी विलग्ना मृद्य माजादेश তাঁহাকে দেখিয়া মন্ত্রাহতের धाकिएक इन, श्रमत आगरम, श्रह्मत ভজিৰুসে, প্ৰীভিতে পরিপ্লভ হইরা উঠে৷ শকুকলা আশ্রম ইইতে যাতা করিতেছেগ। এক সরোবরের ধারে আসিরা শার্করিব কণুকে বলিলেন যে, তাঁহার আর শকুস্তলার সঙ্গে সঙ্গে আসা কর্ত্তব্য নয়। তথন কণু একটি বুক্ষ-মূলে বসিয়া মনে করিলেন যে, ছুম্মস্তকে পাঠ ইবার উপযুক্ত সম্বাদ একটি স্থির করা আবিশাক হইতেছে। এই মনে कतियां विश्वा कतिएं नाशितन्। (यम. দর্শন, পুরাণ প্রভৃতি শাস্ত্রসকল যিনি মহন করিয়াছেন এবং উন্নতজ্ঞান বাঁহার প্রাণবায়ু তিনি আবার চিন্তা করিতে-ছেন যে কি রকম কথা বলিয়া পাঠ।ইব 1 ধীর এবং গভীর চিস্তাশীলবাজি ভিন্ন (कइरे अ तकम करत मा। रेश करन्द्र অসাধারণ চিস্তাশীলভার প্রমাণ এবং কবিকলিত হুমন্ত-চরিত্রের মহিমার প্রতি-পোষক। চিন্তা করিয়া মহাঋষি ছক্ত-ন্তকে এই কপা বলিতে শাঙ্গরিব এবং भारव ठरक छे शरमभ निरम :--

অস্মান্ সাধু বিচিন্তা সংযমধনাসুকৈ:

্কুলংচাত্মন ভ্যস্সাঃকথমপাবাদ্ধবক্কভাং স্বেহপ্রবৃত্তিং চ তাম্।

সামান্যপ্রতিপত্তি পূর্বকমিয়ং দারেরু দৃশ্যা **তরা** 

ভাগ্যায়ন্তমভঃপরং ন থলু ভঘাচ্যং বধু-বন্ধুভিঃ

আমরা তপোধন, আমাদিগকে চিন্তা করিয়া, ভোমার উচ্চবংশকে চিন্তা ক-রিয়া, আর ক্ষরংক্ষদেরী বাহা কোন- রূপে ঘটাইয়া দেয় নাই, শক্তবার সেই মেহপ্রবৃত্তি চিস্তা করিয়া ভূমি ভার্যাাগণের মধ্যে সমান আদরে ইইঁাকে দেখিবে। ভাগ্যে থাকে ইহা অপেক্ষা অধিক হইবে, বধুবন্ধগণের ভাহা বলা উচিত হয় না।

ষেমন মহাপুরুষ, কথাও তেমনি मरुष्पृत्। भक्षणा करन्त्र व्यानवाधू — 'কণুসা কুলপতের চছুসিতমু।' কিন্ত কণু শকুস্তলার নিমিত্ত কি রকম হুবের কামনা করিলেন ? তিনি এমন কামনা করিলেন না যে গুমন্ত তাঁহাকে মহিবী-শ্রেষ্ঠ করেন এবং অনাান্য ভার্যা অপেকা অধিক ভালবাদেন। এত ক্লেছের বন্ধর নিমিত্ত সেই কামনাই স্বাভাবিক এবং আর কেহ ছইলে সেই কামনাই করিত। কিন্তু ভিনি তাহা क्त्रिरान नां, रकन ना रंग कांगनां অবিচার, অন্যায়, পক্ষপাতমূলক। শকুন্তলা ভাঁহার আদরের বল্ক। কিন্তু তাই বলিয়া তাঁহার মত মহাপুরুষ ্শকুন্তলার হুখের অভিলাষী হইয়া অপ-রের ক্ষতি এবং অনিষ্টকামনা কয়িতে পারেন না। শকুতলা তাঁহার যতই সেহের বন্ধ হউন না, তাহার এইমাত্র কামনা যে ছম্মন্ত ভার্যাগণের মধ্যে  **भक्षनारक** मगाम जानरत रार्थन। শকুস্থলার ভাগ্যে তাহার অধিক থাকে, ভাগ্যগুৰে হউক, তিনি সে কামনা করিতে পারেম লা। ধার্ম্মিক মহাপুরু-व्यक्त विश्विनवर्ग इहेबा स्माहान हैन-

मा। धर्मात नारम छोशासत स्मार-ভাল অদৃশা ছইরা বার। ভাঁহাদের চিন্তা সকলসময়েই ন্যারমূলক। ন্যারাজু-বর্তিতা উচ্চ, পরিশুদ্ধ চিস্তার প্রধান এবং প্রকৃত লক্ষণ। সে লক্ষণ মহর্বি करन्त्र विखात विष्मवद्गर्भ काळ्यनामांन ---কেন না শকুন্তলা-রূপ একটি বিবম মোহোৎপাদক বস্ত তাঁহার ন্যায়াত্বর্তি-তার প্রতিষ্দী আছে। তাঁহার চিন্তার উচ্চতা, উদারতা এবং ন্যায়াত্ত্বর্তিভা ভ:বিরা দেখিলে তাঁছাকে মানবশুরু বলিয়া পূজা করিতে ইচ্ছাহয়। কিছ কণ্যের চিস্তার আর একটি রমণীয় উপ-করণ আছে--সেটি তাঁহার শকুরলার প্রতি উপদেশে প্রকাশ। সে উপদেশ এই :--

সা ছমিতঃ পতিকুলং প্রাণ্য শুশ্রবস্থ গুরুন্ কুরু প্রিয়সখীরুদ্ধিং সপদ্মী-জনে শুর্কু বিপ্রকৃতাশি রোবণ্ডয়া মাত্ম প্রতীপং গ্রমঃ ।

ভূষিষ্ঠং ভব দক্ষিণা পরিজনে ভাগ্যে । বসুৎসেকিনী যাস্তোবং গৃহিনীপদং যুবতরো বামাঃ

কুলস্যাধর: ।।
তুমি এস্থান হইতে ভর্তুলে গিরা
ভর্ত্তনাদিগের ভ্রত্তারা করিও, সপত্নীগণের প্রতি প্রিরস্থীবং বাবহার করিও,
অপমানিত হইলেও পতির প্রতিকুলচারিণী হইও না, পরিচারক্দিগের উপর
অধিক অয়ুক্র হইও, এবং সৌভাগ্য

কালে গর্কিত হটও না। যুবতীরা এইরূপেই গৃহিণীপদ পার। আর যা হারা ইহার বিপরীভাচরণ করে, তাহারা পতিকূলের যাতনাম্বরূপ ইইয়া থাকে।

ইহার্তে এই কয়টি গুণের প্রশংসা দেপিতে পাওয়া গাইতেছে—সম্ভম, ्रेमेशातं পेडिवर्स्ड (श्रेम, महिस्कृत), मग्रा এবং নম্রতা। সইজেই বুঝিতে পারা ু যার্ম যে এই প্রণগুলি থাকিলে সংসাব-রূপ রঙ্গভূমির স্কল স্থানেই মানুষ गाबूरवत नाम जीवनयाक। निर्देश क রিতে পারে। এই গুণগুলি থ।কিলে ७४ कूलवर् (कन, मकल व्यवहात ला-কেই জীবনষুদ্ধে জয়ী হইতে পারে। क् वकि कूलनधूंटक या छेशरमंभ **पित्राट्टन ८म् উপদেশ সমস্ত মানব**-ভাতির সংসারধর্মের মূলময়। লেয়া-र्षिम् अपेष अपेष विश्वासिय विश्व के अपेष दिन व এত সারবত্তা এবং উপযোগিতা নাই। त्र उपित्म नकत्वत्र अञ्चलत्वीत्र नत्र। किरम इहेन? এक ट्रे छाविया (पथितन ব্ঝিতে পারা যায় যে ইহার উৎকর্ষের প্রধান কারণ ছাদয় অপবা হাদয়ের কাছে যার্থপরতার অপলাপ। গুরুজনের প্রতি গ্রম—ইহার অর্থ, আত্মগরিমার সম্পূর্ণ অপচয়। পতিকর্ত্তক অপমানিত হই-ণেও তাঁহার প্রতিকুলাচরণ না করা---<sup>हेहात</sup> भर्य, (अर्छ এবং श्रिया किंत्र असू <sup>রোধে</sup> **আত্মান্তিমান পরি**ত্যাগ করা। <sup>পরিচারকদিগের উপর অধিক অমুকৃল</sup>

र ७ मो — हेरात अर्थ, मतिल छेनकात्रकत উপকার করা। সৌভাগ্যকালে গর্বিত না হওয়া—ইহার অর্থ, অপরের সহিত पूर्वनाय जीवनारक वड़ भरत ना कता। আর সপত্নীর প্রতি প্রিয়স্থীবং ব্যবহার केंद्रा—हेहात कर्य (य कि हमश्कात তাহা कि विलव ! ইহার অর্থ, Love thine enemies—যে কথা বলিয়া-ছিলেন বলিয়া কোটা কোটা স্থসভা এবং উন্তমতি মহুষা এখনও যিশু-এটিকে ঈশবের অবভার বলিয়া পূজা করিতেছেন! এর কাছে কি পোলো-निवरतत छेलेलं में हिं। व १ तम छेलेलं भ হৃদর কোথায় ? সে উপদেশে জগতের আত্মা কোথায় ? আবার এই উপদেশ দিয়া মহাঋষি জিজাসা করিতেছেন :--कंशः वा शोजभी मनाद्य।

এই কথায় গৌতমীই বা কি বলেন ?
রমণীর কর্ত্তবাতাসম্বন্ধে উপদেশ দিয়াছেন বলিয়া মহর্ষি বৃদ্ধা এবং প্রবীণা
গৌতমীর মতসাপেক্ষ—গৌতমীকে আপনার অপেক্ষা যোগ্যতর উপদেষ্টা বলিয়া
বিবেচনা করিতেছেন। ইহাও তাঁহার
নম্রতার এবং নাায়ার্ম্বর্তিতার স্থলর
শরিচয় দিতেছে। উচ্চতা, নাায়ায়্মবর্তিতা, নম্রতা, গভীরসহৃদয়তা, ধীরতা
এবং সতর্কতা কণ্বের চিস্তার প্রধান
লক্ষণ এবং উপকরণ।

ফলতঃ কর্ণের হৃদর একটি আশ্চর্যা পদার্থ। সকল বস্তু, সকল জীব, সমস্ত জগৎ তাঁহার ভক্তি স্নেহ এবং আদ্বের

(পৌ**ষ** ৷

জিনিস। শক্সলাকে বিদায় দিনার কালে
ভিনি আশ্রমের তর্গতা প্রভৃতিকে
সংখাধন করিয়া বলিতেছেন:—
পাতৃং ন প্রথমং ব্যবসাতি জলং যুদ্ধাস্বপীতেরু যা

নাদতে পিয়মগুনাপি ভবতাং লেহেন যা প্রব্ম

আংদোৰ: কুজ্ম প্রুতিসময়ে যস্যা ভ্ৰত্যংস্বঃ

সেরং যাতি শকুরলা পতিগৃহং সবৈরিজ কর্মতাম ॥

তরুলতার প্রতি শকুস্তলার স্বেহ এবং ভশ্রমার উল্লেখ করিয়া মহর্ষি কণু আপ नात क्षाराव कि हमश्काविष्ठ राष्ट्र (लन! Cम श्रम स्थार्थ मेक्डलात अनुरात नाष उक्नडारक छान्यास এবং তক্ষলভাব, নিমিত্ত ভাবে। এবং সেইজনাই মহধি কণু আজি তকলতার কাছে শকুস্থলাকে বিদায় দিবার অনু मिक शार्थना कविष्ट्राह्म । - एक्ल्इार थाछि भव्सि करेल्व अन्त स्वर धनः ভিজিরদে পরিপূর্ণ। তিনিই ভ শকুত্ব-লাকে তর্গতার ও ক্ষায় নিযুক্ত করি-রাছিলেন। বেমন তর্লতার প্রতি ভেম্নি পশুপকীর প্রতিও তাঁহার কেচু ও এবং মুম্ভা। তিনি আঞ্রেরে সম্ভ মুগ মুগী এবং মৃগশাবকের ইতিহাস कारनन। यथन मक्छनात भगाषात्र। হইতে তাহার পুত্রসম মৃগটি তাহার বস্ত ুধরিয়া টানিল তথন তিনিই ত শকুস্ত-नारक विशासन (यः -

থদ্য তথা ত্রণবিরোপণ্মিকুদীনাং তৈলং নাষিচ্যত মুখে কুশস্চিবিদ্ধে। শ্যামাকম্টি পরিবর্ধিতকো অহাতি সোহয়ং ন পুতাকৃতকঃ পদবীং মুগতে॥

বংসে! বাহার মুখ কুশাগ্রহারা বিদ্ধা হইলে ভূমি ক্ষতশোষক ইঙ্গুদীতৈলগেক করিছে, ভূমি বাহাকে শামাকধানামুটি দিয়া পোষণ করিষাছ, সেই ভোমার ক্ষতকপুত্র মুগ ভোমার অন্ত্যারণ করিছিছে।

এত থবর যে রাথে এবং এমন করিয়া বে পশুপক্ষীর কথা বলে, পশুপক্ষীর কথা বলে, পশুপক্ষী যণাথই তাহার হৃদয়ের বস্ত—সে যথাওই পশুপক্ষীর পিতামাতার স্থানীয়।
শকুস্তলাও তাই বলেন। তিনি সেই অমুসরণকারী মুগটিকে এই বলিয়া ফিরাইযা দিলেন:—

লাণিং বি মঞ বিশ্লচিকাং তুমং তাতো চিক্তাবেকাই।

এখন আমি আবার চলিলাম; এখন পিতাই তোমার ভাবনা ভাবিবেন<sup>°</sup>।

মহর্ষি কণু সমস্ত জগৎকে ভালবাদেন,
সমস্ত জগৎকে শ্রদ্ধা করেন। উছিবে
ক্ষান্য ক্লেহের উৎস। শকুন্তলাকে বিদান্য দিবার সময় তাঁহার হাদদ ফাটিয়া
গিয়াছিল। শকুন্তলা যখন তাঁহাকে
সান্ধনাবাকো সন্ধোধন ক্রিলেন তখন
ভিনি বলহীনা রম্বীর ন্যায় বলিয়া
কেলিলেনঃ—

শমমেষ্যতি নগ শোকঃ কথং সু বত্সে ভ্যা রচিত পূর্বা

कयकः ॥

উটল पाति विक्राणः नीवात्रविनः विट्या-

বংশে ! ভূমি পর্নশালার স্বারদেশে যে পুঁড়িধানোর পুজোপহার দিয়াছিলে ভাষাহইতে এখন অঙ্কর বাহির হইয়াছে। আমি যথন তা দেখ্ব তথন কিরূপে আমার শোকসম্বরণ হইবে!

্ অটল, অনস্ত প্রসারিত, অভডেদী, ভূফারমণ্ডিত হিমাচল রবিকিরণস্পর্ণে দরদর ধারায় গলিয়া যাইতেছে !

क्ष मःमात्रज्ञाभी, विषयवार्गनाणुना, পার্থিবতাপরিমুক্ত, ত্রন্ধনিষ্ঠ,, ত্রন্ধার্মর, উর্দ্ধানী। কিন্তু পৃথিবীতে না থাকি-য়াও তিনি পৃথিবীময়। তিনি পৃথিবীর মায়া ত্যাগ করিয়াছেন, কিন্তু পৃথিবী তাঁহার পরমঙ্গেহ ও এদ্ধার বস্ত। তিনি পৃথিবীর কিছুই চাহেন না, কিন্তু পৃথি-বীর কীটাণুকীটও তাঁহার কাছে আদৃত এবং সমানিত। তাঁহার দৃষ্টি স্বগাভি-মৃথে, কিন্তু এই ক্ষুদ্র পৃথিবীও তাঁহার অর্গের অন্তভূতি। তাঁহার চিঞা একানস্ক, কিন্তু জগতের স্কলই তাঁহার ত্রন্ধের অন্তর্গত। তাহার হৃদয় এক্ষণোকে, किन्न बगर्ड या (यथारन আছে, नकनरें তিনি ঔহার ত্রন্ধলোকে দেখিতে পান। • তিনি চিন্তা, কিন্তু তঁ!হারই হাদ্য় ৷ তিনি মোহবিলয়ী তপস্বী, কিন্ত তাঁহারই নাম মাধা। मधामी ! व्यान्त्या देवदाशी !

কণু বেমন ধীর এবং শাস্তপ্রকৃতি তমনি তেজস্মী। তাঁহার তেজের প্রা মাণ—শাঙ্গরিব এবং শার্থত, কেন না
শাঙ্গরিব এবং শার্থত উহির্ছ শিখ্য
এবং প্রতিনিধি। শাঙ্গরিব এবং শার্
থতকে আমবা কণেব অংশ বলিয়া
বিবেচনা করি না। এবং সেই কারণে
আমরা শাঙ্গরিব এবং শাব্যতের্ঘারা
কণ্কে ব্রাইতেছি। শকুওলাকে ভূলিয়া লিয়া তল্পত যথন উহির সহিত
শকুত্থলাব পরিন্যস্থান্ত সংক্রেশ্য
করিলেন, তথন শাঞ্জারব অকুতোভয়ে
ভাহাকে জিল্ডাসা করিলেনঃ—

किः कृ इकार्याद्वयाद्वयाः

প্রতি বিমুনতে(চিতা রাজঃ।

গান্ধকবিবাহরূপ অনুষ্ঠিতকায্যের অপ-লাপ করিয়া ধর্মের প্রতি এইরূপ বিমুখতাচরণ করা কি বাজার উচিত ?

আসমুদ্র ভিরিত্সান্ত্রাক্তর স্থাট্কে এ রক্ষ কথা যে বলে সে পৃথিবীর কাহাকেও ভয় কবে না, সে ধর্মবলে বলীয়ান, এহার ভেল এবং মধ্যাহ্রবির ভেল একই বস্তা ভগ্নস্ত যখন আবার ভাহাদের কুণাব প্রতি অঞ্জাপ্রকাশ ক্রিলেন, তথনা ভান ব্লিলেন:

মৃচ্ছ প্তামী বিকাবাঃ প্রায়েণেরবামতেরু। উপ্রধানদমত ব্যক্তি দগেরই এইপ্রকার চিত্তবিকার হইয়া থাকে।

শার্ক বর ঋষিকুমার। তাঁহার ধনবল; বাহুবল, লোকবল, কোন বলই নাই। কিন্ত তাঁহার কথা শুনিলে বোধ হুয় যে তিনি কোন বলই গ্রাহা করেন না,

পার্থিবল, পার্থিবশক্তি, পার্থিবসম্পদ, তাঁহার কাছে কিছুই নয়। তাঁহার সাহস धावः एक एक एक एक एक एक एक एक एक রাজার প্রাঞ্চা নন, রাজার রাজা। त्रक्रमाः म नन, जिनि बक्त रुख। जिनि শান্তি নন, তিনি প্রজ্ঞানত ছ্তাশন। রাজরাজেশ্বর তৃত্মন্ত যথন তাঁহাকে জি-জাসা করিলেন যে শকুন্তলাকে বঞ্চনা করিয়া আমার কি লাভ হইবে, তখন তিনি সজোধে বলিলেন:-

### বিনিপাতঃ।

হস্তিনাপুরের রাজবাটীতে অসীম মহিমামণ্ডিত প্রুসভায় দাঁড়াইয়া বলি-লেন—'বিনিপাতঃ ।' মহর্ষি কণ্ হিমা-চলের ন্যায় দর্দর্ধারায় গলিতেও পারেন এবং বিস্বিয়সের ন্যায় ধৃধূ ক-রিয়া জ্বলিতেও পারেন! কলনা তাঁহাকে কেমন করিয়া অনটিবে ! চিস্তা তাঁহাকে কেমন করিয়া আয়ত্ত করিবে !

যদিও মহর্ষি কণ্রের সম্পর্কে শাঙ্গরিব এবং শার্ঘত একই ব্যক্তি, কিন্তু কণ্ र्हेट पृथक् क्तिया दिल्थित छाहारमत মধ্যে অতি চমৎকার প্রভেম লক্ষিত इय़-इइबनरक श्रक्षक्रिता इर जिन-वाक्ति, विनया (वाध इय। শকুন্তলে ভাঁহাদের কথা অতি অল্লই আছে এবং তাঁহাদিগকে একটির অধিক কার্যা করিতে দেখিতে পাওয়া যায় না। কিন্তু যে শ্বলপ্রিমিত, স্থান মহাকৰি. তাহাদিগকে অর্পণ করিয়াছেন, তাঁহারই भरक्षा उ।शारमत अख्डिस्कत भूव, भनि-

কার এবং স্বন্ধেক বিকাশ দেখিতে পাওয়া যায়। উঁহোরা হুইজনে একই श्वकृत भिषा, डांशामत पूर्व स्थानत सीवन-थानी अक्ट्रे तकम; डांशामत क्टे-জনের শিক্ষা একই প্রকার; ভারাদের ছই-ब्दान बामा, जाकाक्या, मक्तरे वका কিন্তু তাঁহারা ত্ইজনে সম্পূর্ণরূপে ভিল-প্রকৃতির লোক। শাঙ্গরিব কিছু বাহ্য-" मनी, भारपाठ किছू अद्धर्मनी। निक्त्म, নিঃশব্দ, শান্তিময় আশ্রম হইতে আসিয়া रुखिनाश्रुद्धत अनाकी दाखवांने प्रिशा ভাগসৰয় এক নৃতন ভাব অনুভব করি-লেন। কিন্তু সে ভাব শাঙ্গরে এক-রকম, শার্ঘতে ভিন্নরকম। শাঙ্গর্ব শার্ঘতকে বলিলেন:---

তথাপীদং শশ্বংপরিচিত বিবিক্তেন

মনসা জনাকীর্ণ: মন্যে হতবহপরীতং গৃহমিব ॥ षामत्र। नित्रविष्ट्त निर्वहत्व थाकि। এই জনাকীৰ গৃহ অগ্নিবেষ্টিত বলিয়া বোধ হইতেছে।

কিন্তু শার্ঘত শাঙ্গ রবকে বলিলেন:---অভাক্তমিবঃ মাতঃ শুচিরশুচিমিব ध्यवृद्ध देव ऋश्वम। অভিজ্ঞান ুবদ্মিব সৈরগতির্জনমিছ স্থদক্ষিন্য-

रेविमि ॥

সাত্ৰাক্তি যেমন অস্নাতকে, গুচি যেরপ অভচিকে, জাগরিত যেমন নিজি-फ्रक् ज्वः विमूक रामन वक्षाक रमाध আমি এথানে সেইরপ বিষয়স্থাসক লোককে বুঝিতেছি।

ष्ट्रेष्ट्रत अक्ट मृभा प्रिथित्नत्, किस त्म मृणा धक्षात्मत मनत्क धक तकस्म विव्राचित्र कतिन, आंत्र अक्षरत्त्र मृनरक আর এক রকমে বিচলিত করিল। সে দৃখ্য দেখিয়া শার্করবের এক ভয়ানক অগ্নিকাণ্ড মনে হইল; শার্হতের শুচির তুলনায় অশুচি, পবিত্রতার তুলনায় অপবিত্তা, জাগরণের তুলনায় নিদ্রা **ি**এবং মুক্জভাবের তুলনায় দাসম্বশৃত্থল मत्न इरेल। ८म पृथा थांक त्रत्व मत्न বাছদ্বগং প্রবল করিল, শারদ্বতের মনে অন্তর্জগৎ প্রবল করিল। সে দৃশ্য শাঙ্গরিবে বাহ্যজগৎমূলক কল্পনাকে মাতা-ইয়া তুলিল ; শারহতে অন্তর্জগৎনিহিত চিন্তাশক্তি প্রবল করিল। শাঙ্গরিব সে দৃশ্য জড়জগতের সাহায্যে বুঝিলেন; শার্ঘত সে দৃশ্য নৈতিক অথবা আধ্যা-ত্মিক জগতের সাহায্যে বুঝিলেন। শাঙ্গরিব বাহাজগতের কবি; শ'রছত **অন্তর্জগতের ক**বি। শাঙ্গরিব বাহাস্ফৃর্তি; শারম্বত অন্তর্দু 🕏 অথবা আধ্যাত্মিকতা। শাক্তরৰ এবং শার্ছতের মধ্যে আকাশ-পাতাল প্রভেদ। আমরা যতকণ তাঁহা-দিগকে দেখিতে পাই, ততক্ষণই সেই প্রভেদ লক্ষিত হয়। যথন রাজপুরে।হিত তাঁহাদিগকে হুম্মস্তের সমুখে লইয়া গেলেন তথন শাঙ্গরবই হ্মান্তের গুণ বর্ণনা করিয়া পুরোহিতের সহিত কথা কহি-যথন অভিবাদনাদি সমাপ্ত ক্রিয়া কণ্প্রেরিত সম্বাদ জানাইতে <sup>२२ेन</sup>, ज्थन भात्र द्वारे जारा जानाहे-

লেন। যথন ছ্ম্মন্ত শকুন্তলার সহিত পরিণয় অত্মীকার করিলেন, তথন শাঙ্গ-রবই ক্রোধপ্রজ্ঞালিত বিষধরের ন্যায় জাঁহার উপর বাক্যবিষ্বর্ধণ করিতে আগিলেন। কিন্তু শাঙ্গ-রব যথন উন্মত্তর ন্যায় রাজ্যাক্ষেশ্বর ছ্মন্তকে নক্ডাছক্ডাকরিতেছেন,তথন শারন্ধতের মনের অবস্থা কিরুপ ? তাঁহার এই কথাতেই সে অবস্থার প্রকাশঃ—

#গার্গবিব বিরুষ ত্মিদানীম্।

শকুম্বলে বক্তব্যমুক্তমস্মাভিঃ। সোহয়মত্রভবানেবমাহ। দীয়ভামক্ষৈ প্রতায়প্রতিবচনম্।।

শাঙ্গ রব, ত্মি এখন থাম। শক্সতলে, আমাদের যা বলিবার তা বলিবাম। এই মহামান্য রাজা এই রূপ কছিতে-ছেন। এখন যাহাতে ইহাঁর মনে প্রাত্যয় হয় এমন কথা তুমি কিছু বল।

শার্ঘত এ সময়েও স্থির, গছীর, অবিচলিত। তিনি যেন কোন পক্ষেই নাই। তিনি যেন উভয়পক্ষের মধ্যবর্তী বিচারক! শকুস্তলার যাহা বলিবার ছিল, ভাহা বলা হইল। তাঁহার কথা শুনিয়াও ভ্রমস্তের প্রতায় হইল না। তিনি শকুস্তলাকে চতুরা ছন্চারিণী বলিয়া গালি দিলেন। শার্ম্বর আবার রাগিয়া উঠিয়া তাঁহার সহিত বাগ্যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। কিন্তু শার্ম্বত নিস্তব্ধ —তিনি একটিও কথা কহিলেন না। অবশেষে যথন শার্ম্বর পুরুসভায় দাঁড়াইয়া জ্ঞানশূন্য উন্মত্তের ন্যায় পুরু-

বংশের 'বিনিপাত' হইবে বলিয়া গ<del>ুর্জন</del> করিয়া উঠিলেন, তথন শার্থত এই-মাত্র বলিলেন ঃ—

শাঙ্গ রব কি মৃত্তরেণ। অমৃষ্ঠিতো ওরোঃ সন্দেশঃ। প্রতিনিবর্ত্তামহে বয়স্। রোজা-নং প্রতি।)

ভূদেৰা ভবতঃ কান্তা ভ্যন্ন বৈনাং

গৃহাণ বা। উপপলাহি দাবেষু প্রভূতাস্ক্রোমুখী॥ গৌতমি গছভাগ্রতঃ।

শাঙ্গরিব, কথা কাটাকাটির আরে দর কার কি ? গুরুদেবের আদেশ অনুষ্ঠান করিলান। চল আসরা ফিরিয়া যাই। (রাজার প্রতি)

এই তোমার স্ত্রী, ইহাকে একণে ত্যাগই কর বা গ্রহণই কর। স্ত্রীব প্রতি সর্বতোমুখী প্রভূতা আছেই ত।

গৌতমি, চল, আগে আগে চল।

শার্থত আগেও যেমন, এখনও তেমনি—স্থির, গন্ধীর, অবিচলিত। তিনি
দেখিলেন যে, ত্মস্ত বুঝিবেন না এবং
তিনি তাঁহাকে বুঝাইবার চেষ্টাও করিলেন না। তিনি তর্ক করিবার লোক
নন। তিনি কলহ করিবার লোক
নন। তিনি কলহ করিবার লোক
নন। তিনি শাঙ্গরিবের নাায় তর্কও
করিলেন না, কলহও করিলেন না।
তাঁহার বিশাস দৃঢ়তম অপেকা দৃঢ়।
অল্ল কথার, সর্ল ভাষার, তিনি সেই
স্পৃঢ় বিশ্বাস আশ্চর্যা দৃঢ়তার সহিত
বাক্ত করিয়া চলিয়া গেলেন। বিন

উচ্চত্তম রাঞ্সিংহাসনাপেকা উচ্চত্র বিচারাসন হইতে অপরাধীর অপরাধ ব্যক্ত করিয়া বিচারপতি উঠিয়া গেণেন! শার্কর্ব মনে করিলে পেরিক্লিস হইতে পারেন, দিমস্থেনিস্ হইতে পারেন, সিসিরোহইতে পারেন,বর্ক হইতে পারেন মামরাবো—ব্রিটাধ পার্লিরামেণ্টের ন্যায় মহাসভার সর্ব্বোৎকৃত্ত অলক্ষার হইতে পারেন। শার্বত বিচারপতি,কিন্তু তাঁহার। যোগ্য বিচারাসন পৃথিবীতে নাই। তাঁহার হান আধ্যাত্মিক জগতে। কিন্তু শার্ক-রবই বল আরু শার্বতই বল, মহর্ষি কণ্ সকলেরই শ্রেষ্ঠ, সকলেরই গুরু, সকলেরই অধিনায়ক। মহর্ষি কণ্রের কে ইয়্বা করিবে!

কিন্তু কণু যেমন সেই সকল ঋষি এবং ঋষিকুমারদিগের অধিনায়ক গৌ-ত্রমী তেমনি তাঁহাদের অধিনায়িকা। গোত্নীকে বুঝিতে পারা যায়, কিন্তু' বুঝাইতে পারা যায় না। এবং বোধ হয় বে বিদেশীয়েরা ভাঁহাকে ভাল বুকিতৈ পারেন না। ধর্মনিষ্ঠা, প্রাচীনা, গন্ধীর-প্রকৃতি, মাভৃভাবযুক্তা গৌতমী-পর্ম পৰিত দৃশা! আশ্ৰমে গ্ৰগুলি ঋষি ख्रश्वी আছেন তিনি সকলেরই **জ**মনী স্বৰূপ—তিনি সকলকেই ৰাপু, বাছা, যাতু বলিয়া ডাকিয়া থাকেন এবং তাঁ ছারা সকলেই তাঁহাকে জননীবং সেং এবং স্থান করেন। আবশাক ছইলে उँशित काटक .कांत्रिया कांकाव करवर्न - যথা পকুত্তলা :--

हैभः अगःविक्शनाविशिः शिवादिनः

षञ्जाय शामभी अ निर्वत हेन्त्रः। **পকলে বৈমন তাহাকে ভালবাদে** এবং দখান করে তিনিও তেমনি সক-লকে ভালবাদেন এবং সকলের ভাবনা শকুন্তলা পীড়িতা--প্ৰায় প্রিয়ম্বদা এবং অন উত্থানশক্তিরহিত স্মা তাঁহার উত্তপ্তদেহে সুশীতল প্রলেপ •সাথাইয়ং দিতেছেন এবং পদাপত্রদারা বীজন করিতেছেন। ওদিকে গৌতমী তাঁহার মঙ্গলার্থ পবিত্র শাস্তিলল আ-নিয়া তাঁহার মন্তকোণরি সিঞ্চন করিয়া স্মত্নভাবে তাঁহাকে আশ্রমকুটীরে লইয়া য।ইতেছেন। আশ্রম হইতে যাত্রাকালে কণ্ড যেমন শকুন্তবার নিমিত্ত দেবতা-पिरात यागीसापशार्थना ক্রিলেন, शोक्ती अ टक्सिन मक्खनाटक वनरमवी। দিগকে সমস্ত্রমে প্রণাম করিতে বলিয়া <sup>°</sup>দিশেন। কিন্তু তার পর স্থার বেশী কথা কছিলেন না। একে ত ভিনি বেঁশী কথা কন না, তাছাতে আবার তথন স্বন্ধ: কণু যা বলিবার তা বলিতে-ছেন। কণু যেমন তাঁহার পদমর্যাদা ব্ৰোন, তিনিও তেমনি কৃণের পদ-মর্থাদ। বুঝেন। তিনি নিস্তরভাবে शिष्ठाभू बीत (महे क्षत्रविषात्रक विषात्र-मृभा (मिश्टनन। कन् डाहाबरे इट्छ শক্তলাকে সমর্পন করিয়া আশ্রমকুটীরে প্রতাবর্ত্তন করিবেন। অভিজ্ঞানশকু-স্থলে গৌ<del>ভ</del>শী একটি প্রধান চরিত্র। भूक्षहित्वभागत माथा काल्ब (य भागती,

জীচরিত্রগণের মধ্যে গৌতমীর সেই भगवी। कन् द्यमंत क्षा ध वर भक्-স্তলার ভিত্তিস্বরূপ, গৌতমীও সেইরূপ। গৌত্মী না থাকিলে নাটকের কার্য্য চলিতে পারে না। গৌতসীকে কণেুর অংশ বলিয়া বৃষিতে হইবে, কেন না গৌত্মীর সাহায্যব্যতিরেকে কণু তাঁহার নিজের সমস্ত কর্তব্য পালন করিতে এ কথার আরো একটি অর্থ আছে। শক্সলারমণী। তিনি কণেুর भामनाधीन बरहे। কিন্তু গৌতমীই তাঁহার প্রক্তুত শিক্ষাত্রী এবং शुक्व दमगीरक निट्ड भारतन, किन्ह वमनी छिन्न तमनीरक রমণী করিতে পারে না। শকুস্তলার मस्दिक भोजभी कर्नुत এकि छे दक्के

এখন অভিজ্ঞানশকুন্তলের মেরুদণ্ড
পাওয়া গেল। মহর্ষি কণু সেই মেরুদণ্ড, এবং গৌতমী, শাঙ্করব এবং শারঘত সেই মেরুদণ্ডের অন্তর্গত। সে
মেরুদণ্ডের এক অর্থ মহর্ষি কণু আর
এক অর্থ ইহলোক এবং পরলোক, স্থল
এবং স্কুল, জ্ঞান এবং মোহ, জী এবং
পুরুষ, শান্তি এবং তেজ, স্বর্গ এবং মর্ত্তা।
সেই মেরুদণ্ডের অর্থও বা পুর্বাপ্তাববিবৃত অভিজ্ঞানশকুন্তলের অর্থও তাই।
সেই চমংকার মেরুদণ্ডের উপর নির্ভ্রর
করিয়া ছন্মন্ত শকুন্তলার সহিত মিলিত
হইলেন। প্রিয়ম্বদা এবং অনুস্রা সেই
মিলনকার্গ্যে গুনুষ্ঠ এবং শকুন্তলার চক্ষ

কর্ণস্কল ৷ ভাষাদের সাহাযোই হয়ত भक्षनारक हिनित्नन धवः नेक्छना ष्ट्रश्चरक हिनित्ननं। थित्रवर्ग धरः অনহর। পর্কতনার প্রির সধী। এমন স্থী কিছ কেই কোথাও দেখে মাই। ছাতি-জ্ঞানশকুন্তন পড়িতে পড়িতে বোধ হয় य मक्छना, लिवचना, এবং अनर्श्वा এই ভিনটভে একটি। ভিনট একত্রে প্রতিপালিত ; তিনটির একত্রে শরন, ভোজন, উপবেশন; তিনটির একই কাব্ধ ; তিনটির এক চিস্তা, এক হৃদয়। তিনটি পরস্পার যে কত ভালবাদে তা বলিতে পারা যায় না। অভিজ্ঞানশকুষ্ণ-লের প্রথম হইতে শকুন্তলার আশ্রম-ত্যাগ পর্যান্ত সে ভালবাসার যে কত প্রমাণ পাওয়া যার তাহা বলিয়া শেষ করা যায় না। সে ভালবাসার রকীন দেখিলে মোহে অভিভূত হইতে হয়— মনে হয় বুঝি অর্গে আসিয়া অর্গের স্থ্রকক্সাদিগের ভালবাসা দেখিতেছি। नक्डना, श्रित्रमा এवः अनस्या পत्र ব্দারের প্রাণবায়ু, পরস্পারে পরস্পারের নিষিত্ত প্রাণপর্যস্ত দিতে পারেন । এমন সরল পবিত্র এবং মিষ্ট স্থাভাব আমরা আর কোথাও দেখি নাই। কিন্তু সকল বিষয়ে এক হইয়াও তিনলনে তিনটি वाकि। भक्षनात वदः वित्रवनात वक्रे वम्म, किस द्वास रम द्या वनग्रमात वम्म काशामत अर्थका कि क्रू कम । नेक्खना এবঃ প্রিরম্বন। যৌবনের তরকে পড়িয়া-(इन ; किंद्र त्वांव इंग्न (यन अनक्षीं)

সে তরঙ্গ এখনও ভাল রকম লাগে নাই, এখনও যেন অনস্যা হইতে সে তরগ य९किकिए पृत्त चाहि। नेकुछना यथन তাঁহার প্রিয় বন-জ্যোৎনার শোভা এক-দৃষ্টিতে দেখিতেছেন, তখন প্রেয়খদা অনস্বাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, বল দেখি, অনহয়ে, শকুন্তলা কেন অমন করিয়া সহকারের প্রতি একদৃষ্টে চাহিয়া রহি**রাচেই। অনক্রা বলিল,° আমি**" জানি না; ভূমি আমাকে বলিয়া দেও। শকুন্তলা যথন একটি বুকের সমুখে একটু হেলিয়া দাঁড়াইলেন, তথন অন-र्या कान कथा वनित्न ना, किछ श्रित्रवता विलिय, नक्छल, अक्ट्रे के রকম করিয়া দাঁড়াইয়া থাক। শকু-खना बिखाना कतिरनन, रकन। थिय-ন্বদ। উপ্তর করিলেন যে তুমি ঐরকম করিয়া দাঁড়াইয়া থাকাতে ঠিক্ বোধ ह्हेट उट्ह (यन किम्त्र त्रक्रित अक्षि त्रमः ণীয় লভার সহিত পরিণয় হইয়াছে। কিন্তু এত রদের কথা শুনিয়াও অন-স্মার মুখে কথাটি নাই। অনস্মা (क्वन उस नडा नहेग्राहे वाछ। भक्-স্তলা অনুস্থাকে তাঁহার বুকের বছল ,একটু আলা করিয়া দিতে বলিলেন। व्यनस्त्रा दकान कथा ना विनन्ना वकन काना कतिया निरमन। किंख विवयमा विनातन (य, दरीवरनतं (कारत (छोमात পরোধর বিভূত হইরাছে তা আমাকে व्यित्रधना तन (मांच मिर्ट कि हर्द। मक्खना उन कतिराज छान वारानः

वात्रान, किंख तक कतिएक भारतम मा ; অনস্যারক করিতে শেখেন মাই। धनरुषा किছू वानिका वानिका त्रकम। ঘথন হল্পত তাঁহাদের সম্মুপে উপস্থিত হইলেন, তথন তাঁহারা তিন জনেই কিছু কিছ অনস্যাই कफमफ इहेरनम। ুঅগ্রে হন্নস্তের সহিত কণা কহিলেন, ভাঁহার অভ্যথ নার প্রস্তাব করিলেন, এবং প্রিরখদা ও শকুন্তলাকে তাঁহার কাছে বৃদিতে আহ্বান করিলেন দকলে বসিলে পর প্রোয়স্থদার জানিবার ইচ্ছা হইল যে অভাগত বাক্তি কে ! কিন্তু তিনি নিজে তুমান্তের প্রিচয় জিজাদা ক্রিতে পারিলেন না; অনক্যাকে চুপি চপি বলিলেন, এই মহাশয় বাজি কে? অমনি অনক্যা বলিলেন, অংমি জিজাসা করিতেছি, বলিয়াই অকুতোভয়ে এবং অবিচলিতভাবে হ্রাজের পরিচয় জি জাসা করিলেন। আবার যথন গুমান্ত শক্-স্তুলার পরিচয় জিজ্ঞাসা করিলেন, তথন शिग्रहमा (कान कथा विलितन गां, किन् অনস্যা আগ্রহসহকারে শকুস্তলার ইতি-হাস বলিতে প্রবৃত্ত হইলেন। সে ইতিহাস বলিতে বলিতে তিনি একবার লক্ষাবোধ करियार्कित्समा किस शतकर्ण है आवार " বেমন বলিভেছিলেম ভেমমি বলিভে লাগিলেন। কিছু যখন তাহার ইতি-হাস শেষ হইল এবং হুম্মন্ত শকুন্তলার শ্বন্ধে কণ্ডের **অভিগ্রা**র জানিতে চাহি-লেন, তখন বালিকা আর কোন কথা বলিল না, তখন প্রোয়খদা ঠাকুরাণী

ঘটকালী করিতে আরম্ভ করিলেন এবং শকুত্তলাকে লইয়া রঙ্গ করিতে লাগি-लन। उथम श्रेट अन्या निख्का। তার পর যথম সকলে আশ্রমকুটীরে যান, তথন শকুস্তলা অনস্যাকে ডাকিয়া বলিলেন বে আমার পায় কাটা ফুটি য়াছে এবং বৰুল গাছের ভালে আটকা-ইয়া গিয়াছে। শকুম্বলার মনে কাঁটা ফুটিমাছে,ঠাট্টার ভাষে প্রিমামদাকে ব্লিতে তাহার সাহস হইল মা, ভাই স্রলা বালিকাকে ডাকিয়া বলিলেন। পর যখন শকুন্তলা ছন্মত্তের নিমিত্ত মৃতপ্রায়, তথন অনস্য়া প্রিয়ম্দাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, কি উপায়ে হুম্বস্তের সহিত শকুন্তলার সম্বর এবং গোপনীয় ভাবে মিলন হইতে পারে। প্রিয়ম্বদা বলিলেন যে কি রকমে গোপনীয়ভাবে भिलन इत्र हेहांहे वित्वहा विषय, मञ्ज भिनत्वत्र विषयः कान जावन। नाहै। অন্ত্য়া যেন চম্কিত হইয়া জিজ্ঞাসা कविटलन, तम क्यान कथा? जथन প্রেয়খনা অনস্মাকে বুঝাইয়া দিলেন যে জ্মান্তের সহিত শকুন্তলার যথন প্রথম সাক্ষাৎ হয় তথন হল্পতের হাব ভাবে বুঝ। পিয়াছিল তিনি শকুস্তলার প্রতি বিশেষ অমুরাগী। বালিকা অনুসুয়া এত বুঝে না। এখন সব বুঝিল, কিছ বুঝিয়াও মিশমের কোন উপায় স্থির করিতে পারিল না। প্রির্বদাঠাকুরাণী मननल्थात थेखाव कतिलन । अन्यूत्रा সরলা বালিকা, প্রিয়খনা পাকা ঘটকী।

তার পব যধন গুল্প উপস্থিত হই-লেন ভখন অনুস্থ। তাহাকে বসিতে আহ্বান করিলেন, কিন্তু কান্ধের কথা श्चित्रधनाठाकूबानी कहिए नाशियन। অবশেষে যথন ছমন্ত এবং শক্তলাকে निर्कात वाशिया या उम्रा आवनाक द्वाध **২ইল তখন প্রায়ম্দাঠাকুরাণীই**ুএকটা ছল করিয়া অনস্যাকে লইয়া চলিয়া (अत्नन। धनस्याष्टि कृत्नत्र कूष्ट्-**धग्न** क्रिनाहे, किन्न क्रि क्रि मकुछना-कृनिष्ठि कृषित्राट्ड-- किछ नव-বিক্ষিত্পদার নামে সে ফুলের প্রায় সমস্ত গৌরব পাপ্ড়ি ঢাকা। প্রিয় স্বদাঠাকুরাণী গোলাবক্ল-কুড়ি কৃটি য়াছেমাত্র, কিন্তু তাইতেই চারিদিকে স্থান ছড়াইতেছেন! অনস্থার কিছু ভারি রকম প্রকৃতি—-কিন্তু তাঁহার তুলনা व्याद्य । शिवयमा श्रामशी हथना-তাঁহারও, তুলনা আছে কিন্তু শকুরলার ভুলনাং নাই - ভিনি নারীপ্রকৃতির প্র-ভিমা अथह এकहि जूदनसाहिनी त्रभनी। পূর্বপ্রস্তাবে দেখিবাছি যে অভিজ্ঞান শক্ষলের অভিপ্রায-লড়লগং এবং অন্তর্জগতের সম্মপ্রকাশ। অভিজ্ঞান শকুস্তবে জড়মগতের শক্তি এবং অভ্ন র্জগতের শক্তি এই ছই শক্তির দক্ চিত্রিত হইয়াছে। সেই নিমিত শভি कान मकुछ त्वत छे भनात्मत इहे छि छ। भ আছে। একভাগে জড়কগতের চিত্র অর্থাৎ চুম্মন্ত এবং শকুন্তলার ঐক্রিয়িক भिलातक कथा,-शिवद्यां धवर व्यनस्या

এই ভাগের প্রধান চরিত্র, কেন না, তাঁহাদের সাহাযোই ঐ মিলন ঘটিল। আর একভাগে অন্তর্জগতের চিত্র অর্থাৎ মানসিক অথবা আধ্যাখিক হুম্ব থের **म**क्कित क्षा,--दृक्ष क्क्की, त्वब-**মা**তলি এবং ৰঙী, অধ্বীক ছিত अक्षः हेन्द्रप्त এই ভাগের প্রধান চরিত্র, কেন না তাঁহাদের বারাই তুম্বস্তের মানসিকশাক্ত বিজ্ঞাপিত। কুমস্ত ফুগুন শকুন্তলার স্বৃতিলাভ করিয়া শকুন্তলার মোহে অচেতনপ্রায় ত থ ন **बेक्स्सि**न छाहारक (मवभक्रममनार्थ आझ्यान क-রিয়া তাঁহার মানসিকশক্তির काव शक्तिम (मध्याहै लगा। किञ्ज ইশ্রদেব অন্তরীক্ষতি। মহাকবি তা शास्त तक्ष कृषिण व्यानवन करवन नाहै। रेक्ट(४८वर माराषा हिन्सूमाटकरे वृद्यन। মহাকৰি তাঁছাকে অস্তরীকে রাখিয়া হ্যান্তের বারত্বেব চিত্র বেশী জাজ্জ্বা-মান এবং ছাদয়গ্রাহী করিয়াছেন। মাতলি ইক্সের সার্থি। সার্থির কার্থে মাতলি অভিতীয়। সপ্তমাঙ্কে রথবাতাে মাতলির সার্থিত্বের অপূর্ব পরিচয়। নেত্রবতী প্রভৃতি রাজভক্তি এবং রাজকার্য্যান্ত্রাপের চমৎকার দৃষ্টান্ত। বৃদ্ধ কঞ্কী বড়ই মনোহর চরিতা। তিনি রাজদেবায় বুদ্ধ হইয়াছেন। তাঁহার কথা পড়িতে পড়িতে মনে হয় বেন একটি অশীভিবৰীয় অমায়িক এবং গন্তীর-প্রকৃতি বৃদ্ধবর যষ্টির উপর ভর দিয়া ৰাখাণে টাড়াইয়া বহিয়াছেন। <sup>তাহাব</sup>

মুখে ত্মান্তেব প্রাশংসাধরে না, কেন না গুম্বত যেমন নামেও রাজরাজেখর, কাষেও তেমনি রাজরাজেখন।

অভিজ্ঞানশকুন্তলের উপনাদের আর ও একটি অংশ আছে। অভিজ্ঞানশ্কু স্থালে অন্তর্জাগতের এবং জড়ভগতের যুদ্ধে অঙ্জগৎ জয়ী হইয়াছিল। বীব-প্রধান হয়ন্তের রিপুর শাসনে পদখালন চর্টীরাছিল। ধর্মাধীর ত্রাস্ত রিপুর শাসনে ক্ষণকালের জনা ধর্মারপ কণ্কে ভূলিয়া গিয়াছিলেন। শকুস্তলাকে-বিবাহ ক-রিতে গিয়া হুমান্ত ভাঁহার নিজের এবং শকুস্থলার সেকদও ছাড়িয়া দিয়াছিলেন। তাহাতেই ওঁাহার মহাপাপ হটল। নৈতিক নিয়ম অথবা Law শক্র হইয়া দাঁড়াইল। নিয়ম অথবা Law অতি কঠোর পদার্থ। দেই কঠোরতা ত্র্বাসায় প্রতিফলিত। পা ठेकै এইখানে মনে রাখিবেন যে ছুর্কাসা छवु निष्कत नाम कतिया भाभ (पन गारे, 'मामाधिकनिश्रत्यत नाम काविशा 3 भाष नियाकिटलन। नियम (यमन (म-থিতে পাওয়া যায় না, ত্র্বাদাও তেমনি আমাদের চক্ষের অগোচব-তিনি সক লের অবস্তরালে দাড়াইয়া শাপ দিয়া. গেলেন। প্রিয়ম্বদা ছুটিয়া গিয়া শকুন্ত-লাকে শাপমুক্ত করাইবার জনা তাঁহাকে के ज्ञास किंद्रिलन। किंद्र नियम यगन निर्मंत्र जिनिः । टिनि कान कथा खनित्यन ना, डाहात क्षार দ্যার সঞ্চার হটল না। তিনি কেবল

जे कथा विलग्ना (शत्नन (य, **अडिखा**ना-ভরণ দর্শন করাইলে শাপের নিবৃত্তি হইবে। কিন্তু শকুম্বলা সে অভিজ্ঞান হারাইয়া ফেলিলেন। তিনি সে অভি-জ্ঞান দেখাইতে পারিলেন না। তথক অদৃষ্ট আদিয়া তাঁহাকে এবং চুমুক্তকে ष्ठनश्चम्या इटेट्ट मुक्त कविन। मञ्-(साव ऋग इःश खबू नियमांधीन नगः অদৃষ্ট (chance) অথবা দৈবও তাহার একটি প্রধান কারণ। কি পাপী কি পুণাবান, অণ্ট সকলেবই সহায়ত। করে, তাহাতে আবাৰ চ্যাত্ত এবং শকুন্তলা মহাজ্মে পড়িয়াও পবিভ্রচিত্ত। মহাক্বি রাজবোটক পাইলেন। অদৃষ্ট এবং শকুম্বলাব সহায় হটল। এবং অদৃষ্ট সহায হটয়৷ উাহাদের পতি-পত্নীসম্ম সমস্ত পৃথিবীকে প্রমাণ কবিষা দিল। অঙ্গুরীয় পুনঃপ্রাপ্তিব বিব-वन अनिशा मकरलहे वृक्षिल (य मकू-স্তলা চল্লস্তের পবিণীতা ভার্যা। এখন আবশাক হটালে সমস্ত সমাজ তাঁহাদের পবিণয়ের যাথাথা সম্বন্ধে সাক্ষাপ্রদান করিতে <sup>•</sup>সক্ষ। अंप (यव জ্ঞান সামাঞ্জিক অভিজান দাড়াইল। উপেকিত নিয়ম জয়ী হইল। ত্মান্ত এবং শকুত্তলাও थूनर्यां निष्ठ **ब्हे** लिन। अपृष्ठ निश्रास्त পোষ্কতা করিল। অভিজ্ঞানশকুম্বলে कामृत्ष्टेत कार्थ-धीनत, त्राक्रमाालक, धाः হরিদ্যু, ইতাদি। এই কয়জনেব চিত্র কি কথাবাৰ্তার প্ৰণা-অতি চসংকাব।

লীতে, কি অভাব-চরিত্রে, ধীবর ঘণার্থই ধীবর, প্রাহরিছয় যথার্থই প্রাহরিছয়, রাজ্শ্যালক যথার্থই শ্যালকরাজ—বেশ মজার মান্ত্র্য। লোকে বলিয়া থাকে যে সেয়পীয়র কি উচ্চ কি নীচ, কি গন্তীর কি হাজা, সকল রক্ম চরিত্রে আঁকিতে স্থানিপুণ। অভিজ্ঞানশকুত্তল পড়িলে, মহাকবি কালিদাসের মহলেও সেই কথা বলিতে পারা যায়। কণ্, শাঙ্গরিব, শারহত, কঞুকী, ত্রস্ত, শকুত্তলা, প্রিয়

ছদা, অনস্থা, রাজশ্যালক, ধীবর, প্রাহ্বী—এই কর্মণানি চিত্র প্র্য্যালোচনা করিলে বৃঝিতে পারা যায় যে মসুব্য-চরিজের একসীমা হইতে অপর সীমা পর্যান্ত সমস্তই কালিদাসের আয়তাধীন। আবার যথন শকুন্তলার পূক্র সর্কাদমনকে দেখা যায় তথন ইহাও বৃঝিতে পারা যায় যে মহাকবি নবপ্রস্তুলিশুসন্তান হইতে মুমূর্বিং বৃদ্ধবর পর্যান্ত, সকলের্য্নই ভাষ্মা দিবাচক্ষে দেখিতে পান।



## भानारमो ।

বছকাল হইল আনি একবার পালামো প্রাদেশে গিয়াছিলান, প্রত্যাগমন করিলে পার সেই অঞ্চলের বুড়ান্ত লিখিবাব নিমিত্ত ছই একজন বন্ধুবান্ধব আমাকে প্রঃপ্রঃ অন্ধ্রোধ করিতেন, আমি তথন তাঁহাদের উপহাস করিতাম। এক্ষণে আমার কেহ অন্ধ্রোধ কবে না, অথচ আমি সেই বুড়ান্ত লিখিতে বিসরাছি। তাৎপর্য্য বয়স। গর করা এ বরসের রোগ, কেহ শুনুন বা নাঁ

আনেকদিনের কথা লিগিতে বিদি রাছি, সকল স্থান হয় না'। পুর্বেলি-থিলে যাহা লিখিভাম, এক্ষণে যে তা-হাই লিখিতেছি এমত নহে। পুর্বে সেই সকল নির্জ্জন পর্ক্ত, কুস্থাত কানন প্রভৃতি যে চক্ষে দেখিয়াছিলান, সে চক্ষু আর নাই। এখন পর্ক্ত কে বল প্রস্তরময়, বন কেবল কণ্টকাকীর্ব, অধিবাদীরা কেবল কদাচারী ৰলিয়া অরণ হয়। অতএব বাহারা বয়োগুণে কেবল শোভা সৌন্দর্যা প্রভৃতি ভাল-বাসেন, বৃদ্ধের লেখায় ভাঁহাদের কোন প্রবৃত্তি পরিতৃপ্ত হুইবে না।

বখন পালামৌ আমার বাওরা একাত স্থির হইল, তখন জানি না যে সেখান কোন্ দিকে, কভদুরে। অতএব মাাপ দেখিয়া পথ স্থির করিলাম। হাজারি-বাগ হইরা ্যাইতে হইবে এই বিশে চনার ইন্লাও টুাঞ্জিট কোম্পানীর (Inland Transit Company) ডাকগাড়ী ভাড়া করিবা রাত্রি দেড়প্রহরের
সময় রাণীগঞ্জ হইতে যাত্রা করিবান।
প্রাতে বরাকর নদীর পূর্বপারে গাড়ী
থামিন। নদী অতি ক্ষুদ্র, তৎকালে
অল্লমাত্র কল ছিল, সকলেই হাঁটিয়া
পার হইতেছে,পাড়ি ঠেলিয়া পার করিতে
হইবে, অতএব গাড়ওয়ান কুলি ডাকিতে
বৈগল।

পূর্ব্বপার হইতে দেখিলাম যে, অপর পারে ঘাটের উপরেই একজন সাহেৰ ্বাঙ্গালায় বসিয়া পাইপ. টানিভেছেন, সম্মুথে একজন চাপরাসী একরূপ গৈরিক মৃত্তিকা হত্তে দাড়াইয়া আছে। যে বাজি পারার্থ সেই ঘাটে অসিতেছে চাপরাসি তাহার বাহতে সেই মৃত্তিকাদারা কি অক-পাত করিভেছে। পারাথীর মধ্যে বন্য লোকই অধিক, ভাহাদের যুবতীরা মৃত্তি-কারঞ্জিত আপন আপন বাহর প্রতি আড় নরনে চাহিতেছে আর হাসিতেছে,আবার অনোর অঙ্গে সেই অঙ্গাত কিরূপ দেখাইতেছে ভাছাও এক **শেষে** যুবতীরা হাসিতে দেখিতেছে। रानिष्ठ (मोज़िया ननीट्ठ नामिट्डरह। णाशास्त्र इते। इति एकं निष्य जन के कि निष्य হইরা কূলের উপর উটিভেছে।

আমি জনামনক্ষে এই রক্স দেখিতেছি
এমত সময় কুলিদের কতকগুলি বালক
বালিকা আসিয়া আমার গাড়ী ছেরিল।
"সাহেব একটি পরসা" "সাহেব
একটি পরসা।" এই বলিয়া চীৎ-

কার করিতে লাগিল। ধুতি চাদর
পরিরা আমি নিরীহ বাঙ্গালি বসিয়া
আছি, আমার কেন সাহেব বলিতেছে
তাহা লানিবার নিমিত্ত বলিলাম, "আমি
সাহেব নহি।" একটি বালিকা আপন
কুজ নাসিকান্ত অসুরীবৎ অলহারের মধ্যে
নথ নিমজ্জন করিয়া বলিল, "হাঁ, তুমি
সাহেব।" আর একজন জিজ্ঞানা করিল,
"তবে তুমি কি ?" আমি বলিলাম,
"আমি বাঙ্গালি।" সে বিখাস করিল না,
বলিল, "না, তুমি সাহেব।" তাহারা
মনে করিয়া থাকিবে, যে,বে গাড়ী চড়ে,
সে অবশা সাহেব।

এই সময় একটি ছইবংসরবয়স্ক শিশু
আসিরা আকাশের দিকে মুখ তুলিয়া হাত
পাতিরা দাঁড়াইল। কেন হাত পাতিল
তাহা সে জানে না, সকলে হাত পাতিল
যাছে দেখিয়া সেও হাত পাতিল।
আমি তাহার হস্তে একটি পদ্দা দিলাম,
শিশু তাহা ফেলিয়া দিয়া আবার হাত
পাতিল, জন্য বালক সে প্রসা কুড়াইয়া
লইলে শিশুর ভগিনীর সহিত তাহার
তুমুল কঁন্হ বাঁধিল। এই সময় জামার
গাড়ী অপর পারে গিয়া উঠিল।

বরাকর হইতে ছই একটি কুদ্র পাহাড় দেখা যায়। বঙ্গবাসীদের কেবল
মাঠ দেখা অভ্যাস, মৃত্তিকার সামান্য
ন্তুপ দেখিলেই তাহাদের আনন্দ হর,
অতএব সেই কুদ্র পাহাড়গুলি দেখিয়া
যে তৎকালে আমার যথেউ আনন্দ
হইবে ইহার আর আশ্রেণ কি ? বাল্য-

কালে পাহাড় পর্বতের পরিচয় অনেক শুনা ছিল, বিশেষতঃ একবার এক বৈরাগীর আখড়ায় চূণকাম করা এক গিরিগোবর্দ্ধন দেখিয়া পাহাড়ের আকার অমুন্তব করিয়া লইয়াছিলাম। ক্রমক-কন্যারা শুদ্ধ গোময় সংগ্রহ করিয়া যে স্তুপ করে, বৈরাগীর গোবর্দ্ধন তাহা অপেকা কিছু বড়। তাহার হানে হানে চারি পাঁচথানি ইট্রক গাঁথিয়া এক একটি **हुड़ा कता इरेग्राइड । आवात मर्स्वाफ**े চুড়াৰ পাঁৰ্যে এক সৰ্পফণা নিৰ্দ্যাণ করিয়া ভাহা হরিত, পীত,নানাবর্ণে চিত্তিত করা হইয়াছে, পাছে সর্পের প্রতি লোকের मृष्टि ना भएड़ वर्ड बना क्लांग किडू বড় করিতে হইয়াছে। কাজেই পর্কতের **চুড়া অপেকা ফণাটি** বড় হইয়া পড়ি-রাছে, তাহা মিল্লির গুণ নহে, বৈরা-গীরও দোষ নতে। সর্পটী কালীয়দমনের কালীয়; কাজেই নে পর্বভের উপর কালীয় উঠিয়াছে, সে পর্কতের চূড়া অপেকা ভাহার ফণা যেকিছু বৃহৎ হইবে ইহার আর আশ্চর্য্য কি ? বৈরাগীর **এই शिद्धिशावर्क्तन (मिश्रा वालाकाटल** हे পর্কতের অনুভব হুইয়াছিল। করের নিকটত্ব পাহাড্গুলি দেখিয়া আমার দেই বাল্সংসারের किकि९ পরিবর্ত্তন হইতে আরম্ভ হইল।

অপরাক্তে দেখিলাম, একটি স্থলর পর্কতের নিকট দিয়া গাড়ী যাইতেছে। এত নিকট দিয়া যাইতেছে, যে পর্কাতত্ত কুদ্র কুদ্র প্রস্তরের ছায়া পর্যান্ত দেখা যাইতেছে। গাড়ওয়ান্কে গাড়ী থাম:ইতে বলিয়া আমি নামিলাম। গাড়ওয়ান जिखाना कतिन, " (कांशा याहे (वन ?'' আমি বলিলাম, "একবার এই পর্বতে যাইৰ।" দৈ হাদিয়া বলিল, "পাহাড় এখান হইতে অধিক দুর, আপনি সন্ধারি মধ্যে তথায় পৌছিতে পারিবেন না।" আমি এ কণা কোনরূপে বিশ্বাস করি-लाम ना, जानि न्भेष्टे (मिश्डिहिनाम, পাহাড় অতি নিকট, তথা যাইতে আ মার পাঁচমিনিটও লাগিবে না, অভএব গাড়ওয়ানের নিষেধ না শুনিয়া আমি প্রক্রিভিমুখে চলিলাম। পাঁচ মিনি টের স্থলে ১৫ মিনিটকাল ক্রতপাদ-বিক্ষেপে গেলাম, তথাপি পর্বত পূর্বমত সেই পাঁচ মিনিটের পথ বলিয়া বোধ হইতে লাগিল। তথন আনার বুঝিতে পারিয়া গাড়ীতে ফিরিয়া আসি লাম। পর্বতস্থকে দূরতা ভির করা বাঙ্গালির পক্ষে বড় কঠিন ইহার প্রমাণ পালামৌ গিয়া আমি পুন:পুন: পাই-য়াছিলাম।

পরদিবস প্রায় ছইপ্রহরের সময় হাজারিবাগ পৌছিলাম। তথায় গিয়া
থলিলাম, কোন সম্ভান্ত ব্যক্তির বাটীতে
আমার আহারের আয়োজন হইতেছে।
প্রায় ছই দিবস আহার হয় নাই,
মতএব আহারসম্বন্ধীয় কথা শুনিবামাত্র
কুধা অধিকতর প্রদীপ্ত হইল। যিনি আমার
নিমিন্ত উদ্যোগ করিতেছেন, তিনি
মামার আগমনবার্তা কিরূপে জানি

লেন, তাহা অমুসন্ধান করিবার আর সাবকাশ হইল না, আমি তৎক্ষণাৎ তাহার বাটীতে গাড়ী লইয়া যাইতে অতুমতি করিলাম। যাঁহার বাটীতে বাই-তেছি, তাঁহার সহিত আমার কথন হাকুষ হয় নাই। তাহার নাম ওনিয়াছি, সুখ্যা-তিও যথেষ্ট শুনিয়াছি; সজ্জন বলিয়া তাঁহার প্রশংসা সকলেই করে। •েশ কর্ণাত বড় করি প্রেশংসায় नारे. (कन ना कनवाभी गावरे मञ्जन; বঙ্গে কেবল প্রতিবাসীরাই ত্রাত্মা, याहा निन्ता अना यात्र, जाहा (क वल প্রতিবাদীর। প্রতিবাদীরা পর্জী-काउत, पाछिक, कंगरिश्रम, लांछी, কুপণ, বঞ্ক। তাহারা আপনাদের সম্ভানকে ভাল কাপড়, ভাল জুতা পরায়, কেবল আমাদের সম্ভানকে কাদা-ইবার জন্য। তাহারা আপনাদের পুত্র-\*ব্ধুকে উত্তম বস্তালক্ষার দেয়, কেবল আমাদের পুত্রবধূর মুখভার করাইবার ৰিমিত। পাপিষ্ঠ, প্রতিবামীরা । যাহা-দের প্রতিবাসী নাই, তাহাদের ক্রোধ নাই। তাহাদেরই নাম ঋষি। ঋষি কেবল প্রতিবাসি-পরিত্যাগী গৃহী। ঋ ষিব আশ্রমপার্মে প্রতিবাদী বদাও, তিন্দিনের মধ্যে ঋষির ঋষিত যা-ইবে। প্রথম দিন প্রতিবাসীর ছাগলে নিপ্ত করিবে, দিতীয় পুষ্পবৃক্ষ দিনে প্রতিবাসীর গোরু আসিয়া কমণ্ডলু ভাঙ্গিবে, ভূতীয় দিনে প্রতিবাসীর গৃহিণী আসিয়া ঋষিপত্নীকে অলক্ষার দেখা-

ইবে। তাহার পরই ঋষিকে ওকালতির পরীক্ষা দিতে হইবে, নতুবা ডেপুট মালিষ্ট্রেটীর দরথান্ত করিতে হইবে।

**धकरन (म मकन क्या याक। (य** বঙ্গবাদীর গৃহে আতিথা স্বীকার করিতে য।ইতেছিলাম, তাঁহার উদ্যানে গাড়ী প্রবেশ করিলে তাহা কোন ধনবান ইংরেজের হইবে বলিয়া আমার প্রথমে खग रहेन। शत्रकरारहे रम खग राजा। বারাগুায় গুটিকত বাঙ্গালি বসিয়া আমার গাড়ী নিরীকণ করিতেছিলেন, তাঁহাদের নিকটে গিয়া গাড়ী থামিলে আমি গাড়ী হইতে অবতরণ করিলাম। আমাকে দেথিয়া ভাঁহারা সকলেই সাদরে অগ্র-সর হইলেন। না চিনিয়া ঘাঁছার অভি-বাদন আমি দর্ব্বাত্তো গ্রহণ করিয়াছিলাম. ভিনিই বাটীর কর্তা। তিনি শত লোক-সমভিব্যাহারে থাকিলেও আমার দৃষ্টি বোধ হয় প্রথমেই তাঁহার মুধের প্রতি সেরপ প্রসরতাব্যঞ্জক ওষ্ঠ আমি অতি অল দেখিয়াছি। তথন তাঁহার বয়:ক্রম বোধ হয় পঞ্চাশ অতীত হইয়াটিল, বুদ্ধের তালিকার তাঁহার নাম উঠিয়াছিল তথাপি তাঁহাকে বড় স্থলর দেখিয়াছিলাম। বোধ হয় গেই थ्यथम यामि वृद्धत्क ख्नात (मिथ ।

যে সময়ের কথা বলিতেছি, আমি
তথন নিজে যুবা, অতএব সে বরসে
বৃদ্ধকে স্থান্ধ বিশ্ব নিজে বার্য
কিন্তু সে দিবস এরপ ধর্মবিকৃত্ব কার্য্য
ঘটিয়াছিল। এক্ষণে আমি নিজে বৃদ্ধ,

কাজেই প্রায় বৃদ্ধকে স্থান্দর দেখি।
একজন মহাস্থাত্ত বলিরাছিলেন বে,
মন্ত্রা বৃদ্ধ না হইলে স্থান্দর হয় না,
এক্ষণে আমি তাহার ভ্রমী প্রাণংসা

জ্ঞাধন সভাবণ সমাপন হইলে পর
সানাদি করিতে যাওরা গেল। সান
গোছলখানায় ইংরেজি মতেই হইল,
কিন্তু আহার ঠিক হিন্দুমতে হর নাই,
কেন না ভাহাতে পলাপুর আধিক্য
ছিল। পলাপু হিন্দুধর্মের বড় বিরোধী।
ভাত্তির আহারের আর কোন দোব ছিল
না, সম্বত আতপার, আর দেবীত্র ভ

পাকসম্বন্ধে পলাভুর উলেধ করিয়াছি, কিন্ত পিরাজ উল্লেখ করাই আমার ইচ্চা ছিল। পিরাজ যাবনিক শব্দ এই ভবে পলাপুর উল্লেখ করিয়া সাধুগণের মুখ পবিত্র রাধিরাছি; কিন্তু পিঁরাজ পলাও এক দ্রব্য কি না এ বিষয়ে আমার ৰত্কালাৰ্ধি সংশয় আছে। পাঞ্জাব অঞ্লের একজন বৃদ্ধরাজা জগ-त्राथ पर्नन कतिए य। है वात नमय रमिनी-পুরে ছুই একদিন অবস্থিতি করেন। নগরের ভদ্রণোকেরা তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিবার প্রার্থনা করিলে, ভিনি কি প্রধান, কি সামান্য সকলের সহিভ সাক্ষাৎ করিয়া নানাপ্রকার আলাপ করিতেছিলেন, এমত সময় ভাঁহাদের मर्था कुरुक्त स्थाएंहरच द्वित्नन, " আমরা শুনিরাছিলাম খে, মহারাজ

হিন্দুচ্ডামণি, কিছ আসিবার সমর আপ নার পাকশালার সমূবে পলাগু দে-খিয়া আসিরাছি।" বিশ্বরাপর রাজা "পলাগু!" এই শব্দ বারবার উচ্চারণ করিয়া তৎক্ষণাৎ তদারকের নিমিত্ত স্বয়ং উঠিলেন, নগরস্থ ভদ্রলোকেরাও 🎺 তাঁহার পশ্চাৰতী হইলেন। পাকশালার সমূথে দাঁড়াইলে, একজন বাঙ্গালি পিয়াজের স্তৃপ ওদধাইয়া मिल। त्रांका उथन शांतिया विगालन, "ইহা পলাভু নছে; ইহাকে পিরাজ বলে। পলাও ু অতি বিষাক্ত সামগ্রী, তাহা কেবল ঔষধে ব্যবহার হয়। नकन (मान जाहा जाना ना ; (य । यार्क ব্দেরে সে মাঠের বায়ু দূষিত হইয়া যার, এই ভরে সে মাঠ দিরা কেছ যাতারাত করে না। সে মাঠে আর কোন कमन इय ना।"

রাজার এই কথা যদি সত্য হর,
তাহা হইলে অনেকে নিশ্চিত্ত হইতে
পারেন। পলাপু আর পিঁরাল্ল এক
সামগ্রী কি না তাহা পশ্চিমপ্রাদেশে অন্থশব্ধান হইতে পারে, বিশেষতঃ যে
দকল বঙ্গরাসীরা সিক্দেশঅঞ্চলে আভেন বোধ হর তাঁহারা অনার্যাসেই
এই কথার মীনাংসা করিয়া লইতে
পারেন।

আহারাত্তে বিশ্রামগৃতে বসিরা বালকদিগের সহিত গর করিতে করিতে
বালকদের শর্মসম্ব দেখিতে উঠিয়া
গোলাম। ঘর্ট বিশক্ষণ পরিসর,তাহাব

চারি কোনে চারিখানি থাট পাতা, মধাস্থান আর একখানি থাট রহিয়াছে।
ভিজ্ঞানা করায় বালকেরা বলিল,
''চারি কোণে আমরা চারিজন শয়ন
ক্রি, আর মধাস্থলে মাইরমহাশক্র
থাকেন।'' এই বন্দোবস্ত দেবিয়া
বড় পরিভ্পা হইলাম। দিবারাত্র
বালকদের কাছে শিক্ষক থাকার আবশ্যকর্তা অনেকে বুনেন না।

বালকদের শ্রন্থর হইতে বহিগত हरेब्रा आंत्र अक्चरत्र मिथे अक कैं। मि সুপরু মর্ত্রমানরস্থা দোহুলামান রহি-য়াছে, তাহাতে একথানি কাগল ঝুল-তেছে, পড়িয়া দেখিলাম,নিতা যত কদলী কাদি হইতে বায় হয়, তাহাই ভাহাতে লিখিত হইয়া থাকে। লোকে সচরা-ठत देहारक कुछ मृष्टि, रहा**छेनछत्र व्हे** छानि বলে: কিন্ত আমি তাহা কোনরপে ভাবিতে পারিলাম না। যেরপ অন্যাত্ত विषयात बालावन (मिथलाम, डाहाटक "क्लाकै। मित्र किनाव" (मिथिया वतः আরও চমৎকৃত ছইলাম। দৃষ্টি কুদ্র তাহারা কেবল সামান্য বিষ-রের প্রতিই দৃষ্টি রা**খে, অন্য**ুবিষয় দেখিতে পার না। ভাহারা যথাওঁই নীচ। কিন্তু আমি বাঁহার কথা বলি-<sup>(उहि</sup>, (मिथनाम छाहात निक्छे वृहर প্ৰ সকলই সমস্তাবে পরিলক্ষিত হইয়া পাকে। অনেকে আছেন, বড় বড় বিষয় মোটাম্টি দেখিতে পারেন, কিন্তু <sup>পুরা</sup> বিষয়ের প্রাক্তি তাঁহার দৃষ্টি একে:

বারে পড়ে না। তাঁছাদের প্রশংসা করি দা। বাঁচারা বৃহৎ স্কু একজ (पिथिया कार्या करत्रन, छांशांत्मत्रहे धानाः ना কিন্তু এরপ লোক অতি অৱ। "क्नाकें। जित्र कर्फ" मध्यक बानकरमञ् সহিত কথা কছিতে কহিতে জানিলাম শে, একদিন একদন চাকর লোভ-সম্বৰণ করিতে না পারিয়া ছইটি স্থপক तन्त्रा डिमतन्द्र कतियाहिल, गृहत्त्रत नकल नियदारे मृष्टि चाड़, जकत विषदात्रहे হিগাব থাকে, কাজেই চুরি ধরা পড়িল। তখন তিনি চাকরকে ডাকিয়া চুরির জন্য জরিমানা করিলেন। পরে তাহার লে।ভ পরিভৃত্তি করিবার নিমিত্ত যভ ইছা কাঁদি হইতে রম্ভা থাইতে অনুমতি করিলেন। চাকর উদর ভরিয়া রম্বা शाहेल।

অপরাক্তে আমি উদ্যানে পদচারণ
করিতেছি, এমত সময় গৃহস্থ "কাছারী"
হইতে প্রত্যাগত হইলেন। পরে
আমাকে সমভিব্যাহারে লইয়া বাগান,
পুক্রিনী, সমুদর দেখাইতে লাগিলেন।
যেহান হইতে যে বৃক্ষটি আনাইয়াছেন,
তাহারও পরিচয় দিতে লাগিলেন।
মধ্যাক্ষললে "কলাকাঁদি" সম্বন্ধে বাহাঁ
দেখিয়াছি এবং শুনিয়াছি, তাহা তখনও
আমার মনে পুনঃপুনঃ আলোচিত হইতেছিল; কাজেই আমি কদলীর্ক্ষের
প্রাঙ্গল না করিয়া থাকিতে পারিলাম
না। বলিলাম, "আমার্ধারণা ছিল এ
অঞ্লে রভা জন্মে না; কিত্ত আপনার

বাগানে যখেষ্ঠ দেখিতেছি।" তিনি
উত্তর করিলেন, "এপানে বাজারে
কলা পাওয়া যায় না। পুর্কে কাহায়
বাটীতেও পাওয়া যাইত না, শলোকের
সংস্কার ছিল যে, এই প্রস্তরময় মৃতিকায়
কলারগাছ রল পায় না, শুকাইয়া
বায়। আমি কাহা বিখাল না করিয়া,
দেশ হইতে 'দেড' আনিয়া পরীকা
করিলাম। একণে আমার নিকট হইতে
'তেড়' লইয়া সকল সাহেবই বাগানে
লাগাইয়াছেন। এপন আয়ে এপানে
কদলীর অভাব নাই।"

এইবাপ কথাবার্তা কহিতে কহিতে শাসরা উদ্যানের এক প্রাক্তভাগে আসিয়া উপস্থিত হইলাম, তথার ছইটি সভস্ম বর বেথিয়া, আমি জিজ্ঞাসা করার গৃহত্ত বলিলেন, ''উহার একটিতে আমার নাপিত থাকে, অপরটিতে আমার ধোপা থাকে। উহার। সম্পূর্ণ আমার বেভন-ভোগী চাকর নহে, তবে উভয়কে আমার বাটীতে স্থান দিয়া একপ্রাকারে व्यावस कतियाहि, এখন यथुनहे व्याव-শ্ৰুক হয়, তথনই ভাহাদের পাই। (धार्था, नाशिएडत कहे शृद्ध आत दकान ্ উপায়ে নিবারণ করিতে পারি নাই।''• \* ় সন্ধ্যার পর দেখিলাম, শিক্ষকসন্মুখে बागरकता य दिविद्य विश्वा अधायन ক্রিতেছে তথার একজ একভানে ठिनों देश बनिएक है। बना नारक ় হাঁহারা কল্পীর হিসাব রাখেন না, छाहाता बालकामत्र निश्चिख अकृषि मान

দিরা নিশ্চিত্ত হন, আর ঘিনি কদলীব হিসাব রাখেল, তিনি এই অতিরিক্ত বার কেন শীকার করিতেছেন জানি-বার নিমিত্ত আমার কৌত্হল জলিল। শেব আমি জিজাসা করিলে তিনি বলিলেন, ''ইছা অপবার নহে, অর আলোকে অধারন করিলে বালকদের চক্ষু তুর্বল হইবার সন্তাবনা; যথেই আলোকে অধারন করিলে চলিন্দের বহু পরে 'চাল্সা' ধরে।''

উচ্চণদত সাহেবের। সর্কানাই ভারার বাটীভে আসিচতন, এবং তাঁহার সহিত কথাবার্তার পরমাপ্যারিত হইতেন। বালালিয়া ছোট বড় সকলেই ভাঁহার त्भीक्रामा वाधा किरमन, त्य क्रीड ভিনি বাস করিতেন, সেরপ কুঠী সাহেবদেরও সচরাচর দেখিতে পাওয়া भात्र ना; क्ठींने (यक्त भित्रेष्ठ ह সুসজ্জীভূত ছিল, ভাহা দেখিলে বঁথা र्थे इं ऋथ इंग्न, मन 9 श्रिक इंग्न। मरनः উপর বাসস্থানের আধিপতা বিলক্ আছে। যাহারা অপরিকৃত কুদ্র ঘরে बाम करत, आंत्र (मथा यात्र छाहारमः মন সেইরূপ অপরিকৃত ও কুছ। বি বিশ্বাস না করেন তিনি বলিতে পারেন त्यम्बि अकणा मङा इक्, ङाहा हहेल थाः অধিকাংশ বাঙ্গালির মন কুদ্র ও মণ্রি ফুত হইত। আমরা একথা লইরা <sup>কো</sup> छर्क कतिव ना, आमना (यमन मि<sup>थिए</sup> भारे त्मरे मछ निविद्याहि । याहारक है मफ कतिया अरे कथा वनियाहि <sup>कैहि</sup>

মন "কুঠার" উপযোগী ছিল। সেরূপ কুঠার ভাড়ার যে বাক্তি বহু অর্থ বার করে সে ব্যক্তি যদি কদলীর হিসাব রাথে ভাহা হইলে কি বুঝা কর্ত্তবা ?

রাত্রি দেড়-প্রাহরের সমর বাহকক্সের আমি ছোটনাগপুর যাত্রা করিলাম। তথা হইতে পালামৌ ছুই চারি দিনের মুধ্যে পৌছিলাম। প্রথের প্রিচয় আমুর দিব না, এই কয়েক ছজ লিথিয়া অনেক কে জালাভন করিয়াছি, আর বিরক্ত করিব না, এবার ইচ্ছা রহিল মূল বির-রণ ভিন্ন. অন্য কথা বলিব না, তবে মূদি ছই একটি অভিরিক্ত কথা বলিয়া ফেলি ভাছা হইলে বয়ুদের দো্ফ বৃথিতে হইবে

তা, না, ব!



### বাঙ্গালির উৎপত্তি।

প্রথম পরিচেছদ।

আনেকে বাঙ্গালির উৎপত্তি কি ? এই প্রান্ন গুলিয়া বিশ্বিত হইতে পারেন। আনেকের ধারণা আছে যে, বাঙ্গালায় চিরকাল বাঙ্গালি আছে, তাহাদিগের উৎপত্তি আবার খুঁজিয়া কি হটবে? তাহাদিগের অংশকা শিক্ষায় ইংহায়া একটু উরত, তাহায়া বিশেচনা করেন, বাঙ্গালির উৎপত্তি ত জানাই আছে; আমরা প্রাচীন হিন্দুগণ হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। যে আতি বেদপাঠ করিত, সংস্কৃতভাবায় কথা কহিত, বে আতি মহাভারত ও রামায়ণ, পুরাণ ও দর্শন, পালিনির ব্যাকরণ, কালিদাসের কাবা, মহুর শ্বতি, ও শাক্যদিংহের ধর্ম স্টি

য়াছিল আমেরা সেই জাতির সম্ভান:

এ কথা ত জানাই আছে। তবে আনবার বালালির উৎপত্তি খুঁজিয়া কিছেবে গ

এ কথা সতা, কিছু বড় পরিকার
নহে। লোকসংখ্যা গণনায় দ্বির হইরাছে যে, যাহাদিগকে বাঙ্গালি বলা
যায়, যাহারা বাঙ্গালাদেশে বাস করে,
বাঙ্গালাভাষায় কথা কয়, ভাহাদিগের
মধ্যে অর্জেক মুসলমান। ইহারা বাঙ্গালি
বটে, কিছু ইহারাও কি সেই প্রাচীন
বৈদিকধর্মাবলছী জাতির সন্ততি? হাড়ি,
কাওয়া, ডোম ও মুচি; কৈবর্ত্তি, জেলে,
কোঁচ, পদি ইহারাও কি তাঁহাদিগের
সন্ততি? ভাহা যদি নিশ্চিত না হয
তবে অনুসন্ধানের প্রায়াজন আছে।
কেবল, রাজ্যা কায়তে বাঙ্গালা পরিপূর্ণ

নহে, ব্ৰাহ্মণ কারন্থ নালালির ক্ষতি অর-় ভাগ। বাহ্মালির মধ্যে যাহারা সংখ্যার প্রবল, তাহাদিগেরই উৎপত্তিতক ক্ষম কারে সমাচ্ছের।

যে প্রাচীন হিলুফাতি হইতে উৎপন্ন वित्रा आगवा मत्न मत्न न्याका कति, ভাঁহারা বেদে আপনাদিগকে ভার্যা ব-ভিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। অনেক্দিনের পর ইউরোপ হইতে আর্যাশক আসিয়া আবার ব্যবহৃত হই-তেছে। প্রাচীন হিন্দুর। ছিলেন; অথবা তাঁহাদিগের সম্ভান। এজন্য আমরা আর্য্যবংশ। কিছু এই আর্যাশক আর বেদের আর্যাশক ভিন ভিন্ন অর্থে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। टेविषकश्चित्रा वर्णन, खाळान, ऋ दिय, বৈশ্য, এই তিনটী আর্যাবর্ণ। এখনকার পাশ্চাতা পণ্ডিতেরা এবং তাঁহাদিগের অমুবর্তী হইয়া ভারতীয় আধুনিকেরাও वित्रा थारकन, हैश्द्रक, खतात्री, बर्जान. ऋष; यदन, পারলিক, রোমক, হিন্দু, সক-শই আর্যা। আবার ভারতবর্ষের সকল अधिवाशी अ नात्मत अधिकाती इत्र ना; हिन्तूता आर्या विवास था है, कि है, कि है, দ্বীল, সাঁওতাল স্বার্থা নহে। ভবে चार्याभारमत चर्च कि ?

এই প্রভেদের কারণ কি ? ক্তক্ণগুলি দেশীয় লোক আর্যাবংশীয়, ক্তক্ণগুলি অনার্যাবংশীয় এরূপ বিবেচনা ক্রিবার কারণ কি ? আর্য্য কাহারা,—কোপা হুইডেই বা আসিব ? অনার্য কাহারা কোথা হইতেই বা আসিল ? একদেশে চ্ইপ্রকার সমুষ্যবংশ কেন ? আর্য্যের দেশে অনার্য্য আসিয়া বাস করিয়াছে, না অনার্যের দেশে আর্য্য আসিয়া বাস করিয়াছে ? বাঙ্গালার ইতিহাসের এই প্রথম কথা।

ইহার মীমাংসাজন্য ভাষাবিজ্ঞানের আশ্রয় গ্রহণ করিতে হয়। অতএব ভাষাবিজ্ঞানের মূলতব্যের ব্যাধ্যা এই-খানে আবশাক হইল।

ভাষা কিরূপে উৎপন্ন হইল, ওছিষয়ে মতভেদ আহে i কেহ কেহ বলেন, हेश क्षेत्रकारक। मकनहे ७ नेपत-প্রদন্ত। ঈশ্বর বুক্ষের সৃষ্টিকর্তা, কিন্ত গাছ গড়িয়া কাহারও বাগানে পুঁতিয়া দিয়া যান না। তেমনি তিনিই ভাষার স্ষ্টিকর্ত্তা, কিন্তু তিনি যে ভাষাগুলি তৈয়ারি করিয়া, বিভক্তি, লিঙ্গ, কার-कानिविभिष्ठे कतिया, त्मर्भ त्मर्भ मञ् ষাকে শিখাইয়া বেড়ান নাই, ইহা অনা-য়াসেই অনুমিত হইতে পারে। দ্বিীয় মত এই যে মহুষ্যগণ সমবেত হইয়া পরা-মর্শ করিরা ভাষাস্টি করিয়াছে। এ মত গ্রহণ করিতে হইলে অমুমান করিতে হয়, ংয দশক্ষন একতা বসিয়া, যুক্তি<sup>\*</sup>করি-माहि, (य এশো आगता मूलकनयूक शमार्थकितिक वृक्ष वनिष्ठ आत्रष्ठ कति, যাহারা উড়িয়া যার, ভাহাদের পাণী বলিতে আরম্ভ করি। এরপ যুক্তির খন্য ভাষার প্রয়েজন, এমতে ভাষা না থাকিলে ভাষার স্টে হইতে পারে

না৷ স্বভাং এ মতও অবৈজ্ঞানিক ও ৰুগ্ৰাহ্ন। তৃতীর মত এই যে, ভাষা অমুকৃতিমূলক। এই মতই এখন প্রচ-লিত। প্রাকৃতিক বস্তুসকল শব্দ করে। नहीं कलकल करत, स्मच गत्र गत्र करत, সিংহ ছম্বার করে, সুর্প ফোঁস ফোঁস করে। আমরাও যে সকল কাজ করি তাহারও শব্দ আছে। বাঙ্গালি " সপ, সপ" করিয়া খার; "গপ গপ" করিয়া (शर्म ; " इन इन" क्रिशा ठिल्या यात्र, " ভুপ দাপ" করিয়া লাফায়। এইরূপ নৈসার্গিক শব্দামুক্তিই ভাষার প্রথম ক্র। গাছের ডাল প্রভৃতি ভাঙ্গার শব্দ इटेट्ड " भू"; मन्तर्गमत्मत्र ममरत्र धर्षन-জনিত শব্দ হইতে ''অ''ু নিখাসের भक्ष इट्रेट्ड "कम्।" मटा वर्षे, অনেক সামগ্রী আছে, যে ভাছার কোন भक्त नाहे; किन्न (म नकत ऋता गरू-ষ্যের শব্দামুকর বপ্রবৃত্তি বিমুগ হয় না। আলোর শব্দ নাই, কিন্তু আমরা আজিও विन, " आदमा अक्यक् क्रिटिश्हं।" পরিষার ঘরের শব্দ নাই, কিন্তু আমরা विन (य "चत्रहै वात्रवात्र कतिराज्ञ ।"

''মৃ'' '' অ'' '' অস্'' প্রভৃতি যেন
এইরূপে পাওয়া গেল—কিন্ত তাহাতে '
বিবিধ ভাব ব্যক্ত হইল কৈ ? শুধু ''মৃ''
বলিলে কিপ্রকারে, '' মারিলাম'' '' মান
রিল'' '' মারিব'' '' মারিয়াছি'' '' মারামারি'' '' মরণ'' '' মার''—এতপ্রকার
কথা ব্যক্ত হয় ? অতএব প্রেরোজন
নতে মুধাতুর সঙ্গে অন্যপ্রকার শক্তের

বোগ আবশ্যক হইল। সেই সংযোগের কাজকে ভাষার গঠন বলা যাইভে
পারে। সেই সংযোপের কাজ, সর্বক্রি
একরপ হর নাই; এজন্য ভাষার গঠন
ভিন্ন ভিন্ন প্রকার আছে। কিপ্রকারে
সেই দকল গঠন, বর্তমান অবস্থার পরিণত হইল, তাহার আলোচনার আমাদিগের প্রযোজন নাই। এখন পৃথিবীর
ভাষা সকলের যেপ্রকারের গঠন দেখা
যার, তাহাই সংক্রেণে বিস্তু করা
যাইতেছে।

একজাতীয় ভাষায়, ধাতুর সঙ্গে যোগ মাত্তের দ্বারা বাক্যের গঠন হয়; কোন-ধাতুর কোনপ্রকার রূপান্তর হর না। এ সকল ভাষায় বিভক্তি নাই ইহা-দিগকে "সংযোগের অসাপেক্ষ" (Isolating) ভाষা वना यात्र। टेहिनक, भागितम्भीत्र, कानागतम्भीत्र वा बक्क-দেশীয় ভাষা এইরূপ। বিতীয় শ্রেণীর ভাষাতেও বিভক্তি নাই, কিন্তু উপদৰ্গ, প্রতায়াদি, ধাতৃ্ধারা রূপান্তর হয়। ইহার ধাতৃতে ধাতৃতে বা ধাতৃ ও সর্বা-নামে একপ্রকার সংযোগ হয়। এই সকল ভাষাকে সংযোগসাপেক্ষ (compounding) ভাষা বলে। দক্ষিণের ভামিল প্রভৃতি ভাষা, তাতার ভাষা, আমেরিকার আদিনজাতীয় ভাষা এই জাতীয়। ভৃতীয় শ্ৰেণীয় ভাষাতেই প্ৰক্টক্ৰপে विङक्षि चाहि, मःयार्गकाल श्रांकृत अ সর্বনামের রূপান্তর ঘটে। ইহাদিগকে বিভজ্পিশাল ভাষা (inflecting ) বৰে!

পৃথিবীর যত শ্রেষ্ঠ ভাষা, সকলই এই শ্রেণীর অন্তর্গত। আরবী,ইছদী, গ্রীক, লাটিন, ইংরেজি,করালি, সংস্কৃত,বালালা, হিন্দি, ফারসী প্রভৃতি এই শ্রেণীর অন্তর্গত।

দেখা গিরাছে যে এই ভূতীর শ্রেণীর ভাষাখণি ধাতু, এবং বিভক্তিচিছ লৈইয়া গঠিত। ধাতুর পার বিভক্তিও প্রত্যায়∹ विर्माप्तर यामिर्म मक ও किया निभन्न হয়। তাহা ছাড়া ভাষায় আর যাহা আছে, তাহাকে সাধারণতঃ সর্কনাম বলা याहेट भारत । मर्दनामश्रीन रय व्यवकाः ভ্ৰষ্ট ধাতু ইহাও বিবেচনা করিবার কারণ আছে। কিছু তাহা হৌক বা না হৌক; ধাড়ু বিভক্তিচিক্ত ও সর্বা-नाम गरेबा ভाषा। यक्ति काने इरेडि धारात मिथा यात्र, या ভाষার मृतीভূত थांडु, विङक्ति ७ मर्सनाम, धकहे, কেবল দেশকাল ভেদে কিছু রূপান্তর-প্রাপ্ত হইরাছে, তবে অবশ্য অনুমান করিতে হইবে যে ঐ তুইটী ভাষা উভ-एक्ट **अक्टी आ**निम **डावा इ**हेटल छेद-পর। ভাষাবিজ্ঞানের অভি বিশ্বরকর

আবিদ্ধিরা এই, তৃহীর শ্রেণীর ভাষা-ভালর মধ্যে অনেকগুলি প্রাচীন ও আধুনিক ভাষাতেই ভাষার মূলগত ধাড়া, বিভক্তিচিক্ ও সর্ব্ধনাম এক। অতএক সেই সকল ভাষা গে একটি প্রাচীন মূল ভাষা হইতে উৎপন্ন ইয়া সিদ্ধ হইরাছে। সেই সকল ভাষাগুলি এক-পরিবারভুক্ত।

ভারতবর্ধের সংস্কৃত্য; এবং সংস্কৃতমূলকা পাঁলিপ্রভৃতি প্রাচীন ভাষা; বাঙ্গালা হিন্দী প্রভৃতি সংস্কৃতমূলক আধুনিক ভাষা; জেন্দ, অর্থাৎ প্রাচীন পারসোর অধিবাদীদিগের ভাষা; ও আধুনিক পারসী; প্রাচীন গ্রীক ও লাটিন; লাটিনসন্তুত ফুরান্দী, ইতানীর, স্পেনীর প্রভৃতি রোমাজ্যাতীয় ভাষা, টিউটন বংশীরদিগের ভাষা, অর্থাৎ জন্মান, ওলন্দান্ধি ইংরেভি; বিটেনীয় আদিমবাদীদিগের কেল্টিক ভাষা, স্কটলভের পার্কতিদেশের কেল্টিক ভাষা, স্কটলভের পার্কতিদেশের কেল্টিক ভাষা, রূপপ্রভৃতি সাুবনিক ভাষা,—সকলই সেই এক প্রাচীনা ভাষা হইতে উৎপরা,—সক

"এই শ্রেণীবিভাগ অগন্ত শ্লেচর নামক অর্থানলেখককুত। মান্ত্র্যুর প্রভৃতি ভাষার যেরপ শ্রেণীভাগ করেন, তাহা আর একপ্রকার। তাহারা তৃতীর শ্রেণীকে চুইটি স্বতম্ব শ্রেণীতে পরিণত করেন—শেমীর ও আর্থা। কিছু শেমীর ও আর্থা যখন উভরেই তৃতীর শ্রেণীর সক্ষণাক্রান্ত তখন তাহাদিগকে স্বত্র শ্রেণী বলিয়া দাঁড় করান, কিছু বৈজ্ঞানিক-নীতি বিক্ষা। শ্লেচরের যে গ্রেছে ঐতত্ত্ব আলোচিত হইরাছে তাহার নাম—Compendium der Veryleichenden Grammatik der Indo-German ischen স্বান্ত্রের প্রান্ত্রের প্রত্ত্বিক্তানের সার সক্ষান আনি না, হণ্টর সাহেবের প্রত্ত্বিত এই বিজ্ঞানের সার সক্ষান করিলাম।

পেই সেই এক বৃদ্ধা মার্চার ছহিতা। গেই বছভাষার জননী আচীনা ভাষা थथन चांत्र नाई-किंड . धकतिन हिल। (यमन कान शृहर, कडक छान माजुरीन ্ প্রতা ও ভগিনী বাস করিভেছে দে-খিরা অফুমান করি যে ইহাদের একজন ৰদনী ছিল, তেমনি এই একবংশীয়া বছতর ভাষা দেখিয়া মনে করি যে এক • প্রাচীন মূল ভাষা হিল। যে জাতি ঐ ভাষা বাবহার করিতেন, তাঁহারা আর্য্য-জাতি বলিয়া অধুনা নানপ্রাপ্ত হইয়া-ছেন। সেই ভাষাসমুৎপন্ন ভাষাঞ্লি व्यार्गकांषा नांमधाक्ष इहेबारक। (य সকল জ।তির ভাষা আগ্যভাষা, তাহারা আর্যাবংশীয় বলিয়া অমুমিত এবং বর্ণিত হইরা থাকে। যাহার। আর্য্যবংশসম্ভূত নহে, তাহারা অনার্যাঞ্চি।

এখন কোল, সাঁওতাল, কোঁচ,কাছাড়ি
প্রভৃতি জাতিদিগের ভাষা বাঁহারা অধ্যা

য়ন করিয়াছেন, তাঁহারা বলেন যে এই
সকল ভাষা, প্রথম বা বিতীর শ্রেণীর
অন্তর্গত—এ সকল ভাষায় বিভক্তি
নাই। অতএব এই সকল ভাষা অনার্য্য
ভাষা। যে সকল ভাতির মাতৃভাষা
অনার্য্যভাষা, সে সকল জাতি অনার্য্য
জাতি। কোল, সাঁওতাল, মেছ কাছাড়ি অনার্য্যজাতি। আর্য্য ও অনার্য্য

य एडएनत्र छोर्थ्यम् यहै। यथन चार्याः मिरात मश्रक्त यकते। कथा वनिव।

সে কথা এই বে, প্রাচীন আর্যাক্সাতি

শীহারা পৃথিবীর সকল শ্রেষ্ঠ জাতির
এবং আমাদিগের পৃর্বপুক্র—তাঁহারা
কোথার বাস করিতেন? ভারতবর্ষীরেরা বলিতে পারেন—ভারতই আর্যাভূমি—ভারতবর্ষের সংস্কৃতভাষা সকল
আর্যাভাষা হইতে প্রাচীনা দেখা বাইতেছে। তবে আর্যাবংশের আদিম বাস
ভারতবর্ষ; ভারতবর্ষ হইতে তাঁহারা
দলে দলে অন্যদেশে গিরাছেন, এ কথা
না বলিব কেন? অতিপ্রাচীনকালেও
মন্ত্র্যবৃনপ্রভৃতি জাতিকে ভ্রষ্ট ক্ষাত্রির
বলিরাছেন।

কর্জননামা একজন পাশ্চাত্য লেখকের সেই মত\*—এবং বিখ্যাত ভারতেতিহাসবেতা এল্ফিনটোনও কতক সেইদিকে টানেন। কিন্তু পাশ্চাত্য পণ্ডিতদিগের মধ্যে যাঁহারা আর্যাতারা সকলের
বিশেষ সমালোচন করিয়াছেন তাঁহাদিগের মত এই যে আর্যােরা ভারতবর্ষের আদিমবাসী নহেন— অন্যত্র হইতে
আসিয়াছেন। তাঁহারা যথন আসেন,
তথন ভারতবর্ষে অনার্যালাতি বাস
করিত। আর্যােরা অনার্যাদিগকে জয়
করিয়া বশীভূত অথবা বন্য এবং পা-

<sup>\*</sup> Journal Roy. Asiat. Soc, vol XV1, pp 172-200 ডাকোর মূর কর্ত্ব Sanscrit Texts part II P 299.

t History of India, Vol I, P

র্বতাদেশে দ্রীক্ত করিরাছিলেন। এই হলে সেই সকল কথার প্রমাণের সবিভার বর্ণনা নিশুরোজন। ুগোগেল, লাসেন, বেন্ফী, মাক্ষমূলর, শ্লিজেল, রেনা, পিক্তা, মূর প্রভৃতির এই মন্ত। এই মতও একাণে সকল পণ্ডিত কর্ত্ত্ব আদৃত।

অভএব আর্বোরা দেশান্তর হইতে ভারতবর্ধে আসিরাছিলেন। পাশ্চাত্য পণ্ডিতেরা বিবেচনা করেন, যে হিন্দুকুশ পর্কতমালার উত্তরে, আসিয়ার মধ্যভাগে, প্রাচীন আর্যাভূমি ছিল, সেইখান হইতে ভাঁহারা দলে দলে বাহির হইয়া গিয়াছিলেন। ভাক্তার মূর বিবেচনা করেন, ঐ হিমালয়োভরপ্রদেশই ভারভীর আর্যাদিগের মধ্যে উত্তরকুক খ্যাত ছিল। একদল ইউরোপের এক প্রাত্তে

উপনিবেশ সংস্থাপন করিয়া, ছেলে-निक नामधात्र कतिया. अगरक अ-তুল্য সাহিত্য শিল্প দর্শনাদি প্রণয়ন করিয়াছিলেন্। আর একদল ইতালীর নীলাকাশতলে সপ্তগিরিশিখরে নগরী নির্দ্রাণ করিয়া পৃথিবীর অধীশ্বর হইয়া-ছিলেন। আর একদল বছকাল জর্মা-নীর অরণারাজিমধ্যে বিহার করিয়া এখনকার দিনে পৃথিবীর নেতা ও শিক্ষা-দাতা হইয়াছেন। আর একদল ভারত-वर्ष व्यादम कतिया. व्यनखगहिमामय কীর্ত্তি স্থাপন করিয়াছেন। তাঁহাদিগের শোণিত বাঙ্গালির শরীরে আছে। যে রক্তের তেলে পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ লাতি-সকল শ্রেষ্ঠ হইয়াছেন, বাঙ্গালির শরী-রেও সেই রক্ত বহিতেছে।

### neil FORTOwn

# বাল্মীকির জয়।

বর্বা শেষ হইরাছে। শরৎ উপস্থিত।
আকাশ পরিকার। নেবের লেশুমাত্রও
নাই। নীল—স্থনীল—গাঢ়নীল—বর্বনার অতীব মনোমোহন নীলরঙের ছটার মাঝে বড় বড় ভারা জল জল করিরা জলিভেছে। ভারকারাজিমধ্যে
ছারাপথ সমস্ত আকাশকে ছই ভাগে

বিভক্ত করিয়া শেষ নিজেও ভাগ হইরা পড়িরাছে। পৃথিবীর কাদা শুকাইয়া আসিরাছে, গাছ পালা সতেলে বাড়িরা উঠিতেছে, আর সবুল রঙের ছটার পৃথি-বীর নবযৌবন প্রকাশ করিয়া দিতেছে। উপরে সব গাঢ় নীল, নীচে গাঢ় সবুল; বেথানে এই ছইয়ে মিশিরাছে, সেখানে

<sup>\*</sup>ভাক্তার মূর সাহেবের Sanskrit Texts विভীন খতে ইহার সমালোচনা

বোৰ হইডেছে যেন এক ফুেনে ছই বহুৎ চিত্ৰ আঁটিয়া দৰ্শকের জন্য মাঝ্ধানে একটু স্থান রাধিবা দিয়াছে।

यथन चाकाम निर्द्यण, यथन धुक्तात गम्भर्कशाख नाहे, (महे मगरत्र--- (महे ऋरथत শরৎ সমরে—কেই কি হিমালরের মধু-ুরিমা দেখিয়াছ? একদিকে সমস্ত হিন্দু-স্থান শতযোজনবাাপী মাঠের ন্যায়, একদিকে পর্বভশ্রেণীর পর পর্বভশ্রেণী, তাহার পর পর্বতশ্রেণী, ভাহার পরে---কত পরে বরফের পাহাড় দেখিয়াছ কি ? সেই খেত খচ্ছ বরফের উপর পুৰ্যাকিরণ পড়িয়া ঝক্ ঝক্ করিয়া অলিডেছে, বোধ হইতেছে যেন রাজ-পুত্রের আগমনে বিশাল নগরীসমূহ নানা দীপমালার মণ্ডিত হট্যা রহিয়াছে. मिश्रीह कि ? शृर्ख ও शन्तिम किवन দেখিবে চূড়ার পর চূড়া, তাহার পর চুড়া, ভাহার পর চুড়া; শেষ নাই, विताम नारे, व्यनस्य विशास करा। বর্ণা সম্প্রতি শেষ হইয়াছে, চারি-निटक सत्रण। इटेट अम् अमत्रद इटक्षत ফেণার মত শাদা জল বেগে পড়ি তেছে, কোথাও তাহার উপর স্ र्शित औरनारक नामश्य (मथा याई-ভেছে, কোথাও বা কোন নিম্মিনী চির-অন্ধকারমধ্য দিয়া চিরকাল অলকিত-ভাবে প্রবাহিত হইতেছে, কেহ দেখি-তেছে না অপচ গতিরও বিরাম নাই। বেখানে ঝরণা সেইখানেই গাছপালা <sup>चिन</sup>, चांत्र राशांटन नाहे, रत्रशांटन छीयणं-

কার প্রস্তর, কাছে গোলে বোধ হর এখনই ঘাড়ে আসিয়া পড়িবে। এখাহন এই ভয়নিক উচ্চতা আবার পরক্ষণেই গভীর থড়, ভাহার তলা কোথায় দেখা যার না, যদি দেখা যার, দেখিবে একটি ক্ষুদ্র নদী চলিরা যাইতেছে, উপলে উপলে জল লাফাইতেছে, নাচিতেছে, আর চলিতেছে। স্থানে স্থানে নীরস কঠিন তরুবর সহল্র বংসরেরও অধিককাল কালের সঙ্গে বুছ করিরা আত্মনক্ষা করিতেছে, আর সেউতিলতা তাহাকে জড়াইরা জড়াইরা জড়াইরা জড়াইরা লাড়াইরা লাড

এই হিনালর তুমি আজি বেমন দেখিতেছ ইহা অনস্তকাল এইরূপ, অনস্তকাল
ধরিয়া বরফের পাহাড় এইরূপই আছে,
ঝরণা এইরূপই বহিতেছে,আকাশও এইরূপ গাঢ় নীল, সবই এইরূপ। শরতেও
হিনালয়ের এমনই গভীর অথচ মনোহর, অভয়কর অথচ উন্মাদক সৌন্দর্যা।
কিন্তু আমরা যে শরৎকালের কথা উল্লেখ
করিতেছি, সেই শরৎকালের অমাবস্যারাত্রে হিনালয়ের এক অপুর্ক সৌন্দর্য্য
হইয়াছিল। সে শরৎ সত্য ও ত্রেতামুগের সদ্ধিসমরে।

#### 21

মান্নৰ মরিয়া কি হর ? কে বলিবে ? কেহ বলে ভূত হয়, যাহাদের পিতা মাতা মরে ভাহারা বলে ভাঁহারা অর্গে গিয়াছেন; কিন্তু বাস্তবিক ভাঁহারা অর্গে যান না । যে সকল লোক পুথিবীতে

সংকার্য্য করিয়া যান তাহারা ঋভু\* হরেন, ইইারা কোণায় থাকেন ? কি करतन ? (क वनिष्ठ भारतें। देदांता ষ্ঠায়াপথের ওপারে কোন স্থময় ভবনে বাস করেন। উক্ত শরৎ অমাবগারাত্তে সহসা ছারাপথ दिशा विमीर्ग इटेशा (शन, আর তাহার মধ্যহইতে অগণিতসংখ্যক ঋভুগণ বহিৰ্গত হইলেন। সমস্ত ত্ৰহ্মাণ্ড ভাঁচাদের শরীরপ্রভায় আলোকিত হ-हैन। नक्राखंत्र कित्रन, अञ्चर्हिं इहेन, চিত্রার্পিতবং আকাশপটে নক্ষত্ৰগণ বিরাজ করিতে লাগিলেন। ঋভুগণ মুহুর্ত্তনধ্যে আকাশপথ অভিক্রম করি-লেন। পক্ষী ঝাঁক বাধিয়া বেডায় দেখিতে কতই স্থানর, কিছু যখন তীত্র জ্যোতিশার ঋতুগণ শরীরপ্রভার দিগস্ত আলোকিত করিয়া—আকাশপথ আছের कतिया परल परेल जांत्रिए नांतिरलन, ख्यन पृथिवीय मानववृक्त हम्दक्क इ-ইয়া গেল। কেহ বলিল, ধুমকেতু উঠিয়াছে, কেহ বলিল, নক্ষত্ৰসমূহ খ-সিয়া পড়িভেচে, কিয়ৎক্ষণ দেখিয়া যে থাহার ঘরে গেল। ঋভুগণ আজি জন্ম-স্থান দর্শন করিতে আসিয়াছেন, তাঁ-হারা যত নিকটবর্তী হইতে লাগিলেন, ভাঁহাদের আনন্দের দীমা নাই, ভাঁহারা -আসিয়া হিমালয়ে উপস্থিত হইলেন।

তথন টিব্যার টিব্যার †, চ্ডার চ্ডার,
লিথরে শিথরে, ঋত্পণ দাঁড়াইরা মহানলভরে গান ধরিলেন। মানবের-সাধা
কি সে গান বুবেং! কিছ সে শ্রুতিমনোহরত্বরে জগং মুগ্র হইল। জগং নিতত্ত্ব, আকাশ নিস্তব্ধ, নক্ষত্র কাচলু বিকাল ছারাপথ নিশ্চল, নিশাল সমস্ত,
ব্রহ্মাণ্ড ভণ্ডিত ভিমিত মহামোহ নিজার
অভিত্তবং হইল। ঋত্পণ একতানত্বনে
গান ধরিলেন। গীতধ্বনি ব্রহ্মাণ্ড-ভাডোদর পরিপ্রিত করিরা উন্তুক্ত ছারাপথ
ভারপথে অনস্তে নিলীন হইল।

ভারপথে অনস্তে নিলীন হইল।

ভ্

মৃথ হইরা পৃথিবীত্ব, আকাশত্ব, ব্রক্ষাণ্ডত্ব, অনস্তত্ব জনগণ এই গান প্রবণ
করিলেন। উহা সকলেরই কর্নে স্থাধারাবিং বােধ হইতে লাগিল। যেমন
বড় স্থেগর সময়ে স্থসন্তানবং অপ্রবং
অর্কচেতন অর্দ্ধ অচেডনবং মােহুমর
স্থামর, শান্তিমর, অমৃতমর, দ্রক্থ মধুর
সঞ্চীতধ্বনিবং কাণে কি জানি কি
নিলীন হয় সেইরপ সে গীতধ্বনি সকলের কর্নে লাগিল। কেহই ব্রিল না
কেন ভাহাদের প্রাণ প্রফুল হইল, অণচ
সকলেই মৃথ হইরা রহিল; কেবল ভিন
জন লােক গানের অর্ধগ্রহ করিরাহি
লেন। ভিনজনে গানে মন্ত হইরাছিলেন,
ভিনজনে মন্ত্র্যুবং অর লক্ষ্য করির

<sup>\*</sup>বে মাহ্য সংকর্ম করিয়া মরণের পর দেবতা হয়েন বেদে তাঁহাকে ৠ বিছে।

<sup>. ।</sup> शाहारकृत केक वालारक शाहाकिता विना वरन।

<sup>‡</sup> এছকার পানটি হার।ইরা ফেলিয়াছেন।

হিমালয়চ্জায় আসিয়াছিলেন। ইইারা ভারতের চ্জা, যতদিন ভারত থাকিবে, যতদিন হিলুধর্ম থাকিবে,যতদিন জগতে মাহাছ্যোর মান থাকিবে, ডভদিন ইহা-দের লাল লোপ হটবে না।

#### · 01

ध्येथम महर्षि विश्वह विष्ठित हुन निवा-প্রিবৃত হইয়া আপন আশ্রমে অবহিতি করিতেছিকেন। তাহাদিগকে জ্ঞানধর্মনীতি डेशासण निट्छिलिन: काशांक वाका. बाहा, बाक, काहारक अभाग, श्रायम, धायायम, मःभवनिर्वयः इनकाडित्इषा-ভাস প্রভৃতির গুড়তত্ত্ব, কাহাকে পঞ্ ভক্ষাত্তের সহিত লিকশ্রীরের ভেদা (छम. काशांक विवर्श्ववामी, काशांक পরিণামবাদী বুঝাইয়া দিতেছেন; কা-হাকে গোমেধ, অশ্বমেধ, রাজস্যু, অগ্নি-ষ্টোম প্রভৃতি শিক্ষা দিতেছেন; শিব্য বিবেচনায় কাছাকেও বা দশকৰ্মওশিকা দিতেছেন। এমন সময়ে সহসা তাঁহার শিষাসমূহ অনামনা, श्वित, নিপাল, भिष मञ्जमुद्धद**९ वाक्**मेखिकिविशैन इहे. গীতধানিও বশিষ্ঠের গেল, তিনি যোগবলে জানিলেন ঋড়-গণ আসিয়াছেন। তিনি অমনি যোগবলে • হিমালয়ের শিখর লক্ষা করিয়া আকাশ-পথে গমন করিলেন। এবং মৃহুর্তমধ্যে তথার উপস্থিত হইরা, ঋভুদিগকে নম-কার করিয়া একভালমনে গান শুনিতে विशिष्टिस ।

दिशीय, विश्वामित । देनि निधिकत्य वहि-

ৰ্গত হইয়া সমস্ত দিন সৈনাচালনা করিয়া সন্ধার প্রাকালে হিমালয়ের পাদ-দেশে শিবিশ্বভাগন করিয়াছিলেন। সৈনা-গণ পথশ্ৰান্তিনিবন্ধন যে যেখানে পা-ইল সে সেইখানেই ভাম্ব গাড়িতে चात्रञ्ज कतिन। विश्वामित कर्यक्रम মন্ত্রী লইরা কালিকার দৈনাচালনার পরামর্শ করিবার জন্য এক ক্ষুদ্র নির্মা রিণীতটে আসিয়া বসিবেন, এমন স-मत्त्र व्याकाण व्यात्नाकमग्र इटेशा छेतिन, আর দেই স্থমধুর গীতথ্বনি সকলের कार्त (भन। देमनाभन (य (यङाद हिल, तम तमरे छात्वरे निम्हल, निम्भन ও স্থমোট্ছ আছেল হইয়া গেল। বে তামু গড়িয়াছে তাহার বিছানা করা হইল না, যে গাড়িতেছে, তাহার অদ্ধে-কেই শেষ হইল, আর যে গাড়িবার উদ্যোগ করিতেছে, জাহার ঐ পর্যাস্ত। বিশ্বামিত গীতধ্বনি বৃঝিলেন, অমনি চকিতের নাায় তিনলক্ষে এক টিবাায় উঠিলেন, किन्नु डांशांत्र आजगतन त्य अजू-দেব ক্লফবর্ণ হইয়া গেলেন তাহা দেখি-য়াও দেখিলৈন না।

তৃতীয়, বান্মীকি। ইনি নিজ দহাদল
সমভিব্যাহারে গিরিরাজের প্রাসাদে
ভাকাতি করিতে গিরাছিলেন। নিজে
প্রাসাদের ছাদে উঠিয়া ছই পাঁচ জনকেও তথার আনিয়া সিড়িভালিবার
উল্যোগ করিতেছেন, চান্নিদিকে হৈ হৈ
হৈ হৈ দক্ষ পড়িয়া গিরাছে, রাজ্যরক্ষিগণ কে কোথার ঘাইবে হির করিতে

পারিতেছে না, কোষাও ডাকাইতৈ রক্ষী কাটতেছে, কোষাও ডাকাতে ডাকাত কাটতেছে, কোষাও ডাকাতে ডাকাত কাটতেছে কোষাও রক্ষী রক্ষী কাটতেছে। বালীকি ক্রমাগত অসি আখালন করিতেছেন আর সংক্রেমত শিলা বালাইতেছেন। এমন সমরে আলোক ও গীতধানি হইল। অমনি যে যেভাবে ছিল চিত্রপুত্রিবৎ নিম্পাল হইরা গেল। বাল্মীকি গান শুনিলেন ও ব্ঝিলেন। অমনি অন্ত্রাগ করিয়া লাফ দিয়া ভূমিতে পড়িলেন এবং নিকটবর্ত্তী টিব্যার আরোহণ করিলেন।

8

গানে সুগ্ধ কে নয় ? যখন সামান্য মহুৰাগায়ক তান ছাড়িয়া গায় তথন কে না মুগ্ধ হয় ? তাহা অপেকা যথন অস্তরের জালার কেহ প্রাণ খুলিয়া গার তথন আরও মধুর হয়, আবার যে <mark>সীত বুঝে সে গীতে অধিক মুশ্ন যে</mark> গীতের ভাব বুঝে দে আরও মুগ্র হয়, গীতে যদি শুধু কাণ না ভরিয়া মনও ভরাইতে পারে তাহ, হইলে সৈ গীতে লোকে উন্মন্ত হর। আজি ঋভুগণ পায়ক, জন্মভূমিদুর্শনে পুলকে পুনিতু • रहेबा शाहेरल्डास्न, व्यवस्त्रत व्यागा ब আছে! ভাঁহারা কি দেখিয়া গিয়ছিলেন चात्र अथन कि स्टेबाटक ! विनर्छ, विचा-মিঅ ও ৰাজীকি শ্ৰোভা,ভাহারা ওনিভে-ছেন বুঝিতেছেন ভাৰগ্ৰহ কমিডেছেন। ী কাণ মন প্রাণ ভরিয়া উঠিভেছে বাহি-

दबन देखिन कारन व्यादम कतिनाटह मन ७ व्याग कारन छेठियाटह स्थान टेडज्य হত তাঁহারা গায়কে মোহিত গায়কের ভাবে যোক্তি গানে মোহিত ক্লরে মো-হিত আর গানের ভাবে আরও মোহিত। গানে বলিভেছে সব ভাই ভাই এস ভাই ভাই বিশ্বক্ষাতে স্ব ভাই ভাই; সব আপন, সব শ্রেম, व्यानीमारबंदे छादे; वन कानाकृति कत्रि अन मत्र भिला अक इहे अक्छान-े মনপ্রাণ হই । এ তে কে না মুগ্ধ হইবে, ত্তধু মুগ্ধ ? মুগ্ধ হইতে মুগ্ধ, তাহা হইতেও मृश्व यनि किছू थाटक छाष्टा छ इहेटछ इत्र। তিন জনইত মুগ্ধ কিন্তু মনের তলায় ভলায় অতি গোপনে গোপনে আন্তে আত্তে ধীরে ধীরে একটি ভাবনালোত: সকলেরই মনে বহিতে লাগিল। ভাঁছারা ইচ্ছ। করিয়া ভাবিতেছেন না কিছ ভাবনা থামাইতেও পারিতেছেন নাঁ। কেহ কেহ বলে ইচছার মত শক্তি নাই কিন্তু যখন সমস্ত মন উদ্বেশ হয় সমস্ত মন দ্ৰব হইয়া একদিকে স্থোত: চলিতে ণাকে, তথন তাহাকে ইচ্ছার সাধ্য কি निवाद्य कुरत्र।

বশিঠের মনে আত্মপ্রসাদ, আমি বা ক্ষণ ক্ষরিয়ে বিবাদ নিটাইয়া ক্ষরিয়াছি। আমি সব ডাই ভাই ক্ষরিবার যোগাড় ক্ষরিয়াছি, নিজে ক্ষরিয়ের প্রোহিত হটয়াছি। গাঘৰ স্বীকার ক্রিয়াছি এই ভাবনালোক: যত বাড়িভেছে তড়ই ডিনি আরও উন্মত হইডেছেন।

বিশামিক ভাবিতেছেন আমি সমস্ত পুৰিবী ক্ষয় করিয়া এক করিয়া আনি-য়াছি আমার শাসনে সৰ ভাই ভাই হইয়া যাইবে, যতবার তাঁহার এই ভাবনা হইতেছে তত্ই তাঁহার মুগ্রভাব বৃদ্ধি পাইতেছে। আর বালীকির অন্তরের অন্তরে ভাবনা কি ? হায় আমি কি করিতেছি আমি কেবল আমার ভাই-धरमत मर्यनाम कतिए हि !!! आयात ध कलक किरन यात्र, ध मात्रन काला किर्म निवार ; किला प क्षत्र क्षि क्ष हत्र। গান যত অমিয়া আদে উচ্চার আকুল-ভাব আরও বৃদ্ধি হয় ক্রমে চক্ষের জলে তাঁছার বৃক্ষ ভাসিয়া গেল তিনি কাঁদিয়া अक्टारतब शास्त्र अकारेशा डेटेक:चरव রোদন করিতে লাগিলেন। শরীর ধুলায় লুঠিতে লাগিল, দেব রক্ষা কর, পাপের প্রায়শ্চিত কহিয়া দেও, প্রাণ আর বাঁচে না।

দেবমাহাত্ম্য কে বৃঝিতে পারে ! সহসা
বাল্মীকির মন প্রফুল হইল। কে যেন
অন্তরের অন্তরে বলিয়াদিল ভর নাই ভর
নাই, পাপত্যাগ কর, ভাই ভাই করিয়া
গান করিয়া বেড়াও,ভোমার প্রায়ন্চিত্ত
ভক্তর কিন্ধ ভর নাই তৃমি ভাই ভাই
গাইয়া বেড়াও ভোমার জীবনে তৃমি
কিন্ধু ক্রথ পাইয়া মরিবে, কিন্ধ ভোমার
আত্মা এই পৃথিবীতেই থাকিবে, যেখানে
ঘোর অন্ত্যাচার সেইখানেই উহার
উপস্থিতি হইবে, যেদিন পৃথিবীময় ভাই
ভাই হইয়া উঠিবে সেইদিন তুমি আমা-

দের সঙ্গে ঋড় হইবে ঋড়রাল হইবে ভোমার স্থাের শেষ থাকিবে না।

অৱকণেই বশিষ্ঠের আত্মপ্রনাদ নৈরাশ্যরণে পরিণত ছইল। তাঁহার বোধ
হইল যেন কিছু হর নাই তাঁহার দব
চেষ্টা বিফল হইবে।

বিশ্বমিত্তের বোধ হইল তাঁহার খোর বিপদ সমুধে, তিনি যেন কত পাপ করিয়াছেন কিন্তু তিনি দে কথার কাণ দিলেন না বীরজনস্থলভ আত্মদদ মভ হইরা আত্মগরিমার পূর্ণ হইতে লাগিলেন।

ক্রমে গানে মুগ্ধভাব অস্তরিত হইল।
শেষ এই যে ভাবনাস্থাত তাহাতেই
তিনি ক্লমগ্ধ হইলেন, ডুবিরা রহিলেন,
পূর্বে সকল ইক্রিয় কাণে উঠিয়াছিল
এক্ষণে ফিরিয়া হালরের তলে তলে লুকাইয়া হালয়ের থেল দেখিতে লাগিল।
ঋতুগণ বে কোন্দিক দিয়া চলিয়া
গোলেন তাহা টেরও পাইলেন না, তখন
যে রাত্রি নাই তাহা তাঁহাদের জ্ঞানও
নাই, আ্মচিস্তায় বে মগ্ম তাহার আবার
দিন রাত্রি কি ?

@ 1

এদিকে ঋতুগণ ছিমালয়শিথরসমূহত্যাগ করিয়া উপরে উঠিতে লাগিলেন।
বোধ হইতে লাগিল রাশিচক্র অন্যপথে
ব্রিতেছে।ক্রমে যতদ্রবর্তী হইতে লাগিলেন বোধ হয় লক লক ন্তন নককের
আবির্ভাব হইল, ক্রমে আর নককেন
ভাবত রহিল না বোধ হইল আকাশ

क्षामा कर भाग महर्ष नायुक्त रहेश देविन, क्राप्टम द्वाप हात्रां **भारत** बारवन कतिन । त्याथ वर्षेत्व नाशिन वित्रज्ञानी সমস্ত বিশ্বকাও প্রাপ্ত করিবে, ভাপরের (भवकारन व्यक्त विमन वित्रार्धि नाता-দ্রণের মুখে বিখসংসার প্রাবিষ্ট হইতে **(म्थित्रोक्टिन**न अमन्द्रक्ष टम्ट्रे ध्रकात (बाथ इटेएड नाशित। ज्वारम ममछ খেতমেমপুরে হরিতালীগর্ভে নিলীন হইল। হরিতানীর মধাগহরর পূর্ব হইল বিশ্বদংসার আবার ষেমন তেমনি হইল জাবার নক্ত জনিল আবার জাকাশ ভির হইল আবার আকাশের কোমল মীলিমা বিকাশ হইল। পৃথিবীতে প্রভাত र्हेन, कांक, क्लिन छावित्रा छेठिन। বেমন বড় ভয়ানক ক্রিয়াকাও শেষ চইলে সমস্ত বাড়ী খাঁ খাঁ করিতে থাকে সমস্ত বিশ্বসংসার তেমনি থাঁ থাঁ করিতে

বিশামিত বশিষ্ঠ ও বাত্মীকি আপন আপন টিব্যায় ভাবনায় ভূবিয়া-ছিলেন কডক্ষণ ছিখেন কে বলিতে शास ? जारम यथन कान इहेन फथन कारण कान्त्र वहेबारक, नक्ष कार्याक লুকাইয়াছে, প্রভাতবায়ু প্রাণ প্রফুল করিতেছে নির্মাণ্য কাণ জুড়াইয়া দিতেছে তিনজনেরই রঞ্জীর বৃত্তাক স্থাবং বোধ হইতে লাগিল। বাল্মীকি यथन छेठिया प्रिथिटनन (म शान व नाहे সে দেবও নাই তিনি খোকে আকুণ হইয়া বদিয়া পড়িলেন। বশিষ্ঠ প্রাতঃ-क्रजानित बना यागवल बाध्यम गरिए যাইতে দেখিলেন বিশ্বামিত নামিতেছেন: অমনি সসম্ভবে উহোর নিকট আসিয়া ত্ত্বনে পদত্রকে পর্বত অবতরণ করিতে नाशित्वम ।

### ncie Month

# যার কাজ সেই করুক।

চির্কালই কথা আছে মার কাল সেই করে। বদি অনো অন্যের কাল করে, তবে সে কাল নিশ্চরই থারাপ হর। কিছু আমাদের এমনি অদৃষ্ট মন্দ, আমাদের সকল কালই পরে করে। আমার কেবল আহার করি, ছই হাত নাড়িরা ছুইপাটী দাঁত কাক করিয়া ভাহার মধ্যে সংভূপণে—কণ্টক ইইতে

পৃথক্কত ,সর্বপতৈলভর্জিত মৎস্যদেহ

কমন্তিবাছত—বরিশালোৎপর লগুপাক
বালামাভিখের তঙ্গুলভাত অর্রাশি
গলাধঃকরণ করিয়া থাকি। তাহাও ওনিরাছি কাহার কাহার সৃহিণী মাছের কাটা
বাছিয়া গরাস্থলি পাকাইয়া রাথেন,
কর্তার কার্যের মধ্যে উল্ভোলন, প্রবেশন্ ও গলাধঃকরণ। আনাদের দে-

শের কাজ ভ আটপত বর্ণসর ধরিরা পরে করিরা আসিতেছে। মাৰ সভে আমাৰ ভাটবেৰ বাগভা र्देश नार्यं जारा भिष्ठेत शिवा बाधात तर्भ वर्गी बाजित्न बानिवर्कि বাঁ ভাছাকে ভাডাইবে। আমাদের সীমা-धाराम चलाहात कतिल क्रिनाखन পাহাড়ীরা ভাহাদের ভাড়াইবে, আমা-टेकब माध्यांमध्यत वांथ छान्निया शास्त्र है जितिहार ভাহা शिटव। आंगारमंत्र कांक छान इत्र नां. ভাল হলেও খরচটা বেশী হয়, কিছ ভা হলে কি হয় আমরা আমীর, সব कांस भद्रक मित्रा कताहेता नहे। अथवा আমরা (genius) জিনিয়দ। জিনিয়দের বোল এই Never do yourself what you can have another to do for you. আমাদের বঙ্গভূমিতে স্বাই মনে করেন আমি জিনিয়স, আমার কাজ চুপ कतिया, कार्ण जुना निया वित्रा शांका আর জন্যের কাল এই যে আমার আহার যোগার। পরে যতকণ করে, ততকণ আমরা হাত পা নাড়ি না। भिष भारत मा कतिल आंगरा किहूरे করিতে পারি না।

সে যাই হউক, এটা ঠিক্ বে,বার কাজ তাহারই করা উচিত। আমার বাড়ীর সমূপে রাজার জল বাঁধে তাহা পরে মেরামত করিরা দের, আমার বাড়ীর পাশের বন পরে কাটিরা দিরা যার, এটা একাক্ত ছঃপের বিষয়। ছঃপের

विवत स्ट्रेलंड भागना कृति ना, नाखान चन नेवितादक, नवीत नमत मा कत मार्क वाहित इटेगाम ; यक्ति वाहित इटेगाम. না হয় একবার একটু পারে জল লা-পিল, ভাহাতে ক্ষতি কি 🕈 আসালের मत्मत्र कांव ठिक धरे। किस कांमत्रा ৰাভীত অন্য বে কেই এ ব্যাপার দেখে, मिरे चुना करत, धरे बना रेश्टब वां हाइत करमक वर्गत धतिमा आभारमत আপনকর্ম জোর করিয়া করাইবার চেষ্টা করিতেছেন। ভাছাতে আমাদের ম্বুণা হয় না, আমরা আপন কর্মা করি ना। টেক ना पिटन घंटे, वांठी काङ्गा लहेशा यात्र, अहेबना (हेन्स निहे, किन्द তাহার পর আবার পরের উপর নির্ভর করিয়া বসিয়া থাকি; আর কিছুই দেখি

গবর্গমেণ্ট আমাদের মধ্য হইতে মিউনিসিপাল কমিলনর লন, তাঁহারা কর্তার
কথার আজ্ঞা হাঁ দিরাই নিশ্চিত হন।
কর্তা সাহেব হইলে, না বলিবার কাহারই ত বো নাই, যদি বাঙ্গালি হইলেন, উবে বরং তুই একজন ঠোঁটকাটা
তুই একটি কথা বলিলেন। বেছুই চর্ম্মপাত্রকচরণে, উফীষমস্তকে, দিব্যক্তলবর্মাচ্চাদিতসর্ককলেবর, স্থাজিজবো
সর্কাঙ্গ বিলেপন করিরা যশোদার নন্দতুলাল মিউনিসিপাল সভার উপস্থিত
হইলেন, অমনি সব চুপ। কেবল
মধ্যে মধ্যে "আজ্ঞা হাঁ" নতুবা "হো
হকুম।" ভির আর কথা নাই।

তথন প্রথমেন্ট আমাদের নিজের
কাল নিজে করাইতে চান, আমরা
ভাষা করিতে পারি না, প্রথমেন্ট
আমাদের কর্ম শিণাইতে চান,
প্রথমেন্টের প্রতিনিধিরা আমাদের
ভাষা শিথিতে দেন না, এই অকশ্রারা যদি কেছ কর্ম করিতে চান,
মাজিট্রেট সাহেব ক্র কুঞ্চিত করেন।
ভাষার ইচ্ছা, তিনি বাহা রলেন, আমরা ভাষাতে কেবল "হাঁ" দিরা
বাই। তিনি কেবল হাঁ দিবার মত
ক্মিসনর নির্বাচন করিরা লন।
ইহার এক উপার আছে,—আম্মা
নিজে যদি মেম্বনির্বাচন করিতে

পাই, ভাষা হইলে চেরারমানের ধানাধরাগণ আর বড় কমিটীতে ছান পার না, সেই এক ভরগা আছে; অভএব বেথানে যেখানে ছানীর মিউনিসিণাল লাসন আছে, নিজে মেম্বরনির্কাচন করিবার জন্য চেটা করা আবল্যক, নহিলে কমিটী ভোমাদের অর্থণোবন করিবে, ভোমাদের কাছে বড় হইরা, কর্তার কাছে হাত্যোড় থাকিবে। আর ভোমাদের কোন কাল হইবে না। ভাই বলি বার কাল সেই করক। ভোমাদের ক্রিস্নর ভোমারাই নির্কাচন কর এ বিব্রের আইনও আছে।



# বঙ্গদশন

### সপ্তমবৎসর।

৮২ সংখ্যা।

### ----

# বাঙ্গালার পাঠক পড়ান ব্রত।

তাদলিত অলম্বার-কণ্টকিত বালালা ভাষা আমার আরত নহে, তথাপি একটা কথা লিখিতে প্রবৃত্ত হইরাছি। আমার নিরলক্ষত ভাষার সে কথাটির চটক ইইবে না, স্কুডরাং লোকে ভাষা পড়িবে না, তথাপি পড়াইতে আমার ইচ্ছা। কথাটা স্পাই করিয়া, পরিছার করিয়া বলিতে পারিব কি না জানি না, কিছু আমি বলিতে পারিবাম না আর একজন পরে বলিবে এই ভর্নায় অপেক্ষাও করিতে পারি না।

প্রথমে জিল্ঞানা করি, বলবাসীলের
মধ্যে ক্রনোক্ পড়িতে পারে ? তুনি
বলিবে বিভার; প্রামে প্রামে, পাড়ার
পাড়ার, পাঠভানা ও কুল আছে, পাঠভ কের সংখ্যা বিভার হওরাই সভব।
আনিও তাহা শীকার করি। কিন্ত বিতর বলিলে সংখ্যা অহতব হর না।

বালালার প্রায় ছইকোটী পুরুষ বাস করে, তাহাদের মধ্যে কত লক্ষ পড়িতে সক্ষ? বিংশতি লক ? না, আরও অল ? একণে হন্দ হিসাব হইতে পারে না; একটা মোটামৃটি অনুভব করিয়া लहेट इहेट्य। श्राटमत्र व्यक्तिक वालक পাঠশালায় যায় না। যাহারা যায়, তাহাদের অর্দ্ধেক—বরং কিছু অধিক হ-हैरव--- अक्न त्रभतिहत्र अविध অপেকা করে না, পাঠশালার পীড়নে পলায়ন করে। যদি শতকরা চলিশলন <sup>ক</sup>বালক পাঠশালার বাইতে আরম্ভ করে, ভাছার गक्षा अकत्रभित्रदेशत शृद्ध कूड़ियन পাঠশালা ভ্যাগ করে, বাঁকি কুড়িজনের मर्था प्रभावन यंदिक्षिर शिका कृतिया বয়:প্রাণ্ডে রামায়ণ প্রভৃতি ছাপার পুঁথি , কটে একপ্রকার পড়িতে পারে, আর বাকি দশবন অপেকারত ভাগ-

রূপ শিক্ষা পার। কেবল এই শেবোক ব্যক্তিদের গণ্য করিলে বাঙ্গালায় কুড়ি-লক্ষ লোক পড়িতে সক্ষম। অর্থাৎ প্রতিশতে স্পল্লন হিসাবে পড়িতে পারে। যদি কেছ বলেন, বাঙ্গালার পাঠকসংখ্যা এত ছইবে না, ভাছাতেও আপত্তি নাই; কুড়িলক্ষ পাঠক কাটিয়া দশলক্ষ করিতে প্রস্তুত আছি। প্রতিশতে পাঁচলন যে পড়িতে পারে ইহার আর সন্দেহ নাই।

এক্ষণে জিজাসা করি বে, এই
লগলকের মধ্যে কয়জন সংবাদপত্র বা সাময়িকপতা পাঠ করেন ? কোন্
বালালা পত্রিকার ত্ইহাজারের অধিক
গ্রাহক আছে ? সকল পত্রিকার গ্রাহক
তকুন করিলে উর্জনংখ্যা দশহাজার হইবে,
তুইকোটি পুক্ষের মধ্যে দশ হাজার!

বে বালালার সামান্য পর্বোপলক্ষে
নিমেবমধাে দশহাজার লোক এক স্থানে
এক মাঠে উপস্থিত হয় সেই বালালায়
সংবাদপত্রের গ্রাহকও দশহাজায়!
পর্বোপলক্ষে বালালার বাধ হয়
প্রতিবংসকে প্রায় জাউলক্ষ টাকায়
মাটার প্রতুল বিক্রেয় হয়, কিন্তু সংবাদপরের নিমিন্ত তাহার চতুর্থাংশের একাংশপ্ত ব্যয় হয় না-। তুমি বলিবে সংবাদপত্রের এমন কি মাহাজ্য আছে যে,
তাহার নিমিন্ত অর্থায় কয়িতে হইবে ?
সংবাদপত্রের মাহাজ্য সমালস্থন্দে; তাহা
পারে বলিতেতি। সকল ক্রেনেরই মদস্ব
জাছে; বে পুতুল ক্রেন্ত করিলে পর্সা

कटल (गल मरन कतिया थाक, त्मरे পুতৃবেরও সাহাত্ম আছে; সমালসমতে তাহার ক্রম **অস্পাই,** কি**ছ খ**রুতর। পুতৃৰ ৰালকের নিমিত্ত; ক্রীড়ার সামগ্রী; কেহ ভাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করেনা, পুতৃলের কোনরূপ আধিপত্য সমাজের উপর আছে কি না কে ভাহার তদম্ভ ক-विट्य हेरव। किन्न विरवहना कतिया प्राप्त বল্লিও কি প্রকার পুতৃল লইয়া বেলা करत? (कवन 'शाहीत इतिन,' 'शाहीत शक्ती,' 'माणित (वो' माणित (थाका।' পরে শিশু বর:প্রাপ্তে নিজেই সেই মাটীর খোকা দাঁড়াইরা যার। বে ফাতির ইচ্ছা, সেই জাভির পুতৃশ সংগ্রহ ক্রিয়া পরীক্ষা কর, বুরিতে পারিবে যে কতকটা পুজুলের প্রকৃতি অনুসারে গেই কাতির প্রকৃতি। পুত্বের ক্রম অস্পট-ভাবে প্রত্যেক কাতির অন্থিমজায় बाद्ध।

সংবাদপ্রসহছে আরপ্ত অধিক বুলা
বাইতে পারে। সংবাদপ্র সংগ্রহ করিরা
দেখিলে জাতির প্রকৃতি সম্পূর্ণ বুরা যার,
কিন্তু আমাদের সংবাদপ্র দেখিয়া
আমাদের প্রকৃতি বুরা যার না।
বিলতে গেলে, আমাদের সংবাদপ্র
নাই; যাহা আছে, তাহা ইংরেজিপ্রের
অমুকরণ, তাহা কোনক্রমেই আমাদের
প্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদ
প্র কতক্টা বিজাতীর বলিয়া বাজালিরা
তাহা পড়িতে পারে না; সেইজ্ঞা
দশ্লক লোকের মধ্যে কেবলমাত্র

দশহাজার কোক সংবাদপত্তের গ্রাহক।
অন্তএব সাধারনোপথে।গী চুই একথানি
সংবাদপত্ত বঙ্গে আবশ্যক। কেবল
এই কথা বলিবার নিমিন্ত আমি
এত মাথামুপ্ত বকিতেছি।

লোকে যত একভাবে ভাবিৰে, ভতই ভাহাদের ভাতিসম্বন্ধ বৃদ্ধি পাইবে। ৰিষ্ট সংবাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ ভিন্ন चात्र (क এখन) वहर्ताकरक अक्वियर একদিকে ভাবাইবে, একরপ আলো-हना कत्राहेर्त ? मःवानभरखव छरक्रमा व्यधिकारण (लाटकंत्र मन এक्ष्रुख वन्न कता, এकिएक मरनद গভि নির্দেশ করা। ভূমি বলিবে পূর্বের সং-ৰাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ এ সকল কিছুই ছিল না তথন জাতিবন্ধনের স্ত্ काथ। इहेट अ: निशाहिन ? मःवामशब ছিল না সভা, কিন্তু তথন অন্য উপায় ছিল। রামায়ণ আর মহাভারত আমা-দের, জাতিবকনের মূল ছিল; ইহা পড়িতেন অর লোকে, কিন্তু শুনি-তেন সকলেই। • শুনিতেন কথকের মূথে; কথকেরা ভাছা বিকৃতি করিয়া বাখা কহিতেন। আমাদের পূর্বগামী বাঙ্গালিরা সেই বিক্বভব্যাখ্যার ফল। ভাঁছাদের ব্যবহার, বিচার, বৃক্তি, চিন্তা, नामाधिक छ। এই नमून रहत मृत कथर कत কণকভা। কথকতা আর বড় নাই, धक्रां मःवाम्भवः मामनिक्भव (मह কর্থকভার স্থান অধিকার করিতে বৃদি-গাছে। পুর্বের কৃথক; এক্ষণকার সম্পা

দক। উভয়ের উদ্দেশ্য এক, কিছ উপায় স্বভন্ত।

কথকেরধারা क (य क का न প্রাচীন বাদালা প্রেক্ত হইয়াছিল, প্রেক্ত ভাল হর নাই সভা, কিন্তু তাঁহারা করিয়া-ছিলেন। এক্ষণে নৃতন বালালা স**পাদ**-কগণ্যারা প্রস্তুত হইবে। কথকের কার্যা সহজ ছিল। ভাঁহারা বক্তৃত। করি-टिन, **चारान**र्क मक**रन ७**निङ, मक्रन বুৰিত। নানকলে এককোটী লোক উ'হাদের কথা শুনিরাছিল, বুঝিরা-ছিল। সম্পাদকের সে উপার **নাই**; তাঁহাদের বক্তৃতা ভাল হউক, মন্দ হউক, এককোটীর স্থলে কেবল দশহালার না হয় পঞ্চাশহাজার লোক শুনিরা थ!रक, शक्तिंश थारक।

কিন্ত সম্পাদকের কথা শুনিবার নিমিত্ত দশলক্ষ লোক প্রস্তুত হইরাছে,
সম্পাদকেরা সে সকল লোককে আকর্ষণ
করিতে পারিত্তেচন না। হেতু প্রথমতঃ অনুভব হর সম্পাদকগণের অযোগাতা, দ্বিতীয়তঃ হয় ত তাঁহাদের নিশ্চেইতা। অযোগ্যতা এইজনা বলি যে,
যে গুণ ভাঁহাদের থাকিলে এই দশলক্ষ
লোক অবশা তাঁহাদের হস্তগত হইত;
সংবাদপত্তে, সামরিকপত্তে যাহা ভাঁহারা
লেখেন, হয় ত সে সকলের কোন উদ্দেশ্য
প্রাহিত্ত হইতেছে তাহা আমি আনি
না, বুঝিতেও পারি না; সম্পাদকেরা

রূপ শিক্ষা পার। কেবল এই শেবোক্ত ব্যক্তিদের গণ্য করিলে বাঙ্গালায় কুড়ি-লক্ষ লোক পড়িছে সক্ষম। অর্থাৎ প্রতিশতে দশলন হিসাবে পড়িছে পারে। যদি কেহ বলেন, বালা লায় পাঠকসংখ্যা এত হইবে না, ভাহাতেও আপত্তি নাই; কুড়লক্ষ পাঠক কাটিয়া দশলক্ষ করিতে প্রস্তুত আছি। প্রতিশতে পাঁচলন বে পড়িতে পারে ইহার আর সন্দেহ নাই।

একণে ফিকানা করি বে, এই
দশলকের মধ্যে কয়লন সংবাদপাত্র বা সাময়িকপাত্র পাঠ করেন ? কোন্
বাঙ্গালা পাত্রকার ভাইহাজারের অধিক
প্রাহক আছে? সকল পাত্রকার প্রাহক
প্রকৃন করিলে উর্জনংখ্যা দশহাজার হইবে,
ভূইকোটি পুরুবের মধ্যে দশ হাজার!

যে বালালার সামান্য পর্বোপলক্ষে
নিমেষমথো দশহাজার লোক এক স্থানে
এক মাঠে উপন্থিত হয় সেই বালালার
সংবাদপত্রের প্রাহকণ্ড দশহাজার!
পর্বোপলক্ষে বাজালার বোধ হয়
প্রতিবৎসরে প্রায় আটলক্ষ টাকার
মাটীর পুত্ল বিক্রের হয়, কিন্তু সংবাদপত্রের নিমিন্ত তাহার চতুর্বাংশের একাংশপ্ত ব্যয় হয় না! তুমি বলিবে সংবাদপত্রের এমন কি মাহাত্মা আছে যে,
তাহার নিমিন্ত অর্থবায় করিতে হইবে?
সংবাদপত্রের মাহাত্ম্য সমাজসন্থরে; তাহা
প্রের বলিতেছি। সকল ক্রমোরই মহত্ব
আছে; বে পুতুল ক্রম্ম করিলে প্রসা

काल (शल मान कतिया थाक, तिहे পুতৃলেরও মাহাত্মা আছে; সমাজসহত্তে তাহার ক্রম ঋষ্ঠাই, কিন্তু গুরুতর। পুতুৰ বালকের নিমিত্ত; ক্রীড়ার নামগ্রী; কেহ ভাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করে না, পৃত্লের কোনরূপ আধিপত্য সমাজের উপর আছে কি না কে ভাহার ভদন্ত ক-हिएक गाहरव। किन्दु विरवहना कतित्रा रम्भः বঙ্গশিশু কি প্রকার পুতৃল লইয়া খেলা করে? কেবল. 'মাটার ছরিণ,' 'মাটার পক্ষী,' 'মাটার বৌ' 'মাটার থোকা।' भरत भिक्ष वमः शास्त्र निष्मे रहे মাটীর খোকা দাড়াইর। যার। যে ফাতির ইচ্ছা, সেই ভাতির পুতৃশ সংগ্রহ कत्रिता भन्नोका कत्र, बृबिएल भातिरव (य কতকটা পুতুলের প্রকৃতি অমুসারে দেই কাতির প্রকৃতি। পুতুলের ক্রম অস্পষ্ট-ভাবে প্রত্যেক জাতির অন্থিমজার্ जारह।

সংবাদপ্রসম্ভ আরও অধিক বৃলা
হাইতে পারে। সংবাদপ্র সংগ্রহ করিরা
দেখিলে জাতির প্রকৃতি সম্পূর্ণ বৃশ্ধা ষার,
কিন্তু আমাদের সংবাদপ্র দেখিরা
আমাদের প্রকৃতি বৃশ্ধা যার না।
বিলতে গেলে, আমাদের সংবাদপ্র
নাই; যাহা আছে, তাহা ইংরেজিপ্রের
অন্তর্ক, তাহা কোমক্রমেই আমাদের
প্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদপ্রকৃতিবাঞ্জক নহে। বাজালা সংবাদ-

দশহাজার লোক সংবাদপত্তের গ্রাহক।
অভএব সাধারণোপথে।গী চুই একথানি
সংবাদপত্ত বঙ্গে আবশ্যক। কেবল
এই কথা বলিবার নিমিন্ত আমি
এত মাথামুগু বকিতেছি।

লোকে যত একভাবে ভাবিকে, उठरे जारामित व। टिमयस वृद्धि भारे व। ৰিকন্ত সংবাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ ভিন্ন चात्र (क এখন वह लोक एक विषय একদিকে ভাবাইবে, একরূপ আলো हना कताहरत ? সংবাদপত্ত্বের উদ্দেশ্য व्यक्षिकाश्म (लारकंत्र मन अक्स्रुख বন্ধ করা, একদিকে মনের গভি নির্দেশ করা। তুমি বলিবে পুর্বেব সং-ৰাদপত্ৰ, সাময়িকপত্ৰ এ সকল কিছুই ছিল না তখন জাতিবন্ধনের স্ত্র (काथ। इटेट अ: नियाहिन ? मःवामशब ছিল না সভা, কিন্ত তথন অন্য উপায় ছিল। রামায়ণ আর মহাভারত আমা-দের, জাতিবক্ষনের মূল ছিল; ইছা পড়িতেন অল লোকে, কিন্তু শুনি-তেন সকলেই। • শুনিতেন কথকের মূথে; কথকেরা ভাছা বিকৃতি করিয়া ব্যাখ্যা করিতেন। আমাদের পূর্বগামী বাঙ্গালিরা সেই বিক্বভব্যাখ্যার ফল। তাঁছাদের বাবহার, বিচার, যুক্তি, চিন্তা, শামাজিকতা এই সমুদ্রের মূল কথকের কণক ভা। কথকভা আর বড় নাই, একণে সংবাদপত্ত; সামরিকপত্ত সেই ক্ষকভার স্থান অধিকার করিতে বৃদি-शेटहः। शृटर्वतं क्षेकः; अभागकातं मण्याः

দক। উভরের উদ্দেশ্য এ**ক, কিছ** উপার স্বতন্ত্র।

কথকেরছারা প্রাচীন ক্ষেক্জন বালালা প্রস্তুত হইয়াছিল, প্রস্তুত ভাল হয় নাই সভা, কিন্তু তাঁহারা করিয়া-ছিলেন। একণে নৃতন বালালা সম্পাদ-কগণদারা প্রাস্তত হইবে। কথকের কার্যা সহজ ছিল। ভাঁহারা বক্তৃতা করি-ভেন, আবালবৃদ্ধ সকলে গুনিভ, সকলে বুৰিত। নানকলে এককোটী লোক উ:হাদের কথা গুনিরাছিল, বুঝিয়া-ছিল। সম্পাদকের সে উপার **নাই**; তাঁহাদের বক্তৃতা ভাল হউক, মন্দ হউক, এককোটীর হলে কেবল দশহান্দার না হয় পঞাশহাজার লোক ভানিরা থাকে, পড়িয়া থাকে।

কিন্তু সম্পাদকের কথা শুনিবার নিমিত্ত দশলক্ষ লোক প্রস্তুত হইরাছে,
সম্পাদকেরা সে সকল লোককে আকর্ষণ
করিতে পারিছেছেন না। হেতু প্রথমতঃ অকুভব হর সম্পাদকগণের অযোগাতা, দ্বিতীয়তঃ হয় ত তাঁহাদের নিশ্চেইতা। অযোগাতা এইজনা বলি যে,
যে গুণে দশলক্ষ লোক আরুই হইবে,
'সে গুণ তাঁহাদের থাকিলে এই দশলক্ষ
লোক অয়পা তাঁহাদের হন্তগত হইত;
সংবাদপত্রে, সামরিকপত্রে যাহা ভাঁহারা
লোখন, হয় ত সে সকলের কোন উদ্দেশ্য
প্রাই। কোন্ প্রিকা কি উদ্দেশ্য
প্রচারিত্র হইতেছে তাহা আমি আনি
না, বুরিতেও পারি না; সম্পাদকেরা

নিমে হয় ত তাহা বুঝিলে বুঝিতে পারেন, কিছু মোটামুটি বাহা দেখিতে পাই,
তাহাতে নিজের অর্থাগম ভিন্ন আর
কোন উদ্দেশ্য অফুতব হয় না, অখচ
এদিকে তাহাদের অর্থাগমও দেখি না।
অর্থাগম হয় না তাহা তাহাদের
নিজের দোব, যে ছলে দশলক্ষ পাঠক
প্রস্তুত আছে, সে ছলে অর্থের ভাবনা
কি ?

দশলক্ষ পাঠক প্রস্তুত করা কঠিন ব্যাপার। পুরুষামুক্রমে অনেক্কাল যত্ন না করিলে তাহা হয় না; আমাদের সৌজাগ্যক্রমে তাহা হইরা রহিয়াছে। তাহা সামাজিক নির্মবিক্যারণে হউক, অথবা পূর্কপুরুবের প্রযুদ্ধে হউক, বালালার দশলক্ষ লোক পড়িবার জন্য প্রস্তুত ইরা রহিরাছে; কিন্তু বহুকালের এই উল্যোগ আমাদের দোষে বুণা হইতেছে অথচ সম্পাদকেরা তাহা দেখিতে পাইতে-ছেন না, তাহারা যদি এই দশলক লোককে পড়াইতে পারিতেন, বালালা নৃতন হইত, বালালির সামাজিকভা কতই বাড়িত।

হুই একজন মহাত্তব সম্পাদক খগ পীড়িছের ন্যায় "একতা! একডা!" ব-লিরাশ্যায় শুইরা চীৎকার করেন। কেছ বা বাযুগ্রন্তের ন্যায় মাথা কাঁপাইয়া, মন্ত বিকট করিরা, অনৈক্যের নিমিও বালালিকে গালি দেন। গালি দিয়া কল কি? পালিকা কর্মন পড়ে, ভোষার কথা কয়জন শুনে, একডা জন্ম এরপ কি উপকরণ ভোমার পত্রিকায় থাকে ? তুমি কি লিখিয়া থাক যে তাহা পড়িয়া সকল বাঙ্গালি সেই কথা আপনা আপনি একভাবে আলোচনা করিবে ?

এক্ষণকার বাঙ্গালির সাধারণতঃ আলোচনা করিবার কিছুই নাই; তাহাদের যাহা দিবে, তাহারা তাহাই আলোচনার পথ কেথাইরা দাও, তাহারা সেই পণে চলিবে; কেছ কেছ অন্যপথে গেলেও যাইতে পারে; কিন্তু অধিকাংশ লোক প্রদর্শিত পথে যাইবে। একবিষয় পরক্ষার সকলে একই প্রণাশীতে ভাবিলে কল ঐকমতা।

আমি নিজে ঐকমত্যের গোঁড়া নহি,
বরং অনেক সময় মতের অনৈকাে
উন্নতি সম্ভব বিবেচনা করি। কিছু
আনাকে সে মতাবলম্বী করিতে চাহি
না । যদি এক্ষণে বালালার সামাজিক্ উ
নতি চাহ, তবে বালালার দশলক্ষ
লোককে পড়াইতে চেটা কর, ভাহার
পর বলসমাজ নিশ্চয় নুতন ছইবে।

দশলক লোক পড়াইবার চেটা করা কঠিন। বাঁহারা এই চেটা করিবেন এবং ক্রমে কুডকার্ব্য হইবেন, তাঁহারা বল-মাতার সার্থক সন্তান, তাঁহারা ইংরেলি উপাধিধারী "টার অফ্ইতিয়া" "না-ইট কনাঞার" অথবা বালালা উপাধি-ধারী, রালাবাহাত্র, মহারাজবাহাত্র অপেক্যা শতগুণে পুল্য ও মান্য। वित्नव कांनि नां (य, (क अक्स्तन वानां-লির মধ্যে দর্বপ্রধান মান্য। তিনি বিনিই হউন, অনুসন্ধান করিলে হয় ত দেখা शहित्य त्य, धनाष्ठा त्राक्यवः त्याक्षय विश्वा তিনি মানা। তাঁহার মানোর হেতৃ জন্ম! তিনি নিজের কার্যোর নিমিক মান্য কি গণ্য নছেন: যদি তিনি কথন কোম কার্যা করিয়া থাকেন, ভাহা হয় 🖷 **८क वल अञ्**दर्शास। आवात इम्र छ ट्र कार्या हांना (मध्या खित्र आत कि इरे नहर। যাহারা টাদার জন্য মান্য, তাঁহারা অবশ্য गाना, डांशांत्र हांताव देवता जानक মঙ্গলকর কার্য্য সম্পাদিত হয়, বাঁহারা চাঁদা দেওয়ান তাঁহারা আরও মানা। কিন্ত বাঁহারা চাঁদা করান ভাঁছারাই সংকার্য্যের মূল। ত'হারা নিবে প্রায়ই নিধ্ন, এ পৃথিবীর ভাল ্ৰিধ নের্বারা সম্পাদিত হইয়া থাকে; এম্বলে বিলাতের ইতিহাস নাড়া দিরা এ কথা প্রমাণ করিবার প্রয়োঘন নাই। ইাহারা ধনসম্পন, তাঁহারা প্রায় বিলাস-ভোগী হইয়া পড়েন, সমাজের মঙ্গল চিন্তা কবিবার ভাঁচাদের সাবকাশ থাকে না, প্রবৃত্তিও হ্য না। এ সং-কার্যাক্ষম কেবল নির্ধনের।। অতএব যদি কথন ৰঙ্গসমাজের দশক্ষ লোককে পড়াইবার উদ্যোগ হয়, তাহা निर्धानतम् बाता इटाव ।

যাঁহারা নিঃস্বার্থ ছইয়া কেবল আপন চেটার বাস্থালার দশলক লোককে পড়াইতে পারিবের, তাঁহাদের হারা বলসমাজ নৃতন হইবে, তাঁহারা মথাথই বাহাত্র, তাঁহালের ছিরবল্প হইলেও
তাঁহারা পূল্য, তাঁহাদের বাহাত্রী কেহ
দেখিবে না সভ্য, কিন্ত যে দেখিবে
সেই ব্রিবে।

একৰে কি উপায়ছারা তাঁহারা বন্ধ-ममाबदक পড़ाइरवन। भरन कत्र, नशरत নগরে, প্রামে প্রামে, ছুই চারিজন বাঙ্গালার মঙ্গলাকাজ্জী এই ব্রভ গ্রহণ করিলেন। তাঁহারা মনে মনে একাস্ত প্রতিজ্ঞা করিলেন যে, ছুইটিকে পা-রেন, দশ্টীকে পারেন, যত লোককে পারেন, পড়িবার প্রবৃত্তি দিবেন, কিন্ত প্রবর্ত্তিত ব্যক্তিরা কি পড়িবে ? সক-লেই পড়িতে পারে এরূপ সংবাদপত্র কি সাময়িকপত্ৰ ভ কিছুই নাই। যে সকল সংবাদপত্র আছে, তাহাতে জন্মাণ-**(मर्मात त्राक्रनी** छि, अथेवा क्रमरमरमंत्र কাটিস্বফ নটিস্বফ প্রভৃতির মন্ত্রণা বা ঘটনা লিখিত থাকে, তাহাতে বাঙ্গা-লির সহামুভৃতি কেন জন্মিবে। সকল সামন্ত্রিকপত্রিকা আছে, ভাহাতে হয় ত বিলাতি দর্শনের কচকচি, না হয় অন্য মাথামুগু লিখিত থাকে, লোকের তাহা ভাল गार्ग ना, याहा जाशास्त्र ভान লাগিবে, তাহা কে তাহাদের দিবে ? याँशात्रा विष्मय विद्यान् गर्सनाथात्रशात्र निः भिक (नथा डाँहारमंत्र मांधा नरह; বিদ্যাভারপ্রস্তেরা লিখিতে গেলে বিদ্যার टिकी लार्ग, ठाँहाता याहा, **टलर्थन**, লোকে তাহা বুৰো না, কেবল বিষানের। পরস্পার ব্রেন। ভাছাই বোধ হর সেকালের সংস্কার ছিল, " পণ্ডিতে পণ্ডিতে কথা সমস্যা প্রিয়া।" বে বিহানের লেখা ব্রা যার না ভিনি বেন নিজিত থাকেন।

একণে জিজান্য যে, তবে বালানার দশলক লোকের নিমিন্ত কে
লিথিবে ? আমরা বলি যে, যে সকল
বিহান ব্যক্তি অপর সাধারণ লোকের
সহিত মন মিলাইতে পারেন; বাহারা
ব্রেম, লোকেরা কিরপ চিন্তা করে;
সে চিন্তার প্রশালী কি; কোন কথার
পর তাহালের কোন কথা মনে আইসে;
—তাহারাই একলে সাধারণের লেথক
হৈতে পারেন। কিন্তু এরপ ব্যক্তি
অভি অর, অনুসন্ধান করিলেও পাওরা
কঠিন।

অভএব একণে পরামর্শ আবশাক। বাঁহারা সংসারী, বাঁহারা কুপে প-ভিত হইরা সাগর জ্লিরা গিরাছেন, ভাঁহারা এ পরামর্শের জনধিকারী। শাহারা জীর কঠ রয়ে ভ্বিত ককুন, তাঁ হারা নির্কিন্তে সংসার চালাইতে থা- কুন, ভাঁহারা বালালা চালাইবার কেইই
নহেন। ভাঁহারা আপন ঘরের উরতি
ভাবুন, বালালার উরতি ভাবিবার ভার
ভাঁহালের নহে ? যে বুবারা সংসারের কুদ্
আরতনে এপর্যান্ত বন্ধ হরেন নাই,
ভাঁহারাই এ পরামর্শের বিশেষ অধিকারী। অভএব ভাঁহারা পরামর্শ
করন।

পরামর্শের বিষয় এই খেঁ, কোন সর্বজনীন পজিকার একণে অন্তর্গান করা উচিত কি না ? যদি ভাহা উচিত বাধ হয়, তাবে সাধারণযোগ্য কেথক জ্টিলে কার্য্য আরম্ভ হইবে এরপ বিবেচনা করিয়া অপেকা করা উচিত কি না। অন্দর সরল ভাষায় লিখিত যে কয়েকখানি ক্রে পজিকা একণে প্রচলিত আছে, ভাহার মধ্যে ছই একখানি নির্বাচন করিয়া কার্য্য আরম্ভ করা যাইতে পারে কি না। তাহার পর পরামর্শ কিরূপে দশলক লোকের হত্তে সেই পজিকা সমর্শিত হইতে পারে।



### রত্বরহস্য ৷

#### मुका।

আমরা "রত্মরহসা" মুক্টার্পণ করিরা যে করেকটি প্রস্তাব লিখিয়াছি,
ভাহাতে মুক্তার জাতি ও গুণাগুণ বিচা'রিভ হইয়াছে। আল্য সেই প্রস্তাব
স্মাপ্ত করিব, পরে রত্মন্তবের অসুসন্ধানে
প্রবৃত্ত হইব।

মুক্তাসম্বন্ধে প্রধান প্রধান বক্তব্য সকল বলা হইরাছে, কেবল ''বেধকার্য'' ও মূল্যকলনাপ্রণালী বলিতে অবশিষ্ট আছে, স্থতরাং মূল্যকলনাতেই প্রস্তা-বের শেষ হইবে।

विष कतिवात विधि।

মুক্তাকে একপ্রকার প্রস্তর বলিলেও
বলা যার। মুকা অতি কঠিন পদার্থ;
মুতরাং তাহার বেধকার্য্য সহল নহে।
ইচ্ছা করিলেই ইচ্ছামত ছিদ্র করা যার
না। শুক্তিগর্ভ হইতে মুক্তাফল চয়ন
করিয়া তাহাকে প্রক্রিয়াবিশেষধারা সংক্বত করিতে পারিলে তবে তাহা মুধবেধ্য হয়। মুক্তাব্যবসায়ীয়া যে প্রাক্রি-

রারধারা মৃক্তা ক্থবেধ্য করিতে সমর্থ হইরা থাকেন, সে প্রক্রিয়া রছণাল্লে অতি উত্তমরূপে উপদিষ্ট আছে। বথা— "কৃষা পচেৎ স্থপিছিতে শুভদারভাতে, মৃক্রাফলং নিহিছন্তন শুক্তিকাণ্ডম্। ক্যেটিস্তথা প্রণিদ্ধীত তভল্চ ভাণ্ডাৎ, সংস্থাপ্য ধান্যনিচরে চ ভ্যেক্ষাসম্॥ আদার তৎ সকল্মেন তভাের ভাণ্ডম্। শুলীরজাত রস্বোজনয়া বিপক্ষ্॥ ঘুল্টং ততাে মৃত্তন্কত পিণ্ডম্লৈঃ ক্র্যাৎ যথেচ্ছ মিই মৌক্তিক মাণ্ডবিশ্ব।।

গুক্তিগর্ভ হইতে মুক্তাফল আহরণ করিয়া, জন্য এক শ্ন্য গর্ভ গুক্তির মধ্যে রাথিয়া প্টিতকরতঃ 'দার†' নামক দ্রেরবারা ভাগুরচনা করিয়া ভয়্মধ্যে রাথিবেক। যে পরিমাণ পাকে কিঞ্চিৎ ক্ষেটিতা (উচ্চ্নভা) জল্মে, সেই পরি-মাণ পাক হইলে মুক্তাসকল ভাগু হইতে বাহির করিবে। একমাসকাল ধান্য রাশিমধ্যে স্থাপন করিবে। একমাস

- \* " আরভাণ্ডং" পাঠের পরিবর্ত্তে কোন কোন পুস্তকে " আন্যভাণ্ডন" এইরূপ পাঠ দেখা যার। কোন পাঠ যথার্থ, তাহা আমরা নির্ণর করিতে অসমর্থ। যাহারা মুক্তার শোধনাদি কার্য্য করিরা থাকে, তাহারাই এরূপ পাঠাপাঠের বিচার করিবার যথার্থ অধিকারী।
- † এই "দার" জবোর বাঙ্গালা নাম কি তাহা আমরা জানি না। অভি-ধানগ্রন্থে দেখা যায়, "ঘার নামে একপ্রকার ওয়ধি আছে" কেহ কেহ "দারু-ভাণ্ডে" এরূপও পাঠ করিয়া থাকেন। যাহাই হউক, কাষ্টনির্মিত কি বনজ ওয়ধিনির্মিত পাত্র যে কিরূপে পাক্রিয়ায় ব্যবহার করিতে পারা যার, ভাহা আমরা জ্ঞাত নহি।

পরে সেই দকল মুক্তা অরযুক্ত অন্য ভাতে জামির লেবুর রসসংখোগে পাক করিবে। পরে মদনবৃক্ষমূলের স্ক্র ও মৃত্ কুচী প্রস্তুত করিয়া ঘর্ষণ করিবে। এইরূপ করিলে মৃক্তাসকলে ইক্ষাক্রমপ ছিক্র করা যাইবে।

#### (भाषन विवि।

শুক্তিগর্ভে থাকা অবস্থার মুক্তার ওঁ শুক্লা ও প্রকান্তি থাকে না। মণি-কারেরা প্রক্রিরা অতি উত্তম কান্তিযুক্ত করিরা থাকে। গরুড়পুরাণ ও যুক্তি-কর্মজন্ধ প্রভৃতি গ্রন্থে মুক্তার ওঁজ্ঞলা-বৃদ্ধি ও নির্দ্ধনীকরণসম্বদ্ধে এইরূপ উক্তি আছে।

মূলিপ্ত মৎসাপ্টমধ্যে গতন্ত ক্বন্ধা,
পশ্চাংপচেন্তন্ত্ব ততশ্চ বিতানপত্যা।

হুৱে ততঃ পর্যনি ভবিপচেৎ ক্র্যায়াং
পকন্ততাহিপি পর্যা শুচি চিকলেন।

শুদ্ধ ততো বিমলবন্ত্র নিষর্বপেন
স্যান্মৌক্তিকং বিমল সদ্গুণকান্তিলালয়

অর্থ এই যে, মুক্তাসকল মৃত্তিকালিপ্ত
মংস্পট্রযন্ত্রের মধ্যে রাখিরা উদ্দীর মূলবুক্ত

হুৱে পাক, তৎপরে উক্তল্পল প্রক্রেপ,
পরে ক্র্যা অর্থাৎ চুর্বন্তবে পাক, তৎ প্রস্করিণ কেবল জলে পাক করি-

বে। অনন্তর নির্দাল, শুল্র ও স্ক্র বল্লেরছারা মার্জন করিবে। এইকপ প্রক্রিরাছারাই মুক্তাসকল নির্দাণ ও ঔজ্জন্যযুক্ত হর, এবং সংগুণ ও স্থকান্তি ধারণ করে।

#### ক্তবিমতা পরীকা।

মুক্তা অতি মূল্যবান্ ও স্থলর পদার্থ। ভারতবাসীরা ইহাকে সহারত্ন বলিয়া আদর করিয়া থাকেন। আদর ওমৃ-লোর আধিকা থাকিলেই তৎসঙ্গে ভাহার ক্তিমতা ঘটিয়া থাকে। মুক্তাও মূল্য-वान् ७ व्यानरतत्र वस्त्र विषया इष्टरनारकता তাহাতে ক্বত্রিমতা করিয়া থাকে। যুক্তি-ভোজদেব निश्चित्रांट्यन, করতক্ষকার (य, जिःइनएमध्यत्र (कोणनी मञ्स्यात्रा অতি আশ্চর্যা ক্রতিম মুক্তা প্রস্তুত করিয়া ক্রেভাদিগের মনোহরণ করিয়া থাকে। তাহারা কাচের ন্যায় শুভ্র ''তার'. রজতে তৎ শতাংশ হেম (স্বর্ণ) যোগ দিয়া পারদমধ্যে রক্ষাকরতঃ একপ্রকার মুক্তা প্রস্তুত করিয়া থাকে। সে মুক্তা **(मर्ज्यभाज, क्नाक्न किছू नारे**।† पुक्तिकझछक यरमन, मुख्नात्र यनि कृषि-মতা সন্দেহ হয়, তবে তাহার পরীকার্থ এইরূপ প্রক্রিয়ার আশ্রয় লওয়া আব-

<sup>\*</sup> যুক্তিকরতকণ্ণত সংস্ত বাক্যটির সংস্কৃতাসুরূপ অর্থ এইরূপ; পরত্ত যুক্তাব্যবসারীরা যে কিরূপ করিরা থাকেন তাহা আমরা অসুসন্ধান করি নাই।

<sup>† &</sup>quot;খেতকাচসমং ভারং হেমাংশশতবোজিতমু। রসমধ্যে প্রধার্থেত মৌক্তিকং দেহভূষণম্।। এবং হি সিংহলে দেশে কুর্বন্তি কুশনা জনাঃ"— ইতাদি।

'ধান্দ্ৰন ক্বজিম সন্দেহ: কচিঙ্কৰতি মৌক্তিকে ৷

উष्टि मलवर्ग स्त्रप्ट निमार छद्दामस्य-

क (म

ক্বজিমন্।"

ত্রীহিভির্মর্দনীয়ং বা শুষ্ক বস্ত্রোপবেষ্টিতম্। যক্ত্নায়াতি বৈবর্ণাং বিজ্ঞেয়ং তদ-

• যদি কোন মুক্তা কুত্রিম বলিয়া সন্দেহ হয়, তবে তাহা জলে ও উষ্ণ সলবণ স্নেহে অর্থাৎ লবণাক্ত তৈল কিয়া স্বত প্রভৃতির মধ্যে একরাত্র রাখিয়া দেখি-বেক অথবা শুদ্ধবস্ত্রের মধ্যে রাখিয়া ধান্যদারা ঘর্ষণ করিবেক। এইরূপ

সিংহলীয় শিলীরা ঘেমন নানা উপাদানে ক্রতিম মুক্তা প্রস্তুত করিছে গারিত, তেমনি ব্যাড়ি প্রভৃতি মুনিরাও ভাহার নানাপ্রকার পরীক্ষা করিছে পারিতেন।

कतिरल यमि विवर्ग ना इय, छ वर्षे भा

মক্তা অক্ততিম জানিবে।

\* কল্পজ্মধৃত বৃক্তিকলতক্প্রন্থে ক্লিম মৃক্তাপরীক্ষাসম্বন্ধে অন্য কয়েকটি বচন আছে। তাহা এই—

"কিপেং গোম্ত ভাতে তুলবণকার-

স্বেদয়েছছিল। বাপি গুছবজ্বেণ বেষ্ট-

হত্তে মৌক্তিক মালায় ব্রীহিভিল্চোপ-ঘর্বয়েৎ।

কৃতিম ভঙ্গমাপ্রোতি সহস্কাতি

मीभाउ।।"

কৃত্রিম কি অক্কৃত্রিম, সন্দেহ হইলে তাহা লবণ ও ক্ষারসংযুক্ত গোম্ত্রতাওে ফেলিয়া রাথিবেক, অথবা বহিন্দারা স্থেদ লাগাইবেক। অনন্তর গুক্ষবত্রে বেষ্টিত করিয়া পশ্চাৎ তাহা হন্ততলে রাথিয়া ধানোর সহিত মর্দ্দন করিবেক। যদি কৃত্রিম হয়, তবে ভাঙ্গিয়া ঘাইবেক, আর যদি অকৃত্রিম হয়, তবে ভাঙ্গি ভাঙ্গিবে না, প্রভ্যুত নির্দ্মণ দীপ্রিযুক্ত হইবেক।

#### মূল্য ব্যবস্থা।

যুক্তিকলতক, গক্ষড়পুরাণ ও বৃহৎসংহিতা প্রভৃতি প্রস্থে মুক্তার দোষ, গুণ,
ও শোধননিধি প্রভৃতি যেরূপ বিচারিত
হইয়াছে, তাহা বলা হইল, মুলোর
নিয়মও উক্ত প্রস্থে ক্থিত আছে,
এক্ষণে তাহারও কিঞিং বলা গাইতেছে।

পূর্ব্বকালে ভার, তেজ, কান্তি এবং
বণকার- অন্যান্য গুণনিচয় ( যাহা পূর্ব্বে নিণীত
সংযুতে । ' হইয়াছে ) অনুসারেই মুক্তার মূল্যাববেষ্ট- ধারণ করা হইত। এখন আর প্রায়
য়েব । সেকপ প্রথা দুট হয় না । পূর্বকালে

''ব্যাড়ির্জগদে জগতাংহি মহাপ্রভাব সিদ্ধোবিদগাহিত তৎপরয়াদরালুঃ' ইত্যাদি ।৷ যেরপ আকাবের মৃক্তা যে পরিমাণ মৃল্যে বিক্রীত হইত, তাহা বৃহৎসংহিত্তার বচননিচর আলোচনা করিবেই জানা যায়। তাহাতে শিধিত আছে, "মাষক চতুইরধৃত সোক্ষা শতাহতাত্তি পঞ্চাশং।

কাৰীপণা নিগলিত। মূলাং তেকে৷ গুণ্যুৰসাং\*

৪ মাষক<sup>\*</sup> পরিমিত অর্থাৎ ২০ রতি ওজনের মুকা বদি তেজ ও স্তাব স্থ বৃত্ত ইত্যাদি গুণসুক্ত হন, তবে ভাচার মূল্য শতগুনিত ত্রিপঞ্চাশৎ কার্দাপন অর্থাৎ ৫০০০০ শত কার্দাপন। ফুক্তিন কর্মজন্ম অন্য প্রমাণ এই— এক্স্য শুক্তি প্রভব্সা শুদ্ধ, মুক্তামণেঃ শানক সন্মিত্রা। মূল্যং সহস্রানি কপদ্দিকানি ত্রিভিঃ শতৈ রভ্যধিকানি পঞ্চা''

শুক্তিকাত বিশুদ্ধ মুক্তান্ন্যদিশণ অর্থাৎ ৪ নাধা পরিমিত হয়, তবে ভাহার একটির মূল্য ৫ অধিক তিনশত সহস্কপদিক। অপিচ—

'' हजू: मह्यः न ७ (७३म) मृगाम्'

তাদৃশ গুণযুক্ত মুক্ত। যদি তদপেক। আইমাস ন্ন ভাবি হয়, তবে তাহার মূল্য চারিসহত্র কপদিক হইবে। বৃহৎসংহিতার জানা এক প্রাসাণের উল্লেখ দেখা যায়, যথা— ''মারকদলহান্যাহতা হাজিংশৎ বিংশতি ক্সয়োদশ চ। অঠৌ শভানি চ শত্তারং জিপঞ্চাশতা সহিত্য।''

পূর্ব্বাক্ত ৪ মাধা পরিমাণ হইতে যদি
নামকদল অর্থাৎ একনামার এক চতু
থাংশ হীন হয়, তবে তাদৃশ অর্থাৎ
া নামা পরিমিত মুক্রাব মূল্য ২২।২০১৯৮০০।২০০০ গো কার্যাপণ। উক্ত গ্রন্থে
মূল্যঘটিত বচন অনেক আছে।
তংহার অপর একটি বচন এই—
'ব্লামকাংস্ত্রীন বিভয়াং গুরুগ্রে
ত্রে হসা মূল্যং পর্মণ প্রদিষ্টম্।'' ইত্যাদি
ইত্যাদি।

অগ্রিই যে, যে মুক্তা গুরুছে ০ নাধা প্রিনাণ হয় তাহার মূলা ছুইসহজ্ঞ, কার্ষাপ্র।

পূর্বকালে এইরূপ নিরমে কণ্ণ ক অর্থাৎ কড়ির বিনিমরে মুক্তারত ক্রীত বিক্রীত হইত। স্বর্ণ, 'রৌপ্য কি তা-আদি মুদ্রার বিনিমর সময়েও উল্লিখিত কার্ষাপণের নিরম ব্যতিক্রান্ত হইত, না। 'ভির ভির ওজনের মুক্তার ভির ভির পরিমাণ ক্রম্পারে রত্বলাক্তে বেরুণ

\* ' সাব '' শাকের অর্থ অনেক। মাষশকে তলামক কলার ও পরিমাণবিশেষ ব্যাইরা থাকে। পরিমাণসহদ্ধেও নানা মত দৃষ্ট হয়। এখানে মাষশক্ষের অর্থ ৪ গুলা পরিমাণ গ্রহণ করিতে হইবেক। বেহেতু মণি, মুক্তাসম্বন্ধে জৈলপ পরিমাণ প্রহণ করিবার জন্য যুক্তিকলভক্ষাম্থে বিস্পষ্ট উক্তি আছে। যথা—'পঞ্চিমাঘকো জেয়ো গুলাভির্মাধকৈ স্বথা। চতুর্ভিঃ শাণমাখ্যাতং মাষ্টকর্মনি বেদিভিঃ'' ইত্যাদি। মূল্য অবধারিত আছে, সে সমস্ত সক্ষণন করা এক্ষণে নিম্প্রােজন, যেতেত্ এক্ষণে নূতন প্রথাই প্রবেল। অপিচ, নিয়মক কতকগুলি পারিভাষিক শক্ষ আছে, সেগুলি এক্তলে বাক্ত কবিলে "মুক্তা কত বড ছ্টবার সন্তব ?" গুলি এক কুত্তল চবিভাগ্রপুফল পা পুরা বাইতে পারে। অত্তব, কুত্তল চরিভাগ্তাব ক্ষনা অনা ফল নাথাকি লেও এক্ষনে সেগুলিব উরেণ কব:

> ধ্রা ১ কুচ। হিক্ন:... ১০ ধ্বন মাধক ৫ ,.। দার্বিক .. ১৬ .। শান..... ২০ ,,। স্তপূর্ণ... ২০ ..। কৃষ্ণণ শিকা .... ৩০ ..। রপক সেমি... ৪০ ..।\*

ন্থংসংহিতা অপেক্ষা "যুক্তিকল্লতক"
গ্রেছ ন্লাগপন্ধে অনেক কথা আছে।
৮ বালা রাগাকান্ত দেববাহাত্র অকত
কল্পনে কেবল যুক্তিকল্লতক্র বচনমালা
সল্লিবেশিত কলিয়াছেন, বৃহৎসংহিতার
একটি বচনও উদ্ধৃত করেন নাই।
বৃহংশংহিতাগ্রন্থে ক্ষুদ্র মুক্তার মূলাসম্প্রে
কোন নির্দ্ধারিত ও বিল্পন্ত নিরম নাই
থাকিলেও "মাষক" পরিমাণ হইতে
মুলোর অতি ক্রনির্ম প্রেদ্শিত হইছাছে।
"মাষক" হইতে "শাণ" পর্যান্ত নাম-

প্রাহী মূল্য নির্দিষ্ট আছে, কোন এক সাধারণ নির্ম নাই। "শাণ" হইতেই ত'দৃশ সাধারণ নির্ম আবন্ধীকৃত হই-রাছে। মধা—

শান্থেপরং মাষক মেক মেক নেকং
বাবছিবর্দ্ধেত গুলৈবপীলন ৷

নালান ভাবং বিপ্তবেল ঘোগা
নাপোতা নাবৃষ্টিকতে পি লেশে ॥

'শাল' পরিমানের পর, ওজনে যত

নামা অধিক হউবে, অনাবৃষ্টিহত দেশেও
ভাগা প্রতিক অধিক সাধার মূলোর
হৈওলা প্রির থাকিবেক ৷ ভোজদেবকুত
স্তিকলত্র প্রস্থে আরও লিখিত আছে

যে,

'হেলাভি হলোত্য মধ্যমানাং

যান্ত্রীক্ত নামিই মূল্য মুক্তম্।

তঙ্গাতিমাতে ন লাতু কার্যাম্

গুনৈবহীনসা হি তৎপ্রানিষ্টম্।''

মচক রন্ধান্তে হল, অভিহল, উত্তম

ও মধ্যমানি মূকার যেরপ মূলাবিধারণ
করা হইলাছে, তাহা, যে সে মুক্তার

কনা নহে। মুক্তার যে সকল গুল বনিভ ইইলাছে, যদি সেই সকল গুল

গাকে, তবেই সে মুক্তা নির্দ্ধারিত মূল্যে
বিক্রীত হওরার যোগ্য।

'যাতু চল্লাংগুলংকাল মীষ্থিক্কলাকৃতি,

অম্লাৎ স্পানং ভাগ মর্ভ্রালভেত

₹

শুরুৎসংহিতা ও যুক্তিকলতরুগ্রছে পরিমাণবোধক ''নিকরশীর্ষ'' শিক্তপ্র'' ''চ্ব'' প্রভৃতি আরও কলেকটি শক আছে, ভেল্বারা অনুমান হল, যে, প্রাচীনকালে কেহনা কেহ উল্লিখিত পরিমাণের কুচংমুক্তা দেপিয়াছিলেন।

य मूकांत मीखि हक्षांश्वममृग वर्शाः মধুবত্তল, কিন্ত আকৃতি ঈষৎ বিশ্বফলের ান্যায় অর্থাৎ স্থগোল নহে, সে মুক্তার ম্ল্য নির্দিষ্ট মুল্যের সপ্তম্ভাগেব এক ভাগ হইবেক।

পূর্বেই বলা হইয়াছে, যে, মুক্তার আকারগত বৈলক্ষণা অনেক্বিধ হ্ইযা থাকে। মুক্তার গঠন যতই বিলক্ষণ হউক, স্বৃত্ত অর্থাৎ স্থগোল মৃক্তারই মৃশ্য অধিক। গোলতার তারতম্যাত্ন-সারে বিষমগঠনের মৃক্তার মৃল্য নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। স্থপিচ,

''পীতক্যা ভবেদৰ্শ মবৃত্ত্যা লিভা-

· গত: 1

. যানিচ।

বিষমব্যস্ত ভাতীনাং ষড্ভাগং মূল্য गानिरभए।"

গুণযুক্ত ও অবৃত্ত মুক্তা অপেকাণী তক জাতীয় মুক্তার অর্দ্ধ মূল্য হ্টয়া থাকে। আর বিষম ও বাক্তজাতীয় মুক্তাদকলের মূলা প্রকৃতবিত্ মুক্তা অপেকা ছয়ভাগের একভাগ হয়। व्यक्तिभागि मास्यावेश भक्तर्गानि

ष्मगातां । ह यानि छः कतकां कार-

একদেশ প্রভাবন্তি সকলাগ্রেষিতানি চ।। यानि চাতকবর্ণানি কাংসাবর্ণানি যানি চ। মীননেত্রবর্ণানি প্রস্থিভিঃ সংবৃতানি চা मानावानि ह यानि द्याख्याः मृनाः

পদাংশিক্ম্॥ (म मुका त्कारियुक्त, कि अर्द्धत्रभ, जवः एग मुका शक्र व वर्षा ह्रवीवन् বিলিপ্তের ন্যায় দৃষ্ট হয়, যে মুক্তা সার-রহিত, গাহা করকার ন্যায় আকারযুক্ত, যাহার একদেশমাত্র প্রভাবুক্ত, যাহাতে হুস্ক গুক্তিগও আলিট থাকে, যাহার वर्ग हरिकवर्षात मृत्रभ, अथवा काःमा-वर्तित मनुभ किया भीनरनरखत नाम, বাহা গ্ৰন্থিক অথবা অনা কোন দোষে. দৃষিত, সে মুক্তাব মৃণ্য প্রকৃত অপেকা তকচতুর্থাংশ।

রত্নশান্তে মৃক্তার মৃল্যদম্বনীয় অনেক কথাবার্তা থাকিলেও এই স্থানেই শেষ করা গেল। যে**হে**ভূ একপ প্রস্তাবের ক্তৃহল চরিভার্থতা ভিন্ন অন্য কোন বাবহারযোগা ফল নাই।

আর এক কথা—কর্ক্রমমভিধানে যুক্তিকলতক ও গরুড়পুরাণের বচন ভিন্ন বৃহৎসংহিতাও মুক্তাবলী প্রভৃতি গ্রন্থের একটি কথাও লিখিত হয় নাই। এক্ষণে তাহা হইতে মুক্তাহারদক্ষীয় হই একটি প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া প্রস্তাব সমাপ্ত করা विरक्षप्र त्वांध इट्टिड्ड। हारत्रत्र (य ভাগকে আমরা ''নহর''বলি, ভাহার সংস্কৃত নাম '' লতা।'' কোন কোন विश्व । • द्वारित '' हात्र' विनिगां ७ উলে विक हम । বৃহৎসংহিতা বলেন, ভৃষণবেত্তা পণ্ডি-তেরা পৃথক্ পৃথক্ নহরযুক্ত মুক্তাহারের পৃথক্ পৃথক্ নাম দিয়া থাকেন যগা---'' डेस्र ४६ न्त'' '' विश्व युष्ट्न न्त" ''(प वुष्ट्न र' '' অর্জহার '" '' হার '' 'রেশ্মিকলাপ '' ''গুড়ে' 'ক্ষেত্বিছে' 'মাণ্বক''

"অর্জনাণ্যক'' ' মন্দর" 'হারফলক" " নক্ষত্ত্যালা" ' মণিসোপান'' 'চাটু-কার'' ' একাবলী'' ' যষ্টি।''

দীর্ঘে চতুর্হত্ত এবং লতায় (নহর) অষ্টাধিক সহস্র।" এরূপ মৃক্তাহারের नाम ''ইटक्फ्रक्'' ইহা দেবতাদের • जृप्ता देशांत व्यक्तिक इटेल "विखय-ভ্ৰদ'' অষ্টাধিক শতসংখ্যক নহরের মুক্তাহার "দেবচ্ছক" নামে কীর্ত্তিত হয়। একাশীভি ল্ডাযুক্ত হঠলে "হার" এবং চতুঃষষ্টি হইলে '' অর্দ্ধহার।'' ৫৪ किया ५२ नहत हरेल "त्रश्रिक-লাপ'' ৩২ হটলে "ওচ্ছ" এবং ২০ इटेरन " यर्फा छक्। ১५ इटेरन "मान-तक" ১२ **१**३८न " ञक्षगानवक" ৮ ब्हेरल " मन्द्र" « नहत ब्हेरल " हात-ফলক।" ২৭ হইলে "নক্ষত্রমালা" অথবা "মুক্তাহত" কিলা মধামণি এবং স্থবৰ্ণগুলিকা থাকিলে ভা**হাকে** "মবিসোপান" বলা যায়। একপ হার াদি তরলক অর্থাৎ মধ্যমণিযুক্ত হয় তবে তাহাকে "চাটুকার" শংজ্ঞা দেওয়া र्य ।

ইচ্ছামুরপদংখ্যক মুক্তাহারদারা যে মিনিটান ও হস্তপরিমিত মালা প্রস্তত হয় তাহার নাম " একাবলী" আর সেই একাবলী মালার মৃধ্যস্থলে যদি মিনিধাকে, তবে তাহার নাম " যষ্টি।" এই

সংজ্ঞাসমূহের নির্ণায়ক বৃহৎসংহিতার বচনসমূহ এই---

স্থ্রভূষণং লতানাং সহস্রমষ্টোত্তরং চতুহ স্থ্য ইক্রফলোনায়া विषयुष्टन छम् रर्कन ॥ শতম্পত্যুতং হারে। দেবচ্ছন্দো হাশীতিরেকযুতা। **অষ্টা**ষ্টকোহর্দ্ধরা রশ্মিকলাপশ্চ নব্যট্কঃ।। দাজিংশতা তু গুচ্ছো বিংশ ত্যা কীর্ত্তিভোহর্দ্ধ গুচ্ছাখ্য:। **ৰোড়**শভিৰ্মাণবকো দ্বাদশভিশ্চার্ধ মাণবকঃ।। মন্দর সঙ্গোহন্টাভিঃ পঞ্চলতা হার ফলকমিত্যুক্তম্। সন্তাবিংশ ভি মুক্তা হস্তো নক্ষত্রমালেতি॥ অন্তর মণিসংযুক্তা মণিসোপানং স্থবর্ণ গুলিকৈর্বা। তরলকমণিমধ্যং তদ্ বিজ্ঞেয়ং ভাটুকার মিতি।। **এकावनी नाम गरबर्ट मःशा** হন্তপ্রমাণা মণিবিপ্রযুক্তা। সংযোজিতা যা মণিনা তু মধ্যে যষ্ঠীতি সা ভূষণবিত্তিককা।। এই হানেই রত্বরহদ্যের 'মৃক্তা' প্রস্তাব সমাপ্র'হইল। শাল্লাম্ভরে এত-

<sup>\*</sup> কেছ কেছ এরপ ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন-যে, অষ্টোত্তর সহস্র সংখ্যক "ন <sup>হর</sup>" নহে, অষ্টে তার সহস্র "মুক্তা।"

দপেকা অধিক কথা থাকিলেও বাহল্য-ভারে প্রহণ করা ছইল না। মুক্তাবলী নাসক প্রছে মুক্তার অনেকগুলি নাম একত পর্যায়বদ্ধ হইয়াছে। যথা—— ''অভঃসারং শৌক্তিকের মিলুরত্ব চা মৌক্তিকম্' ইত্যাদি ক্রমে দৃষ্ঠ করিবেন।। শ্রীরমদাস সেন।

### ccin 350 2 301 200

### মাধবীলতা।

२५

মাধবীলভার মাতা, পালের মুপে আপনার কলম শুনিরা প্রথমে অপঘাত
মৃত্যুকলনা করিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি
মরিলে পুঁটুর কি উপার হইবে, এই
কথা শুরণ হইলে আর মরিতে পারিলেন না,রাজিশেবে নিজিত পুঁটুকে বক্ষে
করিলা গৃহত্যাগ করিবেন এই হির
করিলেন।

সেই রাজে পুঁটুর মা বছলাণ অবধি
নিজিত গতির পদসেবা করিলেন, তাহার
পর অর্থানকারগুলি একে একে অসচ্যত
করিরা আপনার "টেপারির" মধ্যে রাধিরা ভাহার চাবি রামসেবকের
যজ্ঞোপবীতে বাঁধিরা দিলেন। আপনার সঙ্গে কি লইবেন, একবার এই
কথা তাহার মনে আসিল, ভাহার পর
কৈবল পুঁটুর "চুলের দড়িশুলি" যদ্ধে
অঞ্চলাতো বাঁধিলেন। আমীর শঙ্গ

ছাইপানি পানকের নিকটে ছিল তাহার
ধুলা ঝাড়িয়া হস্তমার্জ্জনা করিয়া যপাস্থানে রাখিলেন, তাহার পর দীপনির্বাণ
করিয়া শরন করিলেন। নিজা হইল
না। ঝাটকাপ্রশীড়িত তৃণের ন্যায়
পুঁটুর মার অন্তর থরপর কাঁপিতেছিল,
যে ঝাটকার বেগে মহাতরু উল্পূ
লিত ও নিপতিত হয়, সামান্য
তৃণের উপর সেই বেগ প্রধাবিত হইলে
তৃণ উন্মূলিত হয় না, মরেও না, কেবল
অনবরত ধুলায় লুন্তিত হইতে থাকে;
কান্তরে সীমা থাকে না। পুঁটুর মার দশা
সেইরূপ হইয়াছিল।

রাত্রি শেষ হইরা আদিল। যাত্রার সময় উপস্থিত দেখিয়া পুঁটুর মা শ্যা হইতে উঠিলেন। স্থানীকে প্রণাম করিবার নিমিত ধীরে ধীরে তাঁহার পালক্ষের নিষ্টবর্তী হইলেন। ধীরে ধীরে নিজিত রামসেবকের পাদ্মণে সম্ভক রাখিলেন, অমনি চক্ষে কল আদিল, পুঁটুৰ মা নিঃশব্দে কাঁদিভে লাগিলেন, ভাষার পর স্বামীর পদপ্রান্তে দাড়াইয়া চক্ষের জল মুছিতে লাগিলেন। অন্মের মত বাইবার সময় একবার স্থা-नीटक ना (पशिशाहे वा किन्नरभ यान ; পুটুর মা স্তরাং প্রদীণ জালিলেন, জালোকে নিজিত স্বামীর ক্ষেহ্ময় মুগ আরও কেহপুর দেখিয়া পুঁটুর মার চক্ষে আবার জল ভাগিল। রামদেব-ককে পুঁটুর মানিতা নিজিত দেশেন, কিছ তাঁহার মূর্তি ত আর কপন এরপ (দথেন নাই। চকু মৃছিরাপ্টুব না রামদেবকের মুগপ্রতি চাহিয়া রহি নেন; বালাকাল হইতে রাম্পেবক পুঁটুর মাকে যত আদর করিয়াভিলেন, যত যত্ন করিয়াছিলেন, সে আদর, সে यक, (म क्ष्यह, अभूनत (यन काँहात मूर्थ काना এकजिङ इहेग्रार्छ; मजन-नश्रत (कदल (मरे (ध्रमभश्र मूग (खिंगिर छ-ছিলেন। আবার দেখিলেন নিক্রিক স্বামী যেন নিঃসহায় হইয়া পড়িয়া রহিয়া-ছেন। পুটুর মার আবে যাওয়া হইল না, প্রদীপ নির্বাণ করিয়া স্বস্থানে शिया भयन क्तिरनन । श्रामी शनिकारिन त्र শঙ্গে সঙ্গে গৃহমায়। কতকটা অন্ধ-কারাবৃত হইল, তথন ক্রমে পদাকে षारात पात्रण इहेन, पात्रणभारखहे कलक-<sup>রটনা</sup> বিছাভাগ্রির নায় পুঁটুর মার घरत बनिया छेठिन, आंत्र भवन कवा <sup>ইইন</sup> না। প্ৰাতে স্বামী সেই কলফ

चर्मा खनिर्दन, धरे मत्न इर्हेबामाळ আর থাকিতে পারিলেন না। পুঁটুর মা প টুকে বক্ষে ভূলিয়া ভৎক্ষণাৎ বহিৰ্গত হইলেন। ঠাকুরখরের মারে দাড়াইরা গৃহদেবতা শালগ্রামকে প্রাণাম করি-য়া, মনে মনে বলিতে লাগিলেন, " দেখ, ঠাকুর ! বৃদ্ধা খাণ্ডড়ি রহিলেন, যেন তার কোন পীড়ানাহয়। আনর যিনি ভোমার নিত্য পূজা করেন, তাঁহার (गन कान विशम् ना इत्र।" शृंह्द মা আবার প্রণাম করিলেন। ভাহার পর বৃদ্ধা খাওড়ির খারে গিয়া দাঁড়াই-লেন, উদ্দেশে তাঁহাকেও প্রণাম করিয়া विनादनन, "मा! आभी सीन कर, পথে যেন আমার পুঁটুর কোন বিপদ্ হয় না।" এই বলিয়া অঞ্ল দিয়া চকেব জল মুছিতে মুছিতে ছই এক शम याहेर्ड नाशिस्नन, याहेर्ड या-ইতে স্বামীর ঘারের দিকে একবার कितिया दम्भिटनन, दम्भिदामाळ चामीत নিঃসহার মৃতি মনে পড়িল, আর একবার তাঁহাকে দেখিবার নিমিন্ত ফিরিলেন কিন্তু হারের নিক্ট আসিয়া দাঁড়াইয়া রহি-কিরৎক্ষণ পরে মন্তক নত করিয়া নিজিত স্বামীর উদ্দেশে আবার প্রণাম করিয়া চক্ষের মল মুছিতে মুছিতে পুঁটুর মা খড়কীবার দিয়া বহি-র্গত হইলেন। পথে আ্সিয়া পুঁটুকে অঞ্বদারা আবৃত করিলেন, জলাহরণ छेननक निका मीर्चकात्र वाकात्रांक की-হার অভ্যাস হিল, অভএব অভ্যাসবশভঃ

(मरे पिरकरे छनिलन। नीनाकारण শত শত নক্ষ অলিতেছে, স্থিয়বায়ু ধীরে ধীরে আসিতেছে, অথচ অঙ্গম্পর্শ করিভেছে না, কীণ চক্রালোকে বৃক্ষ সমূ-**पत्र निन्धान** त्रश्तिाष्ट्र, गृहमारखत्रहे दात কভ, পথে কেহ নাই, প্টুর মা मकन किছूरे (मिश्ट शारेतन ना, जिनि **অভ্যাদবশতঃ** একেবারে পুষরিণীর কূলে গিয়া দাঁড়াইলেন। তপনও অল্ল রাত্রি আছে। তথার দাঁড়াইরা পুঁটুর মা ক্রমে ক্রমে আপনার অবস্থা ব্ঝিতে পারিলেন, স্বামীর অজ্ঞাতে রাত্রি কালে বাটীর বাহির হইয়াছেন, রাম-সেবক হয় ত এতক্ষণ জাগরিত হইয়া তাহা জানিতে পারিয়াছেন, এতকণ হয় ভ অনুসন্ধান করিতে বাহির হইয়া-ছেন, তাঁহার এতকণ দৃঢ়প্রতায় হই-য়াছে যে, তাঁহার স্ত্রী পতিব্রভা নহে। কথা মলে হইবামাত্র পুঁটুর মা निहतिया छिठित्वन, लब्जाय मृज-**व९ इहेलन, व्यवनउपूर्य मुद्रावत्र**-क्ल में ज़िर्देश थाकिलन।, ज्ञानक-ক্ষণের পর মাথা তুলিয়া 'দেখিলেন, মানশশী যেন তাঁহার প্রতি চাহিয়া রহিয়াছে। অমনি আপনার গৃহ মনে পড়িল, সঙ্গে সঙ্গে মনে হইল, জন্মের মত ভিনি গৃহস্থে বঞ্চিত হইয়াছেন। **এই সমর নিকটম্ব অর্থবৃক্ষ হইতে** পক্ষীরা কলরৰ করিয়া উঠিল। পুঁটুর मा (मधिलन, शूर्वमिक् शक्काइ इह-রাছে, এখনই লোকে যাভারাত আরম্ভ

করিবে, অভ এব তৎকণাৎ সে স্থান ত্যাগ कतित्रा थाखत्रमध्या थादम कतित्वन, কিব্নুর গেলে পর স্র্যোদয় হইল। পুঁটুর মা আবার কতকদূর গিয়াপশ্চাং ফিরিয়া দেখিলেন, শান্তিশত্তাম আর দেখা যায় না; কেবল রামদীতার মনিদ-রের অগ্রভাগ দেখা যাইতেছে। তাহার वोशाह्का प्रयाकित्रण शैतकश्राखन माध्य खिनटिक्ह, भूँ हेत या त्रहेशांत माणा-ইয়া রামদীতাকে প্রণাম করিলেন; মাশার হাত দিরা পুটুকেও প্রণাম করাই-লেন। পুঁটু ক্রোড় হইতে কখন ক্সুড পদ দোলাইভেছে, কথন হাত তু-লিয়া পক্ষীদেব ডাকিভেছে, ক্থন মাতার মুখে হাত দিয়া মাতাকে টানি তেছে। কিন্তু পুঁটুর মা পুঁটুর সঙ্গে আর পূর্বমত কথা কহিতেছেন না, অন্য মনক্ষে পথ অভিবাহিত করিতেছেন,। (काथा याहेरवन श्वित्र नाहै। যাইবেন ভাবিয়াছিলেন, পিত্রালয়ে কিন্তু কলক মনে পড়ায়, আর সে मिरक यांकेटक ध्यवुक्तिक्टेन ना । **स्ट**क्ताः यब उब हलिए नाशिएनन। काशारक ध পথের কঁণা জিজ্ঞাসা করেনু নাঃ **कार्याय राहित याहात खित्र नाहे, शर्यत** कथा तम कि किकामा कतित्व ? पूर्विश मा निद्य काहारक क्लान कथा किछागः ना कक्रन, लाटक छाँशटक जिल्ला আরম্ভ করিল। প্রথমে একজন ছিন বস্তা বৃদ্ধা প্ৰশ্ন করিল, '' বাছা, কোথা যাবে ?" পুঁটুর মা কিঞ্চিং ইতস্ততঃ

कतिया विलिटलन, " आमि वार्शित वाड़ी যাব।" এই উত্তরে বৃদ্ধা পরিভৃপ্ত হ-ইয়া গোময়সঞ্যুন করিছে করিছে ৰলিল, "ভা, যাগু বাছা; যাবে বই কি; বাপের বাড়ী যাবে না !"বৃদ্ধা এক-বার করিয়া কথা কছে, আর একবার कतियां (गामयमदारन हातिमिक् (मर्थ। হ্রন্ধার শ্রোভা আবিশাক করে না, পুঁটুর মা চলিয়া গোলেন, বৃদ্ধা তথন ও বলৈতে লাগিল, " চিরকাল কি খণ্ডরবাড়ীতেই থাকিতে হয় ?"—" যাও বাছা ! "অন্ম জন্ম বাপের বাড়ী যাও; বাপের কাছে কে ? খণ্ডর বল, খাওড়ী বল, বাপের কাছে কে ?"—" এই যে আমি একা পড়ে থাকি; বাতের কামড়ে চীৎকার করি, পাড়ার পোড়াকপালীরা কে এক: वात्र अत्म जिल्लामा करतः। त्मात्ना !---ুসকলেই আপনার ঘরে ঘরে ওয়ে থাকে, (भय (भर खरम थारक ।"-"अरना ! চির্কাল কিছু স্মান যার না! আমারও এককালে সকল ছিল। আমার भारूष हिल, शांकु हिल, एउँ कि हिल।" —" নার এখন টে কি ঠেকাইতে পারি না, বুড়া হয়েছি,"—" এমন কপানও করে এসেছিলাম, ভালখাগীরা কি এত • ভাল কাল করেছিল যে, সকল সুখ তা-रमंत्र बरना।"--" (ठावशागीता कनभी कैंदिक शर्थ हर्तनं, रयम हिर्देश कारन प्रचर् भाग ना।" द्वा गार्ठ ব্রিয়া বেড়াইতেছে, আর আগন। খাণৰি এইক্লণ কথা ক্ছিডেছে। অব্য

সমর হইলে পুঁট্র মা দাড়াইরা বৃদ্ধার কথা ভনিতেন।

আংভার অভিজেম করিয়া পুঁটুর মা যখন রামপুর নামে একখানি অপরিচিত व्याप्तित्र निक्रेवर्खी इटेटनन, ज्थन दिना প্রায় দ্বিতীয়প্রহর; গ্রানপ্রান্তে একটি দীর্ঘিকায় সানার্থ গ্রাম্যলোকেরা যাভায়াত করিতেছিল। পুঁট্র মাও খান করি-त्वन गरन कतित्वन, कडकपूत शिया (प-(थन, शणशास्त्र तृक्ष्ण्यात्र इहेबन छी-লোক দাঁড়াইয়া তাঁহার দিকে চাহিয়া আছে। ছইজনেই যুবতী, পুঁটুর মার ভয় হইল, তিনি ভাবিলেন, ইহারা আমাকে দেখিয়া হয় ত উপহাস করিবে,হয় ত কি करू वितिर्व। निकाष्ठे ष्यना शथ शाकित्न, পুঁটুর মা দেই পথে যাইতেন, একণে অনন্যগতি হইয়া যুবতীদের দিকে সঙ্কো-हिन भाष हिना नाशितन, अक अक-বার সভাগে তাহাদের প্রতি চাহিতে এই সময় একজন ঈষং লাগিলেন। স্থলাঙ্গী বৃদ্ধা পশ্চাৎ হইতে যুবতীদের विनन, " এখনও माँ ज़ारत (कन ? दिना যে গড়িয়ে গেল।" যুবতীরা সভয়ে ভূমি হইতে আপন আপন কল্মী তুলিয়া কক্ষে সংস্থাপন করিতে করিতে পশ্চাৎ ফিরিল। পুঁটুর মাকে দেথিয়া বৃদ্ধা একটু এতীকা করিতে লাগিলেন, তিনি निक्षेवर्छी हहेत्ग तुका जिल्लामा করিলেন, "তুনি কে বাছা?" পুঁটুর মা মাথা অবনত করিয়া বুলচ্ছায়ায় क्षेष्ठित्वन, क्षित्र डेखद कविद्यान ना। আধার বৃদ্ধা লিজ্ঞাসা করিলেন, "কন।টি কি ভোনার?" পুঁটুর মা মাগা নাড়িরা বীকার করিলেন। এই সময় একজন যুবতী অন্তাসর হইয়া পুঁটুর গাল ধরিরা আদর করিল।

বৃদ্ধা। বাছা, তৃমি কি লোকের মেরে ?

পুঁটুর মা। আক্ষণের।
বৃদ্ধা। কোথার যাবে ?
পুঁটুর মা কথা কহিল না।
বৃদ্ধা। ভোমার সঙ্গে লোক কই ?
পুঁটুর মা কথা কহিল না।
বৃদ্ধা। ভোমার খণ্ডরবাড়ী কোথা ?
ভোমার বাণেব বাড়ী কোথা?

পুঁট্র মা ভথাপি কথা কহিল না। বৃদ্ধা। তবে বৃশ্ধিছি।

এই বলিয়া বৃদ্ধা আপন কন্যা ও পুল্রবধু সমভিব্যাহারে পশ্চাং ফিরিলেন,
তাঁহার কন্যা এক একবার পুঁটুর মার
প্রতি ফিরিয়া চাহিতেছিল, দেখিয়া বৃদ্ধা
বলিল, "চলিয়া চল! গৃহত্তের বউ
বিরে ওসকল লোককে ফিরে দেখা
কেন।"

কন্যা উত্তর করিল, মেরেট বড় স্থানর, বৃদ্ধা তাহাতে বিরক্তিসহকারে . বলিল, "অমন স্থানের গলায় দড়ি! যে লোক গৃহত্তের মেরে নয়, সে, আবার স্থানর কি ?"

এই কথা গুণিবামাত্র পুঁটুর মার মুথ আরক্ত হুইয়া উঠিল, তিনি আর অগ্রসর হুইডে পারিলেন না, কিরৎক্ষণ পণ্ডে দাড়।ইরা রহিলেন। ত্রীলোকেরা চলিরা মেলে, নিকটস্থ এক নির্জ্জন আফ্রকাননে প্রবেশ করিয়া একটি বৃক্ষতলে বসিলেন। মাধবী খুলায় জ্রীড়া করিতে লাগিল, তিনি বৃক্ষে মাথা চেলাইয়া কাঁদিতে লাগিলেন। অনেকক্ষণের পার চক্ষের জল মুছিতে মুছিতে অপ্পট্রস্বরে আপনা আপনি বলিলেন, 'ব্রেছি, সকলই আমারু দোষ। পোড়া লজ্জার ভয়ে আফিই আপনি আপনার সর্কনাশ করেছি।''

বান্তবিক কথা সভা, কেবল লজার ভবে মাধ্বীলভার মা গৃহত্যাগ করিয়াছি-লেন, কলছের কথা স্বামী প্রাডে छनिरवन এই लब्छात्र छिनि भनाहेत्रा-हिल्लन। এখন कलएइ तकथा खना पृद्र থাকুক্, সন্দেহেরও স্থল রহিল না। এত-ক্ষণ রামদেবক জানিয়াছেন যে, তাঁছার ন্ত্ৰী নিশ্চয়ই কুলটা। ভাহাই মাধ্বীণভার मा विलटिक्टिनन, "मकन है आमात्र (माय।" আর উপায় নাই, আব গৃহে যাইবার পণ নাই। পথে পথে বাদ, ভিকা ক রিয়া দিন্যাপন, এই এখন মাধ্বীলভার মার অদৃষ্টের লিখন। তিনি দার্শনিক ন-হেন যে, , অদৃষ্ট শইয়া তর্ক করিবেন। **ফার্যাকুশলী নহেন যে, পুরুষকার ছারা** অদৃষ্ট **পণ্ডন করিবেন। মহাতেজাও** ন হেন যে,অদৃষ্টের আরম্ভাতীত থাকিবেন---অদৃষ্ট যতই পীড়ন কক্ষক, .ভিনি ভাষা গ্রাহা না করিয়া, ভাহাতে কট অনুভব ना कतिया, शर्क्टकत नाम चाँक थाकि-বের ।মাধ্বীলভার মাতা সামানা।; অपृ-

ষ্টের ভরে অভি ভীতা,কটের স্পর্নমাত্রেই পরাজিতা,চক্ষের জল তাঁহার একমাত্র স-হার। পিতৃমাতৃ স্থাবে চক্ষের অল সহার হইলে হইতে পারে, কিন্ত অদৃষ্টের সমূধে ভাছা কিছুই নহে, অঞ্বৰ্বণে কোন ফলই হর না; তথাপি অদৃষ্টের পী-फुटन मामाना लाटकता कारफ, माधवी-লুতার মাও দামান্য লোকের মক কাঁদি-লেন। সাধারণতঃ (লাকে চলের क्त मृहिया, अनुष्टित श्रीनिंड शास् চলিতে থাকে, মাধবীশতার মাও চক্ষের बन गृहिया अनृष्टे श्रामिं उभर्ष हिन्द्वन অর্থাৎ ভিকা করিবেন স্থির করিলেন। ''আমার অদৃষ্টের লিখন কে খণ্ডাইবে ?'' এই বলিয়া পুঁটুর মা দাড়াইলেন, পুঁটুর ধ্লিধ্দরিত অঙ্গ ষত্ত্বে ঝাড়িয়া ক্রোড়ে नहेबा आभाजिम्दथ हिनया रशस्त्र । . লজাভয়ে অনর্থক আর ইতন্তত: না कतिया, এकि गृहत्यत थड़कीबादा शिवा : ' कव बार्थ' विनया माज़ाहरतन । "জয় রাধে" বলিবার সময় একবার তাঁহার চকে জল আসিল, কিন্তু ণাৎ ভাহা সম্বৰণ করিলেন, ঘর প্রাচীর দেখিয়া পুটু আহলাদে মাতৃজোড়ে ছ লিয়া হাসিতে লাগিল, মাভা ভাহার ব্ঝিতে পারিয়া মুধচুম্বন আহলাদ এই সময় क्रिल्ग। একজন গৃহস্কন্যা ভিকা আনিল, পুঁটুর মা অঞ্চনাপ্তো তাহা লইয়া शम्हार १ कितित्वतः। शृष्टञ्चकता विवान, "छिशाः

বিণী একবার ফের ত।" পুটুর মা

কিঞ্চিৎ ইতৃত্ততঃ করিয়াফিরিলেন। গৃহস্থকনা বলিল, "তুমি নৃত্ন ভিখা-রিণী! বুঝিয়াছি, তোমার কপাল পু-ড়েছে! কুলকল্ফিনী!"

8 65

ভিথারিনী ফদিনীর ন্যায় মাথা ফিরাইয়া একবার গৃহস্বকনার প্রতি তীব্র
দৃষ্টিপাত করিল, আর কোন উত্তর
না করিয়া সদর্পে অঞ্চল হইতে ভিক্ষোশার্জিত চাউল ভূমে নিক্ষিপ্ত করিয়া
চলিয়া গেল। পুঁটুর মা স্বভাবতঃ ভীক ও
লজ্জাশীলা, কেন তাহাতে বিপরীত
লক্ষণ দৃষ্ট হইল, ভাহা বুঝা যায় না।
গৃহস্বকনার রুড়বাকো পুঁটুর মার চক্ষে
কণামাত্র জল আসিল না, তৎপরিবর্প্তে
ক্রোধায়ি উদীপ্ত হইল।

#### ২৯

যে রাতে পুঁটুর মা গৃহত্যাগ করিয়া যান, সেই রাতের প্রথমভাগে সো-ছাগী চাকরাণী শয়ন করিয়া পান চর্বাণ করিতে করিতে অপর আর এক চাক-রাণীকে বলিতেছিল, ''ওলো! মেন-কার মা,° আমার আর এখানে চাকরী কবা হলোনা।''

(मनकात्रमा। (कन ना १

বাহা। এখানে কোন স্থ নাই, ইার কাছে থাকি, জাঁর মা আছে দক, না আছে পছল, না আছে কিছু। আজ এত করে চুয়া চল্ফন মিলা-ইয়া একটু বুকে দিতে গিয়াছিলাম, জার মনে ধরিল না, তিনি বলেন ওতে বড় ছগ্রা এমন পছল ফার তার পারে নমস্বার, আমি কাল সকালেই চলে যাব।

মেন। স্কালে কেন, এখনই যা না।

সোহা। রাজি ক্ষকার, এখন আ-মার সঙ্গে কে হাবে ?

• (मन। गग वादा।

সোহা। যমের ভাব বুড়ার সঙ্গে ? ভোর মত বুড়া মাগী পোলে যম বড় খুদী হয়, আমাদের কাছে যম কই আসমে।

প্রাতে মেনকার মা উঠিয়া দেখিল যে, সোহাগী সভাই চলিরা গিয়াছে। কণবিলম্বে জানিল যে পুঁটুর মাও বাটা নাই, অভএব রাম্দেবকের বৃদ্ধা মাতিকে গিয়া জিজ্ঞানা করিল, "সেই পোড়ার মুখী সোহাগীর সঙ্গে ঠাকুরাণী কোথার গিয়েছেন ?"

বৃদ্ধা। কি জানি বাছা! সোহাগী সংস্ব গেছে? তবে আর ভাবনা কি? এখনই আসিবে।

নেন্কার মা। পোড়ার মূখ সোহা-গীর!

গুঁটুর মা কুলত্যাগী হয়েছে, এ
কণা মুহূর্ত্বধ্যে সর্পত্র রাষ্ট্র হটলে
পুরুষমহলে মহাকোলাহল বাধিয়া গেল।
পরস্পার সকলেই বলিতে লাগিল, ''আ
মিই সর্পাত্রে বলেছিলাম যে,রামদেবকের
জী কুল্টা।"

্ প্রথমকোলাহল মন্দীভূত : ইইয়া আসিলে সকলে রাজার উদ্দেশে তির- क्षात्र कात्रस कत्रिमः मकरमत्रहे दित्र প্রতীতি জন্মিয়াছিল যে, সোহাগীকে রাজা কেবল এই কার্যোর নিমিত্ত পাঠ।ইয়াছিলেন। অতএব রাজার প্রতি লোকের ক্রোধ বিষম হইয়া উ ঠিল। কোপায় ভিনি রামদেবকের স্ত্রীকে नुकारेबाएक अथगजः (करन धरे मः षान कता मकरनत शतामर्गिक इटेन। • পুঁটুৰ মার অফুসন্ধান করিতে যুবা রাই আপন। আপনি ত্রতী হইবেন; উহিদের শই টোলের ছাত্র—শ্বুতিশাস্ত্রের ভক্তা হক্তে বাহির হইলেন, যেপানেই রুদ্ধদার रमर्थन, रमहेथारनहे छाहाता बातरहम করেন। তাহার পর যথন তাঁহারা छिनित्न (य, त्राञ्च शिनीत चारू मन्नान छ्ल রাজা নগরত্যাগ করিয়া গিয়াছেন, ভথন ভাঁছারা সিদ্ধান্ত করিলেন যে, " আর নগরে অহুসন্ধান করা বুথা, वाजा (यथारन, वामरमवरक व वि ९ (महे-পানে।"

( नाम ।

শেষ একদিন সকলেই একত হইয়া রামসেবককে অকুরোধ করিলেন যে "ভূমি একনার নিজে রাজার নিকট যাও,মাধবীলভার সম্বাদ লইয়া আইন।" রামসেবক সে কথার কোন উভর করিলেন না, যজ্ঞোপবীতের প্রস্থিত করিভেছিলেন, নভশিরে ভাহাই করিতে লাগিলেন। যে অবধি রাজামুগ্রহে রাম সেবক সৌভাগ্যসম্পার চইরাছিলেন. সেই পর্যন্ত কেই ভাহার মুখাবলোকন করিট

না, কেছ তাঁহার বাটাতে আসিত না,
একণে তিনি সমাজে স্থানিত ও পতিত
ছইরাছেন,গুভারুধ্যারী পলীবাসীদের স্থত
রাং যাতারাত আরস্ত ছইল। রাম্পেবক
তাঁহাদের কথার প্রায় উত্তর দিভেন না
অথচ অসন্মানও করিতেন না। তাঁহার
পত্নীর কথা কেছ উপস্থিত করিলে তিনি
উঠিরা স্বভন্ন স্থানে তামাক সাজিতে
বিস্তেন।

রামদেবকের স্ত্রী গৃহত্যাগী হইবার অধিকাংশ প্রতিবাসিনীরা হাস্য পরিহাস-পরিভৃপ্ত করি-ছারা পরস্পরকে ग्राहित। (करत भग्न - এ मदस्त तरु अ-धिक कथा करह नाहे। शमा हिःशाशवरम হইয়া. পূর্বরাতে পুঁটুর মাকে তির-ছার করিরাছিল, তখন ভিরস্কারের ফল অফুডৰ করে নাই, পরে পদ্ম যখন ্ভনিল যে, মাধ্বীলভার মাতাকে গো পনে রাজা লইয়া গিয়াছেন, তথন পল্ল নিশ্চয় বুঝিল যে, তাঁছার তির-স্বারই ইহার মূল। তিনি তিরস্বার না ক্রিলে, মাধ্বীলভার মা সোহাগীদ!রা রাছাকে কোন কথা জানাইত না. রাজাও ভাঁহাকে লইয়া যাইতেন না; শোহাণী সঙ্গে আছে,একণে হয়ত তাহার ° পরামর্শে মাধবীলভার মা রাজার নিকট ভিরস্কারের কথা বলিয়া দিবে, পদ্ম এই **कावनाम (मोनावनची इहेम्राहित्नन)** 

বধন পালের মনে এই সকল আলোচনা হইভেছিল তখন সোহাগী এক উচ্চ
বাদপথ দিয়া নৰ গুপাভিমুখে যাইভেছিল,

नाम हरे हात्रियन देवकृत आंत्र आत्रकः श्रुणि देवस्थ्यी हिन,शनाम न्डन क्छी,इरख নৃতন খঞ্জনী,পরিধানে হক্ষবস্ত্র,মূথে মধুর গৌর নাম। পুঁটুর মার গৃহত্যাগবার্তা সোহাগী কিছুই জানিত না। কোন मधीत अञ्चलात्य माहाशी हठाए कही-ধারণ করিয়াছিল। সোহাগী কিঞিৎ স্বাধীনতাপ্রিয়, একটু গাইতেও ভাল-बारम, यथन देव्हा, रायात देव्हा याहेट भातित्व जात कि हुई हाट ना, পাঁচজন রদিকা বৈষ্ণবীর সহিত নব্দীপে যাইতে তাহার বিশেষ সাধ হইয়াছিল, মতএব আর কাহাকে কোন কথা বলিয়া চলিয়া গিয়াছিল, কেবল পূর্ব্বদিন অপরাক্তে একবার রাজবাটীর इहे अक्षन माभी क वित्राहिल, " आ-মরা কাল এক জারগার যাব।" দাসীরা शिखाना कतिन, दश्था यावि, त्नादाशी হাসিয়া উত্তর করিল, "বলিব না।"

দাসীদের মুখে রাণী যথন শুনিলেন বে সোহাগীর সঙ্গে পুঁটুর মা গৃহত্যাগী হইরাছে, ল, তথন তিনি নিশ্চরই বুঝিলেন যে, পুঁটুর মা কুলত্যাগী হইরাছে, ন-তুবা সোহাগী সঙ্গে কেন ? ছই এক-দিন পরে দাসীদের কথার ভঙ্গীতে যথন তিনি বুঝিলেন যে লোকে এই সম্বন্ধে রাজ্যার কলম্ব রটাইরাছে, তথন রাণী কিছু চমৎকৃতা হইলেন। কাহাকেও কোন কথা জিজ্ঞাসা না করিরা আপনি মনে মনে, এই রটনার হেতু বিবেচনা ক্রিতে লাগিলেন তেতু নিভাস্ত অম্- লক বোধ হইল না, পূর্ককথা আলোচনা করিতে করিতে মনে হইল, রাজা মাধবীলভাকে এত ভালবাদেও কেন ? তাহার নিমিত্ত এত অর্থবার করেন কেন ? তাহার মাতাকেই বা এত অল্লার দিবার তাৎপর্যা কি ? মাধবীলভার অঙ্গ অধিল মাধবীলভাকে রাজার কন্যা বলিরা বোধ হয়, এইজন্য হয় ত এখন যমজ্বনার জন্মকরনা করা হইয়াছে। রাণী দীর্ঘনিখাস ত্যাগ করিয়া বলিলেন, " বু- খেছি।"

জ্যোৎসাবতীর উপলক্ষে রাজার প্রতি রাণীর মন পৃর্বেই কিঞ্চিৎ ভার হইয়াছিল, এক্ষণে তাহা আরও বিশেষ হইল, তিনি মনে করিয়াছিলেন, জোৎসাবতীর অসুসন্ধানে রাজা আপনি যাইবার কোন প্রয়োজন ছিল না, লোক পাঠাইলেই ত হইত; তবে রাজা নিজে যে গেলেন, তাহা কেবল তাঁহাকে অপ্রতিভ করিবার নিমিত্ত। তাহার পর এক্ষণে রাণী ব্রিলেন যে,জোৎসাবতীর অসুসদ্ধান কেবল ছলমাত্র, মাধবীলভার মার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিতে যাওয়াই মূল উদ্দেশ্য। রাণী সপীর ন্যার দীর্ঘনিশ্বাস ত্যাগ ক 'রিয়া বলিলেন, ''বুরেছি।''

রাণী নানা কথা ভাবিতে ভাবিতে একবার সদর্পে উঠিয়া কক্ষান্তরে গিয়া প্রিরতমা ছুই একজন পরিচারিকাকে ভাকিলেন। অতি ভীত্রদৃষ্টিভে ভাহা-দের ব্লিলেন যে, তোমাদের মধ্যে যে

মাধবীলভার অভুসন্ধান করিয়া দিবে त्मरे आमाव क्षीश्रत्मत्र अर्द्धाःभी इटेरवः। मानीता व्यथरम छन्न পारेन्नाहिल, किंद्र রাণীর চাঞ্চলা কেবল নিজ সন্তান মাধ্বী-লভার নিমিন্ত, এই বুঝিয়া ভাছায়া নিরু-বেগে বলিল, যে মাধবীলভার অমুসন্ধান বিধিমতই হইতেছে, হুই একদিনের মধ্যে त्र मचान शां **दश या है** दिन हैं। ती वित्र के हैं ইয়া উত্তর করিলেন যে,"সে সকল অসুসং স্থান আমি চাই না, আমার ইচ্ছা যে আমার নিজের লোকে এই অমুসন্ধান করে।" এই কথা বলিতে বলিতে রাণীর দৃষ্টি আবার প্রবিৎ প্রথর হইয়া উঠিল। দাসীরা गछत्त्र "(य व्याख्ठा" विलग्ना विलाग्न इहिन्। প্রদিবস রাজা ইক্রভূপ প্রভেপ্যমন করিলেন। তিনি রাজভগিনীর কুমু-সন্ধানে বহিগত হইয়া প্রথমে পদত্রকে যাতা করিয়াছিলেন; কিন্তু কিয়ক্র গিয়াই শিবিকারোহণ করিতে বাধ্য হইলেন। শিবিকার বৈসিয়া অফুস্কান বড় হয় না, তথাপি ভিনি চারিদিক্ দেখিতে দেখিতে গেলেন, কিন্তু রাজ-ভগিনী পথে কে:খাও বসিয়াছিলেন না, মতরাং রাঞা ইজ্রভূপ তাঁহার দেখাও পাই-লেন না। ভিনি ষেখানে, অবস্থিতি করিতেন, দেইখানেই ব্রাহ্মণপণ্ডিভগণ অাসিয়া তাঁহাকে বেষ্টন করিয়া শান্তালাপ করিত, সুতরাং রাজভগিনীর অনুসন্ধান করিবার আর তাঁছার- সাবকাশ থাকিত না। শেষ তিনি হতাখাস হইয়া প্রত্যা नर्वन कविद्यान ।

রাজা, রাজভবনে সমুপস্থিত হইরা
অ্যাত্যবর্গের সহিত হই একটা কথা
কহিয়াই অন্তঃপুরে গেলেন। রাণী তাঁল্
হার আগমনবার্তা শুনিরা কিঞ্চিৎ
মলগমনে নিকটে উপস্থিত হই
লেন। একজন দাসীকে তাস্থল আনিতে
বলিরা, রাজার শারীরিক কুশলবার্তা
কিঞ্চিৎ ঔদাস্যভাবে জিজ্ঞানা করিলেন,
উত্তরের 'প্রতীকা না করিয়া আবার
জিজ্ঞানা করিলেন, 'বে জন্য মহারাজের
যাওয়া হইরাজিল, ভাহার মকল গ'

রাজা। মঙ্গল জার কেমন করে বলিব, জোৎনাবজীর জন্য গ্রামে গ্রামে জামে করিলাম, কোগাও সাক্ষাং পাইলাম না। শেষ আর কি করি, আমি পথে পথে বেড়াইলে ভ বিষয়কার্য্য চলে না, স্কুডরা কিরে আসিতে হইল; ভবে বড় ছংখ রহিল যে রাজকন্যা এই কিই পাইভে লাগিলেন।

রাণী। কে রাজকন্যা গুমাধবীলতা গ রাজা। না আমি জ্যোৎসাবতীর কথা বলিতেছি, ত্যু—

রাণী। আপনার মাধবীলভাব মা যে এথান ছইভে চলিয়া গিয়াছে।

রাজা। তাহা জানি; আমি তাহা এখান হইতে যাইবার পুর্বেই শুনিয়া গিয়াছিলাম।

রাণী। সাক্ষাৎ ইইয়াছিল ? সেই দন্য কি এভ বিলম্ব?

রাজা। সে নিমিত্ত আমি একণে বাত্ত নহিঃ আমি এখন রাত্ত জ্যোৎসা- ৰতীর নিমিত্ত; ভাষার অন্তসন্ধান <del>কি</del>-রূপে পাইব!

রাণী। মাধবীলতার জন্য আপনি যে ব্যস্ত হইবেন না, ভাহা কতক বুঝিয়াছিলায়।

এই বলিয়া রাণী হঠাৎ কক্ষাস্তরে চলিরা গেলেন, যাইবার সময় দাসীকে বলিরা গেলেন, ভূমি বাজন কর, আং-মার আসিতে বিলম্ব হবে।

উভয়ে উভয়ের শেষ কথার অর্থ
বিপরীত ভাবিলেন। রাজা বুঝিলেন যে,
মাধবীলভার জন্য আমি বড় বাস্ত নহি,
এ কথা বলায় বানীর অভিমান হইয়াছে। হওয়াই সম্ভব, কেন না রানী
ভাহার গর্ভধারিনী, স্নেহ কোথা
মাবে ? এদিকে রানীর নিশ্চয় ধারণা হইল
যে, মাধবীলভার মাতা কোন নিরুপজব ভানে রক্ষিত হইয়াছে, নতুবা রাজা
কেন বলিয়া ফেলিবেন যে, মাধবীলভার
নিমিত্ত বড় বাস্ত নহেন।

সোলাৎ হইল না। পরদিবস সাক্ষাৎ হইল না। পরদিবস সাক্ষাৎ হইল না। পরদিবস সাক্ষাৎ হইলে রাজাও বিশেষ যত্র করিয়া অধিক কথা কহিলেন না, তাঁহারও কিঞ্চিৎ মন ভার হইয়াছিল। তিনিও স্থির করিয়াছিলেন যে, নিরপরাধা জ্যোৎসাই বভীর গৃহত্যাগ কেবল রাণীহইতে; রাণীর নিমিত্ত তিনি আপেনার ভাগিনীকে বাটী হইতে প্রকারাভ্যে ভাড়া-ইয়া ছিয়াছেন। এ অকার্য্য তাঁহাকে

टकरन संगीत खदारे कतित्व रहेताहिन। बागीरे व जनर्थत मृन।

ক্রমে তাঁহাদের পরস্পারের অস্তর্জন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। রাজা চুই একবার বৃদ্ধসহকারে রাণীর সহিত আলাপ করি-তে অগ্রসর হইরাছিলেন, রাণী সে যত্ত গ্রহণ করেন না দেখিয়া রাজা প্রথম প্রথম কিঞ্জিৎ অপ্রতিভ হইলেন, শেষ অপমানিত বোধ করিতে লাগিলেন। যেখানে ত্রীপুরুষে অসন্তাব, সেখানে মঙ্গল নাই এ কথা রাণীকে একদিন বুঝাইবেন রাজা মনে মনে স্থির করি-লেন।

রাণীও মনে মনে স্থির করিলেন বে,
মাধবীলতাকে কদাচ রাজবাটীতে স্থান
দিবেন না, তজ্জন্য রাজসংসার যদি ছারেখারে দিতে হয় তাহাও কর্ত্তব্য মনে
করিবেন। জারজকন্যাকে রাজকন্যা
পরিচয় দিয়া কখন রাজা রাজকুমারের
সম্বোগ্য করিতে পারিবেন না।

90

দেওয়ান্মহাশর মাধবীনতাকে অনু
সন্ধান করিবার ভার লইয়াছিলেন,
তিনি প্রায় প্রতিগ্রামে পাইক, গোমন্তা, বিশেষতঃ দরিজ, ভিক্ক, ঠাকুরবাড়ীর প্রারি, অতিথিশালার ভাণ্ডারী
প্রতিকে ডাকাইরা প্রশ্ন করিতেন।
এইরপে গ্রামে গ্রামে, জিজ্ঞানা করার,
একস্থানে একজন বৃদ্ধা ভিখারিণী বলিন
শ্রাপ্রি বাহার অনুসন্ধান করিছে

ছেন বোধ হয় আমি ভাহাকে দেখি-য়াছি, ক্লোড়ে একটি একবংসরের কন্যা আছে।"

দেওয়ান। কোথায় দেখিয়াছিলে?

বৃদ্ধা। এই গ্রামের প্রায়স্তাগে বটবৃদ্ধের তলায় বিসিয়া কাঁদিতে দেখিয়ায়াছিলাম। আমি তাঁহাকে কত কথা •

জিজ্ঞানা করিলাম, কিছু তিনি চন্দের মধ্যে
অঞ্চল ভিলাইলেন তবু কোনি কথায়ই •
উত্তর দিলেন না। আমি তাঁহার কনাায়
নিমিত্ত একটু ছুধ আনিতে গেলাম,
কিন্তু আনিয়া আর তাঁহাকে দেখিতে
পাইলাম না। সে আল চারি পাঁচ
দিনের কথা।

দেওয়ান্মহাশয় সেই বৃক্ষতলে গিয়া
অম্ভব করিলেন যে, মাধবীলতার মা
প্রাভিম্থে গিয়াছে, অতএব পাজী
আরোহণ করিয়া সেই দিকে গেলেন।
অপরাক্তে প্রান্তর হইতে দেনিলেন সমুথে এক বৃহৎ নগর, বহুতর দেবমন্দিরে
স্থোভিত, তাহার ত্রিতল অট্টালিকাসম্হ খেতকপোঁতসমাকীর্ল, লোককোলাহল অভিদ্রব্যাপী। দেওয়ান্ ভাবিলেন,
এ নগকে মাধবীলতার উদ্দেশ পাওয়া
কঠিন ব্যাপার।

এই সমর একটি পুছরিণীর কুলে
দাড়াইরাপুঁটুর মা দেওরানের পাছীখানি
দেখিতেছিলেন, আর ভাবিতেছিলেন বে,
এই পাছী যদি আমাদের রাজার হর,তবে
তার পারে পুঁটুকে ফেলিয়া দিরা আমি
বির্দ্ধিরে আবভ্যাপ করি। বাবা অবস্থ

পুঁটুকে প্রতিপালন করিবেন, ভিনি **शृह्रक छानवारमन। भूँ** টু আমার কত শাস্ত মেরে। এই যে রৌত্রে রৌদ্রে আমি তাকে বুকে করে ফিরি-ুতেছি, পুঁটু ভবু ভ কাঁদে না, যেন পুঁটুর তাতে আরও আহলাদ বেড়েছে, •পুঁটু হাসিতেছে, কাক ডাকিতেছে, হাত খুৰাইতেছে, আয় আয় করে চাঁদ ডাকি-- তেছে। \*\*\* না। পুঁটুকে রাজার কাছে রেখে মরিছে পারিব না, রাজার বাটীতে পুঁটুকে কে দেশিবে। রাজাকি সভা ফেলে भूँ हेत कारक नरम थाकिरन ? ना. मानि-गानिता भूँ हेटक किरत ८ हरत (निथरत ? शूँ है कैं। मिरन (क डारक वृतक कतिरत ? বাপরে ! আমি পুঁটুকে ফেলে একদণ্ডের জনা মরিতে পাবিব না।'' নাধ্বীলতার মা একা দাঁডাইয়া এইরূপ ভাবিতে ছিলেন, পুঁটু তথন তাঁচাৰ ক্ৰোড়ে हिल ना।

এই, সময় তাঁহার অতি নিকট দিয়া
দেওয়ান্মহাশয়ের পালী চলিয়া গেল;
কিন্তু দেওয়ান্ কিন্তা পরিচারকগণের
মধ্যে কেহই তাঁহাকে লক্ষ্য করিল
না; তিনিও জানিতেন না যে, তাঁহারই অফুসন্ধানের নিমিত্ত স্বরং রাজদেওয়ান্ যাইতেছেন। দেওয়ান্ নগরে
প্রবেশ করিয়া কোন এক প্রধান
ব্যক্তির বাটাতে অবস্থান করিলেন, সকশেই তাঁহার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিতে
আলিল, সকলকেই তিনি মাধবীলভার
বার্ত্তা ভিক্তাসা করিলেন, কিন্তু কেইই

কিছু বলিতে পারিল না। ভিপারী,
পূজারী, কেছই তাঁহাকে দেখে নাই।
মাধবীলতার মা এই নগরে এক গৃহছের
বাটীতে কুটুছকন্যা বলিয়া রক্ষিতা হইমাছিলেন। দেওয়ান্ কোন সমাদ না
পাইয়া অগত্যা বিবেচনা করিলেন যে,
যে গ্রামে বৃদ্ধার মুখে পুঁটুর মার প্রথম
সমাদ পাইয়াছিলেন, সেই গ্রামে
প্রত্যাবর্ত্তন করাই উচিত; মত্তব
প্রাতে তথায় ফিরিয়া গেলেন।

পথিমধ্যে পিত্য পাগলার সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল, পিত্য কোন সন্তাষণ করিল না দেখিয়া, দেওয়ান্ তাঁহাকে তাকিলেন। পিত্য আসিয়া দাঁড়াইল, কিন্তু কোন কথা কহিল না।

দেওরান্ পিতমকে সঙ্গে লইরা এক নির্জন স্থানে বসিলেন; পিতম তখনও কোন কথা কহিতেছে না দেখিয়া, আপনিই জিজ্ঞাসা করিলেন, ''কোণা যাইতেছিলে ?''

পিত্য। এই দিকে।

দেওয়ান্। এই দিকে কোণা ? পিত্য। তা এত জানি না। ভূমি কোথা গিয়াছিলে ?

ঁদেওয়ান্। রাজকন্যা মাধ্বীলভার অফুস্কানে।

পিতম। সন্ধান হইল না বোধ হই তেছে।

দেওয়ান্। কোন অনুসকানই পাই-লাম না.।

পিত্য। ভালই হইয়াছে।

দেওরান্। কেন ?

পিতস। সে অনেহা কথা; ভূমি
বলি রাজার নকণ ইচ্ছা কর, মাধবীলভার নাম করিও না; মাধবীলতা
রাক্ষসী, অথবা আর কিছু; বে ভাহার
শংশ্রবে আসিবে, সেই কটু পাইবে;
অতএব তুমি পলাও। মাধবীলতা নিজে
ভ্রদৃট, মহুষারূপে জন্মিরাছে; অতএব তুমি পলাও। অদৃট মানিরা
ধাক। অদৃট—বাহা দেখা যার না,
বাহা বুঝা যার না পু অদৃট অজ্ঞানের
ওরারিস; অজ্ঞান আনেন না শে অদৃট
ভীহার গর্ভজ, ভাহাই বড় গোলযোগ
বীধিরাছে।

দেওরান্। আমি আনিডান নাবে, ভুমি অদৃষ্টবাদী।

भिछम। अनृष्ठेवानी मकरनां हे; अनृदेश मंड नाम आहि, এक এक छन अक
धक नाम डीशंत अर्छना करतः कानदेखरा राम डीशंत अर्छना करतः कानदेखरा राम खार प्राप्त कर्म करतः कानदेखरा राम खार प्राप्त कर्म कर्म खान् हे हितकान आहि, हितकान थाकिरव; अनृष्ठे मरत ना, अनृर्ष्टेत रक वन
माम मरत; जाशंत এक हि नाम यात,
आत এक हि नाम हत्। मञ्चा मक्ख
हरेरा अनृर्देत कि इत वना यात्र
मा। किल राम डांग मर्चेख
हरेरा अनृर्देत कि इत वना यात्र
मा। किल राम डांग मर्चेख
हरेरा अनृर्देत कि इत वना यात्र
मा। किल राम डांग मर्चेख
हरेरा अनृर्देत कि इत वना यात्र
मा। किल राम डांग मर्चेख
हरेरा अनृर्देत स्मेताराख्यां बाक्ना। এक
धक राम डांग धक धक धक धकात्र अनृहे।
अनृहे बल्तनी, ध्राष्टास्त्र निक्षे चड्ल
क्रम; आयात्र निक्षे अनुर्देत क्रम

ছিগ্যবা, অর্থাৎ তিনি প্রকৃতিদেবী। অগতের প্রকৃতি কি তাহা ভাষ •ূ আকৃতি হইতে প্রকৃতি বুঝিৰে ! প্রকৃতি-मिती चारानात माथा चार्शन कारिया चा পনি আপনার ক্ষিব পান করিতেছেন। ছিল্লমন্তার রূপ কে কল্পনা করিয়াছিল चान ? ८चात अनुष्ठेवानीत व कज्ञना কলনা নহে,ইছা সত্য সতাই অদৃষ্টের মুর্বি; অদৃষ্ট আর প্রকৃতি এক। আমার সহিত ত্ৰক কবিও না। আমি স্বচক্ষে এ মৃদ্ধি দেশিয়াছি, একদিন রাত্রি আড়াইপ্রহরের সময় একরূপ পৈশাচিক শব্দে আমার निजः छत्र वर्षेत्रां (शल। भगा। इरेट्ड (पवि ্সামার গবাকের নিম্নে কোন এক ভান হইতে বছতর গৃধিনী, শক্নী, উঠিয়া আকাশপণে উড়িয়া ঘাইতেছে, ভাহাদের পক্ষ मधान हो ने प्रकार के प्रकार के प्रकार के लिए গিল। সকল পক্ষীই উদ্ধমুধে আকাহশর একদিকেট বেগে যাইভেছে, দেখিয়া আমি গ্রাকের নিকটে গেলাম। বে निक अक्षीता छूटिएडक, स्तरे निक ধীরে ধীরে নেত্রপাত করিলাম, তণায় দেখি, স্বৰ্গমন্ত স্পৰ্শ করিয়া এক ক্রড রূপিনী যুবতী দাঁড়াইয়া আছে; আপনার মস্তক আপনি চ্ছেদ করিয়া, আপনিই; আবার আপনার ক্ষির পান করিতেছে। বানকান্ত ছিল্লান্তক উল্লভমূপে রক্ত ধারার উল্লন্ধন, ও প্রপত্তন দেখিতেছে, হাসিতেছে, আর ভাহা পান করিতেছে। উৎপ্ৰেকিত রস্তের আভায়, অন্ধ<sup>কারও</sup> রক্তবর্ণ হইরাছে। আকাশ, ত্ণ, <sup>সমু</sup>

দর্ই রক্তাভ! সেই ছিল্লমন্তকের মুক্ত-কেশ অগ্নিবৎ তরঙ্গ তুলিয়া অর্থ্বেক আকাশ ব্যাপিয়া ক্রীডা করিছেছে। चर्त, मर्ख, बाकारम, हातिमिक् वाा-পিরা গম্ভীর, "ব্যোম্" শব্দ স্থির-ভাবে শব্দিত হইতেছে। তেত্তিশকোটী (मवर्जा कत्रायाएं खर कतिर छन, ৰে জগন্মাতঃ ! কেন মা, ভো মার ভাষার্থী প্রকাশ করিতেছ ? ক্ষমত্ব, ক্ষমত্ব, আবার এ মৃত্তি কেন, चामदा दर छन्न भः ठेट छि। ' महारत्व (क्रवनभाव शंतिया विगतनं, 'शक्कि দেবি! তুমিই সতা, ভোমার এইরপট সতা, তোমার এইরপে আমার মনো-মোহিনী।" মহাদেবের কথার রুজুরপিণী ষ্টবৎ হাসিয়া ক্রমে ক্রমে আকাশে মিলাইয়া গেলেন। আর কোণাও কুছ নাই, আমি দাড়াইয়া, ভাবিতে লাগিলাম "প্রকৃতিদেবী কি ছিল্লনন্ত। ? এই কৈ প্রকৃতির যথার্থ মূর্তি ? ভবে ছে প্রকৃতি! আমাদের কেন ঠকাও 📍 ভোমার এই ভয়ন্ধরমূর্ত্তি ঢা-কিছা কেন নিয়ত মোহনীমূৰ্ত্তিতে আ**মা**-

দের চোধে চোধে বেড়াও ?—কেন
ফুল ফুটাও, কেন বা কোনললভাবল্লী
দোলাও, কেন পাণী উড়াও, কেন
লোংলা মাথ, কেন চক্রমগুলবিরাজিত
অনস্তনক্রসনাথ কিরীটি মাথায় পর ?
এখন ব্রেটি! আমি আর ঠকিব না।''
দেওয়ান্। ভুমি মাধবীলভার সন্ধান
করিতে পাব ?

পিতন ভিন্ন মন্তার মূর্ত্তি আলোচনা ক্রিতে করিতে এরপে মাতিয়া উঠিয়াছিল, নে দেওয়ানের উপস্থিতি তাছার একেবারে সারণ ছিল না। দেওয়ান্ কথা কহিলে ভাহার চৈতনা হইল। তখন দেওয়ানের কথার কোন উদ্ভার না করিয়া পিতম ধীরে ধীরে সে স্থান হইতে প্রস্থান করিল।

ইহার পর দেওয়ান্মহাশর শান্তিশন্ত গ্রামে গিয়া দেখেন, চুড়াধনবার্র প্রতি রাণীর শ্রন্ধা জন্মিয়াছে; স্ত্রীকে মধাবর্তিনী কবিয়া, চুড়াধনবাব্ রাণীকে পরা-মর্শ দিতে আরম্ভ করিয়াছেন। দেও-য়ান্ ভাবিকোন, "আরম্ভ এই; শেষ কোথা ?" -



## বালীকির জয়।

### দ্বিতীয় খণ্ড।

পর্বত হইতে নামিবার সিঁড়ি থা-কিলে বড় ভাল হইত, বড় ৰড়ধাপ-खन्ना है। नशान चार्टे द्रांग्छ ्यिन निष् थाकि छ, ताथ इस, छाहा इहेल मकत्नहे তাহাতে উঠিত, কিন্তু তাহা নাই। বুরিয়া ফিরিয়া কথন গাছের ডাল ধরিয়া, কখন यात्रनात्र थात्र पिया, कथन উচ্চ इटेट्ड निम इहेग्रा, कथन चांवात निम्न इहेट उ उक्त-মুখে, কখন পাছাড় বেড়িয়া কখন বরা-বর নামিয়া, আসিতে হয়। কখন এমনি ভয় হয় যে পা একটুকু সরাইলেই ় পড়িয়া যাইতে হয় 🖫 🕏 কথন ভর হয় প্রকাও পাণর মাণায় আসিয়া পুড়বে, ৰশিষ্ঠ ৰ বিশ্বামিত উভয়ে অবলীলাক্রমে গল্ল করিতে করিতে নামিতেছেন। বি-শাল বক্ষ, তেতঃপুঞ্জ, বলিষ্ঠ, প্রাকাও দেহ: মুখকাস্তিতে একলনের অসাধারণ শৌর্যা আর একজনের অভিতীয় বুদ্ধি মত। প্রকাশ পাইতেছে। •উভয়ে গুর করিতে করিতে পণ অভিবাহন করিয়া याहेरछरहर। श्राह्मत विषय महरकहे. অমুভব করা যাইতে পারে। গভরাতের ঘটনাবলী---

ৰশিষ্ঠ বলিলেন "যাহাতে, ভাই ভাই হয় ভাহার ক্লিউপায় করিছেছেন ?''

বিখানিতা। তাহার আবার উপায় কি ? প্রায় সমস্ত লগৎ, লয় করিয়াচি, আর জর বাকী, এই টুকু হইলেই এক রাজার অধীনে সক প্রাজাই ভাই ভাই হইয়া ুউঠিবে।

ৰশিষ্ঠ। আপনি কি মনে করেন, একশাসন আর ভাতৃভাব একই জিনিস।

বি। তাহার আর সন্দেহ কি ?
বিশ্র রাজ্যসধ্যে বিজোহ বিঞ্ব
চৌহা দাঙ্গা হাজাম হয় কেন ?

বিশ্বামিত্র দক্ষিণ হস্তপ্রসারণ ক রিয়া বলিলেন, "এই হস্তের বলে সে সমস্ত নিবারণ করিব।"

विभिष्ठे। विशिष्टिन मन ?

়বি। মনে যাহাই থাকুক প্রকাশ করিতে দিব নাঁ?

বশিষ্ঠ। তবে আর ভাই ভাই হইন কই, মনে বিদেষ থাকিলে ভাতৃভাব হয় কই ?

বিখামিতা। আপনাবা জনকতক আলগ আছেন তাঁহাদেরই মাতা মন অভান্ত কুর, মনোভাব লুকাইয়া কাজ করিতে পা-রেন, অন্যলোকে কাজে না করিতে পা-রিলে মনেও কিছু ক্রিবে না।

বশিষ্ঠ দেখিলেন নির্বোধকে ব্ঝান
দার,তিনি কিছুকাল চুপ করিয়া রহিলেন।
তাহার ক্রু বলিলেন 'ব্রাহ্মনের উপর
আপনার এত রাগ কেন ? ব্রাহ্মণ আপনার কি করিয়াছে ?''

বি। আমার কিছু রাগ নাই, আমার কিছু করে নাই, কিন্তু আমার বোধ <sup>এই</sup> যে ব্যাহ্মণের সঙ্গে আমার প্রথম বি<sup>বাদ</sup> ছইবে। কারণ, উহাদের বৃদ্ধি বড় পেঁচাও, আপনার কর্ত্ত্ব করিবার জন্য উহারা সব করিতে পারে।

বশিষ্ঠ। বলেন কি মহাশর! আহ্মণ বরং
সকলের সহিত সন্থান করিয়া চলার জন্য
বিশেষ উদ্যোগী, ভাহার সাক্ষী দেখুন
আমি ক্ষজিয়ের পৌরোহিত্য স্বীকার
করিয়াছি, ইহাতে লাঘন থাকিলেও
স্বীকার করিয়াছি।

বিখা। রাজপৌরোহিত্যে লাঘব আছে তাহা স্বীকারই করি না। বিশেষ আর আপনি যে, বাধ্য হইরা স্বীকার করেন নাই, তাহারই বা প্রামাণ কি ? আর স্থাপনি কি মতলবেই বা স্বীকার করিয়াছন, তাহাই কে জানে।

বশিষ্ঠ চুপ করিয়া রংগলেন। বিশ্বামিত্র বলিতে লাগিলেন, আপনি যে মতলবেই আহ্বন, আর ব্রাহ্মণের যত কুমন্ত্রণাই থাকুক, বিশ্বামিত্র এই ভূজবলে সমস্ত শাসিত করিবে, সমস্ত পৃথিবী একশাসন এবং একমন, একপ্রাণ, করিয়া দিয়া যাইবে।

বশিষ্ঠ দেখিলেন, তিনি বাজা ভাবিয়া-ছিলেন, তাহা হইল না। চুপ করিয়া পথ অতিবাহন করিতে লাগিলেন।

বিখামিত্রও দেখিলেন, অকারণ ব্রাক্ষণের মনংক্ষা করিয়া ভাল করেন নাই, তিনিও থানিক চুপ করিয়া কছিলেন, "মহাশয়! কিছু মনে করিবেন না,আমি আপনাকে অকারণে কুলা করিয়াছি ক্ষমা-কৃষ্ণন, আরে যদি কোন বাধা না থাকে,

আসার শিবির নিকট, আজি আতিথাপ্রহণ করুন।" বশিষ্ঠ সমত হইলেন।
মহা আদরে বশিষ্ঠের আতিথা করা হইল,
এবং কিঞ্চিৎ জাকসহকারে তাঁহাকে
যে সকল অপার রত্নরাশি নানাদেশ হইতে
লুগুন করিয়া আনিরাছেন, তাহা দেখাইলেন, এবং উপটোকন দিলেন। বশিষ্ঠ
মহা সত্তই হইরা বিদার হইবার সমর
বিশ্বামিত্রকে আপান তপোবনে নিমন্ত্রণ
করিয়া গেলেন।

₹

বিশ্বামিত্র যথাসময়ে তপোবনে উপ-স্থিত হইলেন। বশিষ্ঠ বহুদুর হইতে ৰ্তাহাকে আগু বাড়াইয়া লইয়া আসি-तिन। উপश्विष्ठ इहेशा याशां (प्रिश्तिन. তাহাতে বিখামিত্র একেবারে চমৎকুত হইয়া গেলেন। তিনি যখন উপস্থিত হন, তখন তপোবন, শাল, ুতাল, তমাল,পিয়াসাল, হিস্তাল প্রভৃতি প্রকাণ্ড-কায় বনবৃক্সমৃহে বাৈপ্ত ছিল, ভলায় न डा खन्यानित र न भगाव नारे, मव भतिकात. সিন্দুর,পড়িলে তুলিয়া লওয়া যায়। কিন্তু याहेवाक अकडू भटत्रहे तम मुना भतिवर्खन इठेन; १ठा९ वन উদ্যানে পরিণত হইল, প্রকাপ্ত তপোবন নানাপ্রকার শরতের কুলের কেয়ারিতে বোধ হইতে লাগিল যে, থেন একখানি গালিচা পাতিয়া দিরাছে। কোথাও শাদা, ভঙ্গিতে ভঙ্গিতে শাদা, কোথাও নীল ভঙ্গিতে ভঙ্গিতে নীল, কোণাও রাঙ্গা, ভঙ্গিতে ভঙ্গীতে রাস, কোথাও সবুদ, ভঙ্গীতে ভঙ্গীতে

শব্দ, কোথাও পীত, কেমন এক রঙ কমিয়া আর এক রঙ বাড়িয়া যাইতেছে বেছনে ফুলের রঙে বৈচিত্রা হইতেছে লা, দেছলে উপলে দে লোম পুরাইয়া দিতেছে। গালিচার ভারিপার্থে নানা-আতীর গর্মপুশ তাহার বাতানে চারিদিক ভর ভর করিতেচে, প্রকাশু গালিচা ঠিক মধ্যন্থনে প্রকাশু সরোবরে মার্কল পাথরের দিঁড়ি তলাপর্যান্ত মার্কল পাথরের দিঁড়ি তলাপর্যান্ত মার্কল পর্যান্ত দেখা যাইতেছে। এই গালিচার অবিদ্রে প্রকাশু আট্টালিকা দার কষ্টি পাথরে নির্দ্মিত। দারে খুদিয়া অর্ণা ক্রে লেখা।

স্থাগতং গাধিকুল ভিলক্স্য বিশ্বামিত্রসা।

বিখানিত্র প্রাসাদনধ্যে প্রবেশ করিরাই দেখেন যে, সমন্ত পৃথিবী জর করিরাও এরূপ অট্টালিকা কখন দেখেন
নাই। হীরা, মতি, পারা, মুক্তা ইত্যাদি
গৃহসক্ষার উপকরণ। উৎক্রই প্রস্তরে
বাটার আদ্যন্ত নির্মিত, আর তাহার
উপর পরগুরামের যুদ্ধকাহিনী চারিদিকে
ভোলা করিয়া অন্ধিত, কোথাও ক্রেজিরশোণিতর্গে পরশুরাম পিতৃত্রপ্রকরিতেছেন, কোথাও ক্রেজিরদিগের সহিত যুদ্ধ
হইতেছে, আর ক্রেজির্কুণ নির্ম্নুণ হইভেছে, এরূপ যুদ্ধ একুশটা যুদ্ধ একুশটি
দেরালে লেখা রহিয়াছে।

্ বিখায়িত হতবৃদ্ধি হইরা সমস্ত ভাল ক্রিয়া দেখিলেন। দেখিয়া তীহার

বোধ হইল, বলিষ্ঠ তাঁহার আতিখাের জৰাৰ দিভেছে, এবং ঠাহার সহিত যে, कत्थानकथन इरेबाहिन छाहात्र अवाव मिटिक । मान मान के हात्र विषयकाव ক্রমে বাড়িতে লাগিল, হিংলা লক্ষিতে লাগিল। আপাততঃ মনোভাব গোপন করিয়া আতিথাখীকার করিলেন। মহা-नत्त भान, त्याबन, नृष्ठाभी जापि पर्यन, ममार्गन इटेल, यादेवात गमत विश्वर्ध যথোচিত উপঢ়ৌকন আনিয়া উপন্থিত করিলেন। বিশামিতা বলিলেন, মহা-শর অ। পনি ঋষি, বনবাসী, আপনার এ অতৃণ ঐশ্চর্যা কোথা ইইতে আসিল। विश्व विवादनन, महाभन्न आमात्र अक গাভী আছেন, তিনি কামধেমুর কন্যা, তাঁহার নাম নন্দিনী, তিনি আমার সমস্ত ইচ্ছামত দিয়া থাকেন। বাস্তবিক সে (थ्यू चात्र किছूरे नहर, विभार्षत मर्ब-वाहिगी विमामाज। विश्वामिज वलिलन, তবে অল উপঢৌকনে আমার তৃপ্তি হইবে না. আমার সেই গোরুট দিতে হইবে। বশিষ্ঠ বলিলেন, আমি যথন তাহার মার काइ हरेट जाहाटक नरेत्रा चानि, जधन আমি প্রতিক্রা করিয়া আসি যে, উহাকে ধখন কাছাকেও দিব না। বিশামিতা আর ভাব গোপন করিতে পারিলেন না, विगालन, जाशनि मिरवन गा, किंद्र जामि অপ্ররণ করিব। বলিয়াই আপন গোক খনকে গোরু চুরি করিতে ত্কুম দিলেন। এ দিকে অভিথি সর্বাদেবময়:--ওদিকে वल পूर्वक व्यनहत्रन । विश्व भशविद्यारि

পড়িরা গেলেন। বশিষ্ঠ নিক্ষত্তর হইরা
রহিলেন। লোকে ধেমু অপহরণ করিরা
লইরা যাইতে লাগিল, ধেমু বাইবার
সমর কাতরনরনে বার বার ঠাহার প্রতি
লৃষ্টিনিক্ষেপ করিতে লাগিল। বশিষ্ঠ
কেন্দন করিরা কহিলেন, "কি করি বাছা,
অতিথি, রাজা, প্রবল-প্রতাপ হিথিপরী
তেচে,তুমিই ইহার প্রমাণ।" বলিবামাত্র
নন্দিনী হুলার ছাড়িলেন, হুলাগান্দে
আকাশ পাতাল ফাটিরা গেল। আর
অগণিত-সংখ্যক পারদ, পারস, চীন,
সান, মান প্রভৃতি নানাজাতীর সেনা
রণসজ্জার সজ্জীভূত হইরা ভণার ঠাহার
ভ্রাণার্থ উপস্থিত হইল।

9

ধেকু দইরা নহাবিবাদ বাঁধিরা উঠিল,

এক দিকে ক্ষজিরসেনা আর একদিকে

যবনসেনা মধ্যত্থল নন্দিনী। পুন:

পুর: ক্ষজিরদিগের হস্ত হইতে মুক্ত হইবার চেষ্টা করিতেছেন, ভাহারা কোনমতেই ছাড়িতেছে না। যবনগণ গাভী

ছাড়াইরা লইবার চেষ্টাকরার যুদ্ধ বাঁধিরা
উঠিল, যবন ও ক্ষজিরে যুদ্ধ আন্দণের

সন্না যুদ্ধ—আন্দণ দর্শক। দীর্ঘ দীর্ঘ
ভরবারি দীর্ঘ দীর্ঘ বর্ষা, আর প্রেকাণ্ড

ধক্ষ উদ্ধারে উদ্ধারে মেঘ গর্জন অমুভব

হইতে লাগিল। বিশ্বামিজ অনৈনার

অভিনেতা, আন্দণপক্ষে অভিনেতা কেইই
নাই, বলিষ্ঠ অভিধির সহিত যুদ্ধ করিতে

অনিচ্ছুক, এবং পুরু ও শিষাগণকে যুদ্ধ

यारेट पिरलम मा, किन युन हिनाड লাগিল, ক্রমে রক্তপাত আরম্ভ হইল, ক্রমে রক্তনদী বহিতে লাগিল, যুদ্ধক্ষেত্রের ধুলি রক্তে কর্দম হইল। তখন বিশ্বামিত ছকুম দিলেন, ''গোক মেরে ফেল।''গোক এখন क जित्र मिरा क तक विश्व हिन, উহার প্রাণসংহারে উদাম করিবামাত্ত গোরু দিব্য স্ত্রীমূর্ত্তি ধারণ করিরা আকাশ পণে উথিত হইল। ত্রীমূর্ত্তি স্বয়ং সর-সভী, খেতপন্সনা ্ৰৈতবন্তবিভূষিতা খেতবৰ্ণছটায় পূৰ্ণিমার জ্যোৎসা ঝক্-মারে, হস্তে খেতবীলা, লাবণ্যে জগৎ আলো, ভাহার উপর আবার খেত পদ্মের সমস্ত বিভূষণ ! বলিলেন, 'রে, মুর্থ, আমি বান্ধানের বিদ্যা, তোরসাধা কি, তুই আমায় অপহরণ করিস্। আমি কুল-ক্রমে ব্রাহ্মণগৃহে বাস করিয়া থাকি, করিয়াছি ও করিব, তুই কি গায়ের জোরে আমায় হরণ করিতে পারিস. মনে করিরাভিস। বিশামিত বিশ্বরাপর रहेलन, प्रिशितन, সরস্বতী আবার ধেমুমুর্ত্রিধারণ করত: বশিষ্ঠসলিধানে অবভীৰ্ণ হইলেন, সমস্ত দৈনা বায়ুডে भिणारेका (शन। विणिष्ठित नक्षरन प्रत्यक्ष আনন্দাশ বহিতে লাগিল, তিনি স্বহস্তে ধেমুর গাত্তকভূয়নে প্রবৃত্ত হইলেন।

বিখামিজের এই সর্ব্ব প্রথম পরাজর।
মনের ক্ষোভে, ছুঃখে, হিংসার, বিখামিজ
আর গান্তী বা বশিঠের দিকে চাহিতে
পারিলেন না। ক্যোধে ধর্ক্রাণত্যাগ
করিলেন, সৈন্য সামস্তকে আপন আপন

বাড়ী যাইতে বলিলেন, রাজ্যের ভার মন্ত্রীর উপর দিলেন। বলিলেন।

ধিক্ বলং ক্ষত্তিয় বলং ব্ৰহ্মতেকোবলং বলং

বলিয়া ব্রাহ্মণত্বাভের জন্য তপ্ন্যা ক্রিবার নিমিত্ত হিমালর পর্বতমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

বশিষ্ঠ দেখিলেন, তাঁহার মনের আশো বার্থ হিইল।

বিশ্বামিত্র যে কেবল বাছবলে সমস্ত ভ্বন এক করিতে চাহিয়াছিলেন, ভাহার অসারতা বুঝিতে পারিলেন, আর বা-লীকি দস্যাদলত্যাগ করিয়া, অস্তরের আলায় বনে বনে রোদন করিয়া বেড়া-ইতে লাগিলেন।

### তৃতীয় খণ্ড।

বিশামিত কোণার গেলেন, কেহ
জানিল না। তিনি সৈন্যদের সঙ্গে
আসিলেন না। মন্ত্রী রাজ্য করিতে
লাগিল। উটার পরিবারেরা আজি
আসেন, কালি আসেন, ভাবিয়া ক্রমে
দিন, মাস, বৎসর, কাটাইয়া ছিল।
বশিষ্ঠ আবার আপন মতলব অমুসারে
বাদ্ধান ক্রিয় মিলাইয়া দিবার চেটা
করিতে লাগিলেন, তাহার চেটা বিফল
হইল, বিশ্বামিত্র পক্ষীয়গণ তাহার ঘোর
বিশ্বেষী হইয়া উঠিল, বশিষ্ঠবংশের কি
ভয়ানক পরিণাম হইয়াছিল, ইভিবুত্তে
তাহার উল্লেখ আছে।

ু এদিকে বিশামিত একবারে খোরতর তপস্যার মগ্ন হইলেন, আক্ষণ হইবেন,

নিদহতে ব্ৰাহ্মণ, কজিয়, ছই বল এক করিবেন, এবং স্পাগরাধরার অভিতীয় श्रेष्ठ इहेर्रात, नकनाक अक्नानांन त्राथिया এक छाटा मिनाहेटन। এह তাঁহাদের মনস্ব হইল। তিনি হিমা-লরে এক অতিনিভূত জললমর তুর্গম্য-স্থানে গদন করত, একেবারে খোরতর তপ আরম্ভ করিলেন। প্রথম দিনে, এক। গ্রাস আহার, তাহার পর অর্দ্রগ্রাস; তংহার পর এক দানা, তাহার পর অর্দ্ধ माना ; ७९ शरत संमितिन् , ७९ शरत स्वाहात বন্দ করিয়া তপ সারস্ত করিতে লাগিলেন। শরীর ক্ষীণ হইতে লাগিল। শীত, প্রীম, বর্ষারসম্ভ সমস্ভ মাথার উপর দিয়া याहेटंड नाजिल। पृक्षांठ नाहे, दक्रन धान। हकू काठेत्रगंड इहेल, नाशिकात মধ্য অন্থিমাত্র স্পষ্ট দেখা যায়, শরী-রের সমস্ত হাড়, কেবল চর্ম্মাত্রে আছো. দিত হইল। কেশরাশি বৃদ্ধিত হইয়া ভূমিৰুঠিত হইতে লাগিল। পদের নখর বৃদ্ধিত হই গা শিকড়ের মত মাটির মধ্যে পুতিয়া গেল। উইপোকা গায়ের উপর বাগা করিল। বিশ্বামিতের ধ্যান (भव इम्र ना, व्याञ्ज, छन्नुकानि दिःख्याच-र्गंग (मर्ट्श व्यात्र शीत्रकाट्य मृत्र मित्रा, **চ**लिया यात्र।

এই ভয়ানক অবস্থার বিশ্বাসিত্র
নানারপ শ্বপ্প দেখিতেন, কথন
বোধ হইত সমস্ত জগৎ-বিশ্বসংসার, পরমাণু হইরাগিয়াছে। মধ্যস্থলে একমাত্র
তিনি, তাঁহার শরীর দেখিতে দেখিতে

ব্রহ্মাণ্ড জুড়িয়া উঠিল, তাঁহার তেমে পরমাণু দগ্ধ হইতে লাগিল। শেষ নিজ শরীরও দথা হইতে লাগিল। দারুণ আতির আলোর ঠাহার ধ্যানভক হইল। সন্মুখে দেখেন কতকগুলি গরমাস্থল বী-যুবতী,--অপারা কোথায় লাগে, তাঁহার ° সম্মুখে নৃত্য করিতেছে, ভাহাদের নিত্স-দোলন অতীব চমংকার, তাহারা কেছ \* ঘুরিয়া ঘুরিয়া ঘুরিয়া নাচিতেছে। কেহ मननिञ्चललालमात्र (इलांहेश (तफ़ाई-তেছে, কেহ শরীরের অন্ধ্রিংশে বসন-ত্যাগ করিয়া,কোমরে হাত দিয়: দ:ড ইয়। আছে। কেহ কটাক্বর্ণ করিছেছে, कढ़ाक कथन (कामल, कथन हक्षत, কখন ঠারে ঠারে হৃদরের অভিনাষ इप्राहेश मिर्टरहा कथन अनम, कथन বিত্রাৎবৎ, কখন চকের পাত। কাপি-তেছে, তাহার উপর কটাক্ষ বাণবং ঘন ঘন পড়িতেছে। কাছার ও বেণী বদ্ধ কাহারও এলো, কাহারও অনক শিত, কাহারও বাযুভরে দোলায়মান আর সকলেই নান। হাব ভাব বিকাশ করিয়া, কেবল বিশামিত্র প্রতি আপনা-দের আলস, মদনভাব প্রকাশ করি-বিশ্বামিত্র দেপিলেন, তাঁ-(উছে। शंत्र श्राप्त का कि किए भगिन व्हेरण, তিনি পুনরায় খানস্ত্ইলেন।

আবার স্বপ্ন দেখিতে লাগিলেন।
কোটা স্ব্যা প্রকাশ হইয়াছে, তেজে
নয়ন ঝল্সিয়া যাইতেছে, গা পুড়িরা
বাইতেছে, বিশামিত্র পদায়ন করিয়া

স্থা সমূহ হইতে দুরে যাইতে লাগি-লেন। ঘাইতে ঘাইতে ঘাইতে ঘাইতে प्रांगात (उस मन इहेन, किन्न (यथान গেলেন, সেখানে ভরত্বর শতসংজ্ঞ সর্প उँ। इ: (क मः भन कतिल। विस्व ज्ञानां प्र তাঁহার ধ্যানভঙ্গ হইল। দেখেন ভয়ানককাণ্ড, নানাপ্রকার ভী-ষণাকর জন্তুগণ তাঁহাকে ভন্ন দেখাই-তেছে। কাহার মুখ শৃকরের সিংহের নাায় কেশর, যোজনবিস্তৃত লাফ্ল কেহ ভীষণ পিশাচ,মাথার উপর চোখ, অর্দ্ধেকশরীৰ হাতে ভরা, তুই হাত আর ছই পাদিয়া, চারিদিকে আহার-সাম্থী হাতড়াইতেছে, আর পাইতেছে অননি উদরসাং তেছে। কাহারও দস্ত শৃকরের নাায় কাহার হন্তীর ন্যায়, কাহারও মাণা পর্বতের চুড়ার ন্যায়, কাহার কেবল मछक, शपदम आहि कि ना मल्लाह। कान जी भिगाठीव किवल खनव्य-व-হৎ পর্বভিচ্ডার ন্যায়,আবার কাল। কেহ কাল, কেছ নীল, কেছ পীত, কেছ ছরিন্তা, নানারঙে শোভিত। যথন এই ভ্যানক বৈন্য, সেনাপতির আদেশে ত হাকে অক্রেমণ করিল, তাঁহার **আখা** পুরুষ শুক ইইরা গেল। কিন্তু তাঁহার কটালে পিশাচসেনা দূর হইয়া গেল। কাহার পদভগ্ন ইইল, কাহার প্রাণনাশ হইল, কাহার মন্তক কত হইল। স্তন-বতীর জনভার থসিয়া গিয়া ভাহার শরীর হালকা হইল। এর মৃত ওর ভাতে গেল ওর পা তাহার মাপায় গেল।

এইভাবে পিশাচসেনার ধ্বংস দেখিয়া, পিশাচসেনাপতি হাসি হাসি মুগে ভাব করিবার জনা বিশ্বামিত্রের নিকট উপ-স্থিত হইয়া বলিলেন, বিশ্বামিতা, তুমি অতি বড় পরাক্রমশানী—তুমি ভুলবলে সমস্ত জয় করিয়।ছ। তুনি তপোবলে কটাকে আমার পিশাচমেনা বিহত বিধবস্ত করিয়া দিলে। অতএব ভুমি আমার পুত্র হও; এই যে, বিশ্বব্রমাণ্ড প্রকাও দেখিতেছ, ইহার সমস্ত অন্তর शिशाह, देवजा, जागत व्यक्षीन, তুমিই আমার একমাত্র উত্তরাধিকাবী হইবে। আমি সচিরাৎ ভোষার রাজা করিয়া দিয়া স্বয়ং বিলাসস্থভোগে নিরভ হইব। অভ এব তুমি আমার পুল হও। এই হিনালয়চুড়াৰ উপরে উঠিলে দেখিতে পাইবে অসংখ্য সমুদ্ধরাল্য চারিদিকে রহিয়াছে, সমস্ত তোমার इहेरव। हीन, खांशान, गिमत, शांतमा, স্ব ভোমার হইবে। এই যে সুক্রীগণ ভোমার প্রলোভনের জন্য আসিয়াছিল, উহারা আমার ভোগা; উহারা তোমার হইবে। যত সণি, মুক্তা, কাঞ্চনের খনি ' দেগিতে পাইবে, সমস্ত আমার। আমার প্রজার সংখ্যা নাই; তুমি আমার পুত্র হও, এই সমস্ত অতুলরাজত্বের একমাত্র অধীশ্ব হও, তোমার কোন ভাবনা নাই চিন্তা নাই। যতদিন তুমি রাজ্যে ন্থির ছইতে না পার, আমি ভোষার

নিকটে থাকিয়া ভোমার রাজ্যের সমস্ত রক্ষা করিয়া দিব।

বিশ্বামিত্র বলিলেন, "তুমি আযায় ব্রাক্ষণত্ব দিতে পার, নন্দিনী দিতে পার,
বিদ্যা দিতে পার, সরস্বতী দিতে পার?"
না, "পারি না। কিন্তু বাক্ষণের সহিত
বিবাদ করিবার ক্ষমতা দিতে পারি।
নন্দিনীব প্রাণনাশ করিয়া দিতে পারি।
বিদ্যার ম্লোচ্ছেদ করিতে পারি, কিন্তু
সরস্বতীর কিছুই করিতে পারি না।"
"তবে তোমায় দিয়া আমার কাল হইবে
না " বলিয়া,বিশ্বামিত্র আবার ধ্যানে ময়
হইবেন।

ভাঁহার চকু মুদ্রিত হয় না জ্যাগত নিখাদ বন্ধ করায়, ক্রমাগত এক বিষয়ক চিন্তা করায়, ক্রমা-গত অনাহারে তাঁহার চক্ষুদ্রিত হইল না। কিন্তু ভিনি বাহাজ্ঞানশ্না হই-লেন, তাঁহার কর্ণকুহর হইতে জাঁভার गात्र मक वाहित १हेए मानिन, নাসিকা দিয়া অগ্নিজ্বিস্ম নিৰ্গত হইতে লাগিল। সেই শব্দের পুর তাঁছার মস্তকে প্রদক্ষিণ করিয়া রাশিচক্র দক্ষিণ হইতে বামদিকে শ্রমণ করিতে লাগিল। ছায়া-পথ বুরিয়া দাঁড়াইল, দেখিতে দেখিতে তাহার মাণার খুলি অভ্যস্তরন্থ অগ্যন্তাপে छ र छे ९ किथ इहेन, विश्व मः मारत व्य করিরা শব্দ হইল, শব্দ আকাশে গড়া-ইয়া **বুরিয়া বেড়।ইতে "লাগিল। শে**ষে ব্ৰহ্মাণ্ডের কপাল কপালিকা পৃথক হইয়া গিয়া সেই পথে শক্ষ বাছির ছইয়া গেল।

তাছার বাহির হইতে দ্বস্থিত শতসহস্র অনবরত সেমগর্জনের নাায় শুনা গেল।

ওঁ ভূভূবিংশ তৎপবিতৃপ্ধরেণাং ভর্গো-দেবসাধীমহি ধিয়োয়োনঃ প্রচোদয়াৎ। বিশামিত্র ধ্বনি শ্রবণ করিলেন, তাঁহার উদ্ধোৎক্ষিপ্ত মন্তকান্তি নীচে নামিয়া প্রভিল। মৃত্ত্রমধ্যে তাঁহার শবীর সবল সতেজ ও ক স্তিপৃষ্টি হইল। বিশামিত্র ভাবিলেন, ব্রাক্ষণত্ব না পাই, বেদমন্ত্র দর্শন ব্রাক্ষণের সম্ব জিল, তাহা ত জিল করিয়াজি, ইহাই মথেই। বলিয়া ভাবার ধ্যানে মগ্র ইইলেন।

₹

विश्वामित्वव शास्त्र जिल्लाए७ स्य इल-সুল বাাপাব পড়িয়া গিয়াছে, আর কাহারও অবিদিত রহিল না। তথন ব্রন্ধা বিশ্বাসিত্রকে ব্রান্ধণ ক্ষরিয়া দিবার জন্য ব্ৰহ্মৰ্ষি দিগকে দিণ্ডিকেটে আহ্বান করিলেন। কণ্, নশিষ্ঠ প্রভৃতি ব্রন্ধর্যি नावनानि (ननिर्धि मन जामिया कुरित्नन। আকাশপথে সভা হটল, সভায় একজন শুদুরাজাকে ব্রাসাণ করিয়া লওয়া ইইল। বিশ্বাস্ত্রদৃষ্ট মন্ত্র গারতীনামে ত্রাহ্মণ-মাত্রেরই আরোধা জপনীয় মন্ত্র বলিয়া, ষীকার করা হইল। কিন্তু ব্রহ্মা বেই বিশামিত্রকে ব্রাহ্মণ করিবার জনা প্রস্তাব कतिरलन, कान बक्किये वा रमवर्षि करू-गामन कतिरमन छ।। (कह विलिम, নিমাসিত্র এখনই বিমের প্রায় কর্ত্তা ত্রী উঠিয়াতে। বান্ধণম ও বিদ্যা

পাইলে এখনই স্ষ্টিলোপ করিবে। **(कर विशासन)** উरात पृताकाष्ट्रका तक् প্রাবা, আজি ব্রাহ্মণহ পাইলে, কালি ব্ৰহ্মত চাহিয়া বসিবে। অতএব উহাকে সাহস দেওয়া অভাস্ত অনাায়। অনস্তর সমবেত ব্রজার্ষিগণ ব্রহ্মাকে প্রতিনিধি-স্বরূপ পাঠাইলেন। ব্রহ্মার প্রতি ভার রহিল, তুমি ব্রাহ্মণত্ব ভিন্ন আব যাহাই চায় দিও। ব্ৰহ্মা বিশ্বাসিতোৰ ধানিভঙ্গ ক্ৰিয়া বলিলেন, ''আমি ব্ৰহ্মা, ভোমার ধা'নে তুপু হুইয়া বর দিতে আসিয়াছি। কি বর চাহ, খদি অদেয় না হয়, তবে দিব।'' ''আমি ব্রাহ্মণত চাহি, দিতে পার ?" 'না।'' ' আমি ভোমার মৃত ব্রসাব বর চাহি না।" ব্রস্থা কিঞিৎ কুৰ হইয়া আবার যাইয়া প্রকার্ষিসভায় উপস্থিত হইলেন। এবং উহাকে আহাণ জন্য অনুবোধ করিলেন। কেইই দমত হটল না। তথন প্রাম্শ হইল সকলে গিয়া বিশ্বাসিত্রকে বুঝাইয়া পড़ाहेश धना (कान नदमारन कुष्ठे कर्ता যাউক। • বশিষ্ঠ একবার যাইতে আ-পত্তি কবিলেন, কিন্তু ব্ৰহ্মাও অন্যান্য সভাদদাণের অমুরোধে গেলেন। ভ্রনা অবোর তাঁহাব ধ্যানভক্ষ করাইলেন। বিশ্বংমিত সমাগত বরদাভাগণের মধ্যে বশিষ্ঠকে দেখিয়াই চটিয়া গেলেন। এবং অনেককণ মৌন হ্ইরা त्र हित्सन। সভাসদাণ বুঝাইতে লাগিলেন। আক্ষ-ণয় জুতি সামান্য পদার্থ, তুর্মি যেরূপ উলস্কু, সেৰণ ৰপাৰী মহাপ্ৰৰ্ষ, ভুমি ক ব্রাহ্মণের চূড়া। যথন ব্রাহ্মণমাত্রেই ভোমার মন্ত্র পাঠ করিবে, অপ করিবে, নিরম করা গেল, ডখন ভোমার ব্রাহ্মণড়ের বাকী কি রহিল। ব্রাহ্মণড়ে অনেক কপ্ত; অনেক ব্রহু, নিরম করিতে হয়। তুমি রালা ভোমার ভাহ। কপ্তকর হইবে।

বি। মহাশয় আনি যথন এত কঠোর ভপ করিয়াছি, তখন কি তোনার আহ্ম-ণের অত পালন করিতে পারিব না ?

''তুমি পারিবে না ভা কি বলিতেছি, এত কট্টে ভোমার কাজ কি ? তুসি ইন্দ্রত্ব लहेवात सना (हडी कतना (कन ? टाराहे ভোমার যোগাগদ। আর আমরা ভো মার তপে সম্ভট্ট ২ইয়া, আজি তেগোয় রাভর্ষি উপাধি দিলাম। তুমি জান ত্রগৃষি দেবর্ষির নীচেই রাজর্ষি, ভোমার ভূতীয়-শ্রেণীর ঋষি করিয়া দিলাম। তোসার ব্ৰাহ্মণত্বে কাজ কি ? এই লহ রাজর্ধি-সম্ভ্রমস্চক পদকগ্রহণ কর।'' বিখানিত্র এই সমস্ত কথার চাতৃরী বেশ বুঝিতে পারিলেন। ব্রন্ধর্মিণ যে ঠাইরে তথে ভীত হইয়াছেন, তাহা বুঝিতে তাঁহার ৰাফী রহিল না। তিনি পদক সুরে निक्ति कतिया कित्व। विवासन, 'अ-ক্ষরিগণ, তোমাদের চাহুরী বুঝিয়াছি। ভোমরা আমায় স্তোকবাকো প্রবোধ দিয়া আমায় ত্রাকাণতে ব্ঞিত করিলে। কিন্তু আমি আরে এক্লেণ্ডপ্রাশীনহি। আমি ব্রহাত্ব চাহি, তোমাদের খোদামেদ ও তপ্রা আর করিব না। আমি নৃত্ন

পৃথিবী নির্মাণ করিব, তাহার ব্রহা হইব। আমার পৃথিরী হইতে ছঃখ দ্র করিয়া দিব। গ্রাহ্মণ দূর করিয়া দিব। রাথ দেখি ভোমরা পার 🕍 বশিষ্ঠ ত্রন্ধাকে ইঞ্চিত করিয়া বলিলেন, ১ চম্ন বলিয়াছিলাম ত, বান্ধব এখনও পায় পাই, ভাহাতেই এই। ঋষিরা আবার নানা উপায়ে নিখানিজকে বুঝাইতে চেষ্টা করিতে লা গিলেন। "তুমি মনে করিলে ত্রন্ধাণ্ড স্ষ্টি করিবে আশ্চর্গা কি, যাহার ভপোবলে বন্ধাও বিধাণভিত ইইয়াছে, সে বন্ধাও সৃষ্টি করিবে আশ্চ্যা কি ? কিছু আসরা তে:মার বন্ধু, তোমায় এক উপদেশ দিই, কেন এত কট্ট পাইবে। এই ব্লক্ষাণ্ডে তুমি ত অদিতীয়। তুমি ব্রাহ্মণের উপর ব্ৰদারও উপর; তবে কেন ভূমি স্টিএন স্বীকার করিতে চাও।"

বিশ্বামিত্র। রাহ্মণকুল নির্দ্ধুল কর, আমি তোমার স্ষ্টীতে থাকিতে পুরি। ব্রাহ্মণ আমার চকুঃশূল হইরাছে।

ব্রহ্মাদি সকলে কোপে কম্পান্থিত কলেবর হইরা উচ্চৈঃম্বরে কহিলেন, 'ভোর যভ শক্তি আছে কর। আমাদের সঙ্গে ভোর কোন সম্পর্ক আরে কোন সম্বন্ধ নাই।'' বলিয়া ক্রোধভরে বেগে প্রায়ন করিলেন। বিশ্বামিত্রও নৃত্ন পৃথবী স্থি করিবার জনা ব্রহ্মাণ্ড প্রাবেক্ষণার্থ ধ্বলাগিরির সর্কোল্ড শিধরদেশে আরোহণ করিশেন।

# বাঙ্গালির উৎপত্তি।

## দ্বিতীয় অধ্যায়। অনাৰ্যা।

আর্গোরা উত্তর-পশ্চিম হইতে ভারত
বর্ষে আসিয়াতেন। তাহা হইলে, তাহা
দিগকে প্রথমে সপ্তসিক্ষুশোভিত পঞ্জাব
প্রদেশে প্রবেশ করিতে হইয়াছিল।
বিশ্বরুং গোঁহাদিগের প্রথম বাস যে সেই
সপ্তসিল্প্রিণীত পুণাভূমি ভাহার প্রমাণ
আর্যাদিগের বেদাদি প্রাচীন গ্রন্থাদিতে
আছে। আচার্য্য রপ বলেন ঋর্মেদসংহিতায় সিন্ধ্নদের ভূরি ভূরি উল্লেশ
আচে—কিন্ত গঙ্গার নাম একবার মাত্র
গৃহীত হইয়াছে। পঞ্জাবের নদী সকল
ও পঞ্জাবেব নিকটস্থ গান্ধারাদি দেশই
বেদপ্রণেভ্গণের নিকট স্থপরিচিত।
ইত্যাদি বহতর প্রমাণ আছে।

चानिया धार्यस्य शक्षास्य वाम कतिया थारकन, करव हेश व्यवभा निश्व. त्व উহিারা পঞ্চাবে আসিবার পরে বাঙ্গালায় আসিয়াছিলেন। প্রথমে ত্রন্ধাবর্ত্ত, তার পর ত্রন্ধবিদেশ, তার পর মধ্যদেশ, সর্ব্ধ-খেবে তাঁহারা সমগ্র ভার্যাবর্ত্তবাাপী हरेशाहित्न। + वाजाना बजावर्छ, वा ব্রন্ধিদেশ, বা মধাদেশের মধাগভ नर्ट, वाकाला कार्यावर्ष्ट्य (भवकात। প্রথম কোন্ সময়ে, আর্হোরা বাঙ্গালায় সাগিয়াছিলেন, তাহা নিরূপণ করিবার ८ हो। स्थाउदा कतिव, अथवा ८ होन নিক্ষলতা প্রতিপন্ন করিব--এক্ষণে আমা-দিগের আলোচা এই যে যখন অর্য্যেরা বাঙ্গালায় আসেন নাই তথন বাঙ্গালায় কে বাস করিত গ

যদি তাঁহারা উত্তর পশ্চিম**্**হইতে

এ প্রাশ্নের সচরাচর উত্তর এই যে অর্য্যের

† সবস্থ নী দ্যদ্বতো দেবনদোর্যদন্তরং
তং দেবনির্দ্মিতং দেশং অন্ধানতাং প্রচক্ষতে।
তিমিন্ দেশে য আচারঃ পারস্পর্যক্রমাগতঃ
বর্ণানাং সান্তরালানাং স সদাচার উচ্যতে।
কুরুক্ষেত্রশ্চ মৎসাশ্চ পঞ্চালাঃ শূরসেনকাঃ
এয় অন্ধর্য দেশো বৈ অন্ধানতাদনন্তরং।
এতদেশপ্রস্থতণ্চ সকাশাদ্ অপ্রজন্মনঃ
স্বং স্থ চরিত্রং শিক্ষেরন্ পৃথিবাং সর্ব্যানবাঃ
হিমবদ্বিদ্ধারো মধ্যং যংপ্রাণ্ বিনশনাদ্থি
প্রভাগের প্রাণাচ্চ মধ্যদেশঃ প্রকীর্তিতঃ।
আ সন্তান্ত্রির পূর্বাদঃসম্ভান্ত্র পশ্চিমাৎ
ত্রোরনন্তরং গির্গোরার্যাবর্ত্থং বিত্রধাঃ

지장 २ | > 9--- ২ ২

<sup>\*</sup> Vide Muir's Sanskrit texts Part II. Chapter 1I, Sect. XI. & Chapter III, Sect. III.

भूटर्स व्यनार्यात्रा बान्नानात्र बाग कत्रिक । এ উত্তর সভ্য কি না ভাহার কিছু বিচার আবশাক। একণে বালাবায় আর্যা ও অনার্য উভয়ে বাস করিভেছে। যদি व्यार्था अथानकांत्र व्यानिभवात्री ना इहेन, যদি ইহাই প্রতিপন্ন হইল যে ভাহারা কোন ঐতিহাসিককালে বান্ধালায় আসি-ग्रांटक, তবে অবশ্য অনার্য্যেরা তৎপুর্বে এখানে বাস করিত--কেবল এইরূপ বি-চার অনেকে করিয়া থাকেন। কিন্ত এ বিচার অসম্পূর্ণ। এমন কি ছইতে পারে না যে, যখন আর্যোরা প্রথম বাঙ্গাবায় আদেন তখন অনাৰ্যোৱা বা কোন ভাতীয় মমুবা বাঙ্গালায় বাস করিত না 🕈 এমন কি হইতে পারে না যে, আর্য্যেরা বাঙ্গালাকে শুনা ভূমি প।ইয়া ভাষাতে বাস করিতে লাগিলেন, তাহার পর অনার্য্যেরা আ সিয়া বনা ও পার্কত্য প্রভৃতি প্রদেশ-থালি পাইরা ভারতে বাস করিতে লা-গিল ? আর্যোরা ঐতিহাসিক কালে বাঙ্গালায় আসিয়াছিল বলিয়া অনার্যোরা যে তাহার পরে আদে নাই, এমত দিদ্ধ इरेल गा। (मभ थाकि ताई (य लाक थाकित अभव कथा नरह। मंत्रा वर्षे এখনকার দিনে, বাঙ্গালার ন্যায়, বিস্তৃত, छैर्वत এवः छीवननिर्काट्य স্থাকর উপাদানবিশিষ্ট দেশ 'জ্নশূন্য থাকে না। কিন্তু অতি প্রাচীনকালে, যধন পৃথিবীর লোকসংখ্যা এত বাড়ে ু ৰাই, যধন জাভিতে জাভিতে বড়ু ঠেণা-্ঠিলি হয় নাই, তথন ৰাঙ্গালাও বস্তি

হীন থাকা বিচিত্র নহে। অতএব এ প্রশ্ন মীমাংসার আর কি প্রমাণ আছে, দেখা যাউক।

যদি ভারতীয় অনার্ঘদিগের এপনকার বাসভান, ভারতবর্ষের উত্তরণশ্চিম বা উত্তবপূর্ব প্রদেশ হইত, তাহা হইলে অবশ্য বলিতাম যে তাহারা বাহির হইতে আসিয়া ঐসকল স্থান থালি পাইয়া বাস বরিয়াছে। বস্তুতঃ ভারতবর্ষের প্রান্ত ভাগে বিশেষ উত্তরপূর্বভাগে কতক-গুলি অনার্যাজাতির বাদ আছে এবং ভালারাও যে আর্যাদিগের আসার পরে আসিয়াছিল, তাহাও ঐতিহাসিক কথা। टिम मकल कथा शद्य बिलन । अधिकाः भ অনার্যাছাতি এরপ সংস্থানবিশিষ্ট নহে। তাহারা কোণাও মধাভারতে, কোণাও म जिल्दा যেখানে সেখানে করিতেছে। তাহাদের চারিপাশে আর্য্য নিবাস। ভারতে প্রবেশের পথ আর তাহা-দিগের বর্ত্তমান বস্ভিত্তলের মধ্যে আর্য্য-এ অবস্থা দেখিয়া যিনি বলিবেন যে আর্য্যের পরে এই অনা র্যোরা আসিয়াছিল, তাঁহাকে বলিতে इरेटन (य कार्रिका कार्यामिशक अप করিয়া, আর্থানিবাস ভেদ করিয়া, ভাহা-দের এগনকার বাবে আসিয়াছে। ভাহা হইত, ভাহা হইলে, যে সকল ञ्चान উত্তম, মহুষাবাদের যোগা সেই সকল ভাবে, ভাহারা বাস করি**ত**া কদ্যাস্থান সকলে প্রাক্তিরা যাইত। কিন্তু প্রকৃত অবস্থা সেরপ নহে।

গাল প্রভৃতি উৎকৃষ্ট বাসভূমিতেই আর্যানি-বাস কদর্য্যন্থানেই অনার্যানিবাস। বিশ্লো-তর ভারতে যে সকল স্থাথের স্থান, সেখানে তাহাদের বাস নাই। ইচ্ছা করিয়া যে ্সকল স্থানে বাদ করিতে হয়, দে সকল স্থানে তাহাদের বাস নাই। যেখানে ভূমি উর্বরা, পৃথী সমতলা, নদী নৌবা-हिनी, এবং धनधाना आहूत, সেখানে তাহারা নাই। যেখানে ভূমি অমুর্বরা, পর্বতে পথ বন্ধুর, পৃথিবী অরণাসয়ী, মরুষ্যভাগুরি ধনশূন্য, সেই সকল স্থানে তাহাদের বাস। যাহারা বিজয়ী তাহারা কদর্য্যসান সকল বাছিয়া লইবে, যাহারা বিজিত, তাহাদিগকে ভাল স্থান ছাড়িয়া দিবে ইহা অঘটনীয়। অতএব আর্য্যের পর অনার্য্য অসিয়াছে, এপক সমর্থন করা যায় না। কাছেই স্বীকার করিতে হ্ইবে যে আগে অনার্য ছিল তার পর আর্থ্য আসিয়াছে।

त्मश्री यां छ क, এই পূর্ববর্তী অনার্য্য काशता। तम्मी वित्ममी मकत्म ह श्रीकांत करतन, त्मम व्याहीन। तम्मीरम्रता वरमन, त्मम অপৌकंत्मम् । अर्थोक्ष्यम् प्रकारम् वाम हां जिम्रा मिम्रा, नित्ममीम्रिक्त न्याम वना यां छ क, य त्वत्म न्याम व्याहीन आर्यात्रहना आत कि हु हे

नारे। (तरमत गर्धा श्रारथमगःहिकारे প্রাচীন। সেই ঋথেদসংহিতায় 'বিজা-नीहि आधान्त्र ह नगावः" " अत्र-মেতি বিচাকশদ্ বিচিম্বন দাস আধান্" ইত্যাদি বাক্যে আখ্য হইতে একটি পৃথক্ জাতি পাওয়া যায়। তাহার माम वा मच्या नारम व्यक्त वर्षित । দহ্যশব্দের এখন প্রচলিত অর্থ—ডাকাত, দাদের প্রচলিত অর্থ চাকর। কিন্তু এ অর্থেদকা বা দাসশক খাথেদে বাৰছভ নহে। দাদদিপের স্বতন্ত্র লগর, স্বতরাং স্বতন্ত্র রাজ্য ছিল।† তাহারা আর্যাদিগের সহিত যুদ্ধ করিত—তাহাদিগের হস্ত হইতে রক্ষা পাইবার জন্য আর্গ্যেরাও ইন্দাদির পূজা করিতেন। দাস বা দস্যুরা ক্ষত্বর্ণ— আর্যোরা গৌর। তা-হারা "বর্হিখান্"—যজ্ঞ করে না-আর্থ্যেরা যজ্মান—যক্ত করে—ভাহারা ''অবত ''— যার্যোরা সব্রত—স্তরাং ह्ट हेस, ८१ अधि—छोशांपत मात्र, আর্ঘ্যদের বশীভূত কর ! আর্ঘ্যদের এই কথা। ভাহারা অদেব—স্তরাং "বয়ং তান্ বহুয়াম সহমে''—তাহাদিগকে মারিয়া ফেলিতে চাই। ভাহারা "অন্য-ব্ৰত ''—''অমাহুষ ''—'' অযজান "∸ " অদেব।" তাহারা '' মুধবাচ ''—

<sup>\*</sup> ঋচ ১। ৫১। ৮--৯। মুরধৃত। মকাশ্শরগৃত। Sanskrit texts Part II. Chap. III. sect 1.

<sup>†</sup> ঋচ্। ১০। ৮৬। ১৯। মূরধৃত। Ib

टेजनिव

कथा कहिएछ बारनगा। ইত্যাদ। ইত্যাদি।

এইরপ বর্ণায়, নিশ্চত বুঝা যায় त्य यादामित्भन कथा इहेटल्ड, खादाना আৰ্ব্য হুইতে ভিন্নবাতীয়, ভিন্নধৰ্মী, ভিন্নভাষী--এবং ভিন্নদেশী আর্থ্যেরা, আর্যাদিগের পরমশক্ত। ভারতবর্ষে প্রথম আসিয়া, ইহাদিগের সমুখীন হইয়াছিলেন। ইহারা অবশ্য व्यनार्था।

(बामत चानक शांत गर्वाम मुनि। মুক্তে প্রমাণ পাওয়া যায় যে মুসুদং-हिडा मझलनकाटल आर्यामिटशत हाति-পার্শ্বে অনার্গোরা ছিল। সমূতে তাহারা स्ट्रेक जित्र दनिया दर्नि व बाट्य। आहात-ল্রংশ হেতু বৃষ্ণত্ব প্রাপ্ত বলিয়া কথিত षाट्ड। यथा-শনকৈন্ত ক্রিয়াণোপাৎ ইমাঃ ক্ষতিয়-

বাতর: বুষরাত্বং গতা লোকে ব্রাহ্মণাদর্শনেন চ। পৌও কাম্টোড জাবিড়: কামোলা যবনাঃ · PT:--

भातमा १ इलवा भिज्ञाः कित्राञ्च प्रत्रमाः.

ইহাদিগের মধ্যে য্বন প্রাব্তার্থী

অবশিষ্ট সনাৰ্য্য। ইহা ভাষাতত্ত প্ৰাণত প্রামাণ্ডারা ভাপিত হইয়াছে।

মফু ও মহাভারত হইতে এইরূপ অনেক অনাৰ্যজাতির তালিকা বাহির করা गাইতে পারে। ভাহাতে অন্ধ পুनिक সবর মৃতিব ইত্যাদি অনার্যাজা-তির নাম পাওয়া যায়। এবং মহা-ভারতের সভাপর্বে উহারাই দহ্যনানে वर्निङ इहेबाएइ। यथा-मरानाः निमत्रवादेगः नित्रां जिन्न-

मीर्च. कूटेक मं**रो की**र्ना विदेवर्द तथ

ইহারা যে পরিশেষে আর্য্যের নিকট পরাজিত হইয়াছিল, তাহাও নিশ্চিত। পরান্তিত হইরাই, উহারা, যে যেগানে বন্য ও পার্বত্য প্রদেশ পাইয়াছিল সে সেইখানেই আশ্রয় গ্রহণ করিয়া আত্মরক্ষা कतियाहिन। त्रवे मकन आतम इर्छिना, —আর্যোরাও সে সকল কুদেশ অধিকারে তাদৃশ ইচ্ছুক হওয়ার সম্ভাবনা ছিল না: হুতরাং সেখানে আত্মর্কা সাধ্য হুইল! कान कान यान-यथा जाविष्ठ आर्यात অধিকৃত হইলেও অনার্যোরা ওথায় বাস করিতে লাগিল, আর্যোরা কেবল

<sup>\*</sup> সজাতুধর্মা একধান ওজঃ বিজিল বিদ্বিদাসীঃ। বিদ্নি বঞ্জিন্দশ্যবে হেতিমন্ম আর্থাং সহোবর্ষরা ছয়মিত্র। ঋচ্। ১,১০৩,৩। মৃরধৃত। St. ইত্যালি বছতর মন্ত্র

প্রভু হইরা রহিলেন। শ আর্থ্যাবর্তের
সাধারণ লোক আর্থা—দান্দিণাতো সাধারণ লোক অনার্যা। আর্থ্যাবর্ত্ত ও দান্দিপাত্য তুলারূপে আর্থ্যাধিকত দেশ, তবে
আর্থ্যাবর্তের ও দান্দিণাতোর ভির
অবস্থা কেন ঘটল, এ প্রস্তাবে সে
কথার আলোচনা নিপ্রবালনীয়।
ভীরতবর্ষে আর্থা ও অনার্যার সামঞ্জ্যা
এক রকম ঘটে না। আ্যারা তিন প্রকার
অবস্থা দেখিতে পাই।

প্রথম। ভারতবর্ষে কোন কোন
আংশ আর্থাঞ্জিত নছে—অনার্যোরা সেথানে প্রধান—কতকগুলি আর্থাঞ্জ সেথানে
বাস করে, কিন্তু তাহাবা অপ্রধান।
ইহার উদাহরণ সিংহভূস।

দিতীয়। অবশিষ্ঠ আর্য্যজিত প্রদেশ শের মধ্যে কোন কোন প্রদেশ এরূপ আ্যান্তি , যে সে দেশে কেবল আ্যান্বংশ প্রাধান্যবিশিষ্ট এমত নহে—লো-কের মাতৃভাষাও আ্যাভাষা। উত্তর পশ্চিম, মধাদেশ ইহার উদাহরণ।

তৃতীয়। কোন কোন আর্য্যাঞ্চিত দেশ এরপ অর পরিমাণে আ্যাটিভূত, যে সে সকল ছানে লোকের মাতৃভাষা আঞ্জিও অনার্য্য। জাবিড় কর্ণাট প্রভৃতিতে আর্যাধর্মের বিশেষ গৌরব, ও সংস্কৃতের বিশেষ চর্চা থাকিলেও, সে সকল দেশ এই শ্রেণীর অন্তর্গত।

বাঙ্গালা বিভীয়শ্রেণীর **অন্তর্গত।**কিন্তু তাত্। ত্ইলেও, বাঙ্গালারমধ্যে
বিস্তর অনার্যা। অন্যাকোন আর্যাদেশে
অনার্যাশেণিতের এত প্রবলম্রোতঃ
বচ্ছে না। সেই কথা এক্ষণে আমরা
স্পৃষ্টীকৃত করিব।

themselves at the head of the Dravidian communities, they must have been so inferior in numbers to the Dravidian inhabitants as to render it impracticable to dislodge the primitive speech of the country, and to replace it by their own language. They would therefore be compelled to acquire the Dravidian dialects. Muir's Sanskrit Texts, Part II.

া † ম্রের দ্বিতীরখণ্ডে ৃজ্জীয়পরিচেছদে ধৃত মন্ত্র সকল দেখ—ইহার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাইবে। এখানে সে সকল উদ্ধৃত করা নিম্প্রোজন মনে করি।



### अल।

(य (य डेनानांत्म मञ्चात्मह निर्मित, ভাহার মধ্যে জলের ভাগই অধিক; ১৫৪ ভাগের মধ্যে প্রায় ১১৬ ভাগ জল ; অর্থাৎ চারিভাগের তিনভাগ হল। অস্থি, মাংস, রক্ত, মেদ, সায়, তৃক্ ইত্যাদি मक्ल छिलिएउ है जल आहि। পাশ্চাত্য পণ্ডিত পরীক্ষা করিয়া দেখি-ब्रोट्डन, त्य त्य मञ्जूरवात त्मर अज्ञान ११ সের, ভাহার শরীরে জল ৫৮ সেব শরীরে জলের ভাগ সকা-পেকা অধিক, স্তরাং অন্যান্য গাদা অপেকা জলের অধিক প্রয়োজন। কিন্ত ভাহা বলিয়া যে ঘটি ঘট জলপান ক-तिल (पर निलक्षण कहें पृष्ठ रहेता छे-ঠিবে, ভাহা নহে। শরীর এমনি চমং-কার কৌশলে নির্শ্বিত, যে ইহাতে কোন উপাদানের আধিকা বা অল্লভা হইলে हिलाद ना, मव ठिक ठिक हाई; दाभी क्रम इहेटनहें कल विशिष्ट्रा यहिता।

ভূষণ পাইলেই আমরা জলপান করিয়া থাকি এবং জলপান করিলেই পিপাসা নিবৃত্তি হয়। কিন্তু কেন ভূষণ পায় এবং কি কারণেই বা জলপানে ভরি-বৃত্তি হয় ভাষা কর জন জানে বা জা-নিতে ইচ্ছা করে ? ভূষণ পাইলেই জল খাইতে ইচ্ছা করে, এবং জল খাইলেই পিপাসার শাস্তি হয় এই মাজ জানি, ভাষার জাবার কারণ কি ?

गञ्याराह व्यव्तवं: क्या था थ है-ভেছে। আমরাচলি, নজি, চিস্তাকরি, 🐔 বা চুপ্ করিয়া বসিয়া থাকি, অথবা নিদ্রা বাই, কিছুতেই নিস্তার নাই; শরী-রের কিছু না কিছু বায়িত ছইবেই इटेर्रि। यथन भन्न क्र क अधिक, उधन রোজগারও তেমনি চাই, নচেৎ দেনায় गगल निवास बहेशा याहेरत, महाझनरक कितार (मर्डेलिया इट्रेंट इट्रेंट्र) भंती-রের এই থরচ বজ্কের হুঃস, এবং ইছার রোজগার খাদা ও পানীয়। অনাানা वावभाष्त्र (यमन (ताकफ मृष्टि भत्र काना যায়, শরীরের পক্ষে সেইকপ ক্ষুণা ভৃষ্ণা দারা শোণিতভ্রাস অনুমিত হইয়া থাকে; স্তরাং ক্ষুণা ভৃষ্ণাই ইহার রোকড় বহি ী गथनहे तरक करणत खांग कम भएड़. ভখনই আমাদের তৃষ্ণা বোধ<sup>®</sup> হয়। যদিও আপাততঃ এরপ বোধ হয় যে টাক্রা শুকাইয়া যাওয়াতে পায়, তৃথাপি প্রক্রতপকে শেণনিতে জলের অংশ হ্রাস হওয়াই ইহার মূল কারণ। যেমন শরীরাভাস্তরে থাদোর ভাভাব কুধার প্রাকৃত কারণ হইলেও আমরা পাকস্থলীতে কুধার অনুভব করি, ভৃষ্ণার পক্ষেত্র সেইরূপ অপ্রধান कांत्रगरक ध्राधान कांत्रण विनिया निर्फ्रम করিয়া থাকি। কারণ, তৃষ্ণাতুর ব্যক্তি<sup>র</sup> টাক্রা ভিদাইরা রাখিলে যে তৃ<sup>ফা</sup>

নিবৃত্ত হয় ভাহা অলকণমাত্র স্থায়ী, কিঞ্চিং পরে আবার যে তৃষ্ণা সেই তৃষ্ণা; গাকস্থলীর পরিপাকক্রিয়াম্বারাই হউক, দেহে ক্ষত করিয়া শিবাসধ্যে প্রবেশিত ১করিয়াই হউক, অথবা অকের শোষণী-শ্বিদোরাই হউক, যতকণ প্ধাস্ত জল <sup>®</sup>রক্তের সহিত মিশ্রিত না হ**ই**তেছে, তত-ক্ষ্মীণ একবারে তৃষ্ণা নিবৃত্তি চইতেছে <sup>®</sup>না। একংণে ভিজ্ঞাসা হইতে পাবে त्य यमि वरक करनव छ। शक्त शक्ष है ह मध्य कावन इडेल, इत्य छन्न है। कवा छक। डे-লেট কেন ভুকা অনুভ্ৰ হয় গুটহাৰ কারণ বোধ হয়, যে অনান্যি যু অপেকা মুখের ও টাকেবাব সংঘ্ জলেব অভাব অধিক অফুভব করে। যে সমস্ত জঃন বাস্তবিক সমস্ত শ্বীরের অবস্থার উপর নির্ভর করে, তংসমুদায়ও কোন একটি থিশেষ ইঞ্যি হইতে যে অনুভূত হইতে পারে, ভাহা ডাং ভক্মানের (Volk mann) গরীকাদারা একরূপ নিদ্ধান্ত क्रेब्राह्य ।

রক্তে ভূলেব ভাগ কম হওয়া যে
পিপাদার কারণ তাহার একটি চমং
কার প্রমাণ আছে। ক্রড বারনার্ড
দেখিয়াতেন, কোন কুরুবের পাকতলীতে একটি ভিজ ভিল, কুরুব জলপান
করিবামাত্র সেই ভিজ দিয়া সমুদায়
জল বাজির হইয়া পড়িত। হুতরাং
জল রক্তের সুহত মিশ্রিত হইতে
না পারায় ভাহার পিপাদা নির্ভ
হইত, না, আবার সে জলপানে প্রেরত

ছইত, জলও আবার নির্গত হইয়া যাইত।
কুকুর এইরপে পুন: পুন: জলপানে
কান্ত হটরা কিয়ৎক্ষণ বিশ্রাম করিয়া
পনবার জলপান কবিতে আরম্ভ করিবামাত্র
পীত জল পাকস্থলীতে শোষিত হইয়া
রক্তের সহিত মিশ্রিত হটত, এবং তজ্জনা
তুক্ষা এককালে নিবুত হটত।

দ্বকেব শোষণী শক্তিবাবা জল দেহমধ্যে নীত হয়। এই বিষয় লইয়া পঞ্জিরাবের माना किङ्काल अस्तक वामाञ्चाम हास, অবশেষ ইছা সভা বলিয়া প্রতিপল হইয়া থিয়াছে। ডাজাব এডওয়ার্ডদ প্রীকা কবিয়া দেপিয়াছেন, যে টিক্টিকীর লাক্সন জলে ডুবাইয়া রাখিলে জল শোষিত হইয়া ভাষার সর্কশ্রীবে সঞ্চারিত হয়। ডাক্তার মাডেন আধ ঘণ্টাকাল জলে সমত শ্বীৰ মগ্ন রাখিয়া দেখিয়াছেন তাঁহার দেহের ভার প্রায় ৪ ড়াম ১ ইস-কুপল ১ গেণ পৰিমাণ দক্ষিত হুইয়াছে। জনেৰ অ-শ দেহমধো শোষিত লা হইলে দেহভাব • কিন্তাপে বিদ্ধিত হইল ? ডাং বাৰণও প্রীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন, আন ঘণ্টার মধ্যে তাঁহার দেহভার আনহ কিৰিঃং বৰ্দ্ধিত ইইয়াছিল।

যতটুকু জলপান করা উচিত,তদপেক্ষা অৱ ফুলপান করিলে কি কি অনিষ্ট ঘটতে পাকে, তাহা অদ্যাপি সমাক্ নির্ণাত্ত্য নাই। বোধ হয় ইছার প্র-ধান কারণ এই, যে যে তৃষ্ণাশান্তির ইচ্ছা এত পাবল পোকে সেই ইচ্ছাকে কোন

মতে নিবৃত্ত ও অর্ক্তপূর্ণ করিয়া রাখিতে পারে না। কয়েকটীমাত্র পরীক্ষাদারা এতৎসম্বন্ধে যাহা কিছু জানা গিয়াছে, ভাহাতে বোধ হয় যে, প্রয়োজন অপেকা खन्न बाह पार्टिन Pulmonary Carbonic Acid অলমাত্রায় নিংস্ত হয়, মল ও মৃত্রভাগে কমিয়া আসে, এবং বছদিন এই ভাবে থাকিলে শারীরিক ও মান-সিক্শক্তি কমিয়া যাইতে পারে। সামা-(एत (मभीय वांशांमकीव वांकिपिरंगत मर्था এই একটি কুসংস্কাব ভাঙে যে, বাায়ামকারী যত অল্ল জল খাইবে ভতই ভাল। কিন্তু এটি বিষম ভুল। সাধারণতঃ শরীর হইতে যে জলীয় অংশ নিঃস্ত হয়, বাায়ামকালে তদপেকা প্রায় ১২১০৪১ ভাগ অধিক জল নির্গত সেই অংশ পূর্ণ করিয়ালইবার জন্য বরং অধিক পবিমাণে জল থা 9য়া কর্ত্তবা। ভবে একবাবে অধিক পরি মাণে জল না থাইয়া সল্ল অল করিয়া বছবার জলপান করা মন্দ নতে। শীত-প্রধানদেশে প্রত্যেক লোকের প্রতিদিন ২০ গালেন জলের প্রয়োজন হয়; তন্মধ্যে শুদ্ধ পানার্য যুবকের পক্ষে ৭০ হইতে ১০০ ঔষ্প প্রাস্ত এবং বাল কের পক্ষে ২০ ছইতে ১০ ঔশ পর্যান্ত कन महकात इस। (मर्को निकार हिंहे ১৮৬৮ সালে এই আদেশ করিয়াছেন, যে প্রভাক দৈনা প্রতিদিন ১৫ গালিনের অতিরিক্ত কল পাইবে না। শীতৃপ্রধান (मम वार्शका श्रीप्रश्राग (मर्म करनत

কিছু অধিক আবশাক, এবং আমরা
সভাবতঃ অন্যানা জাতি অপেক্ষা অধিক
পরিমাণে অল বাবহার করিয়া পাকি।
কিন্তু কলিকভায় এখন কলের জল বাবহার হইতেছে, যত ইচ্ছা এখন ডত জল,
পাওয়া যায় না, প্রত্যেক অধিবাসী গড়ে
যে পরিমাণ জল পাইয়া পাকেন, তাহাতে
কলিকভায় অলকপ্ত হইয়াছে অনেক্টে
বলিয়া থাকেন। এই কারণেই আজ
কাল জলের পরিমাণ বাড়াইবার অন্য
আন্দোলন হইতেছে।

পরিশ্রমের ভারতমা অমুসাবে আবার ফলের আবশাকতাও কমবেশী হইরা পাকে। যে ঘোড়া প্রতিদিন ৪ ক্রেশ গাড়ি 
টানে, ভাহার৮ গালন জলের দরকার হয়;
কিন্তু সেই ঘোড়াই যথন আড়গড়ার বাধা 
থাকে কোন কর্মানা কবে, তথন ৭ গালন জলেই ভাহার পর্যাপ্ত হয়। আবিসিনিয়ায় যুদ্ধগাত্তাকালে জাহাকে যে যে পশুর প্রাভাতিক পানার্য যে ছেগরিমাণ জল লওয়া হইয়াছিল, নিয়ে ভাহার 
হালিকা প্রামন্ত হইল।

অনেকে বলেন, "অবিশুদ্ধ জল পান করিলে কোন অপকার হয় না, কারণ এরপ দেখা গিয়াছে, যেযে সকল বাগ্দী

প্রভৃতি জাতি বাদায় বাস করে, ভাহারা প্রায়ই বাদার অপেয় জল পান করিয়া থাকে, অথচ ভাহাদের স্বাস্থ্য কেমন স্থার! শরীর কেমন বলিষ্ঠ!" ছইটা , কারণে এ কগাটা আমাদের সম্পূর্ণ সভা विश्वा (तांध इत्र ना । প्रथम, वामात লোকে যে অপেয় বাদার জল নিতা **ুপান** করে ভাহা নহে, ভাহারা যে দীপা-कात शारन वाम करत, छथाकात श्रक्तिशीत নিশ্বল জলই প্রায় পান করে,তবে কার্যা-গতিকে কদাচ কথন বাদার জলও যে না পায় তাহা নহে 'কিন্তু তজ্জনা যে সামানা অপকাব জ্বে ভাষা ভাদৃশ বলিষ্ঠ দেছে কোন নিশেষ অনিষ্ঠ ক-রিতে পাবে না। দিতীয়, সকল বাগ্-দীই যে বলবান্ ও হৃত্তশরীর তাতার কোন প্রমাণ নাই; হইতে পাবে যে • যাহারা আনাদেব নজরে পড়ে তাহারাই (करन सुष्ठकांग्र: पूर्वन s कार्यात्र লেঃকদিগের সহিত সাক্ষাৎ হইবাব चामारमञ्ज कात्र चर्छ ना। चामारमञ এরপ বোধ করিবার অন্যতম কারণ **बहे (य, लाटक एय मिन अविश्वन जन** পান করে, সেই দিনেই কিছু পীড়িত, • হয় না, ইহার ফল অনেক পরে ফলে. কাজেই আমর৷ পীড়ার সহিত সাকাৎ শহরে অপেয় জলুপানের কোন সম্পর্ক नारे (पिश्रा देशांत अना कात्र निर्फंन क्ति। किन्न चान्निक ब्लालत मार्य ष्यत्नक शीष्ठा खत्या, जम्मत्या छेएत। मञ्ज उन्डिका । अ अत्र नर्वधान। क नि-

কাতা অপেকা আজকাল পন্নীপ্রামে যে জন অধিক, তাহার প্রধান কারণ এই যে, কলিকাতার জল অতি পরিকার, কিন্তু পলীগ্রামের জল আবার তেমনি অপরি-কার। হিপোক্রেটিস বলিয়া গিয়াছেন, যে বাদার জলে শ্লীহা বৃদ্ধি হয়।

জলের সহিত প্রধানত: এই সম্প্র शनार्थ मिलिङ शांदक, यथा—कास्टव, উদ্ভিদ বা ধাত্তব পদার্থ, বায়বীয় পদার্থ, नाहेत्षाजन, अजिस्कन, কারবনিক আসিড, কঠিন পদার্থচয় (Solid matters) চুণ, মাাগনিসিয়া, সোডা প্রভৃতি। কখন কখন ধাতৃও জলের সহিত মিশ্রিত থাকে, যথা আরদেনিক, ম্যাংগানিস, সীমা, তাম্র, দস্তা ইত্যাদি। ইহার মধ্যে কোন কোন ধাত্তব ও জাস্তব পদার্থ অতিশয় অপকারী; কিছু আর-**যেনিক প্রভৃতি ধাড় যে জলে মিশ্রিভ** আছে তাহা বিষতুল্য। সাধারণত: গ্রানাইট, বালী ও খড়িময় স্থানের জল বিশুদ্ধ হইয়া থাকে। কৰ্দমময় স্থান ও ব'দার ৢজল প্রায়ই দ্বিত ও অপেয়। की हानुशूर्व छन भंतीरतत भरक अभकाती কি না'তদ্বিষয়ে মতভেদ আছে। ইন-कि छेटमातिया नामक की छानुवाता टकान, অনিষ্ট হয় না, কিন্তু কতকগুলি কীটাণু দেহ্মধো নীত হইলে অপকারও করিতে পারে। দূষিত জলপানে যে রক্তামাশয় রোগ জন্মে, তদিষয়ে একটি আশ্চর্যা গল্প West Indies নামক দেখের অন্তর্গত Tertola গ্রামে আগমনমাত্র ভ

ত্ত্তা দৃষিত অলপানে নাবিকগণের উক্ত নিমন্ত্রণ করিলে, সে ব্যক্তি একখটা রোগ হইত ; কিন্তু তথাকার অধিবাদিগণ থাবার জল সঙ্গে করিয়া আনিত, প্রাণা-বুটির জলপান করিরা দিবা স্কুম্ব থা-কিত। নাবিকেরা কোন অধিবাসীকে

বেও কাহাত্রের কল পান করিত না।

পঞ্চিমাঞ্চলের ফলে যে যে পদার্থ মিশ্রিভ আচেছ তাহার তালিকা। \*

স্থানের নাম			প্রতি গ্যালনে কঠিন প্লার্থের পরিমাণ		্প্রতি গ্যালনে সাধা- বণলবণের পরি- মাণ		
আগরা নগরের বৃ	<b>চ্প</b>		•••	24	গ্ৰেণ	૭૨.8	গ্ৰেণ
গোয়ালিয়রের কু গোয়ালিয়রের স্থ		''' কাপ্স	***	300.2	,,	88.3	•
কৃপ Happy			e.,	; <b>3.</b> 5		9.55 :	
কাজিত কুপ				>8.5	;·	3.9	"
·	<b>:</b> ···	•••	•••	251	• **	5.8	•
ফয়জাবাদস্কৃপ	•••	•••	•••	1	,,	2.8	"
বছরম <b>পুরস্</b> কৃপ	•••	•••	•••	6.6	,,	७२.७	,,
অম্বাস্থ কৃপ	•••		•	99.6	,, ,,	\$ 6.9	,,
রাউলপিণ্ডীয় কৃপ	•	•	•••	<b>&gt;</b> %.8	, ,,	.98	37
সাগেরত কৃথ	•••	•••	•••	; ; \$49.5	• ,,	৩৮.৬	.,
<b>নীভাপ্র</b> ত্ত কৃপ	•••	•••	•	; 3 <del>5</del>	<b>)</b> ,	. <b>.</b> .	, ;;

## ভাগলপুর জেলার অন্তর্গত ভিন্ন ভিন্ন স্থানে কলে কি পরিমাণে কি কি ত্রব্য মিশ্রিত আছে নিমে তাহার এক তালিকা

#### দেওয়া যাইতেছে।

স্থানের দাম	প্রতি গ্যালনে গে।ডিয়মের পরিমাণ	গুতি গ্যালনে সাধারণ লব- ণের পরিমাণ	
ভাগলপুরের নিকটবর্ত্তী	1	And the state of t	
र्गक्राइ स्था	86.8	! .७ <b>१</b> २	
বাজারস্কৃপ	. : > > 0.8	२ <b>१.०२</b>	
কুন্দীপুর বাজারের কুপ	৬৯৩.	১৭৩.৮	
हि, मान्डिम् मारहरवत्र			
বাটীস্থিত কৃপ •	৩৪.১	১.৬৩৭	
ক্লিডন্যাও মন্দির সন্নিহিত			
কুপ	. २৮.5¢	<b>5.</b> 59	

কি কি বস্ত জলের সহিত মিঞিত 🗂 আছে, ভাহা নির্ণয় করা বড় কঠিন। माधात्रवडः (य (य नक्ष्व थाकित्न जन পানযোগ্য হইয়া থাকে,—তাহা এই পেয়ञ्जन चष्ड् ও निर्मान क्षेत्र, ভাহাতে शान वा र्गम किছुই शाकित्व ना, कान প্রকার পদার্থ ইহার সহিত মিশ্রিত না থাকে, এবং ইহা বায়্মিশ্র হয়, কঠিন 🐧 ঘারা শোধিত করিয়া। • পদার্থ প্রতি গালনে ৮ গ্রেণের অধিক না থাকে, নাইট্টে বা আমোনিয়া चामि ना थाकिश्नरे छान इम्न, जरव ষ্ঠি ষ্কল পরিমাণে থাকিলে হানি নাই। बालत द्य देय द्याय द्यत्राप विनर्धः হইতে পারে, তাহা পশ্চাৎ প্রদর্শিত ब्रेड्ड्ड्इ

कारुव शनार्थ-कृष्ठीहेशा न छशा जनः वत्रक नाष्ट्रा, वाशुमम्मर्क धवः कन्नना अ ফটকিরি প্রভৃতি দারা বিদ্রিত হইতে भारत ।

Carbonate of Lime—ফুটাইয়া ও Caustic Lime মিশাইয়া।

Sodium Chloride-করলা ও বালি

লোহ-ফুটাইয়া এবং কিছুপরে চূণের জল মিশাইরা এবং কিয়ৎপরিমাণে ক-য়লা-দিয়া। লৌহ, তাম প্রভৃতির অংশ **শুদ্ধ কয়লাম্বারা অনেক্**কম করা যাইতে পারে।

Calcium, Magnisium, Sulphate এবং Chloride প্রভৃতি পদার্থ একবারে কথন দ্র করা যার না বটে, কিন্তু কর্লাছারা শোধন করিয়া লইলে ইহা-দের পরিমাণ অনেক কম হইতে পারে।

আৰু কাল আমরা যে কলের জল খাইয়া থাকি তাহা প্রায়ই সীসার নল-বারা আনীত হয়। কিন্তু এই কল অতিশন্ন অপকারী। বছদিন সীসাব নল দিয়াজল আসিলে সীসাক্রমশঃ ক্ষয়িত হইরা জলের সহিত মিশিরা যায়, এবং সীসামিশ্র জলপান করিলে প্রায়ই, পকাঘাতরোগ হটয়া থাকে। ১ গালন জলে 🗦 ত্রনমাত্র সীসা মিশ্রিত থা কিলেই উক্ত পীড়া হইবার সম্ভাবনা। **७**हे (मांच পরিহারমানসে অনেকে অনেক প্রস্তাব করেন, তন্মধ্যে তার (Tar) দিয়া বার্নিস্ করিয়া লওয়াই সর্কা-পেকা সহজ, স্নায়াসদাধা ও কার্যা-কারক। সীসার নলের পরিবর্ত্তে পেটা cetei वा कलाहेकता हित्तत्र नल वाव-

হার করা ভাল। কেছ কেছ কুত্রিম প্রান্তর ব্যবহার করিবার উপদেশ দেন। আমরা এতৎসম্বন্ধে আর একটি কথা विद्या शिखांव भिष्ठ कत्रियः। व्यानास्कत्र বিশাস আছে, যে ভালে মদ মিশাইরা थारेटन त्मरे कटनत ममल तांच नहे হয়। ইহা সম্পূর্ণ ভ্রম। মাতালেরা নিজের দলপুষ্ট করিবার জন্য এরপ্র কেন এমন কথা বলেন, তাহা আমরা বৃঝিতে পারি না। বোধ করি লোকের চক্ষে धृलिमृष्टि निक्ति कतिया मन थाई-বার বাসনায় তাঁহার৷ এরূপ বলিয়া থাকেন। মদ মিশাইয়া অবিশুদ্ধ জল খাইলে এই লাভ হয়, যে দৃষিত জলের অপকারের উপর মদের অপকারটুকুও আসিয়া জুটে। দান করিবার জন্য চুরি করায় যেরূপ পুণ্য, ইহাতেও • সেইরূপ লাভ।



৩ সংখ্যা।

## <sup>'</sup>বাঙ্গালির উৎপত্তি।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ। धानार्यात पृष्टे वश्म साविष्टी ও काल। - আমরা বুঝাইয়াছি বে, ভারতবর্ষে আগে অনাৰ্যোর বাস ছিল-তার পর আংগ্রেরা আসিরা ভাহাদিগকে করিয়া তাড়াইরা দিয়াছে। অনার্যোরা বন্য ও পার্ক্তাপ্রদেশে গিয়া বাস করি-তেছে। ভারতবর্ষে অন্যত্র যাহা ঘটি-बाह्य-वानागाटाख छाहे, हेहा महस्य षश्रमय। किन्द्र वाजानात मान मधा-(म्मामित अक्टी श्रक्तकत थारक न चारह। मधारम्लानित्र नाात्र, वानानात्र जनार्याशन नकरणहे विकत्री कार्यानिरंशत छत्त शना-वस करत नाहे। देकह दकह नगाहेबारह —हक्द (कह बदबरे बाटह।

জাতি জাতাস্তরকে বিজিত করিয়া ভাহা-निरगत रम्भ अधिकृष्ठ कतिया आदिमवाभी-দিগকে দেশ হইতে দুরীক্বত করে। আদিমবাসীরা সকলে হয় ভেতৃগণের रुट्छ व्यांग रातांत्र, नत रमम हािज्ञा (मभाखदा भनाहेबा वाम करता। টনগণকর্ত্ত্রক ব্রিটেন জয়ের ফল এইরূপ হইয়াছিল। সাক্সনেয়া ব্রিটন জন্ন ক-्बिमा शूर्वाधिवात्रीतिशटक निः एगटव स्वः म করিয়াছিলেন। কেবল যাহারা ওয়েল্স্ कर्वश्रान् वा बिष्टामीखामाण शिवा भना-ইয়া বাস করিয়া রহিল, ভাহারাই রক্ষা পাইল। ইংলডে আর ব্রিটন্রহিল না। हेश्मक दक्षा विकिवेदनम् दम्भ दहेल। विजीत थकारत रत्नकत्य भूकीविवामीता स्व कि विक क्षेत्र क्षेत्र द्वाम धारण विमहे वा छाष्ट्रिक रह ना । तिस्की मिटनक সভে মিশিয়া বার । নার্মাণ্যণকর্ত্ত ইংলগুজয় ইহার উলাহরণ। আর্যাগণ বাজালাজর
করিয়াছিলেন। তাঁহারা টিউটন্পিগের
মত অনার্যাদিগকে নিঃশেষে ধ্বংস বা
বিল্রিড ক্রিয়াছিলেন, বা নার্মাণ্ বিজিত
সাক্সনের মত অনার্যোরা বক্তজেতা আর্যাদিগের স্থিত মিলিয়া মিশিয়া গিয়াছিল
ভাহা আমাদিগকে দেখিতে হইবে। যদি
দেখি, বে বাজালার বর্ত্তমান অধিবাধীদিগের মধ্যে অনার্যানংশ এখনও আচে,
ভবে ব্ঝিতে হইবে, যে অনার্যোরা
আর্যাদিগের সঙ্গে মিশিয়া গিয়াছিল।

व्यथा (मथा गाँडेक, वाक्रालाव का-থায় কোন্ কোন্ অনার্গাভাতি আছে। সে গণনার পূর্বে প্রথমে বৃঝিতে হটবে বালালা কাহাকে বলিতেভি। কেন না বাঙ্গালা নাম অনেক অর্থে বাবহৃত হটয়া থাকে। এক অর্থে,পেশের পর্যাস্ত বাঙ্গা-লার অন্তর্গত-- যথ। "বেঙ্গল প্রেসিডেন্সি" "বেঙ্গল আর্দ্মি।" আর এক অর্থে বাঙ্গালা ভতদুর বিস্তৃত না হটক, মগধ, मिथिना, উড়িয়া, পালামৌ উতার অস্ত-ৰ্গত-এই সকল প্ৰদেশ বাজালার লেফ-टिटन हे भवर्त इसीन। धरे इने व्यर्थ ( कान अर्थरे वाजागांच व कार्यक वाव-হার করিতেছি না। যে দেশের লো-কের মাতৃভাষা বাঙ্গলা, সেই বাঙ্গালি; সেই, বাঙ্গালির উৎপত্তির বাহিরে অনুসন্ধানে পাবৃত। তা্হার ট*ডি*ছাস যাহারা আহে काशारमं द নিখিৰ না-সাঁওছাল বা নাগা এ

থাবন্ধের 'কেছ নহে। তবে এখানে বাঞ্চালার বাহিরে দৃষ্টিপাত না করিলে, আমরা কুতকার্যা হউতে পারিব না । যে সকল অনার্যাঞ্জাতি বাঞ্চালার আ্যা-কর্তৃক দৃরীভূত হইয়াছে ভাহার। অবশা বাঙ্গালার বাহিরে আছে। বাঞ্চালার ভিতরে ও বাঞ্চালার পার্থে কোন্কোন্ অনার্যাঞাতি বাস ক্রি-ভেচে— দুইই দেখিতে হউবে।

উত্তরগীমার ব্রহ্মদেশের সমুখে দেখিতে भारे, शामि, निःरका, सिन्सि, हूलकारे। सि-শ্মি। ভারপর জপরস্বাতি,ভাহাও মনেক-क्षकातः। यथा-भातम् विती प्रकृता, हेकाति। ভाর পর আসামঞ্চলেশের নাগা. কুকি, মণিপুরী, কৌপয়ী, ভাছার বাছি মিকির, জয়ন্তীয়া,, খাসিয়াও গারো আতি। আসামের মধ্যে ব্রহ্মপ্রতীরে দেখিতে পাই, কাছাড়ি বা বৈাড়ো, মেচ্ ও ধিমালভাতি এবং বাঙ্গালার মধ্যে ভাহাদিগের নিকটকুটুম্ব কোচলাভি। তৎপরে উত্তরে, ভিমালরপর্কচের ভি-তরে বাস করে, ভেটি, লেপ্ছা, লিছু, কিরান্তী বা কিরাতী (প্রাচীন কিয়াত।) ভার পর বাঙ্গালার পূর্বদক্ষিণ শীমার্থ মগ, লুদাই, কুকি, কারেণ, ভালাটন প্র ভৃতি জাতি। ত্রিপুরার ভিতরেই রাজ বংশী, নপ্তরাডিয়া, প্রভৃতি ভাতি ভাছে; बाषालाव পশ্চিমদিকে, কোল, माँ ওভাল, খাড়িরা, মুণ্ড, কোঁড়োরা ও রাও বা ধা-কড় প্রভৃতি অনার্যালাভি বাস করে। धारे (नार्याक कर्त्रकि वाचित्रकार्याकरे

আমাদের অনেকগুল কথা বলিতে

ইবৈ। উত্তর ও পুর্বের অনার্যাদিগের

সক্ষে আমাদিগের ওড্টা সম্বন্ধ নাই,
ভাষারা অনেকেই হালের আমদানী।

আমরা কেবল কয়ট প্রধান জাতিব
নাম করিলাম—আতের ভিতর উপজাতি
আচে এবং অনানা জাতি আতে।

সিক্তকেমে ভাষাদের কথাও বলিভে

ইবৈ।

এখন প্রথম কিজাদা এই যে, ইহারা কলে কি একবংশম্ভূত 🖲 ভার্যের। नक**्न**हे এकव्॰मभङ्गह—,श्वार्गःमक्षत खं র্থিট্ডাই। কিন্তু "অনার্যা" বলিলে কৰল ইহাই বৃঝায় যে, ইহার আর্থা াছে—য:হাবা আর্যা নহে, ভাহারা সক-লেই যে একজাতীয় এমত ব্ৰায়না। यनि এমত প্রমাণ থাকে যে, ইহারা একবংশোদ্ভত ভবে সহজে ভা**ভু**মান कदिएक भाषा यात्र, त्य वेशात्रा मकत्नवे বিজ্ঞালার প্রথম অধিবাদী-- আগ্রগণ-কর্ক ভাড়িত হুইয়ু। নানাস্থানে ছড়াইয়া 'পড়িয়া ন।নাঁদেশে নানা নাম ধারণ করি-बाह्य ; किन्न यमि ८म श्रीमान ना शाहक--বরং তাৰিক্লকে প্রমাণ থাকে, যে তাহারা ় নানাবংশীয় তবে আবার বিচার করিতে रहेद्र, धरे छिनत मस्या काहाता काहात। বাদালার প্রথম অধিবাসী।

প্রামাণা ইতিহাসের অভাবে ভাষাবিজানের আবিদ্ধিরা এসকল বিবরে গুরুতর
প্রামাণ। জামরা প্রথম পরিচ্ছেদে যে
তিন্ত্রেলীতে ভাষার কথা বলিলাছি,

তাহার মধ্যে ভৃতীয়শ্রেণীর ভাষার অস্তু-ৰ্গত আৰ্যাভাষা ও সেমীয়ভাষা (আর্বী, হিক্র প্রভৃতি ) প্রথমধ্রেণীর ভাষা গুলি— याहा সংযোগ विवरणक व्यथवा विक्रक विभिष्टे नहन-(महे मकल छाषारक हेन्ड-রোপীয়েরা ভাবত-হৈনিক বলিয়া পা-কেন। নামটি আমাদিগেব বাবহারের অযোগ্য—আমরা ঐ ভাষাগুলি চৈনি-কীয়ভাষা বলিব। দিভীয়শ্রেণীর ভাষার সাধারণ নাম ভুরাণী। বাঙ্গালার মধ্য বা প্রাস্তব্যিত অনার্যালাতি সকলের ভাষা এই বিবিধ—কতকগুলি ছাতির ভাষা চৈনিকীয়---ইহাদিগের বাস প্রায় আ সামে—বা বাঙ্গালার পূর্বসীমায়। তা-হারা অনেকেই আর্যাদিগের পরে আদি-য়াছে এমত ঐতিহাসিক প্রমাণ আছে। ভার পর অবশিষ্ট যে সকল অনার্যাক্সাভি -- দাহাদিগেব সকলেবই ভাষা ভুরাণী-

কিন্তু সেই সকল অনাধান্তায়ার মধ্যেও ভাতিগত পার্থকা দেখা ধার। পূর্বেই কণিত ইইয়তে, জাবিড্ভাষা ত্রাণী-শ্রেণীস্থা বাজাগার অনাধাভাষার মধ্যে কতকওল জাতির ভাষার শব্দ সমাস ও বাকেবল সমালোচন করিয়া পাওতেরা দেখিয়াভেন সে, ঐ সকল ভাষা জাবিড়ী ভাষার সঙ্গে সুস্কর্মবিশিষ্ট। আর কতকভাষার সঙ্গে আরাজার সঙ্গে আরাজার সঙ্গে আরাজার সঙ্গে আরাজার সাদ্শ্য নাই। ইহাতে সিদ্ধ হইয়াতে যে, বাজালার কতকভালি অনাধালা ত্রাবিড়ীছিলের জ্ঞাতি—

ক্তকগুলি তাহাদিগের হইতে ভিন-ভাতি।

बाबाता, अलाविजी, जाबानिरशत मध्या ভাষাগত ঐক্য আহৈ। • কোল বা হো, সাঁওভাল, মুগু প্রভৃতি এখন ভিন্ন ভিন স্থানবাসী ভুলুর,ভিল্ল আভি বটে, কিন্তু ষেমন সকল আর্যাভাষাই পরস্পাবের সহিত সাদৃশা ও সম্ধ্বিশিষ্ট কোল, মুগু, সাঁওতাল প্রভৃতির ভাষাও সেইরূপ সাদৃশাও সম্বাবিশিষ্ট। অভএব ইহারা সকলেই একজাতীয় বলিয়া বোধ হয়। এই কণা আরও প্রাঞ্জল করিবার জনা বাঙ্গালার স্তাটিষ্টিকল আকৌণ্ট হইতে বেঙ্গল সিবিল্ সার্কিসের রিজলি সাহেবের লিখিত করেক পংক্তির মর্মাত্রবাদ করি-তেছি ৷ তিনি চুটীয়া নাগপুর বিভাগের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিরা লিখিতেছেন, কিন্তু কথাগুলি সমন্ত ভারতবর্ষ সহকে चार्छ ।

"চুটারা নাগপুর প্রদেশের আদিন বাসীদিগের যতগুল ভাষা আছে, সকল গুলারই এক বিষ্ট্রে সাদৃশা আছে। ভাষার বে গঠনকে, প্রভারবিশিষ্ট বলে (সংযোগ সাপেক) ঐ সকল ভাষাগুলি ভ্রাণী গোলীর দক্ষিণ শাখার মধ্যে গশিত হয়। ভদ্মধ্যে উদয়পুর ও সরগুলার গোদ-লাভির ভাষা, আসল চুটারা নাগপুরের ভ্রাওি (খাঁলড়) লাভির ভাষা, রাজসহলের পাহাড়ের পাহাড়েরা দিগের ভাষা প্রভৃতি করেকটা ভাষার ভারত-

বর্ষের দাক্ষিণাত্যের স্থুসভ্য ভাষা সক-त्नत्र मटक विरमस मानुभा दनका यात्र। এই জন্যে আচার্য্য মাক্সমূলার্ এই ভাষা-গুলিকে তামুলী ভাষা বলিয়। বর্ণনা করিয়াছেন। পক্ষান্তরৈ সান্তানি মুণ্ডারি ও সিংহভূমের হো বা লড়কা কোলদি. গের ভাষার সঙ্গে তামুলিক ভাষা স্কু-লের সঙ্গে কোন শব্দে ঐক্য নাই। এজন্য সাক্ষমুগার সে গুলিকে ভিন্ন খে-নীতে বসাইয়া মুগু নাম দিয়াছেন। ১৮৬৬ সালে ভারতীয়জাতিগণসম্বন্ধে সার্জজ ক্যামেল বে গ্রাহ প্রার ক্রেন, তাহাতে वाकाला दिशात ७ बानातम् धारादम् দক্ষিণ ও পশ্চিম সীমা হইতে হায়দরা-বাদ ও নাজাক প্রদেশের সমুখ পর্যাত আর পূর্বঘাট পর্বত হইতে মধ্য ভারত-বর্ষস্থ নারপুর রাজ্যের স্থস্ডা অংশ প্রাস্ত যে পার্কত্যপ্রদেশ, ততা বাসী অনাৰ্যাজাতিগণকে তিনি ছই ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন। এক দ্রাবিড়ী অ-নাৰ্যা, অৰ্থাৎ যাহারা দাকিণাতোর জাবিড় ভাষা সকলের সদৃশ ভাষায় কথা কয়, **হি**তীয় কোলারীয় বা উত্তরবাসী অ-नार्या, याहाता भाकाशृनादतत वर्गित मुख আতীয় ভাষা বাবহার করে। এই শে-ষোক্ত ভাষানিচয়ের দুরস্থিত অন্যান্য ভাষার आर्थ (य मध्य ध्वर (य नकल আভিমধ্যে যে সকল ভাষা প্রচলিত, **डाशामंत्र कामि कि. এ मकन उर ७**९-কালে অনিশ্চিত রহিল। তুরাণী ভাষা-नष्टक मांस्यूनाद त्य भवा काहाँ करवन

্ভাহাতে ৰণিয়াছিলেন এই সকল ভাষার সঙ্গে অন্য কোন ভাষার সহন্ধ নাই। আর হজ্পন সাহেব তাঁহার প্রণীত কোচ বোড়ো'ও ধিমাল জাতি সম্বন্ধীয় প্রবন্ধে বলিয়াছিলেন, যে এই সকল ভাষাও তাম্লিক। তবে যে দ্রাবিড়ী লাতি হইতে কোল বংশীয় ভাষা সকল ভিন্ন প্রকৃতি-এক ভণ্যা হইয়া পড়িয়াছে, তাহার কারণ এই যে মধাভারতবর্ষে নিবিড় জঙ্গলে পড়িয়া এই সকল ভাতি ছিন ভিন্ন হইয়া পড়িয়াছে। হজ্মন সাহেব যে দাকিণাতাবাদীদিগের সঙ্গে পূর্ব্ব-বাঙ্গালানিবাসী ভাতিদিগের সম্বন্ধ সং-স্থাপিত করণে ইচ্ছুক; স্থার তিনি যে তামূলিক শক অতি বিস্তৃত ১ অর্থে ব্যব-হার করিয়াছেন ইহা বুঝাইয়া দিয়া मत्मर्क क्यारमन् (प्रथारमाहिमाहिन, दि সিংহভূমনিবাসী হো আতিদিলের ভা-ষার সঙ্গে জাবিড়ী ভাষ। সকলের কয়ে-की विरम्य नक्करनत क्षेका चाहि। यथा কোলীয় জাবিড়ী ভাষাদকলে প্রকৃত खाडारवं निकासि नाहे, चाठकनभगार्थ मांजरे क्रीविनित्र । अस्माजन मट्ड मस्त्र , चां को भूक्ष मक वावश्र हरेंगा थारक। विरम्बंग मर्स विज्ङि गारे। অথবা ভারভমাবাচক শক্ষ নাই। সর্ক-नारमञ्ज्यम श्रुक्रस्य वह्वहर्नत वावः তাহার সম্বন্ধ প্রের ছইটি ক্রপ আছে, একটিতে মধামপুরুষ বাদ, আর এক-वित्र किञ्चत मधाम श्रूक्यं धीरक। वन देनानि वर्ग नाठक नर्सनात्मद नदिः

বর্ত্তে প্রত্যেমান্ত ক্রিয়া পদের ব্যবহার হইয়া थारक। "य याञ्चित्रप्राट्ड" ना विनिष्ठा তাহারা ''গত মুষা'' বলে। পকাস্তরে (कालवःभीम ভাষাসকল বংশীয় ভাষানিচয় ইইতে অধিক পরি-মাণে বিভক্তিসম্পন্ন।ুকোলে বীতি-মত দ্বিচন আছে জাবিড়ীতে নাই। অধিকস্ত কোলীয় ভাষার অধিকতর সম্পূর্ণ। অতি সামান্য শব্দ বাতীত নিকটবৰ্ত্তী ভাষা হইতে যে অধিক শন্ধগ্রহণ করিয়াছে এমত কোন চিহু কোলবংশীয় ভাষায় নাই। যথা সংখ্যা निर्काठनकद्रत्व त्शांत्मद्रा जाविष्टी ভাষায় দশের বেশী গণিতে পারে না; ওরাওয়েরা চারির বেশী নয়। রাজমহলের পাহাজিয়া ছইয়ের বেশী নয়। অবশিষ্ট সংখ্যা ভাহারা হিন্দি হইতে গ্রহণ করে। কোল সাঁওভাল জাতি আপন আপন্ ভাষায় অনেক উচ্চ সংখ্যা পর্যান্ত গণিতে পারে।

"অত এব এ পর্যাস্ত কোল বংশীয়দিগের আদিনিপ্রসম্বন্ধে কেবল ইহাই
দ্বির ংইয়াছিল য়ে, জাবিডীদিগের সঙ্গে
ভাষার গঠনে যে সম্বন্ধের চিহু আছে
ভাষার স্বাচিত হইয়াছিল, কিন্তু কর্ণেল
ভ্যাল্টন্ সাহেব বাঙ্গালার জাতিনির্ণয়্ধ
সম্বনীয় নিজ গ্রন্থে বিবেচনা করেন যে,
কোলবংশীয়েরা যে দ্র উত্তরপূর্ব হইতে
আদিয়াছে তবিষয়ে কোন মংশয় ন:ই।
হল্পন্ সাহেব বলিয়াছেন যে কিরা

তীয় অভৃতি নেপালপ্রদেশের বিচ্ছিয় ৰাতির মধ্যে কোন কোন ভাতির ভাষায় সর্কনামশুলিতে কোল বা সুপ্রভাষার मानृभा ८ एथा यात्र । छा। छन् माट्य নিক মতের পোষকতীয় উহার উপর নির্ভর করিরাছেন। আর পেগুপ্রারেশে তালা-ইঙ্গ বা মোননামে একজাতি আছে. তাহারা পার্ঘবর্তী ভাতিসকলের চৈনা-দিক্ষাতীয় ভাষা হইতে ভিন্নপ্রকৃতিক এक्टि ভाষা वावहात्र करता (महे ভाষा চুটারা নাগপুর ও সিংহত্মের হো বা মুও-দিগের ভাষার সঙ্গে বিশেষ সাদৃশ্য-বিশিষ্ট। ডাাণ্টন্সাহেব তাহাও দে-খান। আর ব্রহ্মদেশীয় জাতিদিগের ইতিবৃত্তে কর্ণেল কেষার, জে, আর-লোগান সাহেবের একটি কথা উদ্ধৃত লোগান সাহেব ৰলেন কবিয়াছেন। (य, कालिमरशंत्र छ।वा ও यान् जानाम् গোষ্ঠীয় ভাষায় কিং যদ্ তদালি সর্কনাম, / অস্তঃ ইহারা निर्द्मनवाहक मंदीनाम । मःशावाहक দর্কনামের ধাতৃগত একতা প্রমাণ হই-উভয়জাতীয় ভাষাই শান্দিক মৃলে এক কাণ্ডের ছুই শাখা। জাবিড়ী অপেকা তিকাত ব্ৰশ্বভাষাদির সঙ্গে বিভাড়িত হটয়াচিল ভাহা নিরূপণ করা ভাহাদিগের অভিশয় সাদৃশা আছে।'' এখন লোগান সাছেব আরও দেখাইয়া-ছেন, যে আসামের খাসিরা ও কোল-দিগের মধ্যে ভাষাগত সাদৃশ্য জ্বাতে; ু আর সিংহুভূমের হো ও খাদিরাদিগের

মধ্যে মৃতব্যক্তির প্রাদ্ধ ও সমাধিচিত্ প্রভৃতিতে বিশেষ সাদৃশ্য আছে।

हेश्रब्धानश्यकता अहे वश्यमत "(काना-शात्' नाम निवार्टन। जामता वाकाना ভाষায় ইহাদিগকে (कानवः म वनिव।

অতএব ৰাঙ্গালার ভুৱানীয় অনাৰ্য্য-ভাতির মধ্যে তুইটা বংশ পাওয়া যাই-(छट्छ—जाविङ्वःम ७ (कानवःमः। हेश-দের মধ্যে কোন জাতি বাঙ্গালার আদিম-वानी ?

সে মীসাংসা অতি কঠিন। ভারতস্থান্ধে ডাং মুরের যে মত নিমে ভাহার মর্গাসুবাদ করিভেছি।

'ভিত্তরের অনার্যাগণ এবং দক্ষিণের অনাৰ্যাগণ এক বংশসন্ত কি না এই প্রশ্নসম্বন্ধে ডাক্তার কল্ডওয়েলেব মত এই, যে ভাবিড়ীদিগকে ভারতবর্ষের चानिम्लिवामी मत्न कता याहेटल भारत, উত্তর হটতে প্রথমে ছড়াইয়া আইদে। কিঁৱ चार्याता चानिया देशामतह एम्नीधि-काती मिथियाছिलान कि उरेशूर्याई षाना (कान. मक बाजिकर्जुक हेहादा তত সহল নৈহে। এবিষয়ের স্থানিভিত মীমাংসা না করিষ্কা, দ্রাবিড়ী ও উত্তর ভারতে প্রচলিত ভাষাসকলের অনার্যা-মুলক ভাগের সহিত , আপাত প্রতীত প্রভেদ দেশিয়া ডাং কল্ডওয়েল স্থির

<sup>\* &</sup>quot;Statistical Accounts of Bengal Vol. XVI P. 255 7."

করিয়াছেন যে, জাবিড়ী ভাষা শকভাষার প্রাচীনতর অবভা। যদি এই নীমাংসা ন্যায়সক্ত হয়, তাহা হইলে তির করিতে ছইবে, যে উত্তর ভারতবর্ষীয় • অনার্যাগণের পৃর্বপুরুষেরা দ্রাবিড়ীদিগের পুর্বে ভারতবর্ষে আসিয়াছিল, আর্য্যগণকর্ত্তক উত্তরপশ্চিম প্রদেশ হৈইতে বি্তাড়িত হইবার পূর্বের তাহারাই দ্রাবিড়ীদিগকে উত্তর ভারতের অনেক অংশ হইতে বিচ্যুক্ত করে। ফলতঃ ডাং কল্ড ওরেলের মতে জাবিড়ীরা উত্তর ভারতবর্গ হইতে আ্যাগণকর্ত্ব দ্বী-ভূত হয়েন নাই। . সংস্কৃত বা জাবিড়ী ভাষায় এই ছই জাতির মুধ্যে কোন যুদ্ধ বিগ্রহের কাথাবার্তা নাই। মুতরাং আদৌ ইহাদিগের পরস্পর সংখ্যতরভাব অসম্ভব। যে সকল আর্যা-🕶 পূর্ব্ব শক আতীয়েরা উত্তরবিভাগ হইতে দ্রাবিড্রীদিগকে বিতাড়িত করে আর কোল সাঁওতাল ভীল ডোম প্রভৃতি উত্তরাঞ্চলের আদিমবাসী, ইহাদিগকে এক মনে করা অহুচিত।কোল ভীল সাঁও-তাল প্রভৃতি অনার্যান্ধাতিরা জাবিড়ীদের ভাড়নায় অরণো আশ্রয় লইয়া থাকিবে • বা ভুটানছাতির ন্যায় উত্তরপূর্ব প্রদেশ হইতে ভারতে প্রবেশ করিয়া থাকিবে। **ভाক्তात कट्छ अरतम गरन करतन এই** সকল আরণাছাতির ভাষার সহিত উত্তর ভারতে প্রচলিত ভাষা সকলের অনার্যা ভাগের কোন নৈকটা নাই।"

অতএব পূর্বে যে মতের সংক্ষেপ বিস্তার করা গেল দেই মত অমুধারী আমরা ভারতবর্ষবাসীদিগের মধ্যে চারিটি ভিন্ন স্তবকে পাইতেছি।

প্রথম—সর্বপ্রাচীন—কোল, সাঁও তাল, ভীল প্রভৃতি বন্যজাতি, ইহারা উত্তরপূর্বপ্রদেশ হইতে ভারতবর্ষে আ-সিয়া থাকিবে।

দিভীয়—দ্রাবিড়ী, ইছারা উত্তবপশ্চিম হইতে ভারতবর্ষে প্রবেশ করে, এবং স্বেচ্ছাক্রমেই হউক, অথবা অন্যান্য পশ্চাদগামী অনার্যাদলকর্ভ্ক উৎপীড়িড হটয়াই হউক, ভারতবর্ষের দক্ষিণাংশে আসিয়া বাস করিয়াছে।

তৃতীয়। শেষকণিত শক বা অনার্য্য-দল, যাহারা উত্তরপশ্চিমপথে আসিরা-ছিল, ইহাদিগেরই ভাষার সংযোগে সংস্কৃত হইতে উত্তরভারতের প্রাকৃত-ভাষা সকল উৎপন্ন হটয়াছিল।

চতুর্থ। আর্যাগণ।\*

তৃতীয়শ্রেণীয় শকজাতির কোন চিহ্ন বালানার পাওরা যায় না। অতএব কোলবংশ ভিন্ন অন্য কোন অনার্যাঞাতি । যে দাবিড়ীদিগের পূর্বে বালালার আদিয়াছিল, ইহা আমরা স্বীকার করিতে ইচ্ছুক নহি। বালালাভাষায় যে সকল অনার্যামূলক শক্ষ, আছে, ডাহা কোলবংশীয়দিগের ভাষা হইতে প্রাপ্ত হয় নাই, এমন কোন প্রমাণ আমরা দেখি নাই। ডাক্টার হণ্টর কতক গলি উদা

Muir's Sanskrit Texts Vol. II P. 485 to 487.

হয়ৰে নিয়লিখিত তত্ত্বল সমর্থনের চেহা পাইর।ছেন।

" व्यक्ति व्यक्तिकारण मः द्वरण अ সাঁওতালীভাষায়, অথবা সাঁওতালীর পূর্বাগা ভাষার সঙ্গে সংঘর্ষিত হইয়া-ছিল। এমন সম্ভব, যে সংস্কৃত সাঁও-ভালী ছইতে কতকগুলি অনার্যোর উ-क्तार्या वर्ग खरून कदित्रा छाएंकानिक चीत्र অসমপূর্ণ বর্ণমালায় মিবিট করিয়াছিল। ই**হা নিশ্চর যে সংস্কৃত কথিত ভা**ষা হ-ইতে কতকগুলি কথা লইয়াছিল, আর প্রাচীন প্রাকৃতে এবং আধুনিক সাঁও-ভালীতে দেই সকল শন্ধগুলি আজি বিকৃতিশূনা দেখিতে পাওয়া যায়। সং-শ্বতের পক্ষে যেমন প্রাকৃত, প্রাকৃতের পকে তেমনি বাঙ্গালা, মোটামুটি ইহা ৰলা যাইতে পারে, সেই ৰাঙ্গালাও সাঁও-তালী হইতে অনেক শক্ত লইরাছে। ইভাদি।"\*

हर्णेत माहित्रक मःसङ्ख्य वा वाक्रा नात स्पिश्चि विनया चौकात कता गाव ना। উপরে যে সকল কথা উদ্ভূত হইল,

তাহার সকলগুলির সমর্থনও করা বার ना। " তবে जिनि याहा निश्चित्राह्म, তাহাতে এতটুকু অবশ্য স্বীকার করা যায়, যে বাঙ্গালাভাষায় অসংস্কৃতমূলক কতকত্তলি শক্ষ সাঁওচালি হইতে প্রাপ্ত। অমুসন্ধান হইলে আরও কতকণ্ডলির মূল সেইক্লপ সাঁওভালি বা অন্য কোল-বংশীর ভাষাতেই পাওয়া যাইতে পারে। তবে স্কলগুলিই কোলবংশীয়দিগের নিকট পাওয়া গিয়াছে, এ কথাই বা না মানিব কেন ? অথবা এ কথা না মানিয়া অনর্থক আর একটা ভৃতীয় अनार्यायः भ श्रीकातं कतिव (कन ? कान-বংশ ও দ্রাবিডবংশ ব্যতীত অন্য কোন **जनार्यावःन (य जार्यामिश्वत शूर्व्स वाना-**লায় আসিয়াছিল, ইছা স্বীকার করিবার (कान कार्व (मर्था यात्र ना।

তবে বাঙ্গালাসম্বন্ধে কল্ড এরেন সাহেবের মতের মধ্যে এই টুকু গ্রহণ্ধ করা যায়, যে কোলবংশীরেরা জাবিভ্বংশীর-দিগের পূর্ব্বগামী। "অতএব প্রথমে কোলবংশীয়দিগের কথা বলিতৈছি।

<sup>\*</sup> Annals of Rural Bengal P. 180.

## বাঞ্চালা সাহিত্য।\*

## বর্ত্তমান শতাদীব।

ठेपानीः इश्रास्कित्रित भागनाधीतन <sup>®</sup> ভারতবর্ষে নি:শব্দে যে ঘোরতর পরি 🕠 • বর্ত্তন হইতেছে, তাহা কাহারও অবিদিত बाहे। नृजन धर्मा श्रावनाहे, वनश्रकाण ুনাই অথ্য আমাদের মন ক্রমশ: ফি-রিয়া আর একরপ হইরা যাইতেছে। এই পরিবর্ত্তন ও বিপ্লব ভাবতবর্ষে সর্বতে চলিভেচে; কিন্তু বাঙ্গালায় সেই পরিবর্ত্তন ও বিপ্লব যতদ্র অপ্রসর হই-য়াছে, এতদূব আর কোণাও হয় নাই। এই विপ্লবের প্রধান কারণ ইংরেজিশিকা, ইহার ফল---সমাজ-উন্নতি ও সাহিত্য-উৎপত্তি। ভারতবর্ষের মধ্যেও বাঙ্গালার সমাজে-উন্নতি অধিক ও সাহিত্য প্রধান হইয়া উঠিয়াছে। আজি সেই উনবিংশ শতাকীর বঙ্গীরসাহিত্য আমাদের উপপাদ্য প্রস্তাব। বঙ্গীয়সাহিত্যের বিষয় ব-লিভে গেলে, আর ও অনেক কথা বলিভে रत, किकार्ण এই विंशन घरियारक, किकार्ण লোকের মন পূর্বপথ হইতে ঘুরিয়া ন্তন পথে দাড়াইয়াছে তাহা লিখিতে হয়। **প্রত্যেক চিন্তাশীল** নেতার মনো-मर्था खारवण कतिया, छांशात मानिक পুরিবর্ত্ত ও ভাহার কার্য্যপ্রণালীর ইতি-राम निश्रिष्ठ इस, श्रवः छोहारम् व कार्या-

প্রবির্ত্ত হাদে করিরা পরিবর্ত্ত হুইতে আরম্ভ হর, তাহার ইতি-হাস আলোচনা করিতে হয়। কিউ তাহার সমর নাই। তবে যতদ্র পারা যায় চেট্টা করিব।

১৭৯৯ সালের শেষ দিন অভীত 3600 সালের দিন উপস্থিত। ভাবতবর্ষের এমন আদিন, বোধ হয় আর কখন হয় ভাৰতের কোণাও সুথ নাই. কোথাও শান্তি নাই, সর্বতে পুঠতরাজ, মাবামারি, লাঠালাঠি, কাহাকেও বিখাস নাই, বাহার গায়ে জোর সেই অন্যের উপর অবিবাদে অভ্যাচার করিয়া সমস্ত দেশে রাজা নাই। যাঁহারা রাজা বলিয়া পরিচয় দেন, তাঁহারা লুঠে-ড়ার সর্দার। পরধন অপহরণ, পর-পীড়ন, পরের প্রাণনাশ, তাঁহাদের নিত্য-কর্ম। এই সময়ে ভারতবর্ষের একপ্রাস্ত হুইতে অপর প্রাস্ত পর্যান্তের কিরূপ অ-বঁদা ভাহারদিকে একবার দৃষ্টিপাভ कतिराने य कथा अनवक्रम श्रेटि भा-রিবে 📭

কাব্লের , ছুরাণীবংশ প্রনোমুধ, সেথানে ছুরাণী ও বেরুকজীদিগের পর-

্বী সাৰিত্ৰী লাইত্ৰেনীর বাৎসরিক উপলক্ষে শ্রীধরপ্রসাদ শান্ত্রী এই প্রস্তাবটি শাঠ কব্রিছাছিলেন।

স্পর বিশ্বেষভাব জরিতেছে, ছ্রাণীদিগের অধিক্লত ভারতবর্বের অংশসকলে হুত-রাং গোলযোগ চলিতেছে, ভূলোকস্বর্গ কাশীর, পেশৌর প্রভৃতি প্রদেশে অরাজ-কভার স্রপাত হইয়াছে। মুসলমানশাসন ধ্বংদ ্হইয়াছে, কিন্তু তথার বহুসংখাক কুদ্র কুদ্র স্বাধীন শীপ-রাজা স্থাপিত হইয়াছে; এই রাজগণ প্রস্বারের উপর আপনপ্রাধান্য স্থাপন कदिवात छना भव्यमा युक्तविश्वर, मात्रामाति কাটাকাটিতে বাহিবাস্ত। সিকু:ত আমীবদিগের রাজা এখনও দৃচ্বদ্ধ হয় नारे, रमथात्मश्र भातामाति, काठाकारि, যুদ্ধবিগ্রহ। সর্হিলপ্রদেশে একজন ইংরেজ এই ছোরতর অত্যাচারের সময় আপনার জন্য এক রাজা করিয়া লই-शार्हन, এবং মুদলমানের নাায় সংখাক্ মুদলমান্টপণড়ীতে পরিবৃত হ্ইয়া নানাপ্রাকাব অভ্যাচার করিছে-ৈছেন। রাজপুডগণেব আর সে প্রভাপ नाहे; य छात्रारण डीडारा अकनिन সমবেত মৃদলমানলিগের সহিত যুদ্ধ ক-রিয়া জয়ী হট্যাভিলেন, এপন তাহাদের সে প্রতাপ নাই; হিংসা দ্বেষ তাঁহারের • गत्नामत्था व्यात्य कित्राष्ट्र ; निश्चित्रा, (हालकाর, यथन हेव्हा छाहारमंत्र रम्भ লুঠ করিতেচে ও যণন ইচ্ছা তাঁহাদের निकि इहेटड खशास हाका लहेटहर ; দিলীর বাদশাহের নামের মোহিনী আছে, আজিও সম্ভন আছে! কিন্ত वामभार निरमं वनी, भक्तना छ।हात

চকু উশোটন করিয়াছে। ই:হার দিঞ্জার অল কে যোগার—ভাহারও ঠিক নাই। ুপেরেঁ। নামক সিকিয়ার একজন ফরাসিস সেনাপতি হিন্দুরানের সর্কায় কর্ত্ত।। ভাঁহারও শনকর মত কিছু নিজ উদ্দেশ্য আছে কি না কে विभाग्त भारत ? व्यायाशा ७ রোহিল १७ একজন নবাবের কবতলগত কিছ তঃ-হার নিজের কোন ক্ষতা ন.ই, ভিনি নিজ্ঞানাদে উপগ্ৰীপরিবৃত হট্যা বাস কবেন্; সময়ে সময়ে ভাঁছার थानाममञ्बद लाल वात्रामात्रीनामक अख्रिकशानुखं विद्याशीमरशत कत्रकत-লিভ থাকে, ঠাহার রাল্য অপেকা অর্ত্রকতা শতগুণে (শ্রে:। ভাঁহার রাজ্যে ওমরগেণ করদরাজাগণ, জার-পীরদার ও ভালুকদারপণ যাহার যাহা देव्हा (ग जावेक्करता विनाय्रक (कर्हे थाकाना (मम्राना, एमडियात्रहे कत छाना-**(बंब ममब चामित्व, हेश्तब्द्धित्यं मा-**হাষ্য প্রার্থন। করিছে হয়। অনেক টাকা না দিলে সেঁ সাহায্যও প্রার পাওয়া ্যায় না। ইংরেছেরা আরও व्यक्षिक किছू व्यामात्र कतिवास कैना छै। हारक बाक्षेष्ठभाषि मिवाब **উ**म्याश करि-তেছেন। মধ্যভারতবর্ষে বুলেলখণ্ডে কুদ্র রাজাগণ যাহরে যাহা ইচ্ছা ভাছাই করে। ভাহারও দ্ফিণে গোন্দয়ানা<sup>র</sup> वर्ष वर्ष जाकाहर जन एन टेन्ड्राजि हरे ইহারা একসময়ে **कात्रकवर्ष केल** हैं भाग है कत्रिस् मिर्व।

শিক্ষিয়া ও হোলকার বড় শান্তিপ্রিয় नरकन। छीक्। दिन मार्था श्रद्धान्त मः ভীতি নাই, করদলার যুদ্ধকে ুতা বাঁহারা करी । वाहाता कि उन, উভय्नशक्तिह , স্ক্রিশ হট্যা গিয়াছে। নিজাম ছা-तिया व्यविध क्षमग्रमाथा देशात व अ गरा-রাটাদিগের প্রতি ঘোরতর বিদেষকে লালন পালন করিতেছেন। মহারাট্রারা ঁ করদলা **হটতে সেই যে আপন আপ**ন ভবনে গিয়াছে, তার পর আর একত্ত इत नारे, উदाता त्य याहात जालन আপন রাদ্রাবৃদ্ধি ও শত্রুনিপাতে ক্বত-मकत स्टेबाटा महांत्राह्रीनिरगत मर्था বড রাজা আছেন সতা, কিন্তু শ্রীজিবার বেখানকার ওমরাহগণের অপগ্রগণ্য भर्तमयकर्छ।; উन्मन्ड यट्यावस्त्रवात्र (य-थानकात भागनकर्छी, निर्मन्न निर्श्न , শকুসংস্কারাপর অবিমুষ্যকারী বাজীরাও (यथानकात (शामात्रा, तम त्राह्मा कि সুখ সম্ভব ? সেখানে কি শান্তি থাকিতে পারে 

প্রের বিধানে কি লোকের সাহিত্যার রাগ পাকিভে পারে। মহারাষ্ট্রবাজাের দক্ষণে ইংরেলরাজত সবে মাত্র আরম্ভ হুইরাছে। ব্রিটী সরাজত্বের প্রাণম অংশে. ংবরূপ সর্ক্রাশ হয়, তাহা কাহারও অবিদিত নাই; তাহাতে আবার বখন টীপু ভৃতীয়বার হারিয়া মরিয়া **হ**ইয়া-হিলেন, তখন তিনি সেরপ ঘোরতর মত্যাচার করিয়াছিলৈন, তাহার ইয়তা করা যায় না। তিনিই সর্বপ্রথমে মহীক্ষে প্রামকে আম প্রবনান করিয়া

**(पन, विनांभद्रोट्ध मध्य मध्य लाटक** ब व्यानगाम करत्रन। ल विकटन ভানে ইংরেজদিগের প্রভুত্ব ছিল সভা, किन माला छ । य मकन देश्य कर्छ। हिल्लन, छांशामव অপেका (मनीव षयना त्राबाउ व्यत्नकाश्य उरकृष्टे हि-লেন। জাঁহারা কর্ণটের নবাবের দেনা লইয়া যে জখন্য কাণ্ড করিয়া তুলিয়া-ছিলেন, ভাছার আলোচনা ইংরেজনাম কলঙ্কিত করা আমার প্রস্তা-( व अद्भाग नार । (य विभाग अञ्चलित । यে উভরাখতে, কগন মুগলমান याইতে পারে নাই, গোর্থাদিগের ত্রাকাজ্যার, রাজাবৃদ্ধির ইচ্ছার সেথানেও যুদ্ধবিগ্রহ উপস্থিত হইরাছে, পাহাড়মধ্যেও অরা-ত্বক। গ্রামবাদীরা লুঠের ভরে কপ্পান্থিত-কলেবব।

এরপ অরাজকসময়ে যখন কালি কি
ছইনে, কেছই বলিতে পারে না,
যখন পরের উপর অত্যাচারই রীতি;
গখন কাছার প্রাণ, মান, ধন রক্ষা হয়
না, ছুইই দমন ও শিষ্টের পালন করিছে
পাবে এরপ ক্ষমতাশালী একজনও লোক
সমস্ত ভারতবর্ষে প্রিয়া মিলে না। তখন
কি সাহিত্যের উরতি হইতে পারে;
তখন কি লোকের চিগ্রা করিবার ক্ষমতা
খাকেশ যখন ভয়েই লোকে অভিত্ত,
তখন কে লেখপড়া , শিষিবে, কে
লিখিতে ক্সিবে ? বাস্তবিক তৎকালে
ভারতবর্ষে সাহিত্যলোপ হইয়াছিল
নলিগে মহাজি হয় না।

चार्तिक मान कतिएक शारतम वाकामा-সাহিত্যের কথায় ভারতবর্ষের কথা কেন তুলিলেন ? বাঙ্গালায় ত তথন স্থাসন প্রতিষ্টিত হইয়াছিল, বাঙ্গালা ত তথন ভারতবর্ষের মধ্যে সর্ব্বাপেকা শান্তিভোগ করিতেছিল। এটা লোকের মহাভ্রম, ভারতবর্ষে এরপ দারুণ গোল-যোগ থাকিলে ৰাঙ্গালিব মনে শান্তি সম্ভবিতে পাবে না ; বিশেষ বাঙ্গালা স-মাজে তখনও শান্তি হয় নাই। প্রথম ইংরেজ রাজত্ব যে স্থায়ী হইবে ভাষাতে কাহারও বিখাস হয় নাই, তাঞ্চাব প্র আমরা বাহাকে এখন বাঙ্গালা বলি তথন ৰাঙ্গালা বলিলে ইহা ব্ঝাইত না। বাঙ্গালার গবর্ণরের কর্তৃত্ব উড়িষাায हिल ना। উড़िशा गराता है-करक व-লিত ছিল। উডিষাার করণ ও নিত্র द्राष्ट्रगण्डीनद्रष्ठव (मिनीपुद अक्टल न्रे পাঠ ক রত। বীরভূম, বরাহভূম, সবে-भाव हेश्टबलिशात व्यक्षिक व्वेदारक। ष्यामाम, बाष्टात, ७थन ३ हेश्त्रकतिरशव নয়। অতি অল পরেই মান্দেব। ত্রেন-দেশীয়গণ) অরাজক আসাম দখল কবিয়া বালালায় আসিয়া পড়িয়াছিল। ভূটা। শত শত বংসর ধরিয়া নিরস্তর অরাজক-ভার ভুগিতেছিল। ভূটানে হ্বেদারের। ज्रामा (भन्ता, (भारता (भन्ता, अ ভৃতি সকলে আপন আপন ধর্মরাজ। ও দেবরাশা খাড়া করিয়া আপনা আশীন काछ।काछि कवित्रा मनिष्ठ। नगरत्र नगरत ভাৰাদের সুদ্ধ গড়াইয়া রংপুর প্রায়

আসিরা পড়িত। যদিও মুসলমানেরা ভিন্ন আর কেন্থ বাঙ্গালা আক্রমণ করিছেই चारम नाहे छथानि वाजानात भीमा व्यापाटम मास्त्रि स्व वाद्य वाद्य हिन ना। व्याव वात्रालात मध्या मर्द्धा कात्र कात्राक-কতা নৃতা করিত। ১৭৫৬ **খঃ অ**ফ হটতে বাজালা শুণানকালীর রঙ্গভূমি \* হইরাছিল। Double Governmen! এব সময়ে রণজ্মাল ইংবেক্সণ কাহা-কেও মানিত না, তাহারা না কবিয়াছে व्यन कार्याष्ट्र नाष्ट्र, निष्णा, वृष्ति, ज्राभ, खन, कमना, किइटन्टे जाहारमय मन বিচলিত ক্রিতে পারিত না : Double Government এব সময় বেমন ছিল ২৭৯০ খ্রীষ্ট'বা প্রয়ান্ত ঠিক তেমনই ছিল। ইংরাজেরা তিন চাবিবংসব থাকিয়া অ-तिक अनमक्षम कवित्रा **श्वरात्म कि**रिया যাইতেন। আব ঠাহানেব নাঙ্গালি প্রিৰ্ক্ত পাত্রগণও সেই সাজ সজে খদেশীয় অজাতীয়গণের মুগুপাত করিয়া৽ বড লোক হটয়া উঠিতেন। લ્ક ફર્ફેલ્ક ৯০ পর্যান্ত যাখা ছিল, ১৬ সাল ভাছার চুড়াস্ত হটয়া গেল। দেলের যা কিছু কবৰ্ওমালিশ প্ৰবৃত্তিত বলীতে ভাৰাও গেল। वाकालाम मुमलः মান রাজত্বে তিন শক্তি ছিল, এই ভিন শক্তির মূল তিনী; মুসলমান গ্রণমেণ্ট, দেশীর ক্মীদার, ও ব্রাহ্মণপণ্ডিত। এট ०१ वरमृद्ध युम्रणमानं गवर्गस्य छित्र । भव । इहेश्राहित। नवाय बहुतक है।क। (भ्रमन शाहेमा উপপত্নীগণেবেটিও ∙६हे<u>म</u>। निब-

প্রাসাদে বাদ ক্রিভেন ও যতদ্র তাঁহার সম্পর্কের গন্ধ থাকিত ততদূর দৃষিত ্বায়ু চরিত্তদে যুষরূপ সংক্রোমক ব্যাধির উৎপত্তি, করিয়া দিত। क्यीमाद्रश्व जात्हरवद्र त्थावरव व्यव-সন্ন হইয়া আসিয়াছিলেন। মীরকাসিম व्यत्नक श्रु नित्र भूतार्र छम कविशा शिशा-•ছিলেন। ইঞারা বন্দোবস্তে অনেক-श्वनित উচ্ছেদ इयः। एएटमत लाक याद्यामिशक आश्रमातम्ब कर्छ। विलग्ना বছকাল আদর ও ভক্তি, মান্য ও ভয় করিয়া আসিতেছিল, যাহারা প্রাণম খা-ধীন, পরে মিত্র, তাহার পর কবদ, শেষ অধীন রাজা ছিল, তাহাদিগের এইরূপ পরিণাম হইতে লাগিল। ভার পর চিরভারী বন্দোবস্ত হইল: ইহার সঙ্গত নাম চির-স্থায়ী বন্দোবস্ত নহে। ইহার আগণ নাম • চিরঅস্থায়ী বন্দোবস্ত, কারণ ইভাতে কেহই वित्र शाद्रम ना त्य आभात निमाती श्राधी इहेरत। हिन्द्राधी बस्लावस्य জনীদারগোষ্ঠার শেষ হটল। বভ বড় बाध পরিবার' ঠিক সময়ে টাকা না দিতে পারায় জমীদারীচাত হইতে লাগিলেন। क्षानात, नन्छात्री, नारवात, हाहछ। •প্রভতি প্রদেশের লমীদারদিগের সম্পত্তি रहचर्त नीमाम इटेट नागिन। किनिन কে গ মাজিট্রেটের প্রিয়মূহরী—জাতিতে নাপিত, Foreign Department এর নারেব—জাতিতে সদ্যোপ, মিলিটারী ডিপাট**মেণ্টের কেরাণী** গোমস্তা ইত্যাদি। কিন্ত অ.সকলের মধ্যেও ফ্রেভার সংখ্যা

व्यक्षिक नटर। कभीमाद्रित कर्म्यातीतारे এ বিষয়ে বিশেষ বিজ্ঞা, তাঁহারা প্রাজা-(मत नर्वनाम कतित्रा धननका कतिएछम। দূরত্ব অশীদার তাহা দেখিতে পাইতেন না। তাহার পর জনীদারী থাজনার দায়ে নীলামে উঠাইয়া দিয়া আপনি ক্রন্ন করিয়া লই-(नन। এक्ङान् अमन इहेम्राह्ह (य सभीमाद्रत थासाना नहेता याहेटल गाहेटल र्ट्ठा९ (बीका फुवि तहारेया निया ८मर्ट हेकिय शामला वाशनि बनीमाती कि वहेरलन । वक्षात वक्षन ডাকাইতের সর্দার গ্রব্নেণ্টের খালনা লুঠ করিয়া নগদ টাকার জোরে অমীদার **इहेरन**न। व्यत्नक छरन नाठित स्वाद्य অমীদার হইতে লাগিল। একজনের লাঠির ভোর থাকিলে দশ পনর ক্রোশের मद्या कश्तिक त्रका थाकिन गा। যাহার। সাহিতাসংসারের উন্নতি করিত, ষাহাৰা পণ্ডিত প্ৰতিপালন यशिक्ति कलाति आमन्ना अत्नक छेखम উखन अञ्चल। है साहि, जाशास्त्र अहे मना रहेल । काँहै। वा **ाहारमंत्र ज्ञान** श्रान्थ हहे-(लान डाँशाहा आह अक्सल्यानारम्ब ুলোক ৷ তাঁহারা ঘোর ১ব কুদংস্কারাপর, তাহারা গুরু পুরোহিতের একান্ত ভক্ত इहेट नाशित्नन। नाय कठकि छै। হাদের চকুঃশূল।

মুসলমান গবর্ণনেট ও জনীদার ভিন্ন শীলালার আর এক শক্তি চিল, আক্ষণ পণ্ডিত। এই অরাজকের সমর, ঘোর-ভির অত্যাচাধের সময়, ভয়ানক বিশৃদ্ধা-

लाब अभव यनि (कह (मरभत बना यथार्थ ভাবিত তবে দে ব্রাহ্মণপণ্ডিতগণ। এই সময়ে তাঁহাদের দারা যে কত উপকার হটলাচে, তাহা বর্ণনাতীত, অভাচারী ইংরাজগণও ধার্মিক ইষ্টনিষ্ট ভট্টাচার্যাকে चामत कतिल, त्लाटक छाश्रामिशटकं शिमू-ধর্মের হিন্দ্সমাজের আর্যাজাতির চূড়া বলিয়া জানিত। তাঁহারাও আক্রিকার ভট্টাচার্যাদিগের ন্যায় লোভী ক্ষমতা-প্রত্যাশী ও স্বার্থপর ছিলেন না। ধর্ম্ম-वर्त उंशिता वलीयान् हित्तन, छाँशास्त्र সাহস ও অকুতোভয় ছিল। তাঁহাদের এই সাহসের স্ক্র হেতুও চিল্। তাঁগ-**(** ज्र त्र त्र क्षांहे ७०। १० जन हात् থাকিত। ছাত্রেরা বয়:প্রাপ্ত বলিষ্ঠ ও শুরুকার্যো আত্মসমর্পণেও ক্রতসংক্র। এই সময়ের অগরাথ তর্কপঞ্চানন গোঁসাই ভট্টাচার্য্য বলরামণ্ড শক্ষ মানিক তৰ্কভূষণ প্ৰভৃতি নাম কাহার অবিদিত আছে? বাহাবা **এই গোলবোগের সময় ব্যবস্থা**ক, বিচারপতি, অধাপেক ও সম্টে সময়ে সর্বনমুকর্তা হটয়াছিলেন। কত কত পরিবারকে যে তাঁহাবা কত উপায়ে রকা করিয়াছেন, ভাষাৰ ইয়ন্তা नाइ। धा मकल हेश्द्रक यथार्थ विठात করিতে চাহিতেন, এই ভট্টাচার্যাগণ যে তাঁখাদের কও বিষয়ে সাহাণ্য কৰিয়া-্ছেন, ছাহার ঠিকানা নাই। কিন্তু সাহিত্যের উন্নতি তাঁখাদের বাবসায়, नत्ह। डाहाबा रिकारनानानाथौ, मार्शिकाः

বাবসায়ী ছিলেন না। বিশেষ তাঁহা-দের উপর এত কার্যাভার পড়িয়াছিল খে তাঁহারা সাহিত্যের উর্তিরু ইচ্ছা থাকি লেও করিতে পারিতেন না। কিন্তু জাহা-म्बर्टे कि शतिगाम इरेग। ১१৯७ माला . इक्न इडेल, जावेन इटेल, यে একোতর वाट्ययाश कहिए इंडेरव । व्यावात १५२५ ও ১৮৩৩ অব্দে বাজেরাপ্ত আইন পুনরার বিধিবদ্ধ হইল। তাঁহাদের সম্পত্তি হস্তচাত হটল। যে ত্রাহ্মণকুল নির্বিকাদে স্বাধীন উপস্থ ভোগ করিয়া আসিতেছিলেন, বাঁহাদের ভেল্পে নাহসে ও নিভীকতার ष्याताती मिदाबंडेकोनाड कांशिटन. তাঁহারা এই অবর্ধি বড়মামুধের আঞ্রিভ হটতে আরম্ভ করিতে লাগিলেন। তাঁহার। বডুমানুষের সভাশোভাবিধান করিতে লাগিলেন, জনে একণে ভোৰামোদ ভট্টাচার্যাদিগের বাবসায়ের মধো হইরা •••• मः ভा**टे** बार्छ। व्यामारमंत्र रमर्भ स्य ক্ষেক্থানি উৎকৃষ্ট প্রাচীন বাঙ্গালা গ্রাফ আছে, ভাষাও এইরূপ ব্লোডির-ভোগীদিলার লিপিড, স্থতরাং আর নৃতন বংক্ষাত্তর হইবে না এবং অনেক পুরাতন অব্যোত্তর বাজেরাপ্ত ইটবে, আইন করায় বঙ্গীয় বিদাা ও বঙ্গীয় সাহিত্যের মূলে কুঠারাঘাত হটল। উন-বিংশ শতাকীতে বছদিন প্র্যাপ্ত ভট্টা-हार्यामित्त्रव श्रायाना हिल गडा; किंद हिछानी ग्वांकियाज है **का**बिट शांतिय'-हित्न त्म, तम आधाना श्रमिक निन शाकित्व ना । अंशशंघ उर्कभक्षनीनामित

পর যে স্কল পণ্ডিত হটয়াছিলেন
সকলেই জানে যে, তাঁহারা উক্ত মহাআ্রাদিগের অপেকার অনেক অংশে নিক্ট;
তাহরে পর আরপ্ত নিক্ট, তাহার পর
আরপ্ত নিক্ট শেষ এমনি হইয়াদাঁড়াইল
যে, সর্কার্শনসংগ্রহের ভূমিকার খাতেনামা ৬ জয়নারায়ন তর্কপঞ্চাননমহাশয়
বৈলিলেন, যে, ভট্টাচার্যায়ন চারি পাঁচখানি বাতীত পুস্তক পড়েন না, এবং
ভারামাণ তর্কবাচন্পতিমহাশয় বলেন যে,
আর্মুনক নৈরায়িকেরা ন্যায়শাল্রের ৬৪
ভাগের একভাগমাত্র পড়িয়া পাঠসমাপ্ত
করেন। ১৯ শতাকীর প্রথম হইতেই
ভট্টাচার্যাদিগেরও সেই সঙ্গে সঙ্গে চ
চ্চার উচ্চেদ হইতে লাগিল।

যে তিনশক্তিতে বঙ্গসমাজ চলিত, ভিনেরই জামে ধ্বংস হইতে न।গিল, • অথট নৃতন সমাজ গঠিত হইল না। সাহিত্য একেবারে রহিল না; ভারতচন্ত্র ১৭৬ ু প্রীষ্টাব্দে প্রাণত্যাগ করেন। রাম-প্রসাদ পেন এই সময়ে পরলোক গমন করেন, গঙ্গভিক্তি-তর্ফিণী-প্রণেত। ছগা-প্রবাদও তাহাদের পশ্চাদ্যামী হন। Double Governmember স্বয়েই ৬৫ \*ছইতে ৭২রের মধ্যেই প্রাচীন কবিগণ গত হন। ভাছাদের স্থান অধিকার करत्र धमन (लाक धारकचारत इहेन ना. যে ছই একজন রহিলেন, ভাহাদেরও অভিভাস-পূর্বিকাশ হইল না। তাঁ। হারা ব্দক্তি নীচলেণীর কবিতা শইয়া করভোপ করিতে লাগিলেন মাতা।

আপনারা কি নিধুবাবু, রামবস্থ প্রভৃ-তিকে ভারতচন্ত্র, রামপ্রসাদের স্থান পাইবার যোগ্য মনে করেন ? ইহাদের মধ্যে একজন লোক ছিলেন, তাঁহার অনেক উপাসক আজিও আছেন, তাঁ-হার নাম হরুঠাকুর, ইনি কবির দশ-স্ষ্টি ] कटरन ; कवित्र मल शाश्री कार्या कि हुई করিতে পারেন নাই, তাঁহারা ভঁৎ-কালীন হঠাৎ অরতার জনীদার ও বারু-দিগকে প্রীত করিবার জনা উপ.ছে ১ মত গান বাধিতেন, তাঁহাদের ক্ষ্তা ছিল गत्नर नारे, किन्छ त्ररे चात्र षाजा-চার অরাজক ও বিশৃদ্ধানার সময় তাঁহা-দের প্রতিভা বিকাশ না হইয়া ঐর-পেই বাহিত হইয়াছিল। কীর্ত্তন বাঙ্গা-লায় সৃষ্টি, বাঙ্গালির গৌরবের (ধন, কিন্ত কীর্ত্তনরচয়িতা উনবিংশশতাকীর প্রথমে কেহই জীবিত ছিলেন না।

আমি অনেকক্ষণ আপনাদিগকে ভূমিকা
লইয়া কট্ট দিয়াভি; বোধ হয় আপনারা
আমার সে অপরাধ মার্ক্জনা করিবেন।
এতক্ষণ যাহা বলিশাম, তাহাতে বোধ
হইবে যে, প্রাচীন বঙ্গসমাজ ভাঙ্গয়া
গৈল, প্রাচীন সাহিত্য, প্রাচীন বিদ্যা
লোপ হইল। উনবিংশ শতান্ধীর প্রান্
রম্ভ হইল, এই সঙ্গে সঙ্গে বাঙ্গালায়
ন্তন সমাজের ও নৃতন সাহিত্যের স্ত্রপাত ছইল। কিন্তু গে সাহিত্য কে
করিল? সে স্ত্রপাত কে করিল? বঙ্গবাসী এইবার তোমার বড়ই লক্ষার
কথা। বিদেশীয়দিগের উৎসাহে বিদে-

भीवनिरशंत छेशकातार्थ विरम्भीवितरगत যত্ত্বে বিশেশীয় পণ্ডিতকর্ত্তক তোলাদের সাহিত্য আরম্ভ হইল। সিবিলিরান্-দিগের শিক্ষার অন্য সিবিলিয়ানদিগের উপকারার্থ বর্ড ওরেল্সলিবারা বল-সাহিত্য আরম্ভ হইল, তোমাদের প্রাথম श्रमारनंचक मार्ट्यं करवहेव ७ क्यो. আঁর একজন তিনি ভাতিতে উড়িয়া, কাঁহার নাম মৃত্যুঞ্জয়। উডে ও সাহেবে বালালার সাহিত্য আবস্ত করিল। আবও লক্ষার কথা এই যে, যে চুই একজন বংলালি এই সময় পুস্তক লিথিয়াছিলেন. छाञ्चाद्मत्र भूखक कमर्गा अ कचना वित्रा কুষ্ণচন্দ্র রায়চরিত্র গণা হইয়াচিল। ও প্রতাপদিভাচরিত্র বাঙ্গালির লেখা। তুইখানিই অপাঠা।

এই মণে বাঙ্গালার উনবিংশ শতাকীতে
সাহিত্যের স্ত্রপাত হইল, সাহেবেরা
নিজ্ঞভাতি স্থতাবস্থলত অধ্যবসায়সহকাবে
বাঙ্গালার প্রীর্ত্ত্বি করিবার জন্য চেটা
করিতে লাগিলেন, কিন্তু বাঙ্গালায় সাহিতোর উরতি হইতে এখনও অনেক
বিশ্বর রহিল। ১৮০১ অক্ হইতে
১৮১৫ পর্যান্ত বাঙ্গালা ভাষার কোনও
গ্রন্থ বিভাগ বাঙ্গালা ভাষার কোনও
গ্রন্থ নিখিত হয় নাই বলিলে অভ্যান্তি
হয় না। বাঙ্গালা ঘোরান্ধকারে আচ্ছর
হয়া উঠিল, যেরূপ শান্তিস্থাপন হইলে
সাহিত্য উৎপত্তি হইতে পারে, কলিকাতা ভিন্ন আর কোগও সেক্সপ শান্তি
রহিল না। যেরূপ অবস্থা হইলে লোকে
কতকটা সাহিন্ডোর চক্টা করিতে পারে,

কলিকাভা ভিন্ন আর এমন স্থান রহিল ना। वाजानात्र अरनक त्रावशानी हिन. विमानिकात बानक हान हिन : जारम সমস্ত আসিয়া কলিকাতার মিশিতে লাগিল। বগাঁর হালামার সময় ছইতে সমস্ত বঙ্গদেশের লোক উঠিয়া গঙ্গাতীরে বাস করিতে আরম্ভ করিরাছিল, গদার इरेशात करम मछारलाटक भून इरेट्डी লাগিল; বর্দ্ধান, যশোহর, ফরিদপুর, নদীয়া প্রাভূদি জেলাব,কত কত পরিবার ষে কলিকাত। ও ভৱিকটবর্তী গঙ্গাভীরত্ব ভানে বাদ করিতে লাগিল ভাছার দংখ্যা নাই। ক্ৰমে এই কলিকাতা ও তল্লিকট-বন্ত্ৰী পদাতীরত্ব তানেই সাহিত্যের माजिम । স্ত্রপাত আরম্ভ হইতে এই স্থানে লোকে नर्समा ইংরেজদিগের সংসর্গে আসিত, সর্বদা নানাদেশীর লোকের সংসর্গে আসিত, তাহাদের ভাক সকল হাদাত করিত, ক্রমে এই সকল দেশে সভাতার আবির্ভাব হইতে লা-গিল: ক্রমে ব্রিটিসদিগের প্রভাগর ভারতবর্ষের সর্বাত্ত বাধি হইতে লাগিল, আমরা এই সময়ের নাম transition পরিবর্ত্তনসময় বলিব। period 41 যেদিন মহাত্মা রাজা রামমোহন রাক কলিকাতার বাস করিতে সেইদিন হইতে পরিবর্ত্তন আরম্ভ হইল, সেইদিন হইভে নুতন স্ট্রি স্ত্রপাত रहेन, धरे नेबियर्ड धंयम ह हिन्दिहा कि अतिवर्जनमध्यत्र त्य (य त्राय খণ ভাষা আৰু বৃত্ত একটা এৰবিতে

পাওয়া যার না; এখন আর ঠিক পরি-वर्डममम नाव, ज्यम जक्री माजाहेगा शिशादक, हेश्टराटकता आहे सना अधुनाउन न्यस्टक छेत्रः (वन्रात्तत्र नगत् नात्ना, चामबाङ मःकारण 'हेयः त्यक्रन' विन। পরিবর্ত্তসময়ে বহুদংখ্যক ক্ষমতাশালী লোক অন্মগ্রহণ করিয়া-ছিলেন, কিন্তু ঠাছাবা সাহিত্যের বিশেষ 'উন্নতি করিতে পারেন নাই। তাহারা (मर्भ यादारण कानस्कृतिः सर्गारकातिः প্রকাশ হয়, যাহাতে দেশের কুসংস্কার দুরীভূত হয়, যাহাতে সমাজ ন্দন প্রে निर्द्धिनारम हिमारा शाहत, छाश्हे के दिशा शियादृत्त । ५३ मक्त छक्त्व कार्या ভালাদের জীবন অভিবাহিত হয়।তে; পরিবর্ত্তনসময়ে সাহিত্যার এর দ্ব না হটলেও লেখাপড়ার চর্চা ু বছল পরিমাণে বুদ্ধ হয়। বাঙ্গালা ও ইংরেজি এই উভয় ভাষায় লেগাপড়া আরম্ভ হয়, যে সকল মহাত্ম। এই সময় वालारमंत्र (मर्भत मृथ डेब्डन कतिहा ্যান, উা্হালের জনকারেকের নাম না कतिया, फाँशारमत निकछ वागारमत कुछ-জতা, প্রকাশ না করিয়া থাকিতে পারি-ুডেছি না। তাঁহাদের নাম করিতে সকল বাঙ্গালিরই মন কুডজালারসে আর্দ্ররা উচিত।, তাহারা আমাদের মাতীয় কুতক্ষতারূপ করলাভের বিলক্ষণ উপবৃক্ত। ইহাদের মধ্যে সর্বপ্রধান ও नर्स्यथम गहाचा तांका तागरमाहन ताग्र, ইনি ইংরেজি ও বাজালার শত শত গ্রন্থ

মুজিত ও প্রচারিত করেন। প্রথমস্থাপনকর্ত্তা, ব্রাহ্মসমারের नर्स व्यथम नमास्रनः ऋातंक, हेनि नर्स व्यथम ইয়ং নেঙ্গল, ইহার ক্ষমতা অপার, ইহার বিদ্যা অগাধ, ইহার মত দেশহিতৈষী ७९काल चात (कह छिन ना। हैनि, দ্যাজ যে ভাজিয়াছে, তাহা ব্ৰিয়া-हिटलन, गमाझ ट्यं পरिश याहेरव, जाहा <del>उ</del> ব্রিয়ভিলেন, এবং প্রাণপণে দর্মপ্রয়ত্তে সমাজকে সেই পথে চালাইবার জন্য চেটা করিয়াছিলেন, ইনি সর্বপ্রথম উৎকৃষ্ট বাঙ্গালিলেখক, ইহা হইতে বাঙ্গলা গদ্য, বাঙ্গালির অভ্যন্ত হইতে আরম্ভ হয়। পদা ভিন্ন সাহিত্য হইতে পারে,ইনিই দর্বপ্রথম লোককে বুঝাইয়া

বিতীর, গৌরীশঙ্কর—বাঙ্গালার রামমোহন রায়ের একমাত্র প্রতিক্ষী।
বাঙ্গালা গদাের একজন শিক্ষাগুরু,
রামমোহন রায়ের—তাঁহার মতের এবং
তাঁহার ব্রাক্ষধর্মের—ঘােরতর বিদ্বেমী,
এবং হিছুসমাজের মহামান্য অগ্রনী।
প্রথম নাই ইউক, তথনকার একথানি
প্রধান বাঙ্গালা সন্থাদপত্রের সম্পাদক।

ঈশবচন্দ্র শুপ্ত গদ্য ও পদ্য সাহিত্যের স্রষ্টা, লেখনীচালনে অবিস্তান্ত, তং-কালীন সর্বপ্রধান সম্বাদপত্রের সম্পাদক, নানা রসপরিপূর্ণ কবিতালেথার চ্মং-কারশক্তিবিশিষ্ট, কিন্তু ইহার আর এক শুণ ছিল, লেখকবর্ণের সে শুণ প্রার থাকে না; এ জন্য লেখকদিগের সঙ্গে সংশ্ জাইবেছক কীবিটি প্ৰায় লোপ দয়।

ইনি অৱবৰ্ত্ত, বিহান, বৃদ্ধিমান, সচচিবিত্ত
ভ্ৰমন্থানসভকে লেখা গিণাইতে বত

যত্ত্ব করিভেন, এত বোধ দয়, কখন
কোন লেশে কোন কালে কোন লেখক
করিয়াছেন কি না সন্দেচ। অধিক কি
বহিন, দীলবন্ধ, দাবকানাথ ইকার মন্ত্র
শিষা বলিলে অসক্ত হয় না।

क्षांकात शव (ववदवश्व क्षांकारमाकन च्याग।विरश्रत (वर्षात बरन्ताशाशात्र । আজিকার সমাজের নেটর। পরিবর্জন সময়ের মৃত্তিমান ইতিহাস। এই প্রাচীন ৰয়সেত ইহার যেরূপ ক্ষমত;, আব কর-ক্ষের ভালা আছে? ইনি যাহাতে हेश्राक्क छात्र (मणीतरतारक व मरम खारवण करब, छाहाब बना (य कछ (5हे।हे कति बाटक्रम : 'हाहात है शहा नाहे। है हात সঙ্গলিত, ব'চত ও অনুধানিত প্রস্থা-বলী একতা করিলে একটি পুস্তকলেম হর, ইহার বিদ্যাকরক্রম একণানি Cyclopedia; ৰাখালা সাহিত্য ও ইং-**द्विमिका**त केत्रकि डेश्व सीवरनत ইনি সাহিতাৰাবস্থীদিগের সহায়, উৎসাহদত্যে, শুভাকাজ্ঞী ও সূত্রদ।

ভাহার পর রাজেজলাল মিল; ইকার বিবিধার্থসংগ্রহ বাজালাদেশের সর্বা-প্রধান সর্বা প্রথম সামরিকপত্তিকা। বা-জালা ও ইংরেজিটে তিনি,নিজে দক্ষাঞ্জ গলা, বাঙ্গালার মঙ্গালে জনা তিইার চেটার্থ বিভ্রমান জাটি নাই। ইনি বরণেকুলার লিউরেটর সোধাইট ও কুল বুক সোধাইটার অলাভ্য শকা হটয়া কভ গ্রহকারকৈ বে উৎসাহ দিয়াছেল, ভাহা কে বলিছে পারে। কিন্তু ইনি বাসামা ভাড়িরা একণে ইংরেজি লটরা অধিক বাস্ত হটয়াছেল, এড বড় লোক বাসামার কেথক চটলে বাজালার বে উপকাব চটত ভাগা হটল, না. এ ইন্ আমরা ছঃগেড, সলেছ নাট। কিন্তু ইনি ভাবতের প্রাচীনতত্ত্ব আবিদ্যার করিয়া বাজালার বেরুপ গৌরবর্ত্বি করিয়াছেল, ভাচা আর কোন একজন লোক বা একটি সোগাইটিয়ারা হয় নাই।

পরিবর্জনসময়ের আর একজন প্রধান লেশক নীলমনি বসাক; ইবার পুস্তকা-বলী অলাপি লোকে পাঠ করিয়া থাকে, টনি সবল গদেরে এরালাভা: বখন লোকে বড়রড সংস্কৃত কথা ভিন্ন বাবছার করি-ভেন না সেট সমর নীলমনি বসাক সহজ গদা লিখিরা পাট বাজালার ক্রুদ্ব ভাব-প্রকাশক্ষমভা আংচে, ভাছা লোককে দেখাইয়া দিয়াছেন। তাহার নবনারী আজিও বাজালি স্ত্রীলোকের উৎকট

টেকটাদ ঠাকুর। ইলি কে আমি ভানি
না, আনিবার বৃক্তি উপাত্ত নাই; কিছ
ইবার রচিত পুতকাবলী আমরা বালা
কালে পাঠ করিরা বে কত উপকারলাত
করিয়ারি, তাঁহা বলিতে পারি না। পরিবর্তন সমানের ইলিক একটন প্রধান
লেপক ও সংক্ষেত্ত ইয়ার স্কুর্তের মহা-

had many imitators and certainly stands very high as a novelist; his story might fairly claim to be ranked with some of the best comic novels in our own language for wit spirit and clever touches of nature."

তভোষপেটাও এই পরিবর্ত্তন সময়ের একটি মছার্ঘ রক্ত; 'ইছাতে ডংকালীন সমাজের অতি স্থান্ধর চিত্র আছে, চদ্যোম হতোমীর ভাষার প্রবর্ত্তক এবং বচসংখ্যক হতোমী পুতকের আদি-পুরুষ। বোধ হয় মৌলিকভার ভংক কনীন সমন্ত পুতকের শিরংভানীর।

वेश्राक्त भन्न मः कृष्कारनास्कत मन । भगनत्मार्न छर्कानहात, छात्रामहत, वह-নে গাক উত্তম নাটকের প্রণেতা, ছুত্ ৰাদক শীরামনাবায়ণ ভর্কবড় প্রভৃতি বস্তুসংখ্যক লেখক এই সমূহে সংস্কৃত क तथ इहेर्ड विकर्गत हत। है हावा हें दिक्तिका व बीका साम वाक कविटकन না : সংস্কৃত হটতে ভাবমালা সংগ্ৰহ क्षिया देशा वाला निर्क छेशहात नि-(क्ता हेशामक कड (मारकत नाम कविव १ सकटलाई शृक्षाशाम, सकत्मवृद्दे निक्र वालाला बाबाकोत्रत्न वासा। देश-वाठे काशी अमझ मिरह महदानरवत महा-पात्र असूबाक क्षिता जाभनोविश्रक थ निश्क् मद्भाषपुरक हिन्ने प्रशीय कतिया-(६न। व्यक्तिका भावकरक मगाव तब-

त्राणितः व्यक्षिकाती कवित्रा नित्राटकन । देश-দের দলের সর্বাপ্রাণী এমন কি পরিবর্ত্তনী ममरबंद श्रधानरम् । भिक्क क्रेयबहत्त विकामानारक नाम ST NE STED নাট। ইনি একা একশত, ইনি যে ৰাঙ্গলিকে লেখাপড়া শিখাইৰাৰ জনা কত চেটা করিয়াছেন, বাঙ্গালায় শিক্ষা-বিভাগ ভাপন করিবার সময় যে গবর্ণ-(बर्फेटक कर्छ विषय त्राहाया कितिबादकन. ভাগা সমন্ত খুলিয়া লিখিতে গোলে এক-খানি বুহুৎ গ্রন্থ হয়। ইনি স্কা প্রথম বাঙ্গালিকে বিশুদ্ধ বাঙ্গালা শিখাইরাছেন, ইহার কথামালা ও চিরিতাবলীর ভাষা যদি বলীৰ সক্ষপ্ৰধান লেখকও পড়েন, আনেক উপকার লাভ করেন। ভাঙার পর ইহ'ব নিঃসার্থ দেশছতৈবিতা, ইহার च ार्यमञ्जिका, चारीमहार, तम्भीव সমস্ত বুৰকবুলের আদৰ্শ্বরূপ ত্ওয়া डें कि के

পবিবর্ত্তন সম্বেষ লোকে যে, গুদ্ধ
নিজে নিজে সকল কার্যা কবিভেন
অমত নকে, ভাঁহাদেব সম্বেত কার্যাও
ছিল। এই সম্বেত কার্যাব মধ্যে তর্ত্তে
কর্মান জালাল। তর্বোধিনী সভা
হততে তর্বোধের জন্য তর্বোধিনী নান্
মক পত্রিকা প্রচার হর। প্রীযুক্ত বাব্
জক্ষরকুমান করু এই তর্বোধিনী পত্রিকার সকলাদকতা করিয়া জাপনাকে
চিরত্মরনীয় কবিয়াছেন, ও দেশের
বছ্বিধ মঙ্গলসাধন করিয়াছেন। তন্ত্ত্ত্ত্বেধিনী পত্রিকা তথ্ন এইন্যান্ত্রন।

একটীমাত্র সভার কাগজ হয় ন।ই, উহা তথ্ন সমস্ত বালালায় ইয়ুরোপীয়ভাব প্রচারের মিসনরি ছিল, উছা ভারত-ৰ্ষীয় ধৰ্মসমূহ সম্বন্ধে কত যে নৃত্ন আবিজিয়া করিয়াছে, তাহা বছোরা তত্ত্ব-বোধিনীর আদ্যোপান্ত পড়িয়াছেন,তাঁচা-न्त्राहे वनिर्छ भारतम । यात्रानित १६८न-দৈর মধ্যে ইংরাজীভাব প্রবেশ করান স্ক্রিথম অক্ষরকুসার দত্তবারা সাধিত হয়। তিনিই। বাঙ্গালির সর্ব্ব প্রথম नी जिलिक कः छाडात हाक शार्ठ, धर्मा भी छि. বাহাবস্ত প্রভৃতি গ্রন্থ বিজ্ঞালোকেও পাঠ করিয়া নীত্যাদিসমকে জানলাভ করিতে नामरकवा এই गकन পাঠে কতদূর উপক্বত চয়, ভাহা वना यात्र ना।

এই সময় কবিওয়ালারা,যাত্রাওয়ালারা বিশেষ পাঁচালীওয়ালা দাশরথী রায়, বালালাভাষার পৃষ্টির পক্ষে বিশেষ সহায়ত। করিয়াছিলেন।

আমরা ক্রমে ক্রমে প্রিক্রিন সময়ের প্রধান প্রধান প্রধান নেতৃগণের নামকীর্জন করিলাম, ইগালের সকলেরই উদ্দেশ্য এক ও মহৎ, ইংলাজীভাব বালালির অন্থিমজ্ঞার প্রবেশ করান। একালের শিক্ষিতস্প্রাদার এই কার্গ্যে এত খেপিয়াছিলেন যে, একজন অভিস্থানিক যুবক—তাহার নাম আমার স্থান নাই, তিনি ইস্কুলের মান্তাক ছিলেন, এবং ইংরেজি বিদ্যার বৃহক্ষতি ছিলেন—

রাস্তায় চলিবার সময় মুটে, 🖈 মজুর, मूनी, एखरनाक, याशास्क स्मिरिङन, ভাহাকেই ৰলিভেন, ''গোকু খাবি, " "গোর খাবি ই'ভাহারা গালগোলি দিত। লোকে বিজ্ঞাসা করিলে তিনি বলিতেন্ "ওরাতে পাবেনা জানিট, ভূবে রোজ রোল শুনিতে শুনিতে শেষ idea টা shocking इडे द ना । এইরূপে পূর্ব্যক্ত মহাত্রাগণ ইউরোপীয় ভাব সকল (मनभर्धा आठात कतिया ्षिर्टन । ्थतिवर्धनम्बर्धन খালিও অনেকে জীবিত আছেন, তাঁহায়া यमि (मकारलत लाटकत मरमत कथा বুলিয়া দেন, ভাহা হউলে আমা অংপেকা ভাঁহার: অনেক অধিক বলিতে পারি (वन।

ভবে সুগতঃ পরিবর্ত্তন সময়ের কাজ এই গুলি:—ভাষার সৃষ্টি,গলার সৃষ্টি,হিন্দুকৈ কালেজের ছাত্রগণক তুক ইংবাজী ভাবেব প্রচার, ও সংস্থৃত কালেজের ছাত্রগণকর্তৃক সংস্থৃত কালেজের ছাত্রগণকর্তৃক সংস্থৃত অমুবাদ প্রচার,সমাজকৈ নৃত্তন পথে চালান, বিদ্যাপিকার উৎসাহ ও উরতি, বাঙ্গালা সাহিত্যের কোরকের উৎপতি। এখন দেখা যাইক এই স্কর্ণার কিল প্রবর্ত্তন প্রবর্ত্তন সময়, অমুবাদেব সময়,শিকার সময়, বড় বড় চিন্তাশীলগণের সময়, আমরা যাহা হই য়াজি ও ইইতেছি ভারাদেরই কপার, উহিদেরই অধাৰ্সামের ওবে উল্লেইই উচ্চামনার কল। বিদ্যাকি উন্নারী

পরিবর্ত্তিদাধন করিয়া তুলিয়াছেন, এমন পরিবর্তন কি আর কখন হইরাছিল, তাঁহারা যে, সমাল, যে সাহিত্য সৃষ্টি कश्चिमा . निशास्त्रम, ध्यमन কথন হুইবে ?' যত ভাব াসমবেত পরিশ্রে বাঙ্গালার ছড়াইরা পড়িয়াছে, এত কি আর কপন কোন • বেশে কোন কালে ছডাইয়া পড়িয়াছিল ? অনাকার বুবকগণ এই পরিবর্তন সময়ের দরুণ মত উপকার পাইরাছেন, এত কি কোন দেশে কোন কালে কোন যুবকদল পাইয়াছেন ? এরপ আশ্চর্যা शतिवर्छ देडेदबार्थ এक बात इटेबाकिन; কিন্তু ইহার সহিত তুলনা করিলে দে অভি সামানা। যথন ১৪৫৪ রণতৃত্বদি ওসমান্হালি মহতাদ নৃতন त्ताम पथन कतिया काहेमटवत **উ**ठतासिः ঁকারিগণকে সাম্রাজাচাত করিল, সেণ্ট সফির গির্জাকে মৃস্তীদ করিল সেই সমধ্য ব্ধন নৃত্ন রোমের পণ্ডিভবুল বিনিদ-সাগরপারত অধ্সাবশ্বীদিগের निक्र निर्देश विषा गर्देश शनायन করিয়াছিলেন, তখন একবার এইরূপ পরিবঁঠন ইউরোপে ঘটরাছিল, এইরপ °ন্তনভাবে লোকে উন্মন্ত হটয়াছিল, लारकत्र महन बहेज्ञल बक्टा छीवन গোলমাল इडेग्राछिलं, এडेक्स छेरमाइत गरिक त्यारक मुठम विमा निविष्ठ धरः नृष्ठम माहिका सृष्टि कतिरंक <sub>अ</sub>ष्टेरहाा-भी रहेबाहिन। किंद्र आशास्त्र व शक्ति বর্তনের সহিত তাহার তুলনা হয় না।

তখন ভদ্ম গ্রীকদিগের সাহিত্য পুনঃপ্রচার হইরাছিল মাত্র। কিন্তু এখন বাঙ্গালায় কি रहेबाह्य धकवात (एथ (एथि ? श्रीहा পাশ্চাত্তী সমস্ত বিদা৷ বালালির সন্মুখে. অপিনাদের শুপ্তভাতার প্রকাশ করি-ভেছে। এখনকার ইউবোপীয় সাহি-ভোর সহিত তুলনা করিলে তথনকার ঞীক সাহিত্য ভূচ্ছে পদার্থ, ভাহার উপর গাহিতোর পুন:প্রচার আবার সংস্কৃত আছে, বৌদ্ধ সাহিত্যের পুনরুদ্ধার আছে। দেখ দেখি একবার কত অগাধ ভাঙারের আমরা একেবারে অধিকারী হইরাছি। এত সম্পদ কাহার ভাগ্যে घटि ? একদেশে আর একদেশের সা-হিত্য প্ৰচারে মহাবিপ্লৰ ঘটে। ইংল-তের সাহিত্য ফাজে গিয়া গতশতা-কীতে এতকাণ্ড করাইয়াছে, আর আজি व्यागात्मत्र (मार्थ हेश्या खत्र, कृत्या क्रां नित्र, हेजानित, खाठीन हिन्तूरमत ও शा-চীন বৌদ্ধদিগের সাহিত্য উপস্থিত। আ-মরা এক এক সমরে এই অ্গাধ সাহিত্য-कामि डिका कबिटक कबिटक विस्तृत इरेबा পড়ি। এইস্কল সাহিত্যের সকল পুস্তক •ভাল করিয়া পড়া অসম্ভব। **অভ**এব প্রত্যেক দেশের সাহিত্যের যদি চারি পাঁচ খানি ক্রিয়া উৎক্রপ্ত গ্রন্থ বা 'মাষ্টার পি ৷'' পড়ি ভাষা হউলে দশবৎসর কাটিয়া যায়। বাস্তবিক এত সাহিতাও क्ष अञ्चल्यामाञ्चल (म्ह्य উপপ্তিত হয় ন। है, व्यात এই সাহিতা-नहेबा चावल कतिएड शास्त्र, हेब्रस्टबब्रन

ভিন্ন এমন কাতি € আর কখন হর নাই। चार ७३ जकत मानारमणीय छात । ७० कतिया मुक्त रुष्टि कतियात विवास हैतः বেক্লের ফত স্থবিধা,বোধ হয় আর কোন লেশের লে।কের কখন এত হর নাট। অধান স্থবিধা, সমস্ত দেশে শান্তিস্থাপিত আছে, কোথাও কোন গোলবোগ নাই, প্রাণ ও ধন সম্পূর্ণরূপে স্থরক্ষিত হটরাছে। মুদ্ধের লেশমাত্ত ও নাই,অসীদারের অত্যা-া চার নাই কুসংস্থাবাপর গুরু পুবেভিতের व्याधाना नाहे, शाधीन हिन्दात वााचा छ (मत्र এমন কিছুই নাই। স্বাধীন দেশে, দেশ শাসন,শান্তিরকা, বিচার কার্যা প্রভৃতিতে নিৰুক্ত হেড় কত কত মহাপ্ৰতিভাশালী লোকের প্রতিভাবিকাশ হঠতে পারে না। ৰাঙ্গালির অনুষ্টে এ সকল কার্ষোব জনা ইংরাজ আছেন। বালালি ইচ্ছা করিলে नित्राभरम् (मरभव निर्विदारम **জে**র ও সাহিত্যের উর**ি**ততে गानिमकने कि वात्र कविष्ठ शास्त्रन। वाकामात्र मर्वाख देश्यांकी विमाशाय करे রাছে। ২০।৪০ বংসর পূর্বের কুলকাতা ুও ভরিকটবর্তী গঙ্গাড়ীরত, প্রচেশনাৰ সভাছিল। এই আনেশ্যাত নৃত্ন সমা<sup>ং</sup> Cma रुष्टि इठेब्राहिल এडेलाम शास সাহিত্যের অভ্র করিয়াচিল, একংব দে সভাতা, সে ন্তন সমাজ সেঁসা-हिना मर्सक विश्वादित इंडेग्राइ, ऋति ্রিভূত অকলমধোন্তন সমূল ভাপিড হইয়াছে। এখন দেখিতে হইবে, बाक्षाणि देशस्यक्षा असम व्यविधात्र कि

কাৰ্যা করিছেছন। জুঁহোরা নৃত্না সাহিত্যগঠনে ক্তন্ব কুতকাৰ্যা বহুঁ-রাছেন, নৃতন চিত্বাজ্যোতঃ জুভদ্র চলি-রাছে, তার যাহা হুইরাছে ভারা হুইছে কুতদ্র আশা করা যাইতে পারে।

আমরা মাটকেলের তিলোভনাসভব -প্রকাশ হুটতে নৃত্ন সাহিত্যের উৎপত্তি ধবির। লইব। যদি ইছার পৃক্রে এরপ নুচন সাহিত্যের কিছু থাকে, কেছ ष्यायानिरात (गर्डे अस्याक्षकात করিয়া দিলে একাস্ত বাধিত হটব। ভিলোক্তমা ১৮৬॰ সালে প্রাচার হয়, ভাচার পর বিশবৎসরমাত্র অভীত হই-য়াছে। এই কুড়িবৎসরে যে সকল গ্রন্থ রচিত হটরাচে, ভাছাকে সাহিত্য'বলিছে আমবা কিছুমাত্র কুট্টিত নহি। সাহিত্যের যেরূপ বৃদ্ধি, বেরূপ ফ্রন্ড উন্নতি ভাষাতে ইহার পরিবামসম্বন্ধে অধীম উন্নতি আমাদিগের ক্সির্নিশ্চর। আমাদিপের এই বাল সাহিতাকে সাহিত্য विविद्या गर्क्स कविवाद ও हेहाई छावी পরিগাসসহকে নানারপ आभा कदिनात्र निरमद कारनं कारह, व्यक्ति अह লার নিজের কথা নছে, অন্ধবিধান নতে, বুগা আৰু নতে, যখন আটবংসক পূৰ্বে এই বাঙ্গালাভাষায় উতিহাস লিখিত হ্টয়াছিল, তখন বলগৃহিছোর ইভিহাস লিখিবার সময় হটমাছে ৷ ভাছার আট-वरगत शास्त्र कड़ने अन् निविष्ठ १रे ब्राह्म, दक्षां आमंत्री तमहे माहित्ताव आहर्ष गर्क कहित्र मान्हरी किन्<sup>र कार</sup>

জীর আর্থাভার। সম্হের ঔপনিতব।।-कत्रवकात्र मेदामि वीमम् माट्य मण-বংগর শুর্বে বঙ্গীর সাহিত্য সমালো-চনাতে विद्यारकन। "That the Bengalis possess the power, as well as, the will to establish a national literature of a very sound and \* good character cannot be denied." शुष्पाञ्चांविद्यात्वहा, हिन्नाभीव, 🔊 যুক্ত বাবু ভূদেবচক্ত মুখোপাধ্যার মহা-শ্র বলিয়াছেন, 'ফ্ল কথা সভাযুগে সরস্বতীসন্তাল ব্রন্ধরিগ্ণ যে কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছিলেন এই যুগে ভাগীরণীসম্ভান-দিগের প্রতিও সেই কার্য্যের ভার সম-র্শিত বৃহিষাছে। ইইাদিগেরই দেশে পূর্বাশিত্রগণের পুনরুদার সাধিত ছ-हेरव।"

এই করবংগর মধ্যে কত নৃতন পৃত্তক হইরাছে, কত নৃতন পরিবর্ত হইরাছে, এবং এট সকল পৃত্তক ক্রমেই উৎকৃত্ততর হইতেছে, পরিবর্ত ক্রমেই দেশের অধিক মলল হইতেছে।

আ্লার বােধ হর সকলে অধীর

ইবাছেন, কিছু আমি তাঁহালিগের নিকট

বীরতা ভিক্ষা করি, আমি নিয়ে অনেক
কথা ছাড়িয়া দিব ছির করিয়াছি,
বাহারা এই দশবংসর মধ্যে নানা সংহত ও ইংরেলি পুস্তক অমুবাদ করিমাছেন, তাঁহাদের কোন কথা বলিতে
পারিব না । বাহায়া নানাবিধ সুপর্ক
শিখিয়া ভর্লাইভি বালকর্কের মনে

नानाविश ভাবের উদ্ভেক করিভেছেন, ভাগদের কথা কিছু বলিতে পারিব ন।। বাঁহার। ইংরেজি বিজ্ঞান অসুবাদ कतिसा (मर्गत महा) बीवृद्धि कतिएक-ছেন, তাঁহালের কথাও বলিভে পারিব বাঁহার। চিকিৎসাশাল্ডের নুতন মত আবিকার করিয়া, অভুবাদ करिया ও अठाव कविया (मनीयमिशक লালাপ্রকার হিতকর এবং প্রয়োজনীয় বিষয়ে পরনিরপেক্ষ করিভেছেন, তাঁহা-দের কথা বলিতে পারিব না, স্বারকানাপ বিদ্যাভূষণ প্রভৃতি যেসকল মহোদরগুর বন্দীয়দখাদপতের সম্পাদকতা করিয়া দেশের হথে।জ্বেগ করিতেছেন তাঁহা-করিতে পারিব নামও কন্ত বেমন শিব বিষ্ণু ও ছুৰ্গা লক্ষী প্রভৃতি প্রার পুর্বে 'আদিভ্যাদি नन्धार्यः' ''वेद्धानिम्भनिक्शार्यकाः'' ফুলচলন দেওয়া হয়, সেইরূপ ভাছা-দের নিকট আমাদের ক্রভজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া বুক্তব্য বিষয়ে অবভীর্ণ হটব। এরণ সংক্ষেপ করিবার আরও একটি কারণ আছে; আমি কুদ্র মামব, আমি ভাঁহাদের ও ভাঁহাদের কার্য্যের সহিত পরিচিতও নহি; আর আমি তাঁহাদের পূলাপ্ছতিও বিশেষরূপে অবগত নহি। অভএব ভাঁছাদের নিকট কুডাঞ্জলিপুটে ক্ষা প্রার্থনা করিয়া আমার নিজ বক্কবাপথে গমন করি।

আমাদিগের প্রথম লেখক মহাকবি মাইকেল মধুহদন দত্ত, ইহার জীবনে-

😦 हेई।त भरता करमक रशेशानुना। कीवत्त जेक्कृश्वन्छा, याशीन्छा, সমাद्यन প্রতি সমূহ অবজ্ঞা, প্রস্তেও তেমনি সমস্ত क्वनाव दक्षमाक्ता कवि व्यामानिशक छोहात क्षथम इरेशनि श्राहत मासा चर्न, नत्रक, जृत्नाक, ज्रातीक, श्रतीक, श्रव (म्थाहेबार्ट्स ; जेबाडकहाना डेकाम छार्ट ममस बन्नाए प्रिन्ना (नफाठेशाह । हेनि अकल छागात्र बुष्पत्रतमती हिल्लन, ইহার মনোমধো নানাগভীয় ভাববাশি চারিদিকে ঘুরিয়া বেড়াইত, ইনি তাহা-রই মধ্যে কতকগুলি ধরিয়া কতকগুলি উৎকৃষ্ট প্রস্থ বিশিয়া দিয়া গিয়াছেন, ভাঁহার প্রস্থ বহুকাল কেই অভিক্রম করিয়া উঠিতে পারিবে না। তাঁহরে जिलासमा कि काना ना महाकाना, ना খণ্ডকাৰা ? আমি বলি উহা স্বৰ্গীয় কাৰা, ना इब विन छैश छेन्यारमत कावा ? ভাঁছার পলাবতী ও ক্লফকুমারী অতুংং কুটু নাটক, তাঁহার বীরাসণা গীতি-कार्या अवस्पत्यत ममकानीत. छाहात बीबाजना वीबाजनागात्व मन्भून व्यामा-পাত। পুর্বেই বলিয়াছি, দেশ দেশান্ত-রাহাত ভাবরাশি তাঁহার অন্তরাকাথে খুরিয়া বেড়াইত, তিনি তাহাদিণের करत्रकिष्क अकल कत्रिशाहित्तम माल। সেটি সভা, কারণ তিনি সমর্ত কাব্য मत्व पृष्टेवश्मत्वत्र मधा निश्विद्याहित्नन, ুজার কুত কত ভাবমালা সে তাঁহার মনে ছিল, কড ভাব যে তাঁহার সাং-नादिक चनचात्र सना मटनके मिलाईना

গিয়াছে, কডই যে ভাঁছার অকালমৃত্যু- , চেতু বিকাশ পায় নাই **ভাহা** কে ব-লিতে পারে ? ভাহার জীবন শোকান্ত-গ্ৰন্থলিও সেই-মহাকাষা, তাঁহার মহাকাবা: তাঁহার শোকাস্ত এক একখানি গ্রন্থ এক একখানি রত্র বা এক একটি রত্বপনি। কন্ত কবিই যে উহা ভটতে রহুরাশি সঞ্য করিয়া**ছেন,** করি-° ভেছেন ও করিবেন ভাছার সীমা নাই। ঠাহার প্রহদন ছুইখানি আজিও প্রহ-সনের অগ্রগণা, তাহার ন্যায় সক্তো-মুখী প্রতিভাশালী বাক্তি অতি বিরল; যগন যে দেশে এ প্রকার প্রতিভা বিকাশ হয়, তথন সেই দেশ ধনা ও পৃথিবীত আভিসমূহমধ্যে মহামানা इयु ।

নাটকেলের সঞ্জ সঙ্গে আর ছই মুখোজন -জন কৰি বঙ্গদেশের করিতেছেন।মাইকেল কালগ্রাদে পতিত হইয়াছেন, ভাঁহারা আঞ্জিও আছেন: হেমচক্র গীতিমালার দেশীর লোকের মধ্যে প্রথম উচ্চতর ভাব প্রবেশ করাইয়া দিয়াছেন, তাহার কবিভাবলী অতুলা পদার্থ; উহাতে সতা •সভাই মন গলাইরা কবির অভিনয়িতপথে ভালার বুত্রসংহার চালাইরা দের। यरमभहिरेखवात्र भित्र शृत्। जिनि बाहै-क्टलब भिवा, वुखनश्हादव बाहेरकन माम चारशका कीदाव वृज्यमःश्रं द्वान (कान अश्रम निकृष्ठे इटेरग् केंडा वर्ष-

बानीत अधिक छत्र आश्रदततं सिनिन, ऐशाङ गोदेक्टनत ऐकामनद्यमा ना थाकित्म ७ छेश्रेष चामाञ्च जक्छादन স্থাররণে এছিত। হেনচজের বুর ও क्रिवानती बङ्कात बाजालाव भूषकमात्भा नाग शाकित्व। यङ्गिम ৰাঙ্গালা ভাষা থাকিবে, ততদিন উহা-•দের নারু নাই। ছেন্তক্ত ইংরেজি উৎকৃষ্ট গীতিকাবাগুলির অনুকরণ বা-দাণার করিতে এতদ্র ক্রতকার্যা হইয়া-(इग:स,त्नाभ इत व्यत्नककृत्य छिनि काना-श्वरं डिश्व चामर्ग्क चिक्रिय केति-शास्त्र। छीडाव शकाव छेटल क छेकान অপচ হুগঠিত প্রতিভাব হুন্দর বিকাশ। म:हेटकटलत मनमामधिक विदीत कवि दक्ताल देहाँत भूषानी छे देहें छे छ चारतत छ।वनानात भेतिशृर्व; উदारक শ সার্বাপন হিন্দুনহিলার সভীত ও দেশাকু-রাপ প্রিরাঞ্রাগ প্রকাশ করির। দিয়া-(कत्र । गानीनकात (गाहिनी महिन्त कृते। (मशहैता निवादक्त। देनि वक्ताला-विव भाषाति कात लिट्यन मा : किन्द देशक कविष्य कित ७ कारा विश्व कम् धात कि हमाज न न हा इस माहे। ७१९° यश्मन इहेन, यनप्रभाग होंग गीडिन কুত্ব: শ্ললিনামে কতকগুলি কৰিতা ণিখিয়াছিলেন, ভাষার মত পরিকার रेश्टबबिटङ याहाटक smart, वटन टलमन क्तिका आतं क्रमन दम्मि नाहे। छाङाइ क्तिकात दशोक क्रिक त्यात्यत मक।

वाव नवीनहळ तंन वह्नश्याक क-विडा लिविबारक्रन, देदांत लंगाणीक युक् বীররসপূর্ব কবিতামালায় পরিপূর্ব। 🕏 🕫 হার - রাণীভবানীর চরিত্র আমাদিগের श्वताशास्त्र कित्र के के श्रीकरन।

हेर्द्रारमत शत भीनवसू, हेनि श्रेश्वर-ভাগের ছাত্র। ঈশ্বরগুথের ছাতের হৈ ্ রারি; ইহার উপর ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত যাত ক্ষমতা প্রকাশ করিয়াছিলেন, এত আর ক:হার উপর পারেন নাই। স্মাঞ্চিত্র অক্নে ইনি অবিতীয়, ই হার সধ্বার একাদশী ও জানাইবারিক স্মালের উৎকৃষ্ট চিতা। সমাজে দোষ দেশাইরা সেই দোষকৈ বাল করিতে ছইলে ব্ত मृत गखन, हेनि एउमुद छाटि ३ क्यूड করিতে পারেন। ইহার লীবাবতী অপূর্ব্ব भनार्थ। देश्टब कि निश्वित हैश्टबटक्रब উৎक्रहे निश्चनानि वासूकद्राण जाना इदेशा অপত প্রাচীন সমাজের সমস্ত ব্যুক্ ভিন করিয়া তৎকালের যুবকগণ কি-क्तरण व्यथः वाट याहे एक म, मी नद्य त्म मकत. वर्गनात्र व्यविशीता छोहात ्गात्वत है। न ७ • ८ इस्होन, छै। हात कहन ७ नियानत कहानात छे ९ कहे एष्टि। छाहात নীলদর্পণে সমাজের কত উপকার করি-য়াছে, কিয়পে অভ্যাচারী পাণাশয় नीलकंतरात्वत थाछि लात्कत विरवयाय ব্দ্ধিত করিয়াছে ভাহা কাহারও অবি-विक गारे। छाहात्र विषत्र आरम्क दिन-वात रें छ। हिल, किन्छ छ। इहेरण श्री <sup>প্রিকাশ - টিকল কাব্র স্থাক্ সম্পূর্ব। " অভ্যন্ধ বাড়িয়া বায়।</sup>

देशक शक्त रहिमवान, देशक इर्जन-मेसिमी, कभावकृष्णा, मुनालिमी, विव दुक, हस्र्टमंत्र, दक्षती, कुक्षकारस्व **धेरेन ७ कम्लाकारमञ्जू पश्चन, धक** আঁকখানি এক এক অন্তুত পদার্থ। ইইাব গ্রাছ গুলির উদ্দেশ্য যে, বন্ধীরপাঠকদিগের मच्दा कर करें है है देह भूकर छ हरके नाबीह वेळ (मगान करा भावत **जर्भश्रक्ते इहे** ह्या छात्रात (य कार्यमा আছে চিত্ৰ ভাহারও চিত্র দেখান, তা-कात्र व्यक्ताल लुक्सिलिटायल, ध्यमन বৃদ্ধি, ধেনন বিজ্ঞাতা, বেমন কর্মক্ষতা, তেমনি উচ্চতর প্রেমাকাজ্ঞার পূর্ব, আ-ৰায় ভেমনি ধৰাপণে নতিমান ৷ পূৰ্বে রামায়ণ ও মহাভারত বদীর্যুবককে যে সকল শিকা দিড, আজি এই পরাধীন দেশে বন্ধিনবাবুর পুত্তকগুলি ঠিক সেই শিক্ষা দেৱ; উংগ্রে কমলা-কান্ত আৰু কেই নতে, একজন স্থানিকিত চিত্রাপজিসম্পত্র বলবাসীর সময়ত অনস্ত লোকসাগ্রের গভীর সমুদ্দীরণমাত্র; 'ভিসি এম এম বধু এম,'' এই গীতের या। वाह्य काला काला काला काला व মুগপূৰ্ব অপূৰ্ব্য কাৰ্যাকলাপের সৃষ্টি করি<sup>2</sup> য়াছেন, ভাষাতে বাঁচার অদেশামুরাগের প্রভুত প্রমাণ পাওরা যার। . তাঁছার क्षांबुधी, आद्यमा समद्रा, तृतिक-णवक-লভা, এমন কি ভাহার রূপনী, থীর, রোহিনী হটতেও আমরা উৎস্ট নীতি-शिका शाहेबा थाकि। नीकिशिका कारवा

**४८कात, रक्षित्रवायुत्र श्राष्ट्र प्रकारितिकार** दर्भा काछ दिइन, माठे दनिरम्ध एव। किछ धरे कब्रवानि यहे सहबा यहिन वावत ममार्गाहन। कतिरम, छ।स्य छेभन्न ত্র অবিচার করা হয় মাতা। তিমি । (यक्र निज्ञात क्रा (मह, मन, लाब উरमर्ग क्रियार्डन, এত বোধ स्य व्याद (कहरे कार नारे। छाहात , वन्नमर्भन " বঙ্গদেশের ও বঙ্গসাহিত্যের বৃষ্ঠ উর্ভি-সাধন করিয়াছে, এক বোধ হয় আর (कड कथन करवन नाटे, टेहाएड विद्य ষাবুব সৰ বলা হইল না। ইনিও ঐশরগুপ্তের অহুকরণকরতঃ স্থানিকিড युवकदुन्तरक वश्रष्ठाशास निवाहेशस सना बिहिउ यञ्ज करत्रम । अधमकात स्थय-বুল বহিমবাবুর নিকট যত ঋণী এত (वाध इत्र व्यात काझात्र निक्रे मरह। क श्रीकी नवहरम नानाक्षण माही विक মনেসিক, সাংসারিক যন্ত্রণার মধ্যে ডে-পুটি মাজিট্রেটের শুরুতর পরিপ্রামের উপরও বঙ্গদাহিতোর অন্য ইইরার চিত্তা ও পরিপ্রমে বিংতি নাই বৈজনপন दाकालि (त देशदिकिनिकाय कि इदेशहरू, "ভাহ। সম্পূ**ণরাশে দেখাই**য়া দৈওয়া करेबारक, वालानि त्य हिलाभीनकार ভুক্তিশীৰতার কাব্যপ্রসঞ্জে অন্য কাতি चार्यका हीन गर्ह, छाहा विसम्ब क्विया (पश्या इवेशारक। किन्द्र विकेश राष्ट्रक कथा गरेका आत अधिक वारकान्त केश कामात्र शरक निष्ठाव অভি অল প্রশংসা, উহার লাভ্রিক্তি তি অন্যায়। বভিষণাই গৈলেল উপুভারার্থ

যে সকল কাৰ্য্য কৰিয়াছেন, করিতে-ছেন ও ঈখর তাঁহাকে দীর্ঘায়ু দিলে বাহা করিবেন, তাঙা অনো বলিলে বত সালিবে, নান। কারণে আমার বলিলে তত সালিবে না।

रक्रमर्गटनत दक्षेगारमचि व्यामारमत दमरम আর চারি পাঁচথানি উংকৃষ্ট সাময়িক शिक्षिका एडेशाएए । देशात गत्भा कार्यामर्गन किছूमिन पुढिया बाक्यांन प्रत्यंत वड्डे वित्रभाव करेता है जित्रा छिन । आर्ग मर्मान (मध्मत मध्म পরনিরপেক ভাবুদ্ধি উদ্দী-श्रामत सना नाना शकांत्र यह कते। इह-वाष्ट्रिया । देशव ध्ययांन त्मथक मण्यातक वार्गञ्चनाथ विनाः स्वयं निक्क द्वर পুর্বচক্ত বস্তু। সম্পাদক মিল ও মাটে দিনির জীবনচরিত বিখিয়া বসবাসীকে है है दब्राट्यक कुरे कन अधान (न टाइ मरन इ मर्भा कार्यभाषिकात निवादक्रम । भून-চল্ল বল্ল বল্লিমবাৰ্ব জীচরিত ভলির , চরিতা পরিভার করিয়া দেবাটয়াবপর্থে উচ্চতর শ্সমালোচনার স্তুলাভ করি ৰুচেন ৮ বৈপেলৈয়ে বিভীয় সাময়িক-প্রিকা বাদ্ধন, ইহার প্রভাব আ্যা-(म्ब क अक्षरण छड अधिक न:हे, कि क् ছাৰ। প্ৰাকৃতি অঞ্লো ইহাৰ প্ৰাৰ্ ष्यकोश्व ष्यधिक। हेहाद मण्याम्य मनीया-मन्त्रकाली शम्ब (याच विलक्षण मर्केडा गहकारत প্রিकाशका क्रमकार्या मन्नाका कतिया आंतिएउटंडम । वेश्ट्राबिट्ड या-'इएक leaned man बत्य, जामातव थ अक्त अल्लाका श्रुकांकरण अनेकण

লেকের সংগ্যা অধিক, আর কালীপ্রাসন্ত্র यात् वह मकन hanned (नाटका अञ्जी, डीहात स्मायात भीवश्वकात खनस्य तहना। তাহার সহযেকিগণকে আহা বিশেষ জানি না, যাহা জানি, ভাহাতে আমা-रम व यरभट्टे छदमा चार्ट (य काली প্রসর্গাবুর সহযোগিগণের মধ্য ভটাতে यात्मक छेरकृष्ठे त्रापक छेरलज्ञ वहेरवन । আর একথানি সাম্য্রিপ্ত ভারতী এপানি যে:ড়াসাঁকত ঠাকুরপরিবারকর্ত্তক প্রাকাশিত, ইছার ফুট মার্জিচ, ভাষা ল-निष्ठ। हेशव कार्याश्रमाणी सुन्दर, बेश क्यम बाकी लए ना गकत का-গল একবংসর ভূইবংসর বাকী পড়ি-য়াছে, কিন্তু ভারতীর বাকী নাই। **এ**टे পরের সম্পাদক বিষ্কেঞ্জনাথ ঠাকুর, ইহাঁর নিজের গ্রন্থাননী অতি স্থানা। স্থপ্পপ্র পে ইহার কল্লনাশক্তির অনেক मृव (मोज (मशिटड भावता यात्र। **हेई**।-२९ > इक:वी (क (क सामश सामि मा, কিন্ত্র গুলিয়াভি, বিজেন্দ্রণাবুর ভাতৃগণ ऊँ हाटक शटल हे माझ्या कतिया **शटक**न । (यथान इडेंद्र र्थःऽ इष्ट वर्भरदद्र नद्या ত্মরোজিনী, পুরুবিক্রম, বাল্মীকি প্রভিত্তা প্রভৃতি দশ বাবে গানি ফুরুচিসদত স্থা-लिक लाठा ও উপাদের গ্রন্থ বাহির इह-র:তে, তাঁহাদিপকে অল্পনভাশালী বলিরা বেধি হয় না: .

বল্পদশনে গিগার কলিমবাবুর সভা-য়ভা, করিয়াছিলেন, উংহারে এক্ষ্ণে স্ফুলেই উৎরস্ভ লুগকাঞ্জীর মধ্যে প্র

स्टेब:एका। वाकु बाककृष मूर्गणाशाव वाकानादम् भारतारक्ष ইভিহাস নিশিষাছেন। ঠাহার কবিডাভলিও मशैवान् हिर्द्धगम् ए शतिशूर्व, हैः तिब, সংস্কৃতসাহিত্যে যাহা কিছু নহান সনন্ত ভীছার কবিতার আছে: তাঁচার কবিত। विक्रमः, महानावंशी पदिशृग्। नात् सक्रमः **চল্ল** সরকার তীক্ষবৃত্প বিনী সংগা-इबीत शम्भापक, वन्नपर्यान कंटक छनि छेदकृष्टे शानमा आहि। मभ মহাবিদাা, গ্রাবু প্রাঞ্চি যে প্রাবমন্ত্রি বজদর্শনের প্রথম অবভার বঙ্গীর পাঠক-वर्गाकं चारमान । शिकामान कविछ, ভাহার অনেকগুলি ভাঁহার লেখনী প্রস্ত। इक्षरमध्य मृत्राशीशांत मनत्त्र नगरत বঞ্জিনবংৰুকে সহায়তা করিতেন, একৰে ভিনি বাঙ্গালার একটি মোহিনীসর বচনা-প্রাণালীর অন্মদাতা, তাহার লিপিড উজ্। खरशम बह्कालाविध वजीसबूतकः দিগকে উদ্ভাত করিয়া দিবে। বঙ্গ-দর্শনের আধুনিক লেখকদিগের মধ্যে त्रभावक त्रक्षीवहत्त्व हाष्ट्रीलाधीय छव-্থানি উৎকৃষ্ট গদ্যকাৰা লি, পিয়াছেন, ৰঙ্গ-ু দৰ্শন সম্বন্ধে এফণে তাঁহার প্রাথান সহায় ভাছার প্রভা বৃদ্ধিবাবু, আর চন্দ্রনাথ-ুৰাৰু ి চন্ত্ৰনাথবাৰু চিন্তাশীন,ভিনি 😇 🙃 কাল কলিকভো রিণিউম্বের স্মালোচক किरणन, धकरण देश्दाक छात्रा व तिशा · রাখালা বিধিতে আরম্ভ করিরাতেন। তিনি বলদৰ্শনে অভিজ্ঞানশকুভাগর বে

সনালোচনা করিরাছেন, তাহা ইউরোগীর সনালোচনা হইছে কোন অংশেই
ন্ন নহে। আনুহা আব্যিদর্শনের আর
একজন লেগকের কথা বলিতে ভূলিয়া
গিরাছিলান, ইহার নান ইস্কনারারণ
বন্যোপাধ্যার, ইনি একণে সমাজে
লক্ষ প্রতিষ্ঠ, ইহার করাত্র ও ভারতউদ্ধার না পড়িরাতে বলীরপাঠকের মধ্যে।
এরূপ লোক অতি বি ল। ইহার ভারত
উদ্ধার নামক mock heroic কাবা অতুলা
পদ্ধে। ইনি একণে পঞ্চানন্দ নামক
রহসাপুর্ণ সাম্মিকং নিকার সন্পাদক।

আনবে প্রবর্ষতান্ত দীর্ঘ হুইয়া পড়িতেতে, কিন্তু আমি নিকট আবার একটু দীরতা ভিকা করি। এই সময়ে আমরা আর কয়েকটা लारकत कथा या विश्वा थाकिएक भारि-ভেতিনা। বাবু উপেক্সনাথ সাস চুই.º थानि উरङ्गेष्ठ नाष्ठक मिनिया नियाद्यम, ভাঁহার নাটক তুইখানিতে ইয়ংবেক্সলের দোৰ ও গুণের ফতি স্থচাক চিত্র দেওয়া অংছে। বাবু রহনীকৃতি ছপ্ত সিপারী बुरक्षत देखिहाग लिशिटड्इब, यडमृत শানর পাইরাছি, তাহাতে বেশ অসুদ্ব ক্রুরিতে পারি, বইণানি সম্পূর্ণ ছইলে,• বাঙ্গাণার একণানি অপুর্ব পাঠাএছ হইব। ভাহার পর বংৰুরালক্ষারার नागविष शक् विविशा, सिटक्षत्र कामःशाहव कमजात श्रीकक्षण , श्रीकृष विद्याद्वन अ निक छात्रारक यरशक्तिवस्त्र मन्त

I was my offering of from the same and

**<sup>े</sup> व्यक्तिसम्बद्धाः** । श्री ग्रहे।

করিয়াছেল, ভাঁছার রাছের সংখ্যা নাই।
নাহিতাবিষয়ে তাঁছার অসীন নতনাবের
শোল নাই, ভাঁছার বলস অল্প নোগ
ছল, তিনি অনেক লিখিরা নাইতে
পারিবেন। আর সম্প্রতি করেওটি
মুক্ত কল্পনামক একপানি নাসিকপত্র
প্রকাশ করিতেভান, উভাদের নেরপ
শুল্লা ও অধাবসাল দেখিতেভি, ভাঁছারা
বে ক্যুত্রারা ছইবেন, ভাহার আর বিশেষ সন্দেহ দেখিতেভি না।

বাবু ঈশানচন্দ্র বন্দ্যাপাধার, ইনি
তিন চারিখানি উংক্ট পদ্য গ্রন্থ কিখিযাতেন, সম্প্রিত বোগেশ নামক
অপুর্ক কানাস্টি করিরা নামালির
কৃত্তভালাভের সম্পূর্ণ উপস্কু পাত্র
ছইরাছেন। তাঁহার সম্প্র নাম্মান
জীচরিত্তের চর্যোৎকর্য।

- শ শিবনাথ শান্তীর নির্বানিতের বিলাপ একখানি সূপাঠা বাঙ্গালা কারা। তীহার পুশনীবার বত্নংখাক উংক্ট কবিতা আছে, যেকিবিতার তিনি অংদশের জন্য আয়ুদ্ধীবন উংস্কৃতি কবিতা। আর নাার উচ্চতর ভাবপূর্ণ কবিতা। আর দেখিনাই।
  - নিট্রার আর, নি, দত চারি পাঁচথানি অন্সর ঐতিহাসিক উপনাসে
    বিশিয়াছেন। তিনি নানা আতীয়
    উৎকৃতি চিত্র বিশিয়া বন্ধবাসীকে
    আনোধ ও শিক্ষাধান করিয়াছেন।
    উল্লেখ্য প্রাথ্য আমন্ত্রা প্রাচীন বান্ধানার
    উৎকৃত্রক্ষ্যাক্ষতিক ক্ষেবিতে পাই, ভাষার

    উৎকৃত্রক্ষ্যাক্ষতিক ক্ষেবিতে পাই, ভাষার

    স্বিত্রক্ষ্যাক্ষতিক ক্ষেবিতে পাই, ভাষার

    স্বিত্রক্ষয়াক্ষতিক ক্ষেবিতে পাই, ভাষার

    স্বিত্রক্ষয়াক্ষয়

ভাষা জ্লণিত এবং छोहात अश्वासी वर्तसम्बद्धाः

আর ভুইশানি গ্রন্থের কথা এ ছবো বলা আবশাক। ভুইণানিতে গ্রন্থকার নান দেন নাই, একপানি বঙ্গাদিপপরা-জয় আর একপানি অর্গান্তা। বিশাধিপ-পরালয়ের গ্রন্থকার ক্ষাও দীর্ঘ বর্ণনার যথেই ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়াছেন, উই,র নরনারীচরিত্রগুলিও উত্তর। অর্গতা ইংরেজিতে যাহাকে মবেল বলে, বালা-লায় সেইক্লপ সর্কার্পন নবেল। বা-লায় সেইক্লপ সর্কারপন নবেল। বা-লায় সেইক্লপ সর্কারপন নবেল। বা-

হরলাল রারের হেমনতা বজীর
প্তকাবে জান পাইবার সম্পূর্ব উপযুক্তা যে সকল গুল থাকিলে নাটক

হর, তাহা উহাতে ভূরিপরিমাণে পাওরা
যার।

অনেরা এই বলীয়লেখক সমালোচনার
সর্পালের পূপ্য প্রনির সমালোচনা করিয়া মধুবেশ সমাপেরেং করিব। পূপাপ্রনি বলিভারার একপানি উৎকট্ট
মহাগ্রন্থ। ইহার ভাষা সংস্কৃতামুকরণ
ভাষা কাহার নিজের। রামপতি নাায়র্ম্থন
হাশারেবও ভাষা কাহার নিজের। কিছ
ভ্রেশবর্মীর ভাষা প্রাচীন ভটাচার্যা
ব্রেশ্বণ পণ্ডিছও ক্যকসমালে বে ভাষা
ক্ষিত হইত, ভল্মধ্যে বাহা কিছু মহীয়ান্ ভিল, সে সম্প্রের সারসংগ্রহ, অকুকর্মান্টিতা ইহার ভাষাব্দী বল্প

बाजीन व्यक्तिकांत्र अधित थाका उठिछ। भूषाक्षी वक्षानि कहु अमार्थ। ज्राप्त ষাৰুর ঐতিহাসিক উপন্যাস বালালায় हैःदब्धि बद्दानात निभिष्ठ अभग देशगात्र। আমরা আরু অধিক লোকের গ্রন্থসনা-लाइमा कदिया मकत्वत खगीवडा ছুদ্ধি করিতে চাছি না। আমরা যাহা লিখিয়াছি, ভাচাড়ে দেশা যাইবে চিহ্নিত দিবিল সর্বাণ্ট চটতে সামানা স্ন্ৰমাষ্ট্ৰার পর্যাস্ত বাক্ষালা নিখিতে আ ब्रह्म कविवारक्रम । कार्रा त्लारक हेश्रविक लिचिक, किस आधुनिक श्नकशण हैः दिवि পড়িয়া ৰাক্ষালা লিখিতে আর্ত্ত করিতে-(इस) चामारक के दिल्ला (नश्रा नहाः প্রতিষ্ঠ হটয়াও বাঙ্গালা আরস্থ করিতে-.লোকের ক্রেন্স काड़ाइटडट य नाना छ.या শিशिव, • মানা দেশ দেশিব, কিন্তু লিখিব নিজ ভাষার ৷ ইকার প্রসাণ ভারতীতে প্রকা শিত নিশিকান্ত চট্টোপাধ্যারের পত্র-থানি। তাঁহার পতাদি বালাবার বি **चिठ, छीडा**द मन नाकानार्य सना यां-कूत। डिनि (मण्डे शृहेर्मन्त्रे इहेटड হণন হালালাভাষার বালালির অনা. कैक्ट्रिएकन, एथन कात व कथात्र

विरमय श्रीमान निवास श्रीदालन गाहै।

য়খন সকল অবস্থাপর সকল বাবসারী

লোকের সংখাই সাহিত্যালুরাগ প্রকাশ

ুভরিতেছে, ভখন সাহিত্যের বে মংতী

श्रीवृद्धि कठितार ना प्रिक रहेरत काराव

व्याद मध्यद सुदि। 👵 🔑

क्ष्मत्र क्रकोंटे कथा वाकि आद्य । (व दुकर यात्रामा माहिका निनिद्धारकन, छ। इ।-क्रहे बाना वावमान बाह्ह, त्क्रह ठाकूनी करतम, त्वह सभीमात, त्वह डिकीन,त्वह वावमात्र करत्रम अवह शृक्षक निरममा चाड এव जकत्मके amateur किन्न गाहि-ভোর প্রকৃত উন্নতি করিতে হইলে, সাহিত্য একটা ব্যবসাম হওৱা চাই, আলিও ভাষা দাড়ায় নাই; এখনও শুদ্ধ সাহিত্য বাবসায় করিয়া কেই धीवनित्रशह कड़िए शास्त्रन ना। याः হাতে সাভিত্য বাবদায় হয়, ভাহার বিশেষ ঠেট্রা করা একাম্ব অবিশাক। জানার বোধ হয় রগনীকাস্ত ওপ্ত ও वाय वाजका ताम छित्र जात (कहरे कुकं गाहित्यात खेलत कीतिकात समा गिर्जित करत्रम मा। कि**न्न ध्वान व**्यः व्यक्ति निन शाका वाङ्गीय नार्डः 🛰 আজিও গ্ৰৰ্মেণ্টেৰ চাকুৰীতে লাভ আছে, আজিও একমন ভাল গ্রীজুয়েট গ্রুণ্টেন্ট, চাকুরীতে যাইন্ষ্যিত্র অস্তর: १६ कि ১०० है का शाहिए ले दिन । यड দিন সাহিতা বাবসায় প্রাথম হইভেই है है। ज्यार का जिल्ला का अधिक लाख मा अधिकार পারে, তত্তিম উৎকৃষ্ট শিক্ষিত লোক माञ्चावावभाषा मर्वश्रयाण भविस्रय कतिएक हास्टित मा। ७३ म्डन प्रमादि সমস্ত ইউরেপীর জাচা পাক্তারা সা-हिटाइसिं डेक्यांठिकं इंडेब्रांख व वनीत ্সাহতোর আলিও আশাসুরূপ উগ্রি इत्र, नारे, डाहार, साइन साधीन शाहिडा

वायमात्र मा थोकाः चार्यासत (मटन देशको भाष्ट्रीश्रद्ध (य (कन व्यनवहरू य। हिन्न इन्न ना याहा । वाहिन इन्न फाश्व (मतिएक (मतिएक स्त, हेशा •लाबान कावन धारे या. भूषकत्रहना वादमाञ्चाखत्रायमधी अञ्चातमिरगत थुभी ও অবসরের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করে। গাহিত্য অক্ষিতে, অক্ষিতেতে ও অকিবে, কিন্তু ষ্তুদিন সাহিতা বাবসার নাহইবে Profession না হইবে, তভ্লিন সাহি-ভোর বন্ধুলভা হওর। অসম্ভব। হিতা ব্যবসায় করিতে হইলে, আগা-দিপের কি করিতে হইবেণ কোন ভাল न्डम शुक्रक वाहित इहेलाहे यपि (मध्नि ভ্তৰ কতক বিক্ৰেয় হইবার নিশ্চয় সম্ভাবনা থাকে, এবং সাহিতোৰ গুণা-খাণ পরীকা করিছে পারে. এরূপ "बैष्ट्रमः बाक (लाक बाक, यनि आइ) গ্ৰন্থ কাৰ-ব্ভুল व्याचारत व वना चन्द्र चलन, सर्गत,वाक्रशित गमादनाह-ক্ষের লেখনীর উপর নির্ভর নাং করিতে इब, आब शहंमरथाक गारेखती थारक, याहाएक मक्तशकात शहरे क्रीड हब्, তাহা হুটলে শীঘ্ৰ শীঘ্ৰই সনাক্ উন্নতি ' **इ**हेनाच अद्धावना। ज विषय चामत्रा धक्षतिबाद्यत श्वरंगत कथा ना विनेत्रा পাৰিতে পারি না; সৈ কলিকাতার रेक्ट्रियाणी। . (भाष्ट्रावाबाद्यत वासवाणी रवमन खोडावाँकिश्व देश्याहकाछा, ঠাকুপপরিবারও ডেমনি এই নবাছুরিভ गाहित्छीत् छेदमाह्याछा इवेदारहरा। मुचन

সাহিত্য প্রচারের সমর অন্যান্য সিদ্ধ পরিবারগণ যদি উৎসাহ দিতে আ-त्रष्ठ करत्रन, छाहा हरेल चाबीन मा-हिटा वावमात्र कार्टितार धावर्तित हहेरक সাবিত্রী লাইবেরীর ন্যায় লাইব্রেরীর সংখ্যা বাড়িয়া লেপকগণ স্বাধীন ব্যবসায়ে প্রবর্ত্তিত 📭 টলে, বলীয় সাহিত্যের যে অস্তুড উনতি হইবে, ভাহা ৰলা ৰ(ছলা। দাহিত্যের প্রকাপ্ত ভাতার অভিরাৎ প্রস্তুত করিবার যেমন আশ্চর্য্য অবিধা হ্ইয়াছে এমন অল ভাতির ভাগে। ঘটে, आमामित मिटम य काम নবোৎগাহ অসাক, শুসকলেট গৈছিভোর উয়তি হটতেছে: বান্ধলিগের নবোৎ-সাহে সাহিতাসংখ্যা যে কত বৃদ্ধি করি-তেছে তাহা বলা দার না। বাল্লসম্-জের বাহিরে সে সাহিত্যের বিষয় বৈছ (कर अवशंड नाइन। ভारात भन्न है:-েদী আমাদের bread winning languago बागारमत देश्यां निष्ट हे हहे. বে। স্তরাং ইংরেজি পড়ার দক্র আমাদের সাহিত্যের যে উল্লভির সম্ভাষনা ভীহা একপ্রকার চিরতারী বলিতে হয়। **एड्डिंग अब व्यामारम ते ५७ विमाल्य तार्गत्र** . সময় সংস্কৃত এখনও অেনেকে পড়িবে. প্রাচীন আর্যান্তার। কোন বাঙ্গালি অবজ্ঞা করিতে পারিবেন না স্থতরাং সংস্কৃত পাঠ (रुष्ट्र नाहिट्डान (य जेन्नां रहेगान সভাবন। সেও চিরভারী। এখন কেবল विवस्ति मध्यामाख्यायमात्री अक्षन

रमनक ठाडे, छाहा इहेरन जामना जन बिश्न पृथियीत आत मगस माहिछाटक कार्श कतिया विष्ठ भावित, जननात हाबाहेबा विटंड शांतिय, याहा कहे विश चर्त्रातत गरश करेत्रारक, चाना स्मर् छाड़ा इहेमड नरमदा इस मा। आत निर्म चःगदः देह। सर्भका चांत्रश्र व्यक्ति इटेटन, शिक्ष ; कावन, त्मभक्षिरगत मस्या व्यवि-काः भेरे अज्ञवत्रक, वेद्रांतित वत्ता वृद्धिमर-कारत रलभात श्वन श्रमिक इटेरन, भात श्रशास कथिक इन्दर। সাম্বিক-শত্তিকাগণ প্রতিবৎসরই ছুই একটি कतिवा त्लाभक देखबाति कंतिवा छाछिवा बिट्टर्ड : धरे मक्त त्मक सागाइ धनर्वत्रके दा खना मर्कित्म मानिहा কেবল সাভিতা লইয়া কাল কাটাইতে পারে, ভাষার যোগাড় করিয়া দিলেই ৰালালাসাহিত্যের অরধ্বনি পৃথিনীর এক গ্রাপ্ত হইতে অপর প্রাপ্ত প্রতি-श्वंगिष्ठ ६३८व. च्यात (महे मध्य मध्य বাঙ্গালি পুণিৰীমধ্যে এক মহাজাতি ব लिया পরিগণিত হইবে। औरमटक व-**(लग रक्ष छ। याद्र अवदा रक्ष होन ; किह्न** धरे बन्नीय रमयकमछनीनत्था माञ्च छै:इ:८१व क्श्व गाय मिट्ड পারি না।

ৰাশালা সাহিত্যের অবতা লৈ চনীর সংহ। বধন প্রতি ভিন্নাংস পাঁচ ছয়

भक्त भूकम भूक्षरकत (दक्षिडेति एतः, रथन धाक कलिकाछात्र शें।5मंड देशनं क्रमदत्रह हिन्दि अपन के के, भीड़, बड़, ट्यांडे, थती. निर्यागकरण है बाकाला लिशिनाइ ख পড़िनात बना डेश्यूक, ७ भन वात्राना माहिटरात अवश (भाष्ट्रभीत नहरू। আমরা দিবাচকে দেশিতেতি বঙ্গীর সাহিত্যের পরিশাম অতি গুডুকর, বঙ্গীর गाहित्यात छेत्रकि अवस ଓ छेत्रविकाल সমাগত। আমি কিবাচকে দেখিতেছি শত শত ভাবী লেখক ভাবী প্রতি**ভা**-भाली (लाक छन्त्र इटेट्ड एक्न, आनि দিবাচকে দেপিতৈছি, শত শত মহা-काता तत्रवाशीतक चार्नाक छहाहेता ভাষান্ত রিত হইয়া দেশ বেশান্তরত্ব পণ্ডিড-दुक्तरक व्यानस्य मध कहिर्छट्छ। व्या-मात कर्ल कड छितवादरानीत छ वीनाद প্রতিষাত লাগিতেছে ভাষা বলিতেঁ भारति ना। এই मकल्बन्न भग्डाटक चामि बिकाहरक (पशिटक्रि, এक्টि भोत्रतीविक মহাশক্তিমান মহাজাতি ইপ্রোখিত गिश्रहत नात উथिय इंडेब्रा क्टळाटा-गरकारत वर्षमाम भूतरस्त महामद्दाभाषा । •श्राम्य अन्धान कतिरहरण: आहे .महा (प्रविश्वित्याच वर्षान च:नगड(इ निः वार्थ (मन्दिरेडवी महामन्त्रिमरक श्रमा कविष्ठहर ।

## भानारमो।

## विठीत्र व्यःम ।

ুপত্রিকার দেখিত৷ম, কোন একজন মিলি-টারি সাহেব " পেরেড" বৃতাস্ত, "ব্যা-ওের" বাদাচর্চা প্রভৃতি নানা পালামৌ হুইতে লিখিতেন। সামি ত খন ভাৰিতাম পালামৌ প্ৰবল সহর, मारहरमगाकीर्य ऋस्पत छान। कामिकाम ना (य, भागारमो महत्र नरह, একটি প্রকাও পরগণানাত্র। সহর সে অঞ্লেই নাই, নগর দূরে থাকুক, তথার একণানি গওগানও নাই, কেবলুপাহাড় ७ जनाम महिशून ।

পাহাড় আর অঙ্গল বলিলে কে কি অভুতৰ করেন বলিতে পারি না। " বাঁহারা "কুফচন্দ্র কর্মকার কুড" পাহাড় प्रिवाह्मिन, व्यात वैद्याहमूत शृहशार्थ শৃগালশ্রাস্তিসংবাহক ভাঁটভেরাভার জন্মল আছে, ঠাইার। বে এ কণা সমগ্র অভ্যব कतिहा लक्टर्वन, वेदात चात गरकह नाहे। किन्द चना शाठिएकत बना (प्रहे शाहाक् मन्द्रात कथा किकिश उथापन कता -ষাবশাক ছইরাছে। স্কলের অনুভবশক্তি । ত সমান সংহ।

बाहि इटेटच भागार्थी वावेटच वावेटच বণন বাছকগণের নির্দেশমভ দূর হইছে भागारमा (प्रविद्य भारेगाम, छवन जानात (वाद हरेन (वन मःर्स (मध कतिवादक। पामि पट्नकक्त माजादेवा ८१६ यटनास्य

দৃশ্য দেখিতে লাগিলাম। ঐ অক্সায় लनकारनत , इतकता नामक देश्टति क तमचमत्या अथनदे गाहेव अदे महन कतिथा चामात्र कड्हे चास्तान हरेट नानिन। কতকণে পৌছিব মনে করিয়া আবার क्ठरे वास इरेगाम।

> পরে চারি পাঁচ ক্রোশ অগ্রসর হইরা श्रावात शालारमो स्विधवात्र निमिष्ठ शाकी হইতে অবভরণুকরিলাম। তথন আর भिष्य हरेन गां, शाहा**एखनि न्या**हे टिना याहेटि नाशिन ; क्डि अजन ভাল চেনা গেল না। তাহার পর আরও ছই একক্রোশ অগ্রসর হইলে, ভাষাভ অরণা চারিদিকে দেখা যাইতে লাগিল; কি পাহাড়, কি তলম্ব স্থান সম্গর যেন মেষদেহের ন্যার কুঞ্জিভ লোমরাভিধারা সর্বতি সমাজ্বাদিত বোধ হইতে ল।গিল। শেষ আরও কতকদৃর (शरण वन न्यांडे (एवा (शया। शृक्ष-गाद्र, निष्म, नर्सक कलन, কোপাও জার ছৈদ নাই। কোৰাও कृर्विड (ऋख मारे, धाम मारे, नही नारे, १६ नारे, ८क्रन दन-इन নিবিড় বন।

शत शानारमे जारवभ कतिया स्वि-नाम, नेनी, खाम, नकनरे चाट्ड, पूत्र हरेडि छाहा किছूरे देवना यात्र गाँहै। भागारमी भवनगाव পাহাড় অসংখ্য, পাহাড়ের পর পাহাড়, ভাহার পর শা-राष्ट्र, बाराव शाराष्ट्र; राम विह्निक

নদীর সংখ্যাতীত তর্স। ভাষার त्वाथ इत्र त्वन अवनीत् अख्याधि अक-দিনেই দেই ভরক ভূলিরাভিল। এখন আমার ঠিক স্থরণ হয় না, কিন্তু বোষণ ্ছর যেন ছেখিরাছিলাম সকল তরসগুলি পুর্বাদিক হটতে উঠিয়াছিল, কোন কোনটি পূর্মদিক্ হইতে উঠিয়া পশ্চিম-बिट्य नाटम नाहे; এই क्रिश व्यर्क-পাহাড় নাভেহারগ্রামপার্যে একটি আছে, আমি প্রায় নিতা ভথ্যে গিরা বসিয়া থাকিতাম। এই পাছাড়ের পশ্চিমভাগে মৃত্তিকা নাই স্তরাং তাহার অন্তর্গ नकल खत्र (मर्था यात्र, এक खटत नृष्कि, आत এक खटत कामभाधन, है-ত্যাদি। কিন্তু কোন শুরুই সমস্ত্র নছে, প্রভাকটি কোথাও উঠিয়াছে, কো-ধাও নাৰিয়াছে। আমি ভাগা পুৰ্বে नका कति नाहै, नका कतिरात कात्रन পরে ছটিরাছিল। একদিন অপরাকে बहे भाशास्त्र मृत्त माडाहेबा चाहि, এমত সময় আমার একটা নেমকহারাম ফরাসিস কুরুর (poodle)আপন ইচ্ছামত ভাৰতে চলিয়া গেল, আমি রাগত बहेबा ही एकात कतिया जाहारक **छाकि**. লাম। আমার পশ্চাতে সেই চীৎকার चडाम्ध्रीत्ररथ क्षेडिश्वनिष्ठ, इरेन। পশ্চাৎ ফিরিয়া পাহাড়ের অভি চাহিয়া অভার দীংকার করিলাম, প্রতিধ্বনি चाबाद भूर्तमञ्जूष नीर्घ हरेए वरेए भाराह्य चभन थास्य इतिस्र (भने। আবার চীৎকার করিলান, শক্ষ পূর্ম-

বং পাছাড়ের গারে লাগিরা উচ্চ
লীচ হইডে লাগিল। এইবার ব্রিলাম
শব্দ কোন একটি বিশেষ তার অবলম্বন
করিয়া বার; সেই তার বেশানে উঠিরাছে বা নামিরাছে শব্দ সেইখানে
উঠিতে নামিতে থাকে। কিছু শব্দ
লীর্ষকাল কেন হারী হয়, যতদ্র পর্যান্ত
সেই তারটি আছে, তভদ্র,পর্যান্ত কেন
বার, তাহা কিছুই ব্রিতে পারিলাম না;
ঠিক বেন সেই তারটি শব্দ কন্ডক্টার
(conductor) যে পর্যান্ত ননকন্ডক্টারের
সক্ষে সংস্পর্শ লা হয় সে পর্যান্ত শব্দ
ছুটিতে থাকে।

- আরু একটি পাহাড় দেখিরা চমৎকৃত इरेबाहिलामः त्रिष्ठि এक लिला, नमूनरव क्षानि शक्तः। ভाहात्व व्यक्तात्र (काथां क्रनामाल मृखिका नारे, ममूनव পরিছার ঝর্ঝর্ করিতেছে। ভাহার এক ञ्चान चटनकतृत भेरीख काछित्रा निवादक, সেই ফাটার উপর বৃহৎ এক অর্থখগাছ অন্মিয়াছে। তথন মনে হইয়াছিল, অথথবৃক বড় রসিক, এই নীরস পাধাণ হইতেও রসগ্রহণ করিতেছে। কিছুকাল পরে আর একদিন এই অপ্রপাছ আমার मत्न পड़िदाहिन, छथन छाविदाहिनार्व, वुक्कि विक् भावक, देशन निक्षे नीनग পাখাপেরও নিজার নাই। এখন বোধ হয় অখৰগাড়টি আপন অবস্থাসূত্ৰণ কাৰ্যা कतिएछरं : नक्श दुष्परे एव वाना-লার মুসপুর কোমল ভূমিতে কল্প<sup>এংন</sup> कतिया विनाकाडे कामवानम् कतिर्व

এমত সন্তব নছে। বাহার ভাগের কটিন পাষাণ, পাষাণই তাহার অবলম্বন, এখন আমি অখ্ঞটির প্রশংসা করি।

**अक्षा . (म मकन क्था या** हैक, ুপ্রথম দিনের কণা ছই একটি বলি। অপরাক্তে পালামৌরে প্রবেশ করিয়া ভিতরপার্যক পর্বতভোগী দেখিতে শেখিতে বনুষধা দিয়া ৰাইতে লাগি-ঁলাম। বাধা পথ নাট, কেবল এক मः शीर्व (गा-भथ निम्ना आमात भाकी চলিতে ুলাগিল, অনেক স্থলে উভয়-পার্যত্ত লতা পরব পান্ধী স্পর্শ করিতে লাগিল। বনবৰ্নায় যেরপ' শাল তাল ভমাল, विखाल " গুনিয়াছিলাম, ুসেরপ কিছুই দেখিতে পাইলাম না। তাল, हिन्नाम अरक्षाद्व हे नाहे, दक्षत भान-वन, जाना वना शाइ छ मार्छ। भारतत-মধ্যে প্ৰকাণ্ড গাছ একটিও নাই, সুকল श्वनिष्ठे आभारमञ्जलमी कनश्रवृतकव মঙ্লা হয় কিছু বড়, কিছু ভাহা হইলেও ধকল অতি তুর্গম, কোণায়ও णाशात (कम नार्ड, अहे कना मत्था मत्था त्यः (इन व्याद्यः, ভাষা অভি সামানা। এইরূপ বন सिषा যাইতে याद्देख धक शारन र्कार कांक्रवाचे।त्र विवश्वकतः नन शाहत वहेन, कार्डवरि। शूर्व्य समिनी-प्र कक्टल (क्षित्रक्तिमा । গৃহপাণিত পণ্ড বনে পাধ হারাইলে, শকামুসরণ করিয়া ভাহাদের অনুস্থান করিতে रहः भ्रेमना गनश्कीत উৎপত্তি।

কাঠবণ্টার শক্ষ গুনিলে প্রাণের ভিতর কেমন করে। পাহাড় জললের মধ্যে নে শব্দে আরও যেন অবসর করে; কিছু, সকলকে করে কি না ভাহা, বলিছে-পারি না।

পরে দেখিলাম, একটা মহিব সভয়ে মুথ ভূলিয়া আমার পাকীর প্রভি একদৃষ্টিতে চাৰিয়া আছে, ভাহরে গলায় কাৰ্ছখণী। ঝুলিতেছে। আমি ভাৰিলাম, পালিত সহিষ যখন নিকটে, তখন গ্ৰাম चात्र पृदत नरह। चात्रविण एवहे चार्त्रकः, ভূণাবৃত একটা কুদ্র প্রান্তর দেখা গেল, এখানে সেণানে ছুট একটি মধু ৰা মৌয়াবুক্ষ ভিন্ন সে প্ৰান্তৰে ঋক্ষ কি লভা কিছুই নাই,সর্বত অতি পরিষ্ঠার। পর্বভিচ্ছারার সে প্রায়র আরও রমা হুট্রাছে; তথার কতকগুলি কোল-বালক একত সহিষ চরাইভেছিল; সেরূপ কৃষ্ণবর্ণকান্তি আর কথন দেখি নাই, সকলেব গলায় পুতির সাতনরী, ধুক্ধুকীর পরিবর্তে এক একথানি গোল আবসী; শুরিধানে ধড়া; কর্ণে বল-ফুল, কেছ মুহিষপৃঠে শরন করিয়া. • আগছে: কেছ বা মহিষপুঠে বসিয়া আছে: (কছ কেছ নুত্য কবিতেছে। সকল গুলিট যেন কৃষ্ণঠাকুর বলিয়া বোধ-ুচটচে লাগিল। যেরপ ভান তাহাতে এই পাতৃরে ছেলেগুলি উপযোগী বলিয়া विरम्भ यन्त्र (मथाहेट किन, हाति पिरक কাঁল পাথর, পণ্ডও পাতৃরে, ভাহাদের-त्राधानक रमहेन्य। अहेन्द्रान बना आहे

ব্যস্ত অক্ষেত্র মহিব ভিন্ন গোল নাই। আন বালকগুলি কোলের সম্ভান।

এই অঞ্চলে প্রধানতঃ কোলের বাস।
কোলেরা বুনাজাতি; ধর্মাক্তি, কুঞ্বর্ণ:
কোথতে কুৎসিত কি ক্লপবান্ তাহা আমি
নীমাংসা করিতে পারি না। বে সকল কোল কলিকাতা আইসে বা চা-বাগানে
বার, তাহালের মধ্যে আনি কাহাকেও
ক্লপবান্ দেখি নাই; বরং অতি কুংসিত বলিরা বোধ করিরাছি। কিন্তু
অদেশে কোলমাত্রেই ক্লপবান্, অন্তভঃ আমার চক্ষেণ্ড বন্যরা বনে স্থন্দর; শিশুরা মাত্রেকাড়ে!

**শ্রান্ত**রের পর এক ক্ষুত্র গ্রাম, তা-হার নাম শুর্ব নাই; তথার তিশ ৰত্তিশট গুহন্ত বাস করে। সকলে-बरे भर्ग्कृषीत । स्नामात भाकी मिथिट যাবতীয় স্ত্রীলোক ছুটরা আদিল। नक्टिनेहे व्यावन्द्रमत मछ कान, मकत्नहे य्व हैं), मद्रावत किंग्रिमा धकशानि ক্রিয়া কুজ কাপড় জড়ান; সকলেরই कक, वक आवत्रणमृता। • (गई निता-বুত বক্ষে পুতির সাতনরী, ভাহাতে কুদ্র কুল আরসী ঝুলিতেছে; কর্ণে কুল কুল वसक्न, याथाय वड़ वड़ वनक्न। यूव-ভীরা পরস্পার কাঁধ ধরাধরি করিয়া (पिंचिट्ड नागिन, किन्दु (पिंचिक दक्वन পান্ধী আর বেহারা। পান্ধীর ভিতরে<sup>4</sup> त्क वा कि छाहा (कहहें एमिन ना। े आমাদের বাজালারও দেখিয়াছি পরী। ब्राप्य यानक यानिकांत्री त्यात्र शाकी जात्र

বেহারা দেখিরা ক্ষান্ত হয়। তথে বরি
ললে বাদ্য থাকে, তাহা হইলে "বরকলে" দেখিবার নিমিন্ত পান্ধীর ভিতর
দৃষ্টিপাত করে। যিনি পান্ধী চড়েন,
স্কতরাং তিনি হুর্ভাগ্য, কিন্তু প্রায়্বালক
বাণিকারাও অভি নিষ্ঠুর, অভি
বিদিয়।

তাহার পর আবার কতকদূর গিয়া দেখি-লাম পর্ণশ্রান্তা যুবতীরা মর্গের ভাটিতে বসিয়া মদাপান কুরিতেছে। গ্রাম-মধ্যে যে যুবভীদের দেখিরা আসিয়াছি, ইহারাও আকারে অলভারে অবিকল **নেইরূপ, বেন ভাহ:রাই আনিয়া বসি-**রাছে। যুবতীরা উভর আহুবারা ভূমি-স্পার্শ 🖣রিয়া ছই হত্তে শালপত্তের পাত্ত धतिया मण्डान कतिएउए, जात क्रेयर হাসাবদনে সঙ্গীদের দেখিতেছে। আফু-न्त्रभनं कतिया डेशरवर्णन कता (कान्य). তির জীলোকদিগের রীতি; নোধ হয় रयन मां अज्ञान निराय छ। अहे बीकि रम-थियाहि। वरनत मधा (यथादन (मथारन মদের ভাটি দেখিলাম; কিছু বালালার फाँडियानाम रयकाल भाषान (मना यात्र) পালামৌপরগণায় কোন ভাটিখানায় **खादा (मिनाम ना । आमि शरत खादाः** (पत्र चाहार वाविहास गक्तरे (प्रचिष्ठाम, কিছুই তাহারা **আ**মার নিকট গোপন कत्रिक ना, किन्दु कथन औरनाकरनत्र মাভাল ছুইতে দেখি'নাই, অগচ ভাহারা नानक् नटर । जाशास्त्र मात्र मात्र কতা নাই এ কৰাও বলিতে পারি না।

সেই মদ পুক্ৰেরঃ থাইরা সর্বকা ৰাভাল ভ্টয়া থাকে।

পুর্বে কয়েকবার কেবল খুনভীর कथारे विवाहि, हेव्हाशूर्वक विवाहि ध्यमन गरह। वाकालात शर्थ, ष!रहे, वृक्षारे अधिक रमभा यात्र, किन्छ नामारभी व्यक्त युवडोहे अधिक (प्रशा यात्र। 'কোলের মধোে বৃদ্ধা অভিঅল, ভাহায়া अधिक वयः इहेटल अ यून ही हे भारक, অশীতিপরায়ণা না হইলে ভাহারা লোল-চর্মা হয় না। অভিশয় পরিশ্রমী बनिया गृहकारी, क्वविकारी जकन कार्याहे कारात्रा करत, भूजरवना जीरनारकत नाात्र (कर्ण विभिन्ना मुख्यः नद्रामा करत्, क्यन क्रां । हाउँ दे व्या न्यालियालया श्करवता वश्रगदिलात्तव गारम भी छ वृक इरेबा यात्र, क्वीत्लादकता শ্রমহেত - श्वित्रयोगना शास्त्र ।

লোকে বলে পশুপক্ষীর মধ্যে পুরুষ-काडिरे बनिष्ठं ७ ऋन्त्र, मञ्चागरधा ७ (मरे जिन्न। किंद्ध (कामामत एम चिटन ভাছা বোৰ হব না, ভাছাদের জীঞাতি-বলিষ্ঠ। ও चा=5गा বিখিষ্টা। কিন্তু ভাহাদের বয়: প্রাপ্ত খ্ড डे डिट्टरङ, गार्य চল্ফে ম.ছি উড়িতেছে, মুখে হাসি জীবনীশক্তি मांहे, रगग मक (न द ह किनिया व्यानिशादक। व्यानात द्याप इस **८कान** कालित क्षेत्र धतिश्राह्यः वास्तिः **विष्याक्त कीवनीमाञ्चित्र एक्का क्रावा यात्र**, 'षाकिविरमदयस्य योदनीमांक म्हित्रप

ক্ষরথার হয়, জবে জবে বোপ পায়। মহুযোর মৃত্যু আছে, জাভিরও বোপ আছে।

এই প্রগণার পর্ব্ধতে স্থানে ভানে অহুরেরা বাস কবে, 'আমি ভালাদের দেখি নাই, ভাহারা কোলদের সহিত বা चाना (कान दनाय। जित्र महित वाम कर्त्र না। ও নিয়াভি, অন্যঞ্জীয় মহুবা দেখিলে ভাহারা পলায়; পর্বভের অভি নিভ্ত ভানে থাকে বলিয়া ভাহাদের অসুসন্ধান করা কঠিন। ভাহাদের সংখ্যা নিতান্ত অৱ হটরা পভিয়াছে। शूर्तकारल यथन व्यार्याता व्यवस्य जातज-বর্ষে অংসেন তখনু অস্থরগণ অতি 🦏 ল 😵 ভাহাদের সংখ্যা অসীম ছিল। অহ্-বেরা আসিয়া আর্থাগণের গোরু কাড়িয়া লইয়া যাইভ, স্বুত খাইয়া পলাইভ, আ-र्याद्रा निकालाम इत्या (कवल हेक्सरक ভ।কিতেন, কখন কখন দলবল জুটিয়া লাঠালাঠিও করিতেন। শেষে বছকাল পরে যখন আর্য্যাণ উন্নত ও শক্তিদম্পার হইলেনুভখন অসুর্গণকে ভাড়াইয়াছি-লেন। পরামিত অম্রগণ ভাল ভাল তান आर्थात्मत्र को एता मित्रा आशनाता कुर्शम পাহাড় পর্বতে গিয়া বাদস্বাপন কংলে। অদাৰ্থি সেই পাহাড় পৰ্বতে ভাহার৷ कार्ड, किन्दु चाव छाइ। एन वनवीमा नाहे, আর সে অসমীম সংখ্যাও তাহাদের নাই। একণে যেরপ কাবতা তাহাতে অসুর্কুল श्वर्भ इडेब्राट्ड बनिस्म अनाव इब ना ; ८र मण नीत कर ज्यादन द्वारात

ৰাস করে, আৰু কিছু দিনের পর তাহা-রাও থাকিবে না।

काजिलाश मत्या मत्या रहेशा थात्क. অবেক আমিৰ ভাতির লোপ হইরাগিরাছে অল্যাপি ছইডেছে। ছাতিলোপের হেড় मर्ननिविष्रभाष्यत्र माधा (कह कह वासना, যে পরাজিভ ভাতিরা বিলয়ীকর্ত্তক বিতা-ডিত হুট্য়া অভি অধোগ্য স্থানে গিয়া বাস করিলে, পর্বাহানে বেসকল স্থাবিধা ছিল ভাছার ভভাবে ক্রমে ভাহারা ভবনত ও অবসর হইরা পড়ে। এ কণা অনেক স্থল সভা সন্দেহ নাই, অত্রগণের পকে ভাতাই খাটিয়াছিল বোধ হয়। কিন্তু मां क्रिंगिताल এक ममर्ते व्याधाशनक दंक বিভাতিত হইয়া দামিনীকোতে পলায়ন করিয়াছিল। সেই অবধি অনেক কাল তৃণায় বাস করে. অদ্যাপিও তৃণায় খাব সাঁওভালেরা বাস করিভেছে,পূর্মাপেকা ভাহাদের যে কুলকয় হইয়ছে এমভ ভনা যার না।

ষারকিন ও অন্যান্য দেশে বৈথানে সাহেবেরা গিরা রাজাত্বাপন করিরাছেন, সেথানকার আদিমবাসীরা ক্রমে ক্রমে লোপ পাইতেছে, তাহার কারণ কিছুই অফুভব হর না। বেড ইপ্তিরান,নাটক ইপ্রিয়ান, নিউ জিলাগুর, নিউ হলাপার, ভাত্মাননির প্রাস্তৃতি কত জাতি লোপ পাইতেছে। মৌরিনামক আদিম জাতি ইনিষ্ঠ, বৃদ্ধিমান্, কর্ম্মঠ, বলিয়া পরিচিত, ভাহারাপ্ত সাহেবদের জ্ঞাধিকারে ক্রমে

লোপ পাইভেছে। ১৮৪৮ সালে ভাষা-(मत्र मःशा धकनक हिन, विषय भत পরে ৩৮ হাজার হইরা গিরাছিল, একণে त्म काणित करहा कि छाहां कानि ना। বোধ হয় এডদিনে লোপ পাইয়া থাকিবে: অথবা যদি এতদিন থাকে, ভবে অভি সামান্য অবস্থায় আছে। মৌরি চর্ক্ল नट्ट. ७९मस्टक अक्कन मार्ट्स विधिया-(E7 " He is the noblest of savages, not equalled by the best of the Red Indians." তথাপি একাডি লোপ পায় কেন ? ভূমি বলিবে সাছেব-(मंत्र चाडाहिरत ? डाहा कपाठ नरह. কানেভার অধিবাদীসময়ে সাহেবেরা क उरे ग्रंब कतिशाहित्तन, कि हु एउ है ভাহাদের কুর্ণকর রক্ষা করিছে পারেন नाहे। जाकात शिकि निधियाह्मन (य. "In Canada for the last fifty years the Indians have been treated with paternal kindness but the wasting never stops \* \* \* \* The Governmenthas built them houses, furnished them with ploughs, sup-. plied them constantly with rifles. anumunition, and clothes, paid their medical attendants but the result is merely this that their extinction goes on more slowly than it otherwise would." मबारकाशदर्शकी कान जान काश कविदी. বিশরীত স্থানে ত এই জাতিকের আ

ইতে হর নাই, তবে তাহাদের কুল-বোপ হইল কেন ?

কেছ কেছ বলেন যে, সাহেবলৈর সংস্পর্কে দোব আছে। প্রধান জাতির সংস্পর্কে জাসিলে সামান্য জাতিরা অবসর কর্তকটা উদান্তল ও অবসর হুট্যা পড়ে। একথার প্রত্যুত্তরে এক-জন সাহেব লিখিরাছেন যে, ভারতবর্ষে কতই সামান্য জাতি বাস করে, কিছু খেতকার জাতির সংস্পর্কে ভাষাদের ভ কুলর্ছির ব্যাঘাত হয় না।

শামরা একথা সম্বন্ধে এইমাত্র বলিতে
পারি যে, ভারতবর্ষের আদিম জাতিদের
কুলক্ষর অনেক দিন আরম্ভ হইরাছে
কিন্তু ইংরেজদের সমাগ্যের পর কোন
ভাতির ক্ষর ধরিয়াছে এমতনিশ্চয় বলিতে
পারি না। তবে কোলদের সম্বন্ধে কিছু
সন্দেহ করা বাইতে পারে, তাহার
কারণ আর একসময় সমালোচনা করা
বাইবে। একণে এ সকল কথা বাউক.

অনেকের নিকট ইছা শিৰের গীড বোধ হইৰে, কিন্তু অ বয়সে যথন যাহা মনে হয় তথমই ভাহা বলিজে ইচ্ছা যায়; লৈকেয় ভাল লাগিৰে না এ কথা মনে তথন থাকে না। খাছাই ছটক আগামী বারে সভর্ক হইব। কিছ ষে কথার আলোচনা আরম্ভ গিথাছিল ভাহা শেষ হয় নাই। ইচ্ছা हिन এই উপলক্ষে বাঙ্গালির কথা किছ বলি। কিন্তু চারিলিকে বাঙ্গালির উন্নতি লইয়া বাহ্বা পড়িয়া গিয়াছে, বাঞালি ইংরেজি শিখিতেছে, উপাধি পাইতেছে, বিশাত যাইভেছে, বাঙ্গালি সভাতার সোপানে উঠিডেছে, বাঙ্গালির স্থার ভাবনা কি? এ সকল ড বাহ্যিক ব্যাপার। বঙ্গসমাক্তের অভাস্তরিক ব্যা-পার কি একবার অনুসন্ধান করিলে ভাল হয় না ? শুনিতেছি গণনায় বলবাসীদের সংখ্যা বাড়িতেছে। বড়ই ভাল ।

था, ना, व।



93.

भेक्षियम खाट्य একজন ভৈ ন্ধবী এক বিস্তীৰ্ণ প্ৰাস্তৱ দিয়া বাইতে-हिल, প্রান্তরের অধানে সেগানে কেবল भत्रध्यः, दकान द्यानेहे कविंड नरह, সর্প্রতি বালুকামর, স্তরাং भाग. अथह (कह (म भाग मित्रा याजा-ছাত, করে না, প্রাস্তরের বেখানে मांड़ाडेबा रमच, ठाविनिटक अब शब्दा व পরিধা, অধাচ বম নিবিড় নছে, শরওচ্ছ मृत्त मृत्त वियुक्तकारव .. त्रश्तिरार्छ, किव দেখিতে সংযুক্ত বোধ হয়। স্থানই পরিষ্ঠার এবং পরিসর। বেদিকে यङमृत या ७,८मरे भिरकरे शृर्वभण भव छा আর বংলুকামর ভূমি, তাহা অতিক্রম क्रिति व्यावात (महेक्रम भत्र छह अवः ৰালুকামর ভূমি। চতুর্দিক দেখিরা ব্রা যারনা যে আমি পথ অতিক্রম করি-তেছি। বাহা ছাড়াইলাম আবার অবিকল ভাহাই সমুধে।

লোকে বলে তথার দহাতর আছে, ভৌতিক (कहरता TICE I ' এক বার ঘনশ্ৰতি €₹, 44. পীড়িতবাক্তি যুবতী ভাৰ্যা সমভিব্যাহারে এই প্রান্তর কিয়া বা-যাইতে পিপাসাণীজিত হুইয়া জলাহরবের নিষ্টি পাঠাইরা বাপনি **७** स्थारम ৰসিয়া থাকে,

অপরাহ্ পর্যান্ত লী প্রভ্যান TO W করিল না দেখিরা পীড়িত্ত-বর্ত্তন वास्टि कत्रिम যে আসি **গিদ্বাস্ত** বলিয়া বিখাদখাতিনী আমার পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছে 🔉 এব আর স্তীর স্পণেকা না করিয়া আঁপনি একা গ্রান্তর, অভিক্র করিছে পর্দিবস প্রাতে আকাশ इरेट मक्नी, श्विनी প्रकृति त्रव्यूक् পক্ষীরা বায়ুবেগে প্রাস্তরের ছুইস্থানে নামিতে লাগিল। একস্বানে ক্লগ্ন স্থা-মীর মৃতদেহ আর একস্বানে যুবতীর শ্ব পড়িরাছিল। উভরেই কিন্নপে মরিয়াছিন বা কে ভাহাদের মারিয়াছিল, ভাছা কিছুই প্রকাশ নাই স্থভরাং ভৌতিক ভবের ক'ণা রাষ্ট্র হয়; সেই অবধি প্রায়ে-(वन नाम "यूर्गनमावि" श्रेवालिन ।

এই ভয়ানক প্রান্তরে কেছ বে একা বাইতে সাধ্য করে না ভাষা ভৈরবী জানিতেন। প্রান্তে প্রবেশ করিলে স্ক্যার পূর্ব্বে প্রান্তর যে অতিক্রম করা বার না, ইহাও চিনি বিলক্ষণ জানিতেন; অথচ কোন বিপদ আশহা না করিয়া সেই ভয়ানক প্রান্তর দিয়া বাইতেছিলেন।

অনেককর পরে তৈরবী ওটিকত অথখরুকের নিকট উপ্রিত হইকেন; বুক্তলে এক ভয়ন্তির, ভারের সৃত্তে এক প্রাতন প্ররিনী। প্রাপ্তবমধ্যে
এই বৃক্ষ ও মন্দির অথচ প্রাপ্তর হইতে তাহা কিছুই দেখা যায় না। যেথা
নেই দাঁড়াইরা দেখ শরগুচ্ছসমূহ পরিধা
স্করপ দৃষ্টি অবরোধ করে।

মন্দিরের পশ্চাতে ইটুকনির্মিত কতক গুলি প্রান্তন ক্টীর আছে, পূর্ব্বে তাহা আঁতিণিব নিমিন্ত প্রস্তুত হটরাছিল; অক্ষণে তথার এই ভৈরবী অন্য তুইজন অমাথা বিধবার সহিত্য একতা বাস করেন। বিধবাদের সুহীর ন্যার বেশ-ভূষা, সুহীর ন্যার আহার বাবহার। যে সময়েব কথা বলা হুইতেছে এই সময় তাঁহারা উভরে বসিয়া গল্প করিতে-ছিলেন।

প্রথমা। আমার অনেকদিন অব্ধি ইচ্ছা কাশীতে গিয়া বাস করি।

ু ছিতীয়া। তবে ষাওয়া হয় নাই কেন্

প্রথমা। যাহা ইচ্ছা করা যায়, ভালাই কি-হায় প্

্বিতীয়া। 'অমিৃাব শুনা আছে যে, ভাষা নিশ্চয়ই হয়,—অৰ্থাৎ যদি একাস্ত মনন্ধ†কে।

• প্রথমা। তবে ভাহা সকলের ক্পালে হয় না কেন ? ভাল, তোমার আপনার মানস সিদ্ধ হয় না কেন ?

দিতীয়া। আমার কোন্ সাধ আছে ? •

व्यथमा। त्य कि कथा। याथ ना कि भावात गाल्कत थाकि ना १ দিতীযা। আমাব এখন সাধ মরণের। তাহাও আন্তরিক নহে, এখনও বাঁচিতে সাধ আছে।

প্রথমা। আমাদের মত লোকের বাঁচ্তে সাধ কেন ? এই তুমিই বলেই বলি, তোমার বাঁচা কেন, তুমি রাজার ভগিনী,এখন পথের ভিগারিণী; তোমার আবার বাঁচা কি স্বঞ্ ?

দিতীয়া। দিদি ! আপনি জুলে গে-ছেন, আনার পরিচয়সম্বন্ধে কণা মুখে আনিতে আপনাকে ভৈরবী বিশেষ নিষেধ করিয়া গিয়াছেন।

প্রথম:। আমি আবে কাছার কাছে পরিচয় দিতে গিয়াছি, ভোমার কথা ভোমারই কাছে বলিতেছি।

এই সময় ভৈববী আসিয়া দাবে দিডোইলেন। যাহারা কথাবার্ত্তা কহিতে-ছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে দিতীয়া সসম্ভ্রমে উঠিয়া ভৈরবীর হস্ত হইতে ত্রিশূল ও কমগুলু লইলেন; অপরা মৃগচর্ম্ম বিছাইয়া দিলেন। বসিবার সময় ভৈরবী হাসিয়া বলিলেন, এ আমাদের বেশ আস্ন, গৃত কলা এক ভারগায় অন্যায় বাঘছাল বসিতে দিয়াছিল, অম্মনায় বাঘছাল বসিতে দিয়াছিল।

প্রথমা। কেন? আপনার হাতে ড অিশুল ছিল ? ঁ .

ভৈরবী নিঃশব্দে হাসিয়া বলিলেন, ব্ৰেছি, আমি ব্ৰিতে পারিয়াছি, অভি স্থলর রহস্য করিয়াছ। বাঙ্গা- লির মেয়ে নাঁহলে এ মিই কণা • প্রথমাণু আমি থাকিছে আপনি সে भात (कर्हे विनएक शारत ना।

প্রথমা। কেন ? আপনাদের হিন্দু-श्रात्म कि धक्रेश तक्ष्मा (कर् कर्त न। ?

छित्रवी। आभि छ हिन्तृ हानी नहि, আমার জন্ম হিমালয় পর্বতে।

প্রথমা। তবে আপনি পাহাছে সেম্ব

ভৈরবী। (ঈষং বিবক্ত হইয়া) পর্বাছে জন্ম বলিয়াকেহ কেহ আমায় পার্কতী वालम ।

প্রথম। (কাপার লোকে ভপদাাব निश्चित हिनालस्य यात्र । आश्नी हिनालत्र হইতে বাঙ্গালায় ভপ্যা করিতে আসি-রাছেন।

रैछत्रवी किथिश अश्र छिछ इडेलन দেপিয়া, অপরা বিধনা সঙ্গেচিতভাবে বলিলেন, বাঙ্গালিকে পবিত্র করিবার নিমিত্ত আরে একবাব হিমালয় হইওত আরে একজন স্ত্রীলোক আসিয়াভিবেন।

अभा। (क ?

দ্বিতীয়া। ভাগীরণী গঙ্গী।

टिख्रती। ध कश्राष्ठ मूल नरहः धरकहे उत्भाषात्मान वरन १

দেৰতার সহিত মহুষোর তুলনা।

विजीता । आभि यादे शास्त्र के जिलाश করিয়া দিই -

रेखन्ती। भाक, बाख स्टेट्ड स्टेट्ट कुत्र क्लान भूक ता ? ना, आमि अपिनिश উत्ताम . कतिया गहेव।

কট্ট কেন পাইবেন ? একণে কাৰ্যাসিদ্ধি কভদূর করিয়া আশিয়াছেল আপনি পরিচয় দিন, আমি গিয়া পাকের উদ্যোগ করি।

এই বলিয়া ডিলি উঠিয়া গেলে ভৈর্বী অপেরা বিধ্বার সহিত কহিতে কাগিলেন।

ভৈরবী। আমি শান্তিশতগ্রামে গিয়ানী ছিলাম। রাজা ভালে আছেন, রাজ-কুমাৰ ভাল আছেন, দেওবান্ও রাজ-धानीएक वानियारक्त ।

थाशमा। . बांबवानी त्यमन चार्टन ? ় ভৈরবী। ভানই আছেন, ডবে রা-জার স্থিত তাঁহার মনাক্তর বোধ হয়। আমি প্রাথমে মনে করিয়াছিলান তোমারই নিমিত্ত মনান্তর হইয়াছে, পবে দেখিলাম ভাগা নহে।

टेडवरी गांहाव मत्य कथा कहिएड-ছিলেন ভিনি আনাদের পূর্বপরিচিতা ভোগের বেডী।

জোৎসাবতী। তবে কাহার নিমিত্র মনাস্থর ?

• • টেরবী (হাসিয়া) সপন্তীর°নিমিউ। প্রথমা। এ খোষামোদ ভাল নহে। রাণী মনে করিয়াছেন, তাঁছার একটি সপদ্ধী আছে, এতদিন ভাষা জানি-তেন না।

(क्यारवावडी। धरे या!

देश्वरी। एक এकति जाञ्चनकना। भी চেন লোকে ভাকে মাধবীশভারুমা বুলে।

লেংকাৰভী ৷ পোড়াকপাল ৷ বাল-" ছতিয়া ভবে খেলেছেন। उ विश्व क न । ৰড় সাধ্বী, বড ভাল মানুষ। মাধ্বীলতা তাহার কন্যা নছে, রাণীর কন্যা ! • ভৈরবী। সেই ভ কাল হয়েছে। রাণীর বিশ্বাস যে রাজার কলম্ব ঢাকিবার নিসিত্ত ভূমিই যমকস্তানের গল রটনা ুক্রিয়াছ। "অভএব কেমন করিয়া তিনি সেই সপত্নীসস্তানকে মারিবেন এই এখন ভাঁচার চেটা ।

জোৎসাবতী। স্কানাশ!

टिख्यती। इटे अकलिएनत्र माधा अहे कार्या ममाथा इटेर्ट, मकल श्रञ्ज ।

ভোৎস্বাবতী। তবে এখন উপার ? टेक्टरवी। श्रहारम्य कारम्य।

জোৎকাৰতী। আমার যে মন বুরে না। আমি একবার বাই।

टेखबरी। याकेरक नावन कर्किना, **কিছ্ব ভূমি বাটী পৌছিবাব পুনে**বই क कार्या मण्या इत्रेश गारेत ।

জ্ঞোৎসাব্তী। আপনি কোন্ উ-शास क मेकन चानितान १

रिज्यती। बाक्कजीनी भएव भएव (बज़ाहेटल्ट्डन (य উপারে জানিয়া। <sup>\*</sup>গাঁহাকে আমিতে গিয়াছিলাম দেই<del>-</del> উপায়ে এ সকল कानियाहि।

জ্যোৎস্বাৰভী। আপনি কি ভবে আমায় আনিতে গিয়াছিলেন ? আমি गान कतियाकिलांग (य क्ठांर काशनाव महिङ ज्यामात माकार करताय कामिन भागाम अत्रा कतित्राहित्या।

ভৈরণী। আমি এইখানে পঁচিশ্বৎ-সর পড়িয়া আছি, কখন বাহির হট না, আমি কেমন করিয়া জানিব যে. রাজভগিনী কোথা পথে পথে বেডাই-ভেছেন।

ক্ষোংসাবজী। তবে কে আপনাকে পাঠাইয়াছিলেন ?

रेक्ट दवी। जाभात व्हेट पत्र।

জ্যোৎ। আপনার ইষ্টদেব কোন-রূপে মাধ্বীলভাকে রক্ষা করিছে পা-(वन ना १

ভৈরবী। বোধ হয় পারেন না। তিনি ত সকলই জানেন, রক্ষার উপায় থাকিলে আমায় বলিতেন। আমিও তাঁর কাছে এ কথা উত্থাপন করিয়াছিলাম তিনি আমার কথায় বড় চঞ্চল হইয়া विलिस्त, "मर्थी चापनाव मञ्चान शायु, কে সে সম্ভানকে রক্ষ্য করে ? প্রাকৃতিব 🕶 ব্যুম এই। প্রকৃতি নিজে কি 🤊 নিজেন ছিল্লমস্তা।" আমি আর কিছুব্লিতে পারিলাম না।

জ্যোৎ। আপনার ইট্রদেব কে. १.

ু ভৈববী। কি বলিয়া তাঁহার পরিচয়-দ্বি ? বাজপুৰীতে ভোমাৰ বাস, তুমি काजारक (मिश्राष्ट्र यः हिनिद्द ? जागात डे**डे**रहर नामकाहा नट्टन, ८४ করিলে কৃষিবে ? পাগলাপ্রভু বলিলে: চিনিতে পার ?

জ্যোৎসাবতী। বুঝি পারি।

৩২

্ষেই রাজে জ্যোৎসাবতী বড় অস্থির

হইলেন ; মাধ্বীলভার নিমিত্ত মন কাভর হইয়াছিল কি বাণী এই মহাপাপ ক্রিবেন বলিয়া তিনি অধিক বাস্ত হইয়া-हिल्लन टेहा निक्तय बला यात्र ना ; छे छत्र করণেই তাঁহার অন্তর চঞ্চল হৈইয়াছিল। কিছ তিনি অনেকবার মনে মনে আলোচনা ুকরিলেন যে, রাজা থাকিতে বা দেওয়ান্ ্থাকিতে রাণী কখনই ক্রকার্যা হইতে পারিবেন না। বিশেষতঃ রাণী স্ত্রীলোক, শিশুর প্রতি তাঁহার দরা কোথা যাইবে। অতএব মাধ্বীলতাব কোন नारे। এই कथाय मनदक ज्ञासकतात वुवाहेलन, मनुडी अत्मक्वरत वृक्षिन ष्यथं हिन्दुहां क्षेत्र देशन ना : वतः क्रा त्रिक्त भावेरल नागिन, यन जात अकरे। কি ৰিপদ আছে, মন দেই অস্পষ্ট **ख्रांत्र मिरक चाक्छे इटेट्ड** एगन কাঁদিয়া উঠিতেছে; শেষ যুগন তাঁহার চিত্ত ক্ষেত্ত্দন হইয়া উঠিল তথ্য ভৈরবীর নিদ্রাভঙ্গ না করিয়া থাকিতে পারিলেন না। ভৈরবী প্রথমে নানা व्यत्वाववाकावादा डाँहातक मास्रमा कति-বার চেষ্টা পাইলেন, তাছার পর দীর্ফ নিখাসভাগি করিয়া বলিলেন, ''ফ্যোংক্ষা-বৃত্তি! তোমার কি বুঝাইব, আমি নিজে অব্ঝ হইয়াছি, সামি এইমাজ वड़ क्यक्ष (मियाहि।" ,

ক্যোং। কি স্বপ্ন দেখিয়াছেন ?
ভৈরবী। তাহা স্পার এখন ুব-লিব না; আমি কলা প্রাতেই একবার শুকুদর্শনে নাইব। জ্যোৎ। জ্ঞামি তবে আপনার সঙ্গে যাব, একবার শাস্তিশতগ্রামে গিয়া দাদার পায়ে ধরিয়া কাঁদিতে পারিলেই জ্ঞামার অনেক মন্ত্রণা যাবে।

ভৈরবী। জুমি কিরুপে এক। যা ইবেণ আমি ত দেপথে বাইব না।

জ্যোৎ। আপেনি কোথা যাবেন গু যতদ্র পারি আপেনার সজে যাইব,, ভাহার পর যাহা হয় করিব।

এইরপে কথাবার্ত্তার র।তি প্রভাত হইলে,উভরে যাত্রা করিলেন স্থা্য উঠিরাছে,
অত্রে অপ্রে ভৈরবী চলিভেছেন, যুগলমারীর পরিষ্কার বালুকাক্ষেত্রে তাঁহার পদচিক্ অস্কিত হইতেছে,তংপশ্চাতে স্বোধবাবতী যাইতেছেন, তাঁহার পদভাব বালুকা অনুভব করিতেছেনা। জ্যোৎস্থাবতীব
পদন্য শরপত্রেব হিমকণার নাায় জলিভেছেন জ্যোৎস্থাবতী আগনার সেইনগভাতি দেখিতে দেখিতে পণ চলিতেভিলেন, কতকদ্র আসিয়া ভৈরবীকে
ভিজ্ঞাসা করিলেন, ''ুআপুনি রাত্রে কি
ক্রম্ম দেখিয়াভিলেন।''

ভারেণী কতকদ্র অন্যমনক্ষে গিয়া বলিলেন, ''আমার গুরু ভিন্ন এ জগতে আর কেহু নাই ।''

জোহ। বেংধৃ হয় গুরুসমক্ষে কোন কুম্পপ্ল দেখিয়াছেন ?

ভৈরবী দীর্ঘনিখাসভাগে করিলেন, আর কোন উভর দিলেন না। জ্যোৎ সাবতী কোন কথা উল্লেখ না করিয়া। ভৈরবীর সঙ্গে সঙ্গে চলিলেন। ভিরবী কতকদূর গিয়া জিজাসা করিলেন, "তুমি আমার শুরুদেবকে দেখেছ? তিনি বছকালাবধি শুপ্তিশতগ্রামেই আডেন।"

জোৎ। রাজবাটীতে যাঁহারা আই-সেন, তাঁহাদের কপন্কধন অন্তঃপুর-বাসীনীবা দেশিতে পায়।

তৈরবী। সামার গুরুদেব কখন রাজবাটীতে গিয়াছেন বলিয়া বোধ হয় না।

(मा९। (कन.?

ভৈরবী। তাঁব বুঝি কি এত মাছে, সেই জনা তিনি কখন কোন গৃহপ্রবেশ করেন না।

জোং। তাঁহার নাম কি পাগলা আছে?

হৈ রবী। তাঁহাব নাম জানিনা, জানিলেও আমি জীলোক তাহা মুণে আনিতে পারিতামনা, কিন্তু হিন্দুখানীবা কেহু তাঁহাকে পাগলাপ্রভূবলে, কেহ পাগলাবাহাত্র বলে।

ক্ষোং। বাঙ্গালিরা তাথকে কি বলিয়া ডাকে? তাথারাও কি পাগুলা প্রাভূবলে?

ভৈরবী। বালালিরা তাঁহাকে পিতম পাগলা বলে। কিন্তু তাঁহার আগল নাম আহার কি হইবে।

জ্যোৎ। তবে তিনিই কি আমার আশ্রে দিবার নিমিত্ত আপনাকে পাঠ।ই-য়াছিলেন।

• ভৈরবী। তিনিই পাঠাইয়াছিলেন।

জ্যোৎসাবতী আর কোন কথা জিজ্ঞানা করিলেন না। নিঃশব্দে পথ
অভিবাহিত করিতে লাগিলেন। ভৈরবী
মধ্যে মধ্যে ছুই একটি কথা কহিতে
লাগিলেন, জ্যোৎসাবতী ভাহা শুনিতে
পাইলেন না। অনামনঙ্কে পথ চলিতে
ছিলেন,বুগলমারীর মাঠ অভিক্রম কবিয়া
জিজ্ঞাস। করিলেন, '' আপনি কোথায়
বাবেন গ্'

ভৈর্ণী। আসি ভ বলিয়াছি ৩রে-দর্শনে।

জোৎ। আপনি তবে শান্তিশত-গ্রানে যাবেন। তিনি ত শান্তিশত-গ্রামেই থাকেন।

ভৈরবী। এক্ষণে বৃঝি আর সেখানে থাকেন না।

(জार। ভবে কোথায় পাকেন ?

ভৈববী। ঠিক্ জানি না, ছুইদিন হটল এট অঞ্চলে একস্থানে তাঁহার দর্শন পাটয়াছিলাম, এক্ষণে পথে পথে তাঁহার সন্ধান করিব, কোপায় তাঁহার দর্শন পাইব কিছুই বলিতে পারি না.।

এই সময় সম্মুপে অশ্বথনেষ্টিত এক দীর্থিকা দ্বেখিয়। উভয়ে তথায় গিয়া বিশ্রাম করিবার নিমিন্ত বসিলেন। তৈ-রবী নিশ্বসেত্যাগ করিয়া বলিলেন, স্থানটী অভি পবিত্ত।

জ্যোৎ। শীতলও কম নহে। তাই নদেশের পাধী এই অশ্বথরক্ষে এগেছে। এরাত গ্রীম বৃক্তিত পারে ? ভৈরবী। কিন্তু পর্বের ভাবনাও ভাবে না, ছঃখগ্নও দেখে না।

জ্যোৎ। স্থাসহকে আবার আমার জিজাসা করিতে ইচ্ছা হইতেছে। প্রকাশ করিলে ছংবপ্ল ফলে না, এইজনা লোকে ছংবপ্ল গোপন করে না, বিশেষতং সাতিলাগোত্তের নিকট বলিলে কুম্বপ্ল একেবারে নিক্ষণ হইরা যায়। আমি সাতিলাগোত্তা।

ভৈরবী। তবে একবার কাণে স্থান দেও। কাল স্থপ্নে দেখেছি যে, জানি যেন আবার সেই হিমালরে আছি, আবার যেন আমার বালিকাকাল উপস্থিত। আবার যেন সেই দেবমূর্তি আমার পিতার ছারে পড়ে অজ্ঞান অভি-ভৃতঃ—

জ্যোৎ। কোন্ দেবমূর্তির কথা ৰলিতেচেন ?

ভৈরবী। আমার গুরুদেবের কথা বলিভেছি। বছকাল হুইল, গুরুদেব একদিন মরণাপল হয়ে আমার পিতার বাবে পড়েছিলেন, তথন আমার বরস দশবৎসর; আমি জানি না যে তাঁহার কি পীড়া, কিন্তু পীড়া তাহা বুঝিরাছিলাম। সেই একদিন গেছে। কলা স্বপ্নে দেখিলাম, বেন জিনি আবার পিতার বাবে পড়িরা আছেম এবার চক্ষু চাহিরা আমার বলিতেছেন, "পার্বভি! আর উল্পান্ধ নাই, মন্তেউষধে আর আমি বালিচিব না; একবার আমার বাঁচাইরাল

ছিলে, এবার আর পারিবেনা। এই দেখ আমার সর্বাঙ্গ পুড়ে প্রেচ।'' 'আমি বেন দেখিলাম, তাহার পারে স্থানে স্থানে' ঢাল উঠিয়া গিয়াছে।

জোৎসাৰতী কাঠপুতুলিকার ন্যায় মী-तक इटेग्रा तहित्तन। এই সমন্ত पूरे-জন পথশ্ৰান্ত ব্ৰশ্নচারী তথার উপ-ষ্ঠিত হইলেন। জ্যোৎসাবতী, বৃক্ষ অন্তরালে গিয়া বসিলেন; বৃদ্ধব্রক্ষচারী প্রথমে ভৈরবীকে সম্ভাষণ করিয়া কথা আরম্ভ করিলেন, ভৈরবী ভাহার 'সহিত কথাবার্ত্তার পরমাপ্যারিত হইরা শেষ বেদান্তের বিচার উপস্থিত করি-লেন: জীলোকের অসাধারণ বিচারশক্তি-দেখিয়া বৃদ্ধ একেবারে চরিভার্থ इहेलन, अद्भवद्यम इहेल इस छ स्माहिड হইভেন। বাঙ্গালার ভারতচন্দ্র মালা-করের বিদ্যা কইরা প্রেম গড়িতে গিয়া-किल्ना । ध अवशास (वनास्त्रत्र विमास य किছू इस ना अक्र कान् हिन्ही वित्र ।

যথন ভৈর্থীর সহিত বৃদ্ধবৃদ্ধারী
শুল্লোলাপে অন্যমনক ছিলেন, তথন
অপর ব্রদ্ধারী—বয়স অন্ন, একটু
চঞ্চল—জ্যোৎস্থাবতীর প্রতি কটাক্ষ করিতেছিল। হঠাৎ ভৈর্থী ভাষা দেখিতে পাইলেন, একটু বিরক্ত ইইলেন, কিন্তু কিছু না বলিয়া আবার ব্রদ্ধারীর সংস্থ আলাপ করিতে লাগিলেন। কিন্নৎক্ষণ পরে দেখিলেন, যুবা তথনও ঈশিত-লোচনে জ্যোৎস্থাবতীর দিকে চাহিনী আছেন, ভৈষণীর দৃষ্টি অফুদরণ করিয়া বৃদ্ধ ব্ৰহ্মচারী যুবার এই আশ্রমবিগর্হিত কার্যা দেখিয়া তাঁছাকে আপনার নিকটে नमारेका दिनाटस्ट अन्याचा कतिएक লাগিলেন। যুবা ভারাতে কর্ণভেও করি-লেন না, আবার মুগ ফিবাইয়া এক এক-বার জ্যোৎস্নাবভীর প্রতি চাহিতে শাগি-লেন। একবার ধুবার প্রতি জ্যোৎসা-বভীর দৃষ্টি পড়িল, যুবা হঠাৎ প্রাকুল-वम्या हक्ष्म इहेशा छेठिन, ब्ल्यार्यावडी অনিমিক্লোচনে যুবার প্রতি চাহিয়া বহি-লেন। ভৈরবীর ভাষা অসহা হইল, বৃদ্ধ ত্রক্ষতারী শ্রসিতে লাগিলেন। ভৈরবীর আরও অসহা হটল, তিনি তিরস্বার আরম্ভ করেন এমত সময় যুবা বিতাৎ-বেগে জ্যোৎস্বাবভীর পার্ছে গিয়া উপ-স্থিত হটল। ভাহার পর তাহার পাদ-স্লে মুখ লুকাইয়া কাঁদিয়া উঠিল। জ্যোৎস্বাবতী সম্বেহলোচনে তাহার মুণ मुहाँदेवा वनिरमन, ''आमात माडकिनी ?'' ্ ভৈর্মবী বিশ্বয়াপরলোচনে একবার জ্যেৎসাৰভীর প্রতি, একবার বৃদ্ধ ব্রহ্ম-চারীর প্রতি চাহিতে লাগিলেন। বৃদ্ধ, বিশারাপর হইরাছিলেন'; মাতজিনী বাঁহার পাত্মসূলে গিয়া পড়িল তিনি রাজভগিনী (জ্যাৎসাবতী, ইহা বৃদ্ধ ব্রহ্মচারী প্রথমে অমুভব করেন नाई।

্ৰোৎ। মাতৃদিনি ! তোমার এবেশ কেন্

मी 🚁। जी दर्भ भथ हला तक विभन।

জ্যোৎ। কোথা গিরাটিলৈ ?

মাত। একটা মকোদ্দমা করিতে গিয়াছিলাম।

্রেছাৎ। ভোষার আবার কি মকো-দ্বমা।

गाउ। हिन এक है।।

জোৎ। আমার বলিরা যাও নাই কেন।

মাত। বলিলে হয় ত আপনি আমায় ছাডিয়া দিতেন না।

(कार्। मरकाक्षमांत्र कि इंडेल ?

মাত। কিছু হলো না। অদৃষ্ট ভিন্ন সকলেই আমার স্থাপক্ষ ছিল, এখনঞ আশা বার নাই। একজন প্রতিবাদী ফেবার হইয়াছেন তাঁহাকে ধরিতে যাই-কেচি।

ক্ষোংং। তবে কি এপন**ও ভোমার** পাবনাং

মাত। দিন কতকেব জনা পাবেন না।
জোৎ। তোমার আসামী কোথা ?
মাত। তাত জানি না, পথে পথে
খুঁজিব। তাঁহার দেখা না পাই আর
আপনার সঙ্গে দেখা হবে না।

ब्बार। " कार्था यादव ?

মাত। বেখানে সকলে যার। মকো-দ্দমা হারিলে আরে আমি বাঁচিব না। কি সুখে বাঁচিব ?

জ্যোৎ। কে জানে বাছা, এতদিনের পর তোমার এমন কি মকোদমা পড়িল বে তৃমি তাহার নিমিত্ত প্রাণ বাহির করিবে। কই এত দিন ত তোমার মকোদমার কথা কিছুই শুনি নাই। ্ব। ভাৰিয়াক কৰি নাই। আৰ্থ আলান বাড়ি চলুন আলানাকে আৰু লাখিয়া আনি বাবে লাখে বেড়াই।

জোং। আমার, বাছি কোনী।
আমি কোণা বাব । অমিও এখন পাথে
পারে বেড়াইর। আর আমার ভর্মাই কোন নাই। তৃমিও সদী পাইরাছ, আমিও সদী পাইরাছ। কিন্ত আমার সদী এখন আপমার নিজের কর্মে বাই-ভেছেন, আমার ইজা যে দিন কভক ভোমাদের সংক্ষ থাকি।

মাত। তবে ভাহাই ভাগ।

এই সময় ভৈরবীর সহিত ব্রশ্বচারী
মৃত্যুরে ভোগেলাবতীর কণা কহিতেছিলেন। মাভঙ্গিনী তাহাদের কি বলিলেন, ভাহার পর চারিজনে একঅ
শ্রামাভিমুধে চলিলেন।

বে সমন্ব ব্ৰহ্মচারী, জ্যোৎসাৰতী শ্রভৃতি প্রাসমধ্যে প্রবেশ করিলেন, সেই সময় অপর পথ দিয়া একজন সর্যাসী সেই প্র:মে প্রবেশ বিশেষ মনোবোগ করিয়া ভাঁছাকে ছল্বেশী বলিয়া বোধ হয়: একজন, ভজের সহিত কহিতে मंग्रीभवली इहेटलन। তথার পিক্তম পাগলা মন্দিরপ্রস্তারে অন্ধিত একটি প্লোক পাঠ করিছে চেষ্টা পাইতেছিল। পিতম धक्यात केंद्रारम्य व्यक्ति करे।क कतिल: ्रभदंत महाभी निक्रवर्की हरेला, भिळव मून भारते ना कितिया विशेष, ''स्नाफिने' ভাষা, मद्यामी कर्द अवि ।" महाभी करें है केल स्केशरे छरकेगर जायगान इटेरनन, शामिमूटच कि बनिदयन खेनाक्य क्रिएडिएम्स, अपेड समय निस्त्र ्वनि বেন, 'বাছালা অঞ্চরপুলি ভারিক, मुगरमामनिर्गत जन्म नामविक, किवि-क्षीपरगत्र स्थलतं गुरी, रगरेक्य नवस्त्रीयः কুটা কাহিক, নাবাটক আনক ঃপ্ৰি কোন কাজি নবালী গুৰ্কি নাম্বিক প্ৰ' সমূহকী আহি চোমাৰ কথা ক্ষি নাম না

लिख्य वृद्धिक ना १ कारति क्यार ভাৰি ভেত্ৰল ভয়বায়ি, ছোট ভরবাৰি, বৃড় ভর্নারি ভার ভর্মারি, বিন্নবিভ ভর-वादि, छाइ विलट्डिकाम कादिन मन्दर शामविका आवि अकट्यरमात अकति তীবের মত টিল, বাঁকা তীর, সোজা তীর, তীর্বাক্তীর; তাহাও সামরিক। कितिलीत काकत, भृष्टाद्भवात काबूतक, (कार्ड, दक्षात्रा, वामनदकामन देखार्गि। डाइ। इ. कार्कतः गृंही। जात यामा-দিপের অক্ষর পুল্যাকের অমুরূপ; বস্তু; মুদ্রা, নরকপাল ইত্যাদি, তাই ভান্তিক। অক্ষরসৃষ্টির সময় যে আজির যে দিকে দৃষ্টি অধিক থাকে সে আতির সেই ভাকার হয়। যদি বৈফাবের। সৃষ্টি করিতেন, ভাহা হইলে ভিলক তুলসীর আকারে উছিদিগের অক্ষর হইত। আর ভূমি-যদি এখন অকর প্রস্তুত করিতে, তাহা হইবে কাহার আফুতি লইয়া অক্ষর করিতে। 🖟 মাধ্বী-লভার ? কিন্তু শাস্ত্রে লিখিয়াছে যে ভোমার আমার মৃত্যু। আভেএব তুরি **७थन मत्म जामात्र मणा कि इत्र।** আ্মি তবে কার হাতে মরিব 🕈 আমি एकामात विकृति जनना कविदाहि, बीर-कारत गरम गरम द्वामान मुखा

महा। তবে कृषिटे चरिभ नेतिरव, ट्याबारे नाशनामि इनहासे, ट्याबाइ नवनक्ष्यन मा नाशिर्द्धन चाह चायाब ट्याम चूप नाहै।

এই ব্যাহা জনাইন চাপ্তার ছিবিন সেন, আন মজিলে ইড়োইন না। পিতম প্রসায়বদনে অসিবের লোকটি ছাঠ ক বিতে লাখিল।

# বঙ্গদেশন

#### मश्चमवरमत्।

-----

৮৪ সংখ্যা।

# ়বাঙ্গালির উৎপত্তি।

#### চতুর্থ পরিচেছদ। · আন্টীকরণ।

(১) সাঁওতাল (১) হো (০ ভূমিজ
(৪) মূও (৫) বীরছোড় (৬) কড়্যা (৭)
কুঁব্ বা কুকু বা মুমার্সি (৮) গাড়িয়া
১ (জুয়াং) এই কয়টি কোলবংশীয়
বাজাশার লেঃ প্রণ্রের শাসন-অ্পীনে
পাওয়া যায়।

জুয়ালোরা উড়িয়ার ঢেঁকানান ও
ক্রেওয়ড়প্রদেশে বাস করে। কুর্ বা
মুয়ার্সির সঙ্গে এ ইতিহাসের কোন সম্বদ্ধ
নাই। থাড়িয়ারা সিংহজ্মের অভিশয়
বনাকীর্ণপ্রদেশে বাস করে; মানভ্মের
পাহাড়েও ভাহাদের পাওয়া যায়।
বীরহোড়েরা হাজারিবাগের জঙ্গশে
থাকে। কড়ুয়ারা সরগুলা, যশপুর ও
পালামৌ অঞ্চলে থাকে। উহাদিগের
সঙ্গে মিশ্রিত "অস্বর" নামে আর একটি

কোলবংশীয় জাতি পাওয়া যায়। কুবকু ভাতি আরও পশ্চিমে।

সাঁওতালেবা গঙ্গাতীর হইতে উড়িমাায় বৈতরণীতীর পর্যাস্ত ৩৫০ মাইল
বাাপ্ত করিয়া বাস করে—কোগাও কম
কোথাও বেশী। যে প্রদেশ এখন
"সাঁওতাল পরগণা" বলিয়া খ্যাত, তাহা
ভিয়, ভাগলপুর, বীরভূম, বাঁকুড়া,
হাজারিবাগ, মানভূম, মেদিনীপুর, সিংহভূম, বালেশ্বর; এই কয় জেলায় ও
ময়ুরভঞ্জে সাঁওতালদিগের বাস আছে।

হো, ভূমিজ এবং মুণ্ডের সাধারণ নাম কোল। হোজাতিকে লড়্কা বা লড়াইয়া কোল বলে। ভূমিজেরা কাঁ-সাই ও স্বর্ণরেখা নদীন্বরের মধ্যে মান-ভূম জেলা প্রভৃতি প্রদেশে বাস করে। মুপ্ত বা মুপ্তারীরা চুটিয়া নাগপুর অঞ্চলে বাস করে।

হরিবংশে আছে যে, য্যাতির কনিষ্ঠ পুত্র তুর্বস্থর বংশে কোল নামে রাজা ছিলেন। উত্তর ভারতে তাঁহার রাজ্য हिल: उँ। हाउँ वर्ष्ण कालि तिश्व উৎপত্তি। \* মহুতে "কোলি মৰ্প " **किर्**गत श्रनःश्रनः श्रमत्र (प्रशा ভ'রতবর্ষে কোলেরা এককালে প্রধান हिल, এমত বিবেচনা করিবাব অনেক কাবৰ আছে। হণ্টর সাহেব প্রমাণ করি-বার চেষ্টা করিয়'ছেন, ভারতবর্ষের সর্কা खरे, दश नामक कान यानिमकाछित वा সের চিহ্ন পাওয়া যায় ৷ ভিনি যে সকল প্রমাণ সংগ্রহ করিয়াছেন, তাহার অধিকাংশে অধিক শ্রদ্ধা করা যায় না: কিন্তু হো বা কোলভাতি যে একদিন वरुपृत्विख उ (मर्गत अधिनामी जिल, তাহাও সম্ভব বোধ হয়। হো শকেই কোলিভাষায় মহুষা বুঝায়। একসময়ে ইহাবা স্বজাতি ভিন্ন সন্য কোন জাতির অস্তিত্ব জ্ঞাত ছিল না।

কর্নেল ভ্যান্টন প্রতিপর করিবার চেষ্টা করিয়াছেন যে, কোলেরাই পূর্দের মগধাদি অনুগাঙ্গ প্রদেশের অধিবাসী ছিল—যাহাদ এখন বাঙ্গালা ও বেহার সে প্রদেশে তখন কোলভাষা ভিন্ন অন্য কোন ভাষ। প্রচলিত ছিল না। মগপপ্রদেশে বিশেষতঃ শাহাবাদ জেলার অনেক ভ্রমন্দির অট্যালিকা আছে। প্রবাদ আছে সে, সে সকল চেরো এবং কোলজাতীয়দিগের নির্শ্বিত। কিম্বদ্ধী এইরূপ যে ঐ প্র দেশে সাধারণ লোক কোল ছিল, রা জাবা চেরো ছিল।

ঋথেদসংহিতায় কীকত নামে এক-ভাতির প্রাসত্ম আছে। ঝথেদের টীকাকার সায়নাচার্য বলেন যে, কৈকতেরা অনার্যাজাতি ছিল, এবং ভাশ্ববতপ্রাণ হইতে কয়েক পংক্তি উদ্ধৃত করিয়া विभिग्नां एक । प्राथित भारक की कः বলিত। অতএব কীকত ভরাক্য ছিল এমত বিবেচনা মগধান্তর্গত করা যাইতে পারে। কর্ণেল বিল-ফে'র্ড বলেন মে, জরাসন্ধের পূর্বের সগধদেশকেই কীক্তরাজ্য করাসর প্রথম মর্গদনাম প্রচার করেন। কৈকতেরা গো-পালন করিত, কিন্ত গোকর হুগ্ন বাবহার করিত না। লেরা অদ্যাপিও গোরুর হুগ্ধ বাবহার কবে না৷ এই সকল কারণে অনুমিত হইয়'ছে যে, অতি প্রাচ্চীন্কালৈ সগণে कानिमात्रहे नाम हिल। उहे मकल. কথার মৌলিকতা আমি নিশ্চয় করিতে পারিলাম না। আর সেই প্রাচীন কোল রাজ্যের অন্য কোন চিহ্নও পাওয়া যায় না।

কণিত আছে যে কোলেরা সবর নামক জাবিতী অনাগালাত্বিকর্তৃক যগগ

<sup>\*</sup> Asiatic Researches Vol. IX P. 91 & 92

<sup>†</sup> Non-Aryan Dictionary, Linguistic Dissertation P. 25 et &c.

বহিষ্ক ইইয়াছিল, भद∙ বেবা মনু ও মহাভারতে অনার্যাজাতি वित्या वर्षिक इडेगाएक । भवत कानाभि উড়িষার निक्रेनर्जी शामा वर्त्तमान আছে।

দ্রাবিড়ীয়গুণ বাঙ্গালার উপাস্ত ভাগ मकरल (कालवः भौत्र किर्णव व्यरशका वि হাজারিবাগের ওঁরাও (ধাঙ্গড) ও রাজমহলের পাহাড়ীরা ভিল আরে কেহ निकारे नारे। शास्त्रता जाविकी वरते. কিছ ভাহারা আম।দিগের নিকটবাসী নহে। কিন্ত বাঙ্গালাব ভিতবেই এগন অনেক জাতি বাস করে, যে তাহারা দাবিভবংশীয় ১ইলে হইতে পাবে। কর্নেল ভাল্টন বলেন যে কোচেরা জম্ব-গাঙ্গ বিজয়ী দ্রাবিডীগণ হইতে উৎপন্ন। বছত্র কোচ বাঙ্গালাব ভিতরেই বাস করিতেছে। দিনাজপুর, মালদহ, থাজ শাহী, রঙ্গপুর, বগুড়া, ঢাকা, ময়মন দিংহ - প্রস্তৃতি জেলায় কোচদিগকে পা ওয়া যায়। বাঙ্গালার ভিতৰ প্রায় একলক কোঁচের বাস আছে। এই লক্ষ ৰোককে বাঙ্গালি বলা যাইবে কি না ?\* কেছ্কেছ বলেন, ইহাদিগবেও বাদা . কেল্টীয় শোণিতে নির্ঘিত। প্রাচীন-লির সামিল ধরিতে হইবে। एम निमर्य भिक्तिशास । काट्ड वाकालि

হউক বা নাহ্টক, বাঙ্গালার ভিতরে অনার্গা আছে কিনা একথার আমা-দিগের একবার আলোচনা দেখা প্রয়োজন।

কে আৰ্ণ্য, কে অনাৰ্গাণ ইহা নিরু পণ করিবাব জন্য ভাষাত্তই প্রাধান উপায় ই**হা দেখান** গিয়াছে। যাহার ভাষা অার্যালাতীয়ভাষা, সেই আর্যাবংশীর। याश्व जाया जनागा जाया, (महे जनागा-জাতীয়, ইহা সির করা গিয়াছে; প্রে দেখান গিয়াছে যে, যে অনার্যোর ভাষা দ্রাবিড্ছাতীয় ভাষা সেই দ্রাবিড্রংশীয় অনাৰ্যা; যাহাব ভাষা কোলজাতীয়ভাষা সেই কোলবংশীয় অনার্য। কিন্তু এমন কি হুটতে পারে না যে,ভাষা একজাতীয় বংশ অনাজাতীয় একাধারে সমাবিষ্ট হই-याष्ट्र अमन कि इहेट आद ना, य গ্রাজিত জাতি জেত্গণের ধর্মা, জেত্ গণেব ভাষা গ্ৰহণ কৰিষা জেতুদিগের ভাতিভক্ত হুইয়াছে ?

धमन উদাহরণ ইতিহাসে অনেক পাৎয়া যাঁষ। ফানোর বর্তমান ভাষা লাটনমূলক,কিন্তু ফ্বাসিজাতির হাতিমঙ্গা গলেবা রোমকগণকর্ত্তক পরাজিত ও বোসকৰাজাভুক্ত হইলে পর বোগীয়

<sup>\* &</sup>quot;The proud Brahman who traces his lineage back to the palmy days of 'Kanauj and the half civilized (? Koch or Palya of Dinagepore may both be fitly spoken as Bengali, Bengal Cons is Report 1871.

সভ্যতা গ্রহণ করে। এবং সেই সঙ্গে সংগে রোমীয়ভাষা অর্থাৎ লাটনভাষা গ্রহণ করে। যথন পশ্চিম রোমক-সামাজ্য ধ্বৎসপ্রাপ্ত হয়, তথন গলদিগের মধ্যে লাটনভাষাই প্রচলিত ছিল, পরে তাহারই অপজ্রংশে বর্ত্তমান ফরাসি ভাষা দাড়াইয়াছে। আইবিরিয়াতেও (শেশন ও পটুর্গল) ঐরপ ঘটয়াছিল। আমেরিকার কাফরিদাসদিগের বংশ প্রভুদিগের ভাষা অবলম্বন করিয়াছে, জাতীয়ভাষাব পরিবর্ত্তে ইংরেজি বা ফরাসি ব্যবহার করিয়া থাকে। শে অতএব ভাষা আর্যাভাষা হইলেই আর্যাবংশীয় বলা ঘাইতে পাবে না অন্য প্রমান আবশ্যক।

সকলেই জানে যে আর্যোরা ককেশীয় বংশীয় ৷ ককেশীয় বংশের মধ্যে আর্যা

ভিন্ন অনা বংশও আছে, কিন্তু ককেশীয় বংশের অন্তর্গত নহে এমন আর্যাজাতি नाइ। कटकभोत्रिष्ठित्र सम्मन-(भोतवर् দীর্ঘশরীর মস্তক স্থগঠন হন্দর অফুলত। মোন্ধল বংশ ককেশীয়দিমের হইতে পুথক। যোগলীয়েরা থর্ঝাকার মস্তকের গঠন চতুকোণ হন্দম অভায়ত। যদি কোন জাতিকে এমন পাওয়া যায় যে তাহা-দিগের শারীরিক গঠন মোঙ্গণীয়, তবে • সে ভাতিকে কথন আৰ্যা বলা যাইবে না। বদি দেখিতে পাই সে জাতীয়ের ভাষা আর্যাভাষা তাহা হইলে এইরূপ वित्तनमा कतिए इहेरव एग जाहाता আদৌ অনার্যাভাতি, আর্যাদিগের সহিত কোন প্রকার সম্প্রিমিট হট্যা আগ্র দিগেব ভাষা গ্রহণ কবিয়াছে। আবাব

\* ভারতবর্ষেও এই আর্যা অনার্যাঞ্জিতিদিগের মধ্যে আজিকার দ্বিন্ট আ্যা-দিগের প্রভাক্ষণোচ্বে এইরূপ ভাষাপরিবর্তন ঘটতেছে। प्रिंग प्रिंग আপন মাতৃভাষা স্থানে অনার্গোরা পরিত্যাগ^ করিয়া ুআর্যাভাষা গ্রহণ ৢরিতেছে। কর্ণেল ডালেটন বলেন যে তিনি ১৮৬৮ সালে কোডবা জাতীয়গণের ভাষা সম্বন্ধে কতকগুলি তত্ত্বের অনুসন্ধান করিবার কোড়বাদিবের বাসভূমি যশপুর রাজ্যে গমন করিয়াছিলেন, ভাঁছার তলবমতে বছসংথাক অসভা কৈছেবা আসিয়া তাঁহাকে ছেরিয়া পাড়া ইল কিন্তু তাহাদিগের মধ্যে <sup>কেহ</sup>ই কোড়বা ভাষার এক পারিল না। তাহারা বলিল তাহারা ডিহি কোডবা—অর্থাৎ পার্কত্য প্রদেশ পরিত্যাগ পূর্বক সমতল প্রদেশে বাস করিয়া চাষ আবাদ করিতেছে। সমাজ পরিত্যাগের সঙ্গে ভাষাও ত্যাগ করিয়াছে। উদাহরণের স্বরূপ **जान**हेन चाद्र दलन ८१ इतिया नागभूत खाल्ला , खंदा बुलिए १द শ্বকল গ্রাম আছে ভাষার মধ্যে অনৈক অনেক গ্রামের ও রাওয়েয়া দাভীয় গ্রা বলিতে পাবে না, হিন্দি বা • মুগুদিগের ভাষায় কথা কছে। Ethnology of Bengal P. 115.

ষদি দেখি যে সেই অনার্যাঞ্চাতি কেবল আর্যাভাষা নহে আর্যাধর্ম পর্যাপ্ত গ্রহণ করিয়া আর্যাসমাঞ্জুক হইয়াছে—তথন বুঝিতে হইবে যে একজাতি অপর জাতিকে বিজিত করিয়া একজ বাদ করায় একের সঙ্গে অন্য মিশিয়া গিয়াছে। যদি আবার দেখি যে এই বিমিশ্রমাতিদ্বরের মধ্যে আর্যা উন্নত অনার্যা অবনত, তবে বিবেচনা করিতে হইবে যে আর্যারা জয়কারী, অনার্যােরাই বিজিত ইইয়া আর্যাসমাজের নিয় স্তরে প্রবেশ করিয়াতে।

ইহাতে এই এক আপত্তি হইতে পারে যে, হিন্দ্ধর্ম অহিন্দুর পক্ষে গ্রহ গীয় নহে। যে কেহ ইচ্ছা করিলে এছিয় কি ইস্লাম ধর্ম গ্রহণ করিয়া গ্রাষ্টিয়ান বা মুগলমান হইতে পারেন। কিন্তু যে হিন্দুক্লে জন্মগ্রহণ করে নাই— সে হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়া হিন্দু হইয়া হিন্দুসমাজে মিশিতে পারে না। ক্ষত্ত এব য়ে অনার্যা আদৌ হিন্দুক্লজাত নহে সে, কথক হিন্দু হইয়া হিন্দুসনাজে মিশিয়াছে, এ কথা কেহ বিশ্বাস করিবে না।

তই আপত্তি বাক্তিবিশেষের পক্ষেবলবৎ বটে। কিন্তু এক একটি বৃহৎভাতির পক্ষেইহা পাটতে পারে না।
বিশেষতঃ বনা অনাগ্য ভাতিদিগের
পক্ষে থাটিতে পারে না। মুসলমান বা
খ্যাটিয়ান কখন হিন্দু হইতে পারে না,
কেন না যে সক্ষ সাচার হিন্দু ছ ধবংস-

কারক তাহারা পুরুষামুক্রমে সেই সকল আচার করিয়া পুরুষামুক্রমে পতিত। কিন্তু এ প্রদেশের বন্য অনার্যা জাতি-**मिर**शत मरधा हिन्दुद्विन।**भक** কোন আচার ব্যবহার নাই যে তাহা হিন্দুদিগের অতি নিকৃষ্ট জাতিদিগের মধো—হাড়ি ডোম মুচি কাওরা প্রভৃতির मधा, পাওয়া যায় না। মনে কর হিন্দু-প্রবল কোন প্রদেশের সন্নিকটে অথবা হিন্দু দিগের অধীনে কোন অসভ্য অনার্য্য জাতি বাদ করে। এমন স্থলে ইছা অবশাই ঘটিবে যে আর্গোর: সমাজের বড অনার্যোরা সমাজের ছোট থাকিটব। মনুষোর স্বভাব এই যে যে বড়, ছোট তাহার অনুকরণ করে। কাজে কাজেই এমত হলে অনার্যোরা ছিলুদিগের সর্বা-সীণ অনুকরণে প্রাবৃত্ত হইবে। আমের। এখন ইংরেজদিগের অমুকরণ করিতেছি পূর্বে মুদলমান দিগের অমুকরণ করি-তাম। আনাদিগের একটি প্রাচীন ধর্ম আছে, চারি হাজার বৎসর হইতে সেই ধর্মা নান্মবিধ কাব্য দর্শন ও উচ্চ নৈতিক **ए द्वित्रधाता अलक्ष्र इरेग्रा** (लाक गरनाः ' মোহন ইইয়াছৈ, তাহার কাছে নিরাভরণ ইসলাম বা খ্রীষ্ঠীয় ধর্ম অনুরাগভালন হয় না। এই জন্য আমরা এখন সর্কথা ইংব্লেদিগের অনুকরণ করিয়াও ধর্ম-সম্বন্ধে ভাষ্কাদের ভত্টা অমুগমন করি না। কতকটা না করিতেছি এমনও নহে। কিন্তু অনার্যাদিগের মধ্যে তেমন ইজ্জ<sup>ল</sup> বা শোভাবিশিষ্ট কোন জাতীয়

थर्मा नारे। अत्नक श्रःल এक्वार्त्त কোন প্রকার জাতীয় ধর্ম নাই। অবস্থায় অধীন অনাৰ্ঘ্যদমাজ আর্য্যদিগের অন্য বিষয়ে যেমন অঞ্ করণ করিবে ধর্মসম্বন্ধেও সেইরপ অফুকরণ করিবে। হিন্দুরা যে ঠাকুরের পূজা করে ভাষারাও সেই ঠাকুরের পূজা করিতে আরম্ভ করিবে। হিন্দুরা যে সকল উৎসব করে তাহারাও সেই সকল উৎসব করিতে আরম্ভ করিবে। জীবন-নির্বাহের নিত্য নৈমিত্তিক কর্মা সকলে হিন্দুদিগের নাায় আচার বাবহার করিতে থাকিবে। সমগ্রজাতি এইরূপ ব্যবহার করিতে থাকিলে কালক্রমে তাহারাও হিন্দু নামধারণ করিবে। অন্য হিন্দু কেহ কখন তাহাদিগের অর খাইবে না। তাহা-দিগের সহিত কন্যা আদান कतिरव नां, अथवा धना (कांन क्षेकारत তাহাদিগের সহিত মিশিবে না-হয় ত তাহাদিগের স্পৃষ্ট অল পর্যান্তও গ্রহণ করিবে না। অতএব তাহারাও একটি পৃথক্ হিন্দুজাতি বলিয়া গণা হইলে। তা-হারা আগে যেমন পৃথক্ জাতি ছিল এখনও ভেষনি পৃথক্ জাতি রহিল, কেবল হিন্দু দিগের আচার বাবহারের অফুকরণ গ্রহণ করিয়া হিন্দুজাভি বলিয়া থাতে হইল। शाक्षाकामिरभन मर्था अविषे विवाहमन क्या वाह्। (क्ट्रक्ट्रव्यन दग हिन्तू धर्म "proselytizing নহে অর্থাৎ যে জন্মা-বধি হিন্দু নয় হিন্দুবা ভাহাতক হিন্দু ক্রে না। হার এক সম্প্রায नरनान (ग

হিন্দ্ধর্ম proselytizing অর্থাৎ অহিন্দুর हिन्तु इया । ध विवादन क्रुल गर्मा উপরে বুঝান গেল। গ্রীষ্টান, বা মুসল-মানদিগের proselytism এইরূপ যে তাহারা অন্যকে ভলায়, "তুমি এটান হও, তুমি মুসলমান হও।" আহত বাক্তি খ্রীষ্টান বা মুসলমান হইলে তাহার সঙ্গে আহার ব্যবহার কন্যা আদান প্র- ' দান প্রভৃতি সামাজিক কার্যা সকলেই করিয়া থাকে, বা ক্রিভে পারে। হিন্দুদিগের proselytization সেরপ নহে।. হিন্দুরা কাহাকেও ডাকে না যে, "তুমি স্বধর্ম তাগি করিয়া আসিয়া হিন্দু হও।" যদি কেহ স্বেচ্ছাক্রমে হিন্দুধর্ম গ্রহণ করে তাহার সঙ্গে আহার ব্যবহার বা কোন প্রকার সামাজিক কার্গ্য করে না, কিন্তু যে হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়াছে তাহার বংশে হিন্দুধর্ম বজায় • থাকিলে তাহার হিন্নামও করিতে পারে না। একটা সম্পূর্ণ জাতি এইরূপে হিল্বর্ণর্ম গ্রহণ করিয়া পুরুষাত্র-ক্রমে হিন্দুধর্ম পালন করিলে: স্কলেই তাহাকে হিন্দুজাতি বলিয়া স্বীকার করে। হিল্পিংগৰ proselytism এই প্রকার। ঐ শব্দ মুসলমান বা খ্রীষ্টান সম্বন্ধে যে অর্থে ব্যবস্থত হইয়া থাকে হিলুদিগের সম্বন্ধে সে অর্থে ব্যবহৃত হয় না। প্রকৃত প্রস্তাবে হিন্দুদিণেব मत्पा proselytism नाई अनः उपर् বাচক ভারতীয় কোন সার্যা ভাষায় (कान भक्त नाहै।

বে অর্থে অহিনু হিনু হইতে পারে বলা গিয়াছে দে অর্থে এখনও অনেক অনার্যা জাতি হিন্দু হইতেছে। কি প্রকার হইতেছে তাহা বেঙ্গাল সিবিলসার্বিদে রিজলি সাহেব মানভূমেয় বুতাস্তে নিয় লিখিতমত বর্ণনা করেম। তিনি বলেন ''এই ঘটনা কিয়দংশে হিন্দু ও অহিন্দু পরস্পতে, বিবাহ অথবা উপপত্নী পালন कतांत श्रेथा वत्न, किय्रमः म अनार्याता হিন্দু আচার বাবহার গ্রহণ করিয়া স্বেচ্ছাক্রমে হিলুমাম ধারণ করায়, এবং কিয়দংশে হিন্দু রাজপুরুষদিগের ইচ্ছা-প্রচারিত হাজাক্রমে ঘটিয়াছে। কখন কখন হিন্দুরাদগণ অনাগ্য প্রজাবর্গকে অমূলক জাতিবাচক উপাধি দিয়া হিন্দু সমাজ মধ্যে গ্রহণ করিয়াছেন। স্থানীয় কিম্বদ্ধীতে এরপ জাভিস্টির ঁঅনেক পাওয়া যায়। উত্তর হাজারিবাগ थारमर्भ ज्ञाधिकातीमिरगत পরিচারক কাহার জাতি যে অনার্য্যবংশীয় তাহা তাহাদেঁর ৰাহ্যু প্রকৃতিতে বুঝা যায়।"\* অনার্যা ভাতি শে আপনাদিগের অনার্যা ভাষা পরিত্যাগ করিয়া আর্যা ভাষাও . আর্ঘাধর্ম গ্রহণ পূর্বক হিন্দু হইয়াছে তাহার কয়েকটি উদাহরণ দিতেচি।

প্রথম। হাজারিবাগ প্রদেশে বিদ্যা
নামে একটি জাতি বাস করে। বেদিয়া
হইতে তাহারা পৃথক্। বিদ্যা মাহাত্ম
নাম তাহারা কথন কথন ধারণ করিয়া
থাকে। ইহারা হিন্দিভাষা কয় এবং হিন্দু

मधा गंना किन्छ এই विमानिन मुख्जा जीव কোল তাহাতে কোন সংশয় নাই। চুটীয়া নাগপুরের মুগুদিগের আকৃতি ইহাদিগেরও সেইরূপ মুগুদিগের মধ্যে পছন নামে এক একজন পুরে।হিত বা গ্রাম্য কর্ম্ম-চারী সর্বত্র দেখা যায়,বিদ্যাগণের মধ্যেও ঐরপ প্রামে গ্রামে পছন মুখেরা লোহা প্রস্তুত করিতে স্থাক— এবং দেই ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া থাকে। বিদ্যাগণও সেই কাজে স্থাদক ও স্থবাবদায়ী। আর মুগুদিগের মধ্যে কিলী অর্থাং জাতিবিভাগ আছে, ইহাদিগেরও সেইরপ আছে। মুগুদিগের কিলীর যে যে নাম বিদ্যাদিগের কিলীরও সেই সেই নাম। অভএব ইহা একপ্রকার নিশ্চয় করা যাইতে পারে যে বিদ্যাগণ মুগু কোল। কিন্তু এখন তাহারা হিন্দীভাষা वरल ७ हिन्तू धर्मा अवलघन कतिया हरता " দিতীয়। আসামে চুটীয়া নামে একটি জাতি আছে। তাহাদের মুথাবয়ব অনার্থ্যের ন্যায়। কোন আসামীবৃক্ত ঞ্জীতে. কর্ণেল ড্যাল্টন দেখিয়াছেন যে, 'উত্তরপ্রদেশস্থ পর্বত হইতে তাহারা উপর আগামে প্রবেশ করিয়া স্থবলে-খ্রী পার হইয়া সদীয়াপ্রদেশে বাস

লকিমপুরপ্রদেশে দিকুনদীর

উপরে এবং উপর আসামের অন্যত্র

দেউরী চুটীয়া নামে এক চুটীয়াজাতি পাওয়া গিয়াছে। তাহাদিগের ভাষা

<sup>• \*</sup> Statistical Account of Bengal Vol. VII P. 213

সমালোচন করিয়া স্থির হইয়াছে যে, ঐ চুটীয়া ভাষা গারো ও বোড়োদিগের ভাষার সঙ্গে একজাতীয়। ত অত এব চুটীয়ারা যে অনার্যাজাতি তর্ষিষ্ঠ্যে সংক্ষার নাই। কিন্তু একণে আগামের অধিকাংশ চুটীয়া হিন্দু বলিয়া গণা। এবং তাহারা আপনারাও হিন্দু চুটীয়া বলিলেই ব্রাইবে যে ফ্লেড্ডটীয়া ছিল বা আছে।\*

তৃতীয়। কাছাড়িরা অনার্গাবংশ। তাহা-দের অবয়ব মোক্ষণীয়। কিন্তু আসাম-প্রদেশীয় কাছাড়িরা হিন্দু হট্যাচে। এবং এক্ষণেও আনেকে হিন্দু হট-তেছে।

চতুর্থ। কোচেরা আর একটি জনার্যাজাতি। আসল কোচভাবা মেছ কাছাড়িভাষা সদৃশ, কিন্তু ঐতিহাসিক সমযেই কোচবেহারের রাজাদিগের আদিপুরুষ হজুর পৌত্র বিস্থাসিং হিন্দুধর্ম গ্রহণ
করিয়াছিলেন এবং ভাঁহার সঙ্গে সঙ্গে
কোচ বেহাবের যত ভত্রলোক হিন্দুধর্ম
গ্রহণ করিরাছিলেন। ইহারা রাজবংশী
নাম গ্রহণ করিলেন। ইত্র কোচেরা
দ্বান্যান হইল।

পঞ্ম। ত্রিপুরার পাহাড়িলোক অ-

নাৰ্যাজাতি। কিন্তু তাহারাও হিন্দুধৰ্ম অবলয়ন করিয়াছে।∦

ষষ্ঠ। খাড়োরার নামক অনাগ্যস্থাতি কালীপুলা করিয়া থাকে। শ

সপ্তম। পছেয়া নামে পালামৌতে

এক জাতি আছে, তাহারা হিন্দীভাবা

কর এবং কতকগুলি আচার বাবহার

তাহাদের হিন্দুদিগের ন্যায়। ভাহাদের
অনার্যাত্ত নিঃসন্দেহ।

অষ্ট্রন। সপ্ত জার কিলাম বলিরা এক জাতি আছে, তাহারাও অনার্য এবং তাহাদিণের আচার ব্যবহার সব কো-লের ম্যার, তাহাদেরও ভাষা হিন্দী এবং তাহারা কতক কতক হিন্দু আচাব ব্যবহার গ্রহণ করিয়াছে।§

নবম। "বুনো" কুলি সকলেই দেখিয়াছেন। তাহারা জাতিতে সাঁওতাল, কোল বা ধালড় (উবাঁঙ)। কিন্তু এ দেশে যত "বুনো" দেখা যায়,
সকলই হিন্দু।

এরপ আরও অনেক উদাহরণ দেওয়া
যাইতে পারে। যাহা দৈওয়া গেল
তাহাতেই যথেষ্ট হইবে। এই কয়েকটি
উদাহরণদারাই উত্তমরূপে প্রমাণ হুইতেছে যে বাঙ্গালির বাহিরে এমন
অনেক অনার্য্যংশ পাওয়া যায় যে

<sup>\*</sup> Statistical Account of Bengal Vol. XVI P. 82-3

<sup>†</sup> Dalton's Ethnology P. 78.

<sup>||</sup> Buchanan Hamilton-Rungpur Vol. III P. 419 Hodgson

I. A. S. B. XXXI. July 1849.

<sup>¶</sup> Dalton's Ethnology P. 130.

<sup>§</sup> Dalton's Ethnology P. 132.

তাহারা আর্যাভাষা গ্রহণ করিয়াও হিন্দুধর্ম গ্রহণ করিয়া হিন্দুজাতি বলিয়া গণ্য হইরাছে। যদি বাঙ্গালার বাহিরে অনার্যা হিন্দু পাওরা যাইতেছে তবে বাঙ্গালার ভিতরে বাঙ্গালির মধ্যে এরপ অনার্যা হিন্দু থাকাও সম্ভব। বাস্তবিক আছে কি না তাহার বিচার করার প্রয়োজন।

এইখানে বলা উচিত যে পাশ্চাত্য-দিগের সাধারণ মত এই যে প্রাচীন চতু-র্ববের মধ্যে শূদ্রদিণের উৎপত্তি এই রূপই ঘটিয়াছিল। জাতিভেদ সম্বন্ধে অনেকে অনেক মত প্রচার করিয়াছেন। আগদিগের মতে, জাতিভেদ তিন প্র-কারে উৎপন্ন হইয়াছে। প্রথম আর্যা-গণের মধ্যে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য ভেদ। वि वावनाया जात है उपन इरे या हिल। এখন আমরা ইউরোপে, দেখিতে পাই, যে কোন কোন কুলীনবংশ পুরুষাত্তক্রমে রাজকার্যো লিপ্ত। কোন সম্প্রদায় পুরু-ষাহক্ষে বাণিজ্য করিতেছে। কোন मच्चिमां भूक्षाञ्क्रा कृषिकांधा वा মজুরী করিতেছে। কিন্ত ইউরোপে, . धक मञ्जापादाद (माक घना मञ्जापादाद গ্রহণ করার বিল্ল নাই। এবং সচরাচর এরপ বাব-সায়াশ্বর গ্রহণ করিয়া থাকে। ভারতবর্ধের প্রাচীন আর্য্যেরা চনা করিভেন যে যাহার পিতৃ পিভামহ ব্যবসার করিয়াছে वावमार्रे अप्रकार हा । जाहार ज्ञ-

বিধা আছে বলিয়া লোকে প্রথমত: ইচ্ছা করিয়া পৈভূপিতামহিক ব্যবসার অব-লম্বন করিত। শেষ উচ্চব্যবসায়ীদিগের निक्षे नौहवावमाश्रीता घुण रखशादछहे **হউক অথবা ব্রাহ্মণদিগের প্রণীত দৃঢ়বন্ধ** সমাজনীতির বলেই হউক, বিদ্যাব্যব-সায়ী যুদ্ধব্যবসায়ীর সঙ্গে মিশিল না। যুদ্ধব্যবসায়ী বণিকের সঙ্গে মিশিল না। এইরূপে তিনটী আর্যাবর্ণের সৃষ্টি। জাতি-ভেদ উৎপত্তির দিতীয় রূপ শ্রুদিগের বিবরণে দেখা যায়। তাহা উপরে বুঝাই-য়াছি। শ্রেষ্ঠব্যবসায় সকল আর্হ্যেরা আপনার হাতে রাখিল নীচব্যব্সায় এবং ক্রষিকার্য্য শৃদ্রের উপর পড়িল। বোধ হয় প্রথম, কেবল আর্ফো ও শুদ্রে ভেদ জন্মে। কেন না এ ভেদ স্বাভাবিক, শ্জেরা বেমন নৃতন নৃতন আধ্যসমাজ-ভুক্ত হইতে লাগিল, তেমনি পৃথক্বর্ণ বলিয়া, আর্ঘ্য হইতে তফাত রহিল। वर्ग भक्त हे होत्र अभाग। वर्ग आर्थ রঙ। পূর্বেই দেখাইয়া আসিয়াছি (य व्यार्थाता शोत, व्यनार्थाता "कृषः-ষচ।" তকে গৌর ক্বঞ্চ ছইটি বর্ণ পাওয়া গেল। সেই প্রভেদে প্রথম, আর্য্য ও শুদ্র এই ছুইটী বর্ণ ভিন্ন হুইল। একবার সমাজের মধ্যে থাক আরম্ভ আর্থাদিগের হন্তে, ক্রমেই থাক বা-থাকিবে। তথন আর্যাদিগের মধ্যে ব্যবসায়ভেদে, ত্রাহ্মণ বৈশ্য তিনটী শ্ৰেণী পৃথক্ হইয়া পড়িল, সেই ভেদ বুঝাইবার জন্য পুর্বাপরিচিত

'বর্ণ' নামই গৃহীত হইল। তার পর আর্থা আর্ব্যে আর্ব্যে অনার্যো বৈধ বা অবৈধ সংসর্গে শঙ্করজাতি সকল উৎপন্ন হইতে লাগিল। শঙ্করে শঙ্করে মিলিয়া আরও ন্ধাতিভেদ বাড়িল। স্বতিভেদের তৃতীয় উৎপত্তি এইরূপ।

পূর্ব পীঠিকাম্বরূপ এই করটি কণা বলিয়া আমরা বাঙ্গালি শূদ্রদিগের মধ্যে অনাগ্যন্তের অমুসন্ধান করিব।



# আনন্দ মঠ।

#### विविक्रगाटक प्रदेशियांश

পূৰীত।

#### উপক্রমণিকা।

व्यक्ति विकृष्ठ व्यवगा। व्यवगामरमा অধিকাংশ বৃক্ই শাল, কিন্তু তদ্ভির আরও অনেকজাতীয় গাছ আছে। গাছের মাথায় মাণায় পাতায় পাতার মিশামিশি হইয়া অনস্ত শ্রেণী চলিয়াছে। विष्ट्रमभूना, ছिप्रभूना, व्यालीकथात-(भंद्र श्रथमाळ मृना; এই क्रश शहरवद অনস্তসমুক্র, ক্রোশের পর ক্রোশ, ক্রো-. (भात भात द्याम, भावत्म जत्रत्मत्र छेभादत ভরঙ্গ বিকিপ্ত করিতে করিতে চলিয়াছে। ঘনান্ধকার। মধাহেও • আ-লোক অক্ট,,ভয়ানক! ডাহার ভি তরে কপন মৃহ্যা যায় না। পাতার অনন্ত মর্মার এবং বন্য পশুপক্ষীর রব ভিন অন্য শব্দ ভাহার ভিতর শুনা যায় না।

একে এই বিস্তৃত অতি নিবিড় অন্ধত্মসময় অরণা। তাহাতে রাত্রিকাল।°
রাত্রি দিতীয় প্রাহর। রাত্রি অতিশয়
অন্ধকার। কাননের বাহিরেও অন্ধকার;
কিছুদেখা যায় না। কাননের ইভতরে
তমোরাশি ভূগর্ভন্ন অন্ধকারের ন্যায়।

পশুপক্ষী একবারে নিস্তর্ধ। কত লক্ষ লক্ষ কোটা কোটা পশু পক্ষী কাটি পশুল করে। করে। করে কেই কোন শব্দ করিতেছে না। বরং সে অন্ধ্রকার অনুভব করা যায়—শব্দমনী পৃথিবীর সে নিস্তর্কভাব অনুভব করা যাইতে পারে না।

সেই অন্তঃশূন্য অরণ্যমধ্যে, সেই স্চী ভেদ্য অন্ধকারময় নিশীণে, সেই স্থনর क्तनीय निकक मत्या भक हहेल,''आमात्र मनकाम कि निक हहेरव ना ?''

শক হইয়া আবার সে অরণ্যানী নিতথ্য ডুবিয়া গেল। তথন কে বলিবে যে
এ অরণ্যমণ্যে মুস্যাশক শুনা গিয়াছিল।
কিছুকাল পরে আবার শক হইল, আবার
সেই নিস্তব্ধ মণিত করিয়া মনুষ্যকণ্ঠ
ধ্বনিত হুইল, ''আমার মন্দ্যম কি সিদ্ধ
হুইবে না গু'

এইরূপ তিনবার সেই অন্ধকার সমুদ্র আলোড়িত হইল। তখন উত্তর হইল, ''তোমার পণ কি ।''

প্রত্যন্তরে বলিল, "পণ আমার জীবন সর্বস্থা।"

প্রতিশক্ষ হইল, "এ পণে হইবে না।"
" আর কি আছে ? আর কি দিব।"
তথন উত্তব হইল, "তোমার প্রিয়ন্তনের
প্রাণস্ক্ষ ।"

## প্রথম খণ্ড।

প্রথম পরিচ্ছেদ। ১১৭৬ সালে গ্রীমকালে একদিন পদচিহ্ন গ্রামে রৌদের উত্তাপ বড় প্র-বল। গ্রামখানি গৃহময়, কিন্তু লোক (पश्चिमा। वाष्ट्रांद्र माति माति (प्रांकान, शार्षे माति माति हाना, भहीरा भहीरा শত শত সুক্ষয় গৃহ, মধ্যে মধ্যে উচ্চ नीत व्यष्टितिका। व्याझ सर नीतर। वाङादि (माकान वस, (माकानमात (का-থায় পলাইয়াছে ঠিকানা নাই। আজ रांदेवात, हाटि हांदे लार्श नाहे । जिक्कात দিন, ভিক্ষুকের। বাহির হয় নাই। তন্ত্র-বায় তাঁত বন্ধ করিয়া গৃহপ্রান্তে পড়িয়া ক।দিতেছে, ব্যব্সায়ী ব্যব্সা ভূলিয়। শিশু ক্রোড়ে করিয়া কাঁদিতেছে, দাতারা मान वक्क कतियाटक, व्यथात्रटक टोल

বন্ধ কবিয়াছে; শিশুও বুঝি আব माहम कतिया काँ। লোক দেখি না, সবোববে স্নাতক দেখি ना, गृश्वादत मञ्चा (निभ ना, तृत्क शकी प्तिथ ना, (शां**ठावरन शांक प्रिय ना, एक**-वन गामारन मुनाल, कुक्व। এक वृह्र অট্টালিকা,--ভাহার বড় বড় ছড়ওয়ালা থাম দূর হইতে দেখা যায়— সেই ° গৃহারণামধ্যে° শৈলশিখরবৎ পাইতেছিল। শোভাই বাকি, দার রুদ্ধ, মনুষাসমাগমশূনা, শক্হীন, বায়ু প্রবেশের পক্তে বিল্লময়। ভাহার ক্রিতর মধ্যাহ্নে অন্ধকার, অন্ধকারে নিশীথফুল্লকুস্থমযুগলবৎ দম্পতি বসিয়া ভাবিতেছে। তাহাদের সমুখেও মন্থর।

১১৭৪ निह्न कमन छान इम्र नाहे, স্থতরাং ১১৭৫ সালে চাল কিছু মহার্ঘ্য হইল-লোকের ক্লেশ হইল, কিন্তু রাজা রাজস্ব কড়ায় গণ্ডায় বুঝিয়া লইল। রাজস্ব कड़ांत्र शंखांत्र त्याहेत्रा नित्रा नतिरस्ता করিল। একসন্ধ্যা আহার সালে বর্ষাকালে বেশ বৃষ্টি হইল। লোকে ভাবিল, দেবতা বুঝি রূপা করিলেন। আনন্দে আবার রাখাল মাঠে গান গাইল, কৃষকপত্নী আবার রূপার পৈঁচার জন্য স্বামীর কাছে দৌরাম্মা আরম্ভ করিল। অকস্বাৎ আশ্বিনমাসে দেবতা विभूष इटेलन। अधित, कार्तिक विन्तूमाळ वृष्टि পড़िन ना, भार्क धाना সকল শুকাইয়া একেবারে থড় হইয়া গেল। যাহার ছুই এককাহন ফলিয়া-ছিল, রাজপুরুষেরা তাহা সিপাহীর জন্য किनिया दाथिलन। लाक आद था-ইতে পাইল না। প্রথমে একসন্ধ্যা উপবাদ করিল, তার পর একদন্ধ্যা আধপেটা করিয়া খাইতে লাগিল, তার পরে তুইসক্ষা উপবাস আরম্ভ করিল। বে কিছু চৈত্র ফসল হইল, কাহারও মুখে ভাহা কুলাইল না। কিন্তু মহম্মদ রেজা থাঁ রাজস্ব আদায়ের কর্মা, একে বাঙ্গালি ভাহাতে মুদলমান, মনে আমি এই সময়ে সরক্রার ইইব। একেবারে শককরা দশটাকা রাজস্ব ৰাড়াইয়া দিল। বাঙ্গালায় বড় কারার কোলাহল পড়িয়া গেল।

লোকে প্রথমে ভিকা করিতে আরম্ভ

করিল, তার পরে, কে ভিকা দেয়!— উপবাদ করিতে আরম্ভ করিল। তার পরে রোগাক্রাম্ভ হইতে লাগিল। গোর্ক (विष्ति, नामन জाग्रान (विष्ति, वीक-थान थाहेगा एक निल, घतं वाड़ी (विवित्। জোভজমা বেচিল। ভার পর মেয়ে বেচিত্তে আরম্ভ করিল। ভার পর ছেলে বেচিতে আরম্ভ করিল। পর স্ত্রী বেচিতে আরম্ভ করিল। তার পর মেয়ে, ছেলে, স্ত্রী কে কেনে গু थतिममात नाहे, मकल्बे (विहिट्ड हात्र। থাদ্যাভাবে গাছের পাতা খাইতে লা-গিল, ঘাস থাইতে আরম্ভ করিল, আ-গাছা খাইতে লাগিল। ইতর ও বন্যেরা क्कूब, हेन्द्र, विफाल शाहरू लाशिन। व्यत्तर्क भगारेन, यारात्रा भनारेन, छा-হারা বিদেশে গিয়া অনাহারে মরিল। याशांत्रा भनारेन ना, छाशांत्रा अथामा খাইয়া, ना খাইয়া,রোগে পড়িয়া, প্রাব-ত্যাগ করিতে লাগিল।

রোগ সময় পাইল, জর, ওলাউঠা কয়, বসস্ত। বিশেষতঃ বসস্তের বড় প্রাত্তাব হইল। গৃহে গৃহে বসস্তে মরিতে লাগিল। কে কাছাকে জল দেয়, কে কাছাকে জ্পার্শ করে। কেছ কাছাকে দেখে না; মরিলে কেছ ফেলে না। জতি রমণীয় বপু জট্টালিকামধ্যে আপনা আপনি পচে। যে গৃহে একবার বসস্ত প্রবেশ করে, তার সকল গৃহবাসীরা রোগী ফেলিয়া ভরে পলায়।

মহেন্দ্র সিংছ পদ্চিক্ত গ্রান্থে বড় ধনবান্—কিন্ত আজ ধনী নির্ধনের এক
দর। এই ছংপপ্রকালে ব্যাধিগ্রন্ত ছইয়া তাঁহার আত্মীয়ন্তজন, দাসদাসী
সকলেই গিয়াছে। কেছ মরিয়াছে,
কেছ পলাইয়াছে। সেই বছ পরিবার
মধ্যে এখন তাঁহার ভার্যা ও তিনি
দ্বয়ং আর.এক শিশুকনাা। তাহাদেরই
কথা বলিতেছিলাম। নিকটে এমন
একটি প্রতিবেশী নাই, যে একটু জল
দিয়া যায়।

তাঁহার ভার্যা কল্যাণী চিন্তা ত্যাগ করিয়া গো-খালে গিয়া স্বয়ং গো-দোহন করিলেন। পরে হ্রপ্প তপ্ত করিয়া,কন্যাকে থাওয়াইয়া, গোক্তকে ঘাস জল তিতিবলেন। ফিরিয়া আসিলে মহেন্দ্র বলিল, "এরূপে কদিন চলিবে ?"

কল্যাণী বলিল, "বড় অধিক দিন নয়। যতদিন চলে; আমি যতদিন পারি চালাই, তার পর তুমি মেয়েটা লইয়া, নগরে যাইও।" নগরে মহেজের পিতৃষ্পাণ বাস করেন।

মহেক্র। নগরে যদি যাইতে হয় তবে, তোমায় বা কেন এত ছঃখ দিই। চল না এখনই যাই।

পরে ছইজনে অনেক তর্ক বিতর্ক হইল।

ক। নগরে গেলে কি কিছু বিশেষ উপকার হইবে? ম। সেস্থান হয় ত এমনি জনশ্না, প্রাণরকার উপায়শ্ন্য, হইয়াছে।

ক। যদি তাহাই হইরা থাকে, তবে
মুরশিদাবাদ, কাশিমবাদার বা কলিকাতায় গেলে প্রাণরক্ষা হইতে পারিবে।
এস্থান ত্যাগ করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য।
মহেক্র বলিল, ''এই বাড়ী বছকাল হ-

মহেক্র বলিল, ''এই বাড়ী বস্তকাল হ-ইতে পুরুষাত্মক্রমে সঞ্চিত ধনে পরিপূর্ণ; ইহা যে সব চোরে লুঠিয়া লইবে।''

ক। লুঠিতে আসিলে আমরা কি
ত্ইজনে রাখিতে পারিব। প্রাণে না
বাঁচিলে ধন ভোগ করিবে কে? চল,
এখনও বন্ধ সন্দ করিয়া যাই। যদি প্রাণে
বাঁচি ফিরিয়া আসিয়া ভোগ করিব।

মহেক্র জিজাসা করিলেন, ''তুমি পথ হাঁটিতে পারিবে কি ? বেহারা ত সব মরিমা গিয়াছে, গোরু আছে ত গাড়ো-য়ান নাই, গাড়োয়ান আছে ত গোরু নাই।''

ক। আমি পথ হাটব, তুমি চিস্তা ক্রিওনা।

কলাণী মনে মনে স্থির করিলেন থে, না হয় পথে মুরিয়াপড়িয়া থাকিব,তবু ভ ইহারা ছইজন বাঁচিবে।

পরদিন প্রভাতে ছইজনে কিছু জর্থ সঙ্গে লইয়া, ঘরদারের চাবি বন্ধ করিয়া, গোরুশুলি ছাড়িয়া দিয়া, কন্যাটীকে কোলে লইয়া, রাজধানীর উদ্দেশে যাত্রা করিলেন। যাত্রাকালে সহেক্ত

<sup>• 🔭</sup> নগুর বা রাজনগর--- দাবেক বীরভূম রাজ্যের রাজধানী

বলিলেন, ''পথ অতি ছুর্গম। পায়ে পারে ডাকান্ত, সুঠেড়া ফিরিতেছে। শুধু হাতে বাওয়া উচিত নয়।" এই বলিয়া মহেক্স গৃহে ফিরিয়া আসিয়া বন্ধক,গুলি, বারদ সইয়া গেলেন।

দেখিয়া কল্যাণী বলিলেন, "যদি আন্তের কথা মনে করিলে, তবে তুমি একবার স্থক্মারীকে ধর। আমিও হাতিয়ার লইয়া আসিব।" এই বলিয়া কল্যাণী কন্যাকে মহেক্তের কোলে দিয়া গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

মহেন্দ্র বলিল, "ভূমি আবার কি হাতিয়ার লইবে?" এই বলিয়া মহেন্দ্র তাহার পাছু পাছু গৃহপ্রবেশ করিলেন। আসিয়া দেখিলেন, কলাানী একথানা রূপাবাধা ছোরা কোথা হইতে বাহির করিয়া আবার ভাহা রাখিল। বলিল, "এ অক্স স্ত্রীজাতির নয়।" এই বলিয়া আর কি খুঁজিতে লাগিল।

**मर्ट्स विनन-"आवात कि ?"** 

কল্যাণী বলিল, "কিছু না।" এই বলিয়া কল্যাণী একটি বিষের কুঁল কৌটা বল্পমধ্যে লুকাইল। ছঃখের দিনে কবে কপালে কি হন্ন বলিয়া কল্যাণী পূর্নেই বিষ সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিলেন।

জ্যৈষ্ঠমাস, দারুণ রৌদ্র, পৃথিবী অগ্নিমর, বায়তে আগুন ছড়াইটেছে, আকাশ তপ্ত জামার চাঁদোমার মত, প-থের ধূলিসকল অগ্নিফুলিস্বৎ। কল্যাণী ঘামিতে লাগিল, কখনও বাবলা গাঁছের ছায়ায়, কখনও খেজুরগাছের ছারায় বসিয়া বসিয়া, শুদ্ধ পুক্রিণীর কর্দমানর কলপান করিয়া কত কন্তে পথ চলিতে লাগিল। মেয়েটা মহেক্রের কোলে—এক একবার মহেক্র মেয়েকে বাতাস দেয়। একবার এক নিবিড় লামানলপত্রর জিত ক্ষণক ক্ষমসংযুক্ত লতাবেষ্টিত রহং বক্ষের ছায়ায় বসিয়া ছইজনে বিশ্রাম করিল। মহেক্র কল্যাণীর শ্রমসহিষ্ণুতা দেখিয়া বিশ্বিত ছইলেন। বস্ত্র ভিজাইয়া মহেক্র, নিকটত্ত পালল ছইতে জল আনিয়া আপনার ও কল্যাণীর মুখে, হক্তে, পদে, কপালে, জলসেক করিলেন।

कनानी किकिः विश्व इटेरनन वरहे, ক্<u>ত্র</u> ছইজনে কুধায় বড় আকুল হইলেন। তাওঁ সহা হয়—মেয়েটীর ক্ষুধা ভৃষ্ণা সহ হয় না। অতএব আবার তাহারা পথ বা-হিয়া চলিলেন। সেই অগ্নিতরঙ্গ সম্ভরণ ক -রিয়া শন্ধারপূর্বে এক চটীতে পৌছিলেন। মহেন্দ্রের মনে মনে বড় আশাছিল,চটীতে গিয়া স্ত্রী কন্যার মুখে শীতল জুল দিতে পারিবেন, প্রাণরকার ভলা মুখে, আহার দিতে পারিবেন। কিন্তু কই? চটীতে ত মহুষ্য নাই ৷ বড় বড় ঘর পড়িয়া স্থাছে, মাফুষদকল পলাইয়াছে। মহেক্র ইতি ন্ততঃ নিরীক্ষণ করিয়া স্ত্রী কন্যাকে একটি ঘরের ভিতর শোয়াইলেন। বাহির হইয়া উচৈচঃস্বরে ডাক হাঁক করিতে ना शिलन्। कार्ड ७ छे छ । हानन ना।, जथन मरहद्ध कनाागीरक वनितन, একটু ভুমি সাহদ করিয়া একা থাক,

দেশে যদি গাই থাকে, জীক্ষণ দয়া করুন,
আসি হুধ আনিব। এই বলিয়া একটা
মাটার কলদী হাতে করিয়া মহেজ্র নিজ্ঞান্ত
হইলেন। কলদী অনেক পড়িয়া ছিল।

#### দ্বিতীয় পরিচেছদ ।

মহেক্ত চলিয়া গেল। কল্যাণী একা • বালিকা লুইয়া সেই জনশ্ন্যস্থানে প্রায়-' অন্ধকার কুটীরমধ্যে চারিদিক্ নিরীক্ষণ করিতেছিলেন। তাঁহার মনে মনে বড় ভয় হইতেছিল। কেহ কোথাও নাই, মহুষামাত্রের কোন শব্দ পাওয়া যায় না,কেবল শৃগাল কুরুদের রব। ভাবিতে-ছিলেন কেন उांशांक यारें कि निलाम, নাহয় আর কিছুক্ষণ কুধা তৃষ্ণা 🖝 क्तिजाम। मान क्तित्वन हातिपिरकत ছারক্ত করিয়া বসি। কিন্তু একটি ছারেও কপাট বা অর্গল নাই। এইরূপ চারিদিক্ চাহিয়া দেখিতে দেখিতে সমুপস্থ ছারে একটা কি ছায়ার মত দেখিলেন। মহ-যাাক্তি বোধ হয়, কিন্তু মহুষাও বোধ হয় না৷ অতিশয় শুক, শীর্ণ, অতিশয় কৃষ্ণবর্ণ, উলঙ্গ, বিকটাকার মহুষ্যের মত কি আসিয়া বাবে দাঁড়াইল। কিছুক্ষণ পরে সেই ছায়া যেন একটা হাত তুলিল, অভিমাংসাবশিষ্ট, অতি দীর্ঘ, শুক হস্তের **मीर्च ७**क **कत्रुनियात्रा काराटक** रयन সঙ্কেত করিয়া ডাকিল। কল্যাণীর প্রাণ ্ভকাইল। ওঁখন সৈইরূপ আরি একটা हात्र।- ७६, कृष्णवर्ग, मीर्घाकात्र, छेनत्र,-প্রথম ছা্রার পাশে আসিরা দাঁড়াইল।

তার পর আর একটা আদিল। তার পর আরও একটা আদিল। কত আদিল। ধীরে ধীরে নিঃশব্দে তাহারা গৃহমধাে প্রবেশ করিতে লাগিল। সেই প্রোয় অন্ধকার গৃহ নিশীথ শ্মশানের মত ভয়কর হইয়া উঠিল। তগন সেই প্রোত্তন বং মূর্তিগকল কল্যাণী এবং তাঁহার কন্যাকে খেরিয়া দাড়াইল। কল্যাণী প্রায় মূচ্ছিতা হইলেন। একজন তাঁহাকে ধরিল। কল্যাণী মৃচ্ছিতা। ক্লয়ব্ণ শীর্ণ পুরুষেরা তখন কল্যাণী এবং তাঁহার কন্যাকে ধরিয়া ত্লিয়া, গৃহের বাহির করিয়া, মাঠ পার হইয়া এক জঙ্গলমধাে প্রবেশ করিল।

কিছুক্রণ পরে মহেক্র কলসী করিয়া 
ছগ্ধ লইয়া সেইখানে উপস্থিত হইল।
দেখিল কেছ কোথাও নাই, ইতন্ততঃ
অনুসন্ধান করিল, কন্যার নাম ধরিয়া
শেষ ত্রীর নাম ধরিয়া অনেক ডাকিল,
কোন উত্তর, কোন সন্ধান পাইল না।

# ভৃতীয় পরিচ্ছেদ।

ু যে বন্যধাে, দক্ষারা কল্যানীকে নামাইল সে বন অতি মনোহর। আলাে!
নাই, শােভা দেখে এমন চক্ষুও নাই,
দরিজের হৃদয়ান্তর্গত সৌল্র্যোর নাায়
সে বর্নের সৌল্র্যা অদৃত্ত রহিল। দেশে
আহার থাকুক বা না থাকুক—বনে ফ্ল আছে, ফ্লের গদ্ধে সে অদ্ধারেও আলাে।
বােধ হইতেছিল। মধ্যে পরিস্কৃত স্থকোমলাশালাব্ত ভূমিধণ্ডে দক্ষারা ক

नागि ७ डाहांत्र कनारिक नागहिन। তাহারা ভাহাদিগকে ঘেরিয়া বসিল। তথন তাহার৷ বাদামুবাদ করিতে লা-शिन (य ইছामिशक नहेत्रा कि कत्रा यात्र—त्य किছू अनद्भात कना। नीत महत्र ছিল, তাহা পুর্বেই তাহারা হস্তগত করিয়াছিল। একদল তাহার বিভাগে ব্যতিব্যস্ত। অলহারগুলি বিভক্ত হইলে. একজন দহ্য বলিল, ''আমরা সোণারপা नहेशा कि कतित, এक थाना शहना नहेशा কেছ আমাকে একমুটা চাল দাও, ক্ষুধায় প্রাণ যায়— আজ কেবল গাছের পাতা খাইয়া আছি।" একৰন এই কথা বলিলে সকলেই সেইরূপ বলিয়া গোল क्ति (क्वांशिन। "कान मा ७,"" कान मा ७," "কুধায় প্রাণ যায়,সোণারূপা চাছি না।" দলপতি তাহাদিগকে থামাইতে লাগিল, किंद्ध (कह शाम ना, क्रम डेक डेक कथा इहेट नागिन, गानागानि इहेट লাগিল, মারামারির উপক্রম। যে, যে অলঙ্কার ভাগে পাইয়াছিল, সে, সে, অল-ক্ষার রাগে তাহার দলপতির গায়ে ছুড়িয়া मनপতি छुरे क्कब्रनरक. মারিল, তখন সকলে দলপতিকে আর্ক্ত-মণ করিয়া তাহাকে আঘাত করিতে नागिन। मनपठि व्यनाशास भीनं এवः ক্লিষ্ট ছিল, ঘুই এক আঘাতেই ভূপতিত হইয়া প্রাণভাগি করিল। তথন কুধিত, क्टे, উত্তেজিত, खानम्ना मञ्जामरणद गर्धा এकजन रिनन, भुगान कुकुरत्र गाःम थाहेबाहि, कूशांत्र व्यांग यात्र, अम

ভাই, আৰু এই বেটাকে খাই। তথন मकरल खरा कालि विलग्ना छेकानां कविया বম কালি! আজ মরমাংস উঠিল। थाहेव, এই विनया (महे विनीर्नाह कुकः কায় প্রেতবৎ মৃর্ত্তিসকল অন্ধকারে খল থল হাস্য করিয়া, করতালি দিয়া না-চিতে আরম্ভ করিল। দলপতির দেহ পোড়াইবার জন্য একজন অগ্নি জালিতে প্রারুর হইল। শুদ্ধ লতা, কাঠ, তুণ আহরণ করিয়া, চকমর্কি সোলায় আগুন कतिया, त्मरे जुनकार्ध खानिया मिल। তথন অল অল অগি জলিতে জলিতে পার্শ্ববর্ত্তী আম্র, অমীর,পনস,তাল, ভিস্তিড়ী, ধর্জ্ব প্রভৃতির শ্যামল পরবরাজি, অর অ প্রভাসিত হইতে লাগিল। কোথাও জলিত্তে আলোতে (काथां उपात्र डेब्बन इरेन। (का-পাও অস্ক্রকার আবিও গাঢ় হইল। অগ্নি প্রস্তুত হইলে, একজন মৃত্পবের পা ধরিয়া টানিয়া আগুনে ফেলিতে গেল। তথন আর এুকুল্ন বলিল, ''রাথ ভাই রাথ, রও, রও, যদি মহামাংস. থাইয়াই আৰু প্ৰাণ রাখিতে হইবে, তবে এই বুড়ার গুক্ন মাংস কেন अই। আৰু যাহা লুঠিয়া আনিয়াছি তাহাই° थाहेव; এम अ किटिमदब्रहाटक পোড़ाहेब्रा थारे।" जात्र अकलन वनिन, "याहा रह পোড়া বাপু, আর কুধা সয় না।" তখন সকলেই লোলুপ হইয়া যেখানে कनानी कना नहेश छहेशाहिन, (महे मिटक **ठा**दिन। दिनशिन द्वी, ∙दैनश्वान

শুদ্য, কনাও নাই, মাতাও নাই।
দক্ষাদিগের বিবাদের সময়ে ক্যোগ
দেখিরা, কল্যাণী কন্যা কোলে করিয়া
কন্যার মুখে স্তনটি দিরা, বনমধ্যে পলাইরাছে। শিকার পলাইয়াছে দেখিয়া,
মার্ মার্ শব্দ করিয়া, সেই প্রেতমৃত্তি
দক্ষাদল চারিদিকে ছুটল। অবস্থাবিশেবে
-মস্বা হিংক্স জন্তমাত্র।

### চতুর্থ পরিচেছদ।

বন অতাত অন্ধকার, কল্যাণী ভাহার ভিতর পথ পায় না। বৃক্লভাকণ্টকের ঘনবিন্যাসে একে পথ নাই, ভাহাতে আবার ঘনাক্ষকার। বুক্ষলতাক্ট্র ভেদ করিয়া কল্যাণী বনমধ্যে প্রবেশ করিতে লাগিল। মেয়েটীর গায়ে কাটা कृष्टिक लाशिल, त्यरशेषे यरश यरश कैं। দিতে লাগিল, শুনিয়া দহারা আরও চীৎকার করিতে লাগিল। কল্যাণী এইরূপে ক্ষিরাক্তকলেবর হইয়া অনেক-**मृत वनगः शा थार्यभ कतिराम ।** कियू९-कन भटक इंट्डियोम्स इहेल। কল্যাণীর মনে কিছু ভরসা ছিল যে, অন্ধকারে ভাঁহাকে দহারা দেখিভে . शांडे दि ना, किय़ १ क्या निवन्छ रहेरव ; किंद्ध अक्नार्ग हत्सामग्र हाअशांत्र, দে ভরসা গেল। চাঁদ আকাশে উঠিয়া বনের মাথার উপর আলো ঢালিয়া দিল—ভিতরে বনের অন্ধকার আলোতে ভিভিয়া উঠি**न। अक्षका**त উজ্জ্ব হ-<sup>ইল।</sup> ন্মান্থে মাঝে ছিলের ভিতর দিয়া,

चाला वरनत छिठत धारवण कतित्रा, উঁকি ঝুঁকি মারিতে লাগিল। চাঁদ যত উঁচুতে উঠিতে লাগিল, তত আরও আংলো বনে চুকিতে লাগিল, অন্ধকার **সকল আরও বনের ভিতর লুকাইতে** লাগিল। কলাণী কন্যা লইয়া আরও বনের কোণের ভিতর লুকাইতে লাগিল। তখন দস্যুরা ভারও চীৎকার করিয়া চারিদিক্ হইতে ছুটিয়া আসিতে লাগিল —কন্যাটি ভয় পাইয়া আরও চীৎকার করিয়া কাঁদিতে লাগিল। কল্যাণী তখন নিরস্ত হইয়া আর পলায়নের চেষ্টা করিলেন না। এক বৃহৎ বৃক্ষতলে কণ্টকশূনা তৃণময়স্থানে বসিয়া কন্যাকে ক্রেড়ে করিয়া কেবল ডাকিতে লাগি-লেন, '' কোথায় তুমি, যাঁহাকে আমি নিত্য পূজা করি, নিত্য নমস্বার করি, যাঁহার ভরসায় এই বনমধ্যেও প্রবেশ করিতে পারিয়াছিলাম, কোথায় ভূমি হে মধুহদন !'' দেই সময়ে ভয়ে ভক্তির প্রগাঢ়তার কুধা ভ্ঞার অবসাদে কল্যাণী ক্রে বাহ্জানশ্ন্য,আভ্যন্তরিক চৈত্ন্য-ময় হইয়া ভনিতে লাগিলেন, অস্তু-রীকে স্বর্গীয়স্বরে গীত হইতেছে—

" হরে মুরারে মধুকৈটভারে গোপাল গোবিন্দ মুকুন্দ সৌরে বরে মুরারে মধুকৈটভারে।"

কল্যাণী বাদ্যকালাবধি পুরাণ গুনিয়া-ছিলেন, যে দেবর্ষি গগনপথে বীণা-ষত্তে হরিনাম করিতে করিতে ভ্বন ভ্রমণ করিয়া থাকেন; তাঁহার মনে সেই করনা জাগরিত ছইতে লাগিল। মনে
মনে দেখিতে লাগিলেন, শুভাগরীর,
শুভাকেশ, শুদ্রশাশ্র, শুভাবসন, মহা
শারীর, মহামুনি বীণাহন্তে চন্ত্রালোকপ্রদীপ্ত নীলাকাশপণে গাইতেছেন,

" হরে মুরারে মধুকৈটভারে।" ক্রমে গীজ নিকটবর্তী হইজে লাগিল, মারও স্পষ্ট শুনিতে লাগিলেন, ''হরে

শারও ক্রান্ডে লাগিবেন, ব্রর ম্রারে মধুকৈটভারে " ক্রেনে আরও নিকট—আরও ক্রেউ—

" হরে মুরারে মধুকৈটভারে।"
শেষে কল্যাণীর মাথার উপর বনস্থাী প্রতিধ্বনিত করিয়া গীত বাজিল,

"इर्द्र भूतारत भशूरेक देखारत।"

কল্যানী তথন নয়নোন্মীলন করি লেন। সেই অর্কজুট বনার্কারবিমিশ্র চক্তরেশিতে দেখিলেন, সমূথে সেই শুল শরীর, শুলুকেশ, শুলুম্বল, শুলুবসন, ঋষিমূর্তি! অনামনে তথাভূতচেতনে ক-নাণী মনে করিলেন প্রণাম করিব, কিছ প্রণাম করিতে পারিলেন না, মাপা নোহাইতে একেবারে চেভ্রনাপূন্য হইয়া ভূতল্যারিনী ইইলেম।

## পঞ্চম পরিক্ষেদ।

সেই বনমধ্যে এক প্রকাপ ভূমিথণ্ডে ভর্মালাগণ্ড সকলে পরিবেটিছ হইর।
একটি বৃহৎ মঠ আছে। প্রাণত্ত্ববিদেরা দেখিলে বলিতে পারিতেন,
ইহা প্রকালে বৌশ্বদিগের বিহার
ছিল—তার পরে ছিল্র মঠ হইরাছে।

**ब्रोडिकाट्यनी दिङ्ग-गर्या वह्**तिश (प्रवमित्र धदः मञ्जूष माहेमिन्द्र। সকলই প্রায় প্রাচীরে বেষ্টিত আর বহি: হ্রিড বন্যবুক্ত শ্ৰেণীৰারা चाष्ट्रज्ञ ८ग निनमारन चनिकृत हहेरछ उ কেহ বুঝিতে পারে না যে এখানে (काठा चारह। चहानिका मकन **चर**नक " স্থানেই ভগ किन्छ निनमादन **যায় যে সকল স্থান সম্প্রতি মেরামর্ २३ बाट्ड। ८ म विटल्डे काना** यात्र त्य, এই গভীর ছর্ভেদ্য অর্বামধ্যে মহুষ্য বাস করে। এই মঠের একটি কুঠারী मस्या এकটा वड़ कूँगा जनिटिह्न, ভাহার ভিতর কলাাণীর প্রথম চৈতন্য इहेरन (मिंदिनन, मण्रास मिहे अन्मतीय ভ্ৰবসন মহাপুৰুষ। ফল্যাণী বিশিত। लाहरन आवात्र हाहिएक गातिरमन, এখনও স্বৃত্তি পুনরাগমন করিতেছিল না। उथनं महाशुक्रव विशासन, "मा क एमन-তার ঠাই, শহা করিও না। একটু ছ্ধ আছে তুমি পাও তার প্র ভোমার महिङ कथा कहित।" ' :

কল্যাণী প্রথমে কিছুই বুঝিছে পারি

লেন না; ভার পর ক্রমে ক্রন্সে ননের
কিছু হৈর্যা হইলে, গলায় আঁচল দিয়া
ভারাকে একটি প্রধাম করিলেন। তিনি
স্থমলক আশীর্কাদ করিয়া গৃহান্তর
হইতে একটি স্থপন্ধ মৃৎপাত্র বাহিব
করিয়া সেই জ্লন্ত অগ্নিক্তে ত্থা উত্তথ্ঞ,
ক্রিলেন। ত্থা তথা হইলে কল্যাণীকে
ভারা দিরা ব্লিলেন,

"মা কন্যাকে কিছু খাওয়াও, আপনি কিছু **খাও, তাহার পর কথা কহিব।**" ক্লাণী হাইচিত্তে কন্যাকে চ্গ্নপান করাইতে আরও করিলেন। তথন সেই •পুরুষ ''আমি যতক্ষণ না আসি কোন চিস্তা কল্পিও না'' বলিয়া ম কিব র <u> इंटेट वाहिरत शिलाग। वाहित इंटेटक</u> ক্ষিয়ৎকাল 'পরে ফিরিয়া আসিয়া দেখি-লেন যে, কল্যাণী কন্যাকে ভূধ থাওয়ান সমাপদ করিখাছেন' বটে; কিন্তু আপনি किছू थान नारे; इक्ष (यमन हिन आत তেমনই আছে, অতি অৱই বায় ইই-য়াছে। সেই পুরুষ তথন বলিলেন, " মা, তুমি হুধ থাও নাই, আমি আবার वाहित्त याहेटछिह, जुनि छ्रध ना शाहेटन कित्रिव ना।"

সেই ঋষিতৃলা পুক্ষ এই বলিয়া বাহিবে ঘাইতেভিলেন, কল্যাণী আবার জাহাকে প্রণাম করিয়া যোড়ফাত করি-লেন—

বনবাদী বৃদ্ধিলন, ''কি বলিবে ?'' তথন কলাণী বলিলেন, ''আমাকে ত্ধ খাইতে আজ্ঞা কয়িবেন না—কোন বাধা আঁছে, ভামি খাইৰ না।''

'তখন বনবাসী অতি ককণখনে বলিলেন, 'কি বাধা আছে, আমাকে বল—আমি বনবাসী ব্ৰহ্মচানী, তুমি আমার কনাা, ভোমার এমন কি কথা আছে যে, আমাকে বলিবে না i আমি ব্যান বন ছইতে ভোমাকে অজ্ঞানি অবহায়' ভূমিয়া আনি, তৎকালে তো

মাকে অভাস্ত কুংপিপাসাপীড়িভা খোধ হইরাছিল, ভূমি না থাইলে বাঁচিবে কি প্রকারে ?"

কলাণী তথন গলদ শলোচনে বলি-লেন, "আপনি দেবতা, আপনাকে বলিব —-আসার স্থামী এপর্য্যন্ত অভুক্ত আছেন, তাঁহাব সাক্ষাৎ না পাইলে, কিম্বা তাঁহার ভোজনস্থাদ না শুনিলে, আমি কি প্রকারে পাইব ?"

বৃদ্ধচারী ভিজ্ঞাসা করিলেন, ''তোমার স্বামী কোণায় ?''

कलांगी विलालन, ''छाश जांगि जानि না-তিনি ছুধের সন্ধানে বাহির হ-ইলে পর দহারা আনাকে চুরি করিয়া লইয়া আদিয়াছে।" তখন একচারী এ-কটি একটি করিয়া প্রশ্ন করিয়া কল্যাণী এবং তাঁহার স্বামীব বুক্তান্ত গমুদ্য অব-গত হইলেন। কল্যাণী স্বামীর নাম विशासन मां, विशास भारतम मां, कि আর আর পরিচয়েব পরে ব্রহ্মচারী বৃঝি-লেন। জিজ্ঞাসা করিলেন, "ভূমিই মছে-জের পত্নী ?!' কলাণী নিরুত্তর হইয়া রুছিলেন। তথ্ন ব্রহ্মচারী বলিলেন, ''জুমি আমার বাকা পালন কর, হুগ্ধ পান কর, আমি তোমার স্বামীর সংব:দ আনিতেছি তুমি হুধ না থাইলে আমি याहेर माँ।" कनाानी रनिरनन, "এक हू জল এখানে আছে কি ?" ব্ৰহ্মতারী জল-कत्रन (पशहिशा पिट्ननः অঞ্চল পাতিলেন, এন্দচারী অঞ্চলি পু-রিয়া জল ঢালিয়া দিলেন।

সেই জলাঞ্চলি ব্রহ্মচারীর পদমূলে লইরা গিরা বলিলেন, "আপনি ইহাতে পদরেণু দিন।" ব্রহ্মচারী অস্তুষ্ঠের হারা জল স্পর্শ করিলে কল্যানী সেই জলাঞ্চলি পান করিলেন এবং বলিলেন "আরি অমৃতপান করিয়াছ— আর কিছু খাইতে বলিবেন না— স্বামীর সম্বাদ না পাইলে আর কিছু খাইব না।" ব্রহ্মচারী তথন বলিলেন, "তুমি নির্ভয়ে এই দেউলমধ্যে অবস্থিতি কর, আমি ভোনার স্বামীর সম্বানে চলিলাম।"

#### यर्छ পরিচেছদ।

রাত্রি অনেক। টাদ মাথার উপর, श्रृर्वहक्त नरह, जाता एक श्रेशव नरह। এক অতি বিস্থীণ প্রাস্থবের উপর সেই অন্ধকারের ছায়াবিশিষ্ট অস্পষ্ট আলো পড়িরাছে। সে আলোকে মাঠেব এপ'ব ওপার দেখা বাইতেছে না, মাঠে কি चाड़, क चाड़ क्या या है हिड ना। মাঠ যেন অনন্ত, জনশুনা, ভারের আবাদ-স্থান বলিয়া বোধ হইতেছে। পেই মাঠ দিয়া মুরশিদাবাদ যাইবার রাস্তা। গ্র-স্তার ধারে একটি কুদ্র পাহাড়। পাহা-एड़ डेभर घरनक बाञ्चामितूका गा (इत याथा मकल, हारमत चारमाएड উজ্জল হইরা সর্পর্করিয়া কাঁপিতেছে, ভাহার ছায়া কালপাণবের উপর কাল হটয়া পড়িয়া ভৰ্তর্ করিয়া • কাঁণি-्रुट्ड। तुन्नहांबी स्मृहे शाहास्त्र है भर

উঠিয়া শিপরে দাড়াইরা স্তব্ধ হইয়া শুনিতে লাগিলেন—কি শুনিতে লাগি-লেন বলিতে পারি না। সেই অন্ত-जुना প্রান্তরেও কোন শব্দ নাই---কেবন ৰুক্ষাদির মন্মরশব্দ। একস্থানে পাছা-ড়ের মৃলের নিকটে বড় অঙ্গল। উ-পরে পাহাড়, নীচে রাজপথ, মধ্যে (मरे बन्ना। (मर्थात कि भक्त इहेन विनाट भारि ना-जन्महात्री स्मरे मिरक (शरनन। निविष् अन्नस्या ध्यर्वम कतितनन, (मधितनन, (महे वनमध्य বৃক্ষরাজির অন্ধকারতলদেশে সারি সারি সারি গাছের নীচে মানুষ বদিয়া আছে। মানুষদকল দীর্ঘাকার, ক্লফুকার, স শন্ধ, বিটপনিচ্ছেদে নিপ্তিত জাোংলাৰ তাহাদের মার্জিত আয়ুধ সকল জলি-তেছে। এমন ছুইশত লোক বসিয়া আছে-একটি কথাও কহিতেছে ন ব্ৰহ্মচাৰী ধীরে ধীরে ভাছাদিগের মধ্যে शिया कि धक्रो देशिक क्रिलिन- (क्र উঠিন না, কেছ কথা कंदित ना, কেছ কোন শব্দ করিল না। তিনি সকলেব্ मञ्जूष निम्ना मकलाक मिथिएक मिथिएक रगटलन, अक्रकाटन मुचलाटन छाहिया निती-ক্ষৰ করিতে করিতে গেলেন,যেন কাহাকে भूँ बिट्ड एवन शाहेर छ एवन ना। भूँ बिश খুঁ কিয়া একজনকৈ চিনিয়া তাহার অঞ্ न्धर्भ कतिया **हेकिक क**तिस्ति। हेकि कतिराउँ (म छेठिल। अभागती जाशार्व লহয়া দূরে আসিরা দাড়াইলেন ৷ এই ताकि गुनाभक्त-धनक्ता/ अनुस्था कार्ड

তাহার চক্রবদন জাত্ত — সে ব্লিষ্টকায়, জতি অন্দর পুরুষ। সে গৈরিকবসন পরিধান করিয়াছে — স্কাক্ষে চন্দন-শোভা। ব্রহ্মচারী তাহাকে বলিলেন, "ভবানন্দ, মহেন্দ্রসিংহের কোন স্থাদ রাথ ?"

ভবানন্দ তথন বলিল, "মহেন্দ্র সিংহ আরু প্রাতে স্ত্রী কন্যা লইরা গৃহত্যাগ করিয়া মুরশিদাবাদের পথে যাইতেছিল, চটীতে—"

এই পর্যাস্ত বলাতে ব্রহ্মচারী বলিলেন "চটাতে যাহা ছটিয়াছে ভাহা,জানি। স্বস্তানের একাজ নহৈ। কে করিল ?"

ভবা। গেঁরো চাষালোক বোধ
হয়। এখন দকল গ্রামের চাষাভূষো
পেটের জ্বালায় ডাকাত হইয়াছে। আজ
কাল কে ডাকাত নয়? আমরাই আজ
লুটিয়া খাইয়াছি—কোভোয়াল সাহেবের তুই মণ চাউল ঘাইওছিল—তাহা
গ্রহণ করিয়া বৈষ্ণবের ভোগে লাগাইয়াছি।

ব্ৰদ্যারী হাসিয়া বলিলেন, "চোরের হাত হতে আমি তাহার ত্রী কন্যাকে উদ্ধার করিয়াছি। এখন তাহাদিগঞে বৈঠে রাখিয়া আসিয়াছি। এখন তোমার উপর ভার যে মহেক্সকে খুঁজিয়া তাহার ত্রী কন্যা তাহাব জিম্মা করিয়া দেও। এখানে জীবানন্দ থা-কিলে কুর্যোজার হইবে।"

ভবানন স্বীকৃত হইল। একচারী তথন স্থানাস্তরে গেলেন।

#### সপ্তম পরিচ্ছেদ।

চটীতে বিষয়া ভাবিষা, কোন ফলোদর
ছইবে না বিবেচনা করিয়া মহেজ্র
পাত্রোখান করিলেন। রাজনগরে গিয়া
রাজপুক্ষদিগের সহায়তায় ল্রী কন্যার
অনুসন্ধান করিবেন এই বিবেচনায় সেই
দিকেই চলিলেন। কিছু দ্র গিয়া
পথিমধ্যে দেখিলেন, কতকগুলি গোরুর
গাড়ী ভেরিয়া অনেকগুলি সিপাহী চলিয়াছে। "রাজনগর, বা নগর" কি
তাহা ব্রাইতে হইতেছে।

১১৭৬ দালে বীরভূম প্রভৃতি প্রদেশ
ইংরেজের শাসনাধীন হইয়াও হয় নাই।
ইংরেজ তথন বাঙ্গালার দেওয়ান্।
তাঁহারা থাজনার টাকা আদার করিয়ালন, কিন্তু তথনও প্রাণ সম্পত্তি প্রভৃতি
রক্ষণাবেক্ষণের কোন ভার লয়েন নাই।
তথন টাকা লইবার ভার ইংরেজের আর
প্রাণ সম্পত্তি রক্ষণাবেক্ষণের ভার
প্রাণ সম্পত্তি রক্ষণাবেক্ষণের ভার
প্রাণ সম্পত্তি রক্ষণাবেক্ষণের ভার
প্রাণি নরাধম বিখাসহতা মহুষাকুলকলর মীর্জাফরের উপর। মীর্জাক্র
আত্মরকার অক্ষম, বাঙ্গালা রক্ষা করিবে
কি প্রকারে। মীর্জাক্র গুলিগার ও
ঘুমায়। ইংরেজ টাকা আদায় করে ও
ডেস্পাচ্লেখে। বাঙ্গালি কাঁদে আর
উৎসর গাঁয়।

বাঙ্গালার পক্ষে শাধারণ নিয়ম এই। কৃত্ব বীরভূম প্রভৃতি প্রদেশ সহজে একটু স্বতন্ত্র বন্দোবস্ত ছিল। বীরভূম

अम्प्रिम वीतकृत्मत त्रामात अभीता। त्राम-লগর কা লগর---ভাঁছাদেরই রাজধানী। वीत्रकृत्मत्र त्राषात्रा शृद्ध याधीन हित्तन, गच्छि यूत्रणिमावारमत अधीन इहेग्रा-ছিলেন। পূর্বে বীরভূমে হিন্দুরাই স্বাধীন রাজা ছিলেন। কিন্তু আ্ধুনিক রাজবংশ ষে সময়ের কথা লিখি-बुगन्यान । ভেছি, ভাহার পূর্বের রাজা আলিনকি খাঁ বাহাত্র দিরাজ উদৌলার সহায়তায় किছ नचारे टोजारे कतिया कलिकांजा লুটিরা আসিয়াছিলেন। তার পর ক্লাই বের পাছকাম্পর্শে মুসলমানজনা সার্থক করিয়া, বেহেস্তে যাত্রা করিবার উন্মুণ **হ**ইরাছিলেন। বাঙ্গালার অন্যান্য অং-শের ন্যায় বীরভূমের কর ইংরেঞ্কের কিছ শাসনের ভার বীবভূমের রাজার উপর। যেখানে আপনাদিগের প্রাপা কব ইংরেজেরা আপনারা আদায় করিতেন, সেখানে ভাঁহারা এক এক কালেক্টার নিযুক্ত করিয়াছিলেন। কিছ বীরভূম প্রদেশে এ পর্যান্তও কালেক্টার নিযুক্ত<sup>ে</sup> হয় নাই। রাজাই ইংরেজের কর আদার করিয়া কলিকাভান্ন পাঠ।ইয়া দিতেন। অতএব বীরভূমের খালনা কলিকা-छात्र यात्र। त्लाक ना शहेश मझक, খাদনা আদায় বন্ধ হয় না। তবে ভভ আলায় হইয়া উঠে নাই—কেন না মাতা वस्य की धन धानव ना कतिरल धन (कह গড়িতে পারে না। যাহা হউক, যাহা কিছু আলায় হইয়াছে, তাহা গাড়ী বো-

ঝাই ছইয়া দিপাহীর পাছারায় কলিকা ভার কোম্পানির ধনাগারে ঘাইভেডিল । আজিকার দিনে দক্ষাভীতি অতিশয় প্র: वल, अजना भकाम जन ममञ्ज मिनाही · গাড়ীর অগ্রপশ্চাৎ শ্রেণীবদ্ধ হটয়া সঙ্গীন থাড়া করিয়া যাইতেছিল। তাহা-দিগের অধাক্ষ একজন গোরা। সে কোম্পানীর চাকর নছে। দেখীর রাজ-গণের সৈন্যগণ্মধ্যে তখন অনেক গোরা অধ্যক্ষতা করিত। গোবা দর্ম্বপশ্চাৎ ছো-ড়ায় চড়িয়া চলিয়াছিল। রৌদের জন্য नित्न गिপाशीता भथ চলে ना, बाद्य চলে। চলিতে চলিতে সেই থাজনার গাড়ী ও দৈনা সামস্তে মহেলেব গভি রোধ হইল। মহেজ দিপাহী ও গোরুর গাড়ী কর্ত্ত পথরুদ্ধ দেখিয়া, পাশ দিয়া দাড়াইবেন। তথাপি সিপাহীরা তাহার গা ভেঁসিয়া যায়—দেখিয়া, এবং विवादमत मनत्र नत्र विविचना कतिया. তিনি পথপার্ছ জঙ্গলের ধারে গিয়া দাড়াইলেন।

তথৰ একজন দিপাহী বলিল, 'এহি
একঠে। ডাকু ভাগতা হাায়।'' মহেক্রের
হাতে বন্দুক দেপিয়া এ বিখাদ তালার
দৃঢ় হইল। সে তাড়াইরা গিরা মহেক্রের গলা ধরিল। এবং শালা—চোর—
বলিয়াই এক খুসা সহসা মারিল ও বন্দুক
কাড়িয়া লইল। মহেক্র রিক্ত হস্তে কেবল
খুবাটি ফিরাইয়া মারিল। মহেক্রের একটু
রাগ যে বেশী হইরাছিল তাহা বলা বাহলা।
ঘুনাটি থাইরা সিপাহী মহাশয় খুরিয়া অফ্র-

তন হইরা রাস্তার পড়িলেন। তথন তিন চারিজন দিপাহী আদিরা মহেন্দ্রকে ধরিরা ভোরে টানিয়া সেনাপতি সাহেবের निक्छे. नहेंग्रा त्रान् अवः সাह्र्वरक বলিল যে, এই ব্যক্তি একজন দিপাহীকে খুন করিয়াছে। সাহেব পাইপ খাইতে-हिलान, मामत (बाँदिक धकरेशानि निस्तल हिर्दिन, विलितन, " भागारका शाक फ़-লেকে সাদি করো।" সিপাহীরা বু-बिट्ड शांतिन् ना त्य, वल्क्शांती ভাকাতকৈ ভাহারা কিপ্রকারে বিবাহ कत्रितः। किञ्च त्रभा छूछित्न সাह्टत्वत মত ফিরিবে বিবেচনায় ভিন চারিজন সিপাহী গাড়ীর গোরুর দড়ি দিয়া মহেক্সকে হাতে পারে বাধিয়া গোরুর গাড়ীতে তুলিল। মহেক্স দেখিলেন, এত লোকের সঙ্গে জোর করা বুথা, জোর করিয়া মুক্তিলাভ করিয়াই বা কি इरेटा जी कनात भारक मृद्दक काछत्र, वै। विवाद कांग है छ। ছিল,না। নিপাহীরা মহেক্রকে উত্তম করিয়া গাড়ীর চাকার সঙ্গে বাধিল। পরে সিপাহীরা থাজানা বইয়া বেমন চলিভেছিল, ভেমনি মুছ্গন্তীরপর্দে र्दशिस ।

অফ্টম পরিচেছদ।

বৃদ্ধারীর আজা পাইরা ভবানন্দ মৃহু মৃহু হরিনাম করিতে করিছে, যে চটীতে মহেজ বসিয়াছিল, সেই চটীর দিকে চলিলেন। সেইখানেই মছেক্সের সন্ধান পাওয়া সম্ভৰ বিবেচনা করিলেন। পাঠক এইস্থানে দিঙ্ক্রিপণ কর্মন। সে সময়ে ইংরেজের ক্বত আধুনিক রাস্তা ছিল না। রাজনগর হইতে কলিকাভায় আসিতে হইলে, যাহাকে এফণে দাবেক বেণারস রোড্ বলে সেই রান্তায় পড়িয়া আসিতে হইবে। প্রধানতঃ বাজনগর ছইতে দক্ষিণাভিমুধ আসিতে इटेंदि । गर्वस थ পদ্চিত হইতে রাজনগর যাইতে দক্ষিণ **ट्**रेट উত্তর দিকে যাইতেছিলেন। এইজন্য পথে সিপাহীদিগের সঙ্গে ঠা-হার সাক্ষাৎ হইয়াছিল। ভবানন তাল-পাহাড় হইতে যে চটীর দিকে চলিলেন, সেও দক্ষিণ হইতে উত্তর। যাইতে যাইতে কাজে কাজেই অচিরাৎ ধন-রক্ষাকারী সিপাহীদিগের সন্থিত সাক্ষাৎ হইল। তিনিও মহেক্রের ন্যায় সিপাহী-मिशक थाम मिलन। একে मिथाही निरात महरकरे विषाम हिल, य वहे চালান - লুঠ করিবার জন্য ডাকাই-তেরা অবশ্য চেষ্টা করিবে তাতে আবার পথমধ্যে একজন ডাকাইতকে গ্রেপ্তার कत्रिशाष्ट्र। काष्ट्र काष्ट्रके छवानम्हरू আবার রাত্রিকালে পথে পাশ দিতে (मिथारि जाशामित्भव विधान हरेन, যে এও আর একজন ডাকাত। অভএব সিণাহীরা তৎক্ষণাৎ ভাছাকেও ধৃত केंत्रिण।

ं ज्यांनक मृष् शंतिकां विल्लान, " ८कम बाशू।"

সিপাহী বলিল, "তোম শালা ডাকু হো।" ভবা। "দেখিতে পাইতেছ, গেরুয়া-বলন পরা জন্ধচারী আমি। ডাকাড কি এই রকম।"

সিপাহী। অনেক শালা ত্রন্ধচারী সম্যাসী ডাকাতী করে। এই বলিরা সিপাহী ভবানন্দের গলাধাকা দিয়া, টানিয়া আনিস। ভবানন্দের চক্ষু সে অন্ধকারে অলিয়া উঠিল। কিন্তু আর কিছু না বলিয়া অভি বিনীতভাবে বলিলন, ''প্রভু কি করিতে হইবে আজা ক্ষুন।''

সিপাহী ভবানন্দের বিনয়ে সম্বষ্ট रहेशा विनन, "त्लिख माना, गार्थ भत এক্ঠো মোট লেও।" এই বলিয়া সি-পাহী ভবানন্দের মাথার উপর একটা তল্পী চাপাইরা দিল। তথন আর এক कम निभाशे ভাষাকে वनिन, "ना, भ-लार्त, यात्र अक भानारक रयशास दर्देश রেখেছ, এ শালাকেও গাড়ীর উপর সেই-थात्म (वैर्ध त्राथ।'' खवानत्मत्र ज्थन কৌভূহল হইল; যে কাছাকে বাধিয়া রাখিয়াছে দেখিব। তখন ভবানন্দ মা-थात उन्नी फिलाया पिया, य निर्णाही তরী মাথার তুলিরা দিরাছিল, ভাহার গালে এক চড় মারিল। স্থভরাং দিপা--হীরা ভবানলকেও বাধিয়া গাড়ীর উপর তৃলিয়া মহেন্তের নিকট ফেলিল। ख्यानक हिनिल (य महक्त निः ।

সিপাহীরা পুনরার অন্যমনকে কোলাহল করিতে করিতে চলিল, আর গোরুর
গাড়ীর চাকার কচ্কচ্ শব্দ হইতে লাগিল,
তখন তবানন্দ ধীরে ধীরে কেবল মহেন্দ্র
মাত্র শুনিতে পার এইরূপ শ্বরে বলিলেন,
''মহেন্দ্র সিংহ, আনি তোমার চিনি,
ভোমার সাহাধ্যের জন্যই আমি এখানে
আসিয়াছি। কে আমি ভাহা এখন
ভোমার শুনিবার প্রেরোজন নাই। আমি
বাহা বলি সাবধানে ভাহা কর। ভোনার
হাতের বাধনটা গাড়ীর চাকার
উপরেরাধ।''

মহেক্স বিশিত হইলেন। কিন্তু বিনা
বাকাবায়ে ভবানন্দের কথাসত কাজ
করিলেন। অন্ধকারে গাড়ীর চাকার
নিকট একটুখানি সরিয়া গিয়া, হত্তবন্ধনরক্জু চাকার স্পর্শ করাইয়া রাখিলেন।
চাকার ঘর্ষণে ক্রমে দড়িট কাটিয়া
গেল। তার পর পায়ের দড়ি ঐরপ
করিয়া কাটিলেন। এইরূপে বন্ধুন
ইতে মুক্ত হইয়া ভবানন্দের পরামর্শে
নিশ্চেট হইয়া গাড়ির উপরে পড়িয়া
রহিলেন। ভবানন্দেও সেইরূপ করিয়া
বন্ধন ছিয় করিলেন। উভরে নিস্তক্ক।

বেখানে সেই জঙ্গলে, যে রাজপথে দাঁড়াইরা, ব্রহ্মচারী চারিদিক্ নিরীক্ষণ করিরাছিলেন সেই পথে ইহাদিগের যাইবার পথ। সেই পাহাড়ের নিক্ট সিপাহীরা পৌছিলে দেখিল যে, পাহাড়ের নীচে একটা চিবির উপর একট মান্ত্র দাঁড়াইরা আছে। চক্সদীপ্ত

নীল আকাশে তাহার কালো শরীর চি-विত इहेगाए (पश्चिम, श्वलमात विनन, "ॐ हाटक, धतियां चान। त्यां विहत्व।" · তখন একজন সিপাছী তাহাকে ধরিতে গেল। সিপাহী ধরিতে যাইতেছে, সে ব্যক্তি স্থির দাড়াইয়া আছে—নড়ে না। সিপাহী তাহাকে ধরিল, িকিছু ব্লিল না। ধরিয়া তাহাকে हा अनुनादतत निक्छ नहेशा चानिन, ज्थ-নও কিছু বলিল না। 'হাওলদার বলি-লেন,"উহার মাথায় মোট দাও।" সিপাহী তাহার মাথায় মোট দিল, সে মাথায় মোট লইল। তথন হাওলদার পিছন ফিরিয়া, গাড়ীর সঙ্গে চলিল। এই ममाय इठा९ अकि शिखालत भक इटेल, হাওলদার মন্তকে বিদ্ধ হইয়া ভূতলে পড়িয়া প্রাণত্যাগ করিল। ''এছি শালা "হাওলদারকো মারা" বলিয়া একুজন সি-পাহী মুটিয়ার হাত ধরিল। মুটিয়ার হাছে তথনও পিন্তল। মুটিয়া মাথার মোট ফেলিয়া দিয়া পিন্তল উল্টাইয়া ধরিয়া সেই দিপাঁহীর মাথায় মারিল, দিপা-হীর মাথা ভাঙ্গিয়া গেল, দে নিরস্ত হইল। সেই সময়ে "হরি! হরি! হরি!" শর্ব করিয়া ছইশত শন্ত্রধারী লোক আসিয়া সিপাহীদিগকে ঘেরিল। সিপা-হীরা তখন সাহেবের আগমন প্রতীকা করিতেছিল। সাহেবও ডাকাত পডিয়াছে বিবেচনা • করিয়া সম্বর গাড়ীর কাছে আসিরা লাইন ফর্ম করিবার স্লাজ্ঞা नित्नुत । उथनहे निभाशीया हातिनित्क

সম্থ কিরিয়া চতুং ভাণ করিয়া দাঁড়াইল।
অধ্যক্ষের পুনর্কার আজ্ঞা পাইয়া তাহারা
বন্দুক তুলিয়া ধরিল। এই সময়ে হঠাৎ
সাহেবের কোমর হইতে তাঁহার অসি
কে কাড়িয়া লইল। লইরাই একাঘাতে
তাঁহার মন্তকচ্ছেদন করিল। সাহেব
ছিন্নশির হইয়া অখ হইতে পড়িয়া গেলে
আর তাহার ফায়ারের হকুম দেওয়া
হইল না। সকলে দেখিল যে, এক ব্যক্তি
গাড়ীর উপরে দাঁড়াইয়া তরবার হন্তে
হরি হরি শক্ষ করিতেছে এবং 'মিপাহী
মার, সিপাহী মার,'' বলিতেছে। দেভবানলা।

সহদা অধ্যক্ষকে ছিন্নশির দেখিয়া এবং রক্ষার জন্য কাহারও নিকটে আজ্ঞা না পাইয়া দিপাহীরা কিয়ৎক্ষণ ভীত ও নিশ্চেষ্ট হইল। এই অবদরে তেজস্বী দম্মরা তাহাদিগের অনেককে হত ও আহত করিয়া গাড়ীর নিকটে আদিয়া টাকার বাক্সকল হস্তগত করিল। দিপাহীরা ভগ্গোৎসাহ ও পরাভৃত হইয়া পলায়নশ্র হইল।

তথন যে ব্যক্তি চিপির উপর দাঁড়াইরা, ছিল, এবং শেষে যুদ্ধের প্রধান নেতৃত্বগ্রহণ
করিরাছিল সে ভবানন্দের নিকট আসিল। উভয়ে তথন আলিঙ্গন করিলে ভবানন্দ বলিলেন, 'ভোই জীবানন্দ সার্থিক ব্রভ-গ্রহণ করিয়াছিলে।''

জীবানন্দ বলিল, ''ভবানন্দ! ভোমার নাম সার্থক হউক!'' অপহাত ধন ম্থা-স্থানে লইয়া যাইবার ব্যবস্থা করণে জীবানন্দ নিযুক্ত হইলেন, তাঁহার অমু-চরবর্গ সহিত শীঘ্রই তিনি স্থানাস্তরে গেলেন। ভবানন্দ একা দাড়াইয়া রহি-লেন।

#### নবম পরিচেছদ।

মহেকু শক্ট হইতে নামিয়া একজন निशाहीत खहतन कांड़िया लहेगा गुरक त्याश मिनाव উদ্যোগী इत्रेश हिलान। কি ব্ৰ এমন সমধে তাঁহাব স্পতিই বেগ হইল যে ইহাবাই দক্ষা; ধনাপহরণ জনাই দিপাহীদিগকে আক্রমণ কবি-রাছে। এইকপ বিবেচনা করিয়া তিনি যুদ্ধখান হইতে সরিয়া গিয়া দাড়াই-লেন। কেন না দহাদের সহায়তা করিলে ভাহাদিগের ত্রাচারের ভাগী হইতে হইবে। তথন তিনি তরবারি ফে-लिया निया थीरत थीरत रम जान जाग করিয়া যাইতেছিলেন, এমন সময়ে ভবা-নন্দ আসিয়া তাঁহার নিকটে দাঁড়াইল। মহেন্দ্র বিজ্ঞাসা করিল. " মহাশয় আ-পনি কে ?"

ভবানক বলিল, '' ভোমার তাতে প্রয়োজন কি ?''

মছে। আমার কিছু প্রয়োজন আইছে। আক্ত আমি আপনার্বারা বিশেষ উপ-কৃত হইরাছি।

ভবা: সে বোধ যে ভোমার আছে এমন ত বুঝিলাম না—ক্ষন্ত করিয়া তফাত রহিলে—ভূমি কি কাপুক্ষ যে যুদ্ধে ভয় পাও ?

ভবানদের কথা ফ্বাইতে না ফ্রা-ইতে, মহেক্স ঘুণার সহিত বলিলেন "যুদ্ধ কই—এ যে ডাকাতি।" ভবানদ বলিল, "হউক ডাকাতি, আমরা তোমার কিছু উপকার করিয়াছি আরও কিছু উপকার করিবাব ইচ্ছা রাখি।"

মহেক্স। তোমরা আমাব কিছু উপ-কার করিয়াছ বটে, কিন্ধু আর কি উপ-কার করিবে ? আব ডাকাতের কাছে এত উপক্বত হওয়ার চেয়ে আমাব অমু-পক্বত থাকাই ভাল।

জবা। উপকার গ্রাহণ কর না কর, তোমার ইচ্চা। যদি ইচ্ছা হয় আমার সঙ্গে আইস। ভোমার স্থীকনার সঙ্গে সাক্ষাৎ করাইব।

भरहक्क किविया नांड़ाहेन। दनिन, "(हिकि ?"

ভবানক সে কথার উত্তর না করিয়া চলিল। অগতা। মহেক্স. সক্ষে সঙ্গে চলিল—মনে মনে ভাবিতে লাগিল এরাদস্থানা দেবতা ?

### मभग পরিচেছদ।

সেই ক্ষোৎসামন্তী রজনীতে ছুইজনে নীরবে প্রাস্তর পার ছুইয়া চলিল। মহেক্র নীরব, শোককাতর, গর্মিত, কিছু কোতৃ ছুলী।

ভবানক সহসা ভিরম্রি ধ্রিণ করি

लान। प्र चित्रम्हिं, धीत श्रीक शित्रमानी व्यात नाहे; प्र तनिन्न्न वीत्रम्हिं—
रेम्नाधारकत मूख्यां ठीत मृद्धिं व्यात नाहे
— ७ थनहे य गर्कि छ्छारत मरहक्तरक जित्रक्षात कति छिल्लिन प्र मृद्धिं व्यात नाहे। येन र्छ्या श्रीक्षा मास्त्रिभालिनी, भृथिवीत श्रीक त्राव्या मास्त्री, भास्तिभालिनी, भृथिवीत श्रीक त्राव्या हिष्कृत विष्मेष कृद्धिं एहेल — ममूज यान हिष्कृति विष्मे व

"বন্দে মাতর॰ স্থলশাং স্ফলাং, মলয়জণীতলাং, ৯ শ্যাশামলাং, মাতরং।\*''

মহেক্ত গীত শুনিয়া কিছু বিশ্বিত 
ইল, কিছু ব্ঝিতে পারিল না — স্কলা 
স্ফলা মূল্যজ্শী হলা শাস:শ্যামলা মাতা 
কে, তা ভ ব্ঝিতে পারিল না — জিজ্ঞাসা 
করিল ' মাতা কে গু'

উত্তর না করিয়া ভবানন্দ গাইতে গাগি**ল।** 

" শুল্ল-কোৎসা-পুলকিত-ঘামিনীং—
ফ্ল-কুস্মিত-জ্ঞ্মদ্র-শোভিনীং
স্থাসিনীং স্মধুরভাষিণীং
স্থাদাং ৰুরদাং মাত্রং।

মহেক্ত বলিল, ''এত দেশ, এত মানয়—''

ভবানক বলিল, "আমবা অন্য মা
মানি না—"জননী জন্ম ভূমিশ্চ স্বর্গাদিশি
গবীয়দী।" আমবা বলি, জন্মভূমিই
জননী; আমাদের মা নাই, বাপ নাই,
ভাই নাই, বন্ধু নাই,—জী নাই, পুল্র
নাই, ঘর নাই, বাড়ী নাই, আমাদের
আছে কেবল সেই স্কলা স্কলা
মলয়জশীতলা, শদ্যশাম্বা,—"

তথন বুঝিয়া মহেক্ত বলিস, তবে আনবারগাও।

ভবানন্দ, আবার গাইল :---"বন্দে মাত্রং স্থলাং স্কলাং, মলয়জশীতলাং, শস্যামলাং, মাতরং। গুল-জ্যোৎসা-পুলকিত-যামিনীং ফুলকুস্মিত-জ্যদল-শোভিনীং সুহাসিনীং সুমধুবভাষিণীং ञ्चामाः बद्रमाः गाउतः। मथ्रकारी को-कलकलनिमाप-कतारल বিষপ্তকোটীভূজৈধৃ তথ্রকরবালে ক্রেলে মাতৃমি অবলে বছবলধারিণীং নমাসি তারিণীং রিপুদলবারিণীং মাতরং।" তুমি বিদাণ তুমি ধর্মা তুমি হাদি তুমি-মর্মা ष्टश्ह शानाः भवीत्त्र ।

ण • > ×> "भंनात्र—कछत्राली जान यथा—वत्त्र मारु तः हर्छ।ि । বাহুতে তুমি মা শব্জি হৃদয়ে তুমি মা ভব্জি তোমারই প্রক্রিমা গড়ি

মন্দিরে মন্দিরে।
ত্বংহি তুর্গা দশপ্রাহরণ-ধারিণী
কমলা কমলদলবিহারিণী
বাণী বিদ্যাদায়িনী

নমামি ছাং।

নমামি কমলাং অমলাং অতুলাং স্কলাং স্ফলাং মাতরং

বন্দে মাত্রং

भाग्रमनाং সরলাং স্ক্রিভাং ভূষিতাং ধরণীং ভরণীং মাতরং।

ধ্রণাং ভ্রণাং মাত্রং। হল দেখিল দুল্য গালিকে

মহেক্স দেখিল, দস্থা গায়িতে গায়িতে কান্দিতে লাগিল।

মহেন্দ্র তখন সবিক্ষয়ে জিফাসা ক রিল ''তোমরা কারা ?''

ভবানন বলিল, "আমরা সন্তান।" মহেক্র। সন্তান কি ? কার সন্তান ? ভবা। মায়ের সন্তান ?

মহেন্দ্র। ভাল—সম্ভাবে কি চুরি ভাকাতি করিয়া মায়ের পূজাকেরে ? সে কেমন মাতৃভক্তি ?

ভবা। আমরা চুরি ডাকাতি করি না। মহে। এই ত গাড়ি লুঠিলে।

ভবা। সেকি চুরি ডাকাতি? কার টাকা লুঠিলাম?

মছে। কেন ? রাজার।

ভবা। রাজা বেটাকে? এই যে টাকাগুলি মে লইবে এ টাকায় তার কি অধিকার? মহে। রাজার রাজভাগ।

ভবা। হিন্দুর রাজ্যে আবার মুসল-মান রাজাকি ?

মহে। তোমরা সিপাহীর তোপের মুখে কোন দিন উড়িয়া যাইবে দেখি-ভেছি।

ভবা। অনেক শালা দিপাহী দেখি-য়াছি—আজও দেখিলাম।

মহে। ভাল করে দেখনি, একদিন• দেখিবে।

ভবা। নাহয় দেখ্লাম, একবার বই ত ত্ৰার মর্ব না।

মহে। তাইভ্যকরিয়ামরিয়াকাজ কি?

ভবা ৷ মহেক্র সিংহ, তোমাকে মারু-ষের মত মানুষ বলিয়া আমার কিছু (वाथ हिन, किन्नु এখন দেখিলাম, স্বাই য। ভূমিও তা। দেখ দাপ মাটীতে ব্ৰু निया हाँ हो, जाहात अल्ला गीह कीत আমি ত আর দেখিনা; সাপেরুখাড়ে পা দিলে সেও ফণা . ধরিয়া, উঠে। ভোমার কি কিছুতেই ধৈবা নষ্ট হয় न। (प्रथ यङ (प्रभ चार्ड, — मश्य, ° মিথিলা, কাশী, কাঞ্চী, • দিল্লী, काश्रीत, कान (मरणंत अमन इर्फेशा, কোন দেশে মাতুষ খেতে না পেয়ে ঘান খায় ? কাটা খায় ? উইমাটি খায়? बरनद लंडा श्राप्त ? (कान एमएम मोछूय শিয়াল কুকুর থায়, মড়া ঝায় ? কোৰ-দেশের মাহুষের সিফুকে টাকা রাখিণা শোয়ান্তি নাই, সিংহাসসে শুলিগান

রাখিয়া শোরান্তি নাই, ঘরে ঝি বউ
রাখিয়া শোরান্তি নাই, ঝি বউয়ের

দুপটে ছেলে রেখে শোয়ান্তি নাই ?
পেট ভিরে ছেলে বার করে। সকল
দেশে রাজার সঙ্গে রক্ষণাবেক্ষণের
সক্ষর। আমাদের রাজা রক্ষা করে
কই ? ধর্ম গেল, জাতি গেল, মান
গেল, কুল পেল, এখন ত প্রাণপর্যান্তও
যায়। এ নেড়েদের না তাড়াইলে আর
কি হিন্দুর হিন্দুরানী থাকে ?

মহে। তাড়াবে কেম্ন করে? ভবা। মেরে।

মহে। তৃমি কি একা তাড়াবে ? এক চড়েনাকি ?

দস্যাগিল:--

''দপ্তকোটীকণ্ঠ-কলকলনিনাদ-করালে দ্বিসপ্তকোটীভূজৈধ্ তথরকরবালে কে বলে মা ভূমি অবলে—'' °

্মহে। কিন্ত দেখিতেছি তুমি একাু? .

ভবা <sup>1</sup> েকন এখনি ত ছশ লোক দেখিয়াছ।

ঘহে। তাহারাকি সকলে সম্ভান?

ঁ ভবা। সকলেই সন্তান ?

মহে। আর কত আছে?

ভবা। এমন হাজার হাজার, ক্রমে আয়েও হবে ?

মহে : না হয় দশ বিশ হাজার হল, তাতে কি মুসলমানকে রাজ্যচ্যত ক্রিভেম্পারিবে ? ভাগ। প্রশাশীতে ইংরেজের ক্জন ফৌসছিল ?

মহে। ইংরেজে আর বাঙ্গালীতে ?
ভবা। নয় কি সে ? গায়ের জোরে
কত হয়—গায়ে জিয়াদা জোর থাকিলে
গোলা কি জিয়াদা ছোটে ?

মহে। তবে ইংরেজে মুসলমানে এত ফারাক কেন ?

ভবা। ধর, এক ইংরেজ পলায় না, মুদলমান গা ঘামিলে পলায়—শরবত খুঁ জয়া বেড়ায়—ধর তার পর, ইংরেজের জিদ আছে—যা ধরে তা করে, মুদলমানের এলাকাড়ি। টাকার জন্য প্রাণ দেওরা;তাও দিপাহীরা মাহিয়ানা পায় না। তার পর শেষ কথা সাহস,—কামানের গোলা এক জায়গায় বই দশ জায়গায় শড়্বে না— স্কতরাং একটা গোলা দেখে ছশ জন পলাইবার দরকার নাই। কিন্তু একটা গোলা দেখিলে মুদলমানের গোলীগুদ্ধ পলায়—আর গোলীগুদ্ধ পোলা দেখিলে ত একটা ইংরেজ পলায় না।

মকে। তোনাদের কি এসব গুণ আছে ? :

ভবা। <sup>\*</sup>না। কিন্তু গুণ গাছ থেকে পড়েনা। অভ্যাস করিতে হয়।

মহে। তোমরা কি অভ্যাস কর ?
,ভবা। দেখিতেছ না আমরা সন্নাসী ?
আমাদের সন্নাস এই অভ্যাসের জন্য।
কার্য্য উদ্ধার হইলে—অভ্যাস সম্পূর্ণ
হইলে—আমরা আবার গৃহী হইব।
আমাদেরও স্ত্রী কন্যা আছে।

মহে। তোমরাসে সকল ত্যাগ করি-য়াছ—মায়া কাটাইতে পারিয়াছ ?

ভবা। সস্তানকে মিথাা কথা কহিতে
নাই—তোমার কাছে মিথাা বড়াই করিব
না। মায়া কাটাইতে পারে কে ? যে
বলে আমি মায়া কাটাইয়াছি, হয় তার
মায়া কথন ছিল না, বা সে মিছা বড়াই
করে। আমরা মায়া কাটাই না—আমরা ব্রত রক্ষা করি। তুমি সস্তান
হইবে ?

মহে। আমার স্ত্রীকন্যার সম্বাদ না পাইলে আমি কিছু বলিতে পারি না। ভবা। চল, তবে ভোমার স্ত্রীকন্যাকে দেখিবে চল।

এই বলিয়া ছুইজনে চলিল। ভবানদ আবার ''বন্দেমাতরং'' গাইতে লাগিল। মহেক্রের গলা ভাল ছিল, নঙ্গীতে একটু বিদ্যা ও অমুরাগ ছিল—মুতরাং দঙ্গে গাইল—দেখিল যে গায়িতে গায়িতে চক্ষে জল আইসে।

মহে। যদি স্ত্রীকন্যা ত্যাগনাক-রিতে হয় তবে এ ব্রত স্ব্যমাকে গ্রহণ করাও ?

ভবা। এ ব্রত যে গ্রহণ করে সে স্ত্রী
কন্যা পরিত্যাগ কবে না। তুমি যদি এ
ব্রত গ্রহণ কর, তবে স্ত্রী কন্যার সঙ্গে
সাক্ষাং করা হইবে না। তাহাদিগের
রক্ষা হেতু উপযুক্ত বন্দোবস্ত করা যাইবে
কিন্তু এতের সফলত! পর্যান্ত তাহাদিগের
মুখদর্শন নিষেধ।

মহেল্র। আমি এ রত গ্রহণ করিব না।

アグラ

# शृश्मन्गाम ।

যে স্বাধীন, নিশ্চয়ই সে সম্ভাসী।
ভারতবর্ষে স্বাধীনতা ছিল সেই জন্য
সন্ন্যাসীও ছিল। সন্ন্যাসীরা অনেকৈই
গৃহী, স্বাধীন গৃহী। জনকরাজ। ভারতের
প্রথম সন্ন্যাসী।

স্বাধীনতা ভারতবর্ষের ধন। জর্মনীরা ইলানীং স্বাধীনতার অর্থ কতকাংশে
ব্ঝিরাছে, এইজন্য জর্মানীতে সর্যাদী
সম্ভব হইরাছে। ইউরোপীর আর
আর জাতিরা অসার, অনেকে আ্থা-

বার বাচাল; তাহাদের স্থাধীনতা অতি দ্রে। ইংরেজদের কেবল দান্তি-কতা, ফরাসিসদের কেবল বাগাঞ্চন্ব। অন্যাপি তাঁহারা অধীনতা স্থাধীনতা কেবল রাজসম্বন্ধে উল্লেখ করেন; যে বধির সে কেবল নৃত্যকেই সঙ্গীত বলে; গীত, বাদা, তাল, লয় কথন তাহার কর্ণক্হরে যায়নাই এ যথন ভারতাক্লাশ হইতে স্থাধীনতা থসিয়া পড়ে, পতনে তাহা শতধা ইইয়াছিল,মেস্হ্রা তাঁ-

হারই ছই একখণ্ড কুড়াইয়া লয়; সেই
ভগ্নথণ্ড তাহাদের এখন পূর্ণথণ্ড। আমরা
ভাই হাসি। ভগ্নথণ্ডের ছই চারিটী
আদ্যাপি ভারতবর্ষে পড়িয়া আছে;
সেগুলি একলে মহাপীঠ। এই জন্য
ভারতবর্ষ আদ্যাপি স্বাধীন; সকল
দেশ অপেক্ষা স্বাধীন। কুজেরা এ কথায়
হাসিবে, রাজা দেশী কি বিদেশী এই
লইয়া তাহারা স্বাধীনতার মীমাংসা করে।

মনুষা প্রথম হইতেই পরাধীন—জড়ের অধীন, জীবের অধীন, প্রকৃতির অধীন, নিজ প্রবৃত্তির অধীন। এ অধীনতার সীমানাই।

মন্থার প্রথম বেগ—উদ্ধারের চেষ্টা। জড়ের শাদন, জঙ্গমের শাদন, আপনার শাদন। জড়ের শাদন প্রথমতঃ ইউরোপ অঞ্চলে আরম্ভ হয়। আপনার শাদন প্রথমতঃ ভারতবর্ষে আরম্ভ হয়। এই শেষ শাদন বড় কঠিন, ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইয়াছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইয়াছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইয়াছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইবাছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইবাছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহা সম্ভব হইবাছিল। ভারতবর্ষ বলিয়া তাহাকর প্রাভান ক্রম্কার্ডা।

বৌদ্ধদিগের সময়ে আত্মশাসনের বিশেষ বাঁধাবাঁধি ছইয়াছিল। কিন্তু তাঁহাদৈর শাক্যসিংহ ভীক ছিলেন, সংসারকে
ভয় করিয়া, সংসারকে ফেলিয়া তিনি
পলাই দাছিলৈন। স্বাধীনতা সাহসিকের

ধন; ভীক ক**খন স্বাধীনতা পার না,** সন্ন্যাসীও হয় না।

তান্ত্রিকেরাও স্বাধীনতার চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু উাহাদের চেষ্টা কেবল
মায়াসম্বন্ধে। তাঁহারা বুঝিয়াছিলেন যে
মন্ত্রেরা কেবল মায়ার নিমিত্ত পরাধীন। কিন্তু মায়া পরাধীনতার আংশিক কারণ মাত্র।

কেহ বা যোগশিক্ষা দিয়া, দৈহিকশাসন আরম্ভ করাইয়া, স্বাধীনতার
ইত্রপাত করিয়া গিয়াছেন। তাঁহারা
ভাবিয়াছিলেন যে, মহুষ্যের পরাধীনতা
সম্বন্ধ কুংপিপাসাই বিশেষ কারণ।

সম্প্রদারবিশেষের এইরূপ আংশিক চেষ্টার পূর্ণ স্বাধীনতার উৎপত্তি হই-য়াছিল। কেছ কেছ সেই স্বাধীনতা ভোগ করিয়াছিলেন।

ভারতবর্ষের স্বাধীনতা অতি ভ্রানক, ও অভ্ত হইয়াছিল। "জড়জলমের অধীন হইব না; জরার অধীন
হইব না; জুধার অধীন হইব না;
মায়ার অধীন হইব না; দেবতার অধীন
হইব না; করং ঈশ্বরের সমান হইয়া
ভাহার শ্রীরে মিলিয়া ঘাইব।" এই
আকাক্ষা ভারতীয় স্বাধীনতার বীজা।

ভারতীর স্বাধীনতা অতি কর্কণ, অতি ভারত-বাসীরা মৃত্রুরও অধীন হইতে চাহিত না। স্বাধীনতার এরূপ মূর্ত্তি আর কো-থাও অন্থমিত হয় নাই ! মৃত্যু আইসে, পার্শ্বে দাঁড়ায়, যোড়হাত করে, অঞ্-

মতি চায়, অনুমতি কখন পায় কখন পায় না। এই চিত্র কেবল স্বাধীনতার সংস্করণ। অদ্যাপি অনেক পরমহংস গোপনে আহার করে, পাছে কুংপিপাদার বশবর্তী দেখিয়া লোকে পরাধীন মনে করে। অনেকে উলাঙ্গ বেড়ায়, পাছে সমাজপ্রথার অধীন ভাবিয়া লোকে অশ্রদ্ধা করে। অনেকে দারাপুত্রভ্যাগ করে, পাছে লোকে মায়ার অধীন মনে করে। এই সকল ব্যবহার অনুর্থক নহে। প্রতিধ্বনি পূর্ব্ব-ধ্বনির পরিচয়।

ভারতীয় স্বাধীনতা একেবারে লোপ পায় নাই, এখনও ভারতবর্ধে সন্ত্যাসী আছে, আমি ভস্মমাথা ভিক্ক্কদের কথা বলিতেছি না; মহাপুক্ষদের কথা বলিতেছি।

খাধীনতার আর এক মূর্ত্তি জর্মাণদেশে করিত হইয়াছে। তথাকার পণ্ডিতেরা বলেন যে নিজে উন্নত হইয়া জড়জন্সম প্রভৃতি সকলের অধিকার অভিক্রম করাই খাধীনতা। কিন্তু কার্যীত সম্পূর্ণ অভিক্রম করা মহুষ্যের সাধ্যাতীত; যাহা সাধ্যাতীত তাহা কেবল মনের ভারা অভিক্রম করিতে হইবে। যাহা অবশাস্থাবী, যাহা অলঙ্গনীয়, যাহার উপায় নাই, তাহার নিমিত্ত কাতর কেন হইয় পড়িব ? যাহা অবশাস্থাবী তাহা স্কতরাং হইতে দিব; হইতে দেওয়াই জিত, প্রভৃত্বের কার্যা।

এইরপ জর্মাণ স্বাধীনতা নীতিসন্তুত। এত কাল নীতিকে কেছ
স্বাধীনতার প্রস্তুতি বলিয়া চিনিত না,
এক্ষণে চিনা যাইতেছে। এই পথ অবলম্বন করিলে অনিবার্য্য অত্যাচারকে আর
অত্যাচার বলিয়া বোধ থাকে না,
মৃত্যুরও ভয়ানকতা কমিয়া যায়।

মনকে অধীন করিয়া আপনি স্বাধীন

হইব ইহা ভারতীয় মন্ত্র। মনকে উন্নত করিয়া আপনি স্বাধীন হইব ইহা জর্মাণীর মন্ত্র। পরস্পর প্রভেদ বিস্তর। ভারতীয় স্বাধীনতায় মনকে দমন করিতে হয়, শাসন করিতে হয়, পীড়ন করিতে হয়, অনেক স্থপ্রপৃত্তির শৃতি-রোধ করিতে হয়; মনকে একেবারে শুক্ষ করিয়া ফেলিতে হয়; কিন্তু "when you regulate a man, you narrow him." এই স্বাধীনতার আর এক বিশেষ দোষ• যে এডদারা সমাজের সর্কনাশ হয়; যে সকল মনোবৃত্তির প্রাবল্যে সমাজের উন্নতি, সে সকল মনোত্তি একেবারে থাকে না। এই জ্না এইরূপ ব্যক্তিগত স্বাধীনতার সঙ্গে সঙ্গে ভারতস্মাজের উন্নতি লোপ হইয়া গিয়াছিল। ব্যক্তি-গত গুণে সমাজ গুণবস্ত হয়, কিঁতু, **এই ऋत्म (म नित्रम शांटि नारे।** সমাজের পরাধীনতা ব্যক্তিগত পরা-ধীনতা নহে. যাহারা স্বাধীন তাঁ-হারা সমাজ হইতে খতত্ত্ব হইয়া পড়িয়া--তাহাই লোকে তাঁহাদের স্বতন্ত্র নাম দিয়াছিল—সন্ন্যাসী। 🍌

সন্নাদীর বাক্যার্থ বিচার করিবার আবশ্যকতা নাই। সন্নাদধর্ম সমা-দেশ অনিষ্টকর, বিশেষতঃ প্রথমতঃ অবস্থার। পরাধীনতা সমাজের মজ্জা। পরাধীনতা ভিন্ন সমাজ গঠে না, সমাজ থাকে না। পরাধীনতা পরতন্ত্রতা নহে।

সমুদয় মনোবৃত্তির সামঞ্জস্য থাকিলে আর একপ্রকার স্বাধীনতার উৎপত্তি হয়। বাঙ্গালায় সে সামঞ্জস্য একেবারে নাই। এখানে মায়া মমতার প্রাধান্য অতিশয়, এইজন্য আমরা পরাণীন।



# বালীকির জয়।

চতুর্থ খণ্ড।

পরিষার শরৎকালের দিকে দৃষ্টি করিলে, অগণ্য তারকাপুঞ্জের মধ্যে সময়ে সময়ে সাদা মেঘের মত किছू किছू (पथा यात्र। पृत्रवीन पिशा (प-থিলে, ঐ সকল আরও পরিদার দেখিতে পাওয়া যায়। সে সব আর কিছু নয়, মালদ্দলা সংগ্রহ রহিয়াছে, এখনও পৃথিবী পেনুর জাগং বা অক্ষাও গড়াহয় नाइ। छहारमत हैश्टत कि नाम तनतूना। যে দিন বিশ্বামিত ত্রুলা ও ত্রুল র্ষ্গণের সহিত বিবাদ করিয়া ধবলগিরির উচ্চ-শুঙ্গে উঠেন, সে দিন ঐ সকল নেবুলায় তাঁহার চোথ পড়ে; তিনি তৎক্ষণাৎ শূন্য-পথে তদভিমুখে ধাবিত হন। বাষ্পীয় শক-টের ন্যায়,তীরের ন্যায়,তাড়িতগতির ন্যায়, ীরাজর্ধি বিশ্বামিত্রগমন করিতে লাগিলেন। বায়ু ক্রমে পাতলা হইতে লাগিল, জমে শীতল হুইতে লাগিল,ক্রমে নিখাস বহে না

এইরপ হইয়া উঠিল। অমনি বিশ্বামিত পৃথিবীবায়ু স্মরণ করিলেন, স্মরণ করিয়া সঙ্গে লইলেন, নিখাস ফেলিবার কিছুই ক্লেশ হইল না। বাইশ ক্রোশ পরেই স্থির বায়ু, সেই বায়ুতে ক্রমাগত উল্লা খুরি-তেছে, ব্রহ্মার আদেশে সমস্ত উল্লা আজি বিশ্বামিত্রের গাত্রে পড়িতে লা-গিল, বিশ্বামিত্র আরও বেগে শূন্যপথ পার হইতে আরম্ভ করিলেন, ধুমকেতুগণ তাঁহার পীণরোধ করিল। তিনি তাহা-मिश्र क ्ठेलिया मित्रा शिरानन,ममस मृत्ना দ্বথর নামে যে পদার্থ আছে, তর্মধান্থ ভাবসকল তাঁহার শরীর করিতে লাগিল; তাহারা এত স্ক্র যে, দূরবীলঘারাও দেখা যায় না, কিন্তু ক্রমে শরীর গুরুতর হইয়া উঠিল, তাহাতেও বিশামিত্রের দৃক্পাত নাই। মিত্ত মানুষবলে উঠিতেছেন না, যোগবলে উঠিতেছেন। তিনি ক্রমে

অসংখ্য সৌরলগৎ অতিক্রম করিয়া -নেবুলার নিকট উপস্থিত হইয়া, অনস্ত গগনস্থ সমস্ত নেবুলা আকর্ষণ করিতে वाशित्वम। ठाविनिक इहेटल त्नवृता-সমূহ সংগ্ৰহ হটয়া তাঁহাৰ পদতলে পড়িতে লাগিল। কত অগণা গ্রহ নক ত্রাদি যে সেই অগঠিত পদ।র্থরাশিমণো আকুষ্ট হইতে লাগিল, কে বলিতে পাবে? ক্রমে আকাশের এক কোণ নেবুলায় পুরিয়া গেল। বিশ্বামিত্র ভাহার উপর मां ड़ाहेश! निज अञ्चल प्राटेट नाशितन, আৰ সেই অনস্ত, অগঠিত পদাৰ্থনাশি ঘু বিভে লাগিল, যুরিতে যুরিতে যুরিতে একঅ हरेट नाशिन; क्रांग প्रम्भव निक्रे হইতে লাগিল, ক্রমে পরস্পব গায়ে গায়ে লাগিল, ক্রমে আবার ঘুরিতে ঘুরিতে ঘু-রিতে আটিয়া বসিয়া গেল। আরও--ঘু-রিতে ঘুরিতে অগ্নি সে সকল উলাম হইল, প্রকাণ্ড পরমাণুবাশির চারিদিকে অগ্নিয় Atmosphere হুইল,পানিক জ্লিতে থা কিলে বিশ্বামিত বলিলেন, "বুধ হউক," ष्प्रमान त्में क्लक्ष्मभार्थ इहेट विकथ्छ বাহির হইয়: গিয়া দূরে নি:কিংপ্র হইয়৷ উহারই চারিদিকে ঘুরিতে লাগিল, धनः क्रांप ठाणा इहेशा तुम्बाइताल পরि ণত হইল। বিশামিত দেখিলেন, উত্তম इरेग्राहि। अनस्त्र कहिलन, ''उँक इ-উक" अमनि दमहे खनस घुनीमान भागार्थ-রাশি হইতে আর এক থণ্ড ছটিয়া গিয়া উহারই চারিদিকে ঘুরিতে লাগিল। विचामिक (पर्णितन, अक छेठम स्टेमार्ছ।

আবার বলিলেন, ''পৃথিবী হউক'' অমনি আবার সেই জ্বস্ত ঘূর্যমান পদার্থবাশি হইতে আর একখণ্ড ছটিয়া গিয়া পাখাড পর্বত-নদ-নদী-দীপ--সাগরবতী-পৃথিবী-কপে পবিণত হইল। বিশ্বামিত দেখি লেন, এ পৃথিবীৰ সহিত পুৰাতন পৃথি বীর ভুলনা হয় না। এইরূপে দেই অগাদ প্ৰমাণুবাশি ছইছে এক এক কৰিয়া চক্র, তুর্যা প্রান্থতি আমাদের সৌরজগতে যাহা যাহা আছে, বিশামিত্র তংসমুদ্যই रुष्टि कतित्वन, डाँशांव পुशिवी आगारमर পৃথিনী হইতে কোটী গুণে বড় হইল,স্ৰ্য্ কোটী গুণে বড়, পৃথিবী হইতে বিশ্বা নিতাৰে সৃষ্টি প্ৰকাণ্ড দেখাইতে লাগিল कुन, नायु. इन न भन्ति क, नमी, तन, तुक्क, ववक. যেমন যেমন এ পৃথিবীতে আছে, সং ঠিক তেমনি তেমনি হইল; অপিকের মধ্যে নাবিকেলগাছ তখন এখানে ছিল ন। তাহা হইল। তাঁহার জগতে হিংত জন্তু রহিল না: বিচিত্র পক্ষী পক্ষজ্টায় नयन मन रक्षन करत, े ५ दे हे अधिक বিচিত্র পশু, দেখিতে অতি মনোহর সমস্তই স্থান্ধিপুপেব বৃক্ষ-নুক্ষের পত্ত স্থানি, কাৰ্চ স্থানি, তুল স্থানি, আ স্বাদ স্থগন্ধি—যে তৃণদারা পৃথিবীব উপরি ভাগ আছাদিত ভাহাও মাতর অপেক হ্রণিরি। আকাশ হঁইতে যে বৃষ্টি হইত তাহা গোলাব। বায়ু, ধূপ-ধূনা-গন্ধা त्मानिक। **आहातीर्य श्रार्थ** छेरशानः ক্রিতে হয় না—বন,জল, বায়ু আহারী धीमान करत, এবং ইহার পর 🕏 সহः

সহস্র বংসর দিতে পারিবে, ভাহারও ক্ষিকশ্যের শ্রমস্বীকার করিতে হুটবে না-; লোকসংখা যদি অগণা বৃদ্ধিত হয়, তবেই যাহা হউক। বাড়ী ঘ্ৰশ্ব বিছানা রহিবে না, স্ক্রগন্ধি স্রস্পর্শ অভি কোমল তৃণ্ট শগা, সমস্ত পূণ্বীময় বিশ্বামিকে পর্বত কাটিয়া বৃষ্টির সুণ্য থাকি বার জন্ম ফ্রন্দর স্থান নির্মাণ কবিয়া দিয়া-ছেন। রাস্থার উপর দাকণ হুর্যা-উদ্ভাপ এ জনা সমস্ত বাস্থার উপব শেড দেওখা, ভাহাৰ উপৰ ছুইপ্ৰহৰেৰ সময় বরফ দেওয়া হয়, মাঠে যখন দাকণ গ্রীম রাস্থাব উপর গেলে শরীর একে-বারে জুড়াইয়া যায়। বিখানিতা নিজে স্বভাব সৌন্দর্য্যের জন্য বড়ই পাগল, এইজনা পাছাড়ে উঠিবাৰ উপায় করিয়া मित्न । त्नारक याशांक मर्त्रमा भर्त তৈর ডগা হইতে সমদয় তলা পর্যান্ত भव उन्न उन्न कविशा (प्रशिष्ठ शाब, ভাছার নানা উপায় কবিয়াছিলেন।

আন মহাধা— নৃতন তগতে নৃতন মহাধা, হইল। স্টে আপনাৰ মনোমত, বিশ্বা মিত্রের স্টিতে মহাধা প্রথমর, ছঃগড়ো গের প্রাবৃত্তি সকল আদৌ রহিল না। অতি উচ্চ অঙ্গের বৃদ্ধিবৃত্তিবও উন্নতি হইবার উপায় রহিলা বিশামিত্রের সং-ধার ছিল, আহ্বা ক্রমার মুখ হইতে উৎপদ্ধ হয় নাই; কেবলমান মনের উচ্চত্র বৃত্তিসকল চালনা করিবীই চাহারা বাইলাওপ্রাপ্ত হইয়াছে, কিন্তু তাহার পর স্থার্থাধন-প্রবৃত্তি প্রবল হইয়া প্রাহ্মাণদিগকে একেবারে চক্ষ্মাণজাশূন্য করিয়া ফেলিয়াছে। অত-এব যাহাতে সকল লোকেরই বৃদ্ধি বৃত্তি সমানরপে পৃষ্ট হয়, বিশ্বামিত্র তাহার জন্য চাবিদিকে বিদ্যালয়, কালেজ নিশ্বাণ করিয়া দিলেন। উচ্চনীতি-শিক্ষা, উচ্চশাসন, প্রভৃতিব জনা স্বভ্স্ত লোক রহিল না; সকল লোক একত্র হইয়া এ সকল কায়ানির্বাহ করিবে। যুক্তি একমাত্র উপাস্যদেবভা, ভদ্তির আর উপাস্য দেবতা একেবারে রহিল না। সকলে নিত্য নিত্য যুক্তিদেবীর মাত্র উপাসনা করিত।

আর প্রেমণু সকলই প্রেময়, মামুষ भव मगान । यक्ष काहात्र ९ कान विषदा উল্ভি হয়, ভবে সে তাহারার অন্য লোকের উপকার করিবে, সব স্মান করিয়া লইবে। বিশ্বামিত্রের জগতে **দব মান্ত্র স্থলর, কাল কুংসিত তু**ই একটা কদাচ কখন মিলিত কি না गत्नह। मैंकलवर मूर्य अमनि साहिनी মুয় ভাব যে, মুগ দেখিলেই পরক্পার মোহিত হট্যা ঘাইতে হয়। সেখানে পরস্পাব দেখা সাক্ষাৎ হইলে, সেকহাাও বা নড বা নমস্কার কবিত না, একে-वादत १कालाकुलि ও গাঢ় আলিক্ষন। সকলেই বাস্ত every thing onward & forward. নৃতন জগতে, নু তন উৎসাহে, लाक अनिक अनिक করিয়া বেড়াইতেছে, কখন প্রবিতে উঠিয়া বৈজ্ঞানিক তত্ত্ব আবিক্ষার করিতেছে, কথন নদীগর্ভে গিয়া তথাকার
গৃঢ়তত্ত্ব নির্ণয় করিন্তছে, কথন
আকাশপথে উত্তীন হইয়া নানা কার্য্যে
ব্যাপ্ত হইতেছে। এইরূপে সকলেই
ঘুরিয়া ঘুরিয়া আত্মোন্তি সমাজোন্তি
মন্মোন্তি সাধনার্থ ব্যস্ত হইয়া বেড়াইতেছে।

বিশ্বামিত্রের সংসারে বিবাহ নাই; কিন্তু প্রাণয় এমনি পদার্থ, বিবাহ না থাকিলেও একবার মনোমিলন হইলে প্রায় আর বিচ্ছেদ হইত না। বিচ্ছেদ হুইলেও তিনবৎসরকাল ভগ্ন প্রণয়ের জন্য শোক না করিয়া কেছ বিবাহ করিত না। এরপ করিলেও কেহ দোষ বলিত না;লোকে জিতেক্রিয় ছিল; ব্যভিচারাদি ভয়ানক দোষ কিছুমাত্র ছিল না। গীতবাদ্যাদি কলায় সমস্ত লোকই পটু ছিল, সকলে মিলিয়া সকল স্থানে হয় গান, নয় বাজনা, নয় মভি-নয়, না হয় নৃত্য প্রতাহই হইত। প্রত্যহ পৃণিবীময় নৃতন উৎদব ছইত, কোনপ্রকার রাজা, সেনাপতি, বা কিছুর ভয় ছিল না। সকলে মিলিয়া যাহা করে, তাহাই হয়। পদার্থের গূঢ়তত্তাম সন্ধান, আর প্রতিবেশীদিগের মনোরঞ্জন, এই বিশ্বামিত্রপৃথিবীতে লোকের নিত্য-কৰ্ম হইল।

উলাস—উলাস—উলাস,মনের উলাসে পৃথিবীস্থ লোক নৃত্য করে। আহা! এমন পৃথিবী বুদি আমাদেব হইত. তবে না জানি কতাস্থই হইত। যে স-কল কারণ থাকায় পৃথিবীর মানুষে মানুষে গরমিল, বিশ্বামিত্র মাকুষের মন হইতে দেগুলি অতি যত্নে তুলিয়া দিয়†ছিলেন। যশের আশা, টাকার ভৃষ্ণা ও আধি-পত্যের আশা কাহারও ছিল না। কেবল আমোদ; আজি আমার আমোদে তুমি যোগ দিলে, কালি ভোমার আ-মোদে আমি যোগ দিলাম। মিত্রের দেশে মাতুষ মরিত না, উহাবা এক পৃথিবী হইতে অন্য পৃথিবীতে চলিয়া যাইত; এইরূপে সাত আটবার ঘুরিয়া আবার সেইখানে আসিয়া উপ-স্থিত হইত। বিখামিত্রপৃথিবীতে জন্ম ছুইপ্রকার; পুনরাবর্ত্তন জন্ম ন্তন জনা ; ন্তন জনা সংখায় সংখ্যিত ছিল, রোজ সেই কয়টি করিয়া নৃতন জন্ম হইত; বাকি পুনরাবর্ত্তন <sup>জ</sup>ল্ম। বিশামিত্রের পৃথিবী অল্লকাল ছিল, অধিক নৃতন জন্ম হইলে কি হইত বলা যায় ना।

ওদিকে বাল্মীকি হিসালয়জঙ্গলমধে কেবল রোদন করিয়া বেড়ান, রোদ নের বিরাম নাই, অন্ত দাহেরও বিরাফ নাই, কি পাপই করিয়াছি, কেমন করিয় এ পাপের প্রায়শ্চিত হইবে, যত ভাবেল ততই হাদয় উদ্বেল হয়, ততই একস্থানে স্থিকিতে পারেন না। দ্যাদলে সহিত্ত আর দেখা করেন না। তাহার পুলিয়া বেডায়, দেখা পায় লা। নামু

**८निथित्न श्रमेरा**त्रत खाना आत्र वाजिया উঠে, জঙ্গলে পশু পক্ষীর সহিত বাস হুইতে লাগিল, পশু পক্ষীও তাঁহার কাতর' ভাবে কাতর। তিনি কোন পশুকে আহার দেন, কাহার গলা চুকা-ইয়া দেন, কাহাকেও স্নান করাইয়া দেন, এই ভাবে দিন কাটিতে লাগিল। हेशवह मरधा जकतिन जक टक्कीकः মিথুন বড় আদর করিয়া পরস্পার বসিয়া থেলা করিতেছে,এ ওর গায় পড়িতেছে, এ ওকে ঠোকরাইতেছে, এ একবার সরিয়া দূরে যাইতেছে, ও আবার সরিয়া সরিয়া ঘেদিয়া যাইতেছে। এ একবার উলটিয়া উহার ঘাড়ে পড়িতেছে, ও আবার উলটিয়া তাহার ঘড়ে পড়ি-তেছে। আবার উড়িয়া উড়িয়া পাথা নাড়িয়া ঘুরিয়া ঘুরিয়া শব্দ করিয়। আর এক ডালে বসিতেছে, বাল্মীকি একতান মনে উহাদের ক্রীড়া দেখিতেছেন, আর ভাবিতেছেন, ''ইহারা আমা অপেকা কত স্থী, আমি কেন অমনি করিয়া আনোদে মত হইয়া বেড়াই আমারও ত কত দঙ্গী আছে।" আরভা-বিতে পারিলেন না। পূর্ব্ব কথা আবার ন্তন হইয়া হাদয় আকুল করিয়া তুলিল। তিনি এইরপ ভাবিতেছেন, হঠাৎ একটা তীর আসিয়া একটি পক্ষীর প্রাণ সংহার করিল। পক্ষী পড়িয়া ভূমে লুটাইয়া ছটফট করিতে, লাগিল। বাাধ দৌভিয়া পাখী লইতে আদিল। বালীকৈ বলি ·লেন, রে পাপাত্মা—

মা নিষাদ প্রতিষ্ঠাতমগ্যঃ শাখতী সমা যৎ ক্রোঞ্মিথুনা দেকমবধীঃ কামমোহিতং। বলিবামাত্র বাল্মীকি দেখিলেন,নিঝ রমধ্য হইতে একটি কন্যা কানন-পথ আলো করিয়া আসিতেছে, তাহার কাস্তি অপ্সবা-বিনিন্দিত জ্যোৎসা অপেকাও স্নিগ্ন মন্দ ও হাদয় মুগ্ধকর। কামিনীর কমনীয় কান্তি দর্শনে সকলেই আশ্চর্য্য হইয়া গেল। ব্যাধ ক্রোঞ্চ সংগ্রহ করিতে হস্ত প্রসারণ করিতে ছিল, সে স্তব্ধ হইয়া রহিল। পশু, পক্ষীগণ নীরব হইল। কন্যা বাল্মীকির সন্মুথে আসিয়া দাঁড়াইলেন। বাল্মীকির কথা সরিল না, কন্যাও বাল্মী-কিকে কথা কহিবার অবকাশ দিলেন না। বলিলেন, "বাল্মীকি, বিশ্বিত হইও না, আমি সরস্বতী, ব্রাহ্মণদিগের কুলদেবতা। কিন্তু ব্রাহ্মণদিগের মধ্যে কাহাকেণ্ডভোমার মত কোমল হৃদয় দেখি নাই একুনা তো-মায় এই বীণা দিতে আসিয়াছি। এই বীণা তোমার ও তোমার মত লোকের হাতে চিরদিন থাকিবে, তোমরা পরহিতত্ততে দীক্ষিত হইয়াকেবল পরের জান্য ইহার वावशंत कतित्व।" वानीकि লু'ঠত হইয়া বীণাগ্রহণ করিলেন, কিন্তু বীণা তাঁহার হাতেই রহিল; সরস্বতী অন্তর্জান হইলেন।

#### পঞ্চম খণ্ড।

বিশামিত্র পৃথিবী ইইতে নৃতন স্ষ্টির জন্য প্রস্থান করিলে পুরাতন স্ষ্টির কি ইইল, তাহা অনারাদেই বুঝা যায়।

शृथिवीमग्न (शानमान, अत्राक्षक, नूर्रभाष्ट, সর্বদা শোণিতভোত-প্রবাহ। আমরা ইতিহাসে অনেক অরাজক সময়ের বিষয় পাঠ করিয়া থাকি। যবন-স্থাজা বিনাশ ছইলে ইংরেজ সাম্রাঞ্জ স্থাপন পর্যাস্ত ভারতে যেরূপ ভরন্বর কাণ্ড ঘটিয়াছিল, এমন বোধ হয় পৃথিবীর কোথাও ঘটিয়াছে কি না সন্দেহ। কিন্ত বিশ্বামিতের স্বর্গার্থগমনের পর যাহা ঘটেটেউহা তাহার শতাংশের একাংশও নছে। মোটামটি বলিতে গেলে পৃথি বীতে ব্রাহ্মণ, ক্ষতিয়, রাক্ষ্য ও বানর এই চারিটা প্রধান রাজত্ব ছিল। মেচ্ছ, চীন, ত্নাদির রাজ্য, বিশ্বামিত ছিল ভিল করিয়া দিয়াছিলেন। তাহা-**८** एत ताकाता चरनरक रे युक्तरक रख निधन **शाश हरेब्राहित्वन। ज्यानक भनारे**ब्रा বশিষ্ঠের আ্রাশ্রর পাইয়াছিলেন, অনেকে যে, কে কোথায় গিয়াছিলেন, ভাহার ঠিক নাই, তাঁহাদের রাজ্যেও ভয়ানক विभुद्धना। लूट्ठेबा पन वाँधिया पित नुष्ठे करत, नशत मात्र करत, नः'त्ररक লগর কটিয়া ওয়ার করিয়া দের। এই সময় वान्त्रीकि मर्कश्रधान नूर्छं ता-महनत আধিপত্য ত্যাগ করিয়াছেন। তাহারা কিন্তু ছত্ৰভঙ্গ হয় নাই, তাহারা গুহক नामक ह्लांनरक कर्छ। कतिया ममन्त्र হিন্দু স্থান লুঠ আরম্ভ করিয়াছে। আজি यमुत्नाळी, कालि প্রয়াগ, অদ্য শতজ সংগম, পিরখ: সরযুতীরে লুঠ করিতে नाशियारह । वह ममस्य नुर्कत भनी

দেখিলে কলির একাকার বোধ হইত, বড়বড়দলে মেচ্ছ, যবন, রাক্ষস, বানর, বাহ্মণ, ক্ষতিয় সব একতা আহার, একত শরন, এক বাবসায় এক আমোদে মন্ত হইয়া মহাধুমধামে বাস, এক নরহত্যা ও দেশ লুগ্ঠনকার্যো সব ব্রতী, ভাহারা একেবারে দেবেরও ছর্দম হইয়া উঠিল। এই থোর বিশৃভালার সময় যদি একটি রাজত্ব প্রবল থাকিত, তাহা হইলে হইত, যদি এক জাতির প্রাধান্য পাকিত, তাহা হইলেও হইত, তাহা ছিল না। সকল রাজোই তুইটি করিয়া দল ছিল। সকল জাতির মধোই অনৈকা ছিল, যে দলের হতে রাজক্ষমতা ছিল, তাহাবা ঘোর অত্যাচারী, তাহাদেব দারুণ অত্যা-চার অপেকা লুঠেরাদিগের অত্যাচার সহজ্র অংশে শ্রেষ্ঠ। লুঠেরারা খুন করিত,উহারা দগ্ধাইয়া দগ্ধ:ইয়া মারিত। এই সময়ে রাবণ প্রবল পরাক্রম নর-পতি। পরস্থীহবণ, পরধন অংপহরল, পরদেশ লুঠন, পর পীড়ন,ক্রীড়ার্থ পরের यद्यवाञ्चलान, डीहात अधान जारमाम। তাঁহার দেশে তাঁহার বিরুদ্ধ পক্ষে তাহার ভ্রাতা বিভীষণ। রাবণ বিভীষণকে কারাগারে নিক্ষেপ করিয়াছেন। বিভী-ষণের স্বপক্ষ হইয়া কণা কহিয়াছিল विनिन्ना, একজন প্রধান মন্ত্রীর নাসাকর্ণ করিয়াছিলেন। ৰানৱরাজাস্থ স্থাীবের পলের সহিত বিভীষণের মিত্রতা হইবার সম্ভাবনা, এই জন্য ধর দূধণ নামক নির্দিয় নিষ্ঠার ও জানিমূধ্য